तर्जुमा

क़ुरान शरीफ़

श्री अहमद बशीर, एम० ए०,
कामिल, दबीर कामिल, मौलवी (फिरंगीमहल)

श्री प्रभाकर साहित्यालोक
रानी कटरा, लखनऊ

कुरान शरीफ़

श्री अहमद बशीर, एम० ए० (उर्दू, फ़ारसी, राजनीति)

प्रकाशक

श्री प्रभाकर साहित्यालोक

रानी कटरा, लखनऊ

नम्र निवेदन

सैकड़ों वर्षसे विदेशी हुकूमत ने 'divide and rule' की जिस नीति का अवलम्बन कर भारतवर्ष पर शासन किया, निस्सदेह उससे एक ही राष्ट्र के भिन्न मतावलम्बियों के बीच परस्पर मनोमालिन्य और विद्वेष की कुत्सित भावना को उत्पन्न करने में वह कुछ हद तक सफल हुयी। राष्ट्र का उच्चतम नेतृत्व वर्ग आज कटुता की इस घातक भावना का उन्मूलन करने में संलग्न है।

क़ुरान शरीफ़ का यह हिन्दी अनुवाद, साम्प्रदायिक सहयोग और इस्लाम धर्म के सम्बन्ध में फैले भ्रम के निवारण की दिशा में अत्यन्त सहायक होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

अरबी, फ़ारसी, हिन्दी, अँगरेज़ी आदि अनेक भाषाओं के विद्वान प्रो० अहमद बशीर, एम० ए० ने जिस अथक परिश्रम से इस अमूल्य ग्रन्थ का प्रतिपादन किया है, उसके लिये हम उनके आभारी हैं।

भवदीय

प्रकाशक

इस्लाम के खलीफाओं के जीवन-चरित्र

हज़रत अबूबकर	।=)
हज़रत उस्मान	।=)
हज़रत अली	।=)
हज़रत उमर	।=)
कुरान पर एक दृष्टि	।-)
पारह अम्म (अरबीमूल हिन्दी अक्षरों में)	।=)

प्राप्तिस्थान—

श्री प्रभाकर साहित्यालोक
२३, श्रीराम रोड,
अमीनाबाद, लखनऊ.

कुरान पर एक दृष्टि

सर्वशक्तिमान, सारे संसार का स्वामी, सृजन पालन संहार का एकमात्र अधिकारी, जगदीश्वर, परमेश्वर अथवा खुदा एक ही है, यह आस्तिक जगत में सबको मान्य है। उसी प्रकार जीव और ईश्वर के सम्बन्ध तथा एक प्राणी का दूसरे से सम्बन्ध समझते हुए भगवत्प्राप्ति अथवा परम शांति तक पहुँचने के लिये कुछ मूल सिद्धांत भी हैं, जिन पर किसी को मतभेद नहीं। उपासना (पूजा का ढंग) भले ही देश काल पात्र के अनुसार एक दूसरे से कुछ अलग हो परन्तु उन मूल सिद्धांतों की साधना को धर्म सब मानते हैं। इसलिये ईश्वर के समान ही मानव धर्म भी एक है, अनेक नहीं। फिर भी सारा मानव-समूह समय समय पर और एक ही समय में अनेक धर्मों में बटा हुआ दिखाई देता है। हम यह समझने लगते हैं कि धर्म अनेक हैं और प्रत्येक धर्म का विकल्पित ईश्वर दूसरे धर्म के ईश्वर से भिन्न तथा अपने समर्थकों का पक्षपाती और दूसरे धर्मावलम्बियों का शत्रु है। इस भांति में फँसकर एक ही सृष्टिकर्ता की रचना और एक ही मूल पुरुष (आदम) की संतानें धर्म के नाम पर परस्पर एक दूसरे के प्रति कैसे २ अत्याचार करती रही हैं, सारा इतिहास इसका साक्षी है।

परम शान्ति के पथ से भटक कर, लुभावने संसारी जीवन में फँसे हम लोग अपने अपने स्वार्थ और पिपासा की तृप्ति के लिए धर्म के नाम पर जाने या अनजाने अनेक छोटे बड़े गुटों में बँट कर छिन्न भिन्न हो गये। दार्शनिक वर्ड्सवर्थ ने कहा है 'जगत्पिता की परमानन्द दायिनी प्रकृति के सबसुलभ सुखों को छोड़कर मनुष्य ने नाना प्रकार के अपने ही रचे हुये बंधनों में अपने आपको जकड़कर कितना दुखी कर लिया। हाय, मानव ने मानव को किस दुर्गति में पहुँचा दिया है।' राग और द्वेष में फँसा, अहंकार की मूर्ति तथा अपने को ही कर्ता धर्ता मानने वाला आसुरी मनुष्य किसी भी विगत जननायक महात्मा अथवा पैगम्बर के नाम पर उसी की शिक्षाओं के प्रतिकूल अनाचार में प्रवृत्त हो जाता है। और इसी अनाचार एवं दुराचार से जब लोक काँप उठता है तब गीता और कुरान के अनुसार, गुनाह (पाप) और कुफ्र (नास्तिकता) को मिटाने और सही

मार्ग को दिखाने के लिये ईश्वर कृपा से किसी महान शक्ति, ईश्वरदूत, वली, पैगम्बर अथवा जननायक का अवतार होता है।

उदाहरणस्वरूप आज से लगभग १४०० वर्ष पूर्व, अरब मरुस्थल और उसके आस पास के भूखण्ड में, रूढ़िवादिता के नाम पर चल रहे दम्भ, पाखण्ड, अनाचार और व्यभिचार से त्रस्त जनता को, अज्ञान के अन्धकार से निकालकर सत्य अथवा ज्ञान के प्रकाश में लाने के निमित्त ईश्वर की अनुकम्पा से मुहम्मद जैसा महात्मा और कुरान जैसा ज्ञान अवतरित हुआ। परन्तु धर्म से केवल अपना स्वार्थ साधन करने वाले अरब मठाधीशों, राजनैतिक और सामाजिक सामन्तों और उनके चंगुल में फँसी हुई रूढ़ि और परम्परा की शिकार, त्रस्त और कराहती हुई भ्रांत जनता तक ने उस अपौरुषेय क्रांति का घोर विरोध किया। फिर भी हजरत मुहम्मद और उनके अनुयायी अनेक अत्याचार और सकटों को झेलकर अपने सर्वस्व बलिदान द्वारा ईश्वर कृपा से जनकल्याण करने में सफल हुए। उस भूखण्ड में अधर्म का नाश हुआ और धर्म की पुन स्थापना हुई।

अस्तु, उस क्रांति को सफल बनाने वाली, ईश्वरीय ज्ञान और सत्य का भण्डार, तत्कालीन राजनैतिक और सामाजिक दुरवस्था से छुटकारा दिलाने वाली और एक ही परमपिता परमेश्वर में अखण्ड विश्वास उत्पन्न कराने वाली पुनीत पुस्तक कुरान में क्या है? उस कुरान को मुसलमान अब किस रूप में समझते हैं, विशेषकर भारतीय मुस्लिम और मुस्लिमेतर बन्धु? नीचे पंक्तियों में कुछ चर्चा इसी संबन्ध में है।

अरब भूखण्ड की प्राचीन झलक

अरब का अर्थ ही मरुभूमि है। एशिया के दक्षिण पश्चिम, यह रेगिस्तान प्रधान देश भी अति प्राचीन काल में आद, समूद जैसी उन्नत जातियों के अधिकार में सभ्यता के शिखर पर आसीन था। इस सूखे प्रदेश में उपजाऊ घाटियां और हरे भरे स्थल भी हैं। अरब के आस पास का देश और अफ्रीका में मिस्र और अबीसीनिया (हबश) तक वहाँ के धर्म आचार और सभ्यता का प्राय सदैव प्रभाव रहा। ईसा से हजार डेढ़ हजार वर्ष पूर्व, इन प्राचीन और परम उन्नतिशील जातियों के काव्य, कला और

कौशल के उत्कर्ष की साक्षी, उस समय की प्रचिलित सैकड़ों किंवदंतियाँ और तत्कालीन इमारतों के ध्वंसावशेष आज भी विद्यमान हैं।

कुरान अवतरण क्यों ?

कुरान की आयतों से स्पष्ट है—"परमेश्वर की कृपा से संसार के सभी भूखण्डों में ईश्वर-दूत (अथवा जननायक) अवतरित होते हैं, और उनके द्वारा सत्य और ज्ञान का प्रकाश होता है। जातियाँ और गिरोह सन्मार्ग पर चल कर समुन्नत होते हैं, और यही जातियाँ और गिरोह कालान्तर में उन्नति की चकाचौंध, स्वार्थ एवं अहंकार में भटक कर अधर्म के मार्ग में फँसे ईश्वर के कोप से नष्ट होते हैं। फिर उनके स्थान पर नवीन समूह नये जननायकों के राह बताने पर ईश्वर कृपा से सुख और समृद्धि प्राप्त करते हैं। ईश्वर एक है, भले ही उसे भिन्न भिन्न नामों से पुकारा जाय। सभी अवतार, वली या पैगम्बर आदर के पात्र हैं और उनके द्वारा प्राप्त सत्य और ज्ञान सब की संपत्ति है।" धर्म ग्रन्थ कुरान में ऐसे अनेक महापुरुषों की चर्चा आई है और अनेक की चर्चा नहीं भी आई जो अन्यत्र हुए हैं। ये सब धर्मशिक्षक और धर्मग्रन्थ एक दूसरे के विपरीत नहीं वरन् एक दूसरे के समर्थक और प्रतिपादक हैं। कुरान का ज्ञान जो ईश्वरीय ज्ञान है किसी एक पोथी में अथवा एक भाषा तथा जन समुदाय के लिये सीमित नहीं। ईश्वरदूत हजरत मुहम्मद द्वारा अरबी भाषा में कुरान इसलिये अवतरित हुआ कि उस भाषा के भाषी और उस भूखण्ड के निवासी अपनी उस समय की धर्म विपरीत दशा को त्याग कर ईश्वर और ईश्वरीय मार्ग को पहचानें। कुरान की आयतें हजरत मुहम्मद के पास ज्ञान के प्रकाश स्वरूप उदय होती थीं, न कि किसी किताब या कलम से। इसीलिये लिखा है कि कुरान 'लौह महफूज' अर्थात लोहे की पाटी में सुरक्षित है अर्थात कोई भूले या भटके यह ज्ञान सर्वकालीन और चिरस्थायी है। कुरानकाल से पूर्व अवतरित, तौरेत, जबूर और इन्जील आदि धर्म-पुस्तकों और इब्राहीम, हूद सालेह, लूत, शुऐब, दाऊद, मूसा, ईसा आदि पैगम्बरों का कुरान समर्थन करती है। इन धर्म ग्रन्थों और महापुरुषों के अनुयायी उनके उपदेशों को त्याग कर एक मनगढ़न्त औ

अपने स्वार्थ में ढाले हुये आचरण को धर्म मानकर उनके नाम पर चलते थे। ऐसा प्राय: सभी देशों, काल और धर्मों में देखने को मिलेगा। आज मुसलमान भी इस दुर्बलता के शिकार होने से बचे नहीं हैं और न दूसरे ही मतावलम्बी। अस्तु, आज से प्राय १४०० वर्ष पूर्व अरब की इसी शोचनीय स्थिति से छुटकारा दिलाने के लिये क़ुरान और मुहम्मद का जन्म हुआ।

मुहम्मदकालीन प्रचलित मत-मतान्तर

क़ुरान में जिन उपदेशों पर बार बार और विशेष ज़ोर दिया गया है, उससे तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक पतन का पूरा पता लगता है। स्थल-स्थल पर विभिन्न गिरोह शासन करते थे। स्वेच्छाचारी महन्त, धर्माधीशों और सामन्तों का बोलबाला था। इन मनमाने मतमतांतरों में भी प्रधानत चार समूहों का उल्लेख मिलता है। ईसाई, यहूदी, मजूसी (अग्नि उपासक) और मुश्रिक। मुश्रिक से तात्पर्य उन लोगों से है जो उपासना में ईश्वर के साथ साथ अन्य महापुरुषों, देवी-देवताओं, तथा मूर्तियों को भी शरीक (शिर्क) करते हैं। अरब के प्रधान नगर मक्का की प्रबल और प्रधान जाति क़ुरैश प्राय मुश्रिक ही थे। अग्नि उपासक भी मुश्रिकों की श्रेणी में लाये जा सकते हैं। यहूदी और ईसाइ क्रमश तौरेत और इंजील धर्म-पुस्तकों और हज़रत मूसा और ईसा के अनुयायी थे। वह भी एक ईश्वरवाद के समर्थक थे और क़ुरान उनका समर्थन करती थी। किन्तु जो दैनिक आचार इन लोगों का उस समय था वह स्वयं इनकी धर्म पुस्तकों के प्रति-कूल था। उदाहरण के लिये देखिये। तौरेत के अनुसार शनिश्चर को मछली का शिकार वर्जित था। यहूदियों का सप्ताह के इस एक दिन में भी मछली का अभाव खटकने लगा। वे शुक्रवार को गड्ढे खोद कर खाड़ियों से जल उनमें भर लेते। शनिश्चर को उस जल की मछलियाँ पकड़ कर खाते और कहते कि यह शिकार तो धर्मानुसार शुक्रवार को ही कर लिया गया था। इसी प्रकार ईसाई एकमात्र ईश्वर की उपासना न कर ईसा को भी ईश्वर का पुत्र मानकर पूजने लगे। यही नहीं यहूदी और ईसाइ एक ही प्रकार की धर्म-शिक्षा मानते हुये भी यह कहते थे कि मूसा और ईसा

ईश्वर से सिफारिश करके अपने अपने अनुयायियों के पापों की क्षमा प्राप्त करवा देगें इस प्रकार अन्य धर्मावलम्बियों की अपेक्षा नर्क से बच जायेंगे। मुश्रिक तो नाना प्रकार की देव-मूर्तियों की उपासना में ही मस्त थे। मक्का के प्रधान मन्दिर काबा में ही ३६० मूर्तियां थीं। इन सब में 'हुब्ल' देवप्रधान थे। मुश्रिक तो मूर्ति पूजा में ऐसा उलझे कि परमात्मा को भूल ही गये। उन मूर्तियों को अपने उचित और अनुचित सभी सुखों को प्राप्त कराने वाला समझ कर उन्हीं में लिपट गये। हां, धार्मिक दृष्टि से दो धर्म और थे। एक साइबी, जो सभी मतों की अच्छी बातों को मानते थे और किसी धर्म के विरोधी न थे। दूसरे मुनाफिक अर्थात् यह धूर्त भी किसी न किसी धर्म का अनुयायी अपने को बताते हुये भी कोई भी धर्माचरण न करते थे और कुमार्ग और भ्रांति की ही बातें सदैव करते थे। उदाहरण के लिये जो अधिक दान देता उसके लिये कहते कि पाखंडी है और धन का वैभव दिखाता है और यदि कोई धनहीन भी दान न देता तो उसे कहते कि कैसा स्वार्थी और मक्खीचूस अथवा अभागा है। मुसलमान होते हुये भी यह मुनाफिक (वञ्चक) निन्दनीय हैं।

मुहम्मदकालीन सामाजिक स्थिति

कुरान काल और उससे पूर्व, सामाजिक आचरण उच्छृंखलता (मन मानी) की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। क्या यहूदी और ईसाई आदि अद्वैतवादी और क्या मुश्रिक जैसे द्वैतवादी, सब, अपने अपने प्राचीन शुद्ध धार्मिक सिद्धांतों को तोड़ मरोड़कर अपने स्वार्थों के अनुकूल बनाये चल रहे थे। पूजन, बलिदान, उपासना सब कुछ अपनी श्रेष्ठता और दूसरों को तिरस्कृत करने के भाव से होती थी, सब में आसुरी भाव का समावेश था। गीता का कथन है—"आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योस्ति सदृशोमया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञान विमोहिता" अर्थात् "मैं बड़ा धनवान और बड़े कुटुम्ब वाला हूं। मेरे समान दूसरा कौन है। मैं यज्ञ करूँगा, दान दूंगा, हर्ष को प्राप्त होऊँगा, इस प्रकार के अज्ञान से मोहित हैं" यही सब ओर चरितार्थ था। शराब, सूदखोरी, महन्ती, सामंती, व्यभिचार, अप्राकृतिक व्यभिचार, स्त्रियों को पशुवत हीन समझना, लड़की-

अपने स्वार्थ में ढाले हुये आचरण को धर्म मानकर उनके नाम पर चलते थे। ऐसा प्राय सभी देशों, काल और धर्मों में देखने को मिलेगा। आज मुसलमान भी इस दुर्बलता के शिकार होने से बचे नहीं हैं और न दूसरे ही मतावलम्बी। अस्तु, आज से प्राय १४०० वर्ष पूर्व अरब की इसी शोचनीय स्थिति से छुटकारा दिलाने के लिये क़ुरान और मुहम्मद का जन्म हुआ।

मुहम्मदकालीन प्रचलित मत-मतान्तर

क़ुरान में जिन उपदेशों पर बार बार और विशेष ज़ोर दिया गया है, उससे तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक पतन का पूरा पता लगता है। स्थल-स्थल पर विभिन्न गिरोह शासन करते थे। स्वेच्छाचारी महन्त, धर्माधीशों और सामन्तों का बोलबाला था। इन मनमाने मतमतान्तरों में भी प्रधानतः चार समूहों का उल्लेख मिलता है। ईसाई, यहूदी, मजूसी (अग्नि उपासक) और मुश्रिक। मुश्रिक से तात्पर्य उन लोगों से है जो उपासना में ईश्वर के साथ साथ अन्य महापुरुषों, देवी-देवताओं, तथा मूर्तियों को भी शरीक (शिर्क) करते हैं। अरब के प्रधान नगर मक्का की प्रबल और प्रधान जाति क़ुरैश प्राय मुश्रिक ही थे। अग्नि उपासक भी मुश्रिकों की श्रेणी में आय जा सकते हैं। यहूदी और ईसाई क्रमशः तौरेत और इञ्जील धर्म-पुस्तकों और हज़रत मूसा और ईसा के अनुयायी थे। यह भी एक ईश्वरवाद के समर्थक थे और क़ुरान उनका समर्थन करती थी। किन्तु जो दैनिक आचार इन लोगों का उस समय था वह स्वयं इनकी धर्म-पुस्तकों के प्रतिकूल था। उदाहरण के लिये देखिये। तौरेत के अनुसार शनिश्चर को मछली का शिकार वर्जित था। यहूदियों को सप्ताह के इस एक दिन में भी मछली का अभाव खटकने लगा। वे शुक्रवार को गड्ढे खोद कर नालियों से जल उनमें भर लेते। शनिश्चर को उस जल की मछलियाँ पकड़ कर खाते और कहते कि यह शिकार तो धर्मानुसार शुक्रवार को ही कर लिया गया था। इसी प्रकार ईसाई एकमात्र ईश्वर की उपासना न कर ईसा को भी ईश्वर का पुत्र मानकर पूजने लगे। यही नहीं यहूदी और ईसाई एक ही प्रकार की धर्म शिक्षा मानते हुये भी यह कहते थे कि मूसा और ईसा

ईश्वर से सिफारिश करके अपने अपने अनुयायियों के पापों की क्षमा प्राप्त करवा देवें, इस प्रकार अन्य धर्मावलम्बियों की अपेक्षा नर्क से बच जायेंगे। मुश्रिक तो नाना प्रकार की देव मूर्तियों की उपासना में ही मस्त थे। मक्का के प्रधान मन्दिर काबा में ही ३६० मूर्तियां थीं। इन सब में 'हुब्ल' देवप्रधान थे। मुश्रिक तो मूर्ति पूजा में ऐसा उलझे कि परमात्मा को भूल ही गये। उन मूर्तियों को अपने उचित और अनुचित सभी सुखों को प्राप्त कराने वाला समझ कर उन्हीं में लिपट गये। हां, धार्मिक दृष्टि से दो वर्ग और थे। एक साइबी, जो सभी मतों की अच्छी बातों को मानते थे और किसी धर्म के विरोधी न थे। दूसरे मुनाफिक अर्थात् वह धूर्त जो किसी न किसी धर्म का अनुयायी अपने को बताते हुये भी कोई भी धर्माचरण न करते थे और कुमार्ग और भ्रांति की ही बातें सदैव करते थे। उदाहरण के लिये जो अधिक दान देता उसके लिये कहते कि पाखंडी है और धन का वैभव दिखाता है और यदि कोई धनहीन भी दान न देता तो उसे कहते कि कैसा स्वार्थी और मक्खीचूस अथवा अभागा है। मुसलमान होते हुये भी यह मुनाफिक (वञ्चक) निन्दनीय हैं।

मुहम्मदकालीन सामाजिक स्थिति

कुरान काल और उससे पूर्व, सामाजिक आचरण उच्छृङ्खलता (मन मानी) की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। क्या यहूदी और ईसाई आदि अद्वैतवादी और क्या मुश्रिक जैसे द्वैतवादी, सब, अपने अपने प्राचीन शुद्ध धार्मिक सिद्धांतों को तोड़ मरोड़कर अपने स्वार्थों के अनुकूल बनाये चल रहे थे। पूजन, बलिदान, उपासना सब कुछ अपनी श्रेष्ठता और दूसरों को तिरस्कृत करने के भाव से होती थी, सब में आसुरी भाव का समावेश था। गीता का कथन है—आढ्योऽभि जनवानस्मि कोऽन्योस्ति सदृशोमया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञान विमोहिता" अर्थात् "मैं बड़ा धनवान और बड़े कुटुम्ब वाला हूँ। मेरे समान दूसरा कौन है। मैं यज्ञ करूँगा, दान दूंगा, हर्ष को प्राप्त होऊँगा, इस प्रकार के अज्ञान से मोहित हैं" यही सब ओर परिताप था। शराब, सूदखोरी, मक्कारी, कामेती, व्यभिचार, अप्राकृतिक व्यभिचार, स्त्रियों को पशुवत हीन समझना, लड़की-

लड़कों में भेद, कन्याओं का वध, भटसौली, दूसरे धर्मों के प्रति असहिष्णुता, गुलामों के साथ अमानुषिक व्यवहार तथा पैगम्बरों और धर्मगुरुओं एवं संतों का कत्ल समाज में चारों ओर हो रहा था। अरब की पुरानी सभ्यता और कला कौशल नष्ट हो चुका था। बिखरते हुए बद्दुओं का सा जीवन था। पिता की स्त्रियों को पिता के मरने के बाद पुत्र आपस में दाय भाग के समान बाँटकर अपनी स्त्रियाँ बना लेते थे। यह सब कुरान तथा तत्कालीन उपलब्ध अन्य साहित्य से प्रगट है। इन्हीं बातों का खण्डन, इन अपराधों के लिये कठोर दण्ड और विश्व के सभी धर्मों को मान्य सदाचार और सन्मार्ग की पुनर्स्थापना ही कुरान का अभीष्ट था।

हजरत मुहम्मद

क्रूरता, नृशंसता और स्वेच्छाचार में सराबोर अरब के इसी अज्ञान काल के विक्रमीय संवत् ६१७ ईस्वी ५६० (हर्षवर्धन काल) में मक्का के प्रसिद्ध कुरेश वंश के हाशिम परिवार में मुहम्मद का जन्म हुआ। इनकी माता का नाम आमना और पिता का अब्दुल्ला था। इनके पिता इनके गर्भकाल में ही स्वर्गवासी हुये। माता धनहीन थीं और शायद मुहम्मद के स्वावलम्बी होने के लिये ही ईश्वर प्रेरणा से ५ वर्ष की अवस्था में वह माता से भी वंचित हो गये। ८ वर्ष की अवस्था में इनके एकमात्र स्नेही और अभिभावक पितामह (बाबा) भी संसार से चल बसे। अब इनका भार इनके चाचा अबूतालिब पर आ पड़ा। अबूतालिब के स्नेहमय संरक्षण में पशुओं को चराते खेलते कूदते उनका स्वच्छन्द बाल्यकाल बीता। युवावस्था में ही उनको अनेक ईसाई सन्तों का समागम प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप, काबा में स्थित मूर्तिपूजा के विकृत स्वरूप ने उनके मन को अधिक विद्रोही बनाने में सहायता दी।

सदाचारी मुहम्मद धर्म और नीति दोनों में कुशल थे। धर्म और धर्म की स्थापना और रक्षा के हेतु नीति को अपनाना वह उचित मानते थे। उदाहरण के लिये रमजान के माह में युद्ध मना था। किन्तु यदि शत्रु उस समय आक्रमण करें तो उनके साथ उस समय युद्ध अनुचित नहीं। यदि शत्रु की आशंका हो तो नमाज (प्रार्थना) के अवसर पर भी हथियारबंद

रहना चाहिये। अस्तु, उन्होंने उस समय मक्का में प्रचलित रूढ़ि और पाखण्डवाद के विरुद्ध आवाज़ उठाई। क्या देश और कोई काल क्यों न हो 'बाप दादा के चल रहे धर्म, पर आस्था होना स्वाभाविक है। कोई यह नहीं सोचता कि बाप-दादों की श्रृंखला जब से सृष्टि चल रही है कहीं जाकर तो गिनी नहीं जा सकती। उन बाप-दादों ने समय समय पर कितनी भिन्न भिन्न मान्यतायें मानों और उनमें कितने सुर असुर सभी होते रहे, इसका विचार कोई नहीं करता। अस्तु उसी बाप-दादा से प्राप्त तत्कालीन पाखण्डवाद और दुराचार में मस्त कुरैश वंश, युवक मुहम्मद के खण्डनात्मक तर्कों से कुपित हो, उसे कष्ट देने लगा। छिपते, भागते फिर भी अपने मार्ग पर दृढ़ मुहम्मद धीरे धीरे लोगों को अपने मतानुकूल बनाते रहे। आरम्भ में तो यह हाल था कि वह अपने प्रकार की (इस्लाम के अनुसार) नमाज़ भी खुलकर नहीं पढ़ सकते थे। इनके निज के परिवार के लोग इनके चचा अबुलहब आदि इनके परम शत्रु बन बैठे और इनके वध का भी यत्न करने लगे। हाँ, इनके संरक्षक और चचा अबूतालिब, जो कहा जाता है मुसलमान तो अन्त तक न हुए, परन्तु इनके सदैव सहायक रहे।

विचारों में समुन्नत और क्रांतिकारी होते हुये भी मुहम्मद पढ़े-लिखे न थे। ईश्वर कृपा और सत्संग से ४० वर्ष की अवस्था में उन्हें 'जिब्राइल' फरिश्ता (देवदूत) के दर्शन हुए और तब से उन्हें कुरान का आयतों का ज्ञान प्रगट होता रहा। यहीं से उनकी पैगम्बरी आरम्भ हुई। यह ज्ञान पद 'आयतें' कहलाती हैं। मुहम्मद ने इन आयतों को मक्का के प्रतिष्ठित मन्दिर के धर्माचार्यों और जनता, सभी को सुनाना समझाना आरम्भ किया। अबूबकर (इस्लाम के पहले खलीफा) हज़रत अली (मुहम्मद साहब के दामाद) तथा कुछ और ज़ोरदार व्यक्ति इनके अनुगामी हो चुके थे। इनका बल कुछ बढ़ता देख कुरैश सरदारों को अपनी प्रतिष्ठा और स्वार्थ की हानि का भय हुआ। उन्होंने इस्लाम के अनुयायियों पर असहनीय अत्याचार आरम्भ कर दिये जिससे भयभीत हो वे मुहम्मद साहब की आज्ञा से अरब छोड़ छोड़ कर अफ्रीका के हबश प्रदेश में जा बसने लगे।

इसी बीच इनके शक्तिशाली चचा अबूतालिब का भी देहान्त हो गया। कुरैशों को रहा सहा भय भी जाता रहा। उन्होंने एक दिन इनकी हत्या का षड्यन्त्र रच डाला। किन्तु ईश्वर कृपा से पूर्व ही सूचना मिल जाने के कारण ५३ वर्ष की अवस्था में वे मक्का से मदीना नगर को चुपचाप प्रस्थान कर गये। इस मक्का प्रस्थान को हिजरत कहते हैं, और उसी काल से हिजरी सम्वत् का आरम्भ माना जाता है।

मुहम्मद साहब इस्लाम के अन्तिम प्रवर्तक (खातिमुन्नबी) माने जाते हैं। रसूलेखुदा पैगम्बर, नबी आदि श्रेष्ठ और परम श्रद्धासूचक सम्बोधनों से उन्हें पुकार कर मुस्लिम धर्मावलम्बी अपने को गौरवान्वित समझते हैं। आरम्भ ही से उनके अनुयायी और सहयोगी सहाबाई कहलाते हैं और मदीना आने पर जिन लोगों ने उनके लिये और इस्लाम के लिये आत्म समर्पण किया वे अन्सार (सहायक) कहलाते हैं। दोनों ही का स्थान पवित्र और श्रेष्ठ था परन्तु कभी कभी अपने अपने दृष्टिकोण से एक दूसरे से अधिक प्रधानता के अधिकारी समझने की होड़ में फस जाते थे।

इस्लाम धर्मावलम्बियों के लिये तो कुरान सर्वस्व है ही परन्तु धर्म, नीति, समाज, न्याय आचार आदि की सर्वतोन्मुखी शिक्षा देने वाला यह पवित्र ग्रन्थ इस्लामेतर बन्धुओं के लिये भी माननीय और आदरणीय है। प्रत्येक आयत का किसी न किसी घटना, व्यक्ति अथवा उस समय की वर्तमान किसी ऐतिहासिक तथ्य से सम्बन्ध अवश्य है। बिना उसको समझे और ध्यान में रखे, आयत के अर्थ को समझने जानने में भ्रम की सदैव आशंका है।

कुरान की आयतों और सूरतों का सङ्कलन और वर्गीकरण मुहम्मद साहब के बाद इस्लाम के खलीफा तथा अन्य प्रमुख सहाबा व अन्सारों के सहयोग से हुआ, और उसी संग्रह को हम सब आज कुरान के रूप में मानते हैं।

मदीना आने के बाद इस्लाम में दीक्षित लोगों की सख्या तो बहुत बढ़ने लगी फिर भी रसूल का जीवन शान्तिमय न रहा। मुसलमान और काफिरों में बराबर युद्ध चलते रहे, मुश्रिकों और यहूदियों से विशेषकर। मक्का विजय और वहाँ के प्रतिष्ठित देवस्थान काबा की मूर्तियों को ध्वंस करने के बाद

से मुश्रिकों का बल तो टूट ही गया था। बाद में जो युद्ध हुये, वे प्राय यहूदियों ईसाइयों और फारस के अग्निपूजकों से हुये।

मक्का विजय के बाद भी मुहम्मद साहब मदीना में ही निवास करते रहे। वहीं ६३ वर्ष की आयु में अपने मिशन को पूरा कर मुसलमानों को विछोह में डाल वे संसार से विदा हो गये। उनकी मृत्यु के बाद वही हुआ जो संसार में सदा और सदैव होता आया है। सादा जीवन और उच्च विचार का आचरण क्षीण पड़ने लगा। कुरान की दी व्यवस्था को त्याग कर लोग ख़िलाफ़त के नाम पर बादशाहत के सुख भोगने लगे। इस्लाम के नाम पर वही सब काम होने लगे जो उसमें वर्जित हैं। राजसी पोशाक, महल, दास-दासी, रत्न आभूषण, साम्राज्य का बढ़ाने के लिये बड़े २ युद्ध, बरबस धर्म-परिवर्तन और कत्लेआम अभी कुछ अपनी आत्मापपासा के लिये होने लगा। यही सब देख-पढ़ कर जो मुसलमान नहीं हैं वह समझने लगे कि कुरान की शिक्षा कदाचित् यही है और मुसलमान स्वयं भी यही समझने लगे कि कुरान की शिक्षा यही है, इसी के अनुकरण से धर्म का पालन होगा। इतना ही नहीं, इस्लाम के नाम पर इस्लाम विपरीत आचरण ने ही मुसलमानों में उस गृहयुद्ध को जन्म दिया जिससे स्वयं उनका समुदाय सदैव के लिये छिन्न-भिन्न हो गया। इसकी बहुत कुछ जिम्मेदारी कुरैश गोत्र के ही उमैया वंश पर थी जिसका बीज इस्लाम के तीसरे ख़लीफ़ा हजरत उस्मान के समय पड़ा और हजरत मुआविया के समय से फलने फूलने लगा।

कुरान

परन्तु 'कुरान' कुरान ही है। वह अति पवित्र है। किसी की शत्रु नहीं, सबकी सखा, सबका हितकर। थोड़ा परिचय नीचे दिया जाता है।

कुरान की आयतों का अभ्युदय महात्मा मुहम्मद के द्वारा उनकी चालीस वर्ष की अवस्था में रमज़ान के पुनीत मास से आरम्भ होकर मरण पर्यन्त होता रहा। यह ३० खण्डों (पारों) और ११४ सूरतों (अध्यायों) में सम्पूर्ण होती है। प्रत्येक सूरत (अध्याय) में कई कई रुकूअ (विराम विशेष) हैं और प्रत्येक रुकूअ में अनेक आयतें (ज्ञान वाक्य) हैं। जो

सूरतें मक्का में नाज़िल (अवतरित) हुई वह मक्की और जो मदीना में अवतरित हुई वह मदनी कहलाती हैं। सूरतों का विभाग किसी विशेष प्रसंग अथवा विषय को लेकर नहीं है। प्राय अनेक विषय और कथानक मिले जुले से स्थल-स्थल पर वर्णित हैं। एकही चर्चा बार बार भी आई है।

"आयतों की भाषा अरबी है, इसलिये कि इस ज्ञान का अवतरण उस समय अरब निवासियों के उद्धार के लिये ही हुआ था।" भाषा गद्य होते हुये भी अनुप्रासों की भरमार से अत्यन्त ललित और आकर्षक है। उदाहरण के लिये देखिये—"वज्ज़ारियाति ज़रवन् (१)+फ़ल्हामिलाति विक़रन् (२)+फ़ल्जारियाति युस्रन् (३)+फ़ल्मुक़स्सिमाति अम्रन् (४)+ फ़ल् मुदब्बिराति अम्रन् (५)।" ईश्वरीय ज्ञान महात्मा मुहम्मद के हृदय में समय समय पर जब उदय होता तो इसी को 'आयत' अथवा 'वही' का उतरना कहते हैं।

क़ुरान के अनुसार एक ईश्वर ही सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाला है। सर्वत्र निराकार स्वरूप का प्रतिपादन है। कहीं कहीं साकार जैसा भी वर्णन प्राप्त है जैसे "ईश्वर सृष्टि रचना करने के उपरांत अर्श पर जा विराजा" "फ़रिश्ते अर्श को उठाये हैं" आदि। परन्तु वस्तुत बारबार यही शिक्षा आई है जिससे प्रभावित होकर, मनुष्य किसी प्रकार की भी साकार उपासना न करके ईश्वर विमुख होने के कुफ़्र से बचा रहे।

'इस्लाम' के अर्थ यह नहीं कि केवल १४०० वर्ष पूर्व हज़रत मुहम्मद द्वारा कोई नवीन मत अथवा धर्म की स्थापना हुई थी। आदि से चले आ रहे, मानव धर्म, संसार के विभिन्न देश और काल में अवतरित धर्मग्रन्थ और आप्त पुरुषों द्वारा प्रदर्शित, बहुत समय पूर्व हज़रत इब्राहीम और सर्वोपरि मूलपुरुष हज़रत आदम का मान्य और भगवद्प्राप्ति का एक मात्र मार्ग ही 'इस्लाम-धर्म' है, भले ही वह किसी नाम से पुकारा जाय। क़ुरान का कथन है कि पहले एक ही जाति और धर्म था। बाद में लोगों के भटकने पर समय समय पर महापुरुष और धर्मग्रंथ पथ प्रदर्शन के लिये आते रहे, और पुन इन्हीं के अनुयायी भ्रान्तिवश अपने अपने को पृथक्

पृथक धर्म का अनुयायी कहने लगे। ईश्वर को सर्वांग आत्मसमर्पण ही वास्तविक सनातन धर्म है जिसका पौराणिक इस्लाम निर्देश करता है।

कुरान के अनुसार यह भी पुष्ट है कि मूल और अपरिवर्तनशील धर्म के अतिरिक्त दैनिक व्यवहार देश-काल पात्र के भेद से आवश्यकतानुसार बदलते रहते हैं। मुहम्मद साहब की पैग़म्बरी पर आक्षेप करते हुये तत्कालीन धर्माचार्य कहते थे कि ईश्वर-दूत भला मनुष्य ही के समान सोता खाता है! उसे तो अलौकिक होना चाहिये। इस पर कुरान का कथन है कि नहीं पैग़म्बर भी तुम मनुष्यों के ही समान होता है, सांसारिक धर्मों में वह भी सकल जनों के समान ही बधा है। वह तो भगवत्प्रेरणा से अलौकिक ज्ञान का जगत में प्रकाश करता और भूले हुओं को राह बताता है। धर्म प्रदर्शन के लिए ईश्वर प्रेरित महान पुरुष मृत्यु पश्चात् अपने अनुयायियों द्वारा उपास्य देव अथवा ईश्वरत्व का साम्राज्य भोगने लगते हैं। जनता कभी इस भ्रान्ति में न पड़े इसलिये 'मुहम्मद केवल प्रेरित मात्र हैं, ईश्वर अथवा उसके साथ में पूजा-उपासना के अधिकारी नहीं' इस पर बहुत ज़ोर दिया गया है।

कुरान में नारी का स्थान

समाज की जननी और निर्माता नारियों की दशा उस समय अरब में अति दयनीय थी। वह केवल विलास और सेवा की सामग्री समझी जाती थीं। उन्हें पुरुषों की बात का उत्तर तक देने का अधिकार न था। एक साथ अनेक पत्नियाँ रखना, यहाँ तक कि पिता के मरने पर अन्य सम्पत्ति के समान उसकी स्त्रियाँ भी पुत्रों में बाँट ली जाती थीं। ऐसी विपरीत दशा में स्त्रियों के लिए सम्पत्ति में उत्तराधिकार, तलाक, मेहर (विवाह में पत्नी को दिया जानेवाला दहेज़) और निकाह आदि के नियम और संयम कुरान में एक महान क्रान्ति के परिचायक हैं। अपनी निकाह की हुई पत्नी के अतिरिक्त किसी भी स्त्री के साथ व्यभिचार उतना ही निषिद्ध और दयनीय था जितना स्त्री के लिए दुश्चरित्रा होना। कुरान का कथन है। "स्त्री अथवा पुरुष जो भी व्यभिचार का दोषी हो उसे १०० कोड़े की

सजा दी जाय। उनकी इस सजा पर लोग तरस न खाँय बल्कि उस अवसर पर तमाशा देखने एकत्र हों ताकि यह लज्जा जनक दृश्य दूसरों को शिक्षाप्रद हो।"

मूर्ति पूजा

मूर्तिपूजा का कुरान में सर्वोपरि विरोध है। कुफ्र (नास्तिकता) का यह सबसे बड़ा लक्षण है। मूर्तिपूजा का जो विकृत स्वरूप उस समय अरबमें फैला था उस गढ्ढे से समाज को निकालने के लिये यह आवश्यक था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस की माता काली की आराधना द्वारा भगवान् में तन्मयता और तल्लीनता को सामने रखकर साकार उपासना के शुद्ध स्वरूप से भले ही कुरान के प्रेरक को विरोध न हो फिर भी अपवाद को छोड़कर प्रायः यही भय सम्भव है कि भगवल्लीनता के स्थान पर मनुष्य भगवद्विमुख हो कालान्तर में ध्यान के इस साधन से अपने को विभिन्न वर्गों में बाटने और मानव के द्वारा मानव के शोषण में लग जाय। इसलिए परिष्कृत से परिष्कृत स्वरूप में भी मूर्ति पूजा अथवा व्यक्ति पूजा कुरान को मान्य नहीं।

'इख्लास'

लोग मानें या न मानें, 'इख लास' इस्लाम का सार है। जरा गीता के सन्यास और योग के समन्वय की झलक देखिये। 'इख लास' मस्तिष्क की उस स्थिति का द्योतक है जब वह फल की कोई आशा न रखते हुये निष्काम भगवदर्पण कर्म करते हुये मनसा वाचा कर्मणा आत्मा को परमात्मा में लीन कर दे। स्वर्ग और मोक्ष तक की कामना 'इख लास' में बाधक है (तफ सीर कबीर)। "इख्लास के साथ मेरा ही भजन करनेवाला मुझे सबसे पहले प्राप्त करेगा।" मानवसमाज की सेवा ही प्रधान कर्म है' "किसी का अधिकार छीनने वाला ईश्वर के एकत्व में कभी विश्वास नहीं करता।" 'जेहाद' भी इसी निष्काम और निस्संग कर्म का ही स्वरूप है। "अपने को भूलकर अपने स्वार्थों को त्यागकर, धर्म मार्ग (पर सेवा) में कर्म करते करते बलिदान होजाना।" इस प्रकार भगवदर्पण करने वाला ही मुस्लिम है। यही इस्लाम है। यही इब्राहीम आदि का आचरित सनातन धर्म है।

फरिश्ता-शैतान

कुरान में फरिश्तों और शैतान की चर्चा का बाहुल्य है। मनुष्य को कुमार्ग पर रोकने और प्रेरित करने वाली सद्बुद्धि और पापबुद्धि ही के यह प्रतिनिधि हैं। पवित्रता, सच्चरित्रता, व्रत-उपवास (रोज़ा), प्रार्थना (नमाज़), अनाथों की रक्षा, वृद्ध, स्त्रियों और अन्य धर्मों के आचार्यों के वध और उन पर अत्याचार का निषेध, बलिदान (कुर्बानी), खाद्य अखाद्य (हराम-हलाल), तीर्थ-यात्रा (हज्ज-उम्रा) प्रायश्चित्त (कफ़्फ़ारा), दान पुण्य (ज़कात), शरणार्थियों (ज़िम्मी) की सुरक्षा, दासप्रथा का विरोध, भ्रातृभाव, समानता, अकारण हिंसा जुआ-शराब पटतौली का निरोध, स्त्रियों को दायभाग, रजस्वला काल में अस्पृश्यता, सृष्टि रचना, प्रलय (क़यामत), कृपणता और फ़िज़ूलख़र्ची दोनों की समान निन्दा स्वाध्याय, उपासना, अतिथि सत्कार आदि पंच महायज्ञों जैसे पुण्य कार्य, स्त्रियों का सम्मान, कन्याओं का वध तथा अनाथ धन अपहरण का तिरस्कार—इस प्रकार सार्वभौम मान्य विधि और निषेध प्रकारान्तर से पुनीत कुरान में भी स्थल स्थल पर जनमात्र को चेतावनी देते हैं।

क़ाफ़िर

इस्लाम के साथ 'क़ाफ़िर शब्द भी एक दिलचस्पी की वस्तु है। क्या मुसलमान और क्या अन्य धर्मावलम्बी—जनसाधारण को इसको समझने में भ्रान्ति रहती है। काफ़िर के अर्थ हैं इन्कार करने वाला'। इस्लाम के अनुसार ईश्वर के एकत्व और सत्ता में अविश्वासी ही काफ़िर है। यदि यही अर्थ हैं तब तो किसी के मन को ठेस लगने की बात नहीं। एक विशेष अर्थवाची शब्द मात्र है, गाली नहीं। फिर भी कहनेवाला और जिसके लिये कहा जाय दोनों ही 'काफ़िर' शब्द को अपमानजनक समझते हैं। इसका कारण एक विशेष व्यवहार का लम्बा इतिहास है।

काफ़िर दो प्रकार के होते हैं। एक तो वह जो इस्लाम को स्वीकार न कर ईश्वर के एकत्व को नहीं मानते अथवा उसके अतिरिक्त अन्य देवों की उपासना (शिर्क) करते हैं। दूसरे वह काफ़िर जो न केवल यही करते

वरन् मुसलमानों के धर्म में बाधा देकर उनके विरुद्ध युद्ध और अत्याचार करते, जैसा सामना मुसलमानों को आरम्भ में मक्का में हुआ था। इन दूसरे प्रकार के काफिरों के लिये ही कुरान में आया है, "जहाँ पाओ उनका वध करो। उनके नाश में उस समय तक प्रवृत्त रहो जब तक एक ईश्वर धर्म की स्थापना न हो जाय।" पहले प्रकार के काफिर कुरान में सम्य हैं। हजरत मुहम्मद साहब के अभिभावक और चचा स्वयं अबूतालिब भी अन्त तक मुसलमान न होते हुए भी सदैव सबके श्रद्धा के पात्र रहे। मदीना प्रस्थान के आपत्तिकाल में मुश्रिकों की ही सहायता पैगम्बर को बराबर प्राप्त हुई थी।

मुश्रिक द्वैत उपासनावादियों को कहते हैं। सब मुश्रिक काफिर हैं किन्तु सब काफिर मुश्रिक नहीं। उदाहरण के लिये, एक नास्तिक काफिर है किन्तु मुश्रिक नहीं कहा जायगा। यहूदी और ईसाई ईसा आदि को पूजने लगने पर भी मुश्रिक नहीं कहे जा सकते। साधारणतः हिन्दू मुश्रिक समझा जाता है। प्रचलित मूर्तिपूजा पद्धति को देखते हुये इस्लाम के अनुसार ये काफिर या मुश्रिक हैं केवल इसलिए यह अर्थ नहीं कि उनका नाश अथवा जबरन उनका धर्म परिवर्तन इस्लाम को स्वीकार है। और वेदान्त दर्शन की भित्ति पर आधारित देवोपासना पर तो लाञ्छन कुरान की दृष्टि से भी नहीं आता।

तात्पर्य यह कि काफिर शब्द से मुस्लिम और अमुस्लिम जनता में उत्पन्न कटुता एक कोरी भ्रान्ति है। अपनी अपनी अवस्था के अनुसार, एक दूसरे के सहअस्तित्व का विचार करते हुये दोनों एक साथ मेल-जोल से रहें, यही कुरान का आदेश है। "पृथ्वी के प्रत्येक भाग में प्रत्येक गिरोह में सदैव महापुरुष आ आकर ईश्वर का मार्ग दिखलाते रहे हैं। वे सभी आदरणीय और मान्य हैं। उनमें भेद डालनेवाले काफ़िर हैं।" भले ही संसार में वे किसी भी नाम से पुकारे जाते हों। मुनाफ़िक (मक्कर-धूर्त) की सबसे अधिक निन्दा है। उनकी सद्गति असम्भव है। चाहे वह किसी भी धर्म का नाम लेवा हों। काफ़िर के एक अर्थ यह भी हैं कि 'वह, जो

छिपाता है' । अर्थात् बाहरी रूप तो कुछ है, और उस आडम्बर के भीतर न जाने वह कितने राग द्वेष और अहंकार को छिपाता है । संसार भले ही न माने परन्तु खुदा से वह छिपा नहीं । अपने असली रूप को छिपाने वाले भी उपरोक्त अर्थ से काफ़िर की संज्ञा में आते हैं । ऐसे काफ़िर संसार के प्रत्येक धर्म में दिखाई देंगे ।

आईन (कानून)

आईन (न्याय) की भी कुरान में स्थान स्थान पर व्यवस्था है । स्त्रियों को सम्पत्ति में भाग, निकाह, तलाक आदि के नियम, व्यभिचार पर स्त्री पुरुष का समान ही कठोर दण्ड, गवाहियों का विचार, चोरी, हत्या आदि पर नियम और दण्ड का विधान है । दण्ड अति कठोर हैं । उदाहरण के लिये—"चोर के हाथ काट डालो' "प्राण के बदले प्राण, आँख के बदले आँख और प्रत्येक अंग के बदले उसी अंग का बदला अपराधी को मिले ।'

स्वर्ग-नरक

इस्लाम के मूल लक्ष्य नि स्वार्थ भगवल्लीनता के अतिरिक्त, सांसारिक सुखों की कामना करनेवालों को भी स्वर्ग का मार्ग है । स्वर्ग-नरक के भले बुरे चित्र कुरान में भी प्राप्त हैं । मरुस्थल के लिए सर्वप्रिय और दुर्लभ जल पूरित नहरें और सदाबहार उद्यानों की पुण्यकर्मों के लिये बड़ी चर्चा है । क़यामत (प्रलय) में सबके कार्यों का लेखा जोखा होगा । उसमें किसी प्रकार की दया अथवा सिफ़ारिश काम न देगी ।

शोषित-शोषक

एक बात बड़े मार्के की है । सूरे हूद की २७ वीं आयत में उल्लेख है कि मक्का के धन और कुलाभिमानी मुखिया मुहम्मद साहब का उपहास करते और कहते कि तुम्हारे सहायक तो केवल वही लोग हैं जो हम में नीच हैं । इस कथन में एक सर्वकालीन सत्य की झलक है । संसार में जब-जब भी कोई क्रांति और धर्म हुई अथवा सन्मार्ग की स्थापना हुई है तब-तब उस समय के मान्य धर्म और शक्ति के अधिकारी उस क्रान्तिदूत का विरोध और दमन

करते रहे हैं और नीच तथा शोषित वर्ग ही की सहायता से क्रान्ति सफल होती है। आसुरी प्रवृत्ति से आच्छन्न महान विद्वान और पराक्रमी ब्राह्मण-श्रेष्ठ रावण के विरुद्ध त्रस्त मुनियों तथा हेय वन्य जीवों द्वारा राम की सहायता कैथेलिक साम्राज्यवाद से साधन हीन निहिलिस्टों और प्रोटेस्टेण्टों का मोर्चा, संस्कृताभिनी उन्मत्त पण्डितों द्वारा तुलसी के नागरी ग्रन्थ मानस के परिहास को झेलकर आज उसी तुलसी रामायण का अखिल भारत में सामान्य भोग और फल की बात है कि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में किसान, मजदूर आदि शोषितों के बल द्वारा ही हमारे राष्ट्र नायकों को अपने संकल्प में प्रधान सहायता प्राप्ति भी इसी की पुष्टि करते हैं। भारत की केवल पार्थिव बेड़ियाँ ही नहीं टूटीं वरन् इधर कई सदियों से चले आ रहे धनी-निर्धन, ऊँच-नीच, स्पृश्य अस्पृश्य तथा धर्म, पन्थ अथवा जातियों के नाम पर बँटे 'जीवस्य जीवाहार' में रत भारतीयों की आध्यात्मिक उन्नति का द्वार भी खुल रहा है।

अन्त में

इस समय विस्तार-भय से अधिक नहीं लिख रहे हैं। कुरान के एक निर्देश की ओर संकेत जरूरी है। "तुम्हारा किया तुम्हारे काम आवेगा, हमारा किया हमारे काम। एक का काम दूसरे की सहायता नहीं कर सकता।" इसलिये चाहे मुसलमानों के शिया, सुन्नी, कादियानी आदि विभिन्न फिर्कों में, और चाहे मुसलमान एवं अन्य धर्मावलम्बियों के बीच, जो भी परस्पर व्यवहार भूतकाल में रहा हो, उसमें बीते हुये इतिहास को सामने रखकर वैर प्रीति न करना चाहिये। बीते हुये लोग आज नहीं हैं। उनके कर्म और कर्मफल भी उन्हीं के साथ गये। अब कुरान तथा सभी धर्म ग्रन्थों की वास्तविक शिक्षा के अनुसार सद्भावना, सह अस्तित्व और सब कल्याण का मार्ग ही अपनाना सबको उपयुक्त है।

नन्दकुमार अवस्थी

क़ुरान शरीफ़

सूरे फ़ातिहा

यह सूरत (अध्याय) मक्के में उतरी इसमें ७ आयतें १ रुकू हैं।

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है।

हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को है, जो सब संसार का पालनकर्त्ता है। (१) निहायत दयावान मेहरबान है। (२) न्याय के दिन (क़यामत, महाप्रलय) का मालिक। (३) ऐ ख़ुदा! हम तेरी ही पूजा करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं। (४) हमको सीधी राह दिखला। (५) उन लोगों की राह जिन पर तूने कृपा की। (६) न कि उनकी जिन पर तू ग़ुस्सा हुआ और न भटके हुओं की। (७) [रुकू १]

पहिला पारा

सूरे बक़र मदीने में उतरी, इसमें २८६ आयतें और ४० रुकू हैं।

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत दयावान मेहरबान है। अलिफ़-लाम-मीम† (१) यह वह पुस्तक है, जिसमें (कलामे ख़ुदा होने में) कुछ भी सन्देह नहीं, विश्वास (ईमान) लानेवालों को राह बताती है। (२) जो अनदेखे पर ईमान लाते और नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दे रक्खा है, उसमें से ख़ुदा की राह में भी ख़र्च करते हैं।

---

† अलिफ, लाम, मीम इनका क्या अर्थ है? इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं। इसका वास्तविक ज्ञान केवल ईश्वर ही को है। इस प्रकार के जितने अक्षर क़ुरान में हैं, उनको हुरूफ़ मुक़त्तआत कहा जाता है।

(३) और ऐ मोहम्मद जो किताब (क़ुरान) तुम पर उतरी और जो तुमसे पहिले (इञ्जील तौरेत वगैरा) उतरीं, उनको जो मानते† और क़यामत (प्रलय)‡ पर भी विश्वास करते हैं। (४) यही लोग अपने परवर्दिगार की सीधी राह पर हैं और यही मनमाने फल पायेंगे। (५) जिन लोगों ने इन्कार किया तुम उनको डराओ, या न डराओ, वह न मानेंगे§। (६) उनके दिलों पर और उनके कानों पर अल्लाह ने मुहर लगादी है और उनकी आँखों पर पर्दा है और क़यामत में उनके लिये बड़ी सजा है। (७) [रुकू १]

लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो कह देते हैं कि हम अल्लाह पर और क़यामत पर ईमान लाये, हालांकि वह ईमान नहीं लाये¶। (८) (वे) अल्लाह को और उन लोगों को जो ईमान ला चुके हैं, धोखा देते हैं, मगर नहीं जानते कि वह अपने आपको धोखा देते हैं। (९) उनके दिलों में इन्कारी का रोग था—अब अल्लाह ने उनका मरज बढ़ा दिया और उनको झूठ बोलने की सजा में दुखदाई दंड मिलना है। (१०) और जब

---

† पिछली आसमानी किताबों (तौरात, इंजील वगैरा) में आगे आनेवाली जिस आसमानी किताब का जिक्र है वह अल्लाह की देन क़ुरान ही है। इसलिए उसमें लिखी हुई व पिछली किताबों में भी दी हुई बातों पर निस्सन्देह यक़ीन रखना व उनके बताये रास्ते पर चलना परहेजगार (संयमी) का फ़र्ज है।

‡ क़यामत (महाप्रलय) वह दिन होगा जब संसार उलट-पलट और नष्ट भ्रष्ट हो जायगा। जब किसी की बनावटी हुकूमत न रहेगी। सिर्फ सच्चा हाकिम खुदा ही न्याय सिंहासन पर विराजमान होगा और उसी की आज्ञा मानी जायगी।

§ कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अच्छी बात सुनना ही नहीं चाहते, ऐसे लोग ईमान नहीं ला सकते।

¶ यहाँ से उन लोगों का हाल है, जो मुंह से तो अपने को मुसलमान कहते थे, पर दिल से काफिर थे। ये लोग इधर की बात उधर लगाते और झगड़ा खड़ा करते। जब उनको समझाया जाता, तो कहते कि हम तो दोनों दलों में मेल कराना चाहते हैं।

उनसे कहा जाता है कि देश में फ़साद मत फैलाओ, तो कहते हैं हम तो मेल-जोल करानेवाले हैं। (११) और यही लोग फ़सादी हैं; परन्तु समझते नहीं हैं। (१२) और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह लोग ईमान लाये हैं, तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं, क्या हम भी ईमान ले आयें, जिस तरह मूर्ख ईमान ले आये हैं। सुनो! यही लोग मूर्ख हैं परन्तु समझते नहीं (१३) और जब उन लोगों से मिलते हैं, जो ईमान ला चुके हैं, तो कहते हैं—हम तो ईमान ला चुके हैं और जब एकांत में अपने शैतानों से मिलते हैं, तो कहते हैं—हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो सिर्फ़ (मुसलमानों से) मजाक करते हैं। (१४) अल्लाह उनसे हँसी करता है और उनको ढील देता है। वे इस सरकशी में भटकते रहेंगे। (१५) यही हैं वह लोग जिन्होंने हिदायत (शिक्षा) के बदले भटकना मोल लिया, सो न तो इनका व्यापार (सांसारिक) ही लाभकारी हुआ न सच्चे मार्ग पर ही क़ायम रहे। (१६) इनकी कहावत उन आदमियों† की सी है, जिन्होंने आग जलाई, फिर जब उनके आस-पास की चीज़ें जगमगा उठीं, तो अल्लाह ने उनकी रोशनी (आँखें) छीन ली और उनको अँधेरे में छोड़ दिया। अब उनको कुछ नहीं सूझता। (१७) बहरे, गूँगे, अंधे§ की तरह यह सच्चे मार्ग पर नहीं आ सकते। (१८) उनकी यह मिसाल वैसी है जैसेकि आकाश से जल बरसे, उसमें अँधेरा, गरज और बिजली हो और उस वक्त कोई मरने के डर से कड़क के मारे अँगुलियाँ कानों में ठूस लेता हो‡। अल्लाह इन्कार करने

---

† कुछ लोग ऐसे थे, जो पहले तो मुसलमान हो गये थे, लेकिन बाद में मुनाफ़िक़ बन गये। इन लोगों ने पहले ईमान की रोशनी देखी, फिर उससे हटकर मुनाफ़िक़त के अँधेरे में चले गये।

§ सत्य को सुनने, कहने व देखने में असमर्थ।

‡ मेंह का अर्थ यहाँ इस्लाम है। मुसलमान तो ख़ुदा का हर हुक्म मानते, परन्तु मुनाफ़िक़ उन हुक्मों को न मानते, जिनमें किसी तरह की कठिनाई होती। 'मीठा-मीठा हप कड़वा-कड़वा थू' वाली बात थी। दूसरे शब्दों में बिजली की चमक में चलते और जब उसकी कड़क सुनते तो न चलते।

वालों को घेरे हुये है। (१६) क़रीब है कि बिजली उनकी निगाहों को झपका दे, जब उनके आगे बिजली चमकी, तो उसमें कुछ चले और जब उन पर अँधेरा छा गया, तो खड़े रह गये, अगर अल्लाह चाहे तो उनके सुनने और देखने की शक्तियाँ छीन ले। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज की कुदरत रखनेवाला है। (२०) [रुकू २]।

लोगों! अपने पालनकर्त्ता की पूजा करो। जिसने तुमको और उन लोगों को जो तुमसे पहिले हो गुजरे हैं पैदा किया, ताज्जुब नहीं तुम (भी) परहेजगार बन जाओ। (२१) जिसने तुम्हारे लिए जमीन का फ़र्श बनाया और आसमान की छत। आसमान से पानी बरसाकर उससे तुम्हारे खाने के फल पैदा किये; पस, किसी को अल्लाह के बराबर मत बनाओ और तुम तो जानते हो। (२२) और यह जो हमने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर (क़ुरान) उतारी है। अगर तुमको उसमें शक हो, तो तुम उसके मानिन्द (उसी शक्ल की) एक सूरत (अध्याय) बना लाओ और सच्चे हो, तो अपने हिमायतियों को बुलाओ। (२३) पस, अगर इतनी बात भी न कर सको और हरगिज न कर सकोगे, तो (दोजख की) आग से डरो, जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और यह इन्कार करनेवालों (काफ़िरों) के लिए तैयार है। (२४) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये, उनको खुशखबरी सुना दो कि उनके लिए (बहिश्त के) बाग हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जब उनको उनमें का कोई मेवा खाने को दिया जायगा, तो कहेंगे—यह तो हमको पहिले ही मिल चुका है और उनको एक ही प्रकार के मेवे मिला करेंगे और वहाँ उनके लिए बीबियाँ पाक साफ़ होंगी और वह उनमें सदैव रहेंगे। (२५) अल्लाह किसी मिसाल के बयान करने में नहीं झेंपता, (चाहे वह मिसाल) मच्छर की हो या उससे भी बढ़कर तुच्छ हो§। सो जो लोग ईमान ला चुके हैं, वह तो विश्वास रखते हैं कि

§ क़ुरान में कहीं कहीं मक्खी और मकड़ी की भी मिसाल दी गई है। इस को सुनकर काफ़िर कहते थे कि खुदा को इन छोटी छोटी चीजों की मिसालें न देना थी। खुदा की जात तो बड़ी है। इसका जवाब दिया गया है

यह उनके पालनकर्त्ता की तरफ से ठीक है और जो इन्कारी हैं, यह कहते हैं कि इस मिसाल के बयान करने में खुदा को कौन सी गरज थी। ऐसी ही मिसाल से खुदा बहुतेरों को भटकाता और ऐसी ही मिसाल से बहुतेरों को नसीहत देता है, लेकिन पापियों को ही भटकाता है। (२६) जो पक्का किये पीछे खुदा का अहद तोड़ देते और जिन सम्बन्धों को जोड़े रखने को खुदा ने कहा है, उनको काटते और देश में फसाद फैलाते हैं, यही लोग नुक्सान उठायेंगे। (२७) लोगों! क्योंकर तुम खुदा का इन्कार कर सकते हो और तुम बेजान थे, तो उसने तुममें जान डाली, फिर (वही) तुमको मारता- (वही) तुमको जिलायेगा, फिर उसकी तरफ लौटाये जाओगे। (२८) वही है, जिसने तुम्हारे लिए धरती की चीजें पैदा कीं फिर आकाश की तरफ ध्यान दिया, तो सात आकाश हमवार बना दिये और वह हर चीज से जानकार है। (२९) [रुकू ३]

जब तुम्हारे पालनकर्ता ने फरिश्तों से कहा—"मैं जमीन में नायब बनाना चाहता हूँ" (तो फरिश्ते) बोले—क्या तू जमीन में ऐसे को (नायब) बनाता है, जो उसमें फसाद फैलाये और खून बहाये। हम स्तुति वन्दना के साथ तेरी बड़ाई बयान करते हैं। बनाना है, तो नायब हमें बना। (खुदा ने) कहा—मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (३०) और आदम को सब (चीजों के) नाम बता दिये, फिर उन चीजों को फरिश्तों के सामने पेश करके कहा कि अगर तुम सच्चे हो, तो हमको इन चीजों के नाम बताओ। (३१) (फरिश्ते) बोले—तू पाक है, जो तूने हमको बता दिया है। उसके सिवा हमको कुछ मालूम नहीं। सचमुच तू ही जाननेवाला बसलाहत पहचाननेवाला है। (३२) (तब खुदा ने) हुक्म दिया कि ऐ आदम! तुम फरिश्तों को इनके नाम बता दो, फिर जब आदम ने फरिश्तों को उन (चीजों) के नाम बता दिये, तो खुदा ने फरिश्तों से कहा—क्यों हमने तुमसे नहीं कहा था कि आकाश की और धरती की सब छिपी चीजें हमें मालूम हैं और जो तुम जाहिर करते हो और जो

कि जब खुदा ने इन छोटी चीजों को पैदा करने में शर्म न की तो उनकी मिसाल देते क्यों शर्मायें।

कुछ तुम हमसे छिपाते थे (वह) हमको (सब) मालूम है। (३३) और जब मैंने फरिश्तों से कहा कि आदम के आगे झुको, तो †शैतान को छोड़कर (सारे फरिश्ते) झुक पड़े। उसने न माना और शेख़ी में आ गया और हुक्मउदूली कर बैठा। (३४) और मैंने कहा ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीवी बहिश्त में बसो और उसमें जहाँ कहीं से तुम्हारी जो तबियत चाहे बेखटके खाओ मगर इस पेड़ के पास मत फटकना (ऐसा करोगे) तो अपराधी हो जाओगे। (३५) पस शैतान ने उनको बहकाया और उनको निकलवाकर छोड़ा मैंने हुक्म दिया कि तुम उतर जाओ तुम एक के दुश्मन एक और जमीन में तुम्हारे लिये एक वक़्त तक ठिकाना और (जीवन काटने का) साज व सामान है। (३६) फिर आदम ने अपने पालनकर्ता से कुछ बातें सीख लीं और ख़ुदा ने उसकी तोबा मान ली बेशक वह बड़ा ही क्षमा करनेवाला मेहरबान है (३७) जब मैंने हुक्म दिया कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ। और हमारी तरफ से तुम लोगों के पास कोई हिदायत पहुँचेगी तो जो हमारी हिदायत की पैरवी करेंगे उन पर न तो डर होगा और न वह रन्जीदा होंगे (३८) जो लोग मुन्किर (नास्तिक) होंगे और हमारी आयतों को झुठलायेंगे वही दोज़ख़ी होंगे वह सदैव दोज़ख़ में रहेंगे। (३६) [रुकू ४]

‡ ऐ बनी इस्राईल (ऐ याक़ूब की संतान) मेरे अहसानों को याद करो जो हम तुम पर कर चुके हैं और तुम उस प्रतिज्ञा को पूरा करो जो

---

† इब्लीस एक नेक 'जिन' था। अल्लाह के हुक्म से फरिश्तों ने फसादी फरिश्तों को जब मारकर और डरा कर जंगलों और पहाड़ों में भगा दिया, तो इब्लीस की प्रार्थना पर आकाश पर फरिश्तों ने उसे अपने साथ रख लिया। आकाश पर पहुँचकर इब्लीस ने बड़ी कठिन उपासना से अल्लाह को खुश करके ज़मीन का मालिक बनना चाहा। लेकिन जब ज़मीन हज़रत आदम के सुपुर्द होने लगी तो इब्लीस ने ख़ुदा का हुक्म न माना और आदम का दुश्मन बन गया और तबसे उसने (शैतान ने) हमेशा इन्सान से दुश्मनी की।

‡ 'बनी इस्राईल' हज़रत याक़ूब के बारह बेटे व उनकी औलाद को कहते हैं यह किसी समय मिस्र के बादशाहों (फ़िरऔनों) के कुशासन में पड़

मुझसे की है मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा जो (मैंने) तुमसे की है और मुझ से डरते रहो। (४०) और कुरान जो हमने उतारी है उस पर ईमान लाओ (और यह) उस किताब (तौरात) की तसदीक करता है जो तुम्हारे पास है और (सबसे) पहले इसके इन्कारी न बनो और मेरी आयतों के बदले में थोड़ी कीमत (यानी दुनियावी लाभ प्राप्त मत करो और हम ही से डरते रहो (४१) सच को झूँठ के साथ मत मिलाओ। जान बूझकर सत्य को मत छिपाओ। (४२) नमाज पढ़ा करो और ज़कात‡ दिया करो और जो लोग (नमाज में) झुकते हैं उनके साथ तुम भी झुका करो। (४३) क्या तुम लोगों से भलाई करने को कहते हो और अपनी खबर नहीं लेते हालाँकि तुम किताब (तौरात) पढ़ते रहते हो क्या तुम इतना नहीं समझते ? (४४) सब्र और नमाज का सहारा पकड़ो। निस्सन्देह नमाज कठिन काम है मगर उन पर नहीं जो मुझसे डरते हैं। (४५) जो यह ख्याल रखते हैं कि वह अपने पालनकर्ता से मिलनेवाले और उसकी तरफ लौटकर जानेवाले हैं। (४६) [रुकू ५]

ऐ याकूब के बेटों। मेरे उन एहसानों को याद करो जो मैं तुम पर कर चुका हूँ और इस बात को भी याद करो कि मैंने तुमको संसार के लोगों पर प्रधानता दी थी। (४७) उस दिन से डरो जब कोई मनुष्य किसी मनुष्य के कुछ काम न आयेगा न उसकी तरफ से (किसी की) सिफारिश कबूल होगी, न उससे कुछ बदले में लिया जायगा और न लोगों को कुछ (कहीं से) मदद पहुँचेगी। (४८) (उस समय को याद करो) जब हमने तुमको फिरऔन§ के लोगों से छुड़वाया जो तुम पर जुल्म करते थे। वे तुम्हारे बेटों को हलाल करते और

गये थे, तब हजरत मूसा ने फ़िरऔनों को नष्ट करके बनी इस्राईल को अधिकारी बनाया। इन्हीं के वंशज यहूदी हैं। हजरत मूसा पर नाजिल 'तौरात' इनका आकाशी धर्म ग्रंथ है।

‡ चालीसवाँ हिस्सा आमदनी का जो खुदा की राह पर मुसलमान लोग लगाना देते हैं।

§ यह मूसा के वक्त में मिस्र के बादशाहों का खिताब था।

तुम्हारी स्त्रियों (यानी बहू बेटियों) को (अपनी सेवा के लिए) जीवित रहने देते इसमें तुम्हारे पालनकर्ता की बड़ी आजमाइश थी। (४६) (यह वक्त भी याद करो) जब मैंने तुम्हारी वजह से नदी को फाड़ दिया फिर तुमको बचाया और फिरऔन के लोगों को तुम्हारे देखते डुबो दिया। (५०) और (वह वक्त भी याद करो) जब मैंने मूसा से (तौरात देने के लिए) चालीस रातों (यानी एक चिल्ला) की प्रतिज्ञा की फिर तुमने उनके पीछे (पूजन के लिए) बछड़ा बना लिया और तुम जुल्म कर रहे थे। (५१) फिर इसके बाद भी मैंने तुमको क्षमा किया। शायद तुम अहसान मानो। (५२) और (यह समय भी याद करो) जब मैंने मूसा को किताब (तौरात) और कानून फैसल (यानी शरीयत) दी ताकि तुम हिदायत पाओ। (५३) (यह समय भी याद करो) जब मूसाने अपनी जाति से कहा कि तुमने बछड़े की पूजा करने से अपने ऊपर जुल्म किया तो (अब) अपने सृष्टिकर्ता के सामने तौबा करो और अपने आप को मार डालो तुम्हारे पैदा करनेवाले के सामने तुम्हारे लिए यही उत्तम है। फिर खुदा ने तुम्हारी तौबा कबूल करली। बेशक वह बड़ा तौबा कबूल करने वाला मेहर्बान है। (५४) (यह समय याद करो) जब तुमने कहा था कि ऐ मूसा जब तक हम खुदा को सामने न देख लें हम तो किसी तरह तुम्हारा विश्वास करनेवाले नहीं इस पर तुमको बिजली ने आ दबोचा और तुम देखते रहे। (५५) फिर तुम्हारे मरने के बाद मैंने तुमको जिला दिया कि शायद तुम शुक्र अदा करो। (५६) मैंने तुम पर बादल की छाया की और तुम पर मन† और सलवा‡ भी उतारा और हमने जो तुमको पवित्र भोजन दिए हैं खाओ और इन लोगों ने मेरा तो कुछ नहीं बिगाड़ा लेकिन अपना ही खोते रहे। (५७) और (वह समय याद करो) जब मैंने तुमको आज्ञा दी कि इस गाँव में जाओ और उसमें जहाँ चाहो निश्चिंत होकर खाओ। दरवाजे में माथा नवाते हुए दाखिल होना और मुँह से 'हित्तुन' हमारी तौबा है कहते जाना तो हम तुम्हारे अपराध

---

† मीठी चीजें जो रात में पत्तों पर जम जाती हैं।

‡ बटेर जैसी चिड़िया का मांस।

क्षमा करेंगे और जो हमारी आज्ञा भलीभाँति पालन करेंगे उनको ऊपर से सवाब देंगे। (५८) तो जो लोग अन्यायी थे दुआएँ जो उनको बताई गई थीं उनको बदलकर दूसरी बोलने लगे तो हमने उन शरीरों पर उनकी नाफ़र्मानी की सज़ाएँ आस्मान से उतारी। (५९) [रुकू ६]

(यह घटना भी याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी की प्रार्थना की तो मैंने कहा कि ऐ मूसा अपनी लाठी पत्थर पर मारो, लाठी मारने पर पत्थर से बारह चश्में (सोते) फूट निकले। सब लोगों ने अपना घाट मालूम कर लिया और हुक्म हुआ कि अल्लाह की (दी हुई) रोज़ी खाओ और पियो और देश में फ़साद न फैलाते फिरो। (६०) (यह समय भी याद करो) जब तुमने कहा कि ऐ मूसा हमसे तो एक खाने पर नहीं रहा जाता तो आप हमारे लिए अपने पालनकर्त्ता से दुआ कीजिए कि जमीन से जो चीजें उगती हैं यानी तरकारी ककड़ी और गेहूँ और मसूर और प्याज़ (मन सलवा के बजाय) हमारे लिए पैदा करे। (मूसा ने) कहा कि जो चीज उत्तम है क्या तुम उसके बदले म ऐसी चीज लेना चाहते हो जो घटिया है। (अच्छा तो) किसी शहर में उतर पड़ो कि जो माँगते हो (वहाँ) तुमको मिलेगा और उन पर ज़िल्लत और ग़रीबी डाल दी गई और वे ख़ुदा के ग़ज़ब में आ गये यह इस लिए कि वह अल्लाह के हुक्मों से इनकार करते और पैग़म्बरों को व्यर्थ मार डाला करते थे। इसलिए कि ये हुक्म के न मानने वाले सरकश थे। (६१) [रुकू ७]।

निस्सन्देह मुसलमान† यहूदी‡ ईसाई§ और साइबी× इनमें से जो लोग अल्लाह पर और क़यामत पर ईमान लाये और अच्छे काम करते

---

† क़ुरान के माननेवाले मुसलमान कहलाते हैं।

‡ तौरात के माननेवाले यहूदी कहलाते हैं।

§ इंजील के माननेवाले ईसाई कहलाते हैं।

× साइबी वह लोग थे जो हज़रत इब्राहीम को भी मानते थे और सितारों को भी पूजते थे। वे ज़बूर भी पढ़ते थे और काबे की तरफ़ नमाज़ भी पढ़ते थे। सबकी अच्छी बातें मानते थे।

रहे थे उनको उनका फल उनके पालनकर्त्ता के यहाँ मिलेगा और उनपर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (६२) ऐ याक़ूब के बेटों। (वह समय याद करो) जब मैंने तुमसे (तौरात की तामील का) इक़रार लिया और तूर (पहाड़) को उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया (और फर्माया कि यह किताब तौरात) जो हमने तुमको दी है इसको मज़बूती से पकड़े रहो और जो उसमें (लिखा) है (उसको) याद रक्खो ताकि तुम परहेजगार (संयमी) बन जाओ। (६३) फिर उसके बाद तुम पलट गये तो अगर तुम पर ख़ुदा की कृपा और उसकी दया न होती तो तुम घाटे में आ गये होते। (६४) †उन लोगों को जो तुमको जान चुके हों तुममें से जिन्होंने हफ़्ते के दिन (शनीचर) में ज़ियादती की तो हमने उनसे कहा बन्दर बन जाओ (कि जहाँ जाओ) दुतकारे जाओ। (६५) पस मैंने इस घटना को उन लोगों के लिए जो इस वक़्त मौजूद थे और उन लोगों के लिए जो इसके बाद आनेवाले थे (उनके लिए) डर और परहेजगारों के लिए शिक्षा बनाई (६६)। (वह समय याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा अल्लाह तुमने फ़र्माता है कि एक गाय हलाल करो वह कहने लगे क्या तुम हमसे हँसी करते हो? (मूसा ने) कहा ख़ुदा मुझको अपनी पनाह में रक्खे कि मैं ऐसा नादान न बनूँ §। (६७) वह बोले

† यहूदियों को शनिश्चर के दिन मछली का शिकार खेलने की इजाज़त न थी। उन्होंने शुक्रवार के दिन नदी के किनारे गढ़े खोदे ताकि शनीचर को उसमें मछलियाँ आ जायें और वह इतवार को उनको पकड़कर कहें कि यह शिकार तो शुक्रवार का है।

§ मूसा के समय एक बड़ा धनवान आदमी था। उसके कोई संतान न थी। उसके भतीजे ने उसे माल धन के लोभ से इस तरह मार डाला कि कोई जान न सके। कुछ लोग हज़रत मूसा के पास गए कि क्या करें जिससे क़ातिल का पता लग जाय। मूसा ने कहा बैल काटो। इस पर उन लोगों ने कहा। हम तो क़ातिल को जानना चाहते हैं और तुम हम से कहते हो बैल काटो। यह क्या मज़ाक़ है। गाय या बैल काटने के बाद, माँस का एक

अपने परवर्दिगार से हमारे लिए दरख़्वास्त करो कि हमको भलीभाँति समझा दे कि वह कैसी हो। (मूसा ने) कहा ख़ुदा फ़र्माता है कि वह गाय न बूढ़ी हो और न बछिया दोनों में बीच की रास, बस तुमको जो हुक्म दिया गया है उसको पूरा करो। (६८) वह बोले अपने पास नफ़र्वा से हमारे लिए प्रार्थना करो कि वह हमको अच्छी तरह समझा दे कि उसका रङ्ग कैसा हो। (मूसा ने) कहा ख़ुदा फ़र्माता है कि उस गाय का रङ्ग ख़ूब गहरा ज़र्द हो कि देखनेवालों को भली लगे (६९) वह बोले कि अपने परवर्दिगार से हमारे लिए पूछो कि हमको अच्छी तरह समझा दे कि वह (और) क्या (गुण रखती) हो हमको तो (इस रङ्ग की बहुतेरी) गायें एक ही तरह की दिखाई देती हैं और (इस बार) ख़ुदा ने चाहा तो हम ज़रूर (उसका) ठीक पता लगा लेंगे (७०) (मूसा ने) कहा ख़ुदा फ़र्माता है वह न तो कमेरी हो कि ज़मीन जोतती हो और न खेतों को पानी देती हो सही सालिम उसमें किसी तरह का दाग़ (धब्बा) न हो, वह बोले (हाँ) अब तुम ठीक (पता) लाये ग़रज़ उन्होंने गाय हलाल की और उनसे उम्मीद न थी कि करेंगे। (७१) [रुकू ८]

(और ऐ याकूब के बेटों) जब तुमने एक शख़्स को मार डाला और (उसके बारे में) झगड़ने लगे और जो तुम छिपाते थे अल्लाह को उसका भेद खोलना मंजूर था। (७२) पस हमने कहा कि गाय का कोई टुकड़ा मुर्दे को छुआदो, इसी तरह (कयामत में) अल्लाह मुर्दों को जिलायेगा। वह तुमको अपनी (क़ुदरत का) चमत्कार दिखाता है ताकि तुम समझो (७३) फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गये कि गोया वह पत्थर हैं बल्कि उनसे भी कठोर और पत्थरों में बाज़ ऐसे भी हैं कि उनसे नहरें फूट निकलती हैं और बाज़ पत्थर ऐसे हैं जो फट जाते हैं और उनसे पानी झरता है और बाज़

टुकड़ा मरे हुए आदमी को मारा गया। वह उठ बैठा और उस ने अपने क़ातिल का पता बताया। इस से यह भी पता चल गया कि ख़ुदा मरे हुओं को फिर ज़िन्दा कर सकता है।

पत्थर ऐसे भी हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। (७४) (मुसलमानों!) क्या तुमको आशा है कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे और उनका हाल यह है कि उनमें कुछ लोग ऐसे भी हो चुके हैं जो ख़ुदा का कलाम सुनते थे फिर उसके समझे पीछे देखभाल कर उसको कुछ का कुछ कर देते थे (७५)। अब ईमानवालों से मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम भी ईमान ला चुके हैं। जब अकेले में एक दूसरे के पास होते हैं तो कहते हैं कि जो कुछ (तौरात) में ख़ुदा ने तुम पर खोली है क्या तुम मुसलमानों को उसकी ख़बर दिये देते हो कि तुम्हारे पालनकर्ता के सामने उसी बात की सनद पकड़कर तुमसे झगड़ें। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते। (७६) (परन्तु) क्या इन मनुष्यों को यह बात मालूम नहीं कि जो कुछ छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं अल्लाह जानता है। (७७) बाज़ उनमें अनपढ़ हैं जो बुदबुदाने के सिवाय किताब को नहीं समझते और वह फ़क़त ख़याली तुक्के चलाया करते हैं। (७८) पस शोक है उन लोगों पर जो अपने हाथ से तो किताब लिखें फिर कहें कि यह ख़ुदा के यहाँ से (उतरी) है ताकि उसके ज़रिए से थोड़े से दाम (यानी संसारिक लाभ) हासिल करें। अफ़सोस है उन पर कि उन्होंने अपने हाथों लिखा और अफ़-सोस है उन पर कि वह ऐसी कमाई करते हैं (७९)। वे कहते हैं कि गिनती के चन्दरोज के सिवाय (दोज़ख़ की) आग हमको छुएगी नहीं✢। (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो क्या तुमने अल्लाह से कोई प्रतिज्ञा ले ली है और अल्लाह अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध नहीं करेगा या अनसमझे अल्लाह पर झूठ बोलते हो (८०) सची बात तो यह है कि जिसने बुराई पल्ले बाँधी और अपने पाप के फेर में आ गया तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं कि वह सदैव जहन्नुम ही में रहेंगे। (८१) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये ऐसे ही लोग जन्नती हैं कि वह हमेशा जन्नत ही में रहेंगे। (८२) [रुकू ९]

✢ यहूदी कहते थे कि हम अल्लाह के प्यारे हैं। हम चाहे जितने पाप करें सात दिन से आगे नरक में नहीं रह सकते।

(वह समय याद करो) जब हमने याक़ूब के बेटों से पक्की प्रतिज्ञा ली कि ख़ुदा के सिवा किसी की पूजा नहीं करेंगे और माता-पिता के साथ सलूक करते रहेंगे और रिश्तेदारों और अनाथों और दीन दुखियों के साथ (भी) और लोगों से अच्छी तरह मुलायमत से बात करेंगे और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहेंगे। फिर तुमम से थोड़े आदमियों के सिवा बाक़ी सब पलट गये और तुम लोग भी पलट जाने वाले हो। (८३) (वह समय याद करो) जब हमने तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली कि परस्पर ख़ूँरेज़ी न करना और न अपने शहरों से अपने लोगों को देश निकाला करना फिर तुमने (तुम्हारे बुज़ुर्गों ने) प्रतिज्ञा की और तुम भी प्रतिज्ञा करते हो। (८४) फिर वही तुम हो कि अपनों को मारते और अपने में से भी कुछ लोगों के मुक़ाबिले में व्यर्थ और ज़बरदस्ती एक दूसरे के सहायक बनकर उनको उनके शहरों से देश निकाला देते हो और वही लोग अगर क़ैद होकर तुम्हारे पास आवें, तो तुम क़ीमत देकर फिर उनको छुड़ा लेते हो† । हालांकि उनका निकाल देना ही तुमको मुनासिब न था। तो क्या किताब की कुछ बातों को मानते हो और कुछ को नहीं मानते ? तो जो लोग तुममें से ऐसा करें, इसके सिवा उनका और क्या फल हो सकता है कि दुनियाँ की ज़िन्दगी में निन्दा, तौहीन और क़यामत के दिन बड़ी ही कठिन सज़ा की तरफ़ लौटा दिये जायें और जो कुछ भी तुम लोग करते हो, अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है। (८५)

---

† यह ज़िक्र इस तौर पर है। यहूदियों में 'बनी क़ुरैज़ा' और 'बनी नुज़ैर' दो वंश थे जिनमें शत्रुता चलती थी। उसी प्रकार मुशरिकों में 'औस' और 'ख़ज़रज' दो कुटुम्ब थे, जो आपस में बैर रखते थे। एक दूसरे के धर्म के विपरीत होते हुए भी बनी क़ुरैज़ा औस के साथ मिलकर और बनी नुज़ैर ख़ज़रज की सहायता से एक दूसरे से लड़ते और देश से निकाल देते व उनकी जायदाद ज़ब्त कर लेते। एक ओर तो सधर्मी को गैरों की मदद से नष्ट करते, दूसरी ओर अपनी धर्मपुस्तक तौरात के हुक्म के अनुसार क़ैदी की हालत में अपने-अपने विरोधी को धन के बदले क़ैद से छुड़ा भी लेते। क्या कहा जाय ? यह तौरात के ख़िलाफ़ करते थे या मुआफ़िक़ था दोनों ?

यही हैं जिन्होंने प्रलय के बदले संसार की ज़िन्दगी मोल ली। सो न तो (क़यामत के) दिन उनकी सज़ा ही हल्की की जायगी और न उनको मदद ही पहुँचेगी। (८६) [रुकू १०]

निस्सन्देह मैंने मूसा को किताब (तौरात) दी और उनके बाद एक के बाद एक रसूल (पैग़म्बर) भेजे और मरियम के बेटे ईसा को (भी) हमने खुले करामात दिये और पाक रूह (यानी जिब्रील) से उनकी मदद की। सो जब जब तुम्हारे पास कोई रसूल (ईश्वरदूत) तुम्हारी इच्छाओं के ख़िलाफ़ कोई हिदायत लेकर आया, तुमने शेख़ी दिखलाई। फिर बाज़ को तुमने झुठलाया और बाज़ को मार डालने लगे। (८७) कहते हैं कि हमारे दिल पर ग़लाफ़ पड़ा है बल्कि इनको इन्कार करने के कारण ख़ुदा ने इनको फटकार दिया है। पस, कमी ही ईमान लाते हैं। (८८) और जब ख़ुदा की तरफ़ से इनके पास किताब (क़ुरान) आयी, जो उनकी पिछली किताब (तौरात) की तसदीक़ करती है और इससे पहिले जिसका नाम लेकर काफ़िरों के मुक़ाबिले में अपनी जय की दुआएँ माँगा करते थे। सो जब वह चीज़ जिसको जाने पहिचाने हुए थे, आ मौजूद हुई, तो उससे इनकार करने लगे। इन इनकारियों पर ख़ुदा की फटकार। (८९) क्या ही बुरी चीज़ है जिसके बदले इन लोगों ने अपनी जानों को ख़रीद लिया। ख़ुदा ने अपने बन्दों में से जिस पर चाहा अपनी कृपा से क़ुरान भेजा†। सरकशी (इसलिए) ख़ुदा की उतारी हुई किताब से इनकार करने लगे। इसलिए कोप पर कोप में पड़े और इनकारियों के लिए ज़िल्लत (अपमान) की सज़ा है। (९०) और जब इनसे कहा जाता है कि क़ुरान जो ख़ुदा ने उतारी है [illegible] मानो। सो कहते हैं कि हम उसी को मानते हैं जो हम पर [illegible] उसके अतिरिक्त दूसरी किताब को नहीं मानते। हा[illegible]

---

† काफ़िर कहते थे कि ख़ुदा को रसूल ही भेजन[illegible] को इस कार्य के लिए क्यों चुना। क्या उसको [illegible] था, जो इनको रसूल बना दिया। इसका जवाब [illegible] जो दर्जा दे, उसकी मरज़ी है।

सचा है और जो किताब उनके पास है उसकी तसदीक़ भी करता है। ऐ पैग़म्बर इनसे यह तो पूछो कि भला अगर तुम ईमानवाले होते तो पहले अल्लाह के पैग़म्बरों को क्यों मार डाला करते थे। (९१) और तुम्हारे पास मूसा खुले निशान लेकर आया, इस पर भी तुमने (जब तौरात लेने तूर पहाड़ पर गये) उनके पीछे बछड़े को (पूजने के लिए) ले बैठे और (ऐसा करने से) तुम (अपनी ही) हानि कर रहे थे। (९२) (वह समय याद करो) जब मैंने तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली और तूर पहाड़ उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया और हुक्म दिया कि यह किताब (तौरात) जो हमने तुमको दी है, इसको मजबूती से पकड़े रहो, सुनो और पल्ले बाँधो। उत्तर में उन लोगों ने कहा कि हमने सुना तो सही, लेकिन मानते नहीं और उनकी इनकारी के कारण बछड़ा उनके दिल में समाया हुआ था। (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर तुम ईमान वाले हो, तो तुम्हारा ईमान तुमको बुरी बात सिखला रहा है। (९३) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि अगर ख़ुदा के यहाँ आक़बत का घर ख़ासकर तुम्हारे ही लिए है, दूसरे लोगों के लिए नहीं (और) अगर तुम सच्चे हो तो मौत को माँगो†। (९४) और वह अपने पिछले कुकर्मों के कारण मौत की प्रार्थना कभी नहीं कर सकते और ख़ुदा अन्यायियों को ख़ूब जानता है। (९५) और तू उन्हें और सब आदमियों से संसारी जीवन के लिए ज़्यादा लालची पायेगा और मुशरकीन‡ में से भी हर एक हज़ार वर्ष का जीवन चाहता है और इतना जीना कुछ उसे सज़ा से न बचायेगा। ख़ुदा देखता है जो कुछ वह करते हैं। (९६) [रुकू ११]

---

† यहूदी कहते थे कि हमसे बढ़कर कोई ख़ुदा को प्यारा नहीं है। हम मरते ही जन्नत में जायेंगे। इसके जवाब में कहा गया है कि तुम सच्चे हो तो मरने की प्रार्थना कर देखो। परन्तु यहूदी तो हज़ार वर्ष का जीवन चाहते थे और समझते थे कि जितने दिन हम जियेंगे, उतना ही हमारे लिए अच्छा होगा।

‡ ख़ुदा में, उसकी ज़ाति में, उसकी सिफ़तों में, उसकी इबादत में दूसरे को शरीरिक करनेवाले मुशरिक कहलाते हैं—(द्वैतवादी)।

(ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि जो शख़्स जिब्रील फ़रिश्ते का दुश्मन हो यह (क़ुरान) उसीने ख़ुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल में डाला है उन (किताबों) की भी तसदीक़ करता है जो इससे पहिले से मौजूद हैं और ईमानवालों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है। (६७)। जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाईल (फ़रिश्ते) का तो अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों का दुश्मन है। (६८) (ऐ पैग़म्बर) हमने तुम्हारे पास सुलझी आयतें भेजी हैं और हुक्म न माननेवालों के सिवाय और कोई उनसे इनकार न करेगा। (६६) जब कभी कोई प्रतिज्ञा कर लेते हैं तो इनमें का कोई न कोई फ़रीक़ उस अहद को फेंक देता है बल्कि इनमें के अक्सर ईमान नहीं रखते। (१००) और जब उनके पास ख़ुदा की तरफ़ से रसूल (मुहम्मद) आये (और यह) उस किताब (तौरात) की जो इन (यहूदियों) के पास है तसदीक़ भी करते हैं तो (इन) किताबवालों में से एक गिरोह ने अल्लाह की किताब (तौरैत) को (जिस में इन रसूल की पेशीनगोई भी है) पीठ पीछे फेंका कि गोया यह कुछ जानते न थे। (१०१) और उन (ढकोसलों) के पीछे लग गये जिनको सुलेमान के राज्यकाल में शयातीन पढ़ा करते थे हालाँकि सुलेमान तो काफ़िर न था बल्कि वे काफ़िर थे कि वह लोगों को जादू सिखाया करते थे (और वह) जो बाबिल (शहर) में हारूत और मारूत फ़रिश्तों पर उतरा था। और वह (दोनों) किसी को (कुछ) न सिखाते थे जब तक उससे न कह देते थे कि हम तो जाँचते हैं कि तू काफ़िर न हो। इस पर भी उनसे ऐसी बातें सीखते जिनके कारण से स्त्री पुरुष में जुदाई पड़ जाय। हालाँकि बग़ैर हुक्म ख़ुदा वह अपनी इन बातों से किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। बल्कि यह लोग ऐसी बातें सीखते जिनसे इन्हें नुक़सान है फ़ायदा नहीं। गो जान चुके थे कि जो शख़्स इन बातों का ख़रीदार हुआ वह आख़िर में अभागा है और निस्सन्देह बुरा है जिसके बदले इन्होंने अपनी जानों को बेचा हा शोक! इनको अगर समझ होती। (१०२) और अगर यह ईमान

लाते और परहेजगार बनते तो खुदा के पास से अच्छा फल मिलता अगर इनको समझ होती। (१०३) [१२ रुकू]

ऐ मुसलमानों । (पैगम्बर के साथ) राइना† कहकर खिताब (सम्बोधन) न किया करो बल्कि (उन्जुर्ना) कहा करो और सुनते रहा करो मुन्किरों के लिए दुखदाई सजा है। (१०४) किताबवालों और मुशरकीन में से जो लोग इन्कारी हैं इस बात से खुश नहीं हैं कि तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ से तुम पर भलाई उतारी जाय और अल्लाह जिसको चाहता है अपनी दया के लिये खास कर लेता है और अल्लाह बड़ा दयावान है। (१०५) (ऐ पैगम्बर) हम कोई आयत मन्सूख कर दें या बुद्धि से उसको उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुँचा देते हैं क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है (१०६) क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमान और जमीन का राज्य उसी अल्लाह का है और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई दोस्त मददगार नहीं है। (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि जिस तरह पहिले मूसा से सवालात किए गये थे तुम भी अपने रसूल से सवालात करो और जो ईमान के बदले इन्कार करे तो वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१०८) अक्सर किताब के माननेवाले सचाई जाहिर होने के बावजूद अपनी दिली ईर्ष्या की वजह से चाहते हैं तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर तुमको काफिर बनादें तो क्षमा करो। दर गुजर करो यहाँ तक कि खुदा अपनी आज्ञा जारी करे। बेशक अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है । (१०९) नमाज पढ़ते और जकात देते

---

† 'राइना' के अर्थ हैं। हमारी ओर ध्यान दें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवअलिहीवसल्लम के दरबार में यहूदी आनकर बैठते और हुजूर का कोई शब्द समझ में न आता तो 'राइना' के स्थान पर 'राईना' का शब्द शरारत से इस्तेमाल करते। 'राईना' के माने हैं 'हमारा ग्वाला'। इस लिए मुसलमान भी यहूदियों की इस शरारत में भटक न जायें उन्हें हिदायत की गई कि वे 'उन्जुर्ना' कहा करें। उसके भी माने हैं 'हमारा कथन करें'। इस प्रकार 'राइना' और 'राईना' की भूल से बच जायें।

रहो और जो कुछ भलाई अपने लिए पहले से भेज दोगे उसको खुदा के यहाँ पाओगे बेशक अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो देख रहा है। (११०) (यहूदी) व (नसारा) कहते हैं कि यहूद और नसरानी के सिवाय बहिश्त में कोई नहीं जाने पायेगा यह उनकी (अपनी) ख्याली बातें हैं। (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो अगर सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो। (१११) बल्कि सच्ची बात तो यह है कि जिसने खुदा के आगे माथा टेका और अच्छे काम किये तो उसके लिए उसको फल उसके पालनकर्ता से मिलेगा और ऐसे लोगों पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (११२) [१३ रुकू]

यहूद कहते हैं ईसाइयों का मजहब कुछ नहीं और ईसाई कहते हैं यहूद का मजहब कुछ नहीं हालाँकि वह (दोनों) किताब (तौरात व इञ्जील) के पढ़नेवाले हैं इसी तरह इन्हीं जैसी बातें यह मुशरकीन अरब भी कहा करते हैं जो नहीं जानते। तो जिस बात में यह लोग झगड़ रहे हैं कयामत के दिन अल्लाह इनमें उसका फैसला कर देगा। (११३) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है ? जो अल्लाह की मसजिदों में खुदा का नाम लिए जाने को मना करे और मसजिदों के उजाड़ने में कोशिश करे यह लोग खुद इस योग्य नहीं कि मसजिदों में आने पावें मगर डरते (हुए आवें हैं) इनके लिए दुनियाँ में बदनामी और प्रयल (कयामत) में बड़ी सजा है। (११४) अल्लाह ही का पूर्व और पश्चिम है तो जहाँ कहीं मुँह फेर लो उधर ही अल्लाह का सामना है बेशक अल्लाह गुंजाइशवाला है। (११५) कहते हैं कि खुदा औलाद रखता है हालाँकि वह पाक है बल्कि जो कुछ आसमान और जमीन में है उसी का है और सब उसके आधीन हैं। (११६) वह आसमान और जमीन का बनाने वाला है और जब किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसके लिए फर्मा देता है कि 'हो' और वह हो जाता है। (११७) जो नहीं जानते वे कहते हैं कि खुदा हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती इसी तरह जो लोग इनसे पहिले हो गये हैं इन्हीं जैसी बातें वह भी कहा करते थे।

इन सबके दिल एक ही तरह के हैं। जो लोग यक़ीन रखते हैं उनको तो हम निशानियाँ साफ़ तौर पर दिखा चुके। (११८) ऐ पैगम्बर हमने तुमको सच्ची बात देकर मंगल समाचार देनेवाला और डरानेवाला (बनाकर) भेजा है और तुमसे नरकवासियों की बाबत कुछ पूँछ पाँछ नहीं होगी। (११९) ऐ पैगम्बर ! न तो यहूदी ही तुमसे कभी रज़ामंद होंगे और न ईसाई ही जब तक कि तुम उन्हीं के मज़हब की पैरवी न करो। ऐ पैगम्बर ! इन लोगों से कहो कि अल्लाह की हिदायत (इस्लाम) ही हिदायत है और ऐ पैगम्बर अगर तुम इसके बाद कि तुम्हारे पास इल्म (यानी क़ुरान) आ चुका है उनकी ख्वाहिशों पर चलो तो तुम को खुदा के कोप से बचानेवाला न कोई दोस्त और न कोई मददगार। (१२०) जिन लोगों को हमने क़ुरान दिया है वह उसको पढ़ते रहते हैं जिन्हें उसके पढ़ने का हक़ है वही उस पर ईमान लाते हैं और जो इससे इन्कार रखते हैं तो वही लोग भटक जाते हैं। (१२१) [रुकू १४]

ऐ याक़ूब के बेटों ! हमारे उन अहसानों को याद करो, जो हमने तुम पर किए हैं और यह कि हमने तुमको सब संसार के लोगों पर प्रधानता दी। (१२२) और उस दिन (की सज़ा) से डरो कि कोई शख्स किसी शख्स के कुछ काम न आयेगा और न उसकी तरफ से कोई बदला कबूल किया जाय और न सिफ़ारिश उसको फ़ायदा देगी और न लोगों को मदद पहुँचेगी। (१२३) (ऐ पैगम्बर !) याक़ूब के बेटों को वह समय याद दिलाओ, जब इब्राहीम की उसके पालनकर्ता ने चन्द बातों को आज़माया था। उन्होंने उनको पूरा कर दिखाया, (तो खुदा ने संतुष्ट होकर) कहा था कि हमने तुमको लोगों का इमाम (यानी पेशवा) बनाया। इब्राहीम ने अर्ज़ किया था कि मेरी सन्तान में से भी (किसी को इमाम बना) खुदा ने—कहा 'हो' मगर हमारे इक़रार में वह शामिल नहीं, जो सचाई पर न होंगे। (१२४) ऐ पैगम्बर याक़ूब के बेटों को वह समय भी याद दिलाओ, जब हमने काबे के घर को लोगों के जमा होने और शांति की जगह क़ायम किया।

—

और कहो (लोगों को हुक्म भेजा) कि इब्राहीम की जगह को ही नमाज़ की जगह बनाओ और हमने इब्राहीम और इस्माईल से कहा कि हमारे घर की परिक्रमा करनेवालों और मुजाविरों (पण्डों) और रुकूअ† (और) सिजदा करने (माथा नवानेवालों) के लिए पाक साफ रक्खो। (१२५) (ऐ पैग़म्बर इनको यह समय भी याद दिलाओ) जब इब्राहीम ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे पालनकर्ता! इसको शांति का नगर बना और इसके रहनेवालों में से जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाये हैं, उनको फल फलाहार खाने को दे। (अल्लाह ने) फ़र्माया कि जो इन्कारी (मुन्किर) होगा उसको भी चन्दरोज़ के लिए (चीज़ों से) फ़ायदा उठाने देंगे। फिर उसको मजबूर करके नरक की सज़ा में ले जाकर दाख़िल करेंगे और यह बुरा ठिकाना है। (१२६) (ऐ पैग़म्बर! याक़ूब के बेटों को यह समय भी याद दिलाओ) जब इब्राहीम और इस्माईल (दोनों) काबे के घर की नीवें (बुनियादें) उठा रहे थे (और दुआयें माँगते जाते थे) कि ऐ हमारे पालने वाले हमसे (दुआ) क़बूल कर। बेशक तू ही सुनने और जाननेवाला है। (१२७) और ऐ हमारे पालनकर्ता! हमको अपना आज्ञाकारी बना और हमारी जाति में से एक गिरोह (पैदा कर) जो तेरा आज्ञाकारी हो और हमको हमारी पूजा की विधि बता और हमारे अपराध क्षमा कर। बेशक तू ही बड़ा क्षमा करनेवाला मेहर्बान है। (१२८) ऐ हमारे पालनेवाले इनमें इन्हीं में से एक पैग़म्बर भेज कि इनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाएँ और इनको किताब (आसमानी) और शिक्षा दें और इनको सँभाले। बेशक तू ही शक्तिशाली व ज्ञानवान है। (१२९) [रुकू १५]

और कौन है जो इब्राहीम के तरीक़े से मुँह फेरे। मगर वही जिसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो (वह मुँह फेर लेगा) बेशक हमने इब्राहीम को दुनिया में चुन लिया था और क़्यामत में (भी) वह भक्तों में होंगे। (१३०) जब उनसे पालनकर्ता ने कहा कि फ़र्मांबर्दारी करो, (तो जवाब में) प्रार्थना की कि मैं सब संसार के पालनेवाले का

† रुकू—घुटनों पर हाथ लगाकर झुके हुए खड़े होने को रुकू कहते हैं। यह हालत नमाज़ में होती है।

(फ़र्माबर्दार) हुआ। (१३१) और इसकी (बाबत) इब्राहीम अपने बेटों को वसीयत कर गये और याक़ूब (ने कहा) ऐ बेटों अल्लाह ने इस दीन को तुम्हारे लिए पसन्द फ़रमाया है। तुम (अंत तक) मुसलमान ही मरना। (१३२) (ऐ यहूद!) क्या तुम मौजूद थे जब याक़ूब के सामने मौत आ खड़ी हुई। उस वक्त उन्होंने अपने बेटों से पूँछा कि मेरे पीछे किस की पूजा करोगे? उन्होंने जवाब दिया कि आपके पूजित और आपके बड़ों (यानी) इब्राहीम, इस्माईल और इसहाक़ के पूजित एक ख़ुदा की पूजा करेंगे और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। (१३३) (ऐ यहूद!) यह लोग हो चुके, उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुमको और तुमसे उनके काम की पूँछ पाँछ नहीं होगी। (१३४) (यहूद और ईसाई मुसलमानों से) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ। तो सच्चे रास्ते पर आओ (ऐ पैग़म्बर तुम इन लोगों से) कहो (नहीं) बल्कि हम इब्राहीम के तरीके पर हैं। जो एक (ख़ुदा) के हो रहे थे और मुशरकीन में से न थे। (१३५) (मुसलमानों! तुम यहूद ईसाई को) जवाब दो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाये हैं और क़ुरान जो हम पर उतरा और जोकि इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक और याक़ूब और याक़ूब की संतान पर उतरे और मूसा और ईसा को जो (किताब) मिली, (उस पर) और जो (दूसरे) पैग़म्बरों को उनके पालनेवाले से मिली, (उस पर) हम इन पैग़म्बरों में से किसी एक में भी (किसी तरह की) जुदाई नहीं समझते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। (१३६) तो अगर तुम्हारी तरह यह लोग भी ईमान ले आवें, जिस तरह तुम ईमान लाये तो बस सच्चे रास्ते पर आ गये और मुँह फेर लें (तो समझो) बस वह हठ (ज़िद) पर हैं तो इनकी निस्बत ख़ुदा तुम्हारे लिए काफ़ी होगा और वह सुनता और जानता है। (१३७) (मुसलमानों! इन लोगों से कहो कि) हम तो अल्लाह के रंग में रंग गये। और अल्लाह (के रंग) से और किस का रंग अच्छा होगा और हम तो उसी की पूजा करते हैं। (१३८) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि क्या तुम अल्लाह (के बारे) में हमसे झगड़ते हो?

हालांकि वही हमारा पालनकर्त्ता है और तुम्हारा भी परवर्दिगार है। और हमारे काम हमारे लिए और तुम्हारे काम तुम्हारे लिए और हम सिर्फ उसी को मानते हैं। (१३९) या तुम कहते हो कि इब्राहीम इस्माईल और इसहाक और याकूब और याकूब की संतान (यह लोग) यहूदी थे या ईसाई थे (ऐ पैगम्बर ! इनसे) कहो कि तुम बड़े जाननेवाले हो या खुदा और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा, जिसके पास खुदा की तरफ से गवाही हो और वह-उसको छिपाये और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बेखबर नहीं। (१४०) यह लोग थे कि हो गुजरे। उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुमको और जो कुछ वह कर गुजरे तुमसे उसकी पूँछ-पाँछ नहीं होगी। (१४१) [रुकू १६]।

दूसरा पारा – सूरे बकर।

मूर्ख लोग कहेंगे कि मुसलमान जिस क़िब्ले पर (पहिले) थे (यानी बैतुल मुक़द्दस) उससे इनके (काबा के घर की तरफ को) मुड़ जाने का क्या कारण हुआ ? (ऐ पैग़म्बर तुम यह) जवाब दो कि पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही की है। जिसको चाहता है सीधी राह चलाता है। (१४२) और इसी तरह हमने तुमको बीच की उम्मत (गिरोह जो किसी पैग़म्बर के आधीन हो) बनाया है। ताकि लोगों के मुक़ाबिले में तुम गवाह बनो और तुम्हारे मुक़ाबिले में पैग़म्बर गवाह बनें, और ऐ पैग़म्बर ! जिस क़िब्ले पर तुम थे (यानी बैतुल मुक़द्दस) हमने उसको इसी मतलब से ठहराया था ताकि हमको मालूम हो जावे कि कौन कौन पैग़म्बर के आधीन रहेगा और कौन उल्टा फिरेगा और यह बात अगरचे भारी है, लेकिन उन पर नहीं जिनको अल्लाह ने हिदायत दी और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुम्हारा विश्वास लाना (ईमान) मेटेगा। ख़ुदा तो लोगों पर बड़ी ही कृपा रखनेवाला दयालु है। (१४३) तुम्हारे मुँह का आसमान

में फिरना हम देख रहे हैं। सो जो क़िब्ले तुम चाहते हो, हम तुमको उसी की तरफ़ फेर देंगे। पूजनीय मसजिद (काबे) की तरफ़ को अपना मुँह फेर लिया करो और जहाँ कहीं हुआ करो, उसी की तरफ़ को अपना मुँह कर लिया करो और (ऐ पैग़म्बर) जिन लोगों को किताब दी गई है, उनको मालूम है कि यह क़िब्ला बदलना ठीक उनके परवर्दिगार (की ओर से) है और जो कर रहे हैं, ख़ुदा उससे बेख़बर नहीं। (१४४) और (ऐ पैग़म्बर !) जिन लोगों को किताब दी गई है, अगर तुम सब निशानियाँ उनके पास ले आये, तो भी वह तुम्हारे क़िब्ले की मदद न करेंगे और न तुम्हीं उनके क़िब्ले की मदद करोगे और उनमें का कोई भी दूसरे के क़िब्ले को नहीं मानता और तुमको जो समझ हो चुकी है, अगर उसके पीछे भी तुम इनकी इच्छाओं पर चले, तो ऐसी दशा में बेशक तुम भी अन्यायियों में गिने जाओगे। (१४५) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वह जिस तरह अपने बेटों को पहिचानते हैं इन (मोहम्मद) को भी पहिचानते हैं और उनमें से कुछ लोग जानबूझकर सच को छिपाते हैं। (१४६) सच यह क़िब्ला तुम्हारे परवर्दिगार की ओर से है। तो कहीं सन्देह करनेवालों में से न हो जाना। (१४७) [रुकू १७]।

हर एक के लिए एक दिशा है जिधर को (नमाज़ में) वह अपना मुँह करता है, (तो दिशा-भेद की परवा न करके) भलाइयों की तरफ़ लपको। तुम कहीं भी हो, अल्लाह तुम सबको खींच बुलायेगा। बेशक अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है। (१४८) (ऐ पैग़म्बर !) तुम कहीं से भी निकलो, अपना मुँह इज़्ज़तवाली मसजिद (काबा) की तरफ़ कर लिया करो। यह तुम्हारे पालनकर्ता द्वारा निश्चित है। अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं है। (१४९) (ऐ पैग़म्बर !) तुम कहीं से भी निकलो, अपना मुँह इज़्ज़तवाली मसजिद की तरफ़ कर लिया करो और जहाँ कहीं हुआ करो उसी की तरफ़ अपना मुँह करो, ताकि ग़ैर को तुमसे झगड़ने की जगह न रहे। मगर उनमें से जो अन्यायी हैं, तो तुम उनसे मत डरो और हमारा डर रक्खो। ग़रज़ यह है कि मैं अपनी

जाओ। फिर लोगों में कुछ ऐसे हैं जो दुआयें माँगते हैं कि ऐ हमारे पालनेवाले ! हमको (जो देना हो) दुनियाँ में दे और क़यामत में उनका कुछ हिस्सा नहीं रहता। (२००) और लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो दुआयें माँगते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता ! हमें दुनियाँ में भी बढ़ती दे और प्रलय में भी बढ़ती दे और हमको नरक की सजा से बचा। (२०१) यही हैं जिनको उनके किये का हिस्सा (यानी पुण्य मिलना) है और अल्लाह तो जल्द (सबका) हिसाब करनेवाला है। (२०२) और गिनती के इन चन्द दिनों में ख़ुदा की याद करते रहो। फिर जो शख़्स जल्दी करे और दो दिन में (चल बसे) उस पर (भी) कुछ पाप नहीं और जो देर तक ठहरा रहे उसपर (भी) कुछ पाप नहीं यह (रियायत) उनके लिए है जो परहेज़गारी करें। ख़ुदा से डरते रहो और जाने रहो कि तुम उसी के सामने हाज़िर किये जाओगे। (२०३) और (ऐ पैग़म्बर !) कोई आदमी ऐसा है जिसकी बातें तुमको दुनिया की ज़िन्दगी में भली मालूम होती हैं और वह अपनी दिली ख़्वाहिशों पर ख़ुदा को गवाह ठहराता है। (ईश्वर की साक्षी देता है कि जो मन में है वही ज़बान पर है) हालाँकि वह नियायत झगड़ालू है। (२०४) और जब लौटकर जावे तो मुल्क में दौड़ता फिरता है कि उसमें विद्रोह फैलावे और खेती बारी को और जानों को बर्बाद करे (अल्लाह उसे नहीं चाहता) अल्लाह फ़साद नहीं चाहता। (२०५) जब उससे कहा जाय कि ख़ुदा से डर तो शेख़ी उसको पाप पर आमादह करती है ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (२०६) लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो ख़ुदा की ख़ुशी के लिए अपनी जान दे देते हैं और अल्लाह बन्दों पर बड़ी ही दया रखता है। (२०७) ऐ ईमानवालों इस्लाम में पूरे पूरे आ जाओ और शैतान के पैर पर पैर न रखो। वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (२०८) फिर जब कि तुम्हारे पास साफ़ हुक्म पहुँच चुके और इस पर भी विचल जाओ तो जान रक्खो कि अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (२०९) क्या यह लोग इसी की बाट देखते हैं कि अल्लाह

फ़रिश्तों के साथ बादलों का छाता लगाये, उनके सामने आवे और जो कुछ होना है हो चुके और सब काम अल्लाह ही के हवाले हैं। (२१०) [रुकू २५]

(ऐ पैग़म्बर) याकूब के बेटों से पूछो कि हमने उसको कितनी खुली हुई निशानियाँ दीं और जब कोई शख्स ख़ुदा की उस नियामत को बदल डाले, तो ख़ुदा की मार बड़ी सख्त है। (२११) जो लोग इन्कारी हैं दुनियाँ की जिन्दगी उनको भली दिखाई गई है और ईमानवालों के साथ हँसी करते हैं, हालाँकि जो लोग परहेज़गार हैं उनके दर्जे कयामत के दिन उनसे बढ़ चढ़कर होंगे और अल्लाह जिसे चाहे बे हिसाब रोज़ी दे। (२१२) (शुरू में सब) ‡लोग एक ही दीन रखते थे, फिर अल्लाह ने पैग़म्बर भेजे जो ख़ुशख़बरी देते और इन्कारियों को डराते और उनकी मार्फ़त सच्ची किताबें भेजीं ताकि जिन बातों में लोग भेद डाल रहे हैं उन बातों का (यह किताब) फ़ैसला कर दे और जिन लोगों को किताब दी गई थी फिर वही अपने पास खुला हुक्म आये पीछे आपस की ज़िद से उनमें भेद डालने लगे तो वह सच्चा रास्ता जिसमें लोग भेद डाल रहे थे ख़ुदा ने अपनी मेहरबानी से ईमानवालों को दिखला दिया और अल्लाह जिसको चाहे सच्ची राह दिखलाये। (२१३) क्या तुम मुसलमानों ऐसा ख्याल करते हो कि बिहिश्त में जाओगे ? और अभी तक तुमको उन लोगों जैसी हालत नहीं पेश आई, जो तुमसे पहलों की हो चुकी है कि उनको सख्तियाँ और तकलीफें पहुँचीं और फटकारे गये यहाँ तक कि पैग़म्बर और ईमानवाले जो उनमें साथ थे चिल्ला उठे कि ख़ुदा की मदद का कोई वक्त भी है। जानो ख़ुदा की मदद क़रीब है। (२१४) (ऐ पैग़म्बर) तुमसे पूछते हैं कि क्या चीज† ख़र्च करें ? तो समझा दो जो माल ख़र्च करो (वह तुम्हारे) माता पिता का और नज़दीक के

---

‡ हज़रत आदम और उनकी संतान—

† किस प्रकार का धन ख़र्च करें ? उसका उत्तर यह दिया गया है कि जो चाहो ख़र्च करो पर उन लोगों पर जिनका वर्णन इस आयत में किया गया है।

रिश्तेदारों का और अनाथों (यतीमों) और दीन-दुखियायों (मुहताज) का और बटोहियों (मुसाफिरों) का हक़ है और तुम कोई भी भलाई करोगे अल्लाह उसको जानता है। (२१५) तुम पर जिहाद (लड़ाई) का हुक्म हुआ है और वह तुमको बुरा लगा है। शायद एक चीज़ तुमको भली लगे और वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (२१६) [रुकू २६]

(ऐ पैग़म्बर ! मुसलमान तुमसे) अदबवाले महीनों† में लड़ाई करने की बाबत पूछते हैं तो उनको समझा दो कि अदबवाले महीनों (पवित्र मासों) में लड़ना बड़ा पाप है। मगर अल्लाह की राह से रोकना और ख़ुदा को न मानना और अदब वाली मसजिद में न जाने देना और उस मसजिद से निकाल देना, अल्लाह के नज़दीक मार डालने से बढ़कर हैं और ये तो सदा तुमसे लड़ते ही रहेंगे यहाँ तक कि इनका बश चले, तो तुमको तुम्हारे दीन से फिरा दें। जो तुममें अपने दीन से फिरेगा और इन्कारी की दशा में मर जावेगा, तो ऐसे लोगों का किया कराया दुनिया और क़यामत में बेकार और यह दोज़खी हैं और यह हमेशा दोज़ख में ही रहेंगे। (२१७) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अल्लाह की राह में देश त्याग किया और जहाद भी किये। यही हैं जो ख़ुदा की कृपा की आशा लगाये हैं और अल्लाह क्षमा करनेवाला दयावान है। (२१८) (ऐ पैग़म्बर) तुमसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं, तो कह दो कि इन दोनों में बड़ा पाप है और लोगों के लिए फ़ायदे भी हैं। मगर इनके फ़ायदे से इनका पाप बढ़कर है और तुमसे पूछते हैं (ख़ुदा की राह में) क्या ख़र्च करें, तो समझा दो कि जितना ज्यादा हो। इसी तरह अल्लाह हुक्म तुम लोगों से खोल-खोलकर बयान करता है

† अरब में चार महीनों में लड़ाई को बहुत बुरा समझते थे। उनके नाम यह हैं (१) ज़ीक़ाद (२) ज़िलहिज (३) मुहर्रम (४) रजब। काफ़िर इन महीनों में भी लड़ाई छेड़ देते थे। मुसलमान उन दिनों में लड़ते डरते थे। इस पर उनको हुक्म दिया गया कि तुम से य लोग लड़ें तो तुम भी उन महीनों को खोलकर लड़ो।

(और) शायद तुम ध्यान दो। (२१९) और (ऐ पैग़म्बर यह लोग) तुमसे अनाथों के बारे में पूछते हैं, तो समझा दो कि उनकी भलाई ही भलाई है और अगर उनसे मिल-जुलकर रहो तो वह तुम्हारे भाई हैं और अल्लाह बिगाड़नेवाले को सम्भालनेवाले से (अलग) पहचानता है और अगर ख़ुदा चाहता तो तुमको कठिनाई में डाल देता। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (२२०) शिर्कवाली औरतें जब तक ईमान न लावें उनसे निकाह न करो। मुसलमान लौंडी शिर्कवाली बीबी‡ से भली है, अगर तुमको पसन्द भी हो। शिर्कवाले मर्द से निकाह न करो, जब तक ईमान न लावे और शिर्कवाला तुमको कैसा ही भला लगे, उससे मुसलमान गुलाम भला और ये लोग (शिर्कवाले) दोजख़ की तरफ़ बुलाते हैं। अल्लाह अपनी मेहरबानी से बिहिश्त और बख़शीश की तरफ़ बुलाता है और अपनी आज्ञायें लोगों से खोल खोलकर बयान करता है, ताकि वह होशियार रहें। (२२१)
[रुकू २७]

(ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुमसे हैज़ (मासिक धर्म) के बारे में पूँछते हैं तो समझा दो कि यह गन्दगी है। (हैज़) के दिनों में औरतों से अलग रहो और जब तक पाक न हो लें उनके पास न जाओ। फिर जब नहा-धो लें, तो जिधर से जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको बता दिया है, उनके पास जाओ। बेशक अल्लाह तौबह करनेवालों को दोस्त रखता है और सफ़ाई रखनेवालों को दोस्त रखता है। (२२२) तुम्हारी बीबियाँ (गोया) तुम्हारी खेतियाँ हैं। अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए आयन्दा का भी बन्दोबस्त रक्खो और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उसके सामने हाज़िर होना है। (ऐ पैग़म्बर) ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (२२३) और सलूक करने और परहेज़गारी रखने और लोगों में मिलाप कराने

‡ शिर्कवाली—ख़ुदा की ज़ात में और गुण में दूसरे को शरीक करनेवाली दूसरों को पूजनेवाली।

में खुदा की कसम§ मत खाओ। अल्लाह सुनता और जानता है। (२२४) तुम्हारी फ़िजूल† कसमों पर खुदा तुमको नहीं पकड़ेगा। लेकिन उनको पकड़ेगा, जो तुम्हारे दिली इरादे हों और अल्लाह बख्शनेवाला (और) बरदाश्त करनेवाला है। (२२५) जो लोग अपनी बीबियों के पास जाने की कसम खा बैठें, उनको चार महीने की मुहलत है, फिर (इस मुद्दत में) अगर मिल जावें, तो अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है। (२२६) और अगर तलाक की ठान लें तो अल्लाह सुनता जानता है। (२२७) और जिन औरतों को तलाक दी गई हो वह अपने आपको तीन दफे कपड़ों के आने तक (निकाह से) रोके रक्खें और अगर अल्लाह और कयामत का यकीन रखती हैं, तो जो कुछ भी (बच्चे की किस्म से) खुदा ने उनके पेट में पैदा कर रक्खा है, उसका छिपाना उनको जायज नहीं और उनके पति उनको अच्छी तरह रखना चाहें, तो वह इस बीच में उनको वापिस लेने के ज्यादा हकदार हैं और जैसे (मर्दों का हक) औरतों पर वैसे ही दस्तूर के मुताबिक औरतों का (हक मर्दों पर) हों, पुरुषों को स्त्रियों पर प्रधानता है और अल्लाह जबरदस्त और हिकमतवाला है। (२२८) [रुकू २८]

तलाक दो दफे (करके दी जाय) फिर दस्तूर के मुताबिक रखना या अच्छे बर्ताव के साथ रुखसत कर देना और जो तुम उनको दे चुके हो उसमें से तुमको कुछ भी वापिस लेना जायज नहीं। मगर यह कि मियाँ बीबी को डर हो कि खुदा ने जो हदें ठहरा दी हैं, उन पर कायम नहीं रह सकेंगे, फिर अगर तुम लोगों को इस बात का डर हो कि मियाँ बीबी अल्लाह की हदों पर कायम नहीं रह सकेंगे और औरत‡

---

§ यानी यह कसम न खाओ कि मैं ऐसे-ऐसे आदमी के साथ कोई भली न करूँगा। या इन-इन दो लोगों में मिलाप न कराऊँगा।

† जो अपने आप मुंह से निकल जाय जैसे कुछ लोग बात बात में कहते हैं 'वल्लाह'। कुछ लोग कहते हैं कि यह वह कसम है जो मनुष्य क्रोध में खाता है। ऐसी कसम को तोड़ने में कुछ पाप नहीं।

‡ मर्द औरत को तलाक दे सकता है और औरत मर्द से खुला ले सकती है। यानी एक दूसरे से न निभे तो अलग हो सकते हैं।

(अपना पीछा छुड़ाने के एवज) कुछ दे निकले तो इसमें दोनों पर कुछ पाप नहीं यह अल्लाह की बाँधी हुई हदें हैं तो इनसे आगे मत बढ़ो और जो अल्लाह की बाँधी हुई हदों से आगे बढ़ जायँ, तो यही लोग ज़ालिम हैं। (२२९) अब अगर औरत को (तीसरी बार) तलाक़‡ दे दी तो इसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न कर ले, उसके लिए हलाल नहीं (हो सकती) हाँ, अगर (दूसरा पति उससे विषय भोग करके) उसको तलाक दे दे, तो दोनों (मियाँ-बीबी) पर कुछ पाप नहीं कि फिर दूसरे से (परस्पर) प्रेम कर लें, बशर्ते कि दोनों को आशा हो कि अल्लाह की बाँधी हुई हदों पर कायम रह सकेंगे और यह अल्लाह की हदें हैं जिनको उन लोगों के लिए बयान फ़र्माता है जो समझते हैं। (२३०) और जब तुमने औरतों को (दो बार) तलाक दे दी और उनकी मुद्दत पूरी होने को आई तो दस्तूर के मुताबिक उनको रक्खो या उनको (तलाक तीसरी) (देकर) रुखसत कर दो और सताने के लिए उनको (अपनी स्त्री बना के) न रखना कि (बाद को उन पर) ज्यादती करने लगो और जो ऐसा करेगा, तो अपना ही खोयेगा और अल्लाह के हुक्मों को कुछ हँसी-खेल न समझो और अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं, उनको याद करो और

---

‡ तलाक़ का यह दस्तूर है कि जब कोई मुसलमान मर्द अपनी औरत को तलाक़ देता है तो कम से कम दो आदमियों के सामने तलाक़ देता है और एक महीने के बाद दूसरी तलाक़ भी इस तरह से देता है। यहाँ तक तो मियाँ बीबी में सुलहनामा हो सकता है। इसके एक महीने बाद तीसरी तलाक़ दी जाती है इस तलाक़ देने के बाद फिर मर्द उस औरत के पास नहीं जा सकता। यह औरत ३ माह १० दिन बाद निकाह (ब्याह) कर सकती है। दूसरे पति के साथ निकाह हो जाने पर अगर दूसरा पति तलाक़ दे दे तो सिर्फ़ इस हालत में कि वह दूसरे पति के साथ सम्भोग कर चुकी हो (हम-बिस्तर हो चुकी हो) अपने पूर्व पति के साथ फिर निकाह कर सकती है। परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ निकाह करके विषय-भोग न कर ले (यानी हमबिस्तर न हो ले) कदापि पूर्व पति से निकाह नहीं कर सकती।

यह कि उसने तुम पर किताब और अकल की बातें उतारीं जिससे वह तुमको समझाता है और अल्लाह से डरते रहो और जान रक्खो कि अल्लाह सबको जानता है। (२३१) [रुकू २६]

और जब औरतों को तीन बार तलाक दे दो और वह अपनी इद्दत की मुद्दत† पूरी कर लें और जायज तौर पर आपस में (किसी से) उनकी मर्जी मिल जाय, तो उनको (दूसरे) शौहरों के साथ निकाह कर लेने से न रोको। यह नसीहत उसको की जाती है, जो तुममें अल्लाह और कयामत के दिन पर ईमान रखता है यह तुम्हारे लिए बड़ी पाकीजगी और बड़ी सफाई की बात है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (२३२) जो शख्स (बीबी को तलाक दिये पीछे अपनी औलाद को) पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे, तो उसकी खातिर मातायें अपनी औलाद को पूरे दो बरस दूध पिलायें और जिसका वह बच्चा है (यानी बाप) उस पर दस्तूर के मुताबिक माताओं को खाना कपड़ा देना लाजिम है। किसी को तकलीफ न दीजिये, मगर वहीं तक जहाँ तक उसकी सामर्थ्य हो। माता को उसके बच्चे की वजह से नुकसान न पहुँचाया जाय और न उसको जिसका बच्चा है (यानी बाप को) उसके बच्चे की वजह से किसी तरह का नुकसान (पहुँचाया जाय) और (दूध पिलाने का खाना खुराक जैसा असल बाप पर) वैसा (उसके) वारिस पर फिर अगर (वक्त से पहिले माता पिता) दोनों अपनी मर्जी से और सलाह से (दूध) छुड़ाना चाहें तो उन पर कुछ पाप नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को (किसी धाय से) दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कुछ पाप नहीं बशर्ते कि जो तुमने दस्तूर के मुताबिक (उनको) देना किया था उनके हवाले करो और अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि जो कुछ भी तुम करते

---

† इद्दत उस मुद्दत को कहते हैं जिस मियाद के अन्दर औरत तलाक देने के बाद व उसका शौहर मर जाने के बाद निकाह नहीं कर सकती।

इद्दत की मुद्दत चार महीने दस दिन है। वास्तव में यह है कि इस बीच स्त्री तीन बार मासिक धर्म से पवित्र हो जाय।

हो अल्लाह उसको देख रहा है । (२३३) और तुममें जो लोग मर जायें और बीबियाँ छोड़ मरें तो (औरतों को चाहिए कि) चार महीने दस दिन अपने तईं रोके रहें† फिर जब अपनी (इद्दत की) मुद्दत पूरी कर लें तो जायज़ तौर पर जो कुछ अपने हक़ में करें उसका तुम (मरे के वारिसों) पर कुछ पाप नहीं और तुम लोग जो कुछ करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है । (२३४) और अगर तुम किसी बात की आड़ में औरतों को निकाह का संदेशा भेजो या अपने दिलों में छिपाये रक्खो तो इसमें (भी) तुम पर कुछ पाप नहीं अल्लाह को मालूम है कि तुम इसका विचार करोगे, मगर इनसे निकाह का ठहराव तो चुपके से भी न करना‡, हाँ जायज़ तौर पर बात कह दो । और जब तक मियाद मुकर्रर (यानी इद्दत) समाप्त न हो जाय निकाह के बन्धन की बात पक्की न कर बैठना और जाने रहो कि जो कुछ तुम्हारे जी में है अल्लाह जानता है सो उससे डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह बख्शनेवाला और सहनशील है । (२३५) [रुकू ३०]

अगर तुमने औरतों के साथ हमबिस्तरी न किया हो और उनका मिहर§ न ठहराया हो इससे पहिले उनको तलाक दे दो तो उसमें तुम पर कोई पाप नहीं । हाँ ऐसी औरतों के साथ कुछ सलूक करो । सामर्थ वाले और बेसामर्थवाले अपनी हैसियत के लायक उनको खर्च जैसा खर्च का दस्तूर है और भले आदमियों पर लाज़िम है । (२३६) और अगर हमबिस्तर होने से पहिले और मिहर ठहराने के बाद औरतों को तलाक दे दो । तो जो कुछ तुमने ठहराया था उसका आधा देना चाहिए मगर यह कि स्त्रियाँ छोड़ बैठें या (मर्द) जिसके हाथ में निकाह का करार (कायम रखना) है वह (अपना हक) छोड़ दे,

---

† यानी इतने दिन ब्याह निकाह न करें ।

‡ यानी इद्दत भर उनसे निकाह की बात न करो और न यह जी में ठानो कि मैं इनके साथ ब्याह करूँगा ।

§ मिहर उस करार को कहते हैं जो निकाह के समय शौहर औरत के साथ जायदाद व नक़द रुपया देने का करता है ।

(यानी पूरा मिहर देने पर राज़ी हो) और अपना हक़ छोड़ दे तो यह परहेज़गारी से ज़ियादह क़रीब है और अपने बीच इस श्रेष्ठ विचार को मत भूलो। जो करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (२३७)

(मुसलमानों !) नमाज़ों की और बीच की नमाज़ का पूरा ध्यान रक्खो और अल्लाह के आगे अदब से खड़े हुआ करो। (२३८) फिर अगर तुमको डर हो तो पैदल या सवार (जैसी हालत हो) नमाज़ पढ़ लो फिर जब तुम निश्चिंत हो जाओ तो जिस तरह अल्लाह ने तुमको (पैग़म्बर की मार्फ़त नमाज़ का तरीक़ा) सिखाया जो तुम पहिले नहीं जानते थे उसी तरीक़े से अल्लाह को याद करो। (२३९) जो लोग तुममें से मर जायँ और बीबियाँ छोड़ मरें तो अपनी बीबियों के हक़ में एक बरस तक के बर्ताव (भोजन आदि का प्रबन्ध) और (घर से) न निकालने की वसीयत कर मरें फिर अगर औरतें (ख़ुद ही घर से) निकल खड़ी हों तो वाजिब बातों में से जो कुछ अपने हक़ में करें उनका तुम पर कुछ पाप नहीं और अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मतवाला है। (२४०) जिन औरतों को तलाक़ दी जाय उनके साथ (मिहर के अलावा भी) दस्तूर के मुताबिक़ (जोड़े वग़ैरह से कुछ) सलूक करना परहेज़गारों को मुनासिब है। (२४१) इसी तरह अल्लाह तुम लोगों के लिए अपने हुक्मों को खोल खोलकर बयान फ़र्माता है ताकि तुम समझो। (२४२) [रुकू ३१]

(ऐ पैग़म्बर) क्या तुमने उन लोगों पर नज़र नहीं की, जो अपने घरों से मौत के डर के मारे निकल खड़े हुए और वह हज़ारों ही थे फिर ख़ुदा ने उनको हुक्म दिया कि मर जाओ फिर उनको जिलाकर उठाया बेशक अल्लाह तो लोगों पर कृपालु है। लेकिन अक्सर लोग शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) नहीं होते। (२४३) ख़ुदा की राह में लड़ो और जाने रहो कि अल्लाह सुनता और जानता है। (२४४) कोई है जो ख़ुदा को ख़ुश दिल से क़र्ज़† दे कि उसके क़र्ज़ को उसके लिए कई गुना बढ़ा देगा। अल्लाह ही ग़रीब और अमीर बनाता है और उसी की तरफ़ तुम (सब) को लौटकर जाना है। (२४५) (ऐ पैग़म्बर) क्या तुमने इसराईल के

† यानी जिहाद के लिए जो धन या साधन हैं उन का प्रबन्ध करे।

बेटों के सरदारों पर नजर नहीं की कि एक समय उन्होंने मूसा के बाद अपने पैग़म्बर (शमूईल) से दरख्वास्त की थी कि हमारे लिए एक बादशाह मुकर्रर करो कि हम (उसके सहारे से) अल्लाह की राह में जेहाद करें। (पैग़म्बर ने) कहा अगर तुम पर जेहाद फ़र्ज़ किया जाय, तो तुमसे कुछ दूर नहीं (समय है) कि तुम न लड़ो। बोले कि हम अपने घरों और बाल-बच्चों से तो निकाले जा चुके तो हमारे लिए अब कौन सा वजह है कि खुदा की राह में न लड़ें फिर जब उन पर जेहाद फ़र्ज़ किया गया, तो उनमें से चन्द गिने हुओं के सिवाय बाकी सब फिर बैठे। अल्लाह तो अपराधियों को खूब जानता है। (२४६) उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा कि अल्लाह ने तालूत† को तुम्हारा बादशाह मुकर्रर किया है। (उस पर) कहने लगे कि उसको हम पर कैसे हुकूमत मिल सकती है। हालाँकि, इससे तो हुकूमत के हम ही जियादह हक़दार हैं कि उसको तो माल से भी कुछ ऐसी अमीरी नसीब नहीं। (पैग़म्बर ने) कहा कि अल्लाह ने तुम पर उसी को पसन्द फ़र्माया है कि इल्म और जिस्म में उसको बढ़ती दी है और अल्लाह अपना मुल्क जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ी गुंजाइशवाला जानकार है। (२४७) उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह होने की यह निशानी है कि वह ‡सन्दूक जिसमें तुम्हारे पालनेवाले की तसल्ली (यानी तौरात) है और मूसा और हारून जो छोड़ मरे हैं, उनमें की बची-खुची चीजें हैं, तुम्हारे पास आ जायेंगी फ़रिश्ते उनको उठा लायेंगे। अगर ईमान रखते हो तो यही एक बात तुम्हारे लिए निशानी है। (२४८) [रुकू ३२

---

† हज़रत मूसा के बाद कुछ समय बनी इस्राईल का काम बना रहा। फिर उनके पापों के कारण उन पर एक काफ़िर बादशाह ने अपना अधिकार जमा लिया। इससे उनको अनेक कष्ट दिये तो इन्होंने अपने नबी हज़रत शमऊन से प्रार्थना की कि हमारे लिए कोई बादशाह ठहरा दीजिये जिसके आधीन हम जालूत से युद्ध कर सकें हज़रत शमऊन ने कहा खुदा ने तालूत को तुम्हारा बादशाह नियत किया है।

‡ बरकत का सन्दूक तालूत के अधिकार में आ जाना उसकी बादशाहत का ईश्वरीय प्रमाण है।

फिर जब तालूत फौज सहित चला तो कहा कि (रास्ते में एक नहर पड़ेगी) अल्लाह उस नहर से तुम्हारी जाँच करनेवाला है, तो (जो अघाकर) उसका पानी पी लेगा, वह हमारा नहीं और जो उसको नहीं पियेगा, वह हमारा है, मगर (हाँ) अपने हाथ से कोई एक चिल्लू भर ले। उन लोगों में से गिने हुए चन्द के सिवाय सभी ने तो उस (नहर) में से (अघाकर) पी लिया। फिर जब तालूत और ईमानवाले जो उसके साथ थे नहर के पार हो गये, तो (जिन लोगों ने तालूत का हुक्म न माना था) कहने लगे कि हममें तो जालूत और उसके लशकर से मुक़ाबिला करने की आज ताक़त नहीं है। (इस पर) वह लोग जिनको यक़ीन था कि उनको ख़ुदा के सामने हाजिर होना है, बोल उठे—अक्सर अल्लाह के हुक्म से थोड़ी सेना ने बड़ी सेना पर जीत पाई है। अल्लाह सन्तोषियों का साथी है। (२४६) जब जालूत और उसकी फौजों के मुक़ाबिले में आये तो दुआ की कि हमारे पालनेवाले हमको पूरा सन्तोष दे और हमारे पाँव जमाये रख और काफ़िरों की जमात पर हमको जीत दे। (२५०) उसमें फिर उन लोगों ने अल्लाह के हुक्म से दुश्मनों को भगा दिया और जालूत को दाऊद ने क़त्ल किया और उनको ख़ुदा ने राज्य दिया और अक़्ल दी। और जो चाहा उनको सिखा दिया। अगर अल्लाह किन्हीं लोगों के ज़रिये से किन्हीं को न हटाता रहे, तो मुल्क उलट पलट जाय। लेकिन अल्लाह संसार के लोगों पर दयालु है। (२५१) (ऐ पैग़म्बर) यह अल्लाह की आयतें जो मैं तुमको सचाई से पढ़-पढ़कर सुनाता हूँ और बेशक तुम पैग़म्बरों में से हो। (२५२) ॥

सूरे बक़र—तीसरा पारा।

तिलकर्रुसुल (यह पैग़म्बर)

इन पैग़म्बरों में से हमने किसी पर किसी को प्रधानता दी। इनमें से कोई तो ऐसे हैं, जिनके साथ अल्लाह ने बात चीत की और किसी के

दर्जे ऊँचे किये। मरीयम के बेटे ईसा को हमने खुले-खुले चमत्कार दिये और पाकरूह (जिब्रील) से उनका समर्थन किया और अगर ख़ुदा चाहता, तो जो लोग उनके बाद हुए उनके पास खुले हुए निशान आये पीछे एक दूसरे से न लड़ते, लेकिन लोगों ने एक दूसरे में भेद डाला। तो इनमें से कोई वह थे जो ईमान लाये और कोई वह थे जो काफ़िर (इन्कारी) हुए और अगर ख़ुदा चाहता (यह लोग) आपस में न लड़ते, मगर अल्लाह जो चाहता है करता है। (२५३) [रुकू ३३]

ऐ ईमानवालों उस दिन (प्रलय) के आने से पहले हमारे दिये हुए में से ख़र्च कर दो। जिसमें क्रय-विक्रय (ख़रीद-फ़रोख़्त) न होगा, न यारी होगी और न सिफ़ारिश होगी और जो इन्कारी हैं, वह लोग अन्यायी हैं। (२५४) अल्लाह है उसके सिवा कोई पूजा के काबिल नहीं। (जगत का) साक्षात् सम्भालनेवाला, न उसको ऊँघ आती है और न नींद, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है उसी का है। कौन है जो उसकी इजाजत के बग़ैर उसके सामने सिफारिश करे। जो कुछ लोगों के सामने और पीछे है उसको (सब) मालूम है और लोग उसकी मालूमात में से किसी पर काबू नहीं हो सकते, सिवाय उसके कि जितनी वह चाहे उसका राज्य आकाश और जमीन में है और इन दोनों की रक्षा उस पर भारी नहीं और वह महान और सर्वोपरि है। (२५५) दीन में जबरदस्ती नहीं, भूल और सुधार जाहिर हो चुकी है कि जो झूठी इबादत को न माने और अल्लाह पर ईमान लाये, तो उसने मजबूत रस्सी पकड़ रक्खी है जो टूटनेवाली नहीं और अल्लाह सुनता जानता है। (२५६) अल्लाह ईमानवालों का मददगार है कि उनको अन्धेरे से निकालकर रोशनी में लाता है और जो लोग काफ़िर हैं, उनके साथी शैतान हैं कि उनको रोशनी से निकालकर अन्धेरे में ढकेलते हैं। यही लोग नरकवासी हैं। वह हमेशा दोज़ख ही में रहेंगे। (२५७) [रुकू ३४]

(ऐ पैग़म्बर) क्या तुमने उस शख़्स को नहीं देखा कि जो सिर्फ इस वजह से कि ख़ुदा ने उसको राज्य दे रक्खा था इब्राहीम से उनके

परवर्दिगार के बारे में जिरह करने लगा† जब इब्राहीम ने (उससे) कहा कि मेरा पालनेवाला वो वह है जो जिलाता और मारता है (इस पर) वह कहने लगा कि मैं भी जिलाता और मारता हूँ, इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह तो सूर्य को पूर्व से निकालता है आप उस पश्चिम से निकालें इस पर वह काफिर चुप रह गया और अल्ला अन्यायियों को शिक्षा नहीं देता। (२५८) या जैसे वह शख्स‡ एक उजड़ी बस्ती से होकर गुजरा उसे देखकर ताज्जुब से कहने ल कि अल्लाह इस बस्ती को इसके उजड़े पीछे कैसे आबाद करेगा ? पर अल्लाह ने उनको सौ वर्ष तक मुर्दा रक्खा फिर उनको जि उठाया (और) पूछा (तुम इस हालत में) कितनी मुद्दत रहे। उ कहा एक दिन रहा हूँ या एक दिन से भी कम फर्माया (नहीं बल्कि तुम सौ वर्ष (इसी हालत में) रहे। अब अपने खाने पीने की चीजों को देखो कि कोई बुसी तक नहीं और अपने गधे तरफ (भी) नजर करो। (जिस पर तुम सवार थे) और तुम (इतने दिनों मुर्दा रखने और फिर जिला उठाने से) मकसद या कि हम तुम लोगों के लिए (अपनी कुदरत का) एक नमूना बन और (गधे की) हड्डियों की तरफ नजर करो कि हम कैसे उन (जोड़ जोड़कर) उनका (ढाँचा बना) खड़ा करते फिर उन मांस चढ़ाते हैं, फिर जब उन पर शक्ति (अल्लाह की शक्ति का

---

† यह कथा बाबिल के बादशाह नमरूद की है। वह स्वयं अपने पूज्य बताता था। इब्राहीम ने उसकी पूजा न की और कहा कि मैं तो उस एक पूजा करता हूँ जो मारता और जिलाता है यानी खुदा की। नमरूद उसको का तत्व न समझा और तुरन्त दो अपराधियों को बुलवा कर एक को छ दिया और दूसरे को मरवा डाला। इस पर इब्राहीम ने सूर्य को उ और उसके अस्त करने की बात कही। नमरूद अब कुछ न बोल सका।

‡ यह बात हजरत उजैर की है। पहले उनकी समझ में न आता था खुदा मरनेवालों को कैसे जिला सकता है। जब वह स्वयं मरकर फिर उठे तो उनको विश्वास हुआ।

चमत्कार) जाहिर हुआ तो बोल उठे कि अब मैं यकीन करता हूँ कि अल्लाह को हर चीज पर काबू रहता है। (२५६) और जब इब्राहीम ने (खुदा से) निवेदन किया कि हे मेरे परवर्दिगार मुझको दिखा कि तू मुर्दों को कैसे जिलाता है। खुदा ने फर्माया क्या तुमको इसका यकीन नहीं। अर्ज किया, क्यों नहीं। मगर मैं अपने दिल की तसल्ली चाहता हूँ, फर्माया तो (अच्छा) चार पक्षी लो और उनको अपने पास मँगाओ फिर एक-एक पहाड़ी पर उनका एक-एक टुकड़ा रख दो फिर उनको बुलाओ तो वह (आप से आप) तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे और जाने रहो। अल्लाह जबरदस्त हिकमतवाला है। (२६०) [रुकू ३५]

जो लोग अपने माल खुदा की राह में खर्च करते हैं उनकी (खैरात की) मिसाल उस दाने जैसी है, जिससे सात बालें उगती हैं, हर बाल में सौ दाने और अल्लाह बढ़ती देता है, जिसको चाहता है और अल्लाह (बड़ी) गुंजाइशवाला जानकार है। (२६१) जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं फिर खर्च किये पीछे (किसी तरह का) एहसान नहीं जताते और न तकलीफ देते हैं उनको उनका सवाब उनके पालनकर्त्ता के यहाँ मिलेगा और न तो उन पर भय होगा और न वह उदास होंगे। (२६२) भली बात बोलना और क्षमा करना उस पुण्य से बहुत बढ़कर है जिसके पीछे दुःख हो और अल्लाह निडर और सब्र करनेवाला है। (२६३) ईमानवालों। अपनी खैरात को एहसान जताने और नुक्सान देने से उस शख्स की तरह अकारथ मत करो जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिए खर्च करता है और अल्लाह और क़यामत पर यकीन नहीं रखता तो उसकी (खैरात की) मिसाल चट्टान जैसी है कि उस पर मिट्टी (पड़ी) है फिर उस पर जोर का मेह बरसा और उसको सपाट कर गया उनको अपनी कमाई कुछ हाथ नहीं ‡लगती और

‡ लोगों को दिखाने के लिए दान पुण्य करने से कुछ लाभ न होगा। चट्टान पर थोड़ी सी मिट्टी के नीचे बीज बोने से नहीं जमता। इसी तरह दिखावे की नेकी बेकार है।

अल्लाह काफ़िरों को नसीहत नहीं दिया करता। (२६४) और जो लोग खुदा की खुशी के लिए और अपनी नियत साबित रखकर अपने माल खर्च करते हैं उनकी मिसाल एक बाग जैसी है जो ऊँचे पर है, उस पर ज़ोर का मेंह पड़े, तो दूना फल लावे और अगर उस पर ज़ोर का मेंह न पड़ा, तो (उसकी) हलकी फुआर (भी काफ़ी है) और तुम लोग जो कुछ भी करते हो, अल्लाह देख रहा है।‡ (२६५) भला तुम में से कोई भी इस बात को पसन्द करेगा कि खजूरों और अंगूरों का अपना एक बाग हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों। हर तरह के फल उसको वहाँ हासिल हों और वह बुड्ढा हो जावे और उसके (छोटे-छोटे) कमज़ोर बच्चे हों, अब उस बाग पर एक हवा का बवंडर चले, जिसमें आग (भरी) हो, जो उस बाग को जला दे। इसी तरह अल्लाह (अपने) हुक्मों को खोल-खोलकर तुम लोगों से बयान करता है, ताकि तुम सोच सको§। (२६६) [रुकू ३६]

ऐ ईमानवालो (खुदा की राह में) अच्छी चीज़ों में से जो तुमने आप कमाई की हों और हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा की हों, खर्च करो और खराब चीज़ के देने का इरादा भी न करना। तुम भी उसको न लो और अल्लाह बेपरवाह (व) अच्छाइयों का घर है। (२६७) शैतान तुमको तंगी से डराता और बेशर्मी की तरफ़ लगाता है और अल्लाह अपनी तरफ से क्षमा और कृपा का तुमको वचन देता है और अल्लाह गुंजाइशवाला और जानकार है। (२६८) जिसको चाहता है समझ देता है और जिसको समझ दी गई, बेशक उसने बड़ी दौलत पाई और शिक्षा भी वही मानते हैं जो समझदार हैं। (२६९) जो खर्च भी

---

‡ ऊँची जगह जो बाग होता है वहाँ बहुत पानी बह जाता है और कम पानी भी पेड़ों के काम आता है। इसी प्रकार सच्चे दिल से जो दान किया जाता है वह थोड़ा हो या बहुत लाभदायक होता है।

§ कोई भी यह नहीं चाहता कि उसकी कमाई बर्बाद हो पर जो लोग दिखाने के लिए अच्छे काम करते हैं वह मानो ऐसा बाग लगाते हैं जिस का फल न स्वयं वह खायेंगे न उनके बच्चों को मिलेगा।

तुम (ख़ुदा की राह में) उठाओ या (उसके नाम की) कोई मन्नत† मानो, वह सब अल्लाह को मालूम है और ईश्वर के अलावा किसी की मन्नत मानकर ईश्वर का हक़ मारते हैं, उनका कोई सहायक न होगा। (२७०) अगर खैरात सबके सामने दो, तो यह भी अच्छा§ और अगर इसको छिपाओ और जरूरतवालों को दो, तो यह तुम्हारे हक़ में और भी अच्छा है और ऐसा देना तुम्हारे पापों का कफ्फारा‡ होगा और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उससे खबरदार है। (२७१) (ऐ पैग़म्बर) इन लोगो को सीधे मार्ग पर लाना तुम्हारे काबू का नहीं, बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है सीधे मार्ग पर लाता है और तुम लोग माल में से जो कुछ भी खर्च करोगे, सो अपने लिए और तुम तो ख़ुदा ही को ख़ुश करने के लिए खर्च करते हो और माल में से जो कुछ भी (खैरात के तौर पर) खर्च करोगे, तुमको पूरा-पूरा भर दिया जायगा और तुम्हारा हक़ न मारा जायगा। (२७२) उन दीनों को देना चाहिए, जो अल्लाह की राह में घिरे (ध्यान में) बैठे हैं—मुल्क में किसी तरफ को जा नहीं सकते (जो शख्स इनके हाल से) बेख़बर है, इनके न माँगने से इनको मालदार समझता है, लेकिन तू इनकी सूरत से इनको साफ पहिचान लेगा कि वह लिपटकर लोगों से नहीं माँगते¶ जो कुछ तुम लोग माल में से (खैरात के तौर पर) खर्च करोगे, अल्लाह उसको जानता है। (२७३) [रुकू ३७]

---

† मन्नत—काम पूरा होने के लिए दान पुण्य करने की मन में मानता मानना या सकल्प लेना।

§ दान देना हर प्रकार अच्छा है चाहे छिपाकर दिया जाय चाहे सब के सामने दिया जाय परन्तु गुप्त दान अधिक सुन्दर है क्योंकि इस प्रकार जिसकी सहायता की जाती है उसे दूसरे लोगों के आगे लज्जित नहीं होना पड़ता।

‡ कफ्फारा:—पापों का नाश करनेवाला।

¶ कुछ लोग रसूल से धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये उनके घर के पास बैठे रहते थे। वे किसी से कुछ माँगते न थे पर धनवान भी नहीं थे, इसलिए उनको सहायता का आदेश दिया गया है।

जो लोग रात और दिन छिपे और जाहिर अपने माल (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं, तो उनको पालनकर्त्ता के यहाँ से बदला मिलेगा और इनको न डर होगा और न वह उदास होंगे। (२७४) जो लोग ब्याज खाते हैं (कयामत के दिन) खड़े नहीं हो सकेंगे, मगर उस शख्स का सा खड़ा होना जिसको शैतान ने (अपनी) चपेट से पागल कर दिया हो यह उनके इस कहने की सजा है कि जैसा बेचने का मामला वैसा ही ब्याज का मामला है। हालांकि बेचने को तो अल्लाह ने हलाल या पाक किया है और (ब्याज) सूद को हराम (नापाक) तो जिसके पास उनके परवर्दिगार की तरफ से नसीहत पहुँची और उसने ब्याज खाना छोड़ दिया। जो (सूद) पहिले (ले चुका है) वह उसका हुआ और उसका मामला खुदा के हवाले और जो फिर वही काम करेगा तो ऐसे ही लोग नारकी हैं और वह हमेशा नरक ही में रहेंगे। (२७५) अल्लाह ब्याज को मिटाता और खैरात बढ़ाता है। जितने किये को न माननेवाले (नाशुक्रा) हैं और कहना नहीं मानते खुदा उनसे राजी नहीं। (२७६) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये और नमाज पढ़ते और जकात देते रहे उनका बदला उनके पालनकर्त्ता के यहाँ से मिलेगा और उन पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (२७७) ऐ ईमानवालों! अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह से डरो और जो सूद बाकी है छोड़ बैठो (२७८) और अगर (ऐसा) न करो तो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने के लिए होशियार हो रहो और अगर तौबह करते हो तो अपनी असल रकम तुमको मिलेगी और तुम (किसी का) नुकसान न करो और न कोई तुम्हारा नुकसान करेगा।‡ (२७९) और अगर (कोई) तंगदस्त तुम्हारा कर्जदार हो तो अच्छी हालत तक की मुहलत दो और अगर समझो तो तुम्हारे हक में यह अधिक अच्छा है कि उसको (असल, कर्ज भी) छोड़ दो।

---

‡ जिन मुसलमानों ने रुपया ब्याज पर दे रक्खा था, उनसे कहा गया कि तुम मूलधन ले लो और ब्याज छोड़ दो और अगर ब्याज पर अड़ोगे, तो तुमको खुदा और रसूल के विरोध का सामना करना पड़ेगा।

(२८०) और उस दिन से डरो जब कि तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाये जाओगे। फिर हर शख्स को उसके किये का पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और लोगों पर अन्याय न होगा। (२८१) [रुकू ३८]

ऐ §ईमानवालों। जब तुम एक मियाद मुक़र्रर तक उधार का लेन देन करो तो उसको लिख लिया करो और (अगर तुमको लिखना न आता हो तो) तुम्हारे बीच में कोई लिखनेवाला इंसाफ से लिख दे और जिससे लिखवाओ तो उस लिखनेवाले को चाहिए कि लिखने से इन्कार न करे जिस तरह ख़ुदा ने उसको सिखाया है (उसी तरह) उसको भी चाहिए कि (बेउज्र) लिख दे और जिसके जिम्मे क़र्ज़ निकलेगा (वह दस्तावेज़ का) मतलब बोलता जाय और अल्लाह से डरे वही उसके काम का संभालनेवाला है और हक़ में से किसी क़िस्म की काट-छाँट न करे जिसके जिम्मे क़र्ज़ आयद होगा अगर वह नासमझ हो या कमज़ोर हो या ख़ुद मतलब खुलासा न कर सकता हो तो उसका मुख्तार इंसाफ के साथ दस्तावेज का मतलब बोलता जाय और अपने लोगों में से जिन लोगों पर तुम्हारा विश्वास हो (ऐसे) दो मर्दों को गवाह कर लिया करो फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतों को कि उनमें से कोई एक भूल जायगी तो एक दूसरे को याद दिलायेगी और जब गवाह बुलाये जायें तो इन्कार न करें और मामला मियादी छोटा हो या बड़ा उसके लिखने में सुस्ती न करो ख़ुदा के नजदीक बहुत ही मुन्सिफाना है और गवाही के लिए भी यही तरीका बहुत ही ठीक है और ज्यादातर सोचने के लायक है कि तुम शक और शुबह न करो मगर सौदा नक़द दाम से हो जिसको तुम हाथों-हाथ आपस में लिया दिया करते हो तो उसके न लिखने में तुम पर कुछ पाप नहीं और जबकि ख़रीद फ़रोख्त करो तो गवाह कर लिया करो और लिखनेवाले को किसी तरह का नुकसान न पहुँचाया

§ उधार का लेन देन हो तो भूल चूक न होने के लिए दो हुक्म है। (१) उसको लिखा लेना और (२) गवाही एक मर्द और दो औरतों की या दो मर्दों को लेना।

जाय और न गवाह को और ऐसा करो तो यह तुम्हारा पाप है और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुमको सिखाता है और अल्लाह सब कुछ जानता है। (२८२) अगर सफर में हो और तुमको कोई लिखने-वाला न मिले तो गिरवीं पर कब्जा रक्खो पस अगर तुममें से एक का एक विश्वास करे तो जिस पर विश्वास किया गया है। (यानी कर्ज लेनेवाला) उसको चाहिए कर्ज देनेवाले की अमानत यानी कर्ज को (पूरा पूरा) अदा कर दे और खुदा से जो उसके काम का बनानेवाला है डरे और गवाही को न छिपाओ और जो उसको छिपायेगा तो वह दिल का खोटा है और जो कुछ भी तुम लोग करते हो अल्लाह को सब मालूम है। (२८३) [रुकू ३६]

जो कुछ आसमानों में और जो कुछ जमीन में है अल्लाह ही का है और जो तुम्हारे दिल में है अगर उसको जाहिर करो या उसको छिपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा फिर जिसको चाहे बख्शे और जिसको चाहे सजा दे और अल्लाह हर चीज पर (अधिकार) काबू रखता है। (२८४) रसूल (मोहम्मद) इस किताब को मानते हैं जो उसके परवर्दिगार की तरफ से उन पर उतरी है और पैगम्बर के साथ और मुसलमान भी सब अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और उसके पैगम्बरों पर ईमान लाये हम खुदा के पैगम्बरों में से किसी एक को जुदा नहीं समझते और बोल उठे हमने सुना और विश्वास किया। ऐ परवर्दिगार तेरी बख्शीश चाहिए और तेरी ही तरफ (पास) लौटकर जाना है। (२८५) अल्लाह किसी शख्स पर उसकी शक्ति से ज्यादा बोझ नहीं डालता। जिसने अच्छे काम किये उसका बदला उसी के लिए है जिसने बुरे काम किये उनकी (सजा भी) उसी के लिए है। ऐ हमारे परवर्दिगार अगर हम अनजान में भूल जायँ या चूक जायँ तो हमको न पकड़ और ऐ हमारे परवर्दिगार जो लोग हमसे पहले हो गये हैं उन पर तूने बोझ (परीक्षा) डाला था वैसा बोझ हम पर न डाल और ऐ हमारे पालनकर्त्ता इतना बोझ जिसको उठाने के हममें ताकत नहीं है उसे हमसे न उठवा और हमारे अपराधों पर ध्यान

न दे और हमारे गुनाहों को माफ़ कर और हम पर रहम कर तू ही हमारा मालिक है । हमें काफ़िरों के विरुद्ध मदद दे । (२८६) [रुकू ४०]

सूरे आल इमरान ।

सूरे आल इमरान मदीने में उतरी और उसमें २०० आयतें और २० रुकू हैं ।

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला मेहरबान (है) ।

अलिफ़, लाम, मीम (१) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं । जिन्दा (अविनाशी व जगत् का) सम्भालनेवाला (२) उसी ने तुम पर यह किताब वाजिब उतारी, जो उन (आसमानी किताबों) की तसदीक करती है, जो उससे पहले (उतर चुकी) हैं और उसी ने पहले लोगों को नसीहत के लिए तौरात और इञ्जील उतारी, उसी ने (और चीज़ों को भी) उतारा (जिससे सच-झूठ का) भेद (ज़ाहिर होता है) (३) जो लोग ख़ुदा की आयतों को सुनकर इन्कारी हैं, बेशक उनको सख्त सजा मिलेगी और अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेनेवाला है । (४) अल्लाह से कोई चीज़ ज़मीन में और आसमान में छिपी नहीं । (५) वही है जो माता के पेट में जैसी चाहता है, तुम लोगों की सूरत बनाता है । उसके सिवाय कोई इबादत के काबिल नहीं । वह ज़बरदस्त हिकमतवाला है । (६) (ऐ पैग़म्बर) वही है जिसने तुम पर यह किताब उतारी, जिसमें से बाज़ आयत पक्की† हैं कि वह असल किताब है और

---

† क़ुरान में दो तरह की आयतें हैं—एक मुहकम दूसरी मुतशाबिह । मुहकम (पक्का) वह वाक्य है जिसका अर्थ स्पष्ट है और इस लिए उसका

दूसरी सन्देह में डालनेवाली (कई अर्थ देनेवाली) तो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन है वह तो कुरान की उन्हीं शकवाली आयतों के पीछे पड़े रहते हैं, ताकि विरोध पैदा करें और उनके असल मतलब की खोज लगावें। हालांकि अल्लाह के सिवाय उनका असली मतलब किसी को मालूम नहीं और जो लोग इल्म में बड़ी पैठ रखते हैं, वह तो इतना ही कहकर रह जाते हैं कि इस पर हमारा ईमान है। सब हमारे परवर्दिगार की तरफ से हैं और वही समझते हैं, जिनको सूझ है। (७) हमारे परवर्दिगार हमको सीधी राह पर लाये। पीछे हमारे दिलों को डाँवा-डोल न कर और अपनी सरकार से हमको रहमत कर दे, कोई शक नहीं तू बड़ा देनेवाला है। (८) ऐ हमारे पालनकर्त्ता! तू एक दिन बेशक लोगों को इकट्ठा करेगा। बेशक अल्लाह वादाखिलाफी नहीं किया करता। (९) [रुकू १]

जो लोग काफिर हैं, अल्लाह के यहाँ न तो उनके माल ही कुछ काम आयेंगे और न उनकी औलाद ही और यही नरक के ईंधन हैं। (१०) (इनकी भी) फिरऔनवालों और उनसे पहले लोगों कैसी गति होनी है कि उन्होंने आयतों को झूठा किया, तो अल्लाह ने उनको उनके गुनाहों के बदले धर पकड़ा और अल्लाह की मार बड़ी सख्त है। (११) (ऐ पैग़म्बर) जो लोग इन्कारी हैं, उनसे कह दो कि कोई दिन आता है (जल्दी ही) कि तुम हार जाओगे और नरक की तरफ हँकाये जाओगे। वह बुरा सामान है। (१२) उन दो गिरोहों में तुम्हारे लिए (खुदाई कुदरत) की निशानी (प्रमाण) हो चुकी है, जो एक-दूसरे से (बदर के युद्ध में) लड़ गये। एक गिरोह (मुसलमानों का) तो खुदा की राह में लड़ता था और दूसरा (गिरोह) काफिरों का था, जिनको आँखों देखते मुसलमानों का गिरोह अपने से दूना दिखलाई दे रहा था और

समझना सरल है। मुतशाबिह वे हैं जिनको कई पहलुओं से समझ सकते हैं या वे अक्षर हैं जिनका तात्पर्य कोई नहीं जानता जैसे अलिफ, लाम, मीम।

[1] मुसलमान मुहकम आयतों पर अमल करते हैं और मुतशाबिह पर यकीन रखते हैं। उनके मतलब के पीछे नहीं पड़ते।

अल्लाह अपनी मदद से जिसको चाहता है बल देता है†। इसमें संदेह नहीं कि जो लोग सूझ रखते हैं, उनके लिए इसमें नसीहत है। (१३) लोगों को चाही हुई चीजों (मसलन) बीबियों और बेटियों और सोने चांदी के बड़े-बड़े ढेरों और अच्छे अच्छे घोड़ों और चौपायों और खेती के साथ दिल लगी भली मालूम होती है (हालांकि) यह (तो) दुनिया की जिन्दगी के (क्षणिक) सामान हैं और अच्छा ठिकाना तो उसी अल्लाह के यहाँ है। (१४) (ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि मैं तुमको इनसे बहुत अच्छी चीज बताऊँ, वह यह कि जिन लोगों ने परहेजगारी अख्तियार की। उनके लिए उनके परवर्दिगार के यहाँ बाग हैं। जिनके नीचे नहरें बह रही हैं (और वह) उनमें हमेशा रहेंगे और (बागों के अलावा) पाक-साफ बीबियाँ हैं और खुदा की खुशी (मिलती) है‡ और अल्लाह बन्दों को देख रहा है। (१५) यह लोग जो कहते हैं कि हमारे पालनकर्ता हम ईमान लाये हैं, तू हमको हमारे गुनाह माफ कर और हमको नरक की सजा से बचा। (१६) जो सब्र करते हैं और सच बोलनेवाले और हुक्म माननेवाले और (खुदा की राह में) खर्च करनेवाले और आखिर रात के वक्तों में माफी चाहते हैं। (१७) अल्लाह इस बात की गवाही देता है कि उसके (एक खुदा के) सिवाय कोई भी पूजित नहीं और फरिश्ते और इल्मवाले भी गवाही देते हैं कि वही इन्साफ का सम्भालने वाला है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं (वह) जबरदस्त हिकमतवाला है। (१८) दीन (धर्म) तो खुदा के नजदीक यही इस्लाम है और किताबवालों ने तो मालूम होने के बाद आपस की जिद से भेद डाला और जो शख्स खुदा की आयतों से इन्कारी हुआ, तो अल्लाह को हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती। (१६) (पस, ऐ पैगम्बर) अगर इस

† इन आयतों में बदर के युद्ध की ओर संकेत किया गया है। इसमें मुसलमानों की संख्या केवल ३१३ थी; परन्तु वे काफ़िरों को अपने से दूने दिखाई पड़ते थे। इस लड़ाई में विजय मुसलमानों को प्राप्त हुई थी।

‡ खुदा की खुशी हर चीज से ज्यादा अच्छी है।

पर भी तुमसे हुज्जत करें, तो कह दो कि मैंने और मेरे चाहनेवालों ने ख़ुदा के आगे अपना सिर झुका दिया। (ऐ पैग़म्बर) किताब वाले और (अरब के) जाहिलों से कहो कि तुम भी इस्लाम मानते हो (या नहीं), अगर इस्लाम मानें, तो बेशक वे सच्चे रास्ते पर आ गये और अगर मुँह मोड़ें, तो तेरा ज़िम्मा§ पहुँचा देना है और बस। अल्लाह बन्दों को ख़ूब देख रहा है। (२०) [रुकू २]

जो लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं और बेमतलब पैग़म्बरों को क़त्ल करते और उन लोगों को (भी) क़त्ल करते, जो इन्साफ़ करने को कहते हैं तो ऐसे लोगों को दर्दनाक सज़ा की ख़ुशख़बरी सुना दो। (२१) यही हैं जिनका सब करा कराया दुनिया और क़यामत (दोनों) में अकारथ और न कोई उनका मददगार है। (२२) (ऐ पैग़म्बर) क्या तुमने उन पर निगाह नहीं डाली, जिनको किताब में से एक हिस्सा मिला था। उनको अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाया जाता है, ताकि (वह किताब) उनका झगड़ा चुका दे। इस पर भी उनमें का एक गिरोह मुँह से फिर बैठा है।‡ (२३) यह इसलिए है कि उनका दावा है कि हमको नरक की अग्नि छुएगी नहीं, और छुयेगी भी तो बस गिनती के थोड़े ही दिन और जो झूठी बातें यह करते रहे हैं, उसी ने इनको इनके दीन में धोखा दे रक्खा है। (२४) उस दिन (प्रलय के दिन) जिसमें कुछ भी शक नहीं, कैसी गत बनेगी जबकि हम उनको जमा करेंगे और हर शख़्स को जैसा उसने (दुनिया में) किया है, पूरा-पूरा भर दिया जायगा और लोगों पर ज़ुल्म नहीं होगा। (२५) (ऐ पैग़म्बर) तू कह कि ख़ुदा मुल्क का मालिक है। जिसको चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले। और तू जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे बर्बादी दे। ख़ूबी तेरे

§ नबी का काम यही है कि जो आदेश या ज्ञान ईश्वर की ओर से उसको मिले, उसे दूसरों को समझावे। मानना न मानना सुननेवालों का काम है।

‡ यहूदी ग्रंथ तौरात के अर्थों का स्वार्थी विद्वान अनर्थ करने लगे थे। इस प्रकार अपने मान्य धर्म ग्रंथ से भी विमुख थे।

ही हाथ में है। बेशक तू हर चीज पर सर्वशक्तिमान है। (२६) तू ही रात को दिन में शामिल कर दे और तू ही दिन को रात में शामिल करदे और तू बेजान से जानदार और जानदार से बेजान कर दे और जिसको चाहे बेहिसाब रोज़ी दे। (२७) मुसलमानों को चाहिए कि मुसल्मानों को छोड़कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनावें और जो ऐसा करेगा, तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं। मगर किसी तरह पर उनसे बचना चाहो (मसलहतन) तो जायज़ है और अल्लाह तुमको अपने तेज से डराता है और (अन्त में) अल्लाह की ही तरफ़ जाना है। (२८) (ऐ पैग़म्बर। इन लोगों से) कह दो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, उसे छिपाओ या उसे जाहिर करो, वह अल्लाह को मालूम है और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब जानता है और अल्लाह हर चीज़ पर ताक़तवर है। (२६) जिस दिन हर शख़्स अपनी की हुई भलाई और अपनी की हुई बुराई को सामने पावेगा और इच्छा करेगा कि मुझमें और उसमें (कुकर्म के फल में) बड़ी दूरी होती और अल्लाह तुमको अपने से डराता है और अल्लाह बन्दों पर बड़ी मेहरबानी रखता है। (३०) [रुकू ३]

(ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कह दो कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो, तो मेरे साथी हो कि अल्लाह तुमको दोस्त रक्खे और तुमको तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे और अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (३१) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कह दो कि अल्लाह और पैग़म्बर का हुक्म पूरा करो। फिर अगर न मानें, तो अल्लाह हुक्म न माननेवालों को पसन्द नहीं करता। (३२) अल्लाह ने दुनिया जहान के लोगों पर आदम और नूह और इब्राहीम के वंश और इमरान† के ख़ानदान को (श्रेष्ठ) चुन लिया है। (३३) इनमें एक एक की औलाद हैं और अल्लाह सुनता जानता है। (३४) एक समय था कि इमरान की बीबी ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार मेरे पेट में जो

† इमरान हज़रत मरियम के पिता थे। हज़रत मूसा के बाप का नाम भी इमरान था। यहाँ दोनों ही अर्थ निकलते हैं।

(पेशा) है उसको मैं आजाद करके तेरी भेंट करती हूँ, तू मेरी तरफ से कबूल कर (तू) सुनता जानता है। (३५) फिर जब उन्होंने बेटी जनी और अल्लाह को खूब मालूम था कि उन्होंने किस रुतबे की (बेटी) जनी है, तो कहने लगी कि ऐ मेरे परवर्दिगार मैंने तो यह लड़की जनी है और लड़का लड़की की तरह नहीं होता और मैंने इसका नाम मरियम रक्खा है और मैं इसको और इसकी औलाद को शैतान से अलग रखकर तेरी शरण (धर्म मार्ग में) देती हूँ। (३६) उनके पालनकर्ता ने मरियम को खुशी से कबूल फ़र्मा लिया और उसको खूब अच्छा उठाया और जकरिया को उनका रक्षक बनाया। जब जब जकरिया मरियम के स्थान पर जाते, तो मरियम के पास खाने की चीज मौजूद पाते। (एक दिन जकरिया ने) पूछा कि ऐ मरियम यह तुम्हारे पास खाना कहाँ से आता है। (मरियम ने) कहा यह खुदा के यहाँ से आता है, अल्लाह जिसको चाहता है, बेहिसाब रोजी देता है। (३७) उसी दम जकरिया ने अपने पालनकर्ता से दुआ की (और) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार अपने यहाँ से मुझको (भी) नेक औलाद दे कि तू (सबकी) दुआएँ सुनता है। (३८) अभी जकरिया कोठे में खड़े दुआ ही माँग रहे थे कि उनको फरिश्तों ने आवाज दी कि खुदा तुमको (एक पुत्र) यहिया (के पैदा होने) की खुशखबरी देता है और वह खुदा के हुक्म से मसीह की तसदीक करेंगे और पेशवा होंगे और औरतों की संगत से रुके रहेंगे और नेक (बन्दों) में से थे पैग़म्बर होंगे। (३९) (जकरिया ने) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार। मेरे कैसे लड़का पैदा हो सकता है और मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है, और मेरी बीबी बांझ है। §(अल्लाह ने) फ़र्माया कि इसी तरह अल्लाह जो चाहता है, करता है। (४०) (जकरिया ने) अर्ज किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार मेरे (इतमीनान के) लिए

---

§ हजरत जकरिया की उम्र १०० वर्ष की थी और उनकी बीबी ६८ वर्ष की थीं। जब यहिया (पुत्र) का जन्म हुआ। यह सब जानते हैं कि इस अवस्था में आदमी लड़का या लड़की की आशा नहीं रखता।

कोई निशानी दे। फ़र्माया जो निशानी तुम माँगते हो, यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात§ न कर सकोगे। सिर्फ़ इशारा करोगे और सुबह और शाम अपने परवर्दिगार की माला फेरते रह। (४१) [रुकू ४]

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरियम! तुमको अल्लाह ने पसन्द किया और तुमको पाक-साफ़ रक्खा और तुमको दुनिया जहान की औरतों पर चुना। (४२) ऐ मरियम! अपने परवर्दिगार के हुक्मों को मानती रहो, और शिर झुकाया करो और रुकूअ करनेवालों (नमाज़ में झुकनेवालों) के साथ रुकूअ में झुकती रहो। (४३) (ऐ पैग़म्बर) यह छिपी हुई ख़बरें हैं जो हम तुमको सन्देशे के द्वारा पहुँचाते हैं। न तो तुम उनके पास उस वक़्त थे, जब वह लोग अपने क़लम (नदी में) डाल‡ रहे थे कि कौन मरियम का पालनेवाला होगा? और तुम उनके पास मौजूद न थे, जबकि वह आपस में झगड़ रहे थे (कि जिसका क़लम बहाव की तरफ़ बहे, वही मरियम का संरक्षक होगा)। (४४) जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरियम! ख़ुदा तुमको अपने उस हुक्म की ख़ुशख़बरी देता है। (तुम्हारे पुत्र होगा) उसका नाम होगा ईसामसीह मरियम का बेटा—लोक और परलोक (दोनों) में इज़्ज़तवाला और (ख़ुदा के) नज़दीकी बन्दों में से होगा। (४५) झूले में और बड़ी उम्र का होकर (भी एक समान) लोगों के साथ बात चीत करेगा और नेक बन्दों में से होगा। (४६) वह कहने लगी कि ऐ परवर्दिगार मेरे कैसे लड़का हो सकता है, हालाँकि मुझको तो किसी मर्द ने छुआ तक नहीं। (अल्लाह ने) फ़र्माया इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। जब वह किसी काम का करना ठान

---

§ जब यहिया माँ के पेट में आये, तो ज़करिया की ज़बान फूल गई और तीन दिन वह किसी से बातचीत न कर सके।

‡ मरियम को कौन पाले। इस बात का निर्णय यूँ हुआ कि दावेदारों ने अपने-अपने क़लम बहते पानी में डाले। ज़करिया का क़लम उलटा बहा और वही संरक्षक बने।

लेता है सो बस उसे फ़र्मा देता है कि हो (कुन) और वह हो जाता है§। (४७) और ख़ुदा ईसा को आसमान की किताब और अक़्ल की बातें और तौरात और इञ्जील सिखा देगा। (४८) और इस्राईल के वंश की तरफ़ (आयगा) पैग़म्बर होगा (और कहेगा) मैं तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से तुम्हारे पास निशानियाँ लेकर आया हूँ, कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी की शक्ल बनाकर फिर उसमें फूँक मार दूँ और ख़ुदा के हुक्म से उड़ने लगे और ख़ुदा ही के हुक्म से जन्म के अन्धों और कोढ़ियों को भला-चंगा और मुर्दों को ज़िन्दा करता हूँ और जो कुछ तुम खाकर आओ वह और जो कुछ अपने घरों में जमा कर रक्खा है, तुमको बता दूँ। अगर तुममें ईमान है तो बेशक इन बातों में तुम्हारे लिए निशानी है।† (४९) तौरात जो मेरे समय में मौजूद है मैं उसकी तसदीक करता हूँ और एक ग़रज़ यह भी है कि कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम (नाजायज़) हैं‡ तुम्हारे लिए हलाल (जायज़) कर दूँ और मैं तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से (कुछ) चमत्कार लेकर तुम्हारे पास आया हूँ। तुम ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (५०) बेशक अल्लाह मेरा परवर्दिगार और तुम्हारा परवर्दिगार है, तो उसी की पूजा करो, यही सीधी राह है। (५१) जब ईसा ने यहूद (यहूदी लोगों) की इन्कारी देखी तो पुकार उठे कि कोई है जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरी मदद करे। × हवारी बोले कि हम अल्लाह के तरफ़दार हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाये

---

§ मरियम का किसी के साथ ब्याह नहीं हुआ और वह मर्दों से दूर भी रही, फिर भी उनके लड़का हुआ, जिसका नाम ईसामसीह था। जब फ़रिश्तों ने इस घटना की भविष्यवाणी मरियम को पहले ही की तो उसका आश्चर्य में पड़ जाना स्वाभाविक ही था।

† मुर्दों को जिलाना, बीमारों को अच्छा करना, और अंधों को आँख-वाला बनाना। यह सब ईसा के चमत्कारों में से थे।

‡ यहूदियों पर चर्बी गाय की और बकरी की हराम थी यानी अपने धर्मानुसार वह इन वस्तुओं का प्रयोग नहीं कर सकते थे।

× हवारी वह लोग कहलाते हैं जो हज़रत ईसा के पैरोकार थे।

और तू गवाह हो कि हम माननेवालों हैं। (५२) ऐ हमारे परवर्दिगार (इञ्जील) जो तूने उतारी है, हम उस पर ईमान लाये और हमने पैग़म्बर का साथ दिया। तू हमको गवाहों में लिख रख। (५३) यहूद ने (ईसा से) दाँव किया। अल्लाह ने उनको (यहूद से) दाँव किया और अल्लाह दाँव करनेवालों में अच्छा दाँवदार है। (५४) [रुकू ५]

अल्लाह ने कहा ऐ ईसा दुनिया में तुम्हारे रहने की मुद्दत पूरी करके हम तुमको अपनी तरफ उठा लेंगे और काफ़िरों (नास्तिकों) से तुमको पाक करेंगे और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की है उनको कयामत के दिन तक काफ़िरों पर जबरदस्त रक्खेंगे, फिर तुम (सबको) हमारी तरफ लौटकर आना है। सो जिन बातों में तुम झगड़ रहे थे हम उनमें तुम्हारे बीच फैसला कर देंगे। (५५) सो जिन्होंने (तुम्हारी पैग़म्बरी से) इन्कार किया, उनको तो दुनिया और आखिरत (दोनों) में बड़ी सख्त मार देंगे। कोई उनका साथी न होगा। (५६) वह जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये तो खुदा उनको पूरा बदला देगा और अल्लाह अधर्मियों को पसन्द नहीं करता। (५७) (ऐ पैग़म्बर) यह जो हम तुमको पढ़-पढ़कर सुना रहे हैं (वह खुदा की) आयतें और नपे-तुले जिक्र हैं। (५८) अल्लाह के यहाँ ईसा की मिसाल आदम की जैसी (कि खुदा ने) मिट्टी से आदम को बनाकर उसको† हुक्म दिया कि हो और वह हो गया। (५९) (ऐ पैग़म्बर) सच तो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से है तो कहीं तुम भी शक करनेवालों में से न हो जाना। (६०) फिर जब तुमको सचाई मालूम हो चुकी, उसके बाद भी तुमसे उनके बारे में कोई बहस करने

† ईसा के बिना बाप के जन्म लेने से उनका खुदा का बेटा होना नहीं सिद्ध होता। देखो ईसा के केवल एक बाप ही न थे; परन्तु उनको माता अवश्य थीं; लेकिन आदम के तो माँ-बाप दोनों ही न थे। ईसाई आदम को खुदा का बेटा नहीं कहते, तो ईसा को ऐसा क्यों कहते हैं? खुदा ने जैसे आदम को बिना माँ-बाप के पैदा किया है, वैसे ही ईसा को भी बनाया है।

लगे, तो कहो कि आओ हम अपने बेटों को बुलावें और तुम अपने बेटों को (बुलाओ) और हम अपनी औरतों को बुलायें और तुम भी अपनी औरतों को (बुलाओ) और हम अपने तई और तुम अपने तई (भी शरीक) करो, फिर हम सब मिलकर ख़ुदा के सामने गिड़गिड़ाएँ और झूठों पर ख़ुदा की लानत करें।§ (६१) (ऐ पैग़म्बर) यही बयान सचा है और अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा के क़ाबिल नहीं। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (६२) इस पर अगर फिर जायें, तो अल्लाह झगड़ालुओं से ख़ूब वाक़िफ़ है। (६३) [रुकू ६]

कहो कि ऐ किताबवालो! आओ ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान में एकसां है कि ख़ुदा के सिवाय किसी की पूजा न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहरायें और अल्लाह के सिवाय हममें से कोई किसी को मालिक न समझे। फिर अगर मुँह मोड़ें, तो कह दो कि तुम इस बात के गवाह रहो कि हम तो मानते हैं। (६४) ऐ किताबवालो! इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो। तौरात और इंजील तो उनके बाद उतरीं। क्या तुम नहीं समझते? (६५) तुम लोगों ने ऐसी बातों में झगड़ा किया जिनकी बाबत तुमको ख़बर न थी। मगर जिसकी बाबत तुमको इल्म नहीं, उसमें तुम क्यों झगड़ा करते हो और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (६६) इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी, बल्कि हमारे एक आज्ञाकारी सेवक थे और मुशरिकों (ख़ुदा का शरीक करनेवालों) में से न थे।‡

---

§ ईसाइयों का विश्वास है कि ईसा ईश्वर-पुत्र हैं। इसी का खण्डन है। बिना पिता के ईसा का जन्म एक ईश्वरी चमत्कार है।

‡ हज़रत इब्राहीम को सब मज़हबवाले अपना पेशवा मानते थे। यहूदी कहते थे—वह यहूदी थे, ईसाई कहते थे—वह ईसाई थे। इसी तरह मुशरिक उनको अपने धर्मवाला मानते थे। और मुहम्मद साहब कहते थे कि न तो वह यहूदी थे, न ईसाई और न मुशरिक। वह तो एक ख़ुदा के माननेवाले थे। इस पर ईसाई और यहूदी मुहम्मद साहब से झगड़ते थे।

(६७) इब्राहीम के हक़दार यह लोग थे, जिन्होंने उनकी पैरवी की (एक ईश्वर को माना) (ऐ पैग़म्बर) और जो लोग ईमान लाये हैं और अल्लाह तो ईमान लानेवालों का दोस्त है। (६८) किताबवालों में से एक गिरोह तो यह चाहता है कि किसी तरह तुमको भटका दे, हालाँकि अपने ही तईं भटकते हैं और नहीं समझते। (६६) (ऐ किताबवालों ! अल्लाह की आयतों से क्यों इन्कार करते हो हालाँकि तुम क़ायल हो। (७०) ऐ किताबवालों ! क्यों सच में झूठ को मिलाते हो और सच को छिपाते हो। हालाँकि तुम जानते हो। (७१) [रुकू ७]

किताबवालों में से एक गिरोह समझाता है—मुसलमानों पर जो किताब उतरी है, उस पर ईमान (पहले तो) लाओ और बाद में उससे इन्कार कर दिया करो। शायद यह (मुसलमान) भी भटक जायँ। (७२) जो तुम्हारे दीन की पैरवी करे, उसके सिवाय दूसरे का एत बार न करो। कहो कि उपदेश तो वही है, जो अल्लाह उपदेश देता है, जैसा तुमको दिया गया है। वैसा ही किसी और को दिया जाय या दूसरे लोग ख़ुदा के यहाँ तुमसे झगड़ें (तो) कहो कि बड़ाई तो अल्लाह ही के हाथ में है, जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ी गुञ्जाइशवाला (और सब कुछ) जानता है। (७३) जिसको चाहे अपनी कृपा के लिए खासकर ले और अल्लाह की दया बड़ी है। (७४) और किताबवालों में से कुछ ऐसे हैं कि अगर उनके पास नक़द रुपये का ढेर अमानत रखवा दो तो तुम्हारे हवाले करें और उनमें से कुछ ऐसे हैं कि एक अशर्फ़ी उनके पास अमानत रखवा दो, तो वह तुमको वापिस न दें, जब तक हर वक़्त (तक़ाज़े के लिए) उन पर खड़े न रहो यह इससे कि यह कहते हैं कि जाहिलों के हक़ (मार लेने की) हमसे पूछ-ताछ नहीं है§ और जान बूझकर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। (७५) क्यों नहीं जो शख़्स अपना इक़रार पूरा करे

§ यहूदी कहते थे कि मूर्खों का या अन्य धर्म के माननेवालों का धन जिस प्रकार मिले, लूट लो। ख़ुदा के यहाँ इसकी कोई पूछ-ताछ न होगी।

और ×बचे, तो अल्लाह बचनेवालों को दोस्त रखता है। (७६) जो लोग खुदा से किये गये इकरार और अपनी कसमों को थोड़ी कीमत (दाम) के लिए त्याग देते हैं यही लोग हैं जिनका प्रलय में कुछ हिस्सा नहीं और क़यामत के दिन खुदा इनसे बात भी नहीं करेगा और न इनकी तरफ देखेगा और न इनको पाक करेगा और इनके लिए कड़ी सजा है। (७७) इन्हीं में एक पन्थ है जो किताब पढ़ते वक़्त अपनी ज़बान को मरोड़ते (ऐसा जोड़-तोड़ मिलाते हैं) ताकि तुम समझो कि वह किताब का भाग है हालाँकि वह किताब का हिस्सा नहीं और कहते हैं कि वह अल्लाह के यहाँ से है हालाँकि वह अल्लाह के यहाँ से नहीं और जान-बूझकर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। (७८) किसी मनुष्य को मुनासिब नहीं कि खुदा उसको किताब और अक़्ल और पैग़म्बरी दे—और वह लोगों से कहने लगे कि खुदा को छोड़कर मेरे माननेवाले बनो§ बल्कि खुदा को मानकर चलो, जैसेकि तुम लोग किताब पढ़ाते रहे हो और जैसेकि तुम पढ़ते रहे हो। (७९) वह तुमसे नहीं कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को खुदा मानो—तुम तो इस्लाम मान चुके हो और वह इसके बाद क्या तुम्हें इन्कार करने को कहेगा। (८०) [रुकू ८]

जबकि अल्लाह ने पैग़म्बरों से वादा किया कि हमने जो तुमको किताब और बुद्धि दी है फिर कोई (और) पैग़म्बर तुम्हारे पास आयेगा (और) जो तुम्हारे पास किताबें हैं उनकी तसदीक करेगा तो देखो ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी मदद करना। फ़र्माया क्या तुमने इकरार कर लिया? और इन बातों पर मेरा ज़िम्मा लिया, सब पैग़म्बर बोले हम इकरार करते हैं। फ़र्माया अच्छा तो गवाह रहो और गवाहों में मैं भी तुम्हारे साथ हूँ। (८१) तो इस पीछे

× बुरे कामों से।

§ यहूदी कहते थे कि ईसा ने अपने को खुदा का बेटा बताया है। इसलिए हम उनको बुरा समझते हैं। इसका जवाब दिया गया है कि वह तो रसूल थे। वह ऐसी ग़लत बात कैसे कह सकते थे।

जो कोई फिर जावे तो यही लोग हुक्म न टालनेवाले हैं। (८२) क्या यह लोग अल्लाह के दीन के सिवाय किसी और दीन की तलाश में हैं हालाँकि जो (लोग) आसमानों और जमीन में हैं खुशी से या लाचारी से उसकी तरफ सबको लौटकर जाना है। (८३) कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये और जो किताब हम पर उतरी है उस पर और जो किताब इब्राहीम इस्माईल और इसहाक और याकूब और याकूब की औलाद पर उतरी उन पर और मूसा और ईसा और पैगम्बरों को जो किताबें उनके पालनकर्ता की तरफ से मिलीं हम उनमें से किसी को जुदा नहीं करते और हम उसी को मानते हैं। (८४) और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहाँ उसका वह दीन कबूल नहीं और वह कयामत में नुकसान पानेवालों में से होगा। (८५) खुदा ऐसे लोगों को क्यों हिदायत देने लगा जो ईमान लाये पीछे इन्कार करने लगे और वह इकरार कर चुके थे कि पैगम्बर सचा है और उनके पास खुले सबूत भी आचुके और अल्लाह अन्यायियों को हिदायत नहीं दिया करता। (८६) ऐसे लोगों की सजा यह है कि इन पर खुदा की और फरिश्तों की और लोगों की सबकी लानत (८७) कि उसी में हमेशा रहेंगे न तो इनकी सजा ही हलकी की जायगी और न उनको मुहलत ही दी जायगी। (८८) मगर जिन लोगों ने पीछे तौबा की और सुधार कर लिया तो अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है। (८९) जो लोग ईमान लाये पीछे फिर बैठे फिर उनकी इन्कारी बढ़ती गयी तो ऐसों की तौबा किसी तरह कबूल नहीं होगी और यही लोग भटके हुए हैं। (९०) वह जो लोग काफिर (इन्कारी) हुए और इन्कारी ही की हालत में मर गये उनमें का कोई शख्स जमीन के बराबर भी सोना बदले में देना चाहे तो हरगिज कबूल नहीं किया जायगा। यही लोग हैं जिनको दुःखदाई सजा होगी और उनका कोई भी मददगार नहीं होगा। (९१) [रुकू ९]

चौथा पारा (लन्तना)
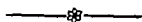
जब तक तुम अपनी प्यारी चीज़ों में से दान न करो भलाई हासिल न करोगे। (९२) जो तुम दान करते (हो) अल्लाह को मालूम है। (९३) जो चीज़ याकूब ने अपने ऊपर हराम§ कर ली थी उसको छोड़कर तौरात के उतरने से पहले खाने की सब चीजें याकूब के बेटों के लिए हलाल थीं। कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और उसको पढ़ो। (९४) फिर इसके बाद भी जो कोई अल्लाह पर झूठ लगाये तो ऐसे ही लोग अन्यायी हैं। (९५) कहो कि अल्लाह ने सच फर्माया तो इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो एक (ख़ुदा) के हो रहे थे और मुशरिकों में से न थे। (९६) लोगों के लिए जो पहला घर ठहराया गया वह यही है जो मक्के में है। बरकतवाला और दुनिया जहान के लोगों के लिए (सबक) हिदायत है। (९७) इसमें बहुत सी खुली हुई निशानियाँ हैं। इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस घर में आ दाखिल हुआ, चैन में आ गया और लोगों पर कर्तव्य है कि ख़ुदा के लिए काबे के घर की हज्ज करें जिसको उस तक पहुँचने की शक्ति हो और जो नाशुक्री करे तो अल्लाह लोगों की परवा नहीं रखता। (९८) कहो कि ऐ किताबवालों! ख़ुदा के कलाम से क्यों इन्कार करते हो और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह

---

§ यहूदी कहते थे कि ऐ महम्मद तुम इब्राहीम के धर्म पर चलने का दावा करते हो तो वह चीजें क्यों खाते हो, जो याकूब नहीं खाते थे, जैसे ऊँट का मांस। इसका जवाब दिया गया है कि तौरात उतरने से पूर्व सब चीजें इब्राहीम की संतान के लिए हलाल थीं यानी उनको किसी चीज़ का खाना मना न था। याकूब भी हर चीज़ खा सकते थे, पर वह एक बीमारी के कारण ऊँट का गोश्त न खाते थे। तौरात में कहीं नहीं लिखा कि ऊँट का मांस खाना मना है।

उसको दरकार है। (९९) कहो कि ऐ किताबवालो ! जान-बूझकर अल्लाह के रास्ते में नुक्स निकाल निकालकर ईमान लानेवालों को उससे क्यों रोकते हो और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उससे गाफ़िल नहीं। (१००) मुसलमानों ! अगर तुम किताबवालों के किसी फ़िर्के का भी कहा मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान लाये पीछे तुमको फिर काफ़िर बना छोड़ेंगे।† (१०१) तुम कैसे इन्कार करने लगोगे हालाँकि अल्लाह की आयतें तुमको पढ़ पढ़कर सुनाई जाती हैं और उसके रसूल तुम में मौजूद हैं और जो शख़्स अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहे, तो वह सीधे रास्ते लग गया। (१०२) [रुकू १०]

ऐ ईमानवालो ! अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का हक़ है और इस्लाम पर ही मरना। (१०३) और तुम सब मज़बूती से अल्लाह की रस्सी पकड़े रहो और आपस में फूट न डालो और अल्लाह का वह एहसान याद करो जब तुम आपस में (मक्के-मदीनेवाले) दुश्मन थे फिर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत पैदा की और तुम उसकी कृपा से (एक दूसरे के) भाई हो गये और तुम आग के गढ़े (नरक) के किनारे थे फिर उसने तुमको उससे बचा लिया। इसी तरह अल्लाह अपने हुक्म तुमसे खोल-खोलकर बयान करता है ताकि तुम सच्चे मार्ग पर आ जाओ। (१०४) तुम में से एक ऐसा गिरोह भी होना चाहिए जो नेक कामों की तरफ़ बुलाये और अच्छे काम को कहें और बुरे कामों से मना करें और ऐसे ही लोग अपनी मुराद को पहुँचेंगे। (१०५) और उन जैसे न बनो जो बिछुड़ गये और अपने पास खुले खुले हुक्म आये पीछे आपस में भेद डालने लगे और यही हैं जिनको (आख़िरत) बड़ी सज़ा होगी। (१०६) जिस दिन (कुछ के) मुँह सफ़ेद और (कुछ के) काले होंगे सो जिनके मुँह काले होंगे (उनसे कहा जायगा) कि तुम ईमान लाये पीछे काफ़िर हो गये थे तो अपनी इन्कार की सज़ा में अज़ाब भोगो (१०७) और जिनके

---

† किताबवाले मुसलमानों को बहकाने के लिए अपनी तरफ़ से जोड़ जोड़कर बातें बनाते थे और कहते थे ये बातें तौरात में लिखी हैं।

मुँह सफ़ेद (होंगे वह) अल्लाह की कृपा में होंगे वह उसी में हमेशा रहेंगे। (१०८) यह सचमुच अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको पढ़ पढ़कर सुनाते हैं और अल्लाह दुनियाँ जहान के लोगों पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता। (१०६) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और (सब) कामों की पहुँच ख़ुदा ही तक है। (११०) [रुकू ११]

तुम सब उम्मतों (गिरोहों) से जो लोगों में पैदा हुई हैं भले हो कि भली बात का हुक्म करते और बुरी बात से मना करते और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर किताबवाले (यहूदी) ईमान ले आते तो उनके हक़ में भला था। उनमें से थोड़े ईमान लाये और उनमें अक्सर फिरे हुए हैं। (१११) दु:ख देने के सिवाय वह हरगिज़ तुमको किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे और अगर तुमसे लड़ेंगे तो उनको तुमसे पीठ फेरते ही बन पड़ेगी फिर उनको कहीं से मदद नहीं मिलेगी। (११२) जहाँ देखो ग़ज़ब उन पर सवार है मगर अल्लाह के ज़रिये से और लोगों के ज़रिये से और ख़ुदा के ग़ज़ब (कोप) में गिरफ़्तार और मुहताजी उनके पीछे पड़ी है। यह उसकी सज़ा है कि वह अल्लाह की आयतों से इन्कार रखते थे और पैग़म्बरों को व्यर्थ मार डालते थे और यह सज़ा न मानने और हद से बढ़ जाने के कारण थी। (११३) किताबवाले सब एक से नहीं हैं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो रातों को खड़े रहकर ख़ुदा की आयतें पढ़ते और सिजदा (सिर झुकाते) करते हैं। (११४) अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते और अच्छे (काम) को कहते और बुरे से मना करते और अच्छे कामों में दौड़ पड़ते हैं और यही भले लोगों में हैं। (११५) भलाई किसी तरह की भी करें ऐसा कदापि न होगा कि उनकी उस नेकी की क़दर न की जावे और अल्लाह परहेज़गारों से ख़ूब जानकार है। (११६) जो लोग काफ़िर हैं उनके माल और उनकी संतान अल्लाह के यहाँ हरगिज़ उनके कुछ भी काम न आयेगी और यही लोग नारकी हैं और यह हमेशा दोज़ख़ ही में रहेंगे। (११७) दुनिया की इस

ज़िन्दगी में जो कुछ भी यह लोग खर्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा जैसी है जिसमें पाला (कड़ी सर्दी) हो वह उन लोगों के खेत को आ लगे और बर्बाद करे जो अपने ही लिए जुल्म करते थे और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि यह अपने ऊपर आप ही जुल्म किया करते थे। (११८) ऐ ईमानवालो! अपने लोग छोड़कर किसी (विरोधी) को अपना भेदी मत बनाओ कि यह लोग तुम्हारी खराबी में कुछ उठा नहीं रखना चाहते हैं कि तुमको तकलीफ पहुँचे। दुश्मनी तो इनकी बातों से ज़ाहिर हो ही चुकी है और जो इनके दिलों में है वह (उससे भी) बढ़कर है हमने तुमको पते की बातें बता दी हैं अगर तुमको बुद्धि हो। (११९) सुनो जो तुम कुछ ऐसे लोग हो§ कि तुम उनसे दोस्ती रखते हो और वह तुमसे मुहब्बत नहीं रखते और तुम खुदा की सब किताबों को मानते हो और जब तुमसे मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम भी ईमान ले आये हैं और जब अकेले होते हैं तो मारे गुस्से के तुम पर अपनी उँगुलियाँ काटते हैं कहो कि अपने गुस्से में (जल) मरो। जो दिलों में है अल्लाह को सब मालूम है। (१२०) अगर तुमको कोई फायदा पहुँचे तो उनको बुरा लगता है अगर तुमको कोई नुक़्सान पहुँचे तो उससे खुश होते हैं और अगर तुम संतोष करो और (पापों से) बचे रहो तो उनके (फरेब दगा) से तुम्हारा कुछ भी बिगड़ने का नहीं क्योंकि जो कुछ भी यह कर रहे हैं अल्लाह के बश में है। (१२१) [रुकू १२]

एक वक़्त वह भी था कि तुम सुबह अपने घर से चले मुसलमानों को लड़ाई के मौक़ों पर बैठाने लगे और अल्लाह सुनता जानता है।

---

§ मुसलमान उन लोगों को भी अपना मित्र मानते थे जो वास्तव में उनके शत्रु थे पर प्रगट में अपने को मुसलमान कहते थे। ऐसे लोग बस्ती साथ बैठे थे। और यदि मुसलमानों को किसी प्रकार का कष्ट होता था तो बहुत प्रसन्न होते थे। इनका सरदार अब्दुल्लाहबिनउबैया था। उसने उहुद की लड़ाई में पहले तो उलट राय दी फिर लड़ाई के मैदान से अपने साथियों को लेकर चला गया और दूसरों को भी भागने को उत्साहित किया।

(१२२) उसी वक्त का वाक़या है कि तुममें से दो+ गिरोहों ने साहस छोड़ देना चाहा मगर अल्लाह उनके ऊपर था और मुसलमानों को चाहिए अल्लाह पर भरोसा रक्खें। (१२३) जिस वक्त बदर (के युद्ध में) में अल्लाह तुम्हारी मदद कर ही चुका था और तुम्हारी कुछ भी हक़ीक़त न थी सो अल्लाह से डरो ताज्जुब नहीं तुम एहसान भी मानो। (१२४) जबकि तुम मुसलमानों को समझा रहे थे कि तुमको इतना काफ़ी नहीं कि तुम्हारा पालनकर्त्ता तीन हजार फ़रि॰ भेजकर तुम्हारी मदद करे। (१२५) बल्कि अगर तुम मजबूत रहो और बचो और (दुश्मन) अभी इसी दम तुम पर चढ़ तो तुम्हारा परवर्दिगार पाँच हजार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा (१२६) यह मदद तो खुदा ने सिर्फ़ तुम्हारे खुश करने को की इसलिए कि तुम्हारे दिल इससे सन्न पावें वर्ना सहायता तो ही की तरफ़ से है जो बड़ा हिकमतवाला§ है। (१२७) (यह मदद इसलिए थी कि काफ़िरों को कम करे या जलील करे ताकि असफल वापिस चले जावें। (१२८) तुम्हारा तो कुछ भी अधिकार नहीं चाहे खुदा उन पर दया करे या उनकी ज्यादतियों पर नजर करके उनको सजा दे। (१२६) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है सब अल्लाह ही का है जिसको चाहे क्षमा करे जिसको चाहे सजा दे और अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है। (१३०) [रुकू १३]

ऐ ईमानवालो ! दुगुना चौगुना ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरो। अजब नहीं तुम मनमाना फल पाओ। (१३१) और नरक से

+ इनके नाम बनी औस और खिजरज का क़बीला। यह दोनों क़बीले उहद के युद्ध में बड़ी वीरता से लड़े, लेकिन उनको बहकाने का भरसक प्रयत्न भी मुनाफ़िक़ों की ओर से हुआ था और इनकी हिम्मत भी थोड़ी देर के लिए टूट गई थी।

§ बदर के युद्ध में आकाश से कई हजार फ़रिश्ते मुसलमानों की सहायता के लिए उतरे थे। यहाँ कहा गया है कि खुदा ही की सहायता से विजय होती है। फ़रिश्तों का उतरना कुछ आवश्यक नहीं है।

डरते रहो जो काफ़िरों के लिए तैयार है। (१३२) और अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानो अजब नहीं तुम पर दया की जाय। (१३३) और अपने पालनकर्ता की बख्शीश और जन्नत की तरफ़ लपको जिसका फैलाव ज़मीन और आसमान जैसा है उन परहेज़गारों के लिए तैयार है। (१३४) जो खुशहाली और तंगदस्ती में (दोनों हालत में धर्म पर) खर्च करते और क्रोध को रोकते और लोगों को क्षमा करते हैं और भलाई करनेवालों को अल्लाह चाहता है। (१३५) और ये लोग जब कोई खुला पाप कर बैठते या अपना नुक़सान कर लेते हैं तो खुदा को याद करके अपने पापों की माफ़ी माँगने लगते हैं और खुदा के सिवाय अपराधों को माफ़ करनेवाला कौन है और जो जान बूझकर उस पर ज़िद नहीं करते। (१३६) यही लोग हैं जिनका बदला उनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से बख्शीश है और बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे और (नेक) काम करने वालों के लिए भी अच्छे फल हैं। (१३७) तुमसे पहले भी घटनाएँ हो गुज़री हैं तो मुल्क में चलो फिरो और देखो कि झिन लोगों ने झुठलाया उनको कैसा नतीजा मिला। (१३८) यह लोगों का समझना है लेकिन हिदायत और नसीहत तो उससे वही लोग पकड़ते हैं जिनके दिल में डर है।† (१३९) हिम्मत न हारो और घबराओ नहीं अगर तुम ईमानवाले हो तो तुम्हारी ही जीत होगी। (१४०) अगर तुमको घाईंगा लगा तो उनको भी इसी तरह का घाईंगा लग चुका है और यह सयोग है जो मेरी हिदायत से लोगों को दिन के फेर आया करते हैं और यह इसलिए कि खुदा ईमानदारों को मालूम करे और उनमें से कुछ को शहीद बनाये और खुदा अन्याय को नहीं चाहता। (१४१) यह मन्ज़ूर था कि अल्लाह मुसलमानों को शुद्ध कर दे और काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे। (१४२) क्या तुम इस ख्याल में हो कि जन्नत में जा दाख़िल होंगे हालाँकि अभी तक अल्लाह ने न तो उन

---

† दुनिया में सैकड़ों घटनाएँ ऐसी हुई हैं जिनसे आदमी बहुत कुछ सीख सकता है। पर उनसे लाभ उठाने के लिए खुदा का डर होना भी ज़रूरी है।

लोगों को जाँचा जो तुममें से जिहाद करनेवाले हैं और न उन लो को जाँचा जो (लड़ाई में) साबित क़दम रहते हैं। (१४३) औ तुम तो मौत के आने से पहले मरने‡ की दुआयें किया करते थे। अब तो तुमने उसको अपनी आँखों देख लिया। (१४४) [रुकू १४

मुहम्मद तो और कुछ नहीं सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं और बस इन पहले भी रसूल हो गुज़रे हैं अगर मर जायें या मारे जायें तो क्या तु अपने पैरों फिर लौट§ आओगे और जो अपने उल्टे पैरों (कुफ़्र प ओर) लौट जायगा वह ख़ुदा का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा औ जो लोग शुक्र करते हैं उनको ख़ुदा जल्दी कल्याण देगा। (१४५ और कोई शख़्स बेहुक्म-ख़ुदा मर नहीं सकता ज़िन्दगी लिखी हु है और जो शख़्स दुनिया में बदला चाहता है हम उसका बदला यह दे देते हैं और जो क़यामत में बदला चाहता है मैं उसको वहीं दूँग और जो लोग शुक्र करते हैं मैं उनको जल्दी बदला दूँगा। (१४६) और बहुत से पैग़म्बर हो गुज़रे हैं जिनके साथ होकर बहुत ख़ुदा को माननेवाले (दुश्मनों से) लड़े तो जो तकलीफ़ उनको अल्लाह के रास्ते में पहुँची उसकी वजह से न तो उन्होंने हिम्मत हारी और न थके और न दबे और अल्लाह जमे रहनेवालों को दोस्त रखता है। (१४७) और सिवाय इसके उनके मुँह से एक बात भी तो नहीं निकली कि दुआएँ माँगने लगे कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमारे पाप क्षमा कर और हमारे कामों में जो हमसे ज़्यादा ज़ुल्म हो गये हैं उनको माफ़ कर और

---

‡ मुसलमान शहादत की तमन्ना (इच्छा) रखते थे। जब उहुद में बहुत से मुसलमान मारे गये तो उन्होंने अपनी आँखों से देख लिया कि शहादत के क्या मानी हैं।

§ उहुद की लड़ाई में मुहम्मद साहब घायल होकर एक गढ़े में गिर पड़े थे और यह ख़बर उड़ गई थी कि उनका स्वर्गवास हो गया। इसलिए कुछ मुसलमान मैदान छोड़कर चले गए थे। इस पर कहा गया है कि मुसलमान तो ख़ुदा के लिए लड़ते हैं। नबी की मृत्यु भी हो जाय तो उनको अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

हमारे पाँव जमाये रख और काफ़िरों के गिरोह पर हमको जीत दे। (१४८) तो अल्लाह ने उनको दुनियाँ में बदला दिया। क़्यामत में भी अच्छा बदला दिया और अल्लाह भलाई करनेवालों को चाहता है। (१४९) [रुकू १५]

ऐ ईमानवालों। † अगर काफ़िरों के कहे में आ जाओगे तो वह तुमको उल्टे पैरों लौटाकर ले जायँगे फिर तुमही उल्टे घाटे में आ जाओगे। (१५०) बल्कि तुम्हारा मददगार अल्लाह है और उसकी मदद सबसे बड़ी है। (१५१) हम जल्दी तुम्हारे डर काफ़िरों के दिलों में डालेंगे क्योंकि उन्होंने उन चीजों को ख़ुदा का शरीक बनाया है जिनकी ख़ुदा ने कोई-सी सनद भी नहीं भेजी और उन लोगों का ठिकाना नरक है और ज़ालिमों का बुरा ठिकाना है। (१५२) और जिस वक़्त तुम ख़ुदा के हुक्म से काफ़िरों को तलवार से मार रहे थे। (उस वक़्त) ख़ुदा ने तुमको अपना वादा सचा कर दिखाया यहाँ तक कि तुमको तुम्हारी ख़ातिरी के लिए जीत दिखा दी। इसके बाद तुम डरपोक हो गये और तुमने हुक्म के बारे में आपस में झगड़ा किया और नाफ़र्मानी (बेहुक्मी) की। कुछ तो तुममें से दुनिया के पीछे पड़ गये और कुछ क़्यामत की फ़िक्र में लगे फिर तो ख़ुदा ने तुमको दुश्मनों से फेर दिया। ख़ुदा को तुम्हारी जाँच मंजूर थी और ख़ुदा ने तुमसे दर-गुज़र की और ईमानदारों पर ख़ुदा की कृपा है। (१५३) जब ‡ तुम भागे चले जाते थे और बावजूदे कि पैग़म्बर तुम्हारे पीछे तुमको बुला रहे थे। तुम मुड़कर किसी की तरफ़ नहीं देखते थे। रंज के बदले ख़ुदा ने

---

† उहुद की लड़ाई से काफ़िरों की हिम्मत बढ़ गई। वह मुसलमानों से कहने लगे कि अब तुम फिर से हमारे दीन में आ जाओ इसी में भलाई है।

‡ यह भी उहुद की लड़ाई का हाल है। मुहम्मद साहब ने कुछ लोगों को एक जगह तैनात कर दिया था और कहा था कि तुम लोग यहाँ से न हटना। उन लोगों ने जब मुसलमानों की जीत विजय देखी और काफ़िरों को भागते देखा तो अपनी जगह छोड़कर काफ़िरों के पीछे दौड़ पड़े। पीछे से ख़ालिदबिनवलीद ने हमला कर दिया और लड़ाई का रंग बदल गया।

तुमको रंज पहुँचाया ताकि अब कभी तुमसे कोई मतलब जाता रहे या तुम पर कोई मुसीबत आन पड़े तो तुम उसका रंज मत करो और तुम कुछ भी करो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (१५४) फिर तंगी के बाद ख़ुदा ने तुम पर आराम के लिए औंघ उतारी कि तुममें से कुछ को नींद ने आ घेरा और कुछ जिनको अपनी जानों की पड़ी थी अल्लाह के सामने बेफ़ायदा जाहिलियत जैसे बुरे ख़्याल बाँध रहे थे कहते थे कि हमारे वश की क्या बात है—कह दो कि सब काम ख़ुदा ही के अख़्तियार में हैं—इनके दिलों में और बातें भी छिपी हुई हैं जिनको तुम पर जाहिर नहीं करते। कहते हैं कि हमारा कुछ भी वश चलता होता तो हम यहाँ मारे ही न जाते। कह दो कि तुम अपने घरों में भी होते तो जिनके भाग्य में मारा जाना लिखा था निकलकर अपने पछड़ने‡ की जगह आ मौजूद होते। ख़ुदा को मंजूर था कि तुम्हारी दिली-मंशाओं को जाँचे और तुम्हारे दिली ख़्यालात को साफ़ करे और अल्लाह तो सबके जी की बात जानता है। (१५५) जिस दिन दो जमातें† भिड़ गई तुममें से लोग भाग खड़े हुए तो सिर्फ़ उनके कुछ पापों की वजह से शैतान ने उनके पाँव उखाड़ दिए और ख़ुदा ने उनको माफ़ किया। अल्लाह माफ़ करनेवाला सहनेवाला है। (१५६) [रुकू १६]

ऐ मुसलमानों! उन लोगों जैसे न बनो जो काफ़िर हैं और अपने भाई-बन्धुओं से जो परदेश निकले हों या जिहाद करने गए हों उनसे कहा करते हैं कि अगर हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते। ख़ुदा ने उन लोगों के ऐसे ख़्यालात इसलिए कर दिये हैं कि उनके दिलों में दु:ख रहे और अल्लाह ही जिलाता और मारता है और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसको देख रहा है। (१५७) और ख़ुदा की राय में अगर तुम मारे जाओ या मर जाओ तो ख़ुदा की

---

‡ यानी यदि भाग्य में मरना ही लिखा होता तो जहाँ भी होते वहाँ से चलकर अपने मरने के स्थान पर आ जाते।

† ओहद की लड़ाई में कुछ मुसलमान भाग खड़े हुए थे। लड़ाई के मैदान से भागना बड़ा पाप है पर ख़ुदा ने उनके इस पाप को भी क्षमा कर दिया।

माफ़ी और कृपा उससे बढ़कर है जो तुम संसार में जमा कर लेते हो। (१५८) तुम मर गए या मारे गए तो अल्लाह ही की तरफ़ इकट्ठे होगे। (१५६) अल्लाह की बड़ी ही मेहरबानी हुई कि तुम§ इनको मुलायम दिल मिले हो और अगर तुम मिज़ाज के अक्खड़ कड़े दिल के होते तो यह लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। तो तुम इनके कसूर माफ़ करो और इनके गुनाहों की माफ़ी चाहो और मामलों में इनकी सलाह ले लिया करो फिर तुम्हारे दिल में एक बात ठन जाय तो भरोसा ख़ुदा ही पर रखना जो लोग भरोसा रखते हैं ख़ुदा उनको चाहता है। (१६०) अगर ख़ुदा तुम्हारी मदद पर है तो फिर कोई भी तुमको जीतनेवाला नहीं और अगर वह तुमको छोड़ बैठे तो उसके पीछे कौन है जो तुम्हारी मदद को खड़ा हो और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही का भरोसा रक्खें। (१६१) पैग़म्बर को मुनासिब नहीं कि कुछ भी ख़यानत करे और जो कोई ख़यानत का अपराधी होगा वह क़यामत के दिन उसको लाकर हाज़िर करेगा फिर जिसने जैसा किया है उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और किसी पर ज़ुल्म नहीं होगा। (१६२) भला जो शख़्स अल्लाह की मर्ज़ी का हो वह उस शख़्स जैसा कैसे हो सकता है जो ख़ुदा के ग़ुस्से में आ गया हो और उसका ठिकाना दोज़ख़ हो और वह बुरा ठिकाना है। (१६३) अल्लाह के यहाँ लोगों के दर्जे हैं और यह लोग जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसको देख रहा है। (१६४) अल्लाह ने ईमानवालों पर दया की कि उनमें उन्हीं में का एक पैग़म्बर भेजा जो उनको ख़ुदा की आयतें पढ़ पढ़कर सुनाता है और उनको सुधारता है और किताब और काम की बात उनको सिखाता है और पहले तो यह लोग ज़ाहिरा भटके हुओं में से थे। (१६५)

§ 'तुम' से यहाँ मुहम्मद साहब मुराद हैं। वह दिल के नर्म और ज़बान के मीठे थे। यदि कोपी और कड़े स्वभाव के होते तो मुसलमान क्या करते? नबी होने की हैसियत से तो उनका हुक्म मानना ही पड़ता परन्तु वह भाग-भागे अवश्य फिरते।

क्या जब तुम पर आफ़त आ पड़ी हालाँकि तुम इससे दूनी‡ आफ़त डाल चुके हो। तुम कहने लगे कि कहाँ से (आफ़त) आई। कहो कि तुम्हारे काम का यह नतीजा है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (१६६) जिस दिन दो जमातें भिड़ गयीं और तुमको रञ्ज पहुँचा सो ख़ुदा का हुक्म यों ही था और यह भी गरज़ थी कि ख़ुदा ईमानवालों को मालूम करे। (१६७) और मुनाफ़िक़ों (आगे कुछ पीछे कुछ कहनेवालों) को मालूम करे और मुनाफ़िक़ों से कहा गया। आओ अल्लाह के रास्ते में लड़ो या न लड़ो। तो कहने लगे कि अगर हम लड़ाई समझते तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते। यह उस रोज़ ईमान की बनिस्बत इनकारी के नज़दीक थे। मुँह से ऐसी बात कहते हैं जो इनके दिलों में नहीं और जिसको छिपाते हैं अल्लाह ख़ूब जानता है। (१६८) जो बैठे रहे और अपने भाइयों के सम्बन्ध में कहने लगे कि हमारा कहा मानते§ तो मारे न जाते कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपने ऊपर से मौत को हटादेना। (१६९) जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गये हैं उनको मराहुआ ख़्याल न करना बल्कि अपने परवर्दिगार के पास जीते हैं इनको रोज़ी मिलती है। (१७०) जो कुछ अल्लाह ने अपनी कृपा से इनको दे रक्खा है उससे ख़ुश हैं और जो लोग इनके बाद अभी इनमें आकर शामिल नहीं हुए वह ख़ुशियाँ मनाते हैं क्योंकि इनपर न डर और न वह उदासीन हैं। (१७१) अल्लाह के पदार्थों के और दयाकी ख़ुशियाँ मनारहे हैं और इसकी कि अल्लाह ईमानवालों के फलको अकारथ नहीं होने देता। (१७२) [रुकू १७]

‡ बद्र की लड़ाई में मुसलमानों ने काफ़िरों को सख़्त जानी और माली नुक़सान पहुँचाया था। उहद की लड़ाई में जब मुसलमानों को सिर्फ़ उसका आधा ही नुक़सान हुआ फिर भी कहने लगे हाय अफ़सोस! यह कैसे हुआ? इस पर य आयतें उतरीं।

§ कुछ लोगों ने अपने मुसलमान रिश्तेदारों को उहद की लड़ाई में जाने से रोका था। जब वे शहीद हो गये तो अपनी बड़ाई जिताने लगे कि हमने तो पहले ही रोका था। इसके जवाब में ये आयतें उतरीं।

जिन लोगोंने चोट खाई पीछे खुदा और पैग़म्बर का हुक्म माना खासकर ऐसे भलाई करनेवाले और परहेजगारों के लिये बड़ा फल है। (१७३) यह लोग जिनको लोगों ने खबर दी कि लोगों ने तुम्हारे लिये बड़ी भीड़ जमा की है उनसे डरते रहना तो इससे उनका इत्मीनान और अधिक हो गया और बोल उठे कि हमको अल्लाह काफी है और यह अच्छा काम सम्भालनेवाला है।† (१७४) गरज़ यह लोग अल्लाह की बीसों और करम से लदे हुए वापिस आये और उनको कुछबुराई नहीं हुई और अल्लाह की मर्जीपर चलते रहे और अल्लाह की मेहरबानी बड़ी है। (१७५) यह शैतान है जो अपने दोस्तों का भय दिखलाता है तो तुम उनसे न डरना और अगर ईमान रखतेहो तो मेरा ही डर रखना। (१७६) जो लोग इन्कार में दौड़े फिरते हैं तुम इन लोगों की वजह से उदास न होना यह लोग खुदा का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते खुदा चाहता है कि क़यामत में इनको कुछ भाग न दे और इनको बड़ी सजा होनी है। (१७७) जिन लोगों ने ईमान देकर इन्कार मोल लिया खुदा को तो हरगिज़ किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे बल्कि इन्हीं को कड़ी सजा होगी। (१७८) जो लोग इन्कार कर रहे हैं इस ख्याल में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं यह कुछ इनके हक़ में भला है। हमतो इनको सिर्फ इसलिये ढील दे रहे हैं ताकि और गुनाह समेट लें और इनको ज़िल्लत की मार है। (१७९) अल्लाह ऐसा नहीं है कि जिस हाल में तुमहो अच्छे बुरे की जाँच बग़ैर इसी हाल पर ईमानवालों को रहने दे और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि तुमको ग़ैब की बातें बता दे। हां अल्लाह अपने पैग़म्बरों में से जिसको चाहता है चुन लेता है तो अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और अगर ईमान लाओगे और बचते रहोगे तो तुमको बड़ा फल मिलेगा। (१८०) और जिन लोगों को खुदा ने अपनी कृपा से दिया है और वह उस में

---

† ऊहद की लड़ाई के बाद क़ुरैश मुसलमानों को भयभीत रखने के विचार से दुबारा उन पर चढ़ाई करने की झूठी खबर भेजते थे। इसको सुनकर मुसलमान डरते न थे बल्कि कहते थे। हमारे लिये अल्लाह काफ़ी है।

कंजूसी करते हैं यह इसको अपने हक़ में भला न समझें बल्कि वह उनके हक़ में खराबी है जिस (माल) की कंजूसी करते हैं क़यामत के दिन के क़रीब उसकी तौक़ (हँसली) बनाकर उनके गले में पहिनायी जायगी और आसमान व ज़मीन का वारिस अल्लाह ही है और जो कर रहे हो अल्लाह को उसकी खबर है। (१८१) [रुकू १८]

जो लोग अल्लाह को मुहताज† और अपने को मालदार बताते हैं उनकी बकवाद अल्लाह ने सुनी यह लोग जो नाहक पैग़म्बरों को क़त्ल करते चले आये हैं उसके साथ हम इनकी इस बकवाद को भी लिखे रखते हैं और इनका जवाब हमारी तरफ से यह होगा कि दोज़ख की सजा भोगा करो। (१८२) यह उन्हीं कामों का बदला है जिनको तुमने पहिले से अपने हाथों भेजा है और अल्लाह तो अपने बन्दों पर किसी तरह का जुल्म नहीं करता। (१८३) यह जो कहते हैं कि अल्लाह ने हमसे कह रक्खा है कि अब तक कोई पैग़म्बर हमको ऐसी भेंट न दिखावे कि उसको आग चट कर जाय तब तक हम उस पर ईमान न लावें। कहो कि मुझसे पहिले पैग़म्बर तुम्हारे पास खुली २ निशानियाँ लाये जिसको तुम माँगते हो तो अगर तुम सच्चे हो तो फिर तुमने उनको किसलिए क़त्ल किया। (१८४) इस पर भी अगर वह तुमको झुठलावें तो तुमसे पहिले पैग़म्बर खुले चमत्कार लाये और छोटी ‡किताबें (सहीफे) और रोशन (खुली) किताबें भी लाये फिर भी लोगों ने उनको झुठलाया। (१८५) हर किसी को मरना है और पूरा २ बदला तुमको क़यामत ही के दिन दिया जायगा तो जो शख्स नरक से दूर हटा दिया गया और उसको बैकुण्ठ में जगह दी गई तो उसने मनमाना फल पाया और दुनियाँ की ज़िन्दगी तो सिर्फ धोखे की पूँजी है। (१८६) तुम्हारे मालों और तुम्हारी जानों में ज़रूर

---

† जब ख़ुदा की राह में कर्ज़ देने का हुक्म आया तो यहूदी कहने लगे कि ख़ुदा मुहताज है इस लिये कर्ज़ माँगता है।

‡ धार्मिक छोटे-छोटे ग्रंथ सहीफे कहलाते हैं। यह भी आसमानी किताबें हैं।

तुम्हारी परीक्षा की जावेगी और जिन लोगों को तुमसे पहिले किताब दी जा चुकी है उनसे और मुशरकीन से तुम बहुत सी नुकसान की बातें जरूर सुनोगे और अगर सन्तोष किये रहो और परहेजगारी करो तो बेशक ये हिम्मत के काम हैं। (१८७) और जब खुदा ने किताब वालों से इकरार लिया कि लोगों से इसका मतलब साफ साफ बयान कर देना और इस को छिपाना नहीं मगर उन्होंने उसको अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उसके बदले थोड़े से दाम हासिल किये सो बुरा है जो यह लोग ले रहे हैं। (१८८) और जो लोग अपने किय से खुश होवे और जो किया नहीं उस पर अपनी तारीफ चाहते हैं ऐसे लोगों की निस्बत हरगिज ख्याल न करना कि यह लोग सजा से बचे रहेंगे बल्कि उनके लिये दुःखदाई सजा है। (१८९) आसमान व जमीन का अख्तियार अल्लाह ही को है और अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है। (१९०) [रुकू १९]

आसमान और जमीन की बनावट और रात और दिन के बदलने में बुद्धिमानों के लिये निशानियाँ हैं। (१९१) जो खड़े और बैठे और पड़े खुदा को याद करते और आसमान और जमीन की बनावट म ध्यान देते हैं-हमारे परवर्दिगार ! तूने इसको बेफायदा नहीं बनाया तेरी जाते पाक है हमको दोजख की सजा से बचा। (१९२) ऐ हमारे परवर्दिगार ! जिसको तूने दोजख में डाला उसको तू ने नीच बनाया और सजावारों का कोई भी मददगार नहीं होगा। (१९३) ऐ हमार परवर्दिगार ! हमने एक †मनादी करने वाले (मुहम्मद) की सुना कि ईमान की मनादी कर रहे थे कि अपने परवर्दिगार पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आये पस ऐ हमारे परवर्दिगार ! हमको हमारे कसूर क्षमाकर और हमसे हमारे गुनाह दूर कर और नेक बन्दों के साथ हमको मौत दे। (१९४) ऐ हमारे परवर्दिगार ! तूने जैसी प्रतिज्ञा अपने

---

† यहूदी विद्वान अपनी ओर से बातें बनाते और वे पढ़े लोगों से कहते ये बातें तौरात में लिखी हैं और मन में खुश होते कि उनका झूठ किसी पर नहीं खुल सकता।

पैग़म्बरों के द्वारा हमसे की है दे। और क़यामत के दिन हमको बदनाम न कर। तू वादाख़िलाफी तो किया ही नहीं करता। (१६५) फिर उनके पालनकर्ता ने उनकी दुआ मान ली कि हम तुम में से किसी मेहनतवाले की मेहनत को बेकार नहीं जाने देते। मर्द हो या औरत तुम सब एक जात हो तो जिन लोगों ने हमारे लिए देश छोड़े और अपने घरों से निकाले गये और मेरी राह में सताये गये और लड़े और मारे गये हम उनके अपराधोंको उनसे जरूर मिटा देंगे। उनको ऐसे बागों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी यह अल्लाह के यहाँ से फल मिलता है और अच्छा फल तो अल्लाह ही के यहाँ है। (१६६) शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना तुमको धोखे में न डाले। (१६७) थोड़ा सा फ़ायदा है फिर इनका ठिकाना दोज़ख है और वह बुरी जगह है। (१६८) लेकिन जो लोग अपने परवर्दिगार से डरते रहे उनके लिए बाग है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी वह उनमें हमेशा रहेंगे और जो अल्लाह के यहाँ है सो भलाई करनेवालों के लिये भला है। (१६६) किताबवालों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो ख़ुदा पर ईमान रखते हैं और जो किताब तुम पर उतरी है और जो उन पर उतरी है उनको मानते हैं। अल्लाह के आगे झुके रहते हैं। अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम नहीं लेते यही वह लोग हैं जिनके बदले परवर्दिगार के यहाँ से मिलेंगे। ऐ ईमानवालों ठहरे रहो और सामना करने में §पक्के रहो और लगे‡ रहो और अल्लाह से डरो ताकि तुम मनमाने फल पाओ। (२००) [रुकू २०]

---

§ यानी काफिरों से तुम से युद्ध हो तो उनका सामना डट कर करो और मोर्चे पर जमे रहो।

‡ ईमान पर दृढ़ रहो। इसका फल तुमको बहुत अच्छा मिलेगा।

सूरे निसा ।

(स्त्रियों का अध्याय)

यह मदीने में उतरी इसमें १७७ आयतें और २४ रुकू हैं ॥

शुरूअ अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहरबान है। ऐ लोगों ! अपने परवर्दिगार से डरो जिसने तुमको §एक शख्स से पैदा किया और उससे उसकी बीबी को पैदा किया और उन दो से बहुत मर्द और औरतें फैला दिये और जिस ख़ुदा का लगाव दे देकर तुम अपने कितने काम निकाल लेते हो उसका और सम्बन्धियों का लिहाज़ रक्खो अल्लाह तुम्हारा रखवाला है। (१) अनाथों† के माल उनको देदो और अच्छे माल के बदले हराम का माल मत लो और उनके माल अपने मालों में मिलाकर खा, पी, मत डालो। यह बड़ा पाप है। (२) अगर तुमको इस बात का डर हो कि बेसहारा लड़कियों में इन्साफ कायम न रख सकोगे तो अपनी इच्छा के अनुकूल दो दो और तीन तीन और चार चार औरतों से निकाह कर लो लेकिन अगर तुमको इस बात का शक हो कि बराबरी न कर सकोगे तो एक ही बीबी करना। या जो तुम्हारे कब्ज़े में हो उस पर संतोष करना यह तदबीर मुनासिब है। (३) औरतों को उनके मिहर ख़ुशदिली से दे डालो फिर अगर वह ख़ुशदिली के साथ उसमें से कुछ तुमको छोड़ दें तो उसको

---

§ यानी सबसे पहले हज़रत आदम को पैदा किया फिर उनकी बीबी (हव्वा) को बनाया और फिर इन्हीं से आदमी की नसल चली। जितने आदमी हैं, सब आदम की संतान हैं इसलिये जात पाँत का कोई प्रश्न ही नहीं उठता और न कोई ऊँच या नीच है। सब जन्म से एक समान है।

† जिस लड़के का बाप मर जाये उसके वारिसों को चाहिए कि उसका माल न लें। जब वह जवान हो जाये तो उसको उसके बाप का छोड़ा माल बचाकर वापस कर दें।

छोड़ दो क्योंकि अल्लाह बड़ा तोबा क़बूल करने वाला मिहरबान है। (१६) अल्लाह तोबा क़बूल करता है उन्ही लोगों की जो नादानी से कोई बुरी हरकत कर बैठें फिर जल्दी से तोबा करले सो अल्लाह भी ऐसों की तोबा क़बूल करलेता है और अल्लाह हिकमत वाला सब जानता है। (१७) उन लोगों की तोबा नहीं जो बुरे काम करते रहे यहांतक कि उनमें से जब किसी के सामने मौत आखड़ी हो तो कहने लगे कि अब मैंने तोबा की और उनकी भी तोबा कुछ नहीं जो काफ़िर ही मरजाते हैं। यही हैं जिनके लिये हमने कड़ी सज़ा तय्यार कर रक्खी है। (१८) ऐ ईमानवालों, तुमको जायज़ नहीं कि औरतों को मीरास (बपौती) समझकर ज़बरदस्ती उन पर क़ब्ज़ा करलो जो कुछ तुमने उनको दिया है उसमें से कुछ छीन लेने की नियत से उनको क़ैद न रक्खो (कि दूसरे से निकाह न करने पावें) या उनसे कोई खुली हुई बदकारी जाहिर हो और बीबियों के साथ नेक सलूक से रहो सहो और तुमको बीबी नापसंद हो तो ताज्जुब नहीं कि तुमको एक चीज़ नापसद हो और अल्लाह उसमें बहुत ख़ैर बरकत दे। (१९) अगर तुम्हारा इरादा एक बीबी को बदल कर उसकी जगह दूसरी बीबी करने का हो तो गो तुमने पहिली बीबी को बहुतसा माल दे दिया हो तोभी उसमें से कुछ भी न लेना। क्या किसी क़िस्म की तोहमत लगाकर ज़ाहिरा बेजा बात करके अपना दिया हुआ लेतेहो। (२०) दिया हुआ कैसे ले लोगे हालांकि तुम एक दूसरे के साथ सुहबत (संगत) कर चुके हो और बीबियों तुमसे पक्का वादा ले चुकी हैं। ‡ (२१) जिन औरतों के साथ तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो तुम उनके साथ निकाह न करना मगर जो हो चुका सो होचुका। यह बड़ी शर्म और ग़ज़ब की बात थी और बहुतही बुरा दस्तूर था। (२२) [रुकू ३]

तुम्हारी मातायें बेटियां और तुम्हारी बहने और तुम्हारी फुफियें

---

‡ निकाह के बाद अगर मर्द तलाक़ देना चाहे तो दो बातें हो सकती है (१) या तो उसमें उस औरत के साथ संगत की होगी या न की होगी। यदि वह कर चुका है तो उसको पूरा महर देना होगा वर्ना आधा।

और तुम्हारी मौसियाँ और भान्जियां, भतीजियां और तुम्हारी माँतायें जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और दूध शरीकी बहनें और तुम्हारी सासें तुम पर हराम हैं। जिन स्त्रियों के साथ तुम सगत (सुहबत) करचुके हो उनकी पूर्वपति से पैदा हुई लड़कियां जो तुम्हारी गोदों में परवरिश पाती हैं लेकिन अगर इन बीबियों के साथ तुमने सगत (भोग) नकी हो तो तुमपर कुछ गुनाह नहीं और तुम्हारे बेटों की स्त्रियां (बहुयें) और दो बहिनों का एक साथ रखना† भी तुमपर हराम है। मगर जो होचुका सो होचुका बेशक अल्लाह माफ करने वाला मिहरबान है। (२३)

(पाँचवाँ पारा वल्मुहसनात)

सूरेनिसा

ऐसी औरतें जिनका खाविंद जिन्दा है उनको लेना भी हराम है मगर जो कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लिए तुमको खुदा का हुक्म है और इनके सिवाय दूसरी सब औरतें हलाल हैं जिनको तुम माल (मिहर) देकर कैद (निकाह) में लाना चाहो नकि मस्ती निकालने को। फिर जिन औरतों से तुमने मजा उठाया हो तो उनसे जो मिहर ठहरा था उनके हवाले करो ठहराये पीछे आपस में राजी होकर जो और ठहरा लो तो तुम पर इसमें कुछ नहीं। अल्लाह जानकार हिकमतवाला है। (२४) और तुममें से जिसको मुसलमान बीबियों से निकाह करने की ताकत (मिहर आदि के कारण) न हो तो खैर बांदियों ही सही जो तुम मुसलमानों के कब्जे में आजायें, बशर्ते कि

†दो सगी बहनें एक ही पुरुष की पत्नियां एकही समय में नहीं हो सकतीं।

ईमान रखती हों और अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है। तुम आपस में एक हो पस बान्दीवालों की इजाजत से उनके साथ निकाह कर लो और दस्तूर के बमूजिब उनके मिहर उनके हवाले कर दो। मगर शर्त यह है कि क़ैद (निकाह) में लाई जायँ, बाजारी औरतों जैसा संबंध न हो और न छिपकर प्रेम रखती हों। अगर क़ैद (निकाह) में आये पीछे कोई काम करें तो जो सजा बीबी को उसकी आधी लौंडी को। लौंडी से निकाह करने की इजाजत उसी को है जिसको तुम में से पाप (में फंस जाने) का डर है और अगर (उसके बिना) संतुष्ट रहो तो तुम्हारे हक में भला है और अल्लाह माफ करनेवाला मिहरबान है। (२५) [रुकू ४]

अल्लाह चाहता है कि जो तुमसे पहिले ही गुजरे हैं उनके तरीके तुमसे खोल खोल कर बयान करे और तुमको उन्हीं तरीकों पर चलावे और तुमको क्षमा करे और हिकमतवाला अल्लाह जानता है। (२६) अल्लाह चाहता है कि तुम पर ध्यान दे और जो लोग विषय वासनाओं के पीछे पड़े हैं उनका मतलब यह है कि तुम सची राह से बहुत दूर हट जाओ। (२७) अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ हलका करे क्योंकि मनुष्य कमजोर पैदा किया गया है। (२८) ऐ ईमानवालो! एक दूसरे का माल व्यर्थ मत खाओ लेकिन आपस में रजामन्दी से तिजारत करो और आपस में मार काट मत करो। अल्लाह तुम पर मिहरबान है। (२९) और जो जोर जुल्म से ऐसा करेगा हम उसको आग में झोंक देंगे और यह अल्लाह के लिए साधारण है। (३०) जिनसे तुमको मना किया जाता है अगर तुम उनमें से बड़े बड़े पापों से बचते रहोगे तो हम तुम्हारे (छोटे) अपराध उतार देंगे और तुमको प्रतिष्ठा के स्थान में जगह देंगे। (३१) खुदा ने जो तुम में से एक को दूसरे पर बड़ती दे रक्खी है उसकी कुछ हवस मत करो। मर्दों ने जैसे कर्म किये हों उनको उनका भाग और औरतों ने जैसे कर्म किये हों उनको उनका भाग और अल्लाह से उसकी दया माँगते रहो। अल्लाह हर चीज से जानकार है। (३२) और माँ बाप और रिश्तेदार जो

(तर्का) छोड़ कर मरे तो हमने हर एक के (उस माल के) हक़दार ठहरा दिये हैं और जिन लोगों के साथ तुम्हारा भाग‡ है तो उनका भाग उनको दो। हर चीज अल्लाह के सामने है। (३३) [रुकू ५]

मर्द औरतों के सिरमौर हैं कारण यह कि अल्लाह ने एक को एक पर प्रधानता दी है और इसलिये भी कि ये अपने माल में से भी (उन पर) खर्च करते हैं तो जो भली हैं कहा मानती हैं ईश्वर की कृपा से पीठ पीछे रक्षा रखती हैं और तुम को जिन बीवियों की बुरी आदत से खटका हो उनको समझा दो, फिर उनके साथ सोना छोड़ दो और उन्हें मारो फिर अगर तुम्हारी बात मानने लगें तो उन पर (इस पर न मानें) तोहमत न लगाओ क्योंकि अल्लाह सर्वोपरि है। (३४) और अगर तुमको मियाँ बीबी में खट पट का सन्देह हो तो मर्द की तरफ से एक पञ्च और एक पञ्च स्त्री की तरफ से ठहराओ अगर पञ्चों का इरादा होगा तो अल्लाह दोनों में मिलाप करा देगा अल्लाह खबरदार है। (३५) अल्लाह ही की पूजा करो और उसके साथ किसी को मत मिलाओ और माँ बाप रिश्तेदार और अनाथों और मुहताजों और करीबी पड़ोसियों और परदेशी पड़ोसियों और पास के बैठने वालों और मुसाफिरों और जो तुम्हारे कब्जे में हों इन सब के साथ भलाई करते रहो और अल्लाह उन लोगों से खुश नहीं होता जो इतरायें, बड़ाई मारते फिरें। (३६) ये जो कंजूसी करें और लोगों को भी कंजूसी करने की सलाह दें और अल्लाह ने जो अपनी कृपा से उन को दिया है उस को छिपायें और हमने काफिरों के लिए जिल्लत की सजा तैयार कर रक्खी है। (३७) ये जो लोगों के दिखाने को माल खर्च करते हैं और अल्लाह और क़यामत पर ईमान नहीं रखते और शैतान जिसका साथी हो तो यह बुरा साथी है। (३८) और अगर अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाते और जो कुछ खुदा ने उनको दे रक्खा

‡ भाग का अर्थ है दीनी भाई मानना। ऐसे लोगों के लिये तर्का (उत्तराधिकार) नहीं है। हां यदि मरने से पहले अपनी जायदाद का कोई भाग अपने दीनी भाई को देना चाहे तो दे सकता है।

था उसको खर्च करते तो उनका क्या बिगड़ता और अल्लाह तो इनसे जानकार ही है । (३६) अल्लाह रत्ती भर जुल्म नहीं करता बल्कि भलाइ हो तो उसको बढ़ाता है और अपने पास से बड़ा बदला दे देता है । (४०) क्या हाल होगा जब हम हर गिरोह के गवाह को बुला येंगे और हम तुझे (ऐ मुहम्मद) इन पर गवाह तलब करेंगे । (४१) जिन लोगों ने इनकार किया और पैग़म्बर का हुक्म न माना उस दिन इच्छा करेंगे कि कोई उन पर (जिन्ये पर) मिट्टी फेर दे और खुदा स कोई बात भी नहीं छिपा सकेंगे । (४२) [रुकू ६]

ऐ ईमानवालों ! जब तुम नशे† में हो नमाज़ न पढ़ा करो । जब तक न समझो कि क्या कहते हो और नहाने की जरूरत हो तो भी नमाज़ के पास न जाना यहाँ तक कि स्नान न कर लो । हाँ रस्ते चले जा रहे हो और अगर तुम बीमार हो या मुसाफिर या तुममें से कोई पाख़ाने से आवे या स्त्रियों से प्रसंग करके आया हो और तुमको पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लेकर मुँह और हाथों पर मल लो । अल्लाह माफ करने वाला बख्शनेवाला है । (४३) क्या तुमने उन लोगों पर नजर नहीं की जिनको किताब से हिस्सा दिया गया था वह अब राह से भटके हुए हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह छोड़ दो । (४४) और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और अल्लाह काफी दोस्त और काफी मददगार है । (४५) यहूद में कुछ ऐसे भी हैं जो बातों का (उनके) ठिकाने से फेरते‡ (माने बदलते) हैं और कहते हैं हमने सुना और न माना और सुन कि तेरी कोई न सुने और ज़बान मरोड़-मरोड़ कर दीन में ताने की राह से राइना§ कहते हैं । अगर वह कहते हमने सुना और माना और तू सुन और हम पर नज़र कर तो उनके लिए

† यह हुक्म उस वक्त का है, जब शराब पीना मना न था । अब शराब मना है ।

‡ जो कुछ तौरात में है उसको छिपाते हैं और शब्दों को उलट पलट कर कुछ का कुछ अर्थ कर लेते हैं । इसी को तहरीफ कहते हैं ।

§ 'राइना' सफ़ा ३३ पर † नोट देखो ।

भला होता और मुनासिब था लेकिन ख़ुदा ने उनकी इनकारी के सबब उन पर लानत की है। पस उनमें से थोड़े ईमान लाते हैं। (४६) किताब वालों ! जो हमने उतारा है और यह उस किताब की जो तुम्हारे पास है तसदीक करता है उस पर ईमान ले आओ उससे पहिले कि मुँह बिगाड़कर हम उल्टे उनको पीछे की ओर लगावें† या जिस तरह हमने §शनीचर वालों को फटकार दिया था उसी तरह उनको भी फटकार दें और जो ख़ुदा को मन्जूर है वह तो होकर रहेगा। (४७) ख़ुदा के शरीक ठहराने वाले को ख़ुदा माफ नहीं करता इसके नीचे जिसको चाहे क्षमा करे और जिसने ख़ुदा का शरीक ठहराया (किसी और को पूजा) उसने बड़ा पाप बांधा है। (४८) क्या तुमने उन लोगों (यानी यहूद) पर नजर नहीं की जो आप बड़े पाक बनते हैं बल्कि अल्लाह जिसको चाहता पाक बनाता है और जुल्म तो किसी पर रत्ती के बराबर भी न होगा। (४९) देखो यह लोग अल्लाह पर कैसे झूँठ बाँध रहे हैं और यही खुला कसूर काफी है। (५०) [रुकू ७]

क्या तुमने उन लोगों पर नजर नहीं की जिनको किताब से हिस्सा दिया गया, वह और शैतान को मानते हैं और काफ़िरों की बाबत कहते हैं कि मुसलमानों से तो यही लोग ज्यादा सीधे रास्ते पर हैं। (५१) पैग़म्बर यही लोग हैं जिनको अल्लाह ने फटकार दिया है और जिसको अल्लाह फटकारे उसका कोई मददगार न होगा। (५२) आया इनके पास राज्य का कोई भाग है फिर ये लोगों को तिल बराबर भी न देंगे। (५३) ख़ुदा ने जो लोगों को अपनी मेहरबानी से चीजें दी हैं उस पर जलते हैं सो इब्राहीम के वंश को हमने किताब (कुरान) और इल्म और इनको बड़ा भारी राज्य दिया। (५४) फिर लोगों में से कोई तो उस पर ईमान लाये और किसी ने मुँह मोड़ा और वह जलता हुआ दोजख़ काफ़ी है। (५५) जिन लोगों ने हमारी आयतों से

† यानी इसके पहले कि ख़ुदा का कोप आये और तुम्हारे रूप बदल जायें जैसे शनीवार के दिन मछली पकड़ने वालों की शक्लें बदल गई थीं।

§ पृष्ठ २६ पर † निशान देखें।

इनकार किया हम उनको आग में झोंकेंगे। जब उनकी खालें पक जावेंगी उनको दूसरी खाल बदल देंगे ताकि दण्ड भोगें। अल्लाह ज़बर दस्त बड़ा हिकमत वाला है। (५६) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये हम उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे उन में उनके लिये बीबियाँ साफ़ सुथरी होंगी और हम उनको घनी छाहों में लेजाकर रक्खेंगे। (५७) अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि अमानत वालों की अमानत उनके हवाले कर दिया करो और जब लोगों के आपस के झगड़े चुकाओ तो इन्साफ़ के साथ फैसला करो अल्लाह तुमको अच्छी शिक्षा देता है। अल्लाह सुनता देखता है। (५८) ऐ ईमानवालों अल्लाह की और पैग़म्बर की और जो तुममें से हुकूमत वाले हैं उनकी आज्ञा मानो फिर अगर किसी बात में तुम्हारा झगड़ा हो तो ख़ुदा और पैग़म्बर की तरफ़ लेजाओ अगर तुम अल्लाह पर और कयामत पर ईमान रखते हो तो यह भला है और परिणाम भी अच्छा है। (५९) [रुकू ८]

क्या तुमने उनकी तरफ़ नहीं देखा जो दावा करते हैं कि यह जो तुम पर उतरा और जो तुम से पहिले उतरा मानते हैं और चाहते हैं कि झगड़ा शैतान† के पास ले जावें हालांकि उनको हुक्म दिया जा चुका है कि उसकी बात न मानें और शैतान चाहता है कि उनको भटका कर बड़ी दूर लेजावे। (६०) और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उसकी तरफ़ और पैग़म्बर की तरफ़ आओ तो तुम इन्कारियों को देखते हो कि वह तेरी तरफ़ आने से रुकते हैं। (६१) तो कैसी शर्म की बात है कि जब इन्हीं कर्मों के कारण उन पर कोई विपत्ति पड़ती है तो तुम्हारे पास अल्लाह की सौगन्ध खाते हुए आते हैं कि हमारी गरज तो भलाई और मेल ‡मिलाप की थी।

---

† मुनाफ़िक़ जानते थे कि मुहम्मद साहब न्याय के समय किसी का पक्ष नहीं ले सकते इसलिये अपने झगड़ों को यहूदी विद्वानों के पास ले जाते थे जो घूस खाते थे।

‡ एक मुनाफ़िक़ और यहूदी में झगड़ा हुआ। दोनों मुहम्मद साहब के पास आये। मुहम्मद साहब ने यहूदी के पक्ष में अपना निर्णय दिया। मुना-

(६२) यह ऐसे हैं कि जो इनके दिल में है ख़ुदा को मालूम है तो इनके पीछे न पड़ो और इनको समझा दो और इनके दिल पर असर करने वाली बातें कहो। (६३) और जो पैग़म्बर हमने भेजा उसके भेजने से हमारा मतलब यही रहा है कि अल्लाह के हुक्म से उसका कहा माना जावे और जब इन लोगों ने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया था। अगर तेरे पास आते और ख़ुदा से माफी मागते और पैग़म्बर उनकी माफ़ी चाहते तो अल्लाह को यक़ाही माफी देने वाला और मिहरबान पाते। (६४) सो तुम्हारे परवर्दिगार की क़सम कि जब तक यह लोग अपने आपसी झगड़ों में तुम को जज न जानें और फिर तेरे न्याय से उदास न होकर मानलें तब तक ईमान वाले न होंगे। (६५) अगर हम इनको हुक्म देते कि आप अपने को क़त्ल करो या घरबार छोड़ जाओ तो इन में से थोड़े आदमियों के सिवाय इसको न मानते और जो कुछ इनको समझाया जाता है अगर उसका पालन करते तो उनके हक़ में भला होता और इस कारण दीन में मज़बूती से जमे रहते। (६६) इस सूरत में हम इनको ज़रूर अपनी तरफ़ से बड़ा बदला देते। (६७) और इनको सीधे मार्ग पर ज़रूर लगा देते। (६८) जो अल्लाह और रसूल का कहना माने तो ऐसेही लोग उनके साथ होंगे। जिनपर अल्लाह ने एहसान किए यानी नबी और सच्चे लोग और शहीद और भले सेवक और यह लोग अच्छे साथी हैं। (६९) यह अल्लाह की मेहरबानी है और अल्लाह का ही जानना काफी है। (७०) [रुकू ९]

ऐ ईमान वालों ! अपनी होशियारी रक्खो और अलग-अलग

फिर हज़रत उमर के पास इस विचार से गया कि वह मुझ को मुसलमान समझकर मेरी बात कहेंगे। उमर इस समय मदीनें में सब थे। जब यहूदी ने उनको बताया कि मुहम्मद साहब उस के पक्ष में फैसला कर चुके हैं तो उमर ने मुनाफ़िक को क़त्ल कर डाला। उस के वारिस मुहम्मद साहब के पास आये कि हम समझौते के लिये उमर के पास गये थे। आपके फैसले की अपील के लिये नहीं; उसी संबंध में यह आयत उतरी।

गिरोह बांधकर निकलो या इकट्ठे निकलो। (७१) तुम में कोई ऐसा है जो कि ज़रूर पीछे हट रहेगा, फिर अगर तुमपर कष्ट आन पड़े तो कहेगा कि खुदा ने मुझपर एहसान किया कि मैं इनके साथ मौजूद न था। (७२) और जो खुदा से तुम्हें मेहरबानी मिली तो इस तरह कहने लगेगा गोया खुदा में और तुममें दोस्ती न थी क्या अच्छा होता जो मैं भी इनके साथ होता तो बड़ी अभिलाषा पूरी करता। (७३) सो जो लोग अन्नत के बदले संसारका जीवन बेचते हैं उनको चाहिये कि खुदा की राह में लड़ें और जो खुदा की राह में लड़े और फिर मारे जायँ या जीत जायँ तो हम उसको बड़ा अच्छा नतीजा देंगे (७४) तुमको क्या होगया है कि अल्लाह की राह में और उन बेबस मनुष्यों, स्त्रियों और बालकों के लिये दुश्मनों से नहीं लड़ते जो दुआयें मांग रहे हैं कि हमारे परवर्दिगार इस बस्ती से निकाल जहां के रहने वाले हम पर जुल्म कर रहे हैं और अपनी तरफ से किसीको हमारा साथी बना और अपनी तरफ से किसी को हमारा मददगार बना। (७५) जो ईमान रखते हैं वह तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं वह शैतान की राह में लड़ते हैं सो तुम शैतान की तरफ़दारों से लड़ो शैतान की तदबीरें निर्बल हैं। (७६) [रुकू १०]

क्या तुम न उन लोगों को नहीं देखा कि जिनको हुक्म दिया गया कि अपने हाथों को रोके रहो और नमाज़ पढ़ते रहो ज़कात दिया करो फिर जब इन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ तो एक फ़रीक़ उन में से लोगों से डरने लगा जैसे कोई खुदा से डरता है बल्कि उससे भी बढ़ कर और शिकायत करने लगा कि ऐ हमारे परवर्दिगार तूने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ (धर्म युद्ध) कर दिया हमको थोड़े दिनों की मुहलत और क्यों न दी। तो कहो कि दुनियां के लाभ थोड़े हैं और जो शख़्स डर रक्खे उसके लिये स्वर्ग भला है और तुम लोगों पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। (७७) तुम कहीं भी हो मौत तुमको आकर लेगी अगर्चे पक्के गुम्मदों में हो। और इनको कुछ फ़ायदा पहुँच जाता है तो कहने लगते हैं कि यह खुदा की तरफ से है और अगर

इनको कुछ नुकसान पहुँच जाता है तो कहने लगते हैं कि यह तुम्हारी तरफ से है। सो पैग़म्बर! तुम इनसे कहदो कि सब अल्लाह की तरफ से है सो इन लोगों का क्या हाल है कि बात नहीं समझते (७८) तुमको कोई फायदा पहुँचे सो अल्लाह की तरफ से है और तुमको कोई नुक़सान पहुँचे सो तेरी रूह की तरफ से है और हमने तुम लोगों की तरफ पैगाम पहुँचाने वाला भेजा है और खुदा की गवाही काफ़ी है। (७६) जिसने पैग़म्बर का हुक्म माना उसने अल्लाह ही का हुक्म माना और जो फिर बैठा तो हमने तुमको कुछ इन लोगों का निगहबान नहीं भेजा। (८०) और यह (लोग) कह देते हैं कि हम मानते हैं लेकिन जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इनमें से कुछ लोग रातों को कह के खिलाफ़ सलाह करते हैं और जैसी-जैसी सलाहें रातों को करते हैं अल्लाह लिखता जाता है सो इनकी कुछ परवाह न करो और अल्लाह पर भरोसा रक्खो और अल्लाह काम सम्भालने वाला काफ़ी है। (८१) तो क्या यह लोग कुरान में विचार नहीं करते और अगर खुदा के सिवाय (किसी और) के पास से आया होता तो जरूर उसमें बहुत से भेद पाते। (८२) और जब इनके पास अमन (शान्ति) या डर की कोई खबर आती है तो उसको (सब पर) जाहिर कर देते हैं और अगर उस खबर को पैग़म्बर तक और अपने अख्तियार वालों तक पहुँचाते तो जो लोग इनमें से उसका खोज (भेद) निकालने वाले हैं उसको मालूम कर लेते और अगर तुम पर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रहमत न होती तो कुछ लोगों सिवाय (सब) शैतान के पीछे चल दिये होते। (८३) तो तुम अल्लाह की राह में लड़ो अपने सिवा तुमपर किसी और की जिम्मेदारी नहीं (हाँ) ईमानवालों को उभारो ताज्जुब नहीं की अल्लाह काफ़िरों के जोर को रोकदे और अल्लाह का जोर ज्यादा ताकतवर और उसकी सजा अधिक कड़ी है। (८४) और जो कोई नेक बात में सिफारिश करे उसमें से उसको भी हिस्सा मिलेगा और जो बुरी सिफारिश करे उसमें वह भी शामिल होगा और अल्लाह हर चीज पर शक्ति रखने वाला है। (८५) और तुमको किसी पर सलाम किया जाय तो तुम उससे बढ़ कर सलाम

कर दिया करो या वैसाही जवाब दो अल्लाह हर-चीज का बदला देने वाला है। (८६) अल्लाह के सिवाय कोई पूजा काबिल नहीं इसमें शक नहीं कि क़यामत के दिन वह तुमको जरूर इकट्ठा करेगा और अल्लाह से बढ़कर किसकी बात सच्ची है। (८७) [रुकू ११]

तो तुम्हारा क्या हाल है कि काफ़िरों के बारे में तुम दो पक्ष (फरीक़) हो रहे हो हालांकि अल्लाह ने उनके कामों के सबब उनको पलट दिया है क्या तुम यह चाहते हो कि जिसको ख़ुदा ने भटका दिया उसको सीधे रास्ते में लेआओ और जिसको अल्लाह भटकावे सम्भव नहीं कि तुममें से कोई उसके लिये रास्ता निकाल सके। (८८) इनकी तबियत यह है कि जिस तरह खुद काफ़िर हो गये हैं उसी तरह तुम भी इनकार करने लगो ताकि तुम एक ही तरह के हो जाओ। तो जब तक ख़ुदा के रास्ते में देश त्याग (हिजरत) न कर आवें इनमें से मित्र न बनाना। फिर अगर मुख मोड़ें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो उनमें से मित्र और सहायक न बनाना। (८९) मगर जो लोग ऐसी क़ौम से जा मिले हैं कि तुममें और उनमें (सुलेह की) प्रतिज्ञा है (या) तुम्हारे साथ लड़ने से या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से संगदिल होकर तुम्हारे पास आवें तो उनसे मिलने में हर्ज नहीं, और अगर ख़ुदा चाहता तो इनको तुम पर जीत देता तो वह तुमसे लड़ते। पस यदि तुमसे किनारा खींच जावें और तुमसे न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ मेल करें तो ऐसे लोगों पर तुम्हारे लिये अल्लाह ने कोई राह नहीं दी (कि उन्हें लूटो या मारो) (९०) कुछ और लोग तुम ऐसे भी पाओगे जो तुमसे शान्ति में रहना चाहते हैं और अपनी क़ौम से भी शान्तिमें रहना चाहते हैं लेकिन जब कोई उनको लड़ाई को लेजावे उस समय में उलट जाते हैं तो अगर तुमसे किनारा खींचे न रहें और न सुलह करें और न अपने हाथ रोकें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो और यही लोग हैं जिनपर हमने तुमको खुला अधिकार दे दिया है। (९१) [रुकू १२]

किसी ईमानवाले को जायज नहीं कि ईमान वाले को मारडाले मगर

भूल से, और जो ईमानवाले को भूलसे मारडाले तो एक ईमान वाला गुलाम छोड़दे और कत्ल हुए के वारिसों को खून की कीमत दे मगर यह कि उसके वारिस माफ करदें। फिर अगर कत्ल किया हुआ उन आदमियों में का हो जो तुम मुसलमानों के दुश्मन हैं, और वह खुद मुसलमान हो तो एक मुसलमान गुलाम आज़ाद करना होगा (खून की कीमत न देनी होगी) और अगर उन लोगों में का हो जिनमें और तुममें वादा है तो कत्ल हुए के वारिसों को खून की कीमत पहुँचावे और एक मुसलमान गुलाम आज़ाद करे और जिस हत्यारे को कीमत देने की ताकत न हो तो लगातार दो महीने के रोज़े रक्खे कि तोबा का यह तरीका अल्लाह का ठहराया हुआ है और अल्लाह जानकार और काम सम्भालने वाला है। (९२) जो मुसलमान को जान बूझ कर मार डाले तो उसकी सज़ा दोज़ख है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर ईश्वर का गुस्सा होगा और उस पर खुदा की फटकार पड़ेगी और अल्लाहने उसके लिए बड़ी सज़ा तय्यार कर रखी है। (९३) ऐ ईमानवालों! जब तुम खुदा की राह (जेहाद) में बाहर निकलो तो अच्छी तरह खोज कर लिया करो और शख्स तुमसे सलाम करे उस से यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं§ क्या तुम दुनिया की ज़िन्दगी के लिए सामान की तलाश में हो खुदा के यहाँ बहुत सी चीजें हैं पहले तुम भी तो ऐसे ही थे (यानी माल बचाने के लिये तुमने कलमा पढ़ लिया था) फिर अल्लाह ने तुम पर अपनी मेहरबानी की तो अच्छी तरह जांच कर लिया करो अल्लाह तुम्हारे कर्मों से जानकार है। (९४) जिन मुसलमानों को उज्र नहीं और वह बैठ रहे यह लोग उन लोगों के बराबर नहीं जो अपने माल और जान से खुदा की राहमें जिहाद कर रहे हैं। अल्लाह ने माल और जान से जिहाद करने वालों

---

§ मुहम्मद साहब ने एक सेना एक देश की ओर भेजी थी। इस देश में एक मुसलमान भी था। वह अपना माल मता लेकर देश वालों से अलग खड़ा हो गया। मुसलमान समझे इसने जान बचाने के लिये यह चाल चली है इसलिये उसको मार डाला और उसका माल लूट लिया।—इस पर यह आयत उतारी।

को बैठ रहने वालों पर बड़ी बड़ाई दी और ख़ुदा ने सब को ख़ूबी का वादा दिया और अल्लाह ने बड़े सवाब की वजह से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर बड़ी प्रधानता दी है। (६५) ख़ुदा के यहाँ दर्जे हैं और उसकी क्षमा और कृपा है और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (६६) [रुकू १३]

जो लोग अपने ऊपर आप ज़ुल्म कर रहे हैं फरिश्ते उनकी जान निकालने के बाद उनसे पूछते हैं कि तुम क्या करते रहे तो वह जवाब देते हैं कि हम तो यहाँ बेबस थे (इस पर फिरिश्ते उनसे) कहते हैं कि क्या अल्लाह की ज़मीन गुंजायश नहीं रखती थी कि तुम उसमें देश त्याग करके चले जाते। ग़रज़ यह वह लोग हैं जिन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है। (६७) मगर जो पुरुष और स्त्रियां और बालक इस क़दर बेबस हैं कि उनसे कोई बहाना करते नहीं बन पड़ता और न उनको कोई रास्ता सूझ पड़ता है। (६८) तो उम्मीद है कि अल्लाह ऐसे लोगों को माफ़ी दे और अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है। (६६) और जो शख़्स ख़ुदा की राह में अपना देश त्याग करेगा तो ज़मीन में उसको ज़्यादह जगह और संपन्नता मिलगी और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ़ यात्रा करके निकले फिर उसकी मौत आजाये तो अल्लाह के ज़िम्मे उसका फल सिद्ध होचुका और अल्लाह बख़्शने वाला मिहरबान है। (१००) [रुकू १४]

जब तुम कहीं को जाओ और तुमको डर हो कि काफ़िर तुम से छेड़ छाड़ करने लगें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि नमाज़ में से घटा दिया करो बेशक काफ़िर तो तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। (१०१) जब तुम मुसलमानों के साथी हो और उनको नमाज़ पढ़ाने लगो तो मुसलमानों की एक जमात तुम्हारे साथ खड़ी हो और अपने हथियार लिये रहें फिर जब सिजदा कर चुकें तो पीछे हटजायें और दूसरी जमात जो नमाज़में शरीक नहीं हुई आकर तुम्हारे साथ नमाज़ में शरीक हो और होशियार और अपने हथियार लिये रहें। काफ़िरों की यह इच्छा है कि तुम अपने

अपने हथियारों और साज और सामान से बेखबर हो जाओ तो एक बारगी तुम पर टूट पड़ें और अगर तुम लोगों को मेंह की वजह से कुछ तकलीफ पहुँचे या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार रखने में तुम पर कोई गुनाह नहीं। अपना बचाव रक्खो अल्लाह ने काफिरों के लिए जिल्लत की सजा तय्यार कर रक्खी है। (१०२) फिर जब तुम नमाज पूरी कर चुको तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह की यादगारी में लगे रहो फिर जब तुम संतुष्ट हो जाओ तो नमाज पढ़ो क्योंकि मुसलमानों पर नियत समय में नमाज पढ़ना फर्ज है। (१०३) लोगों का पीछा करने में हिम्मत न हारो अगर तुम को तकलीफ पहुँचती है उनको भी तकलीफ पहुँचती है और तुम को खुदा से वह आशायें हैं जो उनको नहीं और अल्लाह जानकार और काम सम्भालने वाला है। (१०४) (रुकू १५)

हमने सची किताब तुम पर उतारी है कि जैसा तुमको खुदा ने बतला दिया है उसके बमूजिब लोगों के आपसी झगड़े चुका दिया करो और दगाबाजों के तरफदार मत बनो। (१०५) और अल्लाह से माफी चाहो कि बख्शनेवाला मेहरबान है। (१०६) और जो लोग अपने जी में दगा रखते हैं उनकी तरफ से मत झगड़ा करो क्योंकि दगाबाज कसूरवार हैं खुदा को पसन्द नहीं है। (१०७) लोगों से बातें छिपाते हैं और खुदा से नहीं छिपा सकते। हालांकि जब रातों को उन बातों की सलाहें बांधते हैं जिनसे खुदा राजी नहीं तो खुदा उनके साथ होता है और जो कुछ करते हैं खुदा के काबू में है। (१०८) सुनो तुमने दुनिया की जिन्दगी में उनकी तरफ होकर झगड़ा कर लिया तो कयामत के दिन उनकी तरफ से अल्लाह के साथ कौन झगड़ा करेगा और कौन उनका वकील होगा। (१०९) और जो कोई बुरा काम करे या आप अपनी जान पर जुल्म करे फिर अल्लाह से माफी माँगे तो अल्लाह को बख्शनेवाला मेहरबान पायेगा। (११०) जो शख्स कोई बुराई करता है तो वह अपने ही हक में खराबी करता है और अल्लाह जानकार है। (१११) और जो शख्स किसी कसूर व गुनाह का करनेवाला हो फिर वह अपने कसूर को किसी बे कसूर पर थोप दे तो उसने अपने ऊपर खुला गुनाह बाला। (११२) [रुकू १६]

अगर तुम पर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रहमत न होती तो उनमें से एक गिरोह तुम को बहका देने का इरादा कर ही चुका था और यह लोग बस अपने ही लिए गुमराह कर रहे हैं और तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्योंकि अल्लाह ने तुम पर किताब (क़ुरान) उतारी है और समझ और तुम को ऐसी बातें सिखायी हैं जो तुम को मालूम न थी और तुम पर अल्लाह की बड़ी मेहरबानी है। (११३) इन लोगों की अक्सर कानाफूसियों में† खैर नहीं मगर जो खैरात में या अच्छे काम में या लोगों में मेल मिलाप की सलाह दे और जो ख़ुदा की खुशी हासिल करने के लिए ऐसे काम करेगा तो हम उसका बड़ा बदला देंगे। (११४) और जो शख्स सीधी राह के जाहिर हुए पीछे पैग़म्बर से दूर रहे और ईमानवालों के रास्ते के सिवाय किसी और राह पर चले तो जो (राह) उसने पकड़ी है हम उसको उसी रास्ते चलाए जायँगे और उसको नरक में दाखिल करेंगे और यह बुरी जगह है। (११५)

[रुकू १७]

यह गुनाह तो अल्लाह माफ़ नहीं करता कि उसके साथ कोई शरीक ठहराया जाये और इससे कम जिसको चाहे माफ़ करे और जिसने अल्लाह का साझी ठहराया वह दूर भटक गया। (११६) ख़ुदा के सिवाय तो बस औरतों‡ ही को पुकारते हैं और उसके सिवाय सरकश शैतान को पुकारते हैं। जिस को ख़ुदा ने फटकार दिया (११७) और वह कहने लगा कि मैं तो तेरे बन्दों से एक मुक़र्रर हिस्सा ज़रूर लिया करूंगा। (११८) और उनको ज़रूर ही बहकाऊँगा और उनको उम्मीदें

---

† मुनाफ़िक़ लोग मुहम्मद साहब से कान में बातें करते थे ताकि दूसरे लोग यह समझें कि ये नबी के बड़े मित्र हैं। ये लोग अधिकतर दूसरे मुसलमानों की बुराई करते थे। इस पर यह आयत उतरी कि इन लोगों की सलाह अच्छी नहीं होती बल्कि दग़ा से भरी होती है।

‡ मूर्तियां स्त्रियों के रूप की होती हैं। अरब के मूर्ति पूजने वाले उनको अपने अपने क़बीले की देवी कहते थे। और कुछ लोग कहते हैं औरतों का अर्थ यहाँ फ़रिश्तों से है जिनको काफ़िर ख़ुदा की बेटियां समझते थे।

ज़रूर दिखाऊँगा और उनको सिखाऊँगा कि जानवरों के कान ज़रूर चीरा करें और उनको समझाऊँगा कि ख़ुदा की बनाई हुई सूरतों को बदला करें और जो शख़्स ख़ुदा के सिवाय शैतान को दोस्त बनाये तो वह ज़ाहिरा नुक़सान में आगया। (११९) उनको बचन देता और उनको आशायें बँधवाता है और शैतान उनसे जो प्रतिज्ञा करता है निरा धोखा है। (१२०) ऐसों का ठिकाना नरक है और वहाँ से कहीं भागने न पायेंगे। (१२१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये हम उनको ऐसे बागों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचेनहरें बहरही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे अल्लाह की दृढ़ प्रतिज्ञा है और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन है। (१२२) न तुम्हारी बिनती पर है और न किताब वालों की बिनती पर जो शख़्स बुरा काम करेगा उसकी सज़ा पावेगा और ख़ुदा के सिवाय उसको कोई साथी और मददगार न मिलेगा। (१२३) जो शख़्स कोई नेक काम करे मर्द हो या औरत और वह ईमान भी रखता हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और ज़रा भी उनका हक़ न मारा जायगा। (१२४) और उस शख़्स से किसका दीन बढ़कर है जिसने अल्लाह के आगे अपना सिर झुका दिया और वह भलाई करनेवाला भी है और इब्राहीम के मज़हब पर चलता है जो एक ही के हो रहे थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना दोस्त ठहराया है। (१२५) और जो कुछ आसमानों में है अल्लाह ही का है जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और सब चीज़ें अल्लाह ही के क़ाबू में हैं। (१२६) [रुकू १८]

तुम से (अनाथ) स्त्रियों के साथ (निकाह करने का) हुक्म मांगते हैं तो समझा दो अल्लाह तुमको उनके बारे में आज्ञा देता है† और क़ुरान में जो तुमको सुनाया जा चुका है सो उन अनाथ औरतों के सम्बन्ध में है जिनको तुम (उनका) हक जो उनके लिये ठहरा दिया

† अनाथ स्त्रियों के साथ ब्याह किया जा सकता है पर उनका हक उनको अवश्य देना चाहिये यानी खाना, कपड़ा।

गया है नहीं देते और उनके साथ निकाह करने की तरफ इच्छा करते हो और भी बेबस बच्चों के बारे में (भी यही हुक्म देता है) और यतीमों के हक़ में इन्साफ़ का ख्याल रक्खो और जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह उसको जानता है। (१२७) अगर किसी औरत को अपने पति की तरफ से ज़ियादती या दिल फिर जाने का सन्देह हो तो दोनों पर कुछ गुनाह नहीं कि आपस में मेल करलें और मेल अच्छा है और कंजूसी तो सभी की तबियत में होती है और अगर भलाई करो और बचे रहो तो ख़ुदा तुम्हारे कामों से ख़बरदार है। (१२८) और तुम बहुतेरा चाहो लेकिन यह तो तुम से हो नहीं सकेगा कि बीवियों में एकसा बर्ताव कर सको तो बिल्कुल (एक ही तरफ) मत झुक पड़ो कि दूसरी को छोड़ बैठो और अगर मेल कर लो और बचे रहो तो अल्लाह बख़शने वाला मेहरबान है। (१२९) और अगर दोनों जुदा हो जायँ तो अल्लाह अपने ख़ज़ान से दोनो को पूरा कर देगा और अल्लाह हिकमत वाला गुंजाइश वाला है। (१३०) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और जिन लोगों को तुमसे पहिले किताब मिली थी उन से और तुमसे हमने कह रक्खा है कि अल्लाह से डरते रहो और अगर नहीं मानोगे तो जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और अल्लाह बे परवाह है और सब ख़ूबियों वाला है। (१३१) अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही काम सँभालने वाला काफ़ी है। (१३२) अगर वह चाहे तुमको मेट दे और दूसरों को ला बसाये और अल्लाह ऐसा करने पर शक्तिशाली है। (१३३) जिसको बदला दुनिया में दरकार हो तो अल्लाह के पास दुनिया और क़यामत के फल हैं और अल्लाह सुनता देखता है। (१३४) [रुकू १९]

ऐ ईमान वालों! मज़बूती के साथ इन्साफ़ पर क़ायम रहो और अगर्चे तुम्हारे या तुम्हारे माता पिता और संबन्धियों के ख़िलाफ़ ही हो ख़ुदा लगती गवाही दो अगर कोई मालदार या मुहताज है तो अल्लाह बढ़ कर उनकी रक्षा करने वाला है। तो तुम ख़्वाहिश के आधीन न हो

जाओ कि न्याय से मुँह फेरने लगो‡ और अगर दबी ज़बान से गवाही दोगे या छुपा जाओगे तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे खबर रखता है। (१३५) ऐ ईमान वालों। अल्लाह पर और उसके पैग़म्बर पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उन किताबों पर जो पहिले उतारी ईमान लाओ और जो कोई अल्लाह का और उसके फ़िरिश्तों का और उसकी किताबों और पैग़म्बरों का और आख़िरी दिन का इनकारी हुआ वह दूर भटक गया। (१३६) जो लोग ईमान लाये फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाये फिर काफ़िर हुये फिर इन्कार में बढ़ते गये तो ख़ुदा न तो उनको माफ करेगा और न उनको राह (रास्ते) ही दिखाएगा। (१३७) मुनाफ़िक़ों (ज़ाहिरा कुछ भीतरी कुछ) को ख़ुशख़बरी सुनादो कि उनको दुःखदाई सज़ा होनी है। (१३८) ये जो मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं क्या काफ़िरों के यहाँ इज़्ज़त चाहते हैं सो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह ही की है। (१३९) तुम पर अल्लाह किताब में यह उतार चुका है कि जब तुम सुनलो कि अल्लाह की आयतों से इन्कार किया जा रहा है और उनकी हँसी उड़ाई जाती है तो ऐसे लोगों के साथ मत बैठो यहाँ तक कि किसी दूसरे की बात में लग जावें वर्ना इस सूरत में तुम भी उनही जैसे हो जाओगे। अल्लाह मुनाफ़िक़ों§ और काफ़िरों सबको दोज़क में जमा करेगा (१४०) वह इन्कारी तुम्हें तकते हैं सो अगर अल्लाह से तुम्हारी फ़तह हो गई तो कहने लगते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों को नसीब हुई तो कहने लगते हैं कि क्या हम तुम पर नहीं जीत गये थे और तुमको मुसलमानों से नहीं बचाया था। अल्लाह तुममें क़यामत के दिन फैसला कर देगा और ख़ुदा काफ़िरों को मुसलमानों पर हरगिज़ जीत न देगा। (१४१) [रुकू २०]

काफ़िर ख़ुदा को धोखा देते हैं हालांकि ख़ुदा उन्हीं को धोखा दे

‡ यानी धनवानों के डर से और निर्धनों की दुर्दशा पर तरस खाकर अथवा रिश्तेदारों के प्रेम में फस कर सच बात को न छिपाओ।

§ ज़ाहिरा कुछ और भीतरी कुछ रखने वाले।

रहा है और जब नमाज़ के लिये खड़े होते हैं तो अलसाये हुए खड़े होते, लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर कुछ यों ही इनकार और ईमान के बीच में पड़े झूल रहे हैं। (१४२) न इनकी तरफ़ और न उनकी तरफ़ और जिसको अल्लाह भटकाये तो उसके लिये कोई राह न पावेगा (१४३) ईमान वालो। ईमानवालों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ क्या तुम खुदा का ज़ाहिरा अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो (१४४) कुछ सन्देह नहीं कि काफ़िर नरक के सबसे नीचे दर्जे में होंगे और तुम किसी को भी इनका साथी न पाओगे। (१४५) मगर जिन लोगों ने तौबा की और अपनी दशा सुधार ली और अल्लाह का सहारा पकड़ा और अपने दीन को खुदा के वास्ते मुकर्रर कर लिया तो यह लोग मुसलमानों के साथ होंगे और अल्लाह मुसलमानों को बड़े फल देगा। (१४६) अगर तुम लोग शुक्र गुजारी करो और ईमान रक्खो तो खुदा को तुम्हें सजा देने से क्या फ़ायदा होगा और खुदा कदरदान जानने वाला है। (१४७)

छठवाँ परा (लायुहिब्बुल्लाह), सूरेनिसा

अल्लाह को पसन्द नहीं कि कोई मुँह फोड़कर बुरा कहे मगर जिस पर जुल्म हुआ हो और (वह मुँह फोड़कर ज़ालिम को बुरा कह बैठे तो लाचार है) और अल्लाह सुनता जानता है। (१४८) भलाई खुल्लमखुल्ला करो या छिपाकर करो या बुराई माफ करो तो अल्लाह ताकतवर माफ करने वाला है। (१४९) जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बरों से फिरे हुए हैं और अल्लाह और उसके पैगम्बरों में जुदाई डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसी को मानते हैं किसी को नहीं। और चाहते हैं कि इन्कार और ईमान के बीच में कोई राह निकालें। (१५०) तो ऐसे लोग बेशक काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिये हमने ज़िल्लत की सजा तय्यार कर रक्खी है। (१५१) और

जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाये और उनमें से किसी एक को दूसरे से जुदा नहीं समझा तो ऐसे ही लोग हैं जिनको अल्लाह उनके फल देगा और अल्लाह बख़्शने वाला है मिहर्बान है। (१५२) (रूकू २१)

किताब वाले तुम से माँगते हैं कि तुम उन पर कोई किताब आसमान से उतारो तो (इनके पूर्वज) मूसा से इससे भी बड़ी चीज माग चुके हैं (यानी उन्होंने) मागा कि अल्लाह को सामने कर दिखलाओ। फिर उनको उनकी नटखटी के कारण से बिजली ने आदबोचा उसके बाद भी अगर्चे उनके पास निशानिया आ चुकी थीं तो भी बछड़े को ले बैठे फिर हमने वह भी माफ किया। और मूसा को हमने खुली हुइ शक्ति दी। (१५३) और उनसे सच्ची प्रतिज्ञा लेने के लिये हमने तूर (पहाड़) को उन पर ला लटकाया और हमने उनको आज्ञा दी कि दरवाजे में सिर झुकाते हुए दाखिल होना और हमने उनको कहा था कि हफ्ते के दिन ज़ियादती न करना और हमने पक्का वचन कर लिया (१५४) पस उनके वचन तोड़ने और अल्लाह की आयतों से इन्कारी होने और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करने के कारण और उनके इस कहने के कारण से कि हमारे दिलों पर पर्दा है। पर्दा नहीं बल्कि उनकी इन्कारी की वजह से (खुदा ने) उन पर मुहर कर दी है पस चन्द गिने हुए के सिवाय ईमान नहीं लाते। (१५५) और उनकी इन्कारी की वजह से और मरियम के सम्बन्ध में बड़े सख्त बकने की वजह से (१५६) और उनके इस कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ईसा मसीह को जो रसूल थे क़त्ल कर डाला और न तो उन्होंने उनको क़त्ल किया और न उनको सूली पर चढ़ाया मगर उनको ऐसा ही मालूम हुआ और ये लोग इस बारे में मतभेद डालते हैं सो इस मामले में शक में पड़े हैं। इनको इसकी ख़बर तो है नहीं मगर सिर्फ़ अटकल के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं और यकीनन ईसा को लोगों ने क़त्ल नहीं किया। (१५७) बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी तरफ उठा लिया और अल्लाह जबरदस्त हिकमत वाला है। (१५८) जितने

किताब वाले हैं जरूर उनके मरने से पहिले सबके सब उस पर ईमान लावेंगे और क़यामत के दिन ईसा उनका गवाह होगा। (१५६) अन्त को यहूदियों की शरारत की वजह से हमने पाक चीजें जो उनके लिये हलाल थीं उन पर हराम कर दी हैं और इस वजह से कि अक्सर खुदा की राह से रोकते थे। (१६०) और इस वजह से कि बारम्बार उनको ब्याज लेने की मनाई कर दी गई थी इस पर भी ब्याज लेते थे और इस कारण से कि लोगों के माल नाहक बर्बाद करते थे और इनमें जो लोग नहीं मानते उनके लिये हमने दुःखदाई सजा तय्यार कर रक्खी है। (१६१) लेकिन उन (किताब वालों) में से जो विद्या में निपुण और ईमान वाले हैं और जो तुम पर उतरी है और जो तुमसे पहिले उतरी है मानते हैं और नमाज पढ़ते और ज़कात देते और अल्लाह और क़यामत का विश्वास रखते हैं। हम उन्हीं को बड़ा फल देंगे। (१६२) [रूकू २२]

हमने तुम्हारी तरफ ऐसा पैग़ाम भेजा है जैसा हमने नूह और दूसरे पैग़म्बरों की तरफ और जो उनके बाद हुए भेजा था और हमने इब्राहीम और इस्माईल, इस्हाक और याकूब और याकूब की संतान, ईसा, आयूब, यूनिस, हारू और सुलेमान की तरफ खुदाई संदेशा भेजा था और हमने दाऊद को जबूर (किताब) दी थी। (१६३) और कितने पैग़म्बर हैं जिनका हाल हम पहिले तुमसे बयान कर चुके हैं और कितने पैगम्बर हैं जिनका हाल हमने तुमसे बयान नहीं किया और अल्लाह ने मूसा से बातें की थीं। (१६४) और कितने पैग़म्बर खुश खबरी देने वाले और डराने वाले आ चुके हैं ताकि पैग़म्बरों के पीछे खुदा पर तोहमत देने का मौका न रहे खुदा जीतने वाला और हिकमत वाला है। (१६५) लेकिन जो कुछ खुदा ने तुम्हारी तरफ उतारा है अल्लाह गवाही देता है कि समझकर उसको उतारा है और फरिश्ते गवाही देते हैं और अल्लाह की गवाही काफी है। (१६६) जो लोग इन्कारी हुए और खुदा की राह से रुके और वह बड़ी दूर भटक गये। (१६७) जो लोग काफिर हुए और जुल्म करते रहे उन को खुदा न तो बख्शेगा

और न उनको राह ही दिखलायेगा। (१६८) बल्कि नरक की राह जिसमें हमेशा रहेंगे और अल्लाह के नजदीक यह सहल है। (१६६) ऐ लोगों! पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से ठीक बात लेकर आये हैं। पस ईमान लाओ तुम्हारा भला होगा और अगर न मानोगे तो जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह ही का है और अल्लाह हिकमतवाला जानकार है। (१७०) किताब वालों अपने दीन में हद से बढ़ न जाओ और ख़ुदा की बाबत सच बात निकालो मरियम के बेटे ईसामसीह बस अल्लाह के पैग़म्बर हैं और ख़ुदा का हुक्म जो उसने मरियम की तरफ कहला भेजा था और आत्मा ख़ास अल्लाह की तरफ से आई पस अल्लाह और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और तीन (ख़ुदा)‡ न कहो। मान जाओ तुम्हारा भला होगा अल्लाह एक है वह इस लायक नहीं कि उसके कोई सन्तान§ हो उसी का है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है और अल्लाह काम का सम्भालने वाला काफी है। (१७१) [रुकू २३]

मसीह को ख़ुदा का बंदा होने में कदापि लज्जा नहीं और न फ़रिश्तों को जो नजदीक हैं और जो ख़ुदा का बंदा होने से लज्जा करे और घमण्ड करे तो ख़ुदा जल्द इन सबको खींच बुलायेगा। (१७२) फिर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये ख़ुदा उनको पूरा बदला देगा और अपनी रहमत से ज्यादा भी देगा और जो लोग शर्म रखते और घमण्ड करते हैं ख़ुदा उनको कड़ी सज़ा देगा। (१७३) और ख़ुदा के अलावा उनको न कोई साथी मिलेगा और न मददगार (१७४) ऐ लोगों! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से हुज्जत† आ चुकी और हमने तुम पर जगमगाती हुई रोशनी (क़ुरान)

---

‡ ईसाई ख़ुदा, ईसा और मरियम तीनों को ख़ुदा बताते थे।

§ ख़ुदा को आदमी जैसा न समझो। उसके लिये बेटी बेटा रखना शोभा नहीं देता। इसलिये हज़रत ईसा ईश्वर पुत्र नहीं पैग़म्बर थे।

† खुली हुई दलील या निशानी ऐसी निशानी जिससे सत्य और असत्य में भेद किया जा सके।

उतारदी (१७५) सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये उन्होंने उसी का सहारा पकड़ा तो अल्लाह उनको जल्द अपनी कृपा और दया में ले लेगा, और उन को अपनी तरफ की सीधी राह दिखला देगा। (१७६) तुमसे हुक्म माँगते हैं कह दो कि अल्लाह क़लाला (जिसके संतान व बाप दादा न हों उसे क़लाला कहते हैं) के बारे में तुमको हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मरजावे जिसके संतान न हो और उसके बहन हो तो बहन को उसके तर्के का आधा और अगर बहनों के संतान न हो तो उसका वारिस वही भाई फिर अगर बहनें दो हों तो उनको इसके तर्के में से दो तिहाई और अगर भाई बहन (मिलेजुले) हों तो दो औरतों के हिस्से के बराबर एक मर्द का हिस्सा होगा। तुम लोगों के भटकने के ख्याल से अल्लाह तुमसे खोल-खोल कर बयान करता है और अल्लाह सब कुछ जानता है। (१७७) [रुकू २४]

सूरे मायदा

यह मदीने में उतरी इसमें १२० आयतें, १६ रुकू हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है। ऐ ईमान वालों! क़रार पूरा करो। (१) मुसलमानों अल्लाह के नाम की चीजें हलाल न समझो और न ‡अदबवाला महीना और चढ़ाये के जानवर जो मक्के को जायँ और न उनकी जिनके गलों में पट्टे † बाँध दिये गये हों न उनको जो इज़्ज़त वाले घर को अपने परवर्दिगार

‡ अदब वाले महीनों में लड़ाई न करो।

† एक काफ़िर कुछ ऊँट चुरा ले गया था। मुसलमानों ने देखा कि वह उनके गले में पट्टे डाले हुए काबे की ओर कुर्बानी के विचार से लिये जा रहा है। उन्होंने उन ऊँटों को उस दगाबाज से छीन लेना चाहा। इस पर यह आयत उतरी।

की रहमत और खुशी ढूँढ़ने जाते हों और जब अहराम§ से निकलो तो शिकार करो। कुछ लोगों ने तुमको इज्ज़त वाली मसजिद से रोका था। यह दुश्मनी तुमको ज्यादती करने का कारण न हो और नेकी और परहेजगारी में एक दूसरे के मददगार हो। और गुनाह और ज्यादती में एक दूसरे के मददगार न बनो और अल्लाह से डरो क्योंकि अल्लाह की सजा सख्त है। (२) मरा हुआ लोहू और सूअर का माँस और जो खुदा के सिवाय किसी और के नाम पर चढ़ाया गया हो और जो गला घुटने से मर गया और जो चोट से मरा हो और जो ऊपर से गिरकर मरा हो और सींगों से मारा हुआ हो यह सब चीजें तुम पर हराम करदी गईं और जिसको दाँतवालों ने खाया हो मगर जिसको हलाल कर लो और जो पत्थरों (काबे के आस पास वाले पत्थर) पर जिबह (कत्ल) किया गया हो हराम है। पाँसे डाल कर बाँटना हराम है यह पाप का काम है काफिर तुम्हारे दीन की तरफ से ना उम्मीद हुए तो उनसे न डरो। और हमही से डरो। आज हम तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिये पूरा कर चुके और हमने तुम पर अपना एहसान पूरा कर दिया और हमने तुम्हारे लिए दीन इस्लाम को पसंद किया फिर जो भूँख से व्याकुल हो (और) गुनाह की तरफ उसकी चाह न हो तो अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है। (वह ऊपर हराम की हुई चीजें खा सकता है)। (३) तुमसे पूछते हैं कि कौन कौन सी चीजें उनके लिए हलाल की गई हैं सो तुम उनको समझा दो कि साफ चीजें तुम्हारे लिए हलाल हैं और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के लिए सिखला रक्खे हों उनके शिकार किये हुए जानवर हलाल हैं जैसा तुम को खुदा ने सिखला रक्खा है वैसा ही तुमने उनको सिखला दिया है तो जो तुम्हारे लिए पकड़ रक्खें तो उसको खालो मगर शिकारी जानवर के छोड़ते वक्त खुदा का नाम ले लिया करो और

§ अहराम—मुसलमान हज्ज (यात्रा) प्रारम्भ से समाप्ति तक एक कपड़ा पहिनते हैं उसे अहराम कहते हैं उसके उतार देने के बाद शिकार करना न करना तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।

अल्लाह से डरते रहो क्योंकि ख़ुदा दम भर में हिसाब लेलेगा। (४) आज पाक चीजें तुम्हारे लिए हलाल कर दी गई और किताब वालों का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिये हलाल है और मुसलमान ब्याहता बीबियाँ और जिन लोगों को तुमसे पहिले किताब दी जा चुकी है उनमें की ब्याहता बीबियाँ (तुम्हारे लिए) हलाल हैं बशर्ते कि उनके मिहर उनके हवाले करो और तुम्हारा इरादा (निकाह) कैद में लाने का हो न मस्ती निकालने का और न चोरी छिपे आशनाई करने का और जो ईमान को न माने तो उसका किया अकारथ होगा। कयामत में वह नुकसान उठाने वालों में होगा। (५) (रुकू १)

मुसलमानों ! जब नमाज के लिए तय्यार हो तो अपने मुँह हाथ कुहनियों तक धो लिया करो और अपने सिर को मल लिया करो पैरों को गुरवा तक धो लिया करो और अगर नापाक हो तो नहा लिया करो और अगर बीमार हो या सफर में हो या तुम में से कोई पाखाने से आया हो या तुमने स्त्रियों से सुहबत किया हो और तुम को पानी न मिल सके तो साफ मिट्टी लेकर उससे तयम्मुम यानी अपने मुँह और हाथों को मल लिया करो। अल्लाह तुम पर किसी तरह की कड़ाई करना नहीं चाहता बल्कि तुमको साफ सुथरा रखना चाहता है और यह कि तुम पर अपना एहसान पूरा करे ताकि तुम शुक्र करो (६) और अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो और उसका अहद जो तुम पर ठहराया गया है जब तुमने कहा कि हमने सुना और माना और ख़ुदा से डरते रहो क्योंकि अल्लाह दिलों की बातें जानता है। (७) मुसलमानों ख़ुदा के वास्ते इंसाफ के साथ गवाही देने को तय्यार रहो और लोगों की दुश्मनी से इंसाफ न छोड़ो इंसाफ परहेजगारी से ज्यादह नजदीक है और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है। (८) जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने अच्छे काम किये अल्लाह से उनकी अहद है कि उनके लिये बख्शीश और बड़ा बदला है। (९) और जिन लोगों ने इन्कार किया

और हमारी आयतों को झुठलाया वह दोज़खी हैं। (१०) ऐ मुसल मानों! अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो कि जब कुछ लोगों ने (कुरेश जाति ने) तुम पर हाथ फेंकने का इरादा किया था तो ख़ुदा ने तुमसे उनके हाथों को रोक दिया और अल्लाह से डरते रहो और मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (११) [रुकू २]

अल्लाह इसराईल के बेटों से वचन ले चुका है और हमने उन्हीं में के बारह सरदार उठाये और अल्लाह ने कहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं अगर तुम नमाज पढ़ो और ज़कात दो और हमारे पैगम्बरों को मानों और उनकी मदद करो और खुशदिली से खुदा को कर्ज देते रहो तो हम जरूर तुम्हारे गुनाह तुम से दूर कर देंगे और जरूर तुमको ऐसे बागों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी इसके बाद जो तुममें से फिरेगा तो बेशक वह सीधी राह से भटक गया। (१२) पस उन्हीं लोगों को उनकी अहद तोड़ने के कारण से हमने उनको फटकार दिया और उनके दिलों को कड़ा कर दिया कि वह बातों को उनके ठिकानों से बदलते हैं और उनको जो शिक्षा दी गई थी उस से भाग लेना भूल गये और उनमें से चन्द लोगों के सिवाय उन सब के दगा की ख़बर तुमको होती ही रहती है तो उन लोगों के गुनाह माफ करो और दर गुजर करो क्योंकि अल्लाह नेकी वालों को चाहता है। (१३) और जो लोग अपने को ईसाई कहते हैं हमने उनसे वचन लिया था। तो जो कुछ उनको शिक्षा दी गई थी उस से फायदा उठाना भूल गये। फिर हमने उनमें दुश्मनी और ईर्षा कयामत के दिन तक के लिये लगा दी और आख़िरकार खुदा उनको बतला देगा जो कुछ करते थे। (१४) ऐ किताब वालों! तुम्हारे पास हमारा पैग़म्बर आचुका है और किताब में से जो कुछ तुम छिपाते रहे तो वह उसमें से बहुत कुछ तुमसे साफ-साफ बयान करता है और बहुतेरी बातों से जान बूझकर बचाता है। अल्लाह की तरफ से तुम्हारे पास रोशनी और क़ुरान आचुका है। (१५) जो ख़ुदा की मरजी पर चलते हैं उनको

अल्लाह क़ुरान के ज़रिये ठीक राहें दिखलाता है और अपनी कृपा से उनको अन्धेरे से निकालकर रोशनी में लाता है और उनको सीधी राह दिखलाता है। (१६) जो लोग मरियम के बेटे मसीह को ख़ुदा कहते हैं वही काफ़िर हैं। ऐ पैग़म्बर इन लोगों से कहो कि अगर अल्लाह मरियम के बेटे मसीह को और उनकी माता को और जितने लोग ज़मीन में हैं सब को मार डालना चाहे तो ऐसा कौन है जो उसकी इच्छा को रोके और आसमान और ज़मीन और जो कुछ आसमान और ज़मीन के बीच में है अल्लाह ही का है। जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह हर चीज पर ताक़तवर है। (१७) और यहूदी व ईसाई गाया करते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं। कहो यह तुम्हारे गुनाहों के बदले में तुमको सज़ा ही क्यों दिया करता है। बल्कि ख़ुदा ने जो पैदा किये हैं उन्ही में इन्सान तुम भी हो। ख़ुदा जिसको चाहे माफ़ करे और जिसको चाहे सज़ा दे और आसमान और ज़मीन और जो कुछ आसमान व ज़मीन के बीच में है सब अल्लाह ही के अख़्तियार में है और उसी की तरफ़ लौटकर जाना है। (१८) ऐ किताब वालों। पैग़म्बरों की कमी§ पड़े पीछे हमारा पैग़म्बर तुम्हारे पास आया है ताकि तुम न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला नहीं आया। पस ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला आचुका और अल्लाह हर चीज पर ताक़तवर है। (१९) [रुकू ३]

जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भाइयों अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो। उसने तुम में पैग़म्बर बनाये और तुमको बादशाह बनाया। और तुमको वह पदार्थ दिये हैं जो दुनियाँ जहान के लोगों में से किसी को नहीं दिये (२०) भाइयों! पाक ज़मीन जो ख़ुदा ने तुम्हारे भाग्य में लिख दी है उसमें दाख़िल हो और पीठ न फेरना‡ नहीं तो उलटे घाटे में आ जाओगे। (२१)

---

§ मुहम्मद साहब के छः सौ बरस पहिले से कोई नबी नहीं आया था।

‡ जब काफ़िर से लड़ना पड़े तब न भागना।

वह कहने लगे कि ऐ मूसा ! उस मुल्क में तो बड़े जबरदस्त लोग हैं और जब तक वह वहाँ से न निकलें हम उसमें पैर न रक्खेंगे हाँ उसमें से निकल जावें तो हम जरूर दाखिल होंगे। (२२) डर मानने वालों में से दो आदमी (यूशा और कालिब) थे कि उन पर खुदा ने कृपा की। वह बोल उठे उन पर (चढ़ाई करके बैतुल मुकद्दस के) दरवाजे में घुस पड़ो और जब दरवाजे में घुस पड़ो तो बेशक तुम्हारी जीत है और अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रक्खो (२३) वह बोले ऐ मूसा जब तक उसमें दुश्मन हैं हम उसमें न जावेंगे। हाँ तुम और तुम्हारे खुदा जाओ और उनसे लड़ो हम तो यहीं बैठे हैं। (२४) मूसा ने कहा (कि) ऐ मेरे परवर्दिगार अपनी जान और अपने भाई के सिवाय कोई मेरे बस का नहीं। तू हममें और इन बे हुक्म लोगों में भेद डाल दे। (२५) खुदा ने कहा (कि) वह मुल्क चालीस वर्ष तक इनको न मिलेगा। जंगल में भटकते फिरेंगे। तू बे हुक्म लोगों पर अफसोस न कर। (२६) [रुकू ४]

(ऐ पैगम्बर) इन लोगों को आदम के दो बेटे (हाबील और काबील) के सच्चे हालात पढ़कर सुनाओ कि जब दोनों ने भेंट‡ चढ़ाइ उनमें से एक (यानी हाबील) की कबूल हुई और दूसरे (यानी काबील) की कबूल न हुई। तो काबील कहने लगा कि मैं तुमको जरूर मार डालूंगा। उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ परहेजगारों की कबूलकरता है। (२७) अगर मेरे मार डालने के इरादे से तू मुझ पर हाथ चलाएगा तो मैं तुझे कत्ल करने के लिए तुझ पर अपना हाथ न चलाऊँगा क्योंकि मैं अल्लाह संसार के पालने वाले से डरता हूँ। (२८) मैं यह चाहता हूँ कि तू मेरा और अपना पाप समेट ले और नरक वासियों में हो जावे और जालिमों की यही सजा है। (२९) इस पर भी उसके दिल ने उसको अपने भाइ के मार डालने पर आमादा किया और आखिरकार उसको मार डाला और घाटे में आगया। (३०) इसके

---

‡ कहते हैं यह भेंट इस लिये चढ़ाई गई थी कि जिसकी भेंट स्वीकार हो उसके साथ एक सुन्दरी का ब्याह हो।

पीछे अल्लाह ने एक कौवा भेजा वह ज़मीन को खोदने लगा ताकि उसको (क़ाबील को) दिखाए कि वह अपने भाई की बदनामी को क्योंकर छिपाये (चुनांचे वह कौवे को ज़मीन खोदते देख कर) बोल उठा। हाय मैं इस कौवे की बराबर भी बुद्धिमान नहीं हुआ कि भाई की लाश को छिपाता यह सोचकर वह पछताया (३१) इस वजह से हमने इसराईल के बेटों को हुक्म दिया कि जो कोई किसी जान के बिना बदले या मुल्की फसाद के बग़ैर किसी को मार डाले तो गोया उसने तमाम आदमियों को मार डाला और जिसने मरते को बचा लिया तो गोया उसने तमाम आदमियों को बचा लिया और उन (इसराईल के बेटों) के पास हमारे रसूल खुली खुली निशानियां लेकर आ भी चुके हैं फिर इसके बाद इन में से बहुतेरे मुल्क में ज़्यादतियां करते फिरते हैं। (३२) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर से लड़ते और फसाद की ग़रज़ से मुल्क में दौड़े फिरते हैं उनकी सज़ा तो यही है कि मार डाले जायें या उनको सूली दी जाय या उनके हाथ पांव उल्टे काट दिये जायें (यानी सीधा हाथ काटा जाय तो बायाँ पैर काटा जावे या बायाँ हाथ तो सीधा पैर) या उनको देश निकाला दिया जाय। यह तो दुनियां में उनकी बदनामी हुई और क़यामत में बड़ी सज़ा है। (३३) मगर जो लोग तुम्हारे क़ाबू में आने से पहिले तौबाकर लें तो जाने रहो कि अल्लाह माफ़ करने वाला मिहर्बान है। (३४) [रुकू ५]

ऐ मुसलमानों ! अल्लाह से डरो और उस तक (पहुँचने) के ज़रिये तलाश करते रहो और उसकी राह में जान लड़ा दो शायद तुम्हारा भला हो। (३५) जिन लोगों ने इन्कार किया अगर उनके पास वह सब हो जो ज़मीन में है और उतना ही उसके साथ और भी हो ताकि क़यामत के रोज़ सज़ा के बदले में उसको दे निकलें उनसे क़बूल नहीं किया जायगा और उनके लिये कड़ी सज़ा है। (३६) ये चाहेंगे कि आग से निकल भागें मगर वह वहाँ से नहीं निकलने पायेंगे और उनके लिये हमेशा की सज़ा है। (३७) अगर मर्द चोरी करे तो या औरत चोरी करे तो उनकी करतूत के बदले में दोनों के हाथ काट

डालो। सजा खुदा से है और अल्लाह् जबरदस्त जानकार है। (३८) अपने अपराध के पीछे तोबा करले और अपने को सम्भाल ले तो अल्लाह् उसकी तोबा कबूल कर लेता है क्योंकि अल्लाह् बख्शने वाला मेहरबान है। (३९) क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमान और जमीन में अल्लाह् ही की हकूमत है जिसको चाहे सजा दे। और जिसको चाहे क्षमा करे अल्लाह् हर चीज पर ताकतवर है। (४०) (ऐ पैगम्बर) जो लोग इन्कारी की तरफ दौड़ते हैं और चन्द ऐसे हैं जो अपने मुँह से तो कह देते हैं कि ईमान लाये और उनके दिल ईमान नहीं लाये और इनके कारण तू उदास न हो और बाज यहूदी हैं झूठी बातों को ढूंढ़ते फिरते हैं और दूसरे लोगों के वास्ते जो तुम्हारे पास नहीं आये बातों को ठिकाने कर देते हैं (और लोगों से) कहते हैं कि अगर तुमको यही (हुक्म) दिया जाय तो उसको मानना और अगर तुनको यह हुक्म न मिले तो मानने से बचना और जिनको अल्लाह् विपत्ति में फँसा हुआ रखना चाहे तो उसके लिये खुदा पर तुम्हारा कुछ भी बस नहीं चल सकता। यह वह लोग हैं कि खुदा भी इनके दिलों को पाक करना नहीं चाहता। इन लोगों की दुनिया में बदनामी है और कयामत में इनके लिये बड़ी सख्त सजा है। (४१) झूठी बातों को ढूंढ़ते फिरते हैं हराम का खाते हैं तो यह तुम्हारे पास आवें तो तुम इनमें फैसला करो या इनसे अलाहिदा हो और अगर तुम इनसे अलग रहोगे तो ये तुमको किसी तरह का भी नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे और अगर फैसला करो तो इनमें इन्साफ के साथ फैसला करना क्योंकि अल्लाह् इन्साफ करने वालों को मित्र रखता है। (४२) और यह लोग क्यों तुम्हारे पास झगड़े तै करने को लाते हैं जब कि खुद इनके पास तौरात है उसमें खुदा की आज्ञा है फिर इसके बाद यह उससे फिर जाते हैं और वे अपनी किताब पर भी ईमान नहीं रखते। (४३) [रुकू ६]

हमने तौरात उतारी जिसमें इल्म और रोशनी है। हुक्म मानने वाले पैगम्बर उसी के मुताबिक यहूदियों को आज्ञा दिया करते थे और यहूदियों के पुजारी और कायिस (लोग) भी उसी के मुताबिक यहूदियों

को आज्ञा दिया करते थे और यहूदियों के पुजारी और कामिल भी उसीके मुताबिक हुक्म देते थे क्योंकि वह सब अल्लाह की किताब के रक्षक और गवाह ठहराये गये थे। पस ऐ यहूदियों तुम आदमियों से न डरो और हमारा ही डर मानो हमारी आयतों के बदले में नाचीज फायदे मत लो और जो खुद की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक हुक्म न दें तो यही लोग काफिर हैं। (४४) और हमने तौरात में यहूद को तहरीरी हुक्म दिया था कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और सब जख्मों का बदला इसी तरह बराबर है फिर जो बदला क्षमा कर दे तो वह उसका कफ्फारा होगा और जो खुदा की उतारी हुई के मुताबिक हुक्म न दे तो वही लोग बेइंसाफ हैं। (४५) बाद को इन्हीं के पैरों पर हमने मरियम के बेटे ईसा को चलाया वह तौरात की जो उनके पहिले से थी तसदीक करते थे और उनको हमने इंजील दी जिसमें (समझ और रोशनी है) और तौरात जो उसके पहिले से थी उसकी तसदीक भी करती है और परहेजगारों के लिए नसीहत है। (४६) और इन्जील वालों को चाहिए कि जो खुदा ने उसमें (हुक्म) उतारे हैं उसी के मुताबिक हुक्म दिया करें और जो खुदा के उतारे हुए के मुताबिक हुक्म न दे तो वही लोग बेहुक्म (अवज्ञाकारी) हैं। (४७) और हमने तुम्हारी तरफ सच्ची किताब उतारी कि जो किताबें इसके पहिले से हैं और उनकी हिफाजत करती है तो जो कुछ खुदा ने उतारा है तुम उसी के मुताबिक इन लोगों में हुक्म दो और जो कुछ सच्ची बात तुम को पहुँची है उसे छोड़ कर इनकी ख्वाहिशों की पैरवी मत करो हमने तुम में से हर एक के लिए एक शरीयत (नीति) और तरीका दिया और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही दीन पर कर देता। लेकिन यह चाहा गया है कि जो हुक्म दिये हैं उनमें तुमको आजमाये। सो तुम नेक कामों की तरफ चलो तुम सबको अल्लाह ही की तरफ लौटकर आना है। तो जिन-जिन बातों में तुम लोग भेद करते रहे हो वह तुमको बता देगा। (४८)

(ऐ पैग़म्बर) जो किताब ख़ुदा ने उतारी है उसी के मुताबिक इन लोगों को हुक्म दो और उनकी इच्छाओं की पैरवी न करो और इन (यहूदियों) से डरते रहो कि जो ख़ुदा ने तुम्हारी तरफ उतारी है उसके किसी हुक्म से यह लोग कहीं तुमको भटका न दें फिर अगर न मानें तो जाने रहो कि ख़ुदा ने इनके बाज़े गुनाहों के कारण इन को सज़ा पहुँचाना चाही है और लोगों में बहुत से बेहुक्म (अवज्ञाकारी) हैं। (४६) क्या मूर्खता की आज्ञा चाहते हैं और जो लोग यकीन करने वाले हैं उनके लिये अल्लाह से बेहतर आज्ञा देनेवाला कौन हो सकता है। (५०) [रुकू ७]

मुसलमानों। यहूद और ईसाई को मित्र न बनाओ यह एक दूसरे के मित्र हैं और तुममें से कोई इनको दोस्त बनायेगा तो बेशक वह इन्हीं में का है क्यों कि ख़ुदा ज़ालिम लोगों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया करता। (५१) तो जिन लोगों के दिलों में (फूट का) रोग है तुम उनको देखोगे कि यहूदियों में कहते फिरते हैं कि हमको तो इस बात का डर लग रहा है कि हम पर आफ़त न आ जावे। तो कोई दिन जाता है कि अल्लाह जीत या कोई हुक्म अपनी तरफ से भेजेगा तो उस पर जो अपने दिलों में छिपाते थे हैरान होंगे। (५२) और मुसलमान कहेंगे कि क्या यह वही लोग हैं जो बड़े ज़ोर से अल्लाह की कसम खाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं इनका सब किया अकार्थ हुआ और नुकसान में आ गये। (५३) मुसलमानों! तुममें से कोई अपने दीन से फिर जाय तो ख़ुदा ऐसे लोग (ला) मौजूद करेगा जिनको वह दोस्त रखता होगा और वह उसको दोस्त रखते होंगे मुसलमानों के साथ नरम काफ़िरों के साथ कड़े होंगे। अल्लाह की राह में अपनी जानें लड़ावेंगे और किसी की मलामत का डर नहीं रक्खेंगे यह ख़ुदा की दया है जिसको चाहे दे और अल्लाह बहुत जानने वाला है। (५४) बस तुम्हारे तो यही मित्र हैं अल्लाह और अल्लाह का पैग़म्बर और मुसलमान जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और झुके रहते हैं। (५५) और जो अल्लाह और अल्लाह के पैग़म्बर और

मुसलमानों का दोस्त होकर रहेगा तो अल्लाह वालों ही की जय है। (५६) [रुकू ८]

मुसलमानों ! जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना रक्खा है यानी जिनको तुमसे पहिले किताब दी जा चुकी है और काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ और अगर तुम यक़ीन रखते हो तो खुदा से डरते रहो। (५७) और जब तुम नमाज़ के लिए (बांग देकर) बुलाते हो तो यह लोग नमाज़ को हँसी और खेल बनाते हैं यह इसलिये कि यह लोग नासमझ हैं। (५८) कहो कि ऐ किताब वालों (यहूद) क्या तुम हमसे इसीलिये दुश्मनी रखते हो कि हम अल्लाह पर और जो हमारी तरफ़ उतरी है उस पर और जो पहिले उतर चुकी है उस पर ईमान ले आये हैं और यह कि तुममें के अक्सर बेहुक्म हैं। (५९) कहो कि मैं तुमको बताऊँ जो खुदा के नज़दीक बुरे बदले के लायक हैं। वह जिन पर खुदा ने लानत की और उन पर अपना कोप उतारा और किसी को बन्दर और सूअर बना दिया था जो शैतान को पूजने लगे तो यह लोग दर्जे में हमसे कहीं खराब ठहरे और सीधी राह से बहुत भटक गये। (६०) जब तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाये हालाँकि इन्कारी ही को साथ लेकर आये थे और इन्कारी को साथ लिये चले गये और जो छिपाये हुये थे अल्लाह उसको खूब जानता है। (६१) और तुम इनमें से बहुतेरों को देखोगे कि गुनाह की बात और जुल्म और हराम का माल खाने पर गिरे पड़ते हैं क्या बुरे काम हैं जो ये करते हैं। (६२) इनके पुजारी और पंडित इनको झूठ बोलने और हराम का माल खाने से क्यों नहीं मना करते क्या बुरे काम हैं जो यह कर रहे हैं। (६३) और यहूदी कहते हैं कि खुदा का हाथ §तङ्ग है। इन्हीं के हाथ तंग हो

§ यहूदी जब धनवान होते तो खुदा की प्रशंसा करते थे और जब फ़क़ीर हो जाते तो कहते खुदा बड़ा कंजूस है उसने अपनी दया का हाथ इसीलिये रोक लिया है। उस पर ये आयत उतरी कि खुदा के दोनों हाथ खुले हैं। वह जब चाहे और जिसको जितना चाहे बतना दे उसको कोई रोक नहीं सकता।

जायें और इनके कहने पर इनको लानत है बल्कि ख़ुदा के दोनों हाथ फैले हुए हैं जिस तरह चाहता है खर्च करता है और जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम पर उतरा है जरूर उनमें से बहुतेरों की नटखटी और इन्कारी के ज्यादा होने का सबब होगा और हमने इनके आपस में दुश्मनी और ईर्षा कयामत तक डाल दी है। जब-जब लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसको बुझा देता है और मुल्क में फसाद फैलाते फिरते हैं और अल्लाह फसादियों को दोस्त नहीं रखता। (६४) अगर किताब वाले ईमान लाते और डरते तो हम इनसे इनके अपराध जरूर उतार देते और इनको पदार्थों के बागों में भी जरूर दाखिल करते। (६५) अगर यह तौरात और इन्जील और उनको जो उन पर इनके परवर्दिगार की तरफ से उतरी हैं कायम रखते तो जरूर उन पर ख़ुदा की नियामतें वर्षा के समान बरसतीं कि ऊपर से और पाँव के तले (जमीन पर गिरी) से खाते इनमें से कुछ लोग सीधे हैं और इनमें से अक्सर तो बहुत ही बुरा कर रहे हैं। (६६) [रुकू ६]

ऐ पैगम्बर जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से उतरा है पहुँचा दो और अगर तुमने न किया तो तुमने ख़ुदा का पैगाम नहीं पहुँचाया और अल्लाह तुमको लोगों से बचायेगा क्योंकि अल्लाह उनको जो काफिर हैं रास्ता नहीं दिखायेगा। (६७) कहो कि ऐ किताबवालों! जब तक तुम तौरात और इन्जील और जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से तुम पर उतरी हैं उसे न मानो तब तक तुम राह पर नहीं हो। और जो तुम पर तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से (क़ुरान) उतरी है उनमें से बहुतेरों की सरकशी और इन्कारी को ही बढ़ायेगा† सो तू काफिर पर अफसोस न कर। (६८) इसमें कुछ सन्देह नहीं जो मुसलमान हैं और यहूदी हैं और साबी और ईसाई हैं जो कोई अल्लाह और कयामत पर ईमान लाये और नेक काम करे तो ऐसे लोगों पर न भय होगा और न वह उदासीन रहेंगे। (६९) हम याकूब के बेटों से अहद करा चुके हैं और हमने इनकी तरफ बहुत पैगम्बर भी भेजे जब कभी कोई पैगम्बर

† यानी क़ुरान को सुनकर काफिर और जिद पकड़ेंगे।

इनके पास ऐसा हुक्म लेकर आया जिनको उनके दिल नहीं चाहते थे तो बहुतों ने झुठलाया और बाज ने कितनों को कत्ल किया। (७०) और समझे कोई विपत्ति नहीं आयगी सो अंधे और बहरे हो गये फिर खुदा ने उनकी तौबा कबूल कर ली फिर भी इनमें से बहुतेरे अन्धे और बहरे बन रहे और जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह देख रहा है। (७१) जो लोग कहते हैं कि खुदा तो यही मरियम के बेटे मसीह हैं यह लोग काफिर हो गये और मसीह समझाया करते थे कि ऐ याकूब के बेटों अल्लाह की इबादत करो कि यह मेरा और तुम्हारा परवर्दिगार है और शक नहीं कि जिसने अल्लाह का साझी ठहराया बैकुण्ठ उस पर हराम हो चुका और उसका ठिकाना नरक है और जालिमों का कोई भी सहायक नहीं। (७२) जो लोग कहते हैं खुदा तो इन्हीं तीन में का एक है बेशक काफिर हो गये हालांकि एक खुदा के अलावा और कोई पूजित नहीं और जैसी-जैसी बातें यह लोग कहते हैं अगर उनसे बाज नहीं आयेंगे तो जो लोग इनमें से काफिर हैं इन पर कड़ी सजा होगी। (७३) यह क्यों नहीं खुदा के आगे तौबा करके गुनाह माफ कराते हालांकि अल्लाह माफ करने वाला मिहरबान है। (७४) मरियम के बेटे मसीह तो सिर्फ एक पैगम्बर हैं इनसे पहले पैगम्बर हो चुके हैं और इनकी माता सती थीं। दोनों खाना खाते थे देखो तो सही हम दलीलें किस तरह खोल खोलकर इन लोगों से बयान करते हैं फिर देखो कि यह लोग किधर उल्टे भटकते चले आ रहे हैं (७५) कहो क्या तुम खुदा के सिवाय ऐसी चीजों की पूजा करते हो जो तुम्हें फायदा नुकसान नहीं पहुँचा सकतीं और अल्लाह सुनता और जानता है। (७६) कहो कि ऐ किताब वालों अपने दीन में नाहक ज्यादती मत करो और न उन लोगों की ख्वाहिशों पर चलो जो पहिले भटक चुके हैं और बहुतेरों को भटका चुके हैं और आप सीधी राह से भटक गये हैं। (७७) [रुकू १०]

याकूब के बेटों में से जिन लोगों ने इन्कारी की उन पर दाऊद और मरियम के बेटे ईसा की तरफ से फटकार पड़ी—यह इसमें कि वे गुनहगार थे और हद से बढ़ गये थे। (७८) जो बुरा काम कर बैठते

थे उससे बाज न आते थे अलबत्ता बुरे काम थे जो किया करते थे। (७६) तुम उनमें से बहुतेरों को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं उन्होंने अपने लिये बुरी सामग्री भेजी है कि खुदा उनसे नाराज हुआ और यह हमेशा सजा में रहगे। (८०) और अगर अल्लाह पर और पैग़म्बर पर और जो किताब उन पर उतरी उस पर ईमान रखते होते तो काफ़िरों को मित्र न बनाते लेकिन इनमें से बहुतेरे बेहुक्म हैं। (८१) मुसलमानों के साथ दुश्मनी के बारे में यहूदियों को और मुशरिकीन को तुम सब लोगों में बड़ा सख्त पाओगे और मुसलमानों के साथ दोस्ती के बारे में सब लोगा में उनको नजदीक पायेगा जो कहते हैं कि हम ईसाई हैं यह इस सबब से है कि इनमें पादरी और परिव्रत हैं और यह लोग घमण्ड नहीं करते। (८२)

सातवाँ पारा (व इजासमिऊ)

और (जो कुछ) पैग़म्बर पर उतरा है (उसे) सुनते हैं तो तू उनकी आँखों को देखता है कि उनसे आँसू जारी हैं§ इसलिये कि उन्होंने सच बात को पहिचान लिया है। कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार हम तो ईमान ले आये तू हमको गवाहों में लिख। (८३) और हमको क्या हुआ है कि हम अल्लाह को न मानें और सच्ची बात जो हमारे पास आई है उस पर विश्वास न करें हमें उम्मीद है कि परवर्दिगार की निगाह में हम अच्छे समझे जायेंगे। (८४) तो इनके इस बात के बदले में खुदा ने इनको ऐसे बाग़ दिये जिनके नीचे नहरें

§ यह उन ईसाइयों का हाल है जो सच्चे और दीनदार हैं और हक़ को छिपाना नहीं चाहते जैसे हब्श का बादशाह नज्जाशी था।

यह रही हैं ये उनमें सदैव रहेंगे भलाई करनेवालों का यही बदला (८५) और जिन लोगों ने न माना और हमारी आयतों को झुठलाया यही नरकवासी हैं। (८६) [रुकू ११]

मुसलमानों ! ख़ुदा ने जो साफ़ चीजें तुम्हारे लिये हलाल कर दी हैं उनको हराम मत करो और हद से न बढ़ो क्योंकि अल्लाह हद से बढ़ने वालों को नहीं चाहता । (८७) ख़ुदा ने जो तुमको सुथरी हलाल चीजें दी हैं उनको खाओ और जिस ख़ुदा पर तुम्हारा ईमान है उससे डरते रहो। (८८) तुम्हारी बेफायदा कसमों पर ख़ुदा नहीं पकड़ेगा हाँ पक्की कसम खालो तो ख़ुदा पकड़ेगा तो इस पाप की शान्ति के लिये दस मूर्खों को मामूली भोजन खिला देना है जैसा अपने घर वालों को खिलाते हो या उनको कपड़े बना देना है या एक गुलाम छोड़ देना है फिर जिसको ताकत न हो तो तीन दिन के रोजे रक्खे यह तुम्हारी कसमों की शान्ति (कफ़ारा) है जबकि तुम कसम खा चुके हो और अपने कसमों को रोके रहो । इस तरह अल्लाह अपना हुक्म तुमको सुनाता है शायद तुम अहसान मानो। (८९) मुसलमानों ! शराब और जुआ और बुत और पांसे यह गन्दे शैतानी काम हैं इनसे बचो शायद इनसे तुम्हारा भला हो । (९०) शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के कारण तुम्हारे आपस में दुश्मनी और ईर्षा डलवा दे और तुमको ख़ुदा की याद से और नमाज से रोके तो क्या तुम रुकना चाहते हो। (९१) और अल्लाह की और पैग़म्बर का हुक्म मानो और बचते रहो इस पर भी अगर तुम फिर बैठोगे तो जाने रहो कि हमारे पैग़म्बर के जिम्मे तो सिर्फ साफ-साफ कह देना था। (९२) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये तो जो कुछ खा पी चुके उसमें उन पर गुनाह नहीं रहा जबकि उन्होंने हराम चीजों से परहेज किया और ईमान लाये और नेक काम करने लगे और अल्लाह अच्छे काम करनेवालों को चाहता है। (९३) [रुकू १२]

मुसलमानो ! एक जरा से शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और भाले पहुँच सकें (एहराम की हालत में) ख़ुदा जरूर तुम्हारी जाँच

फरेगा ताकि अल्लाह मालूम करे कि कौन अनदेखे से डरता है फिर इससे बाद जो ज्यादती करे तो उसको दुखदाई सज़ा है। (९४) मुसलमानों! जबकि तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार मत मारो और जो कोई तुममें से जान बूझकर शिकार मारेगा तो जैसे जानवर को मारा है उसके बदले में वैसा ही पशु जो तुममें के दो मुन्सिफ (न्यायी) ठहरा दें देना पड़ेगा और भेंट काबे में भेजना या उसके बदले में भूखों को खिलाना या उसके बराबर रोज़े रखना ताकि अपने किये का फल भोगे जो हो चुका उसे खुदा ने माफ किया और करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेने वाला है। (९५) दरियाई शिकार और खाने की दरियाई चीज़ तुम्हारे लिये हलाल की जाती है ताकि तुमको और मुसाफिरों को लाभ पहुँचे और जङ्गल का शिकार जब तक एहराम में रहो तुम पर हराम है और अल्लाह से डरते रहो जिसके पास जाना है। (९६) खुदा ने काबे को जो कि खास जगह है लोगों की रक्षा के लिये कायम किया है और पाक महीनों को और कुरबानी को और जो जेवर वगैरह उनके गले में लटक रहे हैं ठहराया है यह इसलिये कि तुमको मालूम रहे कि जो कुछ आसमानों और जो कुछ जमीन में है अल्लाह जानता है और यह कि अल्लाह हर चीज से जानकार है। (९७) जाने रहो कि अल्लाह सज़ा देने में कठोर है और यह भी कि अल्लाह क्षमा करने वाला रहीम है। (९८) पैग़म्बर के जिम्मे सिर्फ पहुँचा देना है और जो तुम लोग जाहिर में करते और जो छिपा कर करते हो अल्लाह सब कुछ जानता है। (९९) कहो कि पाक और नापाक बराबर नहीं हो सकती अगर्चे नापाक की ज्यादती तुम को अच्छी लगे तो हे बुद्धिमानों खुदा से डरते रहो शायद तुम्हारा भला हो। (१००) [रुकू १३]

मुसलमानो! ऐसी बातें न पूछा करो कि जो अगर तुम पर जाहिर कर दी जायें तो तुमको बुरी लगें और ऐसे वक्त में जबकि कुरान उतर रहा है उन बातों की हकीकत पूछोगे तो तुम पर जाहिर भी कर दी जायगी अल्लाह ने इन बातों को माफ किया और अल्लाह माफ करने

वाला सहन करनेवाला है। (१०१) तुमसे पहले भी लोगों ने ऐसी ही बातें पूछी थीं फिर जानने पर उनसे (पैग़म्बरों से) इनकार करने लगे। (१०२) ख़ुदा ने न बहीरा (कनकटी ऊँटनी) और न साइबा (ऊँटनी जो सांड की तरह छोड़ी जाती थी) और न वसीला (वह ऊँटनी जिसके पहिलौठी के दो बच्चे मादा हों) और न हाम (ऊँट जिसकी नस्ल से कई बच्चे हो गये हों) इनके बारे में ख़ुदा ने कुछ नहीं †ठहराया। बल्कि काफ़िरों ने ख़ुदा पर झूठ थोपा है और इनमें बहुतेरे बेसमझ हैं। (१०३) जब इनसे कहा जाता है जो अल्लाह ने क़ुरान उतारा है उसकी ओर पैग़म्बर की तरफ चलो तो कहते हैं कि जिस पर हमने अपने बाप दादों को पाया है हमारे लिये काफी है। भला अगर जो इनके बाप कुछ न जानते और सीधी राह पर न रहे हों तो भी (क्या उन्हीं की राह चलेंगे) (१०४) मुसलमानों ! तुम अपनी जानों की ख़बर रक्खो जब तुम सीधी राह पर हो तो कोई भी गुमराह तुमको नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता तुम सबको अल्लाह की तरफ लौटकर जाना है तो जो कुछ करते रहे हो तुमको बतायेगा। (१०५) मुसलमानों ! जब तुममें से किसी के सामने मौत आ खड़ी हो तो वसीयत करते वक्त तुममें के दो विश्वासी गवाह हों या अगर तुम कहीं को सफ़र करो और मौत आ जाय तो ग़ैर मज़हब ही के दो (गवाह) हों अगर तुमको संदेह हो तो उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो फिर वह दोनों अल्लाह की क़समें खायें कि हम माल (रिश्वत) के लालच से क़सम नहीं खाते अगर्चे वह शख़्स रिश्तेदार ही क्यों न हो और हम ख़ुदा की गवाही को नहीं छिपाते और अगर ऐसा करें तो हम बेशक गुनहगार हैं। (१०६) फिर अगर मालूम हो जाय कि वह दोनों सच को छिपा गये तो इनकी जगह दो उन लोगों में से खड़े हों जिन्होंने इनको झूठा ठहराया हो उनमें से जो नज़दीकी हों फिर वह

---

† काफ़िर इन चीजों को ख़ुदा की ख़ुशी का सामान समझते थे। मुसलमानों को बताया गया कि ये बातें ये मनमानी करते हैं। ख़ुदा ने उनको ऐसा करने का हुक्म कभी नहीं दिया।

अल्लाह की कसमें खायें कि पहिले दो गवाहों की गवाही से हमारी गवाही ज्यादा सच्ची है और हमने ज्यादती नहीं की ऐसा किया हो तो हम बेशक जालिम हैं। (१०७) इस तरह की कसम से यह बात सोचने के लायक़ है कि लोग जैसी की तैसी गवाही दें या डरें कि हमारी क़सम उनकी कसम के बाद उल्टी पड़ेगी और अल्लाह से डरते रहो और सुन लो अल्लाह हुक्म न मानने वालों को राह नहीं बतलाता। (१०८) [रुकू १४]

जब कि अल्लाह पैग़म्बरों को इकट्ठा करके पूछेगा कि तुमको क्या उत्तर मिला वह कहेंगे कि हमको कुछ मालूम नहीं छिपी (ग़ैब की) बातें तो तू ही खूब जानता है। (१०९) उस दिन अल्लाह कहेगा कि ऐ मरियम क बेटे ईसा। हमने तुम पर और तुम्हारी माता पर जो-जो अहसान किये हैं याद करो जबकि हमने पाक रूह से तुम्हारी सहायता की गोद में और बड़े होकर भी तुम लोगों से बातचीत करते थे और जब कि हमने तुमको किताब और बुद्धिमानी और तौरात और इन्जील सिखलाई और जबकि तुम हमारे हुक्म से चिड़िया की सूरत मिट्टी से बनाते फिर उसमें फूँक मार देते तो वह हमारे हुक्म से पक्षी बन जाता और जबकि तुम जन्म के अन्धे और कोढ़ी को हमारे हुक्म से चंगा कर देते और जबकि तुम हमारे हुक्म से मुर्दों को निकाल खड़ा करते और जबकि हमने याकूब के बेटों (बनी इसराईल) को (तुम्हारे मार डालने से) रोका कि जिस वक्त तुमने उनको निशानी दिखलाई। तो उनमें से जो तुम्हारा इत्मीनान नहीं करते थे कहने लगे कि यह तो सिर्फ खुला जादू है। (११०) और जब हमने ‡हवारियों के दिल में डाला कि हम पर और हमारे पैग़म्बर पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा हम ईमान लाये और तू इस बात का गवाह रह कि हम आज्ञाकारी हैं। (१११) जब हवारियों ने दरख्वास्त की कि ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या तुम्हारे पालनकर्त्ता से हो सकेगा कि हम पर आसमान से एक थाल उतारे कहा अगर तुम ईमान रखते हो तो खुदा से डरो। (११२)

‡ हवारी—ईसा के साथी।

यह योसे हम चाहते हैं कि उसमें से कुछ खायें और हमारे दिलों में इतमीनान हो जाय और हम मालूम कर लें कि तूने हमसे सच कहा और हम इसके गवाह हैं। (११३) ईसा मरियम के बेटे ने कहा कि ऐ अल्लाह हमारे परवर्दिगार हम पर आसमान से एक थाल उतार थाल हमारे लिये यानी हमारे अगलों और पिछलों के लिये ईद‡ करार पाये और तेरी तरफ से निशानी हो और हमको रोज़ी दे और तू सब रोजी देने वालों में से अच्छा है। (११४) अल्लाह ने कहा बेशक हम वह थाल तुम लोगों पर उतारेंगे। तो जो शख्स फिर भी तुममें से इन्कार करता रहेगा तो हम उसको ऐसी सख्त सज़ा देंगे कि दुनिया जहान में किसी को भी ऐसी नहीं दी होगी। (११५) [रुकू १५]

उस दिन अल्लाह पूछेगा कि ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या तुमने लोगों से यह बात कही थी कि ख़ुदा के अलावा मुझको और मेरी माता को दो ख़ुदा मानो बोला कि तेरी ज़ात पाक है मुझसे क्योंकर हो सकता है कि मैं ऐसी बात कहूँ जिसके कहने का मुझको कोई अधिकार नहीं अगर मैं ऐसा कहता तो तुझे ज़रूर ही मालूम होता तू मेरे दिल की बात जानता है और मैं तेरे दिल की बातें नहीं जानता। ग़ैब (छिपी) की बातें तो तू ही खूब जानता है। (११६) तूने जो मुझको आज्ञा दी थी बस वही मैंने इनको कह सुनाया था कि अल्लाह जो मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है उसी की पूजा करो और जब तक मैं इन लोगों में रहा मैं उनका निगहबान रहा फिर जब तूने मुझको उठा लिया तो तू ही इनका निगहबान हो गया और तू सब चीज़ों का साक्षी (गवाह) है। (११७) अगर तू इनको सज़ा दे तो यह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इनको माफ करे तो निस्सन्देह तू ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (११८) अल्लाह ने कहा कि यह वह दिन है कि सच्चे बन्दों को उनकी सचाई काम आयेगी उनके लिये बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें हमेशा बह रहेंगे

‡ कहा जाता है कि यह थाल इतवार के दिन उतरा था। ईसाई इसीलिये इस दिन बड़ी खुशी मनाते हैं।

अल्लाह उनसे खुश और वह अल्लाह से खुश यही बड़ी कामयाबी है। (११९) आसमान और जमीन और जो कुछ आसमान और जमीन में है सब पर अल्लाह ही का अधिकार है और वह सब चीजों पर ताकतवर है। (१२०) [रुकू १६]

सूरे अनआम

यह मक्के में उतरी इसमें १६५ आयतें, २० रुकू हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहम वाला मेहरबान है। हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही को है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया और अँधेरा और उजेला बनाया। इस पर भी काफ़िर अपने परवर्दिगार को शरीक ठहराते हैं। (१) वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर एक (मियाद) ठहरा दी और एक मुकर्रर वक्त उसके पास है फिर भी तुम सन्देह करते रहो। (२) और आसमानों में और जमीन में वही अल्लाह है जो कुछ तुम छिपाकर और जो जाहिरा करते हो उसको मालूम है और जो कुछ तुम कमाते हो उसे मालूम है। (३) और तेरे परवर्दिगार की निशानियों में से कोई निशानी उसके पास नहीं पहुँचती। लेकिन वह उनसे मुँह फेरते हैं। (४) जब सच इनके पास आया उसको भी झुठला दिया तो यह लोग जिस चीज (कयामत) की हँसी उड़ा रहे हैं उसकी हकीकत इनको आगे चलकर मालूम हो जायगी। (५) क्या इन लोगों ने नजर नहीं की हमने इनसे पहिले कितनी उम्मतों (गरोहों) का नाश कर दिया जिनकी हमने मुल्क में ऐसी जड़ बाँध दी थी कि तुम्हारी ऐसी जड़ नहीं बाँधी और हमने उन पर खूब मेह बरसाया और उनके नीचे से

नहरें जारी कर दीं। फिर हमने उनके गुनाहों के सबब से उनका नाश करा दिया और उनके पीछे और दूसरी उम्मतें (संगतें) निकाल खड़ी कीं। (६) अगर हम कागज पर किताब तुम पर उतारते और यह लोग उसको अपने हाथों से छू भी लेते टटोलते तो भी काफिर कहेंगे कि यह जाहिरा जादू है। (७) कहते हैं कि इस पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतरा और अगर फरिश्ते को भेजते तो झगड़ा ही चुक गया था फिर उनको मुहलत न मिलती। (८) और अगर फरिश्ते को पैगम्बर बनाते तो उसको भी आदमी (की सूरत में) ही बनाकर भेजते। और हम उन पर वही शक डालते जो यह शक डाल रहे हैं (९) और तुमसे पहिले भी पैगम्बर की हँसी उड़ाई जा चुकी है तो जिन लोगों ने पैगम्बरों से हँसी की वह उल्टी उन्हीं पर पड़ी। (१०) [रुकू १]

कहो कि देश में चलो फिरो फिर देखो झुठलाने वालों को कैसा फल मिला। (११) पूछो जो कुछ आसमान और जमीन में है किसका है कह दो कि अल्लाह का है उसने खुद ही लोगों पर मेहरबानी करने को अपने ऊपर लाजिम कर लिया है वह क़यामत के दिन तक जिसके आने में कोई भी शक नहीं तुम लोगों को जरूर जमा करेगा जो अपनी जानों का नुकसान कर रहे हैं वही ईमान नहीं लाते। (१२) और उसी का है जो कुछ रात और दिन में बसता है और वह सुनता और जानता है। (१३) पूछो कि खुदा जो आसमान और जमीन का पैदा करने वाला है क्या उसके सिवाय काम सम्भालने वाला बनाऊँ और वह रोजी देता है और कोई उसको रोजी नहीं देता। कह दो मुझको तो यह हुक्म मिला है कि सबसे पहिले मैं मुसलमान बनूँ और मुश्रिकों (खुदा का साझी बनाने वालों) में न हूँ। (१४) कहो कि अगर मैं अपने परवर्दिगार का हुक्म न मानूँ तो मुझको क़यामत के दिन की सख्त सजा से डर लगता है। (१५) उस दिन जिससे सजा टल गई तो उस पर खुदा ने मेहरबानी की और यह बड़ी कामयाबी है। (१६) अगर अल्लाह तुमको तकलीफ पहुँचाये तो

उसके सिवा कोई उसको दूर करनेवाला नहीं और अगर तुमको भलाई पहुँचाये तो वह हर चीज पर शक्तिशाली है। (१७) और वह अपने बन्दों पर अधिकारी है और वही हिकमत वाला खबरदार है। (१८) पूछो कि गवाही किस चीज की बड़ी है कह दो कि खुदा जो मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है और यह क़ुरान मेरी तरफ इसीलिये खुदाई पैग़ाम है कि इसके ज़रिये से तुमको और जिसे पहुँचे डराऊँ क्या तुम पक्के बनकर इस बात की गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूजित भी हैं। कहो कि मैं तो गवाही नहीं देता तुम इन लोगों से कहो कि वह तो सिर्फ एक पूजित है और जिन चीजों को तुम खुदा का शरीक बनाते हो मैं उनको नहीं मानता। (१९) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह तो जैसा अपने बेटों को पहिचानते हों वैसा ही इस (मोहम्मद) को भी पहिचानते हैं जिन्होंने अपनी जानों को जोखा में डाला वही ईमान नहीं लाते। (२०) [रुकू २]

जो शख्स खुदा पर झूठा लफंट बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाये उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है ज़ालिमों को किसी तरह छुटकारा नहीं होगा। (२१) और (एक दिन होगा) जबकि हम इन सबको इकट्ठा करेंगे फिर उन लोगों से जो शरीक ठहराते थे पूछेंगे कि कहाँ हैं तुम्हारे वह शरीक जिनका तुम दावा करते थे (२२) फिर इनको कुछ उज्र न रहेगा मगर यों कहेंगे कि हमको खुदा परवर्दिगार की कसम हम मुश्रिक ही न थे। (२३) देखो किस तरह अपने ऊपर आप झूठ बोलने लगे और इनकी झूठी बातें इनसे गई गुज़री हो गईं। (२४) इनमें से ऐसे भी हैं कि तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं और उनके दिलों पर हमने पर्दे डाल दिये हैं इनके कानों में बोझ है ताकि तुम्हारी बात न समझ सकें और अगर यह सब करामात भी देख लें तो भी ईमान लाने वाले न हों यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास तुमसे झगड़े हुए आते हैं तो काफिर बोल उठते हैं कि क़ुरान तो सिर्फ अगलों की कहानियाँ हैं। (२५) यह लोग क़ुरान से दूसरे को मना करते और उससे भागते हैं और अपनी जानों को ही मारते हैं और

नहीं समझते। (२६) और जब आग (दोज़ख़) के सामने खड़े किये जायेंगे तो उसकी कैफ़ियत देखकर कहेंगे कि अगर ख़ुदा की मेहरबानी से हम फिर दुनिया में भेजे जायँ तो अपने परवर्दिगार की आयतों को न झुठलाएँ और ईमानवालों में से हों। (२७) बल्कि जिसको पहिले छिपाते थे उनके आगे आई और अगर (दुनिया में) वापस भेज दिये जायँ तो जिस चीज़ से इनको मना किया गया है उसको फिर दुबारा करेंगे और यह झूठे हैं। (२८) और कहते हैं कि जो हमारी दुनिया की जिन्दगी है इसके अलावा और किसी तरह की जिन्दगी नहीं और मरे पीछे फिर जी उठने वाले नहीं। (२९) अगर तू देखे जबकि यह लोग अपने परर्दिगार के सामने लाकर खड़े किये जायेंगे तो पूछेगा क्या यह सच न था कहेंगे अपने परवर्दिगार की क़सम ज़रूर सच था वह कहेगा कि अपने इन्कारी की सज़ा चखो। (३०) [रुकू ३]

जिन लोगों ने अल्लाह के सामने होने को झूठा माना बेशक वह लोग घाटे में रहे यहाँ तक कि जब एकदम क़यामत इन पर आ मौजूद होगी तो चिल्ला उठेंगे कि अफ़सोस हमने दुनिया में गुनाह किया और अपने बोझ अपनी पीठ पर लादे होंगे देखो तो बुरा है जिसको यह लोग लादे होंगे। (३१) दुनिया की जिन्दगी तो निरा खेल और तमाशा है और कुछ शक नहीं जो लोग परहेज़गार हैं उनके लिए आख़िरत† का घर कहीं अच्छा है क्या तुम लोग नहीं समझते। (३२) हम इस बात को जानते हैं कि यह लोग जैसी-जैसी बातें कहते हैं बेशक तुमको रंज होता है पस यह तुमको नहीं झुठलाते बल्कि ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। (३३) तुमसे पहिले भी पैग़म्बर झुठलाये जा चुके हैं तो उन्होंने लोगों के झुठलाने पर और उनको नुकसान पहुँचाने पर सब्र किया यहाँ तक हमारी मदद उनके पास आ पहुँची और कोई ख़ुदा की बातों का बदलने वाला नहीं और पैग़म्बरों की ख़बरें तुमको पहुँच चुकी हैं।

† दूसरी दुनिया जो क़यामत के बाद होगी।

(३४) और अगर इनकी सरकशी तुमको बुरी लगती है और तुमसे हो सके कि जमीन के अन्दर सुरंग लगाओ या आसमान में कोई सीढ़ी और कोई निशानी इनको लाकर दिखाओ और अल्लाह को मंजूर होता तो इनको सीधे रास्ते पर राजी कर देता तो देखो तुम कहीं मूर्खों में न हो जाना। (३५) वही मानते हैं जो सुनते हैं और मुर्दों को खुदा जिला उठायेगा फिर उसी की तरफ जायेंगे। (३६) कहते हैं कि इसके परवर्दिगार की तरफ से कोई निशान क्यों नहीं उतरा कहो कि अल्लाह निशान के उतारने में शक्तिमान है। मगर इनमें के अक्सर बेसमझ हैं। (३७) क्या कोई रेंगने वाला जानवर और दो परों से उड़नेवाला पक्षी जमीन में नहीं है कि तुम आदमियों की तरह अपनी जमातें रखता हो। कोई चीज नहीं जिसे हमने किताब में न लिख्या हो फिर अपने परवर्दिगार के सामने जायेंगे। (३८) जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं अन्धेरे में गूंगे और बहिरे हैं खुदा जिसे चाहे उसे भटका दे और जिसे चाहे उसे सीधे रास्ते पर लगा दे। (३६) पूछो कि भला देखो तो सही अगर खुदा की सजा तुम्हारे सामने आ मौजूद हो या क़यामत तुम्हारे सामने आ खड़ी हो तो क्या खुदा के सिवाय दूसरे को पुकारने लगोगे अगर तुम सच्चे हो। (४०) (दूसरे को तो नहीं) बल्कि उसी (एक खुदा) को पुकारोगे तो जिसके लिये पुकारोगे अगर उसकी मर्जी में आयेगा तो उसको दूर कर देगा और जिनको तुम शरीक बनाते हो भूल जाओगे। (४१) [रुकू ४]

तुमसे पहिले बहुत उम्मतों (संगतों) की तरफ पैग़म्बर भेजे थे फिर हमने उनको सख्ती और कष्ट में डाला ताकि वह हमारे सामने गिड़गिड़ायें। (४२) तो जब उन पर हमारी सजा आई थी नहीं गिड़गिड़ाये मगर उनके दिल कठोर हो गये थे और जो काम करते थे शैतान ने उनको भला बतलाया था। (४३) फिर जो शिक्षा उनको दी गई थी उसे भूल गये तो हर चीज के दरवाजे उन पर खोल दिये जब उनको पाकर प्रसन्न हुये एकाएक हमने उनको धर पकड़ा और वह

निराश होकर रह गये। (४४) जालिम लोगों की जड़ कट गई और खुदा की तारीफ हो जो सब संसार का मालिक है। (४५) पूछो कि भला देखो तो सही अगर खुदा तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो खुदा के सिवाय और कोई पूजित है कि यह पदार्थ तुमको लाद देखो तो क्योंकर हम दलीलें तरह-तरह पर बयान करते हैं इस पर भी यह लोग मुँह फेरे चले जाते हैं। (४६) तो कहो देखो तो सही अगर खुदा की सजा यकायक या जता बताकर तुम पर आ उतरे तो गुनहगारों के सिवाय दूसरा कोई न मारा जायगा। (४७) पैगम्बरों को हम सिर्फ इस गरज से भेजा करते हैं कि खुश खबरी सुनायें और डरावें तो जो ईमान लाया उसने सुधार कर लिया तो ऐसे लोगों पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (४८) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको हुक्म न मानने के सबब सजा होगी। (४९) कहो कि मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास खुदा के खजाने हैं और न मैं छिपी जानता हूँ और न मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ मैं तो बस उसी पर चलता हूँ जो मेरी तरफ खुदा का संदेशा भेजा गया है पूछो कि आया अन्धा और जिसको सूझ पड़ता है बराबर हो सकते हैं ?§ क्या तुम नहीं सोचते। (५०) [रुकू ५]

कुरान के द्वारा उन लोगों को डराओ जो इस बात का डर रखते हैं कि अपने परवर्दिगार के सामने लाकर हाजिर किये जायेंगे खुदा के सिवाय न कोइ उनका दोस्त होगा और न सिफारिश करने वाला। शायद वे बचते रहें। (५१) जो लोग सुबह व शाम अपने परवर्दिगार ही की तरफ मुँह करके उससे दुआयें माँगते हैं उनको ‡मत

---

§ यानी मैं जिन बातों को देखता हूँ उनको तुम नहीं जानते और इसीलिये मेरी बात नहीं मानते। मगर मैं तुम्हारी बात जानते बूझते कैसे मान सकता हूँ।

‡ काफ़िरों में से कुछ सरदार मुहम्मद साहब के पास आकर कहने लगे कि हमारा जी आपकी बातें सुनने को चाहता है मगर आपके पास तो गुलामों

निकालो। न तो उनकी जवाबदिही किसी तरह तुम्हारे ज़िम्मे है और न तुम्हारी जवाबदिही किसी तरह उनके ज़िम्मे है कि उनको धक्के देने लगो तो तुम ज़ालिमों में होगे। (५२) इसी तरह हमने एक को एक से जाँचा ताकि वह यों कहें कि क्या हममें इन्हीं पर अल्लाह ने कृपा की है क्या अल्लाह को सच्चे मानने वाले मालूम नहीं है। (५३) जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं वे जब तुम्हारे पास आया करें तो उनको सब्र दिलाया करो और कहो कि तुम अच्छे रहो तुम्हारे परवर्दिगार ने मेहरबानी करना अपने ऊपर ले लिया है कि जो कोई तुममें से बेवकूफी के कारण कोई गुनाह कर बैठे फिर किये पीछे तोबा और सुधार करले तो वह बख्शने वाला मेहरबान है। (५४) इसी तरह पर हम आयतों को खोल-खोलकर बयान करते हैं ताकि गुनहगारों की राह ज़ाहिर हो जाय। (५५) [रुकू ६]

कह दो कि मुझको इस बात की मनादी है कि मैं उनकी पूजा करूँ जिनको तुम ख़ुदा के सिवाय बुलाते हो। कहो मैं तुम्हारी ख्वाहिश पर तो चलता नहीं ऐसा करूँ तो मैं इस सूरत में गुमराह हो चुका और उन लोगों में न रहा जो सीधे रास्ते पर हैं। (५६) तू कह कि मुझे अपने परवर्दिगार की शहादत पहुँची और तुम ने उसको झुठलाया जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो वह मेरे पास तो नहीं है। अल्लाह के सिवाय और किसी का अधिकार नहीं वह सच बात खोलता है और वह सब फैसला करने वालों से अच्छा है। (५७) कहो कि जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो अगर मेरे पास होता तो मेरे और तुम्हारे दर्मियान झगड़ा चुक गया होता और अल्लाह ज़ालिम लोगों से खूब परिचित है। (५८) उसी के पास गैब (छिपी हुई) की कुंजियाँ हैं जिनको उसके सिवाय कोई नहीं जानता और जंगल और नदी में है जानता है और कोई पत्ता तक नहीं हिलता जो उसे मालूम नहीं और

की बोझ लगी रहती है। हम उनके बराबर कैसे बैठ सकते हैं। उन को जब हम आया करें उठा दिया कीजिये। इस पर यह आयत उतरी कि उनको मत निकालो।

जमीन के अन्धेरे में एक दाना नाज न सूखा और न हरा जो उसकी खुली किताब में न हो। (५९) और वही है जो रात के वक्त तुम्हारी रूहों को कब्जे में लेता है और जो कुछ तुमने दिन में किया था जानता है फिर दिन के वक्त तुमको उठा खड़ा करता है ताकि मियाद मुकर्रह (जिन्दगी) पूरी हो। फिर उसी की तरफ लौटकर आना है फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह तुमको बतलायेगा। (६०) (रुकू ७)

वही अपने बन्दों पर हुक्मरों है और तुम लोगों पर निगहबान भेजता है यहाँ तक कि जब तुम में से किसी को मौत आता है तो हमारे फरिश्ते उसकी रूह निकालते हैं और वह कोताही नहीं करते (६१) फिर खुदा की तरफ जो उनका काम संभालनेवाला सच्चा है वापिस बुलाये जाते हैं सुन रखो कि उसी का हुक्म है और वह सबसे जयादा जल्द हिसाब लेने वाला है। (६२) पूँछो कि तुमको जंगल और दरिया के अन्धेरों से कौन बचाता है वही जिसे तुम गिड़गिड़ा-कर चुपके पुकारते हो कि अगर खुदा हमको इस आफत से बचाले तो हम उसके (शुक्र गुजार) हों। (६३) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि इनसे और हर तरह की सख्ती से खुदा ही तुमको बचाता है फिर भी तुम शरीक ठहराते हो। (६४) कहो कि वही इस पर काबिज है कि तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के तले से कोई सजा तुम्हारे लिए निकाल खड़ी करे या तुमको गिरोह गिरोह करके भिड़ा मारे और तुममें से किसी को किसी की लड़ाई का मजा चखाये देखो तो सही हम आयतों को किस किस तरह फेर फेर कर बयान करते हैं शायद वे समझे। (६५) और कुरान को तुम्हारी जाति ने झुठलाया हालांकि वह सच्चा है कहो कि मैं तुमपर अधिकारी नहीं। (६६) हर बात का एक वक्त मुकर्रर है और तुमको मालूम हो जायगा। (६७) और जब ऐसे लोग तुम्हारे नजर पड़जायें जो हमारी आयतों की हँसी उड़ा रहे हों तो उनसे हटजाओ यहाँ तक कि हमारी आयतों के सिवाय (दूसरी) बातों में लग जायें और अगर शैतान तुमको भुला देवे तो नसीहत के पीछे जालिम लोगों के साथ न बैठना। (६८) परहेजगारों

पर ऐसे लोगों के हिसाब की किसी तरह की जिम्मेदारी नहीं लेकिन नसीहत करना। शायद वे डर अख्तयार कर लें। (६६) जिन्हों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया और दुनियाँ की जिन्दगानीने उनको धोखे में डाल रक्खा है ऐसे लोगों को छोड़ दो और क़ुरान के जरिये से समझाते रहो कहीं कोई शख्स अपनी करतूत के बदले पकड़ा न जाये कि ख़ुदा के सिवाय न कोई उसका साथी होगा और न सिफारशी। और बदला अगर वह सब भी दे तो भी उससे न लिया जाय यही वह लोग हैं जो अपने काम के कारण पकड़े गये इनको पीने के लिये उबलता हुआ पानी और दुःखदाई सजा होगी क्योंकि यह कुफ्र (इनकार) किया करते थे। (७०) [रुकू ८]

पूछो क्या हम ख़ुदा को छोड़कर उनको अपनी मदद के लिये बुलावें जो न हमको नफ़ा पहुँचा सक्ते हैं और न नुकसान और जब अल्लाह हमको सीधा रास्ता दिखा चुका तो क्या हम उसके बाद भी उल्टे पैरों लौट जायें जैसे किसी शख्स को भूत बहकाकर ले जाय और जंगल में हैरान फिरें उसके कुछ साथी हैं वह उसको सीधे रास्ते की ओर बुला रहे हैं कि हमारे पास आ (ऐ पैग़म्बर इनसे कहो) कि अल्लाह का रास्ता ही सीधा रास्ता है और हमको हुक्म मिला है कि हम तमाम दुनियाँ के पालने वाले के फर्माबर्दार होकर रहें। (७१) और नमाज पढ़ते और ख़ुदा से डरते रहो और वही है जिसके सामने जमा होंगे। (७२) और वही है जिसने आसमान और जमीन को पैदा किया और जिस दिन फर्मायेगा कि हो† वह हो जायगा। उसका कहा सचा है और जिस दिन सूर (नरसिंहा) फूका जायगा उसी की हुकूमत होगी और वह छिपी और खुली का जानने वाला है और वही हिकमतवाला खबरदार है। (७३) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र§ से कहा क्या तुम बुतों को पूज्य मानते हो मैं तो तुमको और

---

† यानी क़यामत आ जायगी।

§ इब्राहीम के बाप का नाम क्या था ? क़ुरान में आज़र बताया गया है और तौरात में तारख लिखा है। लोगों का विचार है कि उनके दो नाम थे।

तुम्हारी कौमको जाहिरा भटके हुओं में पाता हूँ। (७४) इसी तरह हम इब्राहीम को आसमान और जमीन का प्रबन्ध दिखलाने लगे ताकि वह यकीन करने वालों में से हो जायँ। (७५) तो जब उन पर रात छागई उनको एक तारा दीख पड़ा (तो) कहने लगे कि यही मेरा परवर्दिगार है फिर जब वह छिप गया तो बोले कि अस्त हो जाने वाली चीजों को तो मैं नहीं चाहता। (७६) फिर जब चन्द्रमा को देखा कि चढ़ा जगमगा रहा है तो कहने लगे यही मेरा परवर्दिगार है फिर जब अस्त हो गया तो बोले अगर मुझको मेरा परवर्दिगार नहीं दिखलाई देगा तो निश्चय मैं भूले हुए लोगों में हो जाऊँगा। (७७) फिर जब सूरज को देखा कि चढ़ा जगमगा रहा है तो कहने लगे मेरा यही परवर्दिगार सबसे बड़ा है फिर जब (वह) छिप गया तो बोले भाइयों जिन चीजों को तुम खुदा में शरीक मानते हो मैं तो उनसे बे सम्बन्ध हूँ। (७८) मैंने तो एक ही का होकर अपना ध्यान उसी की ओर कर लिया है जिसने आसमान और जमीन को बनाया मैं तो मुशरकीन में से नहीं हूँ। (७९) उनके गिरोह के लोग उनसे झगड़ने लगे कहा क्या तुम मुझसे खुदा के एक होने के सम्बन्ध में झगड़ते हो हालांकि वह तो मुझ को सीधा रास्ता दिखा चुका है और जिनको तुम उसका शरीक मानते हो मैं तो उनसे कुछ डरता नहीं सिवाय इसके कि ईश्वर की इच्छा हो मगर हाँ मेरे पालने वाले की विद्या में सब चीजें समाई हुई हैं क्या तुम ध्यान नहीं करते। (८०) जिन चीजों को तुम शरीक करते हो मैं उनसे क्यों डरने लगा जब कि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ ऐसी चीजों को शरीक खुदाई बनाया जिनके सनद खुदा ने तुम्हारे लिये नहीं उतारी तो दोनों फरीकों में से कौन सा अमन का ज्यादा अधिकारी है अगर अक्ल रखते हो तो कहो। (८१) जो लोग खुदा पर ईमान लाये और उन्हों ने अपने ईमान में जुल्म नहीं मिलाया यही लोग हैं जो अमन चाहने वाले हैं और यही लोग सीधे मार्ग पर हैं। (८२) [रुकू ९]

यह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उनकी जाति के

कायल मायूल करने के लिए बताई हैं हम जिनको चाहते हैं उनका दर्जा ऊँचा कर देते हैं (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारा पालने वाला हिकमत वाला और सब कुछ जानता है। (८३) और हमने इब्राहीम को इसहाक और याकूब दिये उन सब को हिदायत की और पहिले नूह को भी हमने हिदायत की थी और उन्हीं के वंश में से दाऊद और सुलेमान और ऐयूब और यूसफ और मूसा और हारू को हिदायत की थी और हम नेकों को ऐसा ही बदला देते हैं। (८४) निदान जकरिया, यहिया और ईसा और इलयास नेकों में हैं। (८५) इस्माईल इलयास और यूनिस और लूत सभी को खूब दुनिया जहान के लोगों पर बुलन्दी दी। (८६) इनके बड़ों और इनकी सतान और इनके भाई बन्दों में से बाज़ को हमने चुना और इनको सीधी राह दिखला दी। (८७) यह अल्लाह की हिदायत है अपने सेवकों में से जिसको चाहे इस तरह का उपदेश दे और अगर यह शरीक करते होते तो इनका दिया धरा इनसे बेकार हो जाता। (८८) यह वह लोग हैं जिनको हमने किताब दी और हक दिया और पैग़म्बरी भी दी सो (यह मक्का के काफ़िर) अगर इनकी इज्जत न करें तो हमने इन पर लोग मुकर्रर कर दिये हैं† जो इनके इन्कारी नहीं हैं। (८९) उन्हें अल्लाह ने हिदायत की तू उन की हिदायत पर चल। कह दो कुरान पर तुमसे कुछ मजदूरी नहीं मांगता यह कुरान तो दुनियाँ जहान के लोगों के लिये उपदेश है। (९०) [रुकू १०]

उन्होंने जैसी इज्जत अल्लाह की जाननी चाहिये थी वैसी उसकी इज्जत न जानी कहने लगे कि खुदा ने किसी आदमी पर कोई चीज नहीं उतारी। पूछो कि वह किताब किसने उतारी जिसे मूसा लेकर आये लोगों के लिये रोशनी है और उपदेश है तुमने उसके अलाहिदा-अलाहिदा सफे बनाकर जाहिर किया और बहुतेरे बरक तुम्हारे मतलब के खिलाफ हैं उनको लोगों से छिपाते हो और उसी किताब के जरिये से तुमको वे बातें बताई गई हैं जिसको न तुम जानते थे और न तुम्हारे

---

† जैसे मदीने के रहने वाले जो अनसार कहलाते हैं।

पाप दावे। कहो कि यह किताब अल्लाह ने उतारी थी फिर इनको छोड़दे कि अपनी फिक्रों में खेला करें। (६१) और यह किताब आसमानी है जिसको हमने उतारा है बरकतवाली है और जो किताबें इससे पहिले की हैं उनकी तसदीक करती हैं और ऐ पैग़म्बर हमने इसको इस वजह से उतारा है कि तुम मक्का वालों को और जो लोग उसके आस-पास रहते हैं उनको डराओ और जो लोग कयामत का यकीन रखते हैं वह तो इस पर ईमान ले आते हैं और वह अपनी नमाज़ की ख़बर रखते हैं। (६२) उससे बढ़कर और जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ इफ्तरा बाँधे या दावा करे कि मुझ पर ख़ुदा का पैग़ाम आया है हालांकि उसकी तरफ कुछ भी ख़ुदा का सन्देशा न आया हो और जो कहे कि जैसे अल्लाह उतारता है वैसे ही मैं भी उतार सकता हूँ चुनांचे ज़ालिम जब मौत की बेहोशियों में पड़े होंगे और फरिश्ते हाथ फैला के कहेंगे अपनी जानें निकालो अब तुमको ज़िल्लत के बन्द की सज़ा दी जायेगी इसलिये कि तुम ख़ुदा पर व्यर्थ झूठ बोलते और उसकी आयतों से अकड़ा करते थे। (६३) और पहलीबार जैसा हमने तुमको पैदा किया था वैसे ही अकेले तुम हमारे पास एक एक करके आओगे और जो कुछ हमने तुमको दिया था अपनी पीठ पीछे छोड़ आये और तुम्हारी सिफारिश करने वालों को हम तुम्हारे साथ नहीं देखते जिनको तुम समझते थे कि वह तुममें शामिल हैं अब तुम्हारे आपस के मेल टूट गये और जो दावे तुम किया करते थे तुमसे गये गुज़रे होगये। (६४) [रुकू ११]

वह दाने और गुठली का फाड़ने वाला है और मुर्दा से जिन्दा और जिन्दा से मुर्दा निकालता है यही तुम्हारा ख़ुदा है फिर तुम कहाँ भटके चले आ रहे हो। (६५) उसी के किये से प्रातःकाल पौ फटती है और उसी ने आराम के लिए रात और हिसाब के लिए सूरज और चन्द्रमा बनाये हैं यह उसी की अक्ल के करतब हैं। (६६) वही है जिसने तुम लोगों के लिए तारे बनाये ताकि जंगल और नदी के अन्धेरों में

उनसे हिदायत पाओ जो लोग समझदार हैं उनके लिए हमने निशानियाँ खूब तफसीलवार बयान कर दी हैं। (६७) और वही है जिसने तुम सबको एक शरीर से पैदा किया फिर कहीं तुमको ठहराव है और कहीं सुपुर्द रहना (पिता की कमर और माता का पेट) जो लोग समझते हैं उनके लिए हम निशानियाँ स्पष्ट बयान कर चुके हैं। (६८) और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर उससे हर किस्म के अकुर (कोया) निकाले फिर कोयों से हमने हरी हरी टहनियाँ निकाल खड़ी कीं कि उनमें हम गुथे हुये दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे में से जो गुच्छे झुके पड़ते हैं और अंगूर के बाग और जैतून अनार सूरत में मिलते-जुलते और (स्वाद में) मिलते-जुलते नहीं (इनमें से हर चीज) जब पकती है तो उसका फल और फल का पकना देखो। निस्सन्देह जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिए इनमें निशानियाँ हैं। (६६) और मुशरिकों ने जिन्नों को खुदा का शरीक बना खड़ा किया हालांकि खुदा ही ने जिन्नों को पैदा किया और बेजाने बूझे खुदा से बेटियों का होना ठहराते हैं (खुदा की बाबत) जैसी-जैसी बातें यह लोग बयान करते हैं वह पाक है और इन बातों से बहुत दूर है। (१००) [रुकू १२]

वह आसमान और जमीन का बनाने वाला है और उसकी संतान क्यों होने लगी उसके कोई स्त्री नहीं और उसी ने हर चीज को पैदा किया है और वही हर चीज से जानकार है। (१०१) यही अल्लाह तुम्हारा परवर्दिगार है उसके सिवाय और कोई दुआ के काबिल नहीं और वही सब चीजों का पैदा करने वाला है सो उसी की दुआ करो और वही हर चीज का हिफाजत करनेवाला है। (१०२) आखें उसको पकड़ा नहीं सकतीं और वह आँखों को खूब जानता है और वह बड़ा बारीक देखने वाला खबरदार है। (१०३) लोगों तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से सूझ की बातें तुम्हारे पास आही चुकी हैं फिर जिसने देखा अपना भला किया और जो अन्धा रहा अपने लिए बुराई की मैं तुम लोगों का रक्षक नहीं हूँ। (१०४) इसी तरह हम आयतों को बयान

करते हैं ताकि उनको कहना पड़े कि तुमने पढ़ा है और जो लोग समझ रखते हैं हम उनको क़ुरान अच्छी तरह समझा दें। (१०५) ऐ पैग़म्बर ! क़ुरान) जो तुम्हारे परवर्दिगार के यहाँ से पैग़ाम भेजा गया है उसी पर चले जाओ ख़ुदा के सिवाय कोई पूजित नहीं और मुशरकीन से अलग रहो। (१०६) अगर ख़ुदा चाहता तो ये शरीक न ठहराते और हमने तुमको इन पर निगहबान नहीं किया और न तुम इन पर वकील हो। (१०७) और ये लोग ख़ुदा के सिवाय जिनको पुकारते हैं उनको बुरा§ न कहो कि यह लोग मूर्खता के कारण व्यर्थ ख़ुदा को बुरा कह बैठें इसी तरह हमने हर जमात के काम उनको अच्छे कर दिखलाये† हैं फिर इनको परवर्दिगार की तरफ़ लौटकर जाना है तो जैसे-जैसे काम कर रहे थे उनको (ख़ुदा) बतायेगा। (१०८) और (मक्के वाले) अल्लाह की सख़्त क़सम खाकर कहते हैं कि अगर कोई निशानी उनके सामने आये तो यह ज़रूर ईमान ले आयेंगे तुम समझा दो कि निशानियाँ तो अल्लाह के ही पास हैं और तुम लोग क्या जानो यह लोग तो निशानी आने पर भी ईमान नहीं लायेंगे। (१०९) और हम उनके दिलों और उनकी आँखों को उलट देंगे जैसे क़ुरान पर पहिली मर्तबा ईमान नहीं लाये थे और हम इनको छोड़ देंगे कि पड़े भटका करें। (११०) (रुकू १३)

आठवाँ पारा (वलौ अन्नना)

और अगर हम इन पर फ़रिश्तों को भी उतारें ख़ुद भी इनसे बातें करें और हर चीज़ उनके सामने जिला कर खड़ी कर दें तब भी यह सब

§ कुछ मुसलमान बुतों को काफ़िरों के सामने गाली देने लगे थे। ऐसा करने से उन्हें रोका गया है ताकि काफ़िर उलटकर ख़ुदा को बुरा न कहने लगें।

† हर एक अपनी बातों को अच्छा समझता है।

हरगिज ईमान न लावेंगे लेकिन इनमें के अक्सर नहीं समझते। (१११) इस तरह हमने हर पैग़म्बर के लिए आदमी और जिन्नों में से शैतान पैदा किये और जो एक दूसरे को मुलम्मा जैसी झूठी बात धोखा देने को सिखाते हैं सो (उनको) छोड़ दे और उनके झूठ को (११२) ताकि जो लोग कयामत का ईमाननहीं रखते उनके दिल उनकी बातों की तरफ ध्यान दें और यह लोग उनकी बातों से रजामन्द हों और जो बुरे काम यह करते हैं उसकी सजा पायें। (११३) क्या मैं खुदा के सिवाय कोई और पंच तलाश करूँ हालांकि वह है जिसने तुम लोगों की तरफ किताब भेजी जिसमें तफसील है और यह लोग जिनको हमने किताब दी है इस बात को जानते हैं कि कुरान हकीकत में परवर्दिगार की तरफ से उतरी है सो तू शक करने वालों में न हो जाना। (११४) और तेरे परवर्दिगार की बात सची और इंसाफ की है। कोई उसकी बात को बदल नहीं सकता और वह सुनता और सब कुछ जानता है। (११५) और बहुतेरे लोग दुनियाँ में ऐसे हैं कि अगर उनके कहे पर चलो तो तुमको खुदा के रास्ते से भटका दें यह तो सिर्फ अपने अटकल पर चलते और निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (११६) जो लोग खुदा के रास्ते से भटके हुए हैं उन्हें तो परवर्दिगार खूब जानता है और जो सीधी राह पर हैं उनको (भी) खूब जानता है। (११७) पस अगर तुम लोगों को उसके हुक्मों का विश्वास है तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उस चीज को खाओ। (११८) क्या सबब है कि तुम उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो हालांकि जो चीजें खुदा ने तुम पर हराम कर दी हैं वह पूरी तरह तुमसे बयान कर दी हैं। वह चीज कि हराम तो है मगर भूख वगैरह की वजह से तुम उस पर मजबूर हो जाओ (तो वह भी हराम नहीं) और बहुत लोग तो बिना समझे अपनी इच्छाओं के अनुसार बहकाते हैं जो लोग हद से बाहर हो जाते हैं तुम्हारा परवर्दिगार उनको खूब जानता है। (११९) जाहिरा और छिपे हुए गुनाह से अलग रहो जो लोग गुनाह करते हैं उनको अपने काम का

फल मिलेगा। (१२०) जिस पर ख़ुदा का नाम न लिया गया हो उसमें से मत खाओ और उसमें से खाना पाप है और शैतान अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं कि तुमसे झगड़ा करें और अगर तुमने उनका कहा मान लिया तो तुम मुशरिक हो जाओगे। (१२१) (रुकू १४)

एक शख़्स जो मुर्दा था हमने उसमें जान डाली§ और उसको रोशनी दी वह लोगों में उसको लिये फिरता है क्या वह उस शख़्स जैसा हो जायगा जो अँधेरे में है। वहाँ से निकल नहीं सकता। इसी तरह काफ़िरों को जो कुछ भी कर रहे हैं भला दिखाई देता है। (१२२) और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े अपराधी पैदा किये ताकि वहाँ फसाद करते रहें। और जो फसाद वह करते हैं अपने ही जानों के लिए करते हैं और नहीं समझते। (१२३) और जब उनके (मक्का वालों के) पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि जैसी ख़ुदा के पैग़म्बरों को दी गई है जब तक हमको न दी जाये हम तो ईमान लाने वाले नहीं हैं। ख़ुदा जिस पर अपना पैग़ाम भेजता है ख़ूब जानता है जो लोग गुनहगार हैं उनको ज़िल्लत होगी और धोखा देने वालों को सख़्त सज़ा होगी। (१२४) जिसको ख़ुदा सीधी राह दिखाना चाहता है उसके दिल को इस्लाम के लिए खोल देता है और जिस शख़्स को भटकाना चाहता है उसके दिल को तंगकर देता है गोया ज़ोर से आसमान पर ईमान से भागने के लिए चढ़ता है जो लोग ईमान नहीं लाते उनपर उसी तरह अल्लाह की फटकार पड़ती है। (१२५) और यह तुम्हारे परवर्दिगार की सीधी राह है। जो लोग ग़ौर करते हैं उनके लिए हमने आयतें तफ़्सील के साथ बयान की हैं। (१२६) उनके लिए तेरे पालनकर्ता के यहाँ अमन का घर है और जो अमल करते हैं उसके बदले में वही उनकी ख़बर लेने वाला होगा। (१२७) और जिस दिन ख़ुदा सबको जमा करेगा कहेगा ऐ जिन्नों के गिरोह! आदम के बेटों में से तो तुमने अच्छी बड़ी जमात अपनी तरफ़ कर ली और

---

§ अर्थात् ज्ञान दिया।

आदम की औलाद में से जो शैतानों के दोस्त हैं कहेंगे कि हे हमारे पालनकर्त्ता हम एक दूसरे से फायदा उठाते रहे हैं और जो वक्त हमारे लिए मुकर्रर किया था हम उस तक पहुँच गये खुदा कहेगा कि तुम्हारा ठिकाना आग (दोजख) है उसी में हमेशा रहोगे आगे खुदा की मर्जी। बेशक तुम्हारा परवर्दिगार हिक्मत वाला और जान कार है। (१२८) और इसी तरह हम कुछ जालिमों को किन्हीं के ऊपर मुकर्रर कर देंगे। यह उनकी कमाई का फल है। (१२६) [रुकू १५]

फिर हम जिन्नों और आदम के बेटे दोनों से मुखातिब होकर पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में के पैगम्बर नहीं आये कि तुमसे हमारी हुक्म बयान करें और उस रोज (कयामत) के आने से तुमको डरायें वह कहेंगे हम अपने ऊपर आप ही गवाही देते हैं और दुनियाँ की जिन्दगी ने उनको धोखे में रक्खा और उन्होंने आपही अपने ऊपर गवाही दी कि बेशक वे काफिर थे। (१३०) यह सब इस सबब से है कि तुम्हारा परवर्दिगार बस्तियों को जुल्म से हलाक करने वाला नहीं और यहाँ के रहनेवाले बेखबर हों। (१३१) और जैसे जैसे कर्म किये हैं उन्हीं के बमूजिब सबके दर्जे होंगे और जो कुछ कर रहे हैं तुम्हारा परवर्दिगार उससे बेखबर नहीं। (१३२) और तेरा परवर्दिगार बे परवाह और रहम वाला है चाहे तुमको ले जाय और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हारी जगह पर कायम करे जैसा दूसरे लोगों की औलाद में से तुमको पैदा कर दिया। (१३३) जो तुमको वचन दिया। (यानी सजा) सो आने वाला है। और तुम रोक नहीं सकते। (१३४) कहो कि भाइयों तुम अपनी जगह काम करो मैं (अपनी जगह) काम करता हूँ फिर आगे चलकर तुम को मालूम हो जायगा कि आखीर में किसका काम अच्छा है जालिमों का भला न होगा। (१३५) खुदा की पैदा की हुई खेती और चौपायों में अल्लाह का भी एक हिस्सा ठहराते हैं तो अपने खयालों के मुताबिक कहते हैं कि इतना तो खुदा का और इतना हमारे शरीकों का (यानी उन पूज्यों

का जिनको ख़ुदा का शरीक मान रक्खा है) फिर जो (हिस्सा) इनके (माने हुए) शरीकों का होता है वह अल्लाह की तरफ़ नहीं पहुँचता और जो अल्लाह का है वह हमारे शरीकों को पहुँच जाता है क्या बुरा इन्साफ़ करते हैं‡ । (१३६) इसी तरह अक्सर मुशरिकों की निगाह में उनके शरीकों ने औलाद (यानी लड़कियों) को मार डालना पसंद किया और उनके दीन में सन्देह डाल दिया और ख़ुदा चाहता तो यह लोग ऐसा काम न करते सो (उनको) छोड़ दो ये जाने और उनका झूठ जाने । (१३७) और कहते हैं कि चौपाये और खेती हराम है कि उनको उस शख़्स के सिवाय जिसको हम अपने ख़्याल के मुवाफ़िक चाहें नहीं खा सकते और कुछ चौपाये ऐसे हैं कि उनकी पीठ पर सवार होना व लादना मना है और कुछ चौपाये ऐसे हैं जिनको ज़िबह (काटने) के वक़्त उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते ख़ुदा पर झूठ †बाँधते हैं (कि उसने ऐसा कहा है) वह इनको कभी सज़ा देगा । (१३८) (ये लोग) कहते हैं कि इन चौपायों के पेट से जो बच्चा जीता निकले वह हमारे मर्दों के लिए हलाल और हमारी औरतों पर हराम है और अगर मरा हुआ हो तो मर्द और औरत उसमें शरीक हैं ख़ुदा इनको इन बातों की सज़ा देगा वह हिकमत वाला ख़बरदार है । (१३९) बेशक वह लोग घाटे में हैं जिन्होंने बेवक़ूफ़ी और जिहालत से अपने बच्चों को मार डाला और अल्लाह ने जो रोज़ी उनको दी थी ख़ुदा पर झूँठ बाँध कर उसको हराम कर लिया—यह लोग भटक गये और राह पर नहीं आये । (१४०) [रुकू १६]

---

‡ अरब के मुशरिक खेत के बीच में एक लकीर खींच देते थे । आधा ख़ुदा के नाम का और आधा बुतों के नाम का अगर बुतों के नाम का खेत बुरा होता तो उसको ख़ुदा के नाम वाले खेत से बदल लेते । ख़ुदा के नाम के खेत में से ग़रीबों को देते और बुतों के खेत में से महन्तों को ।

† कुछ जानवरों और अनाज के बारे में अपने मन से बातें बनाते थे और कहते थे ये बातें ख़ुदा ने बताई हैं ।

वही है जिसने बाग पैदा किये और खजूर के दरख्त और खेती जिनके कई तरह के फल होते हैं और जैतून और अनार एक दूसरे से मिलते-जुलते और नहीं भी मिलते-जुलते हैं यह सब चीजें जब फलें इनके फल खाओ और उनके काटने के दिन हक अल्लाह का (यानी जकात) दे दिया करो और फजूलखर्ची मत करो क्योंकि फजूलखर्ची करनेवालों को खुदा पसंद नहीं करता। (१४१) चारपायों में बोझ उठाने वाले (पैदा किये जैसे ऊंट) और (कोई) जमीन से लगे हुए (जो नहीं लादे जाते जैसे-भेड़ बकरी) और खुदा ने जो तुमको रोजी दी है उस में से खाओ और शैतान के पिछलगा न हो क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१४२) आठ नर और मादा (यानी चार जोड़े) पैदा किये हैं भेड़ों में से दो, और बकरियों में से दो ऐ पैगम्बर पूँछो कि खुदा ने दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को या जो इन दो मादों के बच्चों (पेटों) में हैं अगर तुम सच्चे हो तो मुझको सनद बतलाओ। (१४३) और ऊँटों से दो और गाय से दो‡ (ऐ पैगम्बर) पूँछो दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को या|बचा जो मादीनों के पेट में है तुमको इन चीजों के हराम कर देने का |हुक्म दिया था उस वक्त तुम (क्या) मौजूद थे ? तो उस शख्स से बढ़कर जालिम कौन होगा जो लोगों को रास्ते से भटकाने के लिए बे समझे बूझे खुदा पर झूँठ बाँधे। खुदा जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। (१४४) [रुकू १७]

कहो कि कोई खानेवाला कुछ खाय मेरी तरफ जो खुदा का पैगाम आया है उसमें तो मैं कोई चीज हराम नहीं पाता मगर यह कि वह चीज मुर्दार हो या बहता हुआ खून या सुअर का माँस यह चीजें नापाक हैं या उदूल हुक्मी का सबब हो या खुदा के सिवाय किसी दूसरे के नाम पर जिबह हो उस पर भी जो शख्स लाचार हो तो तेरा परवर्दिगार माँफ करनेवाला मेहर्बान है। (१४५) यहूदियों पर हमने तमाम नाखून वाले जानवरों को हराम किया और हमने गाय और

‡ यानी जिन चीजों को मुशरिक हराम बताते हैं वह हराम नहीं।

बकरियों में से चर्बी हराम की थी यह (चर्बी) जो उनकी पीठ पर लगी हो या अंतड़ियों पर या हड्डी से मिली हो। यह हमने उनको उनकी नटखटी की सजा दी थी और हम सच्चे हैं। (१४६) इस पर भी यह लोग तुमको झुठलावें तो कहो कि तुम्हारा परवर्दिगार बड़ा रहीम है और अपराधी से उसकी सजा नहीं टलती। (१४७) मुशरिक कहेंगे कि अगर ख़ुदा चाहता तो हम और हमारे बाप दादे मुशरिक न होते और न हम किसी चीज को हराम करते। इसी तरह उनके अगलों ने झुठलाया है यहाँ तक कि हमारी सजा का मजा चक्खा पूछो कि आया तुम्हारे पास कोई सनद भी है कि उसको हमारे लिए निकालो, निरे भ्रम पर चलते और निरी अटकलें ही दौड़ाते हो। (१४८) कहो अल्लाह की हुज्जत पूरी हुई फिर अगर वह चाहता तो तुम सबको रास्ता दिखला देता। (१४९) कहो कि अपने गवाहों को हाजिर करो जो इस बात की गवाही दें कि अल्लाह ने (यह चीज) इनको हराम की है पस अगर गवाही भी दें तो तुम उनके साथ उन जैसी न कहना और न उन लोगों की दिली ख्वाहिशों पर चलना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो क़यामत का यक़ीन नहीं रखते और वह (दूसरे को) परवर्दिगार के बराबर समझते हैं। (१५०) (रुकू १८)

कहो कि आओ मैं तुमको वह चीजें पढ़कर सुनाऊं जो तुम्हारे परवर्दिगार ने तुम पर हराम की हैं यह कि किसी चीज का ख़ुदा का शरीक मत ठहराओ और माता पिता के साथ नेकी करते रहो और गरीबी के डर से अपने बच्चों को मार न डालो हम तुमको रोज़ी देते हैं। और उनको (भी) और बेशर्मी की बातें जो जाहिर हों और छिपी हुई हों उनमें से किसी के पास भी मत फटकना और जिस जान को अल्लाह ने हराम कर दिया है उसे मार न डालना। मगर हक़ पर, यह वह बातें हैं जिनका हुक्म ख़ुदा ने तुमको दिया है ताकि तुम समझो (१५१) अनाथ के माल के पास मत जाना। सिवाय इसके कि उसकी भलाई हो और जब तक कि वह बालिग न हो जायें। और न्याय के साथ पूरी-पूरी नाप या तौल करो। हम किसी शख्स पर उसकी ताक़त

से बढ़कर बोझ नहीं डालते और जब कुछ कहो तो रिश्तेदार ही क्यों न हो न्याय की कहो और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो यह यह बातें हैं जिनको तुमको खुदा ने हुक्म दिया है शायद तुम ध्यान दो। (१५२) यही हमारा सीधा रास्ता है सो इसी पर चले जाओ और (दूसरे) रास्तों पर न पड़ना यह तुमको खुदा के रास्ते से तितर बितर करेंगे, यह (बातें) हैं जिनका खुदा ने तुमको हुक्म दिया है शायद तुम बचते रहो। (१५३) फिर हमने मूसा को किताब दी जिससे भलाई करनेवालों पर हमारी नियामत पूरी हुई और उसमें कुल बातों की आज्ञाओं का बयान मौजूद है और उपदेश और दया है (और यह किताब मूसा को इसलिए दी गई) शायद वह अपने पालनकर्त्ता से मिलने का विश्वास लायें। (१५४) [रुकू १६]

यह किताब हमने ही उतारी है बरकतवाली है सो इसी पर चलो और डरते रहो शायद तुम पर रहम किया जाय। (१५५) (और ऐ गुमराहकीन अरब! हमने यह इसलिए उतारी) कि कहीं यह न कह बैठो कि हमसे पहले बस दो ही गिरोहों पर किताब उतरी थी और हमतो उसके पढ़ने-पढ़ाने से बिलकुल बेखबर थे। (१५६) या यह उज्र करने लगो कि अगर हम पर यह किताब उतरी होती तो हम जरूर इनको पढ़कर सधी राह पर होते। सो अब तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ से तुम्हारे पास दलील और उपदेश और दया आ गई है तो उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे अलाहिदगी अख्तियार करे और जो लोग हमारी आयतों से अलाहिदगी अख्तियार करते हैं हम जल्द उनकी अलाहिदगी के बदले उनको बड़ी दु:खदाई सजा देंगे। (१५७) यह लोग इसी बात की राह देख रहे हैं कि फरिश्ते इनके पास आयें या तुम्हारा पालन कर्त्ता इनके पास आये या तुम्हारे परवर्दिगार का कोई चमत्कार जाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे परवर्दिगार का कोई चमत्कार जाहिर होगा तो जो शख्स उससे पहिले ईमान नहीं लाया या अपने ईमान में उसने कुछ भलाई न की थी अब उसका ईमान लाना उसको कुछ भी

लाभकारी न होगा तो कहो कि राह देखो हम भी राह देखते हैं। (१५८) जिन लोगों ने अपने दीन में भेद डाला और कई फ़िर्के बन गये तुमको उनसे कोई काम नहीं उनका मामला खुदा के हवाले है। फिर जो कुछ किया करते थे उनको बतायेगा। (१५६) जिसने नेकी की तो उसका दशगुना उसको मिलेगा और जिसने बदी की तो वह उसके बराबर सजा भुगतेगा और उनपर जुल्म नहीं होगा। (१६०) कहो मुझको तो मेरे परवर्दिगार ने सीधी राह बता दी है कि वही इब्राहीम का ठीक दीन है कि वह एक ही के हो रहे थे और मुशिरकों में से न थे। (१६१) कहो कि मेरी नमाज और मेरी पूजा और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सब संसार का परवर्दिगार है। (१६२) कोई उसका शरीक नहीं और मुझको ऐसे ही हुक्म मिला है और मैं उसके फर्माबरदारों में पहला हूँ। (१६३) पूछो कि क्या मैं खुदा के सिवाय कोई और परवर्दिगार तलाश करूं वह तमाम चीजों का परवर्दिगार है और हर शख्स अपने कर्म का जिम्मेदार है और कोई शख्स किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा फिर तुमको अपने पालनकर्ता की तरफ़ जाना है तो जिस बात में झगड़ते थे वह तुमको बतलायेगा। (१६४) और वही है जिसने जमीन में तुमको नायब बनाया है और तुम में से किसी के दर्जे किसी से ऊँचे किये ताकि जो पदार्थ तुमको दिये हैं उनमें तुम्हारी जाँच करे। तुम्हारा परवर्दिगार जल्द सजा देनेवाला है और वह बख्शनेवाला मिहर्बान है। (१६५) [रुकू २०]।

(—)

सूरे—आराफ़।

यह सूरत मक्के में उतरी इसमें २०६ आयतें और २४ रुकू हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है। अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद। (१) यह किताब तेरी तरफ़ इसलिये

उतरी कि तेरा दिल तंग न हो (कोई शक न रहे) ताकि तू इसके जरिये से डरावे और ईमानवालों को शिक्षा मिले। (२) जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से तुम पर उतरा है इसी पर चले आओ और खुदा के सिवाय और राह बतानेवाले के पीछे मत चलो तुम कम ध्यान देते हो। (३) और कितनी बस्तियाँ हमने तबाह कीं और रात के वक्त या दोपहर दिन को सोते वक्त हमारी सजा उनपर पहुँची। (४) जब हमारी सजा उन पर उतरी तो और कुछ न बोल सके यही कहा कि हम पापी थे। (५) तो जिन लोगों की तरफ पैग़म्बर भेजे गये थे हम उनसे जरूर पूछेंगे और पैगम्बरों से भी पूछेंगे। (६) फिर हम अपने इल्म से उनको सब हाल सुना देंगे और हम कहीं छिपे न थे। (७) और तौल उस दिन ठीक होगी। तो जिनकी तौल भारी हो सो वही लोग मुराद पावेंगे। (८) जिनके कामों का बोझ हल्का ठहरेगा उन्होंने अपनी जानें जोखिम में डालीं कि हमारी आयतों पर जुल्म करते थे। (९) हमने तुमको जमीन में स्थान दिया और उसी में तुम्हारे लिए जिन्दगी के सामान इकट्ठे किये तुम बहुत कम अहसान मानते हो। (१०) [रुकू १]

हमने ही तुमको पैदा किया और फिर तुम्हारी सूरत बनाई और फिर हमने फरिश्तों को आज्ञा दी कि आदम के आगे तो झुक गये मगर वह इबलीस† झुकनेवालों में न हुआ। (११) पूछो कि तुमको किस चीज ने माथा नवाने से रोका—बोला मैं आदम से अच्छा हूँ मुझको तूने आग से पैदा किया और उसको मिट्टी से पैदा किया। (१२) बोला तू यहाँ से उतर जा क्योंकि तुझे मुनासिब नहीं है कि घमण्ड करे सो निकल तू नीचों में है। (१३) वह बोला कि जिस दिन लोग उठा खड़े किये जायेंगे उस दिन तक की मुझे मुहलत दे। (१४) कहा तुमको मुहलत दी गई। (१५) इस पर (शैतान) बोला जैसी तूने मेरी राह मारी है मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर आदमियों की घात में जा बैठूँगा। (१६) फिर उन पर आगे से और पीछे

---

† इबलीस = उसे कहते हैं जिसका जुल्म उसी पर हो जाये न बढ़े।

और नाहक़ की ज़्यादती और इस बात को कि तुम किसी को ख़ुदा का शरीक क़रार दो जिसको उसने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि ख़ुदा पर तोहमत लगाने लगो जो तुम्हें मालूम नहीं। (३३) हर क़ौम की एक मियाद है फिर जब उनकी मौत आवेगी तो न एक घड़ी घटेगी और न एक घड़ी बढ़ेगी। (३४) ऐ आदम के बेटों ! जब कभी तुम्हीं में से पैग़म्बर तुम्हारे पास पहुँचे और हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनावें तो जो कोई डरेगा और (अपनी हालत का) सुधार करेगा तो उस पर न तो डर उतरेगा और न वह उदास होंगे। (३५) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलायेंगे और उनसे अकड़ बैठेंगे वही दोज़ख़ी होंगे कि हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। (३६) उनसे बढ़कर कौन ज़ालिम होगा जो ख़ुदा पर झूठे जंजाल बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाये यही लोग हैं जिनको (तक़दीर के) लिखे हुए में से उनका भाग उनको पहुँचेगा यहाँ तक कि जब हमारे फ़रिश्ते उनकी रूहें निकालने के लिए मौजूद होंगे तो पूछेंगे कि अब वह कहाँ हैं जिनको तुम ख़ुदा के अलावा बुलाया करते थे तो वह कहेंगे कि वह तो हमसे छिप गये और अपने ऊपर आप गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे। (३७) फ़र्माया कि जिन्न और इन्सान के गरोहों में जो तुमसे पहिले हो चुके हैं मिलकर आग (दोज़ख़) में जा दाख़िल हों। अब एक गिरोह तरफ़ में जायगा तो अपने साथियों पर लानत करेगा यहाँ तक कि जब सबके सब नरक में जमा होंगे तो उनमें से पिछला गिरोह अपने से पहिले गिरोह के हक़ में बुरी दुआ करेगा कि ऐ हमारे परवर्दिगार ! इन्हीं लोगों ने हमको भटका दिया तू इनको दोज़ख़ की दूनी सज़ा दे। कहेगा कि हरएक को दूनी सज़ा मगर तुमको मालूम नहीं। (३८) और उनमें के पहिले लोग पिछले लोगों से कहेंगे अब तो तुमको हम पर किसी तरह ज़्यादती नहीं रही तो अपने किये की सज़ा भुगतो। (३९) [रुकू ४]

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़ बैठे न तो उनके लिये आसमान के दरवाज़े खोले जायँगे और

न जन्नत में दाखिल होने पायेंगे जब तक ऊँट सुई के नाके में से न निकले (अर्थात् कभी नहीं) और अपराधियों को हम ऐसी ही सजा दिया करते हैं। (४०) कि उनके लिये आग (दोज़ख़) का बिछौना होगा और उनके ऊपर से (आग का ही) ओढ़ना और सरकश लोगों को हम ऐसी ही सजा दिया करते हैं। (४१) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये हम तो किसी शख्स पर उसकी सामर्थ्य से ज्यादा नहीं बोझ डाला करते। यही लोग जन्नतवासी होंगे कि वह उसमें हमेशा रहेंगे। (४२) और जो कुछ उनके दिलों में कीना होगा हम निकाल देंगे† उनके तले नहरें बह रही होंगी और बोल उठेंगे कि खुदा का शुक्र है जिसने हमको इसका रास्ता दिखलाया और अगर खुदा हमको उपदेश न करता तो हम रास्ता न पाते। बेशक हमारे परवर्दिगार के पैग़म्बर सचाई लेकर आये थे और इन लोगों से पुकारकर कह दिया जायेगा कि यही जन्नत है जिसके वारिस तुम अपने कामों की बदौलत बना दिये गये हो। (४३) जन्नत के रहनेवाले लोग दोज़ख़ी को पुकारेंगे कि हमारे परवर्दिगार ने जो हमसे अहद किया था हमने तो सचा पाया तो क्या जो तुम्हारे परवर्दिगार ने वादा किया था तुमने भी सचा पाया। वह कहेंगे हाँ इतने में पुकारनेवाला उनमें पुकार उठेगा कि जालिमों पर खुदा की लानत। (४४) जो खुदा के रास्ते से रोकते और उसमें नुक्स ढूँढते और क़यामत से इन्कार रखते थे। (४५) जन्नत और दोज़ख़ के बीच में एक आड़ होगी यानी आराफ़ उसके सिरे पर कुछ लोग हैं जो हरएक को उनकी शक्लों से पहचानते हैं वैकुण्ठ वासियों को पुकार कर सलामालेक करेंगे। (आराफ़ वाले खुद) वैकुण्ठ में नहीं गये मगर वह आशा कर रहे हैं। (४६) और जब उनकी नज़र नरकवासियों की तरफ जा पड़ी तो (उनकी खराबियाँ देखकर खुदा से) दुआ मांगने लगेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार ! हमको गुनहगार लोगों के साथ न कर। (४७) [रुकू ५]

---

† मरने के बाद जब वह जन्नत में जायेंगे तो भारी हृदय के साथ न जायेंगे। वहाँ के सुखों से उनका शोक और क्षोभ सब मिट जायगा।

आराफ़ वाले कुछ (दोज़ख़ी) लोगों को जिन्हें उनकी सूरतों से पहिचानते होंगे पुकार कर कहेंगे कि तुम्हारा माल फ़ालमा करना और घमण्ड करना क्या काम आया। (४८) क्या यही लोग हैं जिनकी बाबत तुम क़समें खाकर कहा करते थे कि अल्लाह इन पर अपना रहम नहीं करेगा। बैकुण्ठ में चले आओ तुम पर न डर होगा और न तुम उदास होगे। (४९) और दोज़ख़ी पुकार कर जन्नत वालों से कहेंगे कि हम पर थोड़ा सा पानी डाल दो या तुमको जो ख़ुदा ने रोज़ी दी है उसमें से कुछ हमको दे डालो। वह कहेंगे कि ख़ुदा ने यह दोनों चीज़ें काफ़िरों पर हराम कर दी हैं। (५०) कि जिन्होंने अपने दीन को हँसी और खेल बना रक्खा और दुनियाँ की ज़िन्दगी इनको धोखे में डाले हुए थी तो आज हम इनको भुलावेंगे जैसे यह लोग अपना इस दिन के मिलना भूले और हमारी आयतों का इन्कार करते रहे। (५१) हमने इनको क़ुरान पहुँचा दिया समझ-बूझकर उसमें हर तरह की तफ़सील भी कर दी। ईमान वाले लोगों के हक़ में हिदायत और रहम है। (५२) क्या यह लोग (मक्के वाले) उसके वाक़े होने की† राह देखते हैं। जब वह दिन आयेगा तो जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे वह इक़रार कर लेंगे कि बेशक हमारे परवर्दिगार के पैग़म्बर सच बात लेकर आये थे तो क्या हमारे कोई सिफ़ारशी भी हैं कि हमारी सिफ़ारिश करे या हमको (दुनिया में) फिर लौटा दिया जाय तो जैसे कर्म हम किया करते थे उनके ख़िलाफ़ काम करें। बेशक इन लोगों ने आप अपना नुक़सान किया और जो झूठी बातें उड़ाया करते थे वह भूल गये। (५३) [रुकू ६]

तुम्हारा परवर्दिगार अल्लाह है जिसने छः दिन में ज़मीन और आसमान को पैदा किया फिर तख़्त पर आ विराजा—वही रात को दिन का पर्दा बनाता है। रात, दिन के पीछे चली आती है। और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारों को पैदा किया कि यह सब ख़ुदा के फ़र्मांबर्दार हैं। सुन रक्खो कि हर चीज़ ख़ुदा ही की पैदा की हुई है और ख़ुदा ही का हुक्म है जो संसार का पालनेवाला और बड़ी बाला है। (५४) अपने

† ईश्वर के कोप या प्रलय की राह देखते हैं।

परवर्दिगार से गिड़गिड़ाकर और चुपके दुआ करते रहो। वह हद से बढ़ने वालों को नहीं पसन्द करता। (५५) और देश के सुधरे पीछे उसमें फ़साद मत फैलाओ और डर से और आशा से ख़ुदा को पुकारो ख़ुदा की कृपा भले लोगों के क़रीब है। (५६) और वही है जो अपनी दया के आगे ख़ुश ख़बरी देने को हवायें भेजा करता है यहाँ तक कि वह पानी के भरे बादल उठा लाती है तो हम किसी मुर्दा§ बस्ती की तरफ़ उस बादल को हाँक देते हैं फिर बादल से पानी बरसाते हैं फिर पानी से हर तरह के फल निकालते हैं इसी तरह हम (क़यामत के दिन) मुर्दों को निकाल खड़ा करेंगे। शायद तुम ध्यान दो। (५७) जो भूमि अच्छी है उसमें ईश्वर की आज्ञा से उसकी पैदावार अच्छी होती है और जो (ज़मीन) ख़राब है उसकी पैदावार ख़राब ही होती है† इसी तरह हम दलीलें तरह तरह से उन लोगों के लिए बयान करते हैं जो सब को मानते हैं। (५८) [रुकू ७]

बेशक हमने ही नूह (पैग़म्बर) को इसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उन्होंने समझाया कि भाईयों अल्लाह की इबादत करो उसके सिवाय कोई तुम्हारी दुआ के क़ाबिल नहीं, मुझको तुमसे बड़े दिन की सज़ा का डर है। (५९) उसकी जाति के सरदारों ने कहा कि हमारे नज़दीक तो तुम ज़ाहिरा भटके हुए हो। (६०) (नूह ने) कहा भाइयों मैं बहका नहीं बल्कि मैं तो दुनियाँ के पालनेवाले का भेजा हुआ हूँ। (६१) तुमको अपने परवर्दिगार का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हें नसीहत देता हूँ और मैं अल्लाह से ऐसी बातें जानता हूँ जिनको तुम नहीं जानते। (६२) क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो कि तुममें ही से एक शख़्श की मार्फ़त तुम्हारे पालनकर्त्ता की आज्ञा तुमको पहुँची ताकि वह तुमको (ख़ुदा की सज़ा से) डराये और तुम बचो और शायद तुम पर रहम किया जाय। (६३) जिन्होंने उसे झुठलाया तो हमने नूह को और

§ ऐसी बस्ती जिसकी खेती सूख रही हो।

† मिट्टी अच्छी भी होती है और बुरी भी होती है कुछ बंजर होती है। जैसी भूमि होती है वैसी ही उपज होती है।

उन लोगों को जो उसके साथ थे किश्ती† में बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था (उनको) डुबो दिया। वह लोग (अपना भला बुरा न देख पाते थे) अन्धे थे। (६४) [रुकू ८]

आद (एक क़ौम का नाम था) की तरफ़ उनके भाई हूद (पैग़म्बर) को भेजा उन्होंने समझाया कि भाइयों अल्लाह की इबादत करो उसके अलावा तुम्हारा कोई पूजित नहीं क्या तुम नहीं डरते। (६५) उस जाति के सरदार जो इन्कारी थे कहने लगे कि हमको तू बेवक़ूफ़ मालूम होता है और हम तुमको झूठा समझते हैं। (६६) कहा भाइयों। मैं बेवक़ूफ़ नहीं बल्कि दुनिया के परवर्दिगार का भेजा हुआ हूँ। (६७) तुमको अपने परवर्दिगार का संदेशा पहुँचाता हूँ। और मैं तुम्हारा सच्चा ख़ैरख़्वाह हूँ। (६८) क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हीं में से एक शख़्स की मार्फ़त तुम्हारे परवर्दिगार का हुक्म तुमको पहुँचा ताकि तुमको डराये और याद करो जब उसने तुमको नूह की क़ौम के बाद सरदार बनाया और शरीर का फैलाव तुमको ज्यादा दिया। तो अल्लाह के पदार्थों को याद करो शायद तुम्हारा भला हो। (६९) उन लोगों ने पूछा क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम सिर्फ़ एक ख़ुदा की पूजा करने लगें जिनको हमारे बड़े पूजते रहे (उनको) छोड़ बैठें। पस अगर सच्चे हो तो जिसका हमको डर दिखाते हो उसे ले आओ। (७०) हूद ने जवाब दिया कि तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम पर सज़ा और ग़ुस्सा पड़ा। क्या तुम मुझसे कई नामों में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बड़ों ने गढ़ रक्खे हैं। अल्लाह ने उनकी कोई सनद नहीं उतारी तो तुम सज़ा का इन्तिज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ। (७१) आख़िरकार हमने अपने रहम से हूद को और उन लोगों को जो उनके साथ थे बचा लिया और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते थे और न मानते थे उनकी जड़ें काट डालीं। (७२) [रुकू ९]

---

† नूह के समय में एक भयंकर बढ़िया आई थी। नूह को इसका समाचार पहले ही मिल गया था इसलिए उन्होंने एक किश्ती बना रखी थी। जो उसमें बैठे वे बचे, शेष डूब गये।

समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा (सालेह ने) कहा कि भाइयों ख़ुदा ही की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक दलील साफ़ आ चुकी कि यह ख़ुदा की (भेजी हुई) ऊँटनी† तुम्हारे लिए एक चमत्कार है तो इसे छुटी फिरने दो कि ख़ुदा की जमीन में (जे जहाँ चाहे) चरे और किसी तरह का नुक़सान पहुँचाने की नियत से इसको छूना भी नहीं वरना तुमको दुःखदाई सज़ा होगी। (७३) याद करो जब उसने तुमको आद (क़ौम) के बाद सरदार बनाया और तुमको ज़मीन पर इस तरह से बसाया कि तुम मैदान में महल खड़े करते और पहाड़ों को तराश कर घर बनाते हो। अल्लाह के एहसानों को याद करो और देश में फ़साद मत फैलाते फिरो। (७४) सालेह की क़ौम में जो लोग अभिमानी सरदार थे ग़रीब लोगों से जो उनमें से ईमान ले आये थे पूछने लगे क्या तुमको ख़ूब मालूम है कि सालेह ख़ुदा का पैग़म्बर है। उन्होंने जवाब दिया जो उनको हुक्म देकर हमारी तरफ़ भेजा गया है हमारा तो उस पर यक़ीन है। (७५) जिनको बड़ा घमण्ड था कहने लगे कि जिस चीज़ पर तुम ईमान ले आये हो हम तो उसे नहीं मानते। (७६) फिर उन्होंने ऊँटनी को काट डाला और अपने परवर्दिगार के हुक्म से सरकशी की और कहा कि ऐ सालेह जिसका तुम हमको डर दिखलाते थे अगर तुम पैग़म्बर हो तो हम पर लाकर उतारो। (७७) पस उनको भूकम्प ने घेर लिया और अपने घरों में बैठे के बैठे रह गये। (७८) सालेह उनसे यों कहता हुआ चला गया कि भाइयों मैं तो अपने परवर्दिगार का पैग़ाम तुमको पहुँचा चुका और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम नहीं चाहते भला चाहनेवालों को। (७९) हमने (ख़ुदा ने) लूत को भेजा और अपनी क़ौम से (उसने) कहा दुनियाँ जहान में तुमसे पहले किसी ने ऐसी

---

† हज़रत सालेह को उनकी जातिवालों ने झूठा समझा और कहा कि तुम सच्चे हो तो एक ऐसी ऊँटनी अभी इस पत्थर से निकालो। सालेह ने दुआ की तो वैसी ऊँटनी उन लोगों ने चाही थी वही पत्थर से निकल आई। आगे की आयतों में उसी का हाल है।

बेशर्मी नहीं की। (८०) क्या तुम स्त्रियों को छोड़कर सोहबत के लिए मर्दों पर दौड़ते हो बल्कि तुम हद पर नहीं रहते हो। (८१) लूत की जाति का जवाब यही था कि यह कहने लगे कि इन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो। यह ऐसे लोग हैं जो पाक साफ बनना चाहते हैं। (८२) पस हमने लूत को और उनके घरवालों को बचाया मगर उसकी बीबी रह गई वह पीछे रहनेवालों में थी। (८३) हमने इन पर पत्थरों का मेंह बरसाया तो देखना कि गुनहगारों का नतीजा कैसा हुआ। (८४) [रुकू १०]

मदाइनवालों की तरफ उनका भाई शोऐब (पैग़म्बर) भेजा गया उसने कहा हे भाइयों! अल्लाह की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं। तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से तुम्हारे पास दलील ज़ाहिर हो चुकी है तो नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें घटा (कम) न दो और दुरुस्ती के बाद ज़मीन में फसाद न करो यह तुम्हारे लिए भला है अगर तुम्हें यकीन हो। (८५) और हर राह पर डराने और रोकने को न बैठो और अल्लाह की राह में दोष मत ढूँढ़ो और याद करो कि तुम थोड़े थे फिर ख़ुदा ने तुम्हें बहुत किया और देखो कि फसाद करनेवालों का कैसा परिणाम हुआ। (८६) अगर तुममें से एक फरीक़ ने मेरी पैग़म्बरी को माना है और एक ने नहीं माना। चाहिए कि तुम सब्र करो जब तक अल्लाह हमारे बीच फैसला करे वह सबसे बढ़कर फैसला करने वाला है (८७)।

नवाँ पारा (क़ालल्मलउ)

शोऐब की कौम के घमण्डी सरदार बोले कि हे शोऐब या तो तुम हमारे दीन में लौट आओ नहीं तो हम तुमको और जो तेरे

साथ ईमान लाये हैं अपने शहर से निकाल देंगे। शोएब ने कहा क्या हम उस हालत में भी लौट आवें जबकि हम उसके खिलाफ हैं। (८८) जबकि खुदा ने तुम्हारे मजहब से हमें अलाहिदा कर दिया फिर भी अगर उसमें लौट आवें तो हमने खुदा पर झूठ बाँधा और हमारा काम नहीं कि उसमें आवें लेकिन अगर हमारा खुदा चाहे (तो हो सकता है) हमारा परवर्दिगार अपने इल्म से हर चीज को जानता है अल्लाह पर हमने भरोसा किया। ऐ खुदा ! हममें और हमारी जाति में तू ठीक इन्साफ कर क्योंकि तू सबसे अच्छा मुन्सिफ है। (८९) शोएब की जाति के सरदार जो इन्कारी थे बोले कि अगर शोएब की राह पर चलोगे तो तुम बरबाद होगे। (९०) फिर उन्हें भूचाल ने घेरा वे अपने घरों में बैठे के बैठे रह गये। (९१) जिन लोगों ने शोएब को झुठलाया गोया उन बस्तियों में कभी थे ही नहीं। जिन लोगों ने शोएब को झुठलाया गोया वही बरबाद हुए। (९२) शोएब उनसे हट गया और कहा ऐ क़ौम मैंने खुदा का सदेशा तुम्हें पहुँचाया और तुम्हारा भला चाहा फिर जिन लोगों ने न माना उन पर क्या अफसोस करूँ। (९३) [रुकू ११]

जिस बस्ती में हमने पैगम्बर भेजा वहाँ के रहनेवालों पर हमने सख्ती भी की और आफत भी डाली ताकि यह लोग गिड़गिड़ायें। (९४) फिर हमने बुराई की जगह भलाई को बदला यहाँ तक कि लोग खूब बढ़े और कहने लगे कि इस तरह की सख्तियाँ और आराम तो हमारे बड़ों को भी पहुँच चुका है तो हमने उनको अचानक धर पकड़ा जब वह बेखबर थे। (९५) और अगर बस्तियोंवाले ईमान लाते और परहेजगारी करते तो हम आसमान और जमीन की बढ़ती को उन पर खोल देते मगर उन लोगों ने झुठलाया तो उन कामों की सजा में जो वह करते थे हमने उनको पकड़ा। (९६) तो क्या बस्तियों के रहनेवाले इससे निडर हैं कि उनपर हमारी सजा रातोरात पड़े और वह सोये हुवे पड़े हों। (९७) या बस्तियों के रहनेवाले इससे निडर हैं कि हमारी सजा दिन दहाड़े उन पर पड़े जब कि वह खेल कूद रहे हों। (९८) तो क्या

अल्लाह के दाँव से निडर हो गये हैं सो अल्लाह के दाँव से तो वही लोग निडर होते हैं जो बरबाद होने वाले हैं। (९९) [रुकू १०]

जो लोग यहाँ के लोगों के जाने पीछे ज़मीन के मालिक होते हैं क्या इस बात की सूझ नहीं रखते कि अगर हम चाहें तो इनके गुनाहों के बदले इन पर आफ़त डालें और हम इनके दिलों पर मुहर कर दें तो यह लोग नहीं सुनते। (१००) (ऐ पैग़म्बर) यह चन्द बस्तियाँ हैं जिनके हालात हम तुमको सुनाते हैं और इनके पैग़म्बर इन लोगों के पास करामात भी लेकर आये मगर यह लोग ऐसी तबियत के न थे कि जिस चीज़ को पहिले झुठला चुके हों उस पर ईमान ले आवें। काफ़िरों के दिलों पर ख़ुदा इसी तरह मुहर लगा दिया करता है। (१०१) हमने तो इनमें से बहुतेरों को वचन का पक्का न पाया और हमने इनमें से बहुतों को बेहुक्म पाया। (१०२) फिर उनके बाद हमने मूसा को करामात देकर फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा तो इन लोगों ने ज़्यादती की। देखना कि फ़सादियों का कैसा अंजाम हुआ। (१०३) और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िरऔन मैं दुनियाँ के परवर्दिगार का भेजा हुआ हूँ। (१०४) कि सच के सिवाय ख़ुदा की बाबत दूसरी बात न कहूँ मैं तुम लोगों के पास तुम्हारे परवर्दिगार से करामात लेकर आया हूँ। तू इसराईल के बेटों को मेरे साथ कर दे। (१०५) बोला कि अगर तू कोई करामात लेकर आया है सच्चा है तो वह लाकर दिखा। (१०६) इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह ज़ाहिरा एक अजगर हो गई। (१०७) और अपना हाथ निकाला तो लोगों को सफ़ेद दिखलाई देने§ लगा। (१०८) [रुकू १३]

फ़िरऔन के लोगों में से जो दरबारी थे कहने लगे कि यह तो बड़ा होशियार जादूगर है। (१०९) चाहता है कि तुमको तुम्हारे देश से निकाल बाहर करे तो क्या राय देते हो। (११०) सबने मिलकर कहा

---

§ मूसा को दो चमत्कार मिले थे। (१) उनकी लाठी अजगर बन जाती थी, (२) उनका हाथ इतना चमकता था कि उसकी ओर आँख भर के देखा नहीं जाता था।

कि मूसा और उसके भाई हारूँ को इस वक्त ढील दे और गाँवों में कुछ हलफारे भेजिये। (१११) कि तमाम जानकार जादूगरों को आपके सामने लाकर हाजिर करें। (११२) निदान जादूगर फिरऔन के पास हाजिर हुए कहने लगे कि अगर हम जीत जायँ तो हमको इनाम मिलना चाहिए। (११३) कहा हाँ! और जरूर तुम मेरे पास रहा करोगे। (११४) जादूगरों ने कहा—ऐ मूसा या तो तुम (अपना डण्डा) लाकर डालो और या हमहीं डालें। (११५) मूसा ने कहा तुम्हीं डालो जब उन्होंने (अपनी लाठियाँ और रस्सियाँ) डाल दीं तो जादू के जोर से लोगों की नजरबन्दी कर दी (कि चारों तरफ साँप ही साँप दिखलाई देने लगे) और उनको भय में डाल दिया और बड़ा जादू लाये। (११६) और हमने मूसा की तरफ खुदाई पैगाम भेजा कि तुम भी अपना असा (लाठी) डाल दो (मूसा ने) असा (लाठी डाल दी) तो क्या देखते हैं कि जादूगरों ने जो झूठ-मूठ बना खड़ा किया था उसको वह लीलने लगा। (११७) पस सच बात साबित हो गई और जो कुछ जादूगरों ने किया था झूठा हो गया। (११८) पस फिरऔन और उसके लोग उस अखाड़े में हारे और जलील हो गये। (११६) जादूगर सिजदः (शिर नवाने) में गिर पड़े। (१२०) बोल उठे कि हमतो संसार के परवर्दिगार पर ईमान लाये। (१२१) जो मूसा और हारू का पालनकर्त्ता है। (१२२) फिरऔन बोला अभी मैंने हुक्म ही नहीं दिया और तुम ईमान ले आये हो न हो यह तुम्हारा फरेब है जो शहर में तुमने बाँधा है ताकि यहाँ के लोगों को इस शहर से निकाल दो सो तुमको अब मालूम हो जाय। (१२३) तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव उल्टे (यानी दाहिना हाथ तो बाँया पैर और बाँया हाथ तो दाहिना पैर) कटवाऊँ फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँगा। (१२४) वह कहने लगे हमको तो अपने परवर्दिगार की तरफ लौट कर जाना है। (१२५) और तू हमसे इसीलिए दुश्मनी करता है कि हमने अपने परवर्दिगार के करामत जब हमारे पास पहुँचे मान लिये हैं। ऐ हमारे परवर्दिगार! हमें सब्र दे और हमें मुसलमान ही मार (१२६) [रुकू १४]

फिरऔन के लोगों में से सरदारों ने कहा कि क्या मूसा और उसकी जाति को रहने दोगे कि देश में फसाद फैलाते फिरें और वह तुझको और तेरे पुतों को छोड़ दें उसने कहा अब हम इनके बेटों को मारेंगे और उनकी औरतों को रक्खेंगे और हम उन पर (गालिब) रहेंगे। (१२७) †मूसा ने अपनी जाति से कहा अल्लाह से मदद माँगो और सब्र करो देश तो सब अल्लाह ही का है अपने सेवकों में से जिसको चाहता है उसको वारिस बना देता है और डरनेवालों का अंजाम भला होगा। (१२८) और वह कहने लगे कि तुम्हारे आने से पहिले हमको दुःख मिला और तेरे आने के बाद भी (मूसा ने) कहा कि करीब है कि परवर्दिगार तुम्हारे दुश्मन को मार डाले और तुमको बादशाह करे फिर देखे तुम कैसे काम करते हो। (१२९) [रुकू १५]

हमने फिरऔन के लोगों को अकालों और पैदावार की कमी में फँसाया ताकि वह लोग मान जावें। (१३०) फिर जब उनको कोई भलाई पहुँचती तो कहते यह हमारी ही वजह से है और अगर उन पर कोई आफत आती तो मूसा और उनके साथियों की किस्मत बुरी बताते सुनो जी उनका अभाग्य खुदा के यहाँ है लेकिन उनमें के बहुतेरे नहीं जानते। (१३१) (फिरऔन के लोगों ने मूसा से) कहा तुम कोई भी निशानी हमारे सामने लाओ कि उसके जरिये से तुम हम पर अपना जादू चलाओ तो हम तो तुम पर ईमान लानेवाले नहीं हैं। (१३२) फिर हमने उन पर तूफान भेजा और टीड़ियाँ, जुएँ और मेंढक और खून यह सब जुदा थे इस पर भी वह लोग अकड़े रहे और वे लोग गुनहगार थे। (१३३) और जब उन पर सजा पड़ी तो बोले ऐ मूसा! तुमसे जो खुदा ने वादा कर रक्खा है उसके सहारे पर अपने परवर्दिगार से हमारे लिये पुकारो अगर तुमने हम पर से सजा को टाल दिया तो हम जरूर तुम पर ईमान ले आवेंगे और इसराईल

---

† फिरऔन के दरबारियों ने मूसा और उनके साथियों को मार डालने की राय दी थी। फिरऔन ने उनसे कहा—"इनके मर्द मार डाले जायें और औरतें लौंडियाँ बना ली जायें ताकि दूसरे इस दुर्दशा से सबक लें।"

के बेटों को भी तुम्हारे साथ भेज देंगे। (१३४) फिर जब हमने एक खास वक्त के लिए जिस वक्त उनको पहुँचना था सजा को उनसे उठा लिया तो वह फ़ौरन वादा ख़िलाफ़ हो गये। फिर हमने उनसे बदला लिया (१३५) और नदी में डुबो दिया† क्योंकि वह हमारी आयतों को झुठलाते और उनसे बेपरवाही करते थे। (१३६) जमीन जिसमें हमने बढ़ती दी थी हमने उन लोगों को उसके पूर्व और पश्चिम का मालिक कर दिया जो (फ़िरऔन के यहाँ कमज़ोर हो रहे थे और इसराईल की औलाद पर तेरे परवर्दिगार का अच्छा वादा पूरा हो गया उनके सब्र के कारण से और जो फ़िरऔन और उसके कबीले के लोगों ने बनाया था हमने बरबाद कर दिये। (१३७) हमने इसराईल के बेटों को समुद्र पार उतार दिया तो वह ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपनी मूर्तों को पूजते थे (उनको देखकर इसराईल के बेटे मूसा से) कहने लगे कि ऐ मूसा जिस तरह इन लोगों के पास बुतें हैं एक बुत हमारे लिए भी बना दो (मूसा ने) जवाब दिया कि तुम जाहिल लोग हो। (१३८) यह लोग जो हैं नाश होनेवाले हैं और जो काम यह लोग कर रहे हैं झूठे हैं। (१३९) (मूसा ने यह भी) कहा क्या खुदा के सिवाय कोई पूजित तुम्हारे लिए बहुँचा दूँ हालाँकि उसी ने तुमको संसार के लोगों पर बढ़ती दी है। (१४०) और ऐ इसराईल के बेटों वह वक्त याद करो जब हमने तुमको फ़िरऔन के लोगों से बचाया था कि वह लोग तुमको बड़े दुःख देते थे तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को जिन्दा रखते और इसमें तुम्हारे परवर्दिगार का बड़ा एहसान था। (१४१) [रुकू १६]

हमने मूसा से तीस रातका वादा किया और हमने दस रातें और मिलाई। तब तेरे परवर्दिगार की मुद्दत चालीस रात पूरी हुई और मूसा

† मूसा से और फ़िरऔन से ४० वर्ष लड़ाई रही। मूसा कहते थे कि बनी इसराईल को उनके साथ भेज दिया जाय लेकिन फ़िरऔन न मानता था। उनके शाप से फ़िरऔन के देश पर यह सब आफ़तें आइं। मूसा को पकड़ने के लिए फ़िरऔन ने उनका पीछा किया। मूसा तो नदी को पारकर बचे लेकिन फ़िरऔन डूब गया।

ने अपने भाई हारूँ से कहा कि मेरी जाति में प्रतिनिधि (कायममुकाम) बने रहना और सम्भाल रखना और झगड़ालुओं की राह न चलना। (१४२) और जब मूसा हमारे वादे के बमूजिब (तूर पहाड़ पर) हाजिर हुए‡ और उनके परवर्दिगार ने उनसे बातें की तो (मूसा ने) अर्ज किया कि ऐ हमारे परवर्दिगार! तू मुझको दिखला कि मैं तेरी तरफ एक नजर देखूँ। फर्माया तुम हमको हरगिज न देख सकोगे मगर हाँ पहाड़ पर नजर करो। पस अगर पहाड़ अपनी जगह ठहरा रहे तो तू भी हमें देख सकेगा फिर जब उसका पालनकर्त्ता (प्रकाश) पहाड़ पर जाहिर हुआ तो उसको चकनाचूर कर दिया और मूसा मूर्च्छा खाकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया तो बोल उठा कि तेरी जात पाक है मैं तेरे सामने तोबा करता हूँ और तुझ पर ईमान लानेवालों में पहिला हूँ। (१४३) (खुदा ने) फर्माया ऐ मूसा हमने तुमको अपनी पैगम्बरी और आपस की बातचीत से लोगों पर इज्जत दी तो जो (सहीफे तौरात) हमने तुमको दिया है उसको लो और शुक्रगुजार रहो। (१४४) और हमने (तौरात की) तख्तियों में मूसा के लिए हर तरह की शिक्षा और हर चीज का ब्योरा लिख दिया था तू इसको मजबूती से पकड़े रह—अपनी जात को हुक्म दो कि इस किताब की अच्छी अच्छी बातों को पल्ले बाँधे रहो और (उनको यह भी समझाओ) मैं तुम लोगों को बेहुक्म लोगों का घर दिखाऊँगा। (१४५) जो लोग नाहक देश में अकड़ते फिरते हैं हम उनको अपनी निशानियों से फेर देंगे और (उनके दिलों को ऐसा सख्त कर देंगे कि) अगर सब करामात भी देखें तो भी उन पर ईमान न लावें और अगर सीधा रास्ता देख पावें तो उसको अपना रास्ता न मानें और अगर गुमराही का रास्ता देख पावें तो उसको रास्ता बना लें यह नुक्स उनमें इससे पैदा हुए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे बेपरवाही करते रहे। (१४६) और जिन लोगों ने

‡ हजरत मूसा ४० दिन तूर पहाड़ पर रहे। यह इस लिये कि तौरात का उतरना इसी बात पर निर्भर था।

हमारी आयतों को और क़यामत के आने को नहीं माना उनका किया-धरा सब अकार्य—यह सजा उनको उन्हीं कर्मों की दी जायगी। (१४७) [रुकू १७]

मूसा के पीछे उनकी जाति ने अपने आभूषण को (गलाकर) उसका एक बछड़ा बना खड़ा किया। वह एक शरीर था जिसकी आवाज भी गाय की सी थी (और उसकी पूजा करने लगे) उन्होंने यह न देखा कि वह न उनसे बात करता है और न राह दिखा सकता है। उन्होंने उसको (देवता) मान लिया और वे बेईंसाफी थे। (१४८) जब पछताये और समझे कि हम बहके तब बोले कि अगर हमारा परवर्दिगार हम पर रहम न करे और हमारे गुनाह माफ न करेगा तो हम घाटे में आ जायँगे। (१४९) जब मूसा अपनी जाति की तरफ़ गुस्सा और रञ्ज में भरे हुए लौटे तो बोले कि मेरे पीछे मेरी ग़ैरहाज़िरी में तुमने बुरी हरकत की। क्या तुमने अपने परवर्दिगार के हुक्म की जल्दी की और मूसा ने तख्तियों को (तौरात को) फेंक दिया और अपने भाई के सिर को पकड़कर उनको अपनी तरफ खींचने लगा कहा ये मेरे सगे भाई! लोगों ने मुझको नाचीज समझा और जल्द मुझको मारनेवाले थे तो दुश्मनों को मुझ पर हँसने का (मौक़ा) न दो और मुझको जालिम लोगों के साथ मिलाइये। (१५०) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझे और मेरे भाई का गुनाह क्षमा कर और हमको अपनी रहम में ले और तू सब रहम करने वालों से बड़ा है। (१५१) [रुकू १८]

जो लोग बछड़े को ले बैठे उन पर उनके परवर्दिगार का गुस्सा पड़ेगा और दुनिया की जिन्दगी में जिल्लत और झूठ बाँधनेवालों को हम इसी प्रकार सजा दिया करते हैं। (१५२) जिन्होंने बुरे काम किये फिर इसके बाद तोबा की और ईमान लाये तो तुम्हारा परवर्दिगार तोबा के बाद माफ करनेवाला मेहरबान है। (१५३) और जब मूसा का गुस्सा जाता रहा तो उन्होंने तख्तियों को उठा लिया और तख्तियों में उन लोगों के लिए जो अपने परवर्दिगार से डरते हैं हिदायत और दया है। (१५४) और मूसा ने हमारे वादे के वक्त के लिए अपनी जाति

में से ७० आदमी चुने। † फिर जब उनको भूचाल ने आ घेरा तो मूसा ने कहा ऐ हमारे परवर्दिगार ! अगर तू चाहता तो उन्हें और मुझे पहिले ही से मार डालता । क्या तू हमें चन्द मूर्खों के काम से मारे डालता है यह सब तेरा आज़माना है जिसे चाहे उससे विचलाये और जिसको चाहे राह दे । तू ही हमारा काम का संभालनेवाला है । तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हम पर रहम कर और तू तमाम बख़्शनेवालों से अच्छा है। (१५५) और इस दुनिया और क़यामत की बिहतरी हमारे नाम लिख दे हम तेरे ही तरफ़ लग गये (ख़ुदा ने) कहा कि हमारी सज़ा उसी पर आती है जिसे हम सज़ा दिया चाहते हैं। और हमारी दया सब चीज़ों पर एकसा है तो हम उसको उन लोगों के नाम लिख देंगे जो डरते और ज़कात देते और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं। (१५६) जो पैग़म्बर बिना पढ़े (मोहम्मद) की पैरवी करते हैं जिनको अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं वह उनको अच्छे काम को हुक्म देता है और बुरे काम से मना करता है और पाक चीज़ों को उनके लिये हलाल ठहराता और नापाक चीज़ों को उन पर हराम करता है और उनसे उनके बोझ और तौक़ (क़ैदी के गले का बन्धन) उन पर से दूर करता है। तो जो लोग उन पर ईमान लाये और उनकी हिमायत की और उनको मदद दी और जो रोशनी (क़ुरान) उनके साथ भेजी गई है उसको मानने लगे यही लोग कामयाब हैं। (१५७) [रुकू १९]

कहो कि लोगों मैं तुम सबकी तरफ़ उस ख़ुदा का भेजा हुआ हूँ कि आसमान और ज़मीन का राज्य उसी का है उसके सिवाय और कोई पूजित नहीं। वही जिलाता और मारता है तो अल्लाह पर ईमान लाओ

† इसराईल की संतानों ने कहा था कि मूसा अपने मन से एक पुस्तक गढ़ लाये हैं। हम तो जब इसे ख़ुदा की ओर से उतरी मानें जब मूसा और ख़ुदा हमारे सामने बातें करें। मूसा ७० आदमियों को लेकर पहाड़ पर गये। वहाँ इन्होंने बातें सुनी तो कहने लगे—"हम ख़ुदा को देखें तो मानें।" इस पर एक बिजली ने उनको जलाकर राख कर दिया।

और उसके रसूल और नबी बिना पढ़े (मोहम्मद) पर कि अल्लाह और उसकी किताबों पर ईमान रखते हैं और उन्हीं की पैरवी करो ताकि तुम सीधे रास्ते पर आ जाओ। (१५८) और मूसा की जाति में से कुछ लोग ऐसे हैं जो सच्ची बात का उपदेश और सच ही के बमूजिब न्याय करते हैं। (१५९) और हमने याकूब के बेटों को बाँटकर एक-एक दादा की संतान के बारह कबीले (गिरोह) बनाये और जब मूसा से उसकी जाति ने पानी माँगा तो हमने मूसा की तरफ़ वही (खुदा का पैग़ाम) भेजा कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो लाठी का मारना था कि पत्थर से बारह सोते (चश्मे) फूट निकले हर एक क़बीले ने अपना २ घाट मालूम कर लिया और हमने याकूब के बेटों पर बादल की छाया की और उन पर मन और सलवा उतारा कि यह सुथरी रोजी है जो हमने तुमको दी है खाओ और उन लोगों ने (उदूल हुक्मी की) हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया बल्कि अपना ही नुक़सान करते रहे (यानी उनका खाना बन्द हुआ)। (१६०) और जब इसराईल‡ के बेटों को आज्ञा दी गई कि इस गाँव (यरीहा) में बसो और इसमें से जहाँ से तुम्हारा जी चाहे खाओ और हित्तहुन (गुनाह से दूर हो) कहो और दरवाजे में सिजदा करते हुए दाखिल हो हम तुम्हारे अपराध क्षमा कर देंगे और नेकों को ज्यादा भी देंगे। (१६१) तो जो लोग उनमें से जालिम थे वह हुआ, जो उनको सिखाई गई थी बदलकर कुछ और कहने लगे तो हमने उनकी नटखटी के बदले आसमान से उन पर सजा उतारी। (१६२) [रुकू २०]

इसराईल के बेटों से उस गाँव का हाल पूछो जो नदी के किनारे था, जब वहाँ के लोग (शनीचर के दिन) ज्यादतियाँ करने लगे कि जब उनके शनीचर का दिन होता तो मछलियाँ उनके सामने आकर जमा होतीं और जब उनके शनीचर का दिन न होता तो न आतीं। यों हमने उन्हें जांचा इसलिए कि यह लोग हुक्म न माननेवाले थे। (१६३) और

‡ इसराईल की संतान यानी याकूब के बारह बेटे इन बेटों की संतान अलग-अलग एक-एक कबीला है।

जब इनमें से एक जमात ने कहा जिन लोगों को खुदा हलाक (मार डाला) करता या उनको कठिन सजा में फँसाना चाहता है तुम क्यों उपदेश देते हो। उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारे परवर्दिगार के सामने पाप दूर करने के लिए और शायद यह लोग रुक जायँ। (१६४) तो जब वह नसीहतें जो उनको की गई थीं भुला दिया तो जो लोग बुरे काम से मना करते थे उनको हमने बचा लिया और जालिमों को उनकी बेहुक्मी के बदले हमने सख्त सजा में फँसाया। (१६५) फिर जिस काम से उनको मना किया जाता था जब उसमें हद से बढ़ गये तो हमने उनको हुक्म दिया कि फटकारे हुए बन्दर बन जाओ। (१६६) जब तुम्हारे परवर्दिगार ने जता दिया था कि वह जरूर उन पर क़यामत के दिन तक ऐसे हाकिम मुकर्रर रक्खेगा जो उनको बुरी तकलीफें पहुँचाते रहेंगे। तुम्हारा परवर्दिगार जल्द सजा देता है और वह बेशक माफ करनेवाला मेहरबान है। (१६७) हमने यहूद को गिरोह गिरोह करके मुल्क में अलग अलग कर दिया है उनमें से कुछ भले थे और कुछ भले नहीं थे और हमने उनको सुख और दुःख से आजमाया शायद वह फिरें। (१६८) फिर उनके बाद ऐसे नालायक़ किताब के वारिस बने कि इस नाचीज दुनिया की चीजें लीं और कहते हैं कि यह गुनाह तो हमारा माफ़ हो जायगा और अगर इसी तरह की कोई सांसारिक वस्तु उनके सामने आजावे तो उसे लेलेते हैं—क्या इन लोगों से यह अहद जो किताब (तौरात) में लिखी है नहीं हुई कि सच बातके सिवाय दूसरी बात खुदा की तरफ़ न कहेंगे—जो कुछ उसमें है उन्होंने उसको पढ़ लिया और जो लोग परहेजगार हैं क़यामत का घर उनके हक़ में कहीं अच्छा है (ऐ याक़ूब के बेटों) क्या तुम नहीं समझते। ((१६९) और जो लोग किताब को मजबूती से पकड़े हुए हैं और नमाज पढ़ते हैं तो हम ऐसे अच्छे काम करनेवालों के सवाब को खत्म नहीं होने देंगे। (१७०) और जब हमने उनपर पहाड़ को इस तरह जा लटकाया कि गोया वह शामयान था और वे समझे कि यह उनपर गिरेगा, तो हमने कहा जो किताब तुमको दी है उसे मजबूती के साथ लिये रहना और जो कुछ

उसमें है उसे याद रखना–शायद तुम परहेज़गार बनो। (१७१) और याद करो वह समय जब तुम्हारे परवर्दिगार ने आदम के बेटों से उनकी पीठों से उनकी सन्तान को निकाला था और उनके मुक़ाबिले में खुद उन्हीं को गवाह बनाया, क्या मैं तुम्हारा परवर्दिगार नहीं हूँ। सब बोले हाँ। यह गवाही हमने इसलिए ली कि क़यामत के दिन न कहने लगो कि हम सब बात से बेख़बर ही रहे। (१७२) या कहने लगो कि शिर्क (ख़ुदा का साझी ठहराना) तो हमारे बड़ों ही ने निकाला था और हम उनके बाद उन्हीं की सन्तान थे तो (ऐ ख़ुदा) क्या तू हमको उन लोगों के गुनाहों के जुर्म के बदले में हलाक किए देता है जिन्होंने भूल की। (१७३) और इसी तरह आयतों को हम तफ़सील के साथ बयान करते हैं शायद वह फिरें। (१७४) और (ऐ पैग़म्बर) इन लोगों को उस शख़्स का हाल पढ़कर सुनाओ जिसको हमने अपनी (आयतें) करामातें दी थीं फिर वह आयतों में से निकल गया फिर शैतान उसके पीछे लगा और वह गुमराहों (भूले हुओं) में जा मिला। (१७५) अगर हम चाहते तो उनकी बदौली से उसका दर्जा ऊँचा करते मगर उसने नीचे में गिरना चाहा और अपनी दिलकी ख़्वाहिशों के पीछे लग गया तो उसकी कहावत कुत्ते कैसी कहावत हो गई कि अगर उसको खदेर दोगे तो जीभ बाहर लटकाये रहे और अगर उसको (उसी की दशा पर) छोड़े रक्खो तो भी जीभ लटकाये रहे यही कहावत उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो यह क़िस्से बयान करो ताकि यह लोग सोचें। (१७६) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनकी बुरी कहावत है और वह कुछ अपना ही बिगाड़ते रहे हैं। (१७७) जिनको ख़ुदा राह दिखाये वही राह पाते हैं और जिनको वह गुमराह करे वही लोग घाटे में हैं। (१७८) और हमने बहुतेरे जिन्न और मनुष्य दोज़ख़ ही के लिये पैदा किये हैं उनके दिल तो हैं (मगर) उनसे समझने का काम नहीं लेते और उनके आँखें भी हैं (मगर) उनसे देखने का काम नहीं लेते और उनके कान भी हैं उनसे सुनने का काम नहीं लेते साराश यह कि यह लोग पशुओं की तरह हैं

बल्कि उनसे भी गिरे हुए हैं यही बेखबर हैं। (१७६) और अल्लाह के (सब) नाम अच्छे हैं तो उसके नाम लेकर उसको (जिस नाम से चाहो) पुकारो और जो लोग उसके नामों में बुराई करते हैं उनको छोड़ दो वह अपने किये का अंजाम पावेंगे। (१८०) और हमारी दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो सच बात की नसीहत और उसी के अनुसार इंसाफ भी करते हैं। (१८१) [रुकू २२]

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया हम उन्हें इस तरह पर कि उनको खबर भी न हो धीरे २ (दोजख की तरफ) ले आयेंगे। (१८२) और हम उनको (ससार में) मोहलत देते हैं हमारा दाँव बेशक पक्का है। (१८३) क्या इन लोगों ने ख्याल नहीं किया कि इनके साहिब को (यानी मुहम्मद) को किसी तरह का जनून (पागलपन) तो नहीं है। यह तो खुल्लमखुल्ला (खुदा की सजा से) डरानेवाला है। (१८४) क्या इन लोगों ने आसमान और जमीन के इन्तजाम और खुदा की पैदा की हुई किसी चीज पर भी नजर नहीं की और न इस बात पर कि आश्चर्य नहीं इनको मौत ने घेरा हो। तो अब इतना समझाये पीछे और कौन सी बात है जिसको सुनकर ईमान ले आवेंगे। (१८५) जिसको खुदा गुमराह करे तो फिर उसका कोई भी राह दिखाने वाला नहीं और खुदाही उनको छोड़े हुए है कि अपनी नटखटी में पड़े भटका करें। (१८६) (ऐ पैगम्बर लोग) तुमसे क़यामत के बारे में पूछते हैं कि कहीं उसका ठिकाना भी है। तुम जवाब दो कि उसका इल्म तो मेरे परवर्दिगार को है। बस वही उसको उसके वक्त पर लाकर दिखावेगा। यह एक बड़ी भारी घटना आसमान और जमीन में होगी–क़यामत अचानक तुम लोगों के सामने आवेगी (ऐ पैग़म्बर) यह लोग तुमसे (क़यामत का हाल) ऐसे पूछते हैं गोया तुम उसकी खोज में लगे रहे हो (तो इनसे) कहो कि इसकी मालूमात तो बस खुदा ही को है लेकिन अक्सर आदमी नहीं समझते। (१८७) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो मेरा अपना आतीय नुक़सान फ़ायदा भी मेरे क़ाबू में नहीं मगर जो खुदा चाहे (होकर रहता है) और

अगर मैं गैब जानता होता तो अपना बहुत सा लाभ कर लेता और मुझको (किसी तरह का) दुःख न होता, मैं तो उन लोगों को जो ईमान लाना चाहते हैं (दोज़ख का) डर और (जन्नत की) खुश खबरी सुनानेवाला हूँ। (१८८) [रुकू २३]

वही है जिसने तुमको एक शरीर से पैदा किया और उससे उसकी स्त्री को निकाला ताकि पुरुष स्त्री की तरफ़ ध्यान दे, तो जब पुरुष की स्त्री से सोहबत हुई तो स्त्री के एक हल्का सा गर्भ रह गया फिर वह उस गर्भ को लिये-लिये फिरती थी फिर जब (गर्भ के कारण) ज्यादा बोझ हो गया तो मियाँ बीबी दोनों मिलकर खुदा से दुआ माँगने लगे कि (ऐ खुदा) अगर तू हमको पूरा बच्चा देगा तो हम तेरा बड़ा एहसान मानेंगे। (१८६) फिर जब उनको पूरा बच्चा दिया तो उस (सन्तान) में जो खुदाने उनको दी थी खुदा के लिये शरीक ठहराया तो खुदा के बनावटी साभि से खुदा की प्रतिष्ठा बहुत ऊँची है। (१६०) क्या वह ऐसे को (खुदा का) शरीक बनाते हैं जो किसी चीज को पैदा नहीं कर सक्ते और वह खुद पैदा किये हुए हैं। (१६१) वह न इनकी मदद करने की ताक़त रखते हैं और न आप अपनी मदद कर सक्ते हैं। (१६२) अगर तुम उनको सच्चे रास्ते की ओर बुलाओ तो तुम्हारी हिदायत पर न चल सकें चाहे तुम उनको बुलाओ या चुप रहो (दोनों बातें) तुम्हारे लिए बराबर हैं। (१६३) (ऐ मुश्रिकों तुम) खुदा के सिवाय जिन लोगों को बुलाते हो (वह भी) तुम जैसे सेवक हैं अगर तुम सच्चे हो तो उन्हें उस हालत में पुकारो जब वह तुम्हें जवाब दे सकें। (१६४) क्या उनके ऐसे पाँव हैं जिनसे चलते हैं या उनके ऐसे हाथ हैं जिनसे पकड़ते हैं या उनकी ऐसी आँखें हैं जिनसे देखते हैं या उनके ऐसे कान हैं जिनसे सुनते हैं (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अपने (ठहराये हुए) शरीकों को बुला लो फिर (सब मिलकर) मुझ पर अपना दाँवकर चलो और मुझको (ज़रा भी) मोहलत मत दो। (१६५) अल्लाह जिसने इस किताब को उतारा है वही मेरा काम सम्भालनेवाला है और वही अच्छे बंदों की हिमायत करता है। (१६६)

और उसके सिवाय जिनको तुम बुलाते हो न वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं न अपनी मदद कर सकते हैं। (१९७) अगर तुम उनको सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाओ तो (तुम्हारी एक) न सुनें और वह तुमको ऐसे दिखलाई देते हैं कि (गोया) वह तेरी तरफ़ देख रहे हैं हालांकि वह देखते नहीं। (१९८) (ऐ पैग़म्बर) माफ़ी को पकड़ो और (लोगों से) भले काम (करने) को कहो और मूर्खों से अलग रहो। (१९९) और अगर शैतान के गुदगुदाने से गुदगुदी तुम्हारे दिल में पैदा हो तो ख़ुदा से पनाह माँगो वह सुनता और जानता है। (२००) जो लोग परहेज़गार हैं जब कभी शैतान की तरफ़ का कोई ख़्याल उनको छू भी जाता है तो जाग जाते हैं और वह उसी दम देखने लगते हैं। (२०१) इनके भाई इनको गुमराहों में घसीटते हैं फिर कोताही नहीं करते। (२०२) और जब तुम इन लोगों के पास कोई आयत नहीं लाते तो कहते हैं कि क्यों कोई आयत नहीं बनाई। (२०३) तुम कहो कि मैं तो जो कुछ मेरे परवर्दिगार के यहाँ से मेरी तरफ़ वही (ख़ुदाई पैग़ाम) आया है उसी पर चलता हूँ यह हिदायत और रहम और सोच समझ की बातें ईमानवालों के लिये तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से हैं और जब क़ुरान पढ़ा जाया करे तो उसको कान लगाकर सुनो और चुप रहो शायद तुम पर कृपा की जाय। (२०४) और अपने दिल में गिड़गिड़ाकर और डरकर और धीमी आवाज़ से सुबह व शाम अपने परवर्दिगार को याद करते रहो और भूले न रहो। (२०५) जो तुम्हारे परवर्दिगार के नज़दीकी हैं उसकी पूजा से मुँह नहीं फेरते और उसकी पवित्रता की माला फेरते हैं और उसी के आगे शिर नवाते हैं। (२०६) । [रुकू २४)

सूरे अन्फाल

मदीने में उतरी इसमें ७५ आयतें १० रुकू हैं।

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला मेहरबान है। (ऐ पैग़म्बर मुसलमान सिपाही) तुमसे लूट के माल§ का हुक्म पूछते हैं कह दो कि लूट का माल तो अल्लाह और पैग़म्बर का है तुम लोग ख़ुदा से डरो और आपस में मेल करो। अगर तुम मुसलमान हो तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा मानो। (१) मुसलमान वही हैं कि जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है तो उनके दिल दहल जाते हैं और जब ख़ुदा की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह उनके ईमान को ज्यादा कर देती हैं और वह अपने परवर्दिगार पर्चा पर भरोसा रखते हैं। (२) जो नमाज पढ़ते और हमने जो उनको रोजी दी है उसमें से ख़र्च करते हैं। (३) यही सच्चे मुसलमान हैं इनके लिये इनके परवर्दिगार के यहाँ दर्जे हैं और माफ़ी और इज्ज़त की रोज़ी। (४) जैसे तुमको तुम्हारे परवर्दिगार ने तुम्हारे घर से निकाला और मुसलमानों का एक गिरोह राज़ी न था। (५) कि वह लोग जाहिर हुए पीछे तुम्हारे साथ सच बात में झगड़ा करने लगे गोया उनको मौत की तरफ़ ढकेला जाता है और वह मौत को आँखों देख रहे हैं। (६) जब ख़ुदा तुम मुसलमानों से प्रतिज्ञा करता था कि दो जमातों† में से (कोई सी) एक तुम्हारे हाथ आजायगी और तुम चाहते थे कि जिसमें काँटा न लगे वह तुम्हारे हाथ आजाय और अल्लाह की मर्जी यह थी कि अपने हुक्म से हक़ को क़ायम करे और काफ़िरों की जड़ (दुनियादी) काट डाले। (७) ताकि सच को सच और झूँठ को

---

§ वह माल जो मुसलमानों को लड़े पीछे हाथ आए।

† अबूजहल या अबूसुफ़ियान की जमाअत, जिनकी मक्के में धाक बैठी थी। उनमें से एक तुम्हारे साथ आ जायगा। चुनांचे अबूसुफ़ियान बाद में मुसलमानों के साथ आ गये।

झूँठ कर दिखावे। चाहे काफ़िरों को भले ही बुरा लगे। (८) यह वह वक्त था कि तुम अपने परवर्दिगार के आगे विनती करते थे तो उसने तुम्हारी सुनली कि हम लगातार हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करेंगे। (९) और यह फ़रिश्तों की सहायता जो ख़ुदा ने की सिर्फ़ ख़ुश करने को और ताकि तुम्हारे दिल उसकी वजह से संतुष्ट हो जायँ वर्ना जीत तो अल्लाह की ही तरफ़ से है। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हाकिम है। (१०) [रुकू १]

यह वह समय था कि ख़ुदा अपनी तरफ़ से अम्न के लिए ऊँघ को तुम पर उतार रहा था और आसमान से तुम पर पानी बरसाया ताकि उसके ज़रिये से तुमको पाक करे और शैतानी गन्दगी को तुमसे दूर करदे और ताकि तुम्हारे दिलों का साहस बढ़ावे और उसीके ज़रिये तुम्हारे पाँव जमाये रक्खे। (११) (ऐ पैग़म्बर) यह वह वक्त था कि तुम्हारा परवर्दिगार फ़रिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं तुम मुसलमानों को जमाये रक्खो हम जल्द काफ़िरों के दिलों में डर डाल देंगे बस तुम इनकी गरदनें मारो और इनके टुकड़े २ कर डालो। (१२) यह इस बात की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह और उनके पैग़म्बर का सामना किया और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर का विरोध करेगा तो अल्लाह की मार बड़ी कठिन है।‡ (१३) यह तुम भुगत लो और जान लो कि काफ़िरों को दोज़ख़ की सज़ा है। (१४) ऐ मुसलमानों जब काफ़िरों से तुम्हारे लश्कर की मुठभेड़ हो जाय तो उनको पीठ न दिखाना। (१५) और शख़्स ऐसे मौक़े पर काफ़िरों को अपनी पीठ दिखायेगा तो वह ख़ुदा के कोप में आ गया और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत ही बुरी जगह है मगर यह कि हुनर करता हो लड़ाई का या फ़ौज में आ मिलता

‡ यहाँ तक बद्र की लड़ाई का हाल था। इसमें फ़रिश्तों का मुसलमानों को मदद को आना और काफ़िरों को बरबाद कर देना और पानी बरसना सब कुछ बयान किया गया है ताकि मुसलमान ख़ुदा का हुक्म मानें और रसूल के कहने पर चलें।

हो। (१६) पस काफ़िरों को तुमने क़त्ल नहीं किया बल्कि उनको अल्लाह ने क़त्ल किया और जब तुमने तीर चलाये तो तुमने तीर नहीं चलाए बल्कि अल्लाह ने तीर चलाये और यह मुसलमानों पर एहसान किया चाहता था बेशक अल्लाह सुनता और जानता है। (१७) यह बात जान लो कि ख़ुदा को काफ़िरों की तदबीरों का नाक़िस कर देना मंज़ूर है। (१८) तुम जो जीत माँगते थे। वह जीत तुम्हारे सामने आ गई और अगर बाज़ रहोगे तो यह तुम्हारे हक़ में भला होगा और अगर तुम फिरकर आओगे तो हम भी फिरकर आयेंगे और तुम्हारा जत्था कितना ही बहुत हो कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आयेगा और जानो कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है। (१६) [रुकू २]

मुसलमानों! अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म मानो और उससे शिर न उठाओ और तुम सुन ही रहे हो। (२०) और उन लोगों जैसे न बनो जिन्होंने कह दिया कि हमने सुना हालांकि वह सुनते नहीं। (२१) अल्लाह के नज़दीक सब जानवरों में निकृष्ट बहरे गूँगे हैं जो नहीं समझते। (२२) अगर अल्लाह इनमें भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी ज़रूर देता लेकिन अगर ख़ुदा इनको सुनने की क़ाबलियत दे तो भी यह लोग मुँह फेरकर उल्टे भागें। (२३) मुसलमानों! जब पैग़म्बर तुमको ऐसे दीन की तरफ़ बुलाते हैं जो तुममें नई रूह फूँकता है तो तुम अल्लाह और पैग़म्बर का हुक्म मानो और जाने रहो कि आदमी और उसके दिल के दर्मियान में ख़ुदा आ जाता है और यह कि तुम उसी के सामने हाज़िर किये जाओगे। (२४) और उस आफ़त से डरते रहो जो ख़ासकर उन्हीं लोगों पर नहीं आयेगी जिन्होंने तुममें से शिर उठाया है और जाने रहो कि अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है। (२५) और याद करो जब तुम ज़मीन में (मक्का में) थोड़े से थे कमज़ोर समझे जाते थे इस बात से डरते थे कि लोग तुमको ज़बरदस्ती पकड़कर न उठा ले जायें फिर ख़ुदा ने तुमको जगह दी और अपनी सहायता से तुम्हारी मदद की और अच्छी अच्छी चीजें तुम्हें खाने को दीं इसलिये कि तुम शुक्र करो। (२६) मुसलमानों! अल्लाह

और रसूल की धरोहर मत मारो न आपस की धरोहर मारो और तुम तो जानते हो। (२७) जाने रहो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी दौलत बखेड़े हैं और अल्लाह के यहाँ बड़ा अजाम है। (२८) [रुकू ३]

मुसलमानो! अगर तुम खुदा से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे लिए फैसला कर देगा और तुम्हारे पाप तुमसे दूर कर देगा और तुमको क्षमा करेगा और अल्लाह बड़ा रहीम है। (२९) जब काफ़िर तुम पर फ़रेब करते थे कि तुमको पकड़कर रक्खें या तुमको मार डालें या तुमको देश निकाला कर दें और काफ़िर चाल करते थे और अल्लाह भी चाल करता था और खुदा सब चाल चलनेवालों से अच्छी चाल चलने वाला है। (३०। अब हमारी आयतें इन काफ़िरों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया अगर हम चाहें तो हम भी इसी तरह की बातें कह लें यह तो आगे के लोगों की कहानियाँ हैं। (३१) जब काफ़िर कहने लगे कि ऐ अल्लाह अगर तेरी तरफ़ से यही सच है तो हम पर आसमान से पत्थर बर्षा या हम पर कड़ी सजा डाल। (३२) खुदा ऐसा नहीं है कि तुम इनमें रहो और वह इनको सजा दे और अल्लाह ऐसा नहीं है कि लोग माफ़ी माँगें और वह इनको सजा दे। (३३) क्योंकर अल्लाह उन्हें सजा न देगा जबकि वह मसजिद हराम (यानी काबा के घर) से लोगों को रोकते हैं। हालाँकि वह उसके हक़दार नहीं उसके हक़दार तो परहेज़गार हैं लेकिन इनमें के बहुतेरे नहीं समझते। (३४) काबा के घर के पास सीटियाँ और तालियाँ बजाने के सिवाय उनकी नमाज़ ही क्या थी तो (ऐ काफ़िर) जैसा तुम इन्कार करते रहे तो उसके बदले सजा भुगतो। (३५) इसमें सन्देह नहीं कि यह काफ़िर अपने माल खर्च करते हैं कि खुदा के रास्ते मे रोकें सो (अभी और) माल खर्च करेंगे फिर (वही माल) इनके हक़ में रंज का कारण होगा और आख़िर हार जायेंगे। काफ़िर दोज़ख़ की तरफ़ हाँके जायेंगे। (३६) ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग करे और नापाक को एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सबका ढेर लगाए फिर उस ढेर को दोज़ख़ में झोंक दे यही लोग हैं जो घाटे में रहे। (३७) [रुकू ४]

काफ़िरों से कहो कि अगर मान जायँगे तो उनके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायँगे और अगर फिर शरारत करेंगे तो अगले लोगों की चाल पड़ चुकी है जैसा उनके साथ हुआ है इनके साथ भी होगा। (३८) काफ़िरों से लड़ते रहो यहाँ तक कि फ़साद न रहे और सब खुदा ही का दीन हो जाय पस अगर मान जावें तो जो कुछ यह लोग करेंगे अल्लाह उसको देख रहा है। (३९) अगर सिर उठावें तो तुम समझते रहो कि अल्लाह तुम्हारा सहायक और अच्छा मददगार है। (४०)।
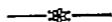
दसवाँ पारा (वालमू)
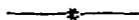
और जान रक्खो कि जो चीज़ तुम लूटकर लाओ उसका पाँचवाँ भाग खुदा का और पैग़म्बर का और पैग़म्बर के सम्बन्धियों का अनाथों का और गरीबों और मुसाफ़िरों का अगर तुम खुदा का और उस (मदद गैबी) का यक़ीन रखते हो जो हमने अपने सेवक पर फ़ैसले के दिन उतारी थी जिस दिन कि (मुसलमानों और काफ़िरों के) दो लश्कर एक दूसरे से गुथ गये थे और अल्लाह हर चीज़ से पर ताक़तवर है। (४१) यह वह वक्त था कि तुम (मुसलमान मैदान जंग के) उस सिरे पर थे और काफ़िर दूसरे सिरे पर और काफ़िला (नदी के किनारे) तुमसे नीचे की तरफ़ को उतर गया था अगर तुमने आपस में (लड़ाई का) ठहराव किया होता तो जरूर वादा ख़िलाफ़ी करनी पड़ती। लेकिन खुदा को जो कुछ करना मन्ज़ूर था उसको पूरा कर दिखलाया ताकि मर जावे जो सूझ कर मरे और जो जीवे तो सूझ कर जीवे और अल्लाह सुनता और जानता है। (४२) ऐ पैग़म्बर उसी वक्त की घटना यह भी है जबकि खुदा ने तुमको थोड़े काफ़िर दिखलाये और अगर उन्हें तुमको बहुत कर दिखाता

तो तुम जरूर हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में भी जरूर आपस में झगड़ने लगते। मगर खुदा ने बचाया बेशक वह दिली ख्यालों से जानकार है। (४३) और जब तुम एक दूसरे से लड़ मरे काफिरों को तुम मुसलमानों की आँखों में थोड़ा कर दिखलाया और काफिरों की आँखों में तुम मुसलमानों को बहुत कर दिखाया ताकि खुदा को जो कुछ करना मन्जूर था पूरा कर दिखाये और आखिरकार सब कामों का सहारा अल्लाह ही पर जाकर ठहरता है। (४४) [रुकू ५]

मुसलमानों जब किसी फौज से तुम्हारी मुठभेड़ हो जाया करे तो जमे रहो और अल्लाह को खूब याद करो शायद तुम मुराद पाओ। (४५) अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म मानो और आपस में झगड़ा न करो नहीं तो साहस छोड़ दोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायगी और ठहरे रहो और अल्लाह ठहरने वालों का साथी है। (४६) उन (काफिरों) जैसे न बनों जो शेखी के मारे और लोगों के दिखाने के लिये अपने घरों से निकल खड़े हुए और खुदा राह से रोकते थे और जो कुछ भी यह लोग करते हैं अल्लाह के काबू में है। (४७) जब शैतान ने उन (काफिरों) की हरकतें उनको अच्छी कर दिखलाई और कहा आज लोगों में कोई ऐसा नहीं जो तुमको जीत सके और मैं तुम्हारा मददगार हूँ फिर जब दोनो फौजें आमने-सामने आईं वह अपने उल्टे पाँव हटा और कहने लगा कि मुझको तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं मैं वह चीज देख रहा हूँ जो तुमको नहीं सूझ पड़ती मैं तो अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह की मार बड़ी सख्त है। (४८) [रुकू ६]

जब मुनाफिको और जिन लोगों के दिलों में (इन्कार की) बीमारी थी कहते थे मुसलमान घमंडी हैं और जो खुदा पर भरोसा रक्खेगा तो अल्लाह जबरदस्त और हिकमतवाला है। (४९) और (ऐ पैग़म्बर) तुम देखोगे जब कि फरिश्ते काफिरों की जान निकालते हैं इनके मुखों गुन्भियों पर मारते जाते हैं और (कहते जाते हैं कि देखो) दोजख की सजा को भोगो। (५०) यह तुम्हारे उन (बुरे कामों का) बदला है जो तुमने अपने हाथों पहले से भेजे हैं और इसलिए कि खुदा तो सेवकों

पर किसी तरह का जुल्म नहीं करता। (५१) जैसी गति फ़िरऔन की जाति और उनके अगलों की कि उन्होंने ख़ुदा की आयतों से इन्कार किया तो ख़ुदा ने उनके गुनाहों के बदले उनको घर पकड़ा अल्लाह ज़बरदस्त है उसकी मार बड़ी सख़्त है। (५२) यह इस लिये कि ख़ुदा ने जो पदार्थ किसी कौम को दिये हों जब तक कि यह लोग आपही न बदलें जो उनके जी में है ख़ुदा (की आदत) नहीं कि उसमें कुछ हेर-फेर करे और अल्लाह सुनता और जानता है। (५३) जैसी गति फ़िरऔन और उन लोगों की हुई जो उनसे पहिले थे कि उन्होंने अपने पालनकर्त्ता की आयतों को झुठलाया तो हमने उनके पापों के बदले मार डाला और फ़िरऔन के लोगों को डुबो दिया और यह अन्यायी हैवान थे (वैसे ही इनकी होगी)। (५४) अल्लाह के नज़दीक सबसे ख़राब वह हैं जो इन्कार करते हैं फिर नहीं मानते। (५५) जिससे तुमने अहद की उस अपनी अहद को हर बार तोड़ते हो और नहीं डरते। (५६) तो अगर तुम उनको लड़ाई में पाओ तो उनपर ऐसा ज़ोर डालो कि जो लोग उनकी हिमायत पर हैं इनको भागते देखकर उनको भी भागना ही पड़े शायद यह लोग सीख लें। (५७) और अगर तुमको किसी जाति की तरफ़ से दगा का शक हो तो बराबरी का ध्यान रखकर उन्हीं की (उस अहद की) तरफ़ फेंक मारो अल्लाह दगाबाज़ों को नहीं चाहता। (५८) [रुकू ७]

काफ़िर यह न समझें कि (हमारे काबू से) निकल गये वह कदापि हरा नहीं सकते। (५९) (मुसलमानो सिपाहियाना) ताकत से और घोड़ों के बांधे रखने से जहाँ तक तुमसे हो सके काफ़िरों के मुकाबले के लिये साज व सामान इकट्ठा किये रहो कि ऐसा करने से अल्लाह के दुश्मनों पर और अपने दुश्मनों पर अपनी धाक बैठाये रखोगे और उनके सिवाय दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते अल्लाह उनसे जानकार है और ख़ुदा की राह में जो कुछ भी ख़र्च करोगे वह तुमको पूरा-पूरा भर दिया जायगा। (६०) (ऐ पैग़म्बर) अगर यह लोग सन्धि (सुलह) की तरफ़ झुकें तो तुम भी उसकी तरफ़ झुको और अल्लाह पर भरोसा रक्खो क्योंकि वही सुनता जानता है। (६१) अगर

उनका इरादा तुमसे दग़ा करने का होगा तो अल्लाह तुमको काफ़ी है वही उसने ताक़तवर है जिसने अपनी मदद का और मुसलमानों का तुमको जोर दिया। (६२) और मुसलमानों के दिलों में आपस में मुहब्बत पैदाकर दी अगर तुम ज़मीन पर के सारे ख़ज़ाने भी ख़र्च करडालते तो भी उनके दिलों में मुहब्बत न पैदाकर सकते मगर अल्लाह ने उन लोगों में मुहब्बत पैदाकर दी वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (६३) ऐ पैग़म्बर अल्लाह और मुसलमान जो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं तुमको काफ़ी हैं। (६४) [रुकू ८]।

ऐ पैग़म्बर मुसलमानों को लड़ने पर उत्तेजित करो कि अगर तुम में से जमे रहनेवाले बीस भी होंगे दो सौ पर ज़्यादा ताक़तवर बैठेंगे अगर तुम में से सौ होंगे तो हज़ार काफ़िरों पर ज़्यादा ताक़तवर बैठेंगे क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो समझते ही नहीं। (६५) अब ख़ुदा ने तुम पर से अपने हुक्म का (बोझ) हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुममें कमज़ोरी है तो अगर तुम में से जमे रहनेवाले सौ होंगे दो सौ पर ज़्यादा ताक़तवर रहेंगे और अगर तुम में से हज़ार होंगे ख़ुदा के हुक्म से वह दो हज़ार पर ज़्यादा ताक़तवर बैठेंगे। अल्लाह उन लोगों का साथी भी है जो जमे रहते हैं। (६६) पैग़म्बर जब तक देश में अच्छी तरह मार धार न लें उनके पास क़ैदियों का रहना उचित नहीं। तुम तो संसार के माल असबाब चाहनेवाले हो और अल्लाह क़यामत की चीज़ें देना चाहता है और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (६७) अगर ख़ुदा के यहाँ से हुक्म तहरीरी पहिले से न हो चुका होता तो जो कुछ तुमने लिया है † उसमें अवश्य तुमको बुरी ही सज़ा मिलती। (६८) तो जो कुछ तुमको लूट से हाथ लगा है उसको पाकर समझ कर खाओ और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहर्बान है। (६९) [रुकू ९]।

† बद्र की लड़ाई में बहुत से काफ़िरों को मुसलमानों ने पकड़ लिया था। उनको फ़िदया (कुछ रुपया या माल) लेकर छोड़ दिया था। यहाँ (जो कुछ) का अर्थ है वही धन या माल जिसके बदले क़ैदियों को छोड़ दिया गया था।

ऐ पैग़म्बर क़ैदी जो तुम मुसलमानों के क़ब्ज़े में हैं उनको समझा दो कि अगर अल्लाह देखेगा कि तुम्हारे दिलों में नेकी है तो जो तुमसे छीना गया है उससे अच्छा तुमको देगा और तुम्हारे अपराध भी क्षमा करेगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (७०) और (ऐ पैग़म्बर) अगर यह लोग तुम्हारे साथ दग़ा करना चाहेंगे तो पहिले भी अल्लाह से दग़ा कर चुके हैं तो उसने इनको गिरफ़्तार करा दिया और अल्लाह जानकार और हिकमत वाला है। (७१) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और अल्लाह के रास्ते में अपनी जान माल से कोशिश की और जिन लोगों ने जगह दी और मदद की यही लोग एक के वारिस एक और जो लोग ईमान तो ले आये और देश त्याग नहीं किया तो तुम मुसलमानों को उनके वारिस होने से कुछ सम्बन्ध नहीं जब तक देश त्याग करके तुममें न आ मिलें। हां अगर दीन के बारे में तुमसे मदद चाहें तो तुमको उनकी मदद करनी लाज़िम है मगर उस जाति के मुक़ाबिले में नहीं कि तुम में और उनमें अहद हो और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (७२) और काफ़िर भी आपस में दोस्त हैं अगर ऐसा न करोगे तो देश में (फ़साद) फैल जायगा और देश में बड़ा फ़साद होगा। (७३) और जो लोग ईमान लायें उन्होंने (मुहाजरीन) देश त्याग किया और अल्लाह के रास्ते में कोशिश की और जिन लोगों ने जगह दी (अन्सार) और मदद की यही पक्के मुसलमान हैं इनके लिए क्षमा और इज़्ज़त की रोज़ी है। (७४) और जो लोग बाद को ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और तुम मुसलमानों के साथ होकर जिहाद किया तो वह तुम्हीं में दाख़िल हैं और रिश्तेदार अल्लाह के हुक्म के बमूजिब (ग़ैर आदमियों की निसबत) ज़्यादा हक़दार हैं। अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (७५) [रुकू १०]

———*———

[1]सूरे तौबा

मदीने में उतरी इसमें १२६ आयतें और १६ रुकू हैं।

जिन मुशरिकों के साथ तुमने अहद कर रक्खा था अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ से उनको साफ जवाब[2] है। (१) तो (ऐ मुशरिकों अमन के) चार महीने (ज़ीक़ाद, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम और रजब) मुल्क में चलो फिरो और जाने रहो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोगे और अल्लाह काफिरों को ज़िल्लत देनेवाला है। (२) और बड़े हज्ज के दिन अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ से लोगों को सूचना दी जाती है कि अल्लाह और उसका पैग़म्बर मुशरिकों से अलग है। पस अगर तुम तौबा करो तो यह तुम्हारे लिये भला है और अगर फिरे रहो तो जान रक्खो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोगे और काफ़िरों को दुःखदाई सजा की खुशखबरी सुना दो। (३) हाँ मुशरिकों में से जिनके साथ तुमने अहद कर रक्खा था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ किसी तरह की कमी नहीं की और न तुम्हारे सामने किसी की मदद की। वह अलग हैं तो उनके साथ जो अहद है उसे उस समय तक जो उनके साथ ठहरी थी पूरा करो क्योंकि अल्लाह उन लोगों को जो बचते हैं उन्हें वह चाहता है। (४) फिर जब अदब के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो और उनको गिरफ्तार करो। उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो फिर

---

[1]इस सूरत के शुरू में खुदा ने बिस्मिल्लाह का सलाम नहीं भेजा, क्योंकि ये आयतें उस समय उतरी हैं जब मुशिरकों ने मुसलमानों के साथ किया हुआ समझौता तोड़ डाला था और इस लिए खुदा उन से बहुत नाराज था।

[2]यानी मुशिरकों ने अपना अहद तोड़ा तो मुसलमान भी उस समझौते का पालन नहीं करेंगे। यह दुर्बलिया कि संधि की ओर इशारा है।

अगर वह लोग तोबा करें और नमाज पढ़ें और खैरात करें तो उनका रास्ता छोड़ दो। अल्लाह माफ करने वाला मेहरबान है। (५) (और ऐ पैग़म्बर) मुश्रिकों में से अगर कोई मनुष्य तुमसे शरण माँगे तो पनाह दो। यहाँ तक कि वह खुदा का शब्द सुनले फिर उसको उसके सुख की जगह वापिस पहुँचा दो इस वजह से कि यह लोग जानकार नहीं। (६) [रुकू १]

अल्लाह और उसके पैग़म्बर के समीप मुश्रिकों का अहद क्योंकर कायम रह सकता है जबकि उन्होंने उसको तोड़कर रख दिया है। मगर जिन लोगों के साथ तुमने मसजिद हराम के करीब वादा (हुदैबिया की सुलह) किया था, तो जब तक वह लोग तुममें सीधे रह तुम भी उनसे सीधे रहो क्योंकि अल्लाह उन लोगों को जो बचते हैं पसन्द करता है। (७) क्योंकर अहद रह सकता है अगर तुमसे जीत जावें तो तुम्हारे हक में रिश्तेदारी और अहद की रियायत न करेंगे— अपने मुँह की बात से राजी करते हैं और उनके दिल नहीं मानते और उनमें बहुत बेहुक्म हैं। (८) यह लोग खुदा की आयतों के बदले में थोड़ा सा लाभ पाकर खुदा के रास्ते से रोकने लगते हैं। यह लोग जो कर रहे हैं बुरे काम हैं। (९) किसी मुसलमान के बारे में न तो रिश्तेदारी का खयाल रखते हैं और न वादे का और यही लोग ज्यादती पर हैं। (१०) फिर अगर यह लोग तोबा करें और नमाज पढ़ें और जकात दें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं और जो लोग समझदार हैं उनके लिये हम अपनी आयतों को खोल बयान करते हैं। (११) और अगर यह लोग अहद किये पीछे अपनी कसमों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तानाजनी (आक्षेप) करें तो तुम कुफ्र (इन्कारी के) अगुओं से लड़ो उनकी कसमें कुछ नहीं शायद यह लोग मान जावें। (१२) तुम इन लोगों से क्यों न लड़ो जिन्होंने अपनी कसमों को तोड़ डाला और पैग़म्बर के निकाल देने का इरादा किया और तुमसे (छेड़खानी भी) अव्वल इन्होंने ही शुरू की तुम इन लोगों से डरते हो। पस अगर तुम ईमान रखते हो तो तुमको अल्लाह से ज्यादा डरना चाहिये।

(१३) इन लोगों से लड़ो खुदा तुम्हारे ही हाथों इनको सजा देगा और इनको बदनाम करेगा और इन पर तुमको जीत देगा और मुसलमानों के दिलों का गुस्सा ठण्डा करेगा। (१४) और इनके दिलों में जो गुस्सा है उसको भी दूर करेगा और अल्लाह जिसकी चाहे तौबा कबूल कर ले और अल्लाह जानकार हिकमत वाला है। (१५) क्या तुमने ऐसा समझ रक्खा है कि छूट जाओगे और अभी अल्लाह ने उन लोगों को देखा तक नहीं जो तुममें से कोशिश करते हैं और अल्लाह और उसके पैगम्बर और मुसलमानों को छोड़कर किसी को अपना दोस्त नहीं बनावे और जो कुछ भी तुम लोग कर रहे हो अल्लाह को उसकी खबर है। (१६) [रुकू २]

मुशिरकों को कोई अधिकार नहीं कि अल्लाह की मसजिद आबाद रक्खें और अपने ऊपर कुफ्र (इन्कारी) को मानते आयें यही लोग हैं जिनका किया धरा सब बेकार हुआ और यही लोग हमेशा दोजख में रहने वाले हैं। (१७) अल्लाह की मसजिद को वही आबाद रखता है जो अल्लाह और कयामत पर ईमान लाता है और नमाज पढ़ता और जकात देता रहा और जिसने खुदा के सिवाय किसी का डर न माना तो ऐसे लोगों की निसबत उम्मीद की जा सकती है कि ये शिक्षा पानेवालों में होंगे। (१८) क्या तुम लोगों ने ‡हाजियों के पानी पिलाने और इज्जत वाली मसजिद आबाद रखने का उस शख्स (के कामों) जैसा समझ लिया है जो अल्लाह और कयामत पर ईमान लाता और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है अल्लाह के नजदीक तो यह (लोग एक दूसरे के) बराबर नहीं और अल्लाह जालिम लोगों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया करता। (१९) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और अपने जान व माल से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किये अल्लाह के यहाँ दर्जे में कहीं बढ़कर हैं और यही हैं जो कामयाब हैं। (२०) इनका परवरदिगार इनको अपनी कृपा और रजामन्दी और ऐसे बागों का मंगल समाचार देता है जिनमें इनको

‡ हज यात्रा करने वालों।

हमेशा का आराम मिलेगा। (२१) उन बागों में हमेशा रहेंगे अल्लाह के यहाँ बड़ा बदला है। (२२) मुसलमानों अगर तुम्हारे बाप और तुम्हार भाइ ईमान के मुकाबिले में इन्कारी को भला समझे तो उनको मित्र मत बनाओ और जो तुममें से ऐसे बाप भाईयों के साथ मित्रता रक्खेगा तो यही लोग बेइंसाफ हैं। (२३) (ऐ पैग़म्बर! मुसलमानों को) समझा दो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हरा भाई और तुम्हारी स्त्रियाँ और तुम्हारे कुटुम्बी और माल जो तुमने कमाये हैं और व्यापार जिसके मन्दा हो जाने का तुमको सन्देह हो और मकानात जिनको तुम्हारा दिल चाहता है अल्लाह और उसके पैग़म्बर और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने से तुमको ज्यादा प्यारे हों तो सब्र करो यहाँ तक जो कुछ खुदा को करना है वह लाकर मौजूद करे और अल्लाह उन लोगों को जो शिर उठावें उपदेश नहीं दिया करता। (२४) [रुकू ३]

अल्लाह बहुत से मौकों पर तुम्हारी मदद कर चुका है और (खास कर) हुनैन (की लड़ाई) के दिन जब कि तुम्हारी ज्यादती ने तुमको घमंडी† कर दिया था तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आती और जमीन ज्यादा होने पर भी तुम पर संगी करने लगी। फिर तुम पीठ फेरकर भाग निकले। (२५) फिर अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर और मुसलमानों पर अपना सब्र उतारा और ऐसी फौजें भेजीं जो तुमको दिखलाई§ नहीं पड़ती थीं और काफिरों को बड़ी सख्त मार दी और

---

† मक्के की विजय के बाद मुसलमानों की संख्या बढ़ गई थी। जब उनको हवाजिन जाति के चढ़ाई करने के इरादे का पता लगा तो कहने लगे कि उनको मार भगाना क्या मुशकिल है। हम लगभग १६००० हैं और हमारे शत्रु केवल ४ या ५ हजार। खुदा को उनका घमंड बुरा लगा। हवाज़िन ने उनपर ऐसा कड़ा धावा किया कि ७० सैनिकों को छोड़कर सब भाग खड़े हुए। अहंकार का यह परिणाम हुआ। बाद में खुदा की मदद से जीत हुई।

§ फरिश्तों की सेना ने हुनैन के युद्ध में मुसलमानों की सहायता की तब उनको विजय प्राप्त हुई। इस लड़ाई में जितना लूट का माल मुसलमानों के हाथ लगा उतना किसी और लड़ाई में नहीं लगा।

काफिरों की यही सजा है। (२६) फिर उसके बाद खुदा जिसको चाहे तोबा देगा और अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है। (२७) मुसलमानों मुशरिक तो गन्दे हैं तो इस वर्ष के बाद इज्जत वाली मस्जिद के पास भी न फटकने पायें और अगर तुमको गरीबी का खटका हो तो खुदा चाहेगा तो तुमको अपनी दया से मालदार कर देगा खुदा जानकार हिकमतवाला है। (२८) किताब वाले जो न खुदा को मानते हैं और न कयामत को और न अल्लाह और उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन को मानते हैं इनसे लड़ो यहाँ तक कि जलील होकर (अपने) हाथों से ‡जजिया दें। (२६)
[रुकू ४]

यहूद कहते हैं कि उजेर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाइ कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं यह उनके मुँह का कहना है उन्हीं काफिरों कैसी बातें बनाने लगे जो इनसे पहिले हैं खुदा इनको गारत करे किधर को भटके चले जा रहे हैं। (३०) इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर अपने विद्वानों और अपने यतियों और मरियम के बेटे मसीह को खुदा बना खड़ा किया हालाँकि इनको यही हुक्म दिया गया था कि एक ही खुदा की पूजा करते रहना उसके सिवाय कोई पूजित नहीं वह उनकी शिर्क से पाक है। (३१) चाहते हैं कि खुदा की रोशनी का मुँह से बुझा दें और खुदा को मन्जूर है कि हर तरह पर अपनी रोशनी को पूरा करे काफिरों को भले ही बुरा लगे। (३२) वही है जिसने अपने पैगम्बर को उपदेश और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि उसको सम्पूर्ण दीनों पर जीत दे। मुशरिकों को भले ही बुरी लगे। (३३) मुसलमानों! अक्सर विद्वान और यती लोगों के माल बेकार खाते और खुदा के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चाँदी जमा करते रहते और उसको खुदा की राह में खर्च नहीं करते तो उनको दुःखदाई सजा की खुशखबरी सुना दो। (३४) जबकि उस

‡ जजिया उस कर को कहते हैं, जो मुसलमान शासक अपने खिलाफ मजहबवालों से लिया करते थे।

(सोने चाँदी) को दोज़ख़ की आग में तपाया जायगा फिर उससे उनके माथे और उनकी करवटें और उनकी पीठें दागी जायँगी और कहा जायगा यह है जो तुमने अपने लिये इकट्ठा किया था तो अपने जमा किये का मजा चखो। (३५) जिस दिन ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन पैदा किये हैं ख़ुदा के यहाँ महीनों की गिनती अल्लाह की किताब में १२ महीने हैं जिनमें से चार अदब के हैं सीधा दीन तो यह है तो मुसलमानों इन चार महीनों में अपनी जानों पर जुल्म न करना (लड़ना नहीं) और तुम मुसलमान सब मुशरिकों से लड़ो जैसे वह तुम सब से लड़ते हैं। जाने रहो कि अल्लाह परहेज़गारों का साथी है। (३६) महीनों का हटा देना भी एक ज्यादा इन्कारी है। जिसके कारण से काफिर भटकते रहते हैं एक वर्ष एक महीने को हलाल समझ लेते हैं और उसी को दूसरी वर्ष हराम ठहराते हैं। अल्लाह ने जो हराम किए हैं उस गिनती को मुताबिक करके अल्लाह के हराम किये हुए को हलाल कर लें। इनके बुरे आचरण इनको भले दिखाई देते हैं और अल्लाह काफ़िरों को उपदेश नहीं दिया करता। (३७) [रुकू ५]

मुसलमानों तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि जिहाद के लिये निकलो तो तुम ज़मीन पर ढेर हो जाते हो क्या क़यामत के बदले दुनियाँ की जिन्दगी पर सब्र कर बैठे हो। कयामत के मुकाबिले में ज़िन्दगी के फ़ायदे बिल्कुल नाचीज़ हैं। (३८) अगर तुम न निकलोगे तो ख़ुदा तुमको बड़ी दुखदाई मार देगा और तुम्हारे बदले दूसरे लोग लाकर मौजूद करेगा और तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे और अल्लाह हर चीज पर ताक़तवर है। (३६) अगर तुम पैगम्बर की मदद न करोगे तो उसी ने अपने पैगम्बर की मदद उस वक्त भी की थी जब काफ़िरों ने उनको (मक्का से) निकाल बाहर किया था, जब वह दोनों (अबूबकर और मोहम्मद) सौर की गुफा में छिपे थे उस वक्त पैगम्बर अपने साथी को समझा रहे थे कि मत डरो अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह ने पैगम्बर पर अपना सब्र उतारा और उनको ऐसी फौजों से मदद दी जिनको तुम

लोग न देख सके और काफ़िरों की बात नीची रही और अल्लाह ही की बात ऊंची है और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (४०) हल्के और बोझिल (हथियार बन्द हो या बेहथियार तो पैगम्बर के बुलाने पर) निकल खड़े हुआ करो और अपनी जान व माल से ख़ुदा की राह में जिहाद करो अगर तुम जानते हो तो यह तुम्हारे हक़ में भला है। (४१) अगर प्रत्यक्ष फ़ायदा होता और सफ़र भी मामूली दर्जे का होता तो तुम्हारे साथ चलते लेकिन इनको सफ़र दूर मालूम हुआ और ख़ुदा की कसम खा खाकर कहेंगे कि अगर हमसे बन पड़ता तो हम जरूर तुम लोगों के साथ निकल खड़े होते। यह लोग आप अपनी जानों को जोखों में डाल रहे हैं और अल्लाह को मालूम है कि यह लोग झूठे हैं। (४२) [रुकू ६]

ऐ मोहम्मद ख़ुदा तुझे माफ करे। तूने क्यों उनको इस लड़ाई में न जाने का हुक्म दिया इससे पहिले कि तुझे उन में सच्चे और झूठे मालूम हों। (४३) जो लोग ख़ुदा का और कयामत का विश्वास रखते हैं वह तो तुमसे इस बात की मोहलत नहीं माँगते कि अपनी जान व माल से जिहाद में शरीक न हों। और अल्लाह परहेजगारों को खूब जानता है। (४४) तुमसे छुट्टी के चाहने वाले वही लोग हैं जो अल्लाह और कयामत का विश्वास नहीं रखते। उनके दिल शक में पड़े हैं तो वह अपने शक में हैरान हैं। (४५) और अगर यह लोग निकलने का इरादा रखते होते तो उसके लिये कुछ तैयारी करते मगर अल्लाह को इनका जगह से हिलना ही नापसन्द हुआ तो उसने इनको अहदी बना दिया और कह दिया कि जहाँ और बैठे हैं तुम भी उनके साथ बैठे रहो। (४६) अगर यह लोग तुममें निकलते तो तुममें और ज्यादा खराबियाँ ही डालते और तुममें फ़साद फैलाने की गरज से तुम्हारे दर्मियान दौड़े दौड़े फिरते और तुममें उनके भेदी मौजूद हैं और अल्लाह ज़ालिमों को जानता है।† (४७) उन्होंने पहिले भी फ़साद

---

† यह हाल है उन लोगों का जो बाबा मुसलमान होने का करते थे मगर दिल से मुसलमानों का बुरा चाहते थे। जब इनसे कहा जाता था कि लड़ाई

डलवाना चाहा और तुम्हारे लिये तदबीरों की उलट पलट करते ही रहे यहाँ तक कि सची प्रतिज्ञा आ पहुँची और ख़ुदा की आज्ञा पूरी हुई और उनको नागवार हुआ। (४८) इनमें वह है जो कहता है कि मुझको छुट्टी दे और मुझको विपत्ति में न डाल। सुनो जो यह लोग विपत्ति में तो पड़े ही हैं और दोजख़ काफ़िरों को घेरे हुए है। (४९) अगर तुमको कोई भलाई पहुँचे तो उनको बुरा लगता है और अगर तुमको कोई आफ़त पहुँचे तो कहने लगते हैं कि हमने पहिले से ही अपना काम करा लिया था और प्रसन्नता म वापिस चले जाते हैं। (५०) कहो कि जो कुछ ख़ुदा ने हमारे लिये लिख दिया है वही हमको पहुँचेगा वही हमारा काम का सभालने वाला है और मुसलमानों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (५१) (पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि तुम हमारे हक में दो भलाइयों में† एक का तो इन्तजार करते रहो और हम तुम्हारे हक में इस बात के मुन्तज़िर हैं कि ख़ुदा तुम पर अपने यहाँ स कोई सज़ा उतारे या हमारे हथा से (तुम्हें मरवा डाले) तो तुम मुन्तजिर रहो हम तुम्हारे साथ मुन्तजिर हैं। (५२) (पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि तुम ख़ुशदिली से ख़र्च करो या बेदिली से ख़ुदा तुमसे क़ुबूल नहीं करेगा क्योंकि तुम हुक्म न मानने वाले हो। (५३) और उनका दिया इसलिये क़ुबूल नहीं होता कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म नहीं माना और नमाज़ को अलसाये हुए पढ़ते हैं और बुरे दिल से ख़र्च करते हैं। (५४) तू इनके माल और औलाद से ताज्जुब न कर ख़ुदा दुनिया की ज़िन्दगी में इनको माल और औलाद की वजह से सज़ा देना चाहता है और यह काफ़िर ही मरेंगे। (५५) अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वह तुममें हैं हालाँकि वह तुममें नहीं हैं बल्कि वह डरपोक हैं। (५६) ग़ार (खोह) या घुस बैठने की जगह अगर कहीं बचाव पावें तो रस्सी

के लिए तैयार हो तो एक न एक बात बना देते थे। इन का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैया था।

† विजय या शहादत (धर्म में शरीर त्याग) के बाद स्वर्ग।

रहे हो तुमको बतायेगा। (६४) जब तुम लौटकर उनके पास जाओगे तो यह लोग ज़रूर तुम्हारे आगे ख़ुदा की क़समें खायेंगे ताकि तुम इनको माफ़ करो। सो इनको जाने दो क्योंकि यह लोग नापाक हैं और इनका ठिकाना नरक है। यह उनकी कमाई का फल है। (६५) यह तुम्हारे सामने क़समें खायेंगे ताकि तुम इनसे राज़ी हो जाओ। सो अगर तुम इनसे राज़ी हो जाओ तो अल्लाह इन बेहुक्म नाफ़र्मान लोगों से राज़ी न होगा। (६६) गाँव के लोग कुफ़् (इन्कार) और भेद में बड़े कठोर हैं। ख़ुदा ने जो अपने पैग़म्बर पर किताब उतारी है उसके हुक्मों को समझने के योग्य नहीं और अल्लाह जानने वाला और हिकमत वाला है। (६७) देहातियों में से कुछ लोग हैं कि उनको जो ख़र्च करना पड़ता है उसको चट्टी (दण्ड) समझते और तुम मुसलमानों के हक़ में ज़माने के फेरों के मुन्तज़िर‡ हैं इन्हीं पर (ज़माने के) बुरे फेर का असर पड़े। अल्लाह सुनता और जानता है। (६८) और देहातियों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह का और क़यामत का यक़ीन रखते और जो कुछ (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करते हैं उसमें ख़ुदा के पास का और पैग़म्बर की दुआओं का ज़रिया समझते हैं। तो सुन रक्खो यह उनके लिये नज़दीक है। अल्लाह ज़रूर उनको अपने रहम में ले लेगा। अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (६९) [रुकू १२]

महाजरीन (देश त्यागियों) और मदद करनेवालों में से जो लोग (मुसलमानी मत क़्बूल करने में) सबसे पहले अगुआ हुए और यह लोग जो सच्चे दिल से ईमान में दाख़िल हुए ख़ुदा उनसे ख़ुश और वह (ख़ुदा से) ख़ुश हुए और ख़ुदा ने उनके लिए बाग़ तैयार कर रक्खे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (१००) तुम्हारे आस पास के बाज़ देहातियों में (बाज़) मुनाफ़िक़ (कपटी) हैं और ख़ुद मदीने के रहने वालों में जो भेद पर अड़े बैठे हैं (ऐ पैग़म्बर) तुम इनको नहीं जानते। ह

‡ यानी चाहते हैं कि तुम पर कोई बड़ी आपत्ति पड़े और तुम्हारा ज़ोर घटे।

इनको जानते हैं सो हम इनको दोहरी मार देंगे फिर बड़ी सजा की ओर लौटाये जायेंगे। (१०१) (कुछ) और लोग हैं जिन्होंने अपने अपराध को मान लिया है (और उन्होंने) कुछ काम भले और कुछ बुरे मिले जुले किए ये आश्चर्य नहीं कि अल्लाह उनकी तौबा क़बूल करे क्योंकि अल्लाह क्षमा करने वाला मेहरबान है। (१०२) (ऐ पैग़म्बर यह लोग अपने माल की जकात दें तो) इनके माल की जकात ले लिया करो कि जकात के क़बूल करने से तुम इनको पवित्र करते हो और उनको शुभ आशीर्वाद दो क्योंकि तुम्हारी दुआ इनके लिये संतोष है और अल्लाह सुनता जानता है। (१०३) क्या इन लोगों को इसकी खबर नहीं कि अल्लाह अपने सेवकों की तौबा क़बूल करता और खैरात लेता और अल्लाह ही बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है। (१०४) और (ऐ पैग़म्बर इनको) समझा दो कि तुम (अपनी जगह) काम करते रहो सो अभी तो अल्लाह पैग़म्बर और मुसलमान तुम्हारे कामों को देखेंगे और जरूर (मरे पीछे) तुम उस की तरफ़ जो जाहिर और छिपे को जानता है लौटाये जाओगे। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो (यह) बतावेगा। (१०५) (कुछ) और लोग हैं जो ख़ुदा के हुक्म के मुन्तज़िर (राह देखने वाले) हैं। यह या तो उनको सजा देवे या उनकी तौबा क़बूल करे और अल्लाह जानने वाला और हिकमत वाला है। (१०६) जिन्होंने इस मतलब से एक †मसजिद बना खड़ी की कि नुकसान पहुँचायें और कुफ्र (इन्कार) करें और मुसल-मानों में फूट डालें और उन लोगों को शरण दें जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ पहिले लड़ चुके हैं और (पूछा जायगा) तो सौगन्धें खाने लगेंगे कि हमने तो भलाई के सिवाय और किसी तरह की इच्छा नहीं की और अल्लाह गवाही देता है कि ये झूठे हैं। (१०७) सो (ऐ पैग़म्बर) तुम उसमें कभी खड़े भी न होना। हाँ वह मसजिद जिसकी नींव पहले दिन से परहेज़गारी पर रक्खी गई है वह इस योग्य

---

† कुछ मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों में फूट डालने के विचार से एक मसजिद मसजिद क़ुबा के सामने ही बनवाई थी। इन आयतों में उसी का बयान है।

है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग हैं जो पवित्र रहने को पसंद करते हैं और अल्लाह पवित्रता से रहनेवालों को पसंद करता है। (१०८) भला जो आदमी खुदा के डर से और उसकी खुशी पर अपनी इमारत की नींव रक्खे वह उत्तम है या वह जो गिरनेवाली खाई के किनारे अपनी नींव रक्खे। फिर वह उसको नरक की आग में ले गिरे और ईश्वर ज़ालिम लोगों को उपदेश नहीं दिया करता। (१०९) यह इमारत जो इन लोगों ने बनाई है इसके कारण से इन लोगों के दिलों में हमेशा शक और शुबह रहेगा यहाँ तक कि इनके दिलों के टुकड़े टुकड़े हो जावें। अल्लाह जानने वाला और बड़ा हिकमत वाला है। (११०) [रुकू १३]

अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें और उनके माल खरीद लिये हैं कि उनके बदले उनको बैकुण्ठ देगा ताकि अल्लाह की राह में लड़ें और मारें और मरें यह खुदा की पक्की प्रतिज्ञा है जिसका पूरा करना उसने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है (और यह अहद) तौरात, इंजील और कुरान में है और खुदा से बढ़कर अपने अहद को पूरा और कौन हो सकता है। तो अपने सौदे का जो तुमने खुदा के साथ किया है आनन्द मनाओ और यही बड़ी कामयाबी है। (१११) तौबा करनेवाले, दुआ करनेवाले, तारीफ करनेवाले, सफर करनेवाले, रुकू करने वाले सिजदा (वन्दना) करनेवाले, अच्छे काम की सलाह देनेवाले, बुरे काम से मना करनेवाले और अल्लाह ने जो हदें (मर्यादा) बांध दी हैं उनको निगाह रखनेवाले यही मोमिन हैं और (ऐ पैग़म्बर ऐसे) मुसलमानों को खुशखबरी सुना दो। (११२) जब पैग़म्बर और मुसलमानों को मालूम हो गया कि मुशरकीन दोज़ख़ी होंगे तो उनको यह भला नहीं मालूम देता कि उनके लिये माफी चाहें। गो वह रिश्तेदार (सम्बन्धी) भी क्यों न हों। (११३) इब्राहीम ने अपने बाप के लिये माफी की प्रार्थना की थी। सो एक वादे से जो इब्राहीम ने अपने बाप से कर लिया था। फिर जब उनको मालूम हो गया कि वह खुदा

का दुश्मन है तो आप से सम्बन्ध छोड़ दिया इब्राहीम बड़े कोमल दिल और सहनशील थे। (११४) और अल्लाह की शान से बाहर है कि एक जाति को शिक्षा दिये पीछे राह से उन्हें भटकाए जब तक उसको वह चीजें न बतलाये जिनसे वह बचते रहें। अल्लाह हर चीज से वाक़िफ़ है। (११५) और आसमान और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही की है वही जिलाता और मारता है और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई सहायक और मददगार नहीं। (११६) ख़ुदा ने पैग़म्बर पर कृपा की और देशत्यागी और मदद करनेवालों पर जिन्होंने तंगी के जमाने में पैग़म्बर का साथ दिया जबकि इनमें से बाज के दिल डगमगा चले थे फिर उसी ने इन पर अपनी कृपा की। इसमें शक नहीं कि ख़ुदा इन सब पर अत्यंत दया रखता है। (११७) उन तीनों§ पर जो पीछे रक्खे गये थे यहाँ तक कि जब ज़मीन चौड़ी होने पर भी तंगी करने लगी और वह अपनी जान से भी तंग आ गये और समझ लिया कि ख़ुदा के सिवाय और कहीं पनाह नहीं फिर ख़ुदा ने उनकी तौबा क़बूल कर ली ताकि तौबा किये रहें। बेशक अल्लाह बड़ा ही तौबा क़बूल करने वाला मिहरबान है। (११८) [रुकू १४]

मुसलमानों! ख़ुदा से डरो सच बोलने वालों के साथ रहो। (११९) मदीना वाले और उनके आसपास के देहातियों को मुनासिब न था कि ख़ुदा के पैग़म्बर से पीछे रह जायें और न यह कि पैग़म्बर की जान की परवाह न करके अपनी जानों की चिन्ता में पड़ जायें। यह इसलिये उनको ख़ुदा की राह में प्यास और मेहनत और भूख की तकलीफ़ पहुंचती हो और जिन स्थानों में काफ़िरों को इनका चलना

---

§ तीन मुसलमानों से तबूक की लड़ाई में भाग नहीं ले सके थे। उन पर कुछ ऐसी आपत्ति पड़ी कि वे अपनी मृत्यु को अपने जीवन की अपेक्षा अधिक अच्छा समझने लगे। अन्त में उन्होंने क्षमा चाही। उनके नाम यह हैं (१) मुरारा बिन रबी (२) काब बिन मालिक और (३) हिलाल बिन उमैया।

नागवार होता है वहाँ चलते हैं और दुश्मनों से जो कुछ मिल जाता है तो हर काम के बदले इनका कर्म अच्छा लिखा जाता है। अल्लाह सच्चे दिलवालों के इनाम को बेकदर नहीं होने देता (१२०) थोड़ा या बहुत जो कुछ खर्च करते हैं और जो मैदान उनको तै करने पड़ते हैं यह सब इनके नाम लिखा जाता है ताकि अल्लाह इनको इनके कर्मों का अच्छे से अच्छा बदला देवे। (१२१) और मुनासिब नहीं कि मुसलमान सबके सब निकल खड़े हों ऐसा क्यों न किया कि उनकी हर एक जमात में से कुछ लोग निकलते कि दीन की समझ पैदा करते और जब अपनी जाति में वापस आते तो उनको डराते ताकि यह लोग बचें। (१२२) [रुकू १५]

मुसलमानों! अपने आस-पास के काफ़िरों से लड़ो और चाहिए कि यह तुमसे सख्ती मालूम करें और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो बचते हैं। (१२३) जिस वक्त कोई सूरत उतारी जाती है तो मुनाफ़िकों से लोग पूछने लगते हैं कि भला इसने तुममें से किसका ईमान बढ़ा दिया सो यह जो ईमानवाले हैं उसने उनका तो ईमान बढ़ाया और यह खुशियाँ मनाते हैं। (१२४) और जिनके दिलों में (कपट का) रोग है ता इससे उनकी अपवित्रता और बुरे (नापा की ज्यादाह बढ़ी) और यह लोग काफ़िर ही मरेंगे। (१२५) क्या नहीं देखते कि यह लोग हर साल एक बार या दो बार विपत्ति (आफ़त) में पड़ते रहते हैं इस पर भी न तो तौबा ही करते हैं और न हिदायत ही मानते हैं। (१२६) जब कोई सूरत उतारी जाती है तो उनमें से एक दूसरे की तरफ़ देखने लगते हैं और कहते हैं कि तुमको कोई देखता§ है या नहीं फिर चल देते हैं। अल्लाह ने इनके दिलों को फेर दिया इसलिए यह बिलकुल नहीं समझते (१२७) तुम्हारे पास तुम्हीं में के एक पैग़म्बर आये हैं। तुम्हारा दुःख इनको कठिन मालूम

§ मुनाफ़िकों को हर समय भय बना रहता था कि कोई मुसलमान उन को ताड़ न जाय इसलिए जब कोई आयत उनके विषय में उतरती थी तो वह एक दूसरे को देखने लगते और तुरन्त भाग खड़े होते।

होता है। वह तुम्हारी भलाई चाहता है और ईमानवालों पर प्रेम रखने वाला और मेहर्बान है। (१२८) इस पर भी यह लोग सिर उठायें तो कह दो कि मुझको तो अल्लाह काफी है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं है उसी पर भरोसा रखता हूँ और अर्श जो बड़ा है उसका भी वही मालिक है। (१२६) [रुकू १६]

सूरे यूनिस।

मक्के में उतरी इसमें १०६ आयतें और ११ रुकू हैं।

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। अलिफ लाम, रा, यह ऐसी किताब की आयतें हैं जिसमें हिकमत की बातें हैं। (१) क्या मक्कावालों को इस बात का ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं में के एक आदमी की तरफ इस बात का पैगाम भेजा कि लोगों को डराओ और ईमानवालों को खुशखबरी सुनाओ कि उनके परवर्दिगार के पास उनका बड़ा आदर है। काफिर कहने लगे हो न हो यह तो जाहिरा जादूगर है। (२) तुम्हारा परवर्दिगार वही अल्लाह है जिसने ६ दिन में आसमान और जमीन को बनाया फिर अर्श पर आ विराजा हर एक काम का प्रबन्ध कर रहा है कोई सिफारिशी नहीं मगर उसकी आज्ञा हुये पीछे यही अल्लाह तो तुम्हारा पालनकर्त्ता है तो उसी की पूजा करो क्या तुम विचार नहीं करते। (३) उसी की तरफ (तुम सबको) लौटकर जाना है अल्लाह का वादा सच्चा है। उसी ने अव्वल मर्तबा दुनिया को पैदा किया है फिर उनको दुबारा जिन्दा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये न्याय के साथ उनको बदला दे। काफिरों के लिए उनके कुफ्र की सजा में पीने को खौलता पानी और दुःखदाई सजा होगी। (४) वही जिसने

सूरज को चमकीला बनाया और चाँद को रोशन और उसकी मंजिलें ठहराईं ताकि तुम लोग वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। यह सब ख़ुदा ने मसलहत (विचार) से बनाया है। जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए पते बयान करता है। (५) जो लोग डर मानते हैं उनके लिए रात और दिन के आने-जाने में और जो कुछ ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन में पैदा किया है निशानियाँ हैं। (६) जिन लोगों को हमसे मिलने की उम्मीद नहीं और दुनिया की जिन्दगी से ख़ुश हैं और विश्वास के साथ जीवन व्यतीत करते हैं और जो लोग हमारी निशानियों से बेख़बर हैं। (७) यही लोग हैं जिनकी करतूत के बदले उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा। (८) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके ईमान की बुद्धि से उनको उनका परवर्दिगार राह दिखा देगा कि आराम के बागों में रहेंगे और उनके नीचे नहरें बहती होंगी। (९) उनमें पुकार उठेंगे ऐ ख़ुदा! तेरी ज़ात पाक है और उनमें उनकी दुआयें ख़ैर की सलाम होंगी। उनकी आख़िरी प्रार्थना होगी "अल्हम्द लिल्लाह रब्बुल आल-मीन" यानी हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा के लायक है जो दुनिया जहान का परवर्दिगार है। (१०) [रुकू १]

जिस तरह लोग फायदों के लिए जल्दी किया करते हैं अगर ख़ुदा भी उनको जल्दी से नुक्सान पहुँचा दिया करता तो उनको मौत आ चुकी होती और हम उन लोगों को जिन्हें हमारे पास आने की आशा नहीं छोड़े रखते हैं कि अपनी नटखटी में पड़े भटका करें। (११) जब मनुष्य को कष्ट पहुँचता है तो पड़ा या बैठा या खड़ा हमको पुकारता है फिर जब हम उसकी तकलीफ़ को उससे दूर कर देते हैं तो ऐसे चल देता है कि गोया उस तकलीफ़ के लिए जो उसको पहुँच रही थी हमको पुकारा ही न था। जो लोग हद से कदम बाहर रखते हैं उनको उनके काम इसी तरह अच्छे कर दिखाये गये हैं। (१२) और तुमसे पहिले कितनी उम्मतें हुईं। जब उन्होंने नटखटी पर कमर बाँधी हमने उनको मार डाला। उनके पैग़म्बर उनके पास

खुली करामत लेकर और उनको ईमान लाना नसीब न हुआ। पापियों को हम इस तरह दण्ड दिया करते हैं। (१३) फिर उनके पीछे हमने जमीन में तुम लोगों को नायब बनाया ताकि देखें तुम कैसे कमम करते हो। (१४) जब हमारे खुले-खुले हुक्म इन लोगों को पढ़कर सुनाये जाते हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने की उम्मीद नहीं वह पूछते हैं कि इसके सिवाय और कोई क़ुरान लाओ या इसी को बदल लाओ। कहो कि मेरी तो ऐसी सामर्थ्य नहीं कि अपनी तरफ से उसको बदलूँ। मेरी तरफ जो खुदाई पैगाम आता है मैं तो उसी पर चलता हूँ। अगर मैं अपने परवरदिगार की अवज्ञा करू तो मुझे बड़े दिन की सजा का डर लगता है। (१५) कहो अगर खुदा चाहता तो मैं न तुमको पढ़कर सुनाता और न खुदा तुमको इससे आगाह करता इससे पहिले मैं मुद्दतों तुममें रह चुका हूँ क्या तुम नहीं समझते† । (१६) तो उससे बढ़कर जालिम कौन है जो खुदा पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाये गुनाहगारों का भला नहीं होता। (१७) और खुदा के सिवाय ऐसी चीजों को पूजते हैं जो उनको नुक़सान या फायदा नहीं पहुँचा सकतीं और कहते हैं कि अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारशी हैं। कहो क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज की खबर देते हो जिसे वह न आसमान में पाता है और न जमीन में और वह इस शिर्क से पाक और अधिक ऊंचा है। (१८) लोग एक ही तरीके पर थे। भेद तो उनमें पीछे हुआ और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से अहद पहले से न हुई होती तो जिन चीजों में वह भेद डाल रहे हैं उनके दर्मियान उनका फैसला कर दिया गया होता। (१९) मक्के वाले कहते हैं इसको उसके परवर्दिगार की तरफ से कोई करामात क्यों नहीं दी गइ कहो कि गैब की खबर तो बस खुदा को ही है तो तुम इन्तजार करो। मैं तुम्हारे साथ इन्तजार करने वालों में हूँ। (२०) [रुकू २]

---

† यानी म ४० बर्ष से तुम लोगों के साथ जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। मैंने इससे पहले कोई दावा नबी होने का नहीं किया। अब कर रहा हू तो जान लो कि जो कुछ कह रहा हूँ अपनी तरफ़ से नहीं कह रहा बल्कि खुदा ही के हुक्म से कह रहा हूँ।

जब लोगों को तकलीफ पहुँचने के बाद हम मेहर्बानी का स्वाद चखा देते हैं तो बस हमारी आयतों में बहाना लगाते हैं कहो अल्लाह की युक्ति ज्यादा चलती है (वह फर्माता है) हमारे फरिश्ते तुम्हारी करतूतें लिखते हैं। (२१) वही है जो तुम लोगों को जंगल और नदी में फिराता है यहाँ तक कि कोई वक्त तुम किश्तियों में होते हो और वह लोगों को अनुकूल हवा की सहायता से चलाता है और लोग उनसे खुश होते हैं। किश्ती को तूफानी हवा आवे और लहरें हर तरफ से उन पर आने लगें और वह समझे कि अब हम घिर गये तो खालिस दिल से खुदा ही को मानकर उससे दुआएँ माँगने लगते हैं कि अगर तू हमको इस कष्ट से बचाये तो हम जरूर शुक्र बजा करें। (२२) फिर जब उसने बचा दिया तो वह बेकार की नटखटी करने लगते हैं। लोगों तुम्हारी नटखटी तुम्हारी ही जानों पर पड़ेगी। यह दुनिया की जिन्दगी के फायदे हैं आखिरकार तुम्हें हमारी ही तरफ लौटकर आना है तो जो कुछ भी तुम करते रहे हम तुमको बता देंगे। (२३) दुनिया की जिन्दगी की तो मिसाल उस पानी कैसी है कि हमने उसको आसमान से बरसाया फिर जमीन की पैदावार जिसको आदमी और चौपाये खाते हैं पानी के साथ मिल गई यहाँ तक कि जब जमीन ने अपना सिंगार कर लिया और खुशनुमा हुई और खेतवालों ने समझा कि वह उस पैदावार पर काबू पागये और रात के वक्त या दिन के वक्त हमारा हुक्म उस पर आया। फिर हमने उसका ऐसा कटा हुआ ढेर कर दिया कि गोया कल उसका निशान न था। जो लोग सोचते समझते हैं उनके लिये आयतें बयान करते हैं। (२४) अल्लाह सलामती के घर (जन्नत) की तरफ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है। (२५) जिन लोगों ने भलाई की उनके लिये भलाई है और कुछ बढ़कर भी और उनके मुहों पर स्याही न छाई होगी और न बदनामी। यही बैकुण्ठवासी हैं कि वह बैकुण्ठ में हमेशा रहेंगे। (२६) और जिन लोगों ने बुरे काम किये तो बुराई का बदला वैसे ही (बुराई) और उन पर बदनामी छा रही होगी।

अल्लाह से कोई उनको बचानेवाला नहीं गोया अन्धेरी रात के टुकड़े उनके मुँह पर चढ़ा दिये हैं यही दोजखी हैं कि वह नरक में हमेशा रहेंगे। (२७) और जिसदिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर मुशरकीन को हुक्म देंगे कि तुम और जिनको तुमने शरीक बनाया था वह जरा अपनी जगह ठहरें। फिर हम उनके आपस में फूट डाल देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि हमारी पूजा तो तुम कुछ करते ही नहीं थे। (२८) हमारे और तुम्हारे बीच बस खुदा ही साक्षी है हमको तो तुम्हारी पूजा की बिल्कुल खबर ही नहीं थी। (२९)। वहीं हर शख्स अपने काम को जो उसने किये हैं जाँच लेगा और सब लोग अपने सच्चे मालिक अल्लाह की ओर लौटाये जायेंगे और जो झूठ लफ्ट लगाते रहे हैं वह सब उनसे गये गुजरे हो जायगे। (३०) [रुकू ३]

(ऐ पैग़म्बर। लोगों से इतना तो) पूछो कि तुमको आसमान और जमीन से कौन रोजी देता है या कान और आँखों का कौन मालिक है और कौन मुर्दा से जिन्दा निकालता है और कौन जिन्दा से मुर्दा (करता है) और कौन इन्तजाम चला रहा है तो तुरन्त ही बोल उठेंगे कि अल्लाह। तो कहो कि फिर तुम उससे क्यों नहीं डरते। (३१) फिर यही अल्लाह तो तुम्हारा सच्चा परवर्दिगार है तो सचाई के खुल जाने के बाद दूसरा राह चलना गुमराही नहीं तो और क्या है सो तुम लोग किधर को फिरे चले जा रहे हो। (३२) इसी तरह पर तुम्हारे परवर्दिगार का हुक्म बेहुक्म लोगों पर सच्चा हुआ कि यह किसी तरह ईमान नहीं लायेंगे। (३३) पूछो कि तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा भी है कि जहान को अव्वल पैदा करे फिर उनको दुबारा पैदा करे। कहो अल्लाह ही सृष्टि को प्रथम बार पैदा करता है फिर उनको दुबारा पैदा करेगा तो अब तुम किधर को उलटे चले जा रहे हो। (३४) (पैग़म्बर इनसे) पूछो कि तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो सच्ची राह दिखा सके। कहो अल्लाह ही सच्ची राह दिखलाता है तो क्या जो सच्ची राह दिखावे उसका हक नहीं कि उसी की पैरवी

की जाय। या जो ऐसा है कि जब तक दूसरा उसको राह न दिखलाये यह खुद भी राह नहीं पा सकता। तो तुमको क्या हो गया है (आने) कैसा न्याय करते हो। (३५) और इन लोगों में से अक्सर अटकल पर चलते हैं सो अन्दाजी तुक्के हक़ या सचाई के सामने काम नहीं आते। जैसा-जैसा यह कर रहे हैं खुदा अच्छी तरह जानता है। (३६) यह किताब (कुरान) इस किस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे। बल्कि जो (किताबें) इसके पहिले की हैं उनकी तसदीक है और उन्हीं की तफसील है। इसमें संदेह नहीं कि यह खुदा ही की उतारी हुई है। (३७) क्या यह कहते हैं कि इस खुद (मुहम्मद) पैग़म्बर ने बना लिया है (तू कह दे कि) यदि सच्चे हो तो एक ऐसी ही सूरत तुम भी बना लाओ और खुदा के सिवाय जिसे चाहो बुला लो। (३८) और उस चीज को झुठलाने लगे जिसके समझने की (इन्हें ताकत नहीं अभी तक इनको इसके तसदीक का मौका ही पेश नहीं आया इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो इनसे पहिले थे तो (पैग़म्बर) देखो ज़ालिमों को कैसा फल मिला। (३९) और इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि जो कुरान पर ईमान ले आवेंगे और कोई-कोई नहीं लावेंगे और तुम्हारा (पैग़म्बर का) परवर्दिगार फसादियों को खूब जानता है (४०) और (ऐ पैग़म्बर) अगर तुमको झुठलावें तो कह दो कि मेरा करना मुझको और तुम्हार करना तुमको। तुम मेरे काम के जिम्मेदार नहीं और न मैं तुम्हारे काम का जिम्मेदार हूँ। (४१) और (पैग़म्बर) इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं क्या इससे तुमने समझ लिया कि यह लोग ईमान लावेंगे तो क्या तुम बहरों को सुना सकोगे जो अक्ल भी नहीं रखते हैं (४२) और इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी तरफ‡ ताकते हैं तो क्या तुम अन्धों को रास्ता दिखा

‡ अन्धों को आवाज सुनाई जा सकती है। बहरों को इशारे से कोई बात समझाई जा सकती है लेकिन जो अन्धा और बहरा हो यानी किसी तरह की समझने की शक्ति ही न रखता हो उसको समझाना बेकार है।

होगे जो इनको सूझ पड़ता हो। (४३) अल्लाह तो जरा भी लोगा पर जुल्म नहीं करता लेकिन लोग (खुद) अपने ऊपर जुल्म करते हैं। (४४) और जिस दिन लोगों को जमा करेगा तो गोया (दुनिया में सारे दिन भी नहीं बल्कि) घड़ी भर (संसार में) रह होंगे। आपस म एक दूसरे को पहचानेंगे जिन लोगों ने खुदा की मुलाकात को झुठलाया यह बड़े टोटे में आ गये और उनको रास्ता ही न सूझा। (४५) जैसे जैसे वादे हम इनसे करते हैं चाह इनमें से बाज को तुम्हें दिखायेंग या तुमको उठा लेयेंगे इनको तो लौटकर हमारी तरफ आना है जो कुछ यह कर रहे हैं खुदा देख रहा है। (४६) और हर उम्मत (गिरोह) का एक पैग़म्बर है तो जब यह (उनका पैगम्बर) अपने गिरोह में आता है तो उसके गिरोह में न्याय के साथ फैसला होता है और लोगों पर जुल्म नहीं होता। (४७) पूछते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा (कयामत) कब पूरा होगा। (४८) (ऐ पैग़म्बर इनसे) कहो कि मेरा अपना फायदा व नुकसान भी मेरे हाथ में नहीं। मगर जो खुदा चाहता है वही होता है उसके इल्म में हर उम्मत का एक वक्त मुकर्रर है जब उनकी मौत आ जाती है तो घड़ी भर भा पीछे नहीं हट सकती और न आगे बढ़ सकती है। (४९) (ऐ पैगम्बर इनसे) पूछो कि भला देखो तो सही अगर खुदा की सजा रातो रात तुम पर आ उतरे या दिन दहाड़े (आजाय) तो पापी लोग इससे पहिले क्या कर लेंगे। (५०) सो क्या जब आ पड़ेगी तभी उसका विश्वास करोगे क्या अब ईमान लाये और तुम तो इसके लिये जल्दी मचा रहे थे। (५१) फिर (कयामत के दिन) बेहुक्म लोगों को हुक्म होगा कि अब हमेशा की सजा चक्खो तुमको सजा दी जा रही है (यही) तुम्हारी कमाई का बदला है। (५२) तुमसे पूछते हैं कि जो कुछ तुम इनसे कहते हो क्या यह सच है ? कहो कि परवर्दिगार की सौगंध सच है—और तुम भाग कर खुदा को हरा न सकोगे। (५३) [रुकू ५]

जिस जिस ने दुनियाँ में अवज्ञा की है वे अपने छुटकारे के लिये अगर तमाम खजाने जमीन के जो उनके कब्जे में हों दे निकलें लेकिन

सजा को देख उनको शर्म खानी पड़ेगी और लोगों में इंसाफ के साथ फैसला कर दिया जायगा और उन पर जुल्म न होगा। (५४) याद रक्खो जो कुछ आसमान और जमीन में है अल्लाह ही का है। याद रक्खो कि अल्लाह का अहद सचा है मगर ज्यादातर आदमी यकीन नहीं करते। (५५) वही जिलाता और मारता है और उसकी तरफ तुमको लौटकर जाना है। (५६) तुम्हारे पास (नसीहत) आ चुकी और दिली रोग की दवा और ईमान वालों के लिये हिदायत§ और रहमत आ चुकी है। (५७) पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि यह (क़ुरान) अल्लाह की मेहरबानी और इनायत है और लोगों को चाहिये कि ख़ुदा की मेहरबानी और इनायत यानी क़ुरान को पाकर खुश हों कि जिन दुनियावी फ़ायदों के पीछे पड़े हैं यह उनसे कहीं बढ़कर है। (५८) (ऐ पैग़म्बर इनसे) कहो कि भला देखो तो सही ख़ुदा ने तुम पर रोज़ी उतारी अब तुम उसमें से हराम और हलाल ठहराने लगे (इन लोगों से पूछो) ख़ुदा ने तुम्हें क्या ऐसी आज्ञा दी है या उस (ख़ुदा) पर झूठी तोहमत लगाते हो। (५९) जो लोग ख़ुदा पर झूठ बाँधते हैं वह कयामत के दिन क्या समझेंगे अल्लाह लोगों पर कृपा रखता है पर बहुतेरे (शुक्रगुज़ार) नहीं होते। (६०) [रुकू ६]

(ऐ पैग़म्बर) तुम किसी दशा में हो और जो कोई सी क़ुरान की आयत भी पढ़कर सुनाओ और तुम कोई भी कर्म करते हो—जब तुम उसमें लगे रहते हो हम तुमको देखते रहते हैं और तुम्हारे परवर्दिगार से जरा भी कुछ छिपा नहीं रह सकता न जमीन में और न आसमान में और जर्रे से छोटी चीज हो या बड़ी रोशन किताब में लिखी हुई है। (६१) याद रक्खो कि ख़ुदा जिनको चाहता है उनको न डर होगा और न वे उदास होंगे। (६२) यह लोग जो ईमान लाये और डरते रहे इनको यहाँ दुनियाँ की जिन्दगी में भी खुशखबरी है। (६३)

§ यानी क़ुरान में अच्छी-अच्छी नसीहतें हैं और सच्ची-सच्ची ईमान की बातें। इन से दिल के रोग (असत्य) मिट जाते है।

क़्यामत में भी ख़ुदा की बातों में भेद नहीं आता है यह बड़ी कामयाबी है। (६४) (ऐ पैग़म्बर) इनकी बातों से तुम उदास न हो क्योंकि तमाम ज़ोर अल्लाह का है वह सुनता जानता है। (६५) याद रक्खो कि जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और जो लोग ख़ुदा के सिवाय शरीकों को पुकारते हैं (कुछ मालूम नहीं कि) किस पर चलते हैं यह सिर्फ वहम पर चलते हैं और निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (६६) वही है जिसने तुम्हारे लिये रात को बनाया ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को ताकि तुम उसकी रोशनी में देखो भालो रात दिन के बनाने में उन लोगों को जो सुनते हैं निशानियाँ हैं। (६७) कहते हैं कि ख़ुदा ने बेटा बना रक्खा है वह पाक है और इच्छा रहित है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है उसी का है तुम्हारे पास इसकी कोई दलील तो है नहीं तो क्या बेजाने बूझे ख़ुदा पर झूठ बोलते हो। (६८) (ऐ पैग़म्बर) इन लोगों से कह दो कि जो लोग ख़ुदा पर झूठी तोहमत बांधते हैं उनको मुराद नहीं मिलती। (६९) दुनियाँ के फ़ायदे हैं फिर उनको हमारी तरफ़ लौटकर आना है तब उनके कुफ्र की सज़ा में हम उनको सख़्त सज़ा देंगे। (७०) [रुकू ७]

(ऐ पैग़म्बर) इन लोगों को नूह का हाल पढ़कर सुनाओ कि जब उन्होंने अपनी जाति से कहा कि भाइयों अगर मेरा रहना और ख़ुदा की आयतें पढ़कर समझाना तुम पर असह्य गुज़रता है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है पस तुम और तुम्हारे शरीक अपनी बात ठहरा लो फिर तुम्हारी बात तुम पर छिपी न रहे फिर (जो कुछ तुमको करना है) मेरे साथ कर चुको और मुझे मोहलत न दो। (७१) फिर अगर तुम मुँह मोड़ बैठे तो मैंने तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगी मेरी मज़दूरी तो बस ख़ुदा ही पर है और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं उस की फ़र्माबर्दारी में रहूँ। (७२) फिर लोगों ने उनको झुठलाया तो हमने नूह को और जो लोग उनके साथ किश्तियों में थे उनको बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उन सबको

हुओ कर दूसरे लोगों को अधिकारी बनाया तो जो लोग डराये गये हैं उनका कैसा परिणाम हुआ। (७३) फिर नूह के बाद हमने पैग़म्बरों को उनकी जाति की तरफ भेजा तो यह पैग़म्बर उनके पास चमत्कार लेकर आये इस पर भी जिस चीज को पहिले झुठला चुके थे उस पर ईमान न लाये। इसी तरह हम बेहुक्म लोगों के दिलों पर मुहर कर दिया करते हैं। (७४) फिर इसके बाद हमने मूसा और हारूँ को अपने निशान देकर फिरऔन और उसके दरबारियों की तरफ भेजा तो वे अकड़ बैठे और यह लोग कुछ अपराधी थे। (७५) तो जब इनके पास हमारी तरफ से सच बात पहुँची तो यह कहने लगे कि यह तो जरूर खुला जादू है। (७६) मूसा ने कहा कि जब सच बात तुम्हारे पास आई तो क्या तुम उसकी बाबत कहते हो क्या यह जादू है ? और जादूगरों का भला नहीं होता। (७७) यह कहने लगे क्या तुम इस मतलब से हमारे पास आये हो कि जिस पर हम अपने बड़ों को पाया उससे हमको फिरा दो और देश में तुम दोनों की सरदारी हो और हम तो तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (७८) और फिर औन ने हुक्म दिया कि हर एक जानकार जादूगर को हमारे सामने लाकर हाजिर करो। (७९) फिर जब जादूगर आ मौजूद हुए तो उनसे मूसा ने कहा कि §जो तुमको डालना मंजूर है डालो। (८०) तो जब उन्होंने डाल दिया तो मूसा ने कहा कि यह जो तुम लाये हो जादू है अल्लाह इसको मूठ करेगा क्योंकि अल्लाह फसादियों का काम नहीं बनाने देता। (८१) और अल्लाह अपने हुक्म से सच को सच करता है चाहे गुनहगारों को बुरा ही क्यों न लगे। (८२)

[रूकू ८]

इन तमाम बातों पर मूसा ही के कुटुम्ब के सिर्फ थोड़े से ईमान लाये और सो भी फिरऔन और उसके सरदारों से डरते डरते कि कहीं कोई विपत्ति उनके ऊपर न डाले। फिरऔन देश में बहुत बड़ा चढ़ा था और वह ज्यादती किया करता था। (८३) और मूसा ने समझाया

§ यानी जो जादू तुम कर सकते हो मेरे ऊपर कर डालो।

कि भाईयों ! अगर तुम अल्लाह् पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो। (८४) इस पर उन्होंने जवाब दिया कि हमको खुदा ही का भरोसा है ऐ हमारे परवर्दिगार ! इस पर इस जालिम कौम का ज़ोर न आजमा। (८५) अपनी कृपा से हमको काफिर कौम से बचा। (८६) हमने मूसा और उसके भाई की तरफ हुक्म भेजा कि मिस्र में अपने लोगों के घर बना लो और अपने घरों को मसजिदें करार दो और नमाज़ पढ़ो और ईमान वालों को खुशखबरी सुना दो। (८७) मूसा ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे परवर्दिगार ! तूने फिरऔन और उसके सरदारों को संसार के जीवन में आदर, सत्कार और धन दे रक्खा है और (ऐ हमारे परवर्दिगार) यह इसलिये दिये हैं कि यह तेरे रास्ते से भटकावें तो ऐ हमारे परवर्दिगार। इनके माल मेंट दे और इनके दिलों को कठोर कर दे कि यह लोग दुःखदाई सजा के देखे बिना ईमान न लायें। (८८) फर्माया तुम दोनों अपनी राह पर रहो और मूर्खों के रास्ते मत चलना। (८९) हमने इसराइल की औलाद को पार उतार दिया। फिर फिरऔन और उसके लश्करिया ने नटखटी और शरारत की राह से उनका पीछा किया। यहाँ तक कि जब फिरऔन डूबने लगा तब कहने लगा कि मैं ईमान लाया कि जिस पर इसराईल के बेटे ईमान लाये हैं। उसके सिवाय कोई पूजित नहीं और मैं आज्ञाकारियों में हूँ। (९०) इसका जवाब मिला कि अब (तू) यों बोला पहले बराबर उदूल हुक्मी करता रहा और तू फसादियों में था। (९१) तो आज तेरे शरीर को हम बचावेंगे कि जो लोग तेरे बाद आनेवाले हैं तू उनके लिये शिक्षा हो और बहुत से लोग हमारी निशानियों से गाफिल हैं। (९२)

[रुकू ९]

हमने इसराईल की औलाद को एक सच्चे ठिकाने से जा बैठाया और उनको उम्दा उम्दा पदार्थ दिये और उनमें भेद नहीं पड़ा। जब तक इल्म न आया यह लोग जिन जिन बातों में भेद डालते रहते हैं तुम्हारा पालनकर्ता क़यामत के दिन उन भेदों का फैसला कर देगा। (९३) (तो पैग़म्बर यह क़ुरान) जो हमने तुम्हारी तरफ उतारा है

अगर इसकी बाबत तुमको किसी किस्म का सन्देह हो तो तुमसे पहले जो लोग किताबों को पढ़ते हैं उनसे पूछ देखो कुछ संदेह नहीं कि तुम पर तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ सच्ची किताब उतरी है तो कदापि सन्देह करने वालों में न होना। (९४) और न उन लोगों में होना जिन्होंने खुदा की आयतों को झुठलाया तो तुम भी नुक्सान उठाने वालों में हो जाओगे। (९५) (ऐ पैग़म्बर) जिन पर परवर्दिगार की बात ठीक आई वे ईमान न लायेंगे। (९६) यह तो जब तक दुःखदाई सजा को न देख लेंगे किसी तरह ईमान लानेवाले नहीं हैं चाहे पूरा चमत्कार उनके सामने आ मौजूद हो। (९७) तो यूनुस जाति के सिवाय और कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान ले आती और उनको ईमान लाना फ़ायदा देता तो जब ईमान ले आये तो हमने दुनियाँ की जिन्दगी में उसे बदनामी की सजा को माफ कर दिया और उनको एक वक्त तक रहने दिया। (९८) और ऐ पैग़म्बर तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो जितने आदमी जमीन की सतह में हैं सबके सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों को मजबूर कर सकते हो कि वह ईमान ले आयें (९९) किसी शख्स के हक़ में नहीं है कि बिना हुक्म खुदा के ईमान ले आवे। गन्दगी† उन्हीं लोगों पर डालता है जो बुद्धि को काम में नहीं लाते। (१००) निशानियाँ और डरावे उनको कोई उपकारी नहीं (१०१) तो क्या वैसे ही गर्दिश के मुन्तज़िर हैं जैसी पहले लोगों पर आ चुकी है (ऐ पैग़म्बर) इन लोगों से कह दो कि तुम भी इन्तजार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तजार करने वालों में हूँ। (१०२) फिर हम अपने पैग़म्बरों को बचा लेते हैं और इसी तरह उन लोगों को जो ईमान लाये हमने अपने जिम्मे लाज़िम कर लिया है कि ईमान वालों को बचा लिया करें (१०३) [रुकू १०]

ऐ पैग़म्बर इन लोगों से कहो कि अगर मेरे दीन के सम्बन्ध में सन्देह हो तो खुदा के सिवाय तुम जिनकी पूजा करते हो- मैं तो उनकी पूजा नहीं करता बल्कि मैं अल्लाह ही को पूजता हूँ जो कि

---

† गन्दगी से मतलब है कुफ्र और शिर्क या अपवित्र विचार।

तुमको मार डालता है और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान वालों में रहूँ। (१०४) यह कि दीन की तरफ़ अपना मुँह किये सीधी राह चला जाऊँ और मुश्रिकों में हरगिज़ न होऊँगा। (१०५) और ख़ुदा के सिवाय किसी को न पुकारना, कि वह तुमको न तो लाभ ही पहुँचा सकता है और न तुमको नुक्सान ही पहुँचा सकता है अगर तुमने ऐसा किया तो उसी वक्त तुम भी ज़ालिमों में होगे। (१०६) अगर ख़ुदा तुमको कोई कष्ट पहुँचावे तो उसके सिवाय कोई उसका दूर करनेवाला नहीं और अगर किसी क़िस्म का फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो कोई उसकी कृपा को रोकनेवाला नहीं। अपने दासों में से जिसे चाहे लाभ पहुँचावे और वह क्षमा करनेवाला मेहरबान है। (१०७) कह दो कि लोगों सच बात तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास आ चुकी। फिर सची राह पकड़ी तो अपने ही लिये और जो भटका सो भटक कर अपना ही खोता है और मैं तुम्हारा मुख़्तार नहीं। (१०८) और (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारी तरफ़ जो हुक्म भेजा जाता है उसी पर चले जाओ और जब तक अल्लाह न्याय न करे ठहरे रहो और वही मुन्सिफ़ों में भला है। (१०९) [रुकू ११]

सूरे हूद

मक्के में उतरी इसमें १२३ आयतें और १० रुकू हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-रा। यह किताब (क़ुरान) पुस्तकाकार ख़बरदार की तरफ़ से है जिसकी आयतें ख़ुलासा के साथ बयान की गई हैं। (१) ख़ुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो मैं उसी की ओर से तुमको डराता और ख़ुशख़बरी सुनाता हूँ। (२) यह कि अपने परवर्दिगार से माफ़ी माँगो और उसी के सामने तौबा करो तो वह तुमको एक वक्त

मुकर्रर तक अच्छी तरह बसाये रक्खेगा और जिसने ज्यादा किया है वह उसको ज्यादा देगा और अगर मुँह मोड़ो तो मुझको तुम्हारी बाबत बड़े दिन की सजा का खटका है। (३) तुमको अल्लाह की तरफ लौटकर जाना है और वह हर चीज पर शक्ति रखता है। (४) (ऐ पैगम्बर) सुनो कि यह अपने सीनों को दुहरा किये डालते हैं ताकि खुदा से छिपे रहें। अब यह अपने कपड़े ओढ़ते हैं खुदा उनकी खुफिया और जाहिरा बातों से खबरदार है। वह दिलों के भेद जानता है। (५)

बारहवां पारा (वमामिन दाब्बतिन)

जितने जमीन में चलते-फिरते हैं उनकी रोजी अल्लाह ही के जिम्मे है और वही उनके ठिकाने को और उनकी सौंपे जाने की जगह को जानता है। सब कुछ खुली किताब में है। (६) वही है जिसने आसमान और जमीन को ६ दिन में बनाया और उसका तख्त (सिंहासन) पानी पर था ताकि तुम लोगों को जाँचे कि तुममें किसके कर्म अच्छे हैं और अगर तुम कहो कि मरे पीछे तुम उठाकर खड़े किये जाओगे तो जो लोग इन्कारी हैं जरूर कहेंगे कि यह तो जाहिरा जादू है। (७) और अगर हम सजा को इनसे गिनती के चन्दरोज तक रोके रहें तो अवश्य कहने लगेंगे कि कौन सी चीज सजा को रोक रही है। सुनो जी जिस दिन सजा इनपर उतरेगी इनसे किसी के टाले टलनेवाली नहीं और जिसकी यह लोग हँसी उड़ा रहे थे वह इनको घेर लेगी। (८) [रुकू १]।

अगर हम मनुष्य को अपनी मेहरबानी का स्वाद दें फिर उसको उससे छीन लें तो वह नाउम्मीद और नाशुक्र होता है। (९) अगर उसको

कोई तकलीफ पहुँची हो और उसके बाद उसको आराम चखावें तो कहने लगता है कि मुझसे सब सख्तिअयाँ दूर हो गईं क्योंकि वह बहुत ही खुश हो जाने वाला शेखी खोरा है। (१०) मगर जो लोग मजबूत रहते हैं और नेक काम करते हैं यही हैं जिनके लिये बख्शीश और बड़ा अजाम है। (११) तो क्या जो हुक्म तुम पर भेजा जाता है तुम उसमें से थोड़ासा छोड़ देना चाहते हो। इस कारण कि तंग होकर ये कहते हैं कि इस शख्स पर †खजाना क्यों नहीं उतरा या उसके साथ कोई फरिश्ता क्यों नहीं आया। सो तुम डरानेवाले हो और हर चीज़ खुदा ही के काबू में है। (१२) (ऐ पैग़म्बर) क्या (काफिर) कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिलसे बना लिया है तो इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह की बनाई हुई दस सूरतें ले आओ और खुदा के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े बुलालो अगर तुम सच्चे हो। (१३) पस अगर काफिर तुम्हारा कहना न कर सकें तो जाने रहो कि (कुरान) खुदा ही के इल्मसे उतरा है और यह कि उसके सिवाय किसी की दुआ नहीं करनी चाहिए तो क्या अब तुम हुक्म मानते हो। (१४) जिनका मतलब दुनियाँ की जिन्दगी और दुनियाँ की रौनक चाहना है हम उनके काम का बदला दुनियाँ में उनको पूरा-पूरा भर देते हैं वह दुनियाँ में घाटे में नहीं रहते। (१५) यही वह लोग हैं जिनके लिये क्यामत में दोजख के सिवाय और कुछ नहीं और जो काम दुनियाँ में इन लोगों ने किए, गये गुजरे हुए और इनका किया धरा बेकार हुआ। (१६) तो क्या जो लोग अपने परवर्दिगार के खुले रास्ते पर हों और उनके साथ उन्हीं में का एक गवाह हो और कुरान से पहिले मूसाकी किताब हो जो राह दिखानेवाली और मेहरबानी है। वह लोग इसको मानते हैं

† इन्कारी कहते थे कि मुहम्मद रसूल हैं तो इनके पास अधिक धन होना चाहिए या इनके साथ एक फिरिश्ता निरंतर चलना चाहिए जो इनके रसूल होने का साक्षी हो। इन बातों से मुहम्मद साहब को बड़ा दुःख होता था। इन आयतों में यह बताया गया है कि नबी के लिए इस आडम्बर की आवश्यकता नहीं,

और फ़िर्क़ों में से जो इस (क़ुरान) से इन्कारी हो उनका आख़िरी ठिकाना दोज़ख़ है सो (ऐ पैग़म्बर) तुम क़ुरान की तरफ़ से शक में न रहना इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यह तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से सच्चा है। लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (१७) जो ख़ुदा पर झूठ तूफ़ान लगाये उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है। यही लोग अपने परवर्दिगार के सामने पेश किये जावेंगे और गवाह गवाही देंगे कि यही हैं जिन्होंने अपने परवर्दिगार पर झूठ बोला था सुनो ज़ालिमों पर ख़ुदा ही की मार है। (१८) जो ख़ुदा के रास्ते से रोकते और उसमें कजी (टेढ़ापन) चाहते हैं और यही हैं जो क़्यामत से इन्कारी हैं। (१९) यह लोग न दुनियाँ ही में ख़ुदा को हरा सकेंगे और ख़ुदा के सिवाय इनका कोई हिमायती खड़ा होगा इनको दोहरी सज़ा होगी क्योंकि न सुन सकते थे न इनको सूझ पड़ता था। (२०) यही लोग हैं जिन्होंने आप अपना नुक़्सान कर लिया और झूठ जो बाँधा था गुम हो गया (२१) ज़रूर यही लोग क़यामत में सबसे ज़्यादा घाटे में होंगे। (२२) जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये और अपने परवर्दिगार के आगे बिनती करते रहे यही जन्नत में रहने वाले हैं कि यह जन्नत में हमेशा रहेंगे। (२३) दो फ़िर्क़ों की मिसाल अन्धे और बहिरे और आँखोंवाले और सुननेवाले जैसी है क्या दोनों की मिसाल एकसा हो सकती है। क्या तुम ध्यान नहीं †करते ? (२४) [रुकू २]

और हमहीने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा कि मैं तुमको साफ़-साफ़ डर सुनाने आया हूँ। (२५) ख़ुदा के सिवाय पूजा न किया करो मुझको तुम्हारी बाबत एक-एक रोज़ कड़ी सज़ा का डर है। (२६) इस पर उन की जाति के सर्दार जो नहीं मानते थे कहने लगे कि हमको तो तुम हमारे ही जैसे आदमी दिखाई देते हो और हमारे नज़दीक

---

† इन्कारी अन्धों की तरह हैं कि ख़ुदा की निशानियाँ नहीं देखते और बहरों की तरह हैं कि रसूल की बातें नहीं सुनते और मुसलमान आँख और कान वाले हैं कि ख़ुदा की निशानियों को देखते हैं और रसूल की बातों पर काम करते हैं।

सिर्फ वही लोग तुम्हारे सहायक हो गये हैं जो हम में नीच हैं और हम तो तुम लोगों में अपने से कोई विशेषता नहीं पाते बल्कि हम तुमको झूठा समझते हैं। (२७) नूह ने कहा भाइयों भला देखो तो सही अगर मैं अपने परवर्दिगार के खुले रास्ते पर हूँ और उसने मुझको अपनी सरकार से नेयामत दी है फिर वह रास्ता तुमको दिखाई नहीं देता तो क्या हम उसको तुम्हारे गले मढ़ रहे हैं और तुम उसको नापसन्द कर रहे हो। (२८) भाइयों मैं इसके बदले में तुमसे रुपयों का चाहने वाला नहीं हूँ। मेरी मजदूरी तो अल्लाह ही पर है और मैं लोगों को जो ईमान लाचुके हैं निकालनेवाला नहीं हूँ क्योंकि इनको भी अपने परवर्दिगार के यहाँ जाना है मगर मैं देखता हूँ कि तुम लोग ‡मूर्ख हो। (२६) भाईयों अगर मैं इनको निकाल दूँ तो खुदा के सामने कौन मेरी मदद को खड़ा हो जायगा क्या तुम नहीं समझते। (३०) मैं तुमसे दावा नहीं करता कि मेरे पास खुदाई खजाने हैं और न मैं गैब जानता हूँ और न मैं कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ और जो लोग तुम्हारी नजरों में तुच्छ हैं मैं उनके सम्बन्ध में यह भी नहीं कह सकता कि खुदा उन पर रहम नहीं करेगा इनके दिलकी बात को अल्लाह ही खूब जानता है अगर ऐसा करूँ तो मैं जालिमों में हूँगा। (३१) वह बोले नूह तूने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा किया अगर तू सच्चा है तो जिससे हमको डराता है उसको हम पर लेआ। (३२) (नूह ने कहा) कि खुदा को मञ्जूर होगा तो वही सजा को भी तुम पर लायेगा और तुम हटा न सकोगे। (३३) और जो मैं तुम्हारे लिए नसीहत चाहूँ अगर खुदा ही को तुम्हारा वह करना मञ्जूर नहीं है तो मेरी शिक्षा तुम्हारे काम नहीं आ सकती। वही तुम्हारा परवर्दिगार है और उसी की तरफ तुमको लौटकर जाना है। (३४) (ऐ पैग़म्बर जिस तरह नूह कौम ने नूह को

---

‡ इन्कारियों ने ईमान लाने वालों को नीच कहा क्योंकि वे धंधे करके अपना पालन-पोषण करते थे। इन आयतों में बताया गया है कि किसी प्रकार का पेशा या धन्धा करने से आदमी नीच नहीं हो जाता बल्कि जो लोग उसे नीच समझते हैं वही मूर्ख हैं।

झुठलाया था) क्या तुमको झुठलाते हैं और तुम पर ऐतराज़ करते और कहते हैं कि क़ुरान को इसने खुद बना लिया है (तुम उनको जवाब दो) कि अगर क़ुरान मैंने खुद बना लिया है तो मेरा गुनाह मुझ पर है और जो गुनाह तुम करते हो मेरा कुछ ज़िम्मा नहीं। (३५) [रुकू ३]

और नूह की तरफ़ खुदाई पैग़ाम आया कि तुम्हारी जाति में जो लोग ईमान ला चुके हैं उनके सिवाय अब हरगिज़ कोई ईमान नहीं लावेगा और जैसी-जैसी बदकारियाँ यह लोग करते रहे हैं तुम इसका रंज न करो। (३६) हमारे सामने और हमारे इशारे के बमूजिब एक नाव बनाओ और अवज्ञा (उदूल हुक्मी) करियों के सम्बन्ध में हमसे कुछ न कहो। क्योंकि यह लोग ज़रूर डूबेंगे। (३७) चुनाचे नूह ने नाव बनानी शुरू की और जब कभी उनकी जाति के इज़्ज़तदार लोग उनके पास से होकर गुज़रते तो उनसे हँसी करते नूह ने जवाब दिया कि अगर तुम हम पर हँसते हो तुम पर हम हँसेंगे। (३८) थोड़े दिनों बाद तुमको मालूम हो जायगा कि किस पर सज़ा उतरती है जो उसकी बदनामी करे और हमेशा की सज़ा उसके सिर पड़े। (३९) यहाँ तक कि हमारा हुक्म जब आ पहुँचा और (अल्लाह की नाराज़गी से) तनूर ने जोश मारा तो हमने हुक्म दिया कि हर किस्म में से दो-दो के जोड़े और जिसकी बाबत पहिला हुक्म हो चुका है उसको छोड़कर अपने घरवाले और जो ईमान ला चुके हैं उनको किश्ती में बैठा लो। (४०) और उनके साथ ईमान भी थोड़े ही लाये थे और उसने कहा सवार हो उसमें और किश्ती का बहना और ठहरना अल्लाह के नाम से है और अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है। (४१) किश्ती इनको ऐसी लहरों में जो पहाड़ के समान थी ले गई और नूह का बेटा अलग था तो नूह ने उसे पुकारा कि बेटा हमारे साथ बैठ ले और काफ़िरों के साथ मत रह। (४२) वह बोला मैं अभी किसी पहाड़ के सहारे आ लगता हूँ वह मुझको पानी से बचा लेगा नूह ने कहा कि आज के दिन अल्लाह के गुस्से से बचानेवाला कोई नहीं मगर खुदा ही जिसपर अपनी मेहरबानी करे और दोनों के

दर्मियान एक लहर आगई और दूसरों के साथ नूह का बेटा भी डूब गया। (४३) हुक्म हुआ कि ऐ जमीन अपना पानी सोख ले और ऐ आसमान थम जा और पानी उतर गया और काम तमाम कर दिया गया और किश्ती जूदी§ (पहाड़) पर ठहर गई और हुक्म हुआ कि जालिम लोग दूर रहो। (४४) और नूह ने अपने परवर्दिगार को पुकारा और विनती की कि परवर्दिगार मेरा बेटा मेरे लोगों में है और तूने जो अहद किया था सचा है और तू सब हाकिमों से बड़ा हाकिम है। (४५) खुदा ने फर्माया कि नूह तुम्हारा बेटा तुम्हारे लोगों में नहीं था क्योंकि इसके करम बुरे थे जो तू नहीं जानता वह बात न पूँछ। मैं तुमको समझाये देता हूँ कि मूर्खों में न हो। (४६) कहा ऐ मेरे परवर्दिगार मैं तेरी ही पनाह माँगता हूँ कि जो मैं नहीं जानता था उसकी बाबत तुझसे पूँछा और अगर तू मेरा कसूर नहीं मॉफ करेगा तो मैं बर्बाद हो जाऊँगा। (४७) हुक्म दिया गया है कि ऐ नूह हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ किश्ती से उतरो। तुम पर और उन लोगों पर जो तेरे साथ वालों से पैदा हुए हैं बरकतें हैं और बाज फिरकों को फायदा देंगे फिर उनको हमारी तरफ से दुःख की मार पहुँचेगी। (४८) यह गैब की खबरें हैं (ऐ मोहम्मद) हम तेरी तरफ खुदाई पैगाम भेजते हैं इससे पहिले तू और तेरी जाति के लोग इन बातों को न जानते थे तो तू संतोष कर परहेजगारों का परिणाम भला है। (४९) [रुकू ४]।

और आद की तरफ हमने उन्हीं के भाई हूदको भेजा। उन्होंने समझाया कि भाईयों खुदा ही की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई दूसरा माननेवाला नहीं तुम सब झूँठ कहते हो। (५०) भाईयों। इसके बदले में तुमसे कुछ मजदूरी नहीं माँगता मेरी मजदूरी तो उसी के जिम्मे है जिसने मुझको पैदा किया तो क्या तुम नहीं समझते। (५१) भाईयों अपने परवर्दिगार से मॉफी माँगो फिर उसके सामने तौबा करो कि वह तुम पर खूब बरसते हुए बादल भेजेगा और दिन पर दिन

---

§ यह एक पहाड़ का नाम है जो शाम देश में है।

तुम्हारे बल (ज़ोर) को बढ़ायेगा और नटखटी करके उस से मुँह न मोड़ो। (५२) वह कहने लगे ऐ हूद! तू हमारे पास कोई दलील लेकर नहीं आया और तेरे कहने से हम अपने पूजितों को न छोड़ेंगे और हम तुम पर ईमान न लावेंगे। (५३) हम तो यही समझते हैं कि तुझ पर हमारे दुआवालों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने जवाब दिया कि मैं ख़ुदा को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि ख़ुदा के सिवाय जो तुम शरीक बनाते हो मैं तो उनसे मुक्लिस हूँ। (५४) तो तुम सब मिलकर मेरे साथ अपनी बदी करो और मुझको मोहलत न दो। (५५) मैंने अपने और तुम्हारे अल्लाह पर भरोसा किया जितने जानदार हैं सभी की चोटी उसके हाथ में है मेरा परवर्दिगार सीधी राह पर है। (५६) इस पर भी अगर तुम लोग फिरे रहो तो जो हुक्म मेरे ज़रिये से भेजा गया था वह मैं तुमको पहुँचा चुका और मेरा परवर्दिगार तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को तुम्हारी जगह लाकर मौजूद करेगा और मेरा परवर्दिगार हर चीज़ का रक्षक है। (५७) और जब हमारा हुक्म आया तो हमने अपनी मेहरबानी से हूद को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाये थे बचा लिया और उनको सख्त सज़ा से बचा लिया। (५८) यह आद हैं जिन्होंने अपने परवर्दिगार के हुक्मों से इन्कार किया और उसके पैग़म्बरों की आज्ञा न मानी। हर बेरहम दुश्मनों के हुक्म पर चलते रहे। (५९) इस दुनियाँ में लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी देखो आदने अपने परवर्दिगार का इन्कार किया देखो आद जो हूद की जाति के लोग थे फटकारे गये। (६०) [रुकू ५]

समूद की तरफ़ हमने उनके भाई सालेह को भेजा तो उन्होंने कहा कि भाइयों ख़ुदा ही की पूजा करो उस के सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं उसने तुम को ज़मीन से बना खड़ा किया और तुमको उसमें बसाया और उससे माफ़ी माँगो और उसी के सामने तौबा करो मेरा परवर्दिगार पास है और दुआ क़बूल करनेवाला है। (६१) वह कहने लगे ऐ सालेह इससे पहिले तो हम लोगों में तुमसे उम्मीद की

आशा थी कि तुम हर तरह हमारा साथ दोगे सो क्या तुम हमको उनकी पूजा से मना करते हो जिनको हमारे बाप-दादा पूजते चले आये हैं और जिसकी तरफ तुम हमको बुलाते हो हम को उसकी बाबत सन्देह है। (६२) जवाब दिया कि भाईयों देखो तो सही अगर मुझे अपने परवर्दिगार से सूझ मिल गई है और उसने मुझपर अपनी मेहरबानी की है और अगर मैं उसकी बेहुक्मी करने लगू तो ऐसा कौन है जो खुदा के मुकाबिले में मेरी मदद को खड़ा हो। तो तुम मेरा नुकसान ही कर रहे हो। (६३) और भाईयों यह खुदा की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है तुम इसको छुटा रहने दो कि खुदा की जमीन में से खाती फिरे और इसको किसी तरह का नुकसान न पहुँचाना वरना फौरन ही तुमको सजा मिलेगी। (६४) तो लोगों ने उसको मारडाला तो सालेह ने कहा तीन दिन अपने घरों में बस लो यह कौल झूँठा नहीं होगा। (६५) तो जब हमारा हुक्म आया तो हमने सालेह को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाये थे अपनी मेहरबानी से उस दिन की बदनामी से बचा लिया तुम्हारा परवर्दिगार वही जबरदस्त जीतनेवाला है। (६६) जिन लोगों ने ज्यादती की थी उनको कड़क ने पकड़ लिया वे अपने घरों में बैठे रह गये। (६७) गोया उनमें बसेही न थे देखो समूदने अपने परवर्दिगार की बेहुक्मी की। देखो समूद दुत्कारे गये। (६८) और हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास खुशखबरी लेकर आये उन्होंने सलाम किया। इब्राहीम ने सलाम का जवाब दिया। फिर इब्राहीम ने देर न की और भुना हुआ बछेड़ा ले आया। (६९) [रुकू ६] फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ नहीं उठते तो उनसे बुरा ख्याल हुआ और जी ही जी में उनसे डरे‡। वह बोले डर मत हम तो फरिश्ते हैं लूतकी जाति की तरफ भेजे

‡ इब्राहीम ने जब देखा कि उनके घर आने वाले उनके खाने की ओर हाथ नहीं बढ़ाते तो उनको डर लगा कि ये आने वाले हमको कोई हानि पहुँचाना चाहते है इसी लिये हमारे नमक से बच रहे है। उस समय लोग जिसका खाना नहीं खाते थे उसे अपना शत्रु समझते थे।

गये। (७०) इब्राहीम की बीबी भी खड़ी थी वह हँसी फिर हमने उसको इसहाक और इसहाक के बाद याकूब की खुशखबरी दी। (७१) वह कहने लगी हाय मेरी कमबख्ती क्या मेरे औलाद होगी मैं तो बुढ़िया हूँ और यह मेरे पति भी बूढ़े हैं हमारे यहाँ सन्तान का होना ताज्जुब की की बात है। (७२) फरिश्ते बोले क्या तू खुदा की कुदरत से ताज्जुब करती है ऐ घैत के §रहने वाले तुम पर खुदा की मेहरबानी और उसकी बरकतें हैं, वह सराहनीय बड़ाइयों वाला है। (७३) फिर जब इब्राहीम से डर दूर हुआ और उनको खुशखबरी मिली लूत की जाति के सम्बन्ध में हम से झगड़ने लगे। (७४) इब्राहीम बड़े नरम दिल रुजू करने वाले थे (७५) इब्राहीम इस खयाल को छोड़ दो तुम्हारे परवर्दिगार का हुक्म आ पहुँचा है और उन लोगों पर ऐसी सजा आने वाली है जो टल नहीं सकती। (७६) और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आये तो उनका आना उनको बुरा लगा और उनके आने की वजह से तंगदिल हुये और कहने लगे यह तो बड़ी मुसीबत का दिन है। (७७) लूत की जाति के लोग दौड़े-दौड़े लूत के पास आये और यह लोग पहिले से ही बुरे काम किया करते थे लूत कहने लगे कि भाईयों यह मेरी बेटियाँ हैं यह तुम्हारे लिये ज्यादा पवित्र हैं तो खुदा से डरो और मेरे मेहमानों में मेरी बदनामी न करो। क्या तुममें कोई भला आदमी नहीं। (७८) उन्होंने जवाब दिया कि तुम को तो मालूम है कि हमको तो तुम्हारी बेटियों से कोई तल्लुक नहीं। हमारे इरादे से तुम भली भाँति जानकार हो। (७९) (लूत) बोले आज मुझको तुम्हारे मुकाबिले की ताकत होती या मैं किसी जोरावर सहारे का आसरा पकड़ पाता। (८०) (फरिश्ते) बोले कि ऐ लूत। हम तुम्हारे परवर्दिगार के भेजे हुए हैं। यह लोग हरगिज़ तुम तक नहीं पहुँच पायेंगे। तो तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात से निकल भागो और तुममें से कोई मुड़कर न देखे मगर तुम्हारी बीबी देखे कि जो (सजा) इन लोगों पर उतरने वाली है वह उस पर भी जरूर उतरेगी। इनके वादे का

§ यानी इब्राहीम के घर वाली (पत्नी)।

समय सुबह है । क्या सुबह करीब नहीं। (८१) फिर जब हमारा हुक्म आया तो (ऐ पैग़म्बर) हमने बस्ती लौट दी और उस पर जमे हुये खंजड़ के पत्थर बरसाये। (८२) जिन पर तुम्हारे परवर्दिगार के यहाँ निशान किया हुआ था और यह जालिमों से दूर नहीं। (८३) [रुकू ७]

मदीयन† की तरफ उनके भाई शुऐब को भेजा उन्होंने कहा भाईयों खुदा ही की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं और नाप और तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको खुशहाल देखता हूँ और मुझको तुम्हारी निस्बत सजा के दिन का खटका है जो आ घेरेगी। (८४) भाइयों नाप और तौल इन्साफ के साथ पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीजें कम न दिया करो और देश में फसाद मत मचाते फिरो (८५) अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह का दिया जो कुछ बच रहे वही तुम्हारे लिए अच्छा है। मैं तुम्हारी हिफाजत करनेवाला तो नहीं हूँ। (८६) वह कहने लगे कि ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज ने तुमको यह सिखाया है कि जिनको हमारे बाप-दादा पूजते आये हैं हम उनको छोड़ बैठें या अपने माल में जिस तरह चाहें खर्च न करें हाँ तुम ही तो सहनशील और भले निकले हो। (८७) (शुऐब) बोले भाईयों भला देखो तो सही अगर मुझको अपने परवर्दिगार की तरफ से सूझ हुई और वह मुझको अपने से अच्छी रोजी देता है मैं नहीं चाहता कि जिससे तुमको मना करता हूँ वही काम पीछे से आप करूँ मैं तो जहाँ तक हो सके सुधार चाहता हूँ और मेरा कामियाब होना तो बस खुदा ही से है। मैंने तो उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ ध्यान देता हूँ। (८८) भाईयों मेरी जिद में आकर कहीं ऐसा जुर्म न कर बैठना कि जैसी मुसीबत नूह व हूद की जाति व सालेह की जाति पर आई थी। वैसी ही मुसीबत तुम पर भी आवे और लूत की जाति भी तुमसे दूर नहीं। (८९) अपने परवर्दिगार से माँफी माँगो

---

† हजरत इब्राहीम के एक बेटे का नाम मदियन था। फिर उनकी सन्तान का यही नाम पड़ गया ।

जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबा की जैसा हुक्म हुआ है सीधे चले आओ और हद से न बढ़ो और जो कुछ तुम कर रहे हो ख़ुदा देख रहा है। (११२) (मुसलमानों) जिन लोगों ने बेहुक्मी की उनकी ओर मत झुकना और नहीं तो (दोज़ख की) आग तुम्हारे लगेगी और ख़ुदा के सिवाय तुम्हारा सहायक कोई नहीं है (ये हुक्मी की तरफ़ झुकने की सूरत में उसकी तरफ़ से भी) तुमको सहायता नहीं मिलेगी। (११३) (ऐ पैग़म्बर) दिन के दोनों सिरे (यानी सुबह शाम) और रात के पहिले नमाज़ पढ़ा करो क्योंकि भलाइयाँ गुनाहों को दूर कर देती हैं जो लोग ख़ुदा का ज़िक्र करने वाले हैं उनके हक़ में यह याद दिलाना है। (११४) (ऐ पैग़म्बर) ठहरे रहो क्योंकि अल्लाह अच्छे कर्मों के बदले को बेकार नहीं होने देगा। (११५) तो जो उमातें (गिरोह) तुमसे पहिले हो चुकी हैं उनमें (संसार की हानी) ख़ैरख्वाही करनेवाले क्यों न हुए कि (लोगों को) देश में विद्रोह मचाने से मना करते मगर थोड़े जिनको हमने बचा लिया। और जो ज़ालिम थे वही राह चले जिसमें ऐश पाया और यह लोग पापी थे। (११६) और (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारा परवर्दिगार ऐसा नहीं है कि बस्तियों को नाहक़ मार डाले और वहाँ के लोग भले हों। (११७) अगर तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो लोगों का एक ही मत कर देता लेकिन लोग हमेशा भेद डालते रहेंगे। (११८) मगर जिस पर तुम्हारा परवर्दिगार मेहरबानी करे और इसीलिए तो इनको पैदा किया है और तुम्हारे परवर्दिगार का कहा हुआ पूरा हो कि हम जिन्नों और आदमियों सब से दोज़ख भर देंगे। (११९) (ऐ पैग़म्बर) दूसरे पैग़म्बरों के जितने क़िस्से हम तुम से बयान करते हैं उनके द्वारा हम तुम्हारे दिल को साहस बन्धाते हैं और इन में सच बात तुम्हारे पास पहुँची और ईमान वालों के लिये नसीहत और हिदायत है। (१२०) (ऐ पैग़म्बर) जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दो कि तुम अपनी जगह काम करो हम भी काम करते हैं। (१२१) तुम भी राह देखो और हम भी राह देखते हैं। (१२२) आसमान और ज़मीन की छिपी बातें अल्लाह ही के पास हैं और हर

हर काम आखिरकार उसी पर आकर सहारा लेता है तो (ऐ पैग़म्बर) उसी की पूजा करो और उसी पर भरोसा रक्खो और जो कुछ तुम लोग कर रहे हो तुम्हारा परवर्दिगार उससे बेखबर नहीं। (१२३) [रुकू १०]।

सूरे यूसुफ।

मक्के में उतरी। इसमें १११ आयतें १२ रुकू हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। अलिफ-लाम-रा यह (§सूरत) खुली किताब (यानी क़ुरान) की आयतें हैं। (१) हमने इस क़ुरान को अरबी भाषा में उतारा है ताकि तुम समझ सको। (२) (ऐ पैग़म्बर) हम तुम्हारी तरफ़ उसी खुदाई पैगाम के जरिये से यह सूरत भेजकर तुमको एक अच्छा किस्सा सुनाते हैं और तुम इससे पहले बेखबर थे। (३) एक समय था कि यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप! मैंने ११ सितारों और सूरज और चाँद को देखा है कि यह सब मुझको सिजदा (सिर झुकाना) कर रहे हैं। (४) याकूब ने कहा बेटा कहीं अपने स्वप्न को अपने भाइयों से न कह बैठना कि वह तुझको (किसी न किसी) आफ़त में फँसाने की तदबीर करने लगेंगे। शैतान आदमी का खुला दुश्मन है। (५) जैसा तूने स्वप्न में देखा है वैसा ही (होगा कि) तेरा परवर्दिगार तुझको (मेरे साथ में) क़बूल करेगा। तुझको (स्वप्न की) बातों की फल बैठाना सिखाएगा और जिस तरह खुदा ने अपनी नियामत पहले तेरे दादा इसहाक़ और इब्राहीम पर पूरी की थी उसी तरह तुझपर और

§ कुछ यहूदियों ने मक्के के बड़े लोगों से कहा था कि मुहम्मद साहब से पूछो कि याक़ूब की संतान शाम देश से मिस्र क्यों कर आई। इसी प्रश्न के उत्तर में यह सूरत उतरी।

!कूब की औलाद पर पूरी करेगा तेरा परवर्दिगार जानकार और हिक-मत वाला है। (६) [रुकू १]

(ऐ पैग़म्बर यहूद) जो दर्याफ्त करते हैं उनके लिए यूसुफ़ और उनके भाइयों में निशानियाँ हैं। (७) जब यूसुफ़ के भाइयों ने (आपस में) कहा कि बावजूदे कि (हक़ीक़ी) भाइयों की बड़ी जमाव है तो भी यूसुफ़ और उसका भाई‡ हमारे वालिद को हमसे बहुत ज्यादा प्यारे हैं हमारा वालिद जाहिरा ग़लती में हैं। (८) (तो या तो) यूसुफ़ को मार डालो या उसको किसी जगह फेंक आओ तो वालिद का रुख तुम्हारी ही तरफ रहेगा और उसके बाद तुम लोगों के (सब) काम ठीक हो जायेंगे। (९) उनमें से एक कहने वाला बोल उठा कि यूसुफ़ को जान से न मारो। हाँ तुमको मारना है तो उसको अन्धे कुएँ में डाल दो कि कोई राह चलता काफ़िला उसको निकाल लेगा। (१०) (तब सबने मिलकर याक़ूब से) कहा कि ऐ वालिद इसकी क्या वजह है कि आप यूसुफ़ के सम्बन्ध में हमारा यक़ीन नहीं करते हालाँकि हम तो उसके (हितैषी) हैं। (११) उसको कल हमारे साथ भेज दीजिये (कि जंगल के फल वगैरह) खा आँये और खेलें और हम उसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार हैं। (१२) (याक़ूब ने) कहा कि तुम्हारा इसको ले जाना तो मुझपर सख्त गुज़रता है और मैं इस बात से भी डरता हूँ कि (ऐसा न हो) कहीं तुम इससे बेख़बर हो जाओ और इसको भेड़िया खा जावे। (१३) वह कहने लगे कि अगर इसको भेड़िया खा जाय और हम इतने सब हैं तो इस सूरत में हम निकम्मे ठहरे। (१४) आख़िरकार जब यह लोग (याक़ूब के हुक्म से) यूसुफ़ को अपने साथ ले गये और सब ने इस बात पर एका कर लिया कि इसको किसी अन्धे कुएँ में डाल दें तो जैसा ठहराया था वैसा ही किया और (उसी वक़्त) हमने यूसुफ़ की तरफ़ वही (ख़ुदाई पैग़ाम) भेजा कि तुम (एक दिन) इनको इनके इस बुरे व्यवहार से जतलाओगे

‡ यूसुफ़ के एक सगे भाई थे और ग्यारह सौतेले।

और वह तुमको नहीं जानेंगे† । (१५) गरज यह लोग (यूसुफ को कुएँ में गिरा थोड़ी रात गये रोते (पीटते) बाप के पास आये । (१६) कहने लगे ऐ वालिद ! मानो हम तो जाकर कबड्डी खेलने लगे और यूसुफ को हमने असबाब के पास छोड़ दिया इतने में भेड़िया उसे खा गया और अगर्चे हम सच भी कहते हों तो भी आपको हमारी बात का यक़ीन न आवेगा । (१७) यूसुफ के कुर्ते पर झूठमूठ का खून (भी लगा) लाये । याक़ूब ने (उनका बयान सुनकर और खून से सना कुर्ता देखकर) कहा (कि यूसुफ को भेड़िये ने तो नहीं खाया) बल्कि तुमने अपने (मुँह उजागर करने के) लिए अपने दिल से एक बात बना ली है खैर सब्र अच्छा है और जो तुम कहते हो खुदा ही मदद करे । (१८) और एक क़ाफ़िला आ गया उन्होंने अपने भिश्ती को भेजा ज्यों ही उसने अपना डोल लटकाया (यूसुफ उसमें आ बैठे) पुकार उठा अहा यह तो लड़का है क़ाफ़िले वालों ने यूसुफ को माल तिजारत क़रार देकर छिपा रक्खा और (इस हाल को छिपाने की) जो तदबीरें (यह लोग) कर रहे थे अल्लाह को खूब मालूम थीं । (१६) (इतने में तो भाइयों को यूसुफ की खबर लगी और उन्होंने उसको अपना गुलाम बनाकर बेचा) क़ाफ़िले वालों ने कम दामों (यानी) चन्द दिरहम के बदले में उसको मोल ले लिया और वह यूसुफ की इच्छा न रखते थे । (२०) [रुकू २]

(आखिरकार) मिस्र के लोगों में मिस्र के शासक से जिसने यूसुफ को मोल लिया उसने अपनी औरत (जुलैखा) से कहा इसको अच्छी तरह रक्खो ताज्जुब नहीं यह हमको फ़ायदा पहुँचाये या इसको हम बेटा ही बनालें और यों हमने यूसुफ को देश में जगह दी और गरज यह थी कि हम उनको बातों की तह बैठाना सिखायें और अल्लाह अपने इरादे पर ताक़तवर है मगर अक्सर लोग नहीं जानते । (२१) जब यूसुफ अपनी जवानी को पहुँचा हमने हुक्म और इल्म दिया हम

---

† यूसुफ जब कुंए में गिराये गये तो यह वहीं भाई और जब उनके भाई मिस्र में अनाज लेने आये तो सच सिद्ध हुई ।

भलाई करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (२२) (जुलैखा) जिसके घर में यूसुफ थे उसने उनसे बदकारी का इरादा किया और दरवाजे बन्द कर दिये और कहा अन्द आओ (यूसुफ) ने कहा अल्लाह बचावे यह (तुम्हारा खाविंद) मेरा मालिक है उसने मुझको अच्छी तरह रक्खा है (मैं उसकी अमानत में खयानत नहीं कर सकता) क्योंकि जालिम लोग भलाई नहीं पाते। (२३) वह तो यूसुफ के साथ बुरी इच्छा कर ही चुकी थी और यूसुफ को अपने परवर्दिगार की तरफ की दलील कि वह मेरा स्वामी है उस वक्त न सूझ गई होती तो वह भी उसके साथ बुरी इच्छा कर बैठे होते। इसी प्रकार (हमने) यूसुफ को मजबूत रक्खा ताकि बदकारी और बेशर्मी उनसे दूर रखें कुछ शक नहीं कि वह हमारे चुने सेवकों में से था। (२४) और दोनों दरवाजे की ओर भागे और औरत ने पीछे से यूसुफ का कुर्ता फाड़† लिया और औरत का पति द्वारे के पास मिल गया (वह शौहर से पेशबन्दी के तौर पर) बोली कि जो शख्स तेरी बीबी के साथ बदकारी की इच्छा करे बस उसकी यही सजा है कि कैद कर दिया जाय या कड़ी सजा दी जाय। (२५) यूसुफ ने कहा कि यह (औरत खुद) मुझसे मेरी चाहने वाली हुई थी और उसके कुटुम्ब वालों में से गवाह ने यह बात बताई कि यूसुफ का कुर्ता (देखा जाय) अगर आगे से फटा है तो औरत सच्ची और यूसुफ झूठा। (२६) और अगर इसका कुर्ता पीछे से फटा है तो औरत झूठी और यूसुफ सच्चा। (२७) तो जब यूसुफ के कुर्ते को पीछे से फटा हुआ देखा तो उसने कहा कि यह तुम औरतों के चरित्र हैं कुछ संदेह नहीं कि तुम स्त्रियों के बड़े चरित्र हैं। (२८) यूसुफ इसको जाने दो और (औरत) तू अपने गुनाह की माफी माँग क्योंकि सरासर तेरा ही कसूर था। (२९) [रुकू ३]

---

† यानी यूसुफ जब भागे और जुलेखा ने उनको दौड़कर पकड़ना चाहा तो यूसुफ का कुरता उसके हाथ में आकर फट गया।

शहर में औरतों ने चर्चा किया कि अजीज़† की स्त्री अपने गुलाम से नाजायज मतलब हासिल करना चाहती है गुलाम का इश्क उसके दिल में जगह पकड़ गया है हमारे नजदीक तो वह जाहिरा गलती में है। (३०) तो जब (मिस्र के अजीज़) की औरत ने इनके ताने सुने उनको बुलवा भेजा और उनके लिए एक महफिल की तैयारी की और (फल तराश-तराशकर खाने के लिए) एक-एक छुरी उनमें से हर एक के हवाले की और (ठीक वक्त पर यूसुफ से) कहा कि इनके सामने बाहर आओ (और जरा अपनी शक्ल तो दिखाओ) फिर जब औरतों ने यूसुफ को देखा तो उन पर यूसुफ की ऐसी शान बैठी कि उन्होंने अपने हाथ काट लिए और कहने लगी अल्लाह की कसम यह आदमी तो नहीं। हो न हो यह एक बड़ा फरिश्ता‡ है। (३१) (अजीज़ मिस्र की औरत) बोली बस यही तो है जिसके सम्बन्ध में तुमने मुझको मलामत की कि मैंने अपना नाजायज मतलब इससे हासिल करना चाहा था। मगर उसने बचाया और जिसको मैं इससे कह रही हूँ अगर उसको नहीं करेगा तो जरूर कैद किया जावेगा और जरूर जलील होगा। (३२) (यह सुनकर) यूसुफ ने दुआ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार। जिसकी तरफ (यह औरतें) मुझको बुला रही हैं कैद रहना मुझको उससे कहीं ज्यादा पसंद है अगर इनके चरित्रों को तूने मुझसे दूर नहीं किया तो मैं इनसे मिल जाऊँगा और मूर्खों में हो जाऊँगा। (३३) तो यूसुफ के परवर्दिगार ने उनकी सुन ली और उनसे औरतों के चरित्रों को दूर कर दिया खुदा सुनता जानता है। (३४) फिर जब लोगों ने यूसुफ की निष्कलंक निशानियाँ देख लीं उसके बाद (भी जुलेखा की दिलजोई और यूसुफ को उसकी नजर से दूर रखने के लिए) उनको यही (मुनासिब) मालूम हुआ कि एक वक्त तक उसको कैद रखें। (३५) [रुकू ४]

---

† 'अजीज़' पहले मिस्र के वजीर का खिताब था बाद को यह खिताब बादशाह का हो गया था।

‡ पानी में मनुष्य नहीं वरन स्वर्गीय नवयुवक जान पड़ता है।

यूसुफ के साथ दो आदमी जेलखाने में दाखिल हुये (उन्होंने ख्वाब देखे कि यूसुफ को बुजुग समझ कर स्वप्नफल पूँछने के मतलब से) एक ने कहा कि मैं देखता हूँ कि शराब निचोड़ रहा हूँ और दूसरे नें कहा कि मैं देखता हूँ कि अपने सर पर रोटियाँ उठाये हुए हूँ और परिन्दे उनमें से खा-खा जाते हैं। (यूसुफ) हमको (हमारे) इस (स्वप्न) का स्वप्न फल बताओ क्योंकि तुम हमको भले ईसान दिखाई देते हो। (३६) (यूसुफ ने) जवाब दिया कि जो खाना तुमको अब मिलने वाला है वह तुम तक आने नहीं पावेगा कि उसके स्वप्न की तावीर (स्वप्न का फल) बता दूँगा† यह उन बातों में से जो मुझको मेरे परवर्दिगार ने सिखलाई हैं। मैं (शुरू से) उन लोगों का मजहब छोड़े बैठा हूँ जो खुदा पर ईमान नहीं रखते और कयामत से इन्कार करने वाले हैं। (३७) मैं अपने बाप-दादों इब्राहीम और इसहाक और याकूब के दीन पर चल रहा हूँ। हमारा काम नहीं कि खुदा के साथ किसी चीज को शरीक बनायें यह (यकीन) खुदा की एक मेहरबानी है (जो उसनें) हम पर और लोगों पर की है मगर अक्सर लोग शुक्र (कृतज्ञता) नहीं करते। (३८) जेलखाने के दोस्तों ! जुदे-जुदे पूजित अच्छे या एक खुदा जबरदस्त। (३९) तुम लोग खुदा के सिवाय निरे नामों ही की पूजा करते हो। जो तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने गढ़ रखे हैं खुदा ने तो इनकी कोई सनद नहीं दी। हुकूमत तो एक अल्लाह ही की है (और) उसने आज्ञा दी है कि केवल उसी की पूजा करो यही सीधा दीन है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (४०) ऐ जेल खाने के दोस्तों तुम में से एक तो अपने मालिक को शराब पिलायेगा और दूसरा फाँसी पर लटकाया जायगा और पक्षी उस का सिर खायगे जिस बात को तुम पूँछते थे फैसला हो चुका है। (४१) और जिस ईसान की बाबत यूसुफ ने समझा था कि इन दोनों में से एक की रिहाई हो जायगी उससे कहा अपने मालिक के पास मेरी भी चर्चा करना (कि मैं बेकार कैद हूँ) सो शैतान ने उसको

---

† यानी बहुत जल्दी।

अपने मालिक से चर्चा करना भुला दिया तो (यूसुफ) कई वर्ष कैद-खाने में रहे। (४२) [रुकू ५]

(इस बीच में) बादशाह ने बयान किया कि मैं सात मोटी गायें देखता हूँ उनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालें हैं और दूसरी (सात) सूखी। ऐ दरबार के लोगों! अगर तुमको स्वप्न की ताबीर (स्वप्न का फल) देना आता हो तो मुझ से इस स्वप्न के बारे में अपनी राय जाहिर करो। (४३) उन्होंने कहा कि यह तो कुछ उड़ते ख्यालात हैं और (ऐसे) ख्यालात की ताबीर हमको नहीं आती। (४४) वह शख्स जो (यूसुफ के संग) दो (साथियों) में से छुटकारा पा गया था और उसको एक अर्से के बाद (यूसुफ का किस्सा) याद आया। बोल उठा कि मुझको (कैदखाने तक) जाने की आज्ञा दो तो (मैं यूसुफ से पूँछकर) इसकी ताबीर तुमको बताऊँ। (४५) (उसको हुक्म हुआ) और उसने यूसुफ से जाकर कहा कि ऐ यूसुफ! बड़ा सच्चा स्वप्न-फल बताने वाले हो। भला इस बारे में तो तुम अपनी राय हमसे जाहिर करो कि सात मोटी गायों को सात दुबली (गायें) खाती हैं और सात हरी बालें और दूसरी (सात बालें) सूखी इसका जवाब दो तो मैं लोगों के पास लौट जाऊँ ताकि (इस ताबीर का हाल) उनको मालूम हो। (४६) (यूसुफ ने) कहा (स्वप्न का फल यह है कि) तुम लोग सात वर्ष तक बराबर काश्तकारी करते रहोगे तो जो (फसल) काटो उसको उसी की बालों ही में रहने देना (ताकि गल्ला गले सड़े नहीं) मगर हाँ किसी कदर जो तुम्हारे खाने के काम में आये। (४७) फिर इसके बाद सात वर्ष बड़े सख्त अकाल के आयेंगे कि जो कुछ तुमने पहले से इन (वर्षों) के लिए इकट्ठा कर रक्खा होगा खा जायेंगे मगर हाँ थोड़ा जो कुछ तुम (बीज के लिए बचा रखोगे (उतना ही लोगों से बच जायगा)। (४८) फिर इसके बाद एक ऐसा साल आयेगा जिसमें लोगों के लिए मेंह गिरेगा और (खेती के सिवाय) उस वर्ष अंगूर भी खूब फलेंगे (लोग शराब के लिए उसके

रस भी) निचोड़ेंगे। (४६) [रुकू ६] (सारांश यह कि †साकी ने यह सब स्वप्न फल आकर बादशाह से कहा)

बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ को हमारे सामने लाओ तो जब चोबदार यूसुफ के पास (यह हुक्म लेकर) पहुँचा तो उन्होंने कहा तुम अपनी सरकार के पास लौट जाओ और उनसे पूछो कि उन औरतों का भी हाल मालूम है जिन्होंने (मुझको देख कर) अपने हाथ काट लिए थे (आया वह मेरे पीछे पड़ी थीं या मैं उनके पीछे पड़ा था) इनके चरित्रों को मेरा परवर्दिगार जानता है। (५०) (चुनाँचे बादशाह ने इन औरतों को बुलवाकर उनसे) पूँछा कि जिस वक्त तुमने यूसुफ से अपना मतलब (नाजायज) हासिल करना चाहा था (उस वक्त) तुमको क्या मामला पेश आया। उन्होंने अर्ज किया "हाशा लिल्लाह" हमने तो यूसुफ में किसी तरह की बुराई नहीं पाई (इस पर) अजीज की बीबी बोल उठी कि अब सब बात जाहिर हो गई। मैंने यूसुफ से अपना (नाजायज) मतलब हासिल करना चाहा था और यूसुफ सच्चों में है। (५१) यह (माजरा) चोबदार ने यूसुफ से बयान किया। यूसुफ ने कहा मैंने कभी की दबी दबाई बात इस लिए उखाड़ी कि मिस्र के अजीज को मालूम हो जाय कि मैंने उसकी पीठ पीछे उसकी (अमानत में) खयानत नहीं की और यह भी मालूम रहे कि खयानत करने वालों की तदबीरों को खुदा चलने नहीं देता। (५२)

तेरहवाँ पारा (वमा उबर्रिउ)

मैं यूसुफ अपनी बाबत नहीं कहता कि मैं पाक-साफ हूँ क्योंकि इन्द्रियाँ तो बुराई के लिए उभारती ही रहती हैं मगर यह कि मेरा परवर्दिगार अपनी मेहरबानी करे कुछ शक नहीं कि मेरा परवर्दिगार माफ

† साकी का अर्थ है पिलानेवाला। यह व्यक्ति चूँकि पानी आदि पिलाया करता था इसी लिये इस नाम से याद किया गया।

करनेवाला रहीम है। (५३) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ को हमारे सामने लाओ कि हम उसको अपनी नौकरी के लिए रक्खेंगे जब यूसुफ से बात चीत की तो कहा आज तूने विश्वासपात्र होकर हमारे पास जगह पाई। (५४) यूसुफ ने अर्ज किया मुझको मुल्की खजाने पर मुकर्रर कर दीजिये मैं अत्यन्त निगहबान और होशियार हूँ। (५५) यों हमने यूसुफ को देश में स्थान दिया कि उसमें जहाँ चाहें रहें। हम जिस पर चाहते हैं अपनी मेहरबानी करते हैं और अच्छे काम करने वालों के अजाम बेकार नहीं होने देते। (५६) और जो लोग ईमान लाये और परहेजगारी करते रहे आखिरी अजाम भला है। (५७) [रुकू ७]

यूसुफ के भाई आये और यूसुफ के पास गये। तो यूसुफ ने उनको पहचान लिया और उन्होंने यूसुफ को नहीं पहचाना। (५८) जब यूसुफ ने भाईयों का सामान उनके लिए तैयार कर दिया तो कहा अपने सौतेले भाई इब्नयामीन को लेते आना क्या तुम नहीं देखते कि हम नाप (तौल) पूरी देते हैं और हम सबसे अच्छे मेजमान हैं। (५९) फिर अगर तुम उसको हमारे पास न लाये तो तुमको हमारे यहाँ अनाज नहीं मिलेगा और तुम हमारे पास न आना। (६०) उन्होंने कहाकि हम आते ही उसके वालिद से उसके सम्बन्ध में विनती करेंगे और अवश्य हमको करना है। (६१) यूसुफने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि इन लोगों की पूंजी उन्हीं की बोरियों में रख दो ताकि जब लोग अपने बाल-बच्चों की तरफ लौटकर जायें तो अपनी पूंजी को पहचानें ताज्जुब नहीं यह लोग फिर भी आवें। (६२) तो जब अपने वालिद के पास लौटकर गये तो निवेदन किया कि ऐ बाप हमें अनाज की मनाही कर दी गई है सो आप हमारे भाई को भी हमारे साथ भेज दीजिये कि हम अनाज लावें और हम उसकी हिफाजत के जिम्मेदार हैं। (६३) कहा कि मैं इस पर तुम्हारा क्या यकीन करूँ मगर वैसा ही यकीन जैसा मैंने पहिले इसके भाई पर किया था सो खुदा सबसे अच्छा हिफाजत करनेवाला है और वह सब मेहरबानों से ज्यादा मेहरबान है। (६४) जब इन

लोगों ने अपना सामान खोला तो देखा कि इनकी पूंजी भी इनको लौटा दी गई है फिर बाप की तरफ आये (और) कहने लगे कि ऐ पिता! हमें और क्या चाहिये यह हमारी पूंजी फिर हमको लौटा दी गई है (अब हमको आज्ञा दो कि बिनयामीन को साथ लेकर जावें) अपने घर के लिये रसद लावें और हम अपने भाई बिनयामीन की हिफाजत करेंगे और एक बार ऊँट भर अनाज और लावेंगे यह अनाज (गल्ला) थोड़ा है। (६५) (बाप ने) कहा जब तक तुम खुदा की कसम खाकर मुझको पूरा अहद न दोगे कि तुम इसको जरूर मेरे पास फिर लाओगे। मगर यह कि तुम आप ही घिरजाओ तो मजबूर है। ऐसा अहद किये बिना तो मैं इसको तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेजूंगा। तो जब उन्होंने बाप को अपना पक्का वचन दे दिया तो (बाप ने) कहा कि अहद जो हम कर रहे हैं अल्लाह उसका साक्षी है। (६६) और (बाप ने उनको चलते वक्त यह भी) तालीम की लड़कों (देखो) एक दरवाजे से दाखिल न होना (कि कहीं बुरी नजर न लग जाय) बल्कि अलग अलग दरवाजों से दाखिल होना और मैं खुदा की किसी चीज से नहीं बचा सकता। हुक्म तो अल्लाह ही का है मैंने उसी पर विश्वास कर लिया है और भरोसा करनेवालों को चाहिये कि उसी पर भरोसा करें। (६७) और जब यह लोग (उसी तरह पर) जैसे उनके बाप ने उनसे कह दिया था (मिस्र में) दाखिल हुये तो यह होशियारी खुदा के सामने इनकी कुछ भी काम नहीं आ सकती थी। वह तो याकूब की एक दिली इच्छा थी जिसको उन्होंने पूरा किया और इसमें सन्देह नहीं कि याकूब हमारे सिखाये से खबरदार था लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (६८) [रुकू ८]।

जब यूसुफ के पास गये तो यूसुफ ने अपने भाई को अपने पास बैठा लिया कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ) हूँ सो जो (बुरा बर्ताव यह लोग तुम्हारे साथ) करते रहे हैं उसको कुछ रंज मत करो। (६९) फिर जब (यूसुफ ने) भाइयों को उनका सामान साथ पहुँचा दिया तो अपने भाई की बोरी में पानी पीने का कटोरा रखवा दिया। फिर एक

पुकारने वाले ने पुकारा कि काफले वालों हो न हो तुम्हीं चोर हो। (७०) यह लोग पुकारने वालों की तरफ फिरकर पूँछने लगे कि (क्यों भी) तुम्हारी क्या चीज खो गई है। (७१) उन्होंने कहा शाही पैमाना (माप) हमको नहीं मिलता और जो शख्स उसे लाकर हाजिर करे उसको एक बोझ ऊँट इनाम मिलेगा और मैं उसका ज़ामिन हूँ। (७२) (यह सुनकर यह लोग) कहने लगे देश में शरारत करने की इच्छा से नहीं आये और न हम कभी चोर थे। (७३) (कटोरे के ढूँढने वाले) बोले कि अगर तुम झूँठे निकले तो फिर चोर की क्या सजा। (७४) यह कहने लगे कि चोर की यह सजा कि जिसकी बोरी में कटोरा निकले वही‡ आप उसके बदले में आवे (यानी कटोरे के बदले बादशाह का गुलाम) हम तो ज़ालिमों को इसी तरह की सजा दिया करते हैं। (७५) आखिरकार यूसुफ ने अपने भाई की बोरी से पहले दूसरे भाईयों की बोरियों की तलाशी लिवाना शुरू की फिर अपने भाई के बोरे से कटोरा निकलवाया। यों हमने यूसुफ के फायदे के लिए मकर किया। बादशाह मिस्र के कानून की रूह से वह अपने भाई को नहीं रोक सकते थे मगर यह कि अगर खुदा को मन्जूर होता (तो कोई दूसरा रास्ता निकलता) हम जिस को चाहते हैं उसके दर्जे ऊंचे कर देते हैं हर एक खबर वाले से एक खबरदार बढ़कर है। (७६) (जब इब्नयामीन के बोरे से कटोरा निकला तो भाई) कहने लगे कि अगर इसने चोरी की हो तो (ताज्जुब की बात नहीं) (इससे) पहले इसका भाई (यूसुफ§) भी चोरी कर

---

‡ इब्राहीमी न्याय-शास्त्र के अनुसार चोर को एक वर्ष तक मालवाले मनुष्य की गुलामी (दासता) करनी पड़ती थी। मिस्र में चोर को मार-पीट कर उससे दूना भरना भराते थे। यूसुफ न अपने भाई को अपने पास रोक रखने के लिए यह उपाय किया था।

§ यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ पर झूठ लफ्ट लगाया ह। और कुछ कहते ह कि यूसुफ अपने घर से छिपाकर ग़रीबों को अन्न या भोजन दे आते थे इसलिए उनके भाइयों ने उनपर चोरी का दोष लगाया ह।

चुका है सो यूसुफ ने (इसका जवाब देना चाहा मगर) उसको अपने दिल में रक्खा। इन पर उसको ज़ाहिर न होने दिया और कहा कि तुम बड़े नीच हो और जो कहते हो ख़ुदा ही इसको खूब जानता है। (७७) कहने लगे ऐ अज़ीज़ इस के वालिद बहुत बूढ़े हैं सो आप (मेहरबानी करके) इसकी जगह हम में से किसी को रख लीजिये हमको तो आप बड़े अहसान करने वाले मालूम होते हैं। (७८) (यूसुफ ने कहा अल्लाह बचाये कि हम उस शख्स को छोड़कर जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है किसी दूसरे शख्स को पकड़ रक्खें ऐसा करें तो हम बेइंसाफ ठहरे। (७९) [रुकू ९]

सो जब यूसुफ से नाउम्मीद हो गये तो अकेले सलाह करने बैठे जो सबमें बड़ा था बोला कि क्या तुमको मालूम नहीं कि वालिद साहिब ने ख़ुदा की कसम लेकर तुमसे पक्का वादा लिया है और पहले यूसुफ के हक़ में तुमसे एक गुनाह हो ही चुका है। तो जब तक मुझको वालिद हुक्म न दें या (जब तक) ख़ुदा मेरे लिए कोई सूरत न निकाले मैं तो इस जगह से टलने वाला नहीं ख़ुदा ही सबसे बढ़कर तजवीज़ करने वाला है। (८०) तो तुम पिता की सेवा में लौट जाओ और दुआ करो कि वालिद ! आपके लड़के ने चोरी की हमने वही बात कही है जो हमको मालूम हुई है और (यह जो हमने इब्नयामीन की रक्षा का जिम्मा लिया था तो कुछ) हमको गैब की खबर नहीं थी। (८१) आप उस बस्ती से पूँछ लीजिये जहाँ हम थे और उस काफ़िले से जिसमें हम आये हैं और हम बिल्कुल सच कहते हैं। (८२) जब याकूब से यह बातें कही गईं तो वह बोले कि (इब्नयामीन ने तो चोरी नहीं की) बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है तो (ख़ैर) अब सब्र अच्छा है मुझ को तो उम्मीद है कि अल्लाह मेरे सब लड़कों को मेरे पास लायेगा क्योंकि वह जानकार हिक्मत वाला है। (८३) याकूब बेटों से अलग जा बैठे और कहने लगे हाय यूसुफ और शोक के मारे उनकी दोनों आँखें सफेद हो गई थीं और वह जी ही जी में घुटा करते थे। (८४) (बाप का यह हाल देखकर) बेटे कहने लगे कि ख़ुदा की

फ़रम तुम तो सदा यूसुफ ही की यादगारी में लगे रहोगे यहाँ तक कि बीमार हो जाओगे या मरही जाओगे। (८५) (याक़ूब ने) कहा (मैं तुमसे तो कुछ नहीं कहता) जो परेशानी और रंज मुझको है उसकी फरियाद ख़ुदा ही से करता हूँ और ख़ुदा ही की तरफ से मुझको वह बातें मालूम हैं जो तुमको मालूम नहीं। (८६) लड़कों (एकबार फिर मिस्र) जाओ और यूसुफ और उसके भाई की टोह लगाओ और ख़ुदा की कृपा से नाउम्मेद न हो क्योंकि ख़ुदा की कृपा से वही लोग निराश हुआ करते हैं जो काफ़िर हैं। (८७) तो जब यूसुफ तक पहुँचे तब गिड़गिड़ाने लगे कि अज़ीज़ ! हम पर और हमारे घाल बच्चों पर सख्ती पड़ रही है और हम कुछ थोड़ी सी पूँजी लेकर आये हैं हमको पूरा गल्ला (अनाज) दिलवा दीजिये और हमको अपनी ख़ैरात दीजिये क्योंकि अल्लाह (ख़ैरात) करनेवालों को अच्छा (बदला) देता है। (८८) (अब तो यूसुफ से भी) न रहा गया और कहने लगे कि तुमको कुछ याद भी है जिस वक्त तुम मूर्खता पर थे तो तुमने यूसुफ और उसके भाइ के साथ क्या किया था। (८९) (इसके कहने से भाईयों को आगाही हुई और) कहने लगे क्या सच तुम्हीं यूसुफ हो ? यूसुफ ने कहा मैं ही यूसुफ हूँ और यह मेरा ही भाई है हम पर अल्लाह ने कृपा की। जो कोई परहेज़गार हो और साबित (ठहरा) रहे तो अल्लाह नेकी करने वालों के अंजाम को बेकार नहीं होने देता। (९०) बोले ख़ुदा की कसम कुछ सन्देह नहीं कि तुमको अल्लाह ने हमसे ज्यादा पसंद रक्खा और हम ही गुनहगार थे। (९१) यूसुफ ने कहा अब तुम पर कोई गुनाह नहीं। ख़ुदा तुम्हारे गुनाह माफ करे और वह सब मेहरबानों से ज्यादा मेहरबान है। (९२) (तुम्हारे कहने से मालूम हुआ कि पिता की आखें जाती रही हैं तो) मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसको पिता के मुँह पर डाल दो कि वह देखने लगेंगे और अपने पूरे कुटुम्ब को मेरे पास ले आओ। (९३) [रुकू १०]

काफ़िला (व्यापारियों का झुंड) मिस्र से चला ही था कि

यो वह टल नहीं सकती और ख़ुदा के सिवाय उन लोगों का कोई मददगार नहीं। (११) और वही है डराने और आशा दिलाने के लिये (बिजली की चमक) तुम लोगों को दिखाता और बोझिल बादलों को उभारता है। (१२) गरज (कड़क) उसकी तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बतलाती है और फरिश्ते उसके डर के मारे और बिजलियाँ भेजता है फिर जिस पर चाहता है उन पर डालता है और यह ख़ुदा की बात में झगड़ते हैं हालाँकि उसके दाँव सख़्त हैं। (१३) उसी को सच्चा पुकारना है और जो लोग इसके सिवाय पुकारते हैं वह उनकी कुछ नहीं सुनते मगर जैसे एक शख़्स अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाये ताकि पानी उसके मुँह में आजावे हालाँकि वह उस तक कभी नहीं पहुँचेगा और जितनी काफ़िरों की पुकार है सब गुमराही है (१४) और जिस क़दर आसमान व ज़मीन में है बस और बेबस अल्लाह ही के आगे सिर झुकाये हुए हैं और (इसी तरह) सुबह और शाम उनके साये भी सिजदा करते हैं। (१५) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) पूँछो कि आसमान और ज़मीन पालनेवाला कौन? कहो कि अल्लाह कहो। क्या तुमने ख़ुदा के सिवाय काम के सम्भालने वाले बना रक्खे हैं जो अपने वास्ते नुक़सान-फ़ायदा के मालिक नहीं कहो भला कहीं अन्धा और आँखोंवाला बराबर है। या कहीं अँधेरा और उजाला बराबर है। या कहीं इन्हों ने अल्लाह के ऐसे शरीक ठहरा रक्खे हैं कि उसी कैसी सृष्टि उन्हों ने भी पैदा कर रक्खी और अब उनको संसार के सम्बन्ध में सन्देह होगया है? (ऐ पैग़म्बर इन से) कहो कि अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह अकेला ज़बरदस्त है। (१६) (उसीने) आसमान से पानी बरसाया फिर अपने अन्दाज़े से नाले बह निकले। फिर फूला हुआ झाग जो ऊपर आगया था उसको रेले ने ऊपर उठा लिया और जो ज़ेवर दूसरे सामान के लिए धातों को आग में तपाते हैं उसमें उसी तरह का झाग होता है। यों अल्लाह सच और झूँठ की मिसाल बतलाता है (कि पानी सब की

जगह है और झाग झूँठ की जगह है) सो झाग तो खराब जाता है और (पानी) जो लोगों के काम आता है वह जमीन में ठहरा रहता है। अल्लाह इस तरह मिसालें बयान फर्माता है। (१७) जिन लोगों ने अपने परवर्दिगार का कहा माना उनको भलाई है और जिन्होंने उसकी आज्ञा न मानी जो कुछ जमीन पर है अगर सब उनके पास हो और उसके साथ उतना और तो यह लोग अपने छुड़वाई के बदले में उसको दे डालें। परन्तु छुटकारा कहाँ ? यही लोग हैं जिनसे बुरी तरह हिसाब लिया जायेगा और उनका आखिरी ठिकाना दोजख है और वह बुरी जगह है। (१८) [रुकू २]

भला जो शख्स इस बात को समझता है कि जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से तुम पर उतरा है सच है उस आदमी की तरह है जो अन्धा हो बस वही लोग समझते हैं जिनको समझ है। (१९) ये जो अल्लाह के अहद को पूरा करते हैं और अहद को नहीं तोड़ते। (२०) खुदा ने जिनको जोड़े रखने† का हुक्म दिया है वह उनको जोड़े रखते हैं और अपने परवर्दिगार से डरते और (कयामत के दिन) बुरी तरह हिसाब लिये जाने का खटका रखते हैं। (२१) जिन्होंने अपने परवर्दिगार के लिये तकलीफ पर सब्र किया और नमाजें पढ़ीं और हमारे दिये में से चुपके और जाहिर (खुदा की राह में) खर्च किया और बुराई के मुकाबिले में भलाई की यही लोग हैं जिनको दुनिया का फल अच्छा है। (२२) हमेशा रहने के बाग हैं जिनमें वह जायेंगे और उनके बड़ों और उनकी बीवियों और उनकी औलाद जो भला काम करने वाले होंगे। (सब उनके साथ आयेंगे) (और जन्नत के) हर दर्वाजे से फिरिश्ते उनके पास आते हैं। (२३) (सलामालेक करेंगे और कहेंगे कि दुनियाँ में) जो तुम सब्र करते रहे हो सो तुम को खूब अच्छा अंजाम मिला है। (२४) जो लोग खुदा के साथ पक्का कौल व करार किये पीछे उसे तोड़ते और जिनके जोड़े रखने का खुदा ने

† खुदा ने नाता तोड़ने का हुक्म नहीं दिया। जो लोग अपने नाते रिश्ते वालों को छोड़ देते हैं या उनसे बुराई करते हैं वह पापी है।

हुक्म दिया है उनको तोड़ते और देश में फसाद फैलाते हैं यही लोग हैं जिनके लिये फटकार है और उनका अंजाम बुरा है। (२५) अल्लाह जिसकी रोजी चाहता है बढ़ा देता है और (जिसकी चाहता है) कम कर देता है और ये काफिर दुनियाँ की ज़िन्दगी से खुश हैं हालांकि दुनियाँ की ज़िन्दगी क्यामत के सामने बिल्कुल नाचीज है। (२६) [रुकू ३]

जो लोग इनकारी हैं कहते हैं कि इस पर इसके परवर्दिगार की तरफ से कोई क्यामात क्यों नहीं उतरी। तुम इनसे कहो अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह (भटकाया) करता है और जो रुजू होता है उसको अपनी तरफ का रास्ता दिखाता है। (२७) जो लोग ईमान लाये और उनके दिलों को खुदा की याद से चैन होता है सुन रक्खो कि खुदा की याद से दिलों को चैन हुआ करता है। (२८) जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये उनके लिए (क्यामत में) खुशहाली है और अन्त उनका अच्छा ठिकाना है। (२९) (ऐ पैग़म्बर जिस तरह हमने और पैग़म्बर भेजे थे) इसी तरह हमने तुमको भी एक उम्मत (गिरोह) में भेजा है जिनसे पहले और उम्मतें (संगतें) गुजर चुकी हैं ताकि जो तुम पर उसी (खुदाई पैगाम) के जरिये से तुम पर उतरा है वह उनको पढ़कर सुना दो और यह लोग इन्कारी हैं तो कहो कि वही मेरा परवर्दिगार है उसके सिवाय किसी की दुआ नहीं करनी चाहिए मैं उसी का भरोसा रखता हूँ और उसकी तरफ चित्त लगाता हूँ। (३०) और अगर कोई कुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उस (की बरकत) से जमीन के टुकड़े हो सकते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगें तो वह यही होता बल्कि सब काम अल्लाह के हैं तो क्या ईमान वालों को इस पर सब्र नहीं होता कि अगर खुदा चाहे तो सब लोगों को राह पर लावे। और जो लोग मुन्किर हैं इनको इनकी करतूत की सजा में तकलीफ पहुँचाता रहेगा या इनकी बस्ती के आस-पास उतरेगी यहाँ तक कि खुदा का कौल पूरा हो खुदा वादाखिलाफी नहीं करता। (३१) [रुकू ४]

(ऐ पैग़म्बर) तुमसे पहले भी पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई जा चुकी है सो हमने इन्कारियों को ढील दी है फिर उनको धर पकड़ा तो हमारी सज़ा कैसी (सख्त) थी। (३२) तो क्या जो हर एक शख्स के काम की खबर रखता है और यह लोग अल्लाह के लिए (दूसरे) शरीक ठहराते हैं (ऐ पैग़म्बर उनसे) कहो कि तुम इनके नाम तो लो क्या तुम ख़ुदा को (ऐसे शरीकों की) खबर देते हो जिनको वह ज़मीन में नहीं जानता या ऊपरी बातें बनाते हो। बात यह है मुन्किरों को अपनी चालाकियाँ भली मालूम होती हैं और राह से रुके हुये हैं और जिसको ख़ुदा गुमराह करे तो कोई उसको राह दिखाने वाला नहीं। (३३) इन लोगों के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में सज़ा है और क़्यामत की सज़ा बहुत सख्त है और ख़ुदा से कोई इनको बचाने वाला नहीं। (३४) परहेज़गारों के लिए जिस बाग़ (जन्नत) का वादा किया जा रहा है उसके नीचे नहरें बह रही हैं उसके फल सदाबहार हैं और छाँह भी। यह उन लोगों के लिए फल है जो परहेज़गारी करते रहे और इन्कारियों का अंजाम दोज़ख़ है। (३५) जिनको हमने किताब दी है वह जो तुम पर उतारी है उससे ख़ुश होते हैं और दूसरे फ़िर्के उसकी चन्द बातों से इन्कार रखते हैं तुम (इन) से कहो कि मुझको तो यही हुक्म मिला है कि मैं ख़ुदा ही की दुआ करूँ और किसी को उसका शरीक न बनाऊँ (तुमको) उसी की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना है। (३६) और ऐसा ही हमने इसको अर्बी हुक्म में उतारा है और अगर इसके बाद भी जबकि तुमको इल्म हो चुका है तुमने इनकी इच्छाओं की पैरवी की तो ख़ुदा के सामने न कोई तुम्हारा हिमायती होगा और न कोई बचाने वाला। (३७) [रुकू ५]

तुमसे पहले भी हमने पैग़म्बर भेजे और हमने उनको बीबियाँ‡ भी दीं और औलाद भी और किसी पैग़म्बर की ताक़त न थी कि ख़ुदा की

---

‡ कुछ यहूदी कहते थे कि नबी तो वह है जो बालबच्चों के झगड़े से दूर रहे और मुहम्मद साहब ऐसे नहीं हैं इसलिए कैसे नबी हैं। इस पर यह आयतें उतरीं।

आज्ञा के बिना कोई करामत दिखलावे। हर वादा लिखा हुआ है। (३८) ख़ुदा जिसको चाहे मिटा देता है और (जिसको चाहता है) क़ायम रखता है और उसके पास असल किताब है। (३९) जैसे-जैसे वादे इनको हम करते हैं चाहे बाज़ वादे हम (तुम्हारी ज़िन्दगी में) तुमको पूरे कर दिखावें और चाहें तुमको दुनियाँ से उठा लेवें। हर हाल में पहुँचा देना तुम्हारा काम है और हिसाब लेना हमारा। (४०) क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को सब तरफ से दबाते‡ चले आते हैं और अल्लाह हुक्म देता है कोई उसके हुक्म को टाल नहीं सकता और वह बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। (४१ जो लोग इनके (मक्का के काफ़िरों) पहले हो गुज़रे हैं उन्होंने भी मकर किये सो सब मकर तो अल्लाह ही के हाथ में हैं जो सख्श जो कुछ कर रहा है ख़ुदा को मालूम है और इन्कारियों को जल्द मालूम हो जायगा कि पिछला घर किस का है। (४२) और काफ़िर कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नहीं हो तो (इनसे) कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह और जिनके पास किताब है गवाह हैं। (४३) [रुकू ६]

सूरे इब्राहीम।

मक्के में उतरी। इसमें ५२ आयतें और ७ रुकू हैं।

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-रा—यह किताब हमने तुम पर इस मतलब से उतारी है कि लोगों को उनके परवर्दिगार के हुक्म से अन्धेरों से निकालकर उजाले की ओर उसके रास्ते पर जो ज़बरदस्त और तारीफ़ के लायक है लावें। (१) अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और इन्कारवालों को एक सख्त सज़ा से ख़राबी है। (२)

‡ यानी इस्लाम फैलता जाता है और इन्कार का ज़ोर कम होता जाता है

जो लोग क़यामत के सामने दुनियाँ का जीवन पसन्द करते और अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोकने और उसमें ऐब ढूँढ़ते हैं यही लोग बड़ी भूल पर हैं। (३) जब कभी हमने कोई पैग़म्बर भेजा तो उसी की ज़बान में‡ (बात चीत करता हुआ) भेजा ताकि वह उनको समझा सके। इस पर भी ख़ुदा जिसको चाहता है फिर भटकाता है और जिसको चाहता है राह देता है और वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (४) हमने ही मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा था कि अपनी जाति को (कुफ़्र के) अन्धेरों से निकाल कर (ईमान के) उजाले में लाओ और उनको ख़ुदा के दीन की याद दिलाओ क्योंकि उनमें जो सच मानने वाले अचल हैं उनके लिए निशानियाँ हैं। (५) और उन्हीं वक़्तों का ज़िक्र यह भी है कि मूसा ने अपनी जाति से कहा कि (भाईयों) अल्लाह ने जो तुम पर अहसान किये हैं उनको याद करो। जब कि उसने तुमको फ़िरऔन के लोगों से बचाया वह तुमको बुरी सज़ा देते और तुम्हारे बेटों को ढूँढ ढूँढ़ कर हलाल करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और इसमें तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से बड़ी मदद थी। (६) [रुकू १]

जब तुम्हारे परवर्दिगार ने जता दिया था कि अगर हक़ मानोगे तो हम तुमको और ज़ियादा नियामत देंगे और अगर तुमने नाशुक्री की तो हमारी मार सख़्त है। (७) और मूसा ने कहा कि अगर तुम और जितने लोग ज़मीन की सतह पर हैं वह सब ख़ुदा से इन्कारी हो जाओ तो ख़ुदा बेपरवाह और तारीफ़ के योग्य है। (८) क्या तुमको उनके हालात नहीं पहुँचे जो तुमसे पहले नूह की आद की और समूद की जाति में हो गुज़रे हैं। जो उनके बाद हुए जिनकी ख़बर ख़ुदा ही को है उनके पैग़म्बर करामात ले लेकर उनके पास आये तो उन्होंने अपने हाथों को उन्हीं के मुखों पर उलट दिया (यानी उनको नहीं

‡ काफ़िर चाहते थे कि क़ुरान अरबी के बदले किसी और भाषा में होता तो हम कुछ उस पर ध्यान भी देते। अरबी तो मुहम्मद की बोली है। शायद अपने जी से बना लिया हो।

माना) और बोले जो हुक्म लेकर तुम भेजे गये हो हम उसको नहीं मानते और जिस राह की तरफ तुम हमको बुलाते हो हम उसी की बाबत धोखे में हैं। (६) उनके पैग़म्बरों ने कहा क्या ख़ुदा में शक है जो आसमान और ज़मीन का बनानेवाला है। वह तुमको इसी लिये बुलाता है कि तुम्हारे अपराध क्षमा करे और एक कौल तक की हो चुकी है तुमको (दुनियाँ में) रहने दे। वह कहने लगे कि तुम भी तो हमारी तरह के आदमी हो तुम चाहते हो कि जिन (पूजितों को) हमारे बड़े पूजते आये हैं उनसे हमको रोक दो तो हमको कोई ज़ाहिरा करामात ला दिखाओ। (१०) उनके पैग़म्बरों ने उनसे कहा कि हम तुम्हारी ही तरह के आदमी हैं मगर ख़ुदा अपने बन्दों में से जिस पर चाहता मेहरबानी करता है और हमारी सामर्थ नहीं कि हम कोई करामात लाकर तुमको दिखावें। अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा रखना चाहिए। (११) हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न रक्खें हमारे तरीके उसी ने हमको बताये और जैसा-जैसा दुःख तुम हमको दे रहे हो हम उन पर संतोष करेंगे और भरोसा करने वालों को चाहिए कि ख़ुदा ही पर भरोसा करें। (१२) [रुकू २]

काफ़िरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे या तुम फिर हमारे मजहब में आ जाओ इस पर पैग़म्बरों के परवर्दिगार ने उनकी तरफ वही (ख़ुदाई पैग़ाम) भेजा कि हम (इन) सर्कश लोगों को जरूर बरबाद करेंगे। (१३) और उनके पीछे जरूर तुमको इसी ज़मीन पर बसायेंगे यह बदला उस शख़्स का है जो हमारे सामने खड़े होने से डरे और हमारी सज़ा से डरे। (१४) पैग़म्बरों ने चाहा कि (उनका और काफ़िरों का झगड़ा) फैसला हो जाये और हर हेकड़ ज़िद्दी बे मुराद रह गया। (१५) इसके बाद उसको दोज़ख़ है और उसको पीप का पानी पिलाया जायगा। (१६) उसको घूँट-घूँट पियेगा और उसको खींचना कठिन होगा और मौत उसको हर तरफ से आती (हुई दिखाई देगी) और वह नहीं मरेगा और उसके पीछे दुखदाई सज़ा है। (१७) जो लोग अपने परवर्दिगार

को नहीं मानते उनकी मिसाल ऐसी है कि उनके काम गोया राख (का ढेर) हैं कि आँधी के दिन उसको हवा ले उड़े जो यह लोग कर गये हैं उनमें से कुछ भी इनके हाथ नहीं आवेगा यही आखिरी दर्जे की नाकामयाबी है। (१८) क्या तूने इस बात पर नजर नहीं की कि खुदा ने आसमान और जमीन को जैसे चाहिए बनाया। अगर चाहे तो तुमको मिटा दे और नई सृष्टि को लाकर बसाये। (१९) और यह खुदा पर कुछ कठिन नहीं (२०) और सब लोग खुदा के आगे निकल खड़े होंगे तो कमजोर सर्कशों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पीछे थे सो क्या तुम खुदा की सजा में से कुछ हम पर से हटा सकते हो। वह बोले अगर खुदा हमको राह पर लाता तो हम भी तुमको राह पर लाते (अब तो) बेसब्री करें तो हमारे लिए बराबर है हमको किसी तरह छुटकारा नहीं (२१) [रुकू ३]

जब फैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा कि खुदा ने तुमसे सच्चा वादा किया था और जो वादा मैंने तुम से किया था झूँठ था और तुम पर मेरी कुछ जबरदस्ती न थी। बात तो इतनी ही थी कि मैंने तुमको (अपनी तरफ) बुलाया और तुमने मेरा कहा मान लिया तो अब मुझे दोष न दो बल्कि अपने को दोष दो। न तो मैं तुम्हारी पुकार को पहुँच सकता हूँ और न तुम मेरी पुकार पर पहुँच सकते हो। मैं तो मानता ही नहीं कि तुम मुझको पहिले शरीक (खुदा) बनाते थे। इसमें शक नहीं कि जो लोग जालिम हैं उनको कड़ी सजा है। (२२) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये (जन्नत के) बागों में दाखिल किये जायँगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी अपने परवर्दिगार के हुक्म से उनमें हमेशा रहेंगे वहाँ उनको दुआ सलाम होगी। (२३) क्या तुमने नहीं देखा कि खुदा ने अच्छी बात की कैसी मिसाल दी है कि गोया एक पाक पेड़ है उसकी जड़ मजबूत है और उसकी शाखायें आसमान में हैं। (२४) अपने परवर्दिगार के हुक्म से हर वक्त अपने फल देता है और अल्लाह लोगों के लिये उदाहरण बतलाता है ताकि वह सोचें। (२५) गन्दी बात की मिसाल गन्दे पेड़

कैसी है जो जमीन के ऊपर से उखड़ गया उसको कुछ ठहराव नहीं। (२६) जो लोग ईमान लाये हैं उनको मजबूत बात से अल्लाह दुनियाँ में मजबूत और कयामत में मजबूत करता है और अल्लाह अन्यायियों को विचला देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है। (२७)। [रुकू ४]।

(ऐ पैगम्बर) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अच्छे पदार्थों के बदले में (नाशुक्री) की और अपनी जाति को मौत के घर में लेजा उतारा†। (२८) कि उसमें दाखिल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। (२९) इन लोगों ने अल्लाह के सामने (दूसरे पूजित) खड़े किये हैं। ताकि उसकी राह से विचलाये। (ऐ पैगम्बर लोगों से) कहो कि (खैर चन्द रोज दुनियाँ में) रह बस लो फिर तो तुमको दोजख की तरफ जाना ही है। (३०) (ऐ पैगम्बर) हमारे सेवक जो ईमान लाये हैं उनसे कहो नमाज पढ़ा करें और इससे पहिले (कयामत का) दिन आवे जब कि न सौदा है न दोस्ती। हमारी दी हुई रोजी में से चुपके और जाहिरा खर्च करते रहें। (३१) अल्लाह वही है जिसने आसमान और जमीन को पैदा किया और आसमान से पानी बरसाया। फिर पानी के जरिये से फल निकाले कि वह तुम लोगों की रोजी है। किश्तियों को तुम्हारे अधिकार में किया ताकि उसके हुक्म से नदी में चलें और नदियों को भी तुम्हारे अधिकार में कर दिया (३२) और सूरज व चाँद को जो चक्कर खाते हैं एक दस्तूर पर तुम्हारे काम में लगाया और रात दिन को तुम्हारे अधिकार में कर दिया। (३३) तुमको हर चीज में से जो कुछ माँगा दिया और अगर खुदा के अहसान को गिनना चाहो तो पूरा-पूरा गिन न सकोगे। मनुष्य बड़ा बेइंसाफ और बड़ा नाशुक्रा है। (३४) [रुकू ५]

जब इब्राहीम ने दुआ की कि मेरे परवर्दिगार ! इस शहर (मक्का) को अमन की जगह बना और मुझको और मेरी सन्तान को बुत परस्ती से बचा। (३५) परवर्दिगार इन बुतों ने बहुतेरे लोगों को भटकाया है

---

† मक्के के नेता जिन्होंने अपनी जाति को अनेक बुराइयों में डाला।

सो जिसने मेरी राह गही वह मेरा है जिसने मेरा कहना न माना सो तू मॉफ करने वाला है। (३६) ऐ हमारे परवर्दिगार ! मैंने तेरे प्रतिष्ठित घर के पास (इस) उजाड़ भूमि में जहाँ खेती नहीं अपनी कुछ औलाद बसाई है ताकि यह लोग नमाजें पढ़ें तो ऐसा कर कि लोगों के दिल इनकी तरफ को लगें और फलों से इनको रोजी दे ताकि यह शुक्र करें†। (३७) हमारे परवर्दिगार जो हम छिपाते और जो जाहिर करते हैं तुझको मालूम है और जमीन और आसमान में अल्लाह से कोई चीज छिपी नहीं। (३८) खुदा का शुक्र है जिसने मुझको बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक (दो बेटे) दिए मेरा परवर्दिगार पुकार को सुनता है । (३६) ऐ मेरे परवर्दिगार ! मुझको और मेरी सन्तान को ताकत दे कि मैं नमाज पढ़ता रहूँ और ऐ मेरे परवर्दिगार ! मेरी दुआ कबूल कर। (४०) ऐ हमारे परवर्दिगार ! जिस दिन (काम का) हिसाब होने लगे मुझको और मेरी माँ और वालिद को और ईमान वालों को माफ करना। (४१) [रुकू ६]

(ऐ पैगम्बर) ऐसा न समझना कि खुदा (इन) जालिमों के काम से बेखबर है और खुदा इनको उस दिन तक की फुर्सत देता है जबकि आँखें फटी की फटी रह जायेंगी (४२) अपने सिर को उठाये दौड़ते फिरेंगे निगाह उनकी तरफ न फरेंगे और उनके दिल उड़ जायेंगे (४३) (ऐ पैगम्बर) लोगों को उस दिन से डरा जबकि उन पर सजा उतरेगी तो अन्यायी कहेंगे कि हमारे परवर्दिगार हमको थोड़ी सी मुद्दत की मुहलत और दे। तो हम तेरे बुलाने पर उठ खड़े होंगे और पैगम्बरों के पीछे ही जायेंगे क्या तुम पहले सौगंद नहीं खाया करते थे कि तुमको किसी तरह की घटती न होगी। (४४) जिन लोगों ने आप अपने ऊपर जुल्म किये थे। उन्हीं के घरों में तुम भी रहे और तुम जान चुके थे कि हमने उनके साथ कैसा बर्ताव किया और हमने तुम्हारे

---

† इन आयतों में हजरत इस्माईल और उनकी माँ बीबी हाजिरा की कहानी की ओर संकेत किया गया है। इन लोगों को हजरत इब्राहीम ने अपनी दूसरी बीवी सारा के कहने से एक जंगल में वास दिया था।

लिए मिसालें भी बतला दी थीं (४५) यह अपना मकर कर चुके और उनकी चालें खुदा की नजर में थीं और उनकी चालें ऐसी न थीं कि पहाड़ों को जगह से टाल दें। (४६) सो ऐसा ख्याल न करना कि खुदा जो अपने पैग़म्बरों से अहद कर चुका है उसके विरुद्ध करेगा अल्लाह जबरदस्त बदला लेने वाला है (४७) जबकि जमीन बदल कर दूसरी तरह की जमीन कर दी जावेगी और आसमान और (सब) लोग एक खुदा जबरदस्त के सामने निकल खड़े होंगे। (४८) और ऐ पैग़म्बर ! तुम उसी दिन गुनाहगारों को जन्जीरों में जकड़े हुए देखोगे। (४६) गन्धक के उनके कुर्ते होंगे और उनके मुहों को आग ढाँके लेती होगी। (५०) इस गरज से कि खुदा हर शख्स को उसके किये का बदला दे अल्लाह जल्द हिसाब लेनेवाला है। (५१) यह (कुरान) लोगों के लिए एक पैगाम है और गरज यह है कि इसके जरिये से लोगों को डराया जाय और मालूम हो जाय कि खुदा एक है और जो लोग बुद्धि रखते हैं नसीहत से पकड़ें। (५२) [रुकू ७]

चौदहवाँ पारा (रुबमा)

सूरे हिज्र

मक्के में उतरी इसमें ६६ आयतें और ६ रुकू हैं।

(शुरु) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-रा-यह किताब और खुले कुरान की आयतें हैं (१) काफिर बहुतेरी इच्छायें करेंगे कि ईमानदार होते (२) तो (ऐ पैग़म्बर) इनको रहने दो कि खायें और फायदे उठायें और आशाओं पर भूले रहें फिर पीछे मालूम हो जायगा। (३) हमने कोई बस्ती नहीं उजाड़ी मगर उसकी उम्र पहले से तय थी। (४) कोई जमात (गिरोह) न

अपने उम्र से आगे बढ़ सकती है और न पीछे रह सकती है। (५) (मक्का के काफ़िर कहते हैं) कि ऐ शख्स ! तुझ पर क़ुरान उतरा है तू पागल है। (६) अगर तू सच्चा है तो फ़रिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं बुलाता। (७) सो हम फ़रिश्तों को नहीं उतारा करते मगर फैसले के लिए और फिर उनको अवकाश भी न मिलेगा। (८) हमी ने यह शिक्षा क़ुरान उतारी है और हमी उसके निगहबान भी हैं। (९) और हमने तुमसे पहले भी अगले लोगों के गिरोहों में पैग़म्बर भेजे थे। (१०) जब जब उनके पास पैग़म्बर आये उनकी हँसी उड़ाई। (११) इसी तरह हमने अपराधियों के दिलों में ठट्टेबाजी डाली है। (१२) यह क़ुरान पर ईमान नहीं लावेंगे और यह रस्म पहले से चली आई है। (१३) अगर हम इन लोगों के लिए आसमान का एक दरवाजा खोल दें और यह लोग सब दिन चढ़ते रहें। (१४) तो भी यही कहेंगे कि हो न हो हमारी नजर बाँध दी गई है और हम पर किसी ने जादू कर दिया है (१५) [रुकू १]

हमने आसमान में बुर्ज बनाये और देखनेवालों के लिए उसको तारों से सजाया। (१६) और हर निकाले हुए शैतान से हमने उसकी रक्षा की। (१७) मगर चोरी छिपा कोई बात सुन भागे तो दहकता हुआ अंगारा एक तारा उसको खदेरने को उसके पीछे होता है। (१८) और हमने जमीन को फैलाया और हमने उसमें पहाड़ गाड़ दिये और हमने इससे हरएक चीज मुनासिब पैदा की। (१९) हमने जमीन में तुम लोगों के खाने के सामान इकट्ठा किए और इनको जिनको तुम रोजी नहीं देते। (२०) और जितनी चीजें हैं। हमारे यहाँ सबके खजाने हैं। मगर हम एक अटकल मालूम करके उनको भेजते रहते हैं। (२१) हमने हवाओं को जो बादलों को पानी से बोझदार करती हैं चलाया। फिर हमने आसमान से पानी बरसाया फिर हमने वह तुम लोगों को पिलाया और तुम लोगों ने उसको जमा करके नहीं रक्खा। (२२) और हमही जिलाते और हमही मारते हैं और हमही वारिस होंगे। (२३) और हम तुम्हारे अगलों और पिछलों को जानते हैं। (२४) ऐ पैग़म्बर तुम्हारा

परवर्दिगार इनको जमा करेगा। वह हिकमतवाला जानकार है। (२५) [रुकू २]

हमने सड़े हुए गारे से जो सूख कर खनखनाने लगता है आदमी को पैदा किया। (२६) और हम जिन्नों को पहले लू की आग से पैदा कर चुके थे। (२७) और (ऐ पैग़म्बर) उस वक्त को याद करो जब कि तुम्हारे परवर्दिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं सड़े हुए गारे से जो खनखनाने लगता है एक आदमी को पैदा करनेवाला हूँ। (२८) तो जब मैं उनको पूरा बना चुकूँ और उसमें रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सिजदा (दण्डवत) करना। (२९) चुनांचे तमाम फ़रिश्ते सबके सब सिजदा करने लगे। (३०) मगर इबलीस जिसने सिजदा करनेवालों में शामिल होने से इन्कार किया। (३१) इस पर ख़ुदा ने कहा ऐ इबलीस। तुमको क्या हुआ कि तू सिजदा करनेवालों में शामिल नहीं हुआ। (३२) वह बोला कि मैं ऐसे शख़्स का सिजदा न करूँगा जिसको तूने सड़े हुए गारे स पैदा किया जो खनखनाने लगता है। (३३) (ख़ुदा ने) कहा बस (जन्नत से) निकल तू फटकारा हुआ है। (३४) क़यामत के दिन तक तुझपर फटकार होगी। (३५) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार। तू मुझको उस दिन तक की मोहलत दे जबकि मुर्दे उठा खड़े किये जायेंगे। (३६) (ख़ुदा ने) कहा कि तुझको मुहलत दी गई। (३७) क़यामत के वक्त के दिन तक। (३८) शैतान ने कहा ऐ मेरे परवर्दिगार। जैसी तूने मेरी राह मारी मैं भी दुनियाँ में इन सबको बहारें दिखाऊँगा और इन सबको राह से बहकाऊँगा। (३९) सिवाय उनके जो तेरे चुने बन्दे हैं (४०) ख़ुदा ने कहा कि यही हम तक सीधी राह है। (४१) जो हमारे सेवक हैं उन पर तेरा किसी तरह का जोर न होगा मगर उन पर§ जो गुमराहों में से तेरे पीछे हो जायें। (४२) ऐसे तमाम लोगों के लिए दोजख़ का वादा है। (४३) उसके सात दरवाजे हैं

§ आदमी दो तरह के हैं। (१) ख़ुदा की राह चलने वाले (२) शैतान की राह चलने वाले। यह दूसरे ही दोज़ख़ी (नरकवासी) हैं।

हर दरवाजे के लिए दाजखी लोगों की टोलियाँ अलग-अलग होंगी। (४४) [रुकू ३]

परहेजगार (जन्नत के) बागों और चश्मों में होंगे। (४५) सलामती के साथ इतमीनान से इन बागों में आओ। (४६) इनके दिलों में जो रन्जिश है उसको निकाल दो एक दूसरे के आमने-सामने तख्तों पर भाई होकर बैठो§। (४७) इनको वहाँ जरा किसी तरह का दुःख न होगा और न यह वहाँ से निकाले जायेंगे। (४८) हमारे सेवकों को चेता दो कि मैं मॉफ करनेवाला दयालु हूँ। (४६) हमारी मार दुःख की मार है। (५०) इनको इब्राहीम के मेहमान का हाल सुनाओ। (५१) जब इब्राहीम के पास आये तो सलाम किया। इब्राहीम ने कहा हम तुमसे डरते हैं। (५२) वह बोले आप डर न कीजिये हम आपको एक योग्य पुत्र की खुशखबरी सुनाते हैं। (५३) इब्राहीम ने कहा क्या तुम मुझे खुशखबरी देते हो जबकि मुझे बुढ़ापा आ चुका है तो अब काहे की खुशखबरी सुनाते हो। (५४) वह कहने लगे हम आपको सची खुश खबरी समाचार सुनाते हैं सो आप नाउम्मीद न हों। (५५) (इब्राहीम ने) कहा कि राह भूलों के सिवाय ऐसा कौन है जो अपने परवर्दिगार की मेहरबानी से ना उम्मीद हो। (५६) (इब्राहीम ने) कहा कि खुदा के भेजे हुए फरिश्तों फिर अब तुमको क्या काम है। (५७) उन्होंने जवाब दिया कि हम एक कसूरवार कबीले की तरफ भेजे गये हैं। (५८) मगर लूत का कुटुम्ब हम बचा लेंगे। (५६) मगर उनकी स्त्री‡ अवश्य रह जायगी। (६०) [रुकू ४]

फिर जब (खुदा के) भेजे (फरिश्ते) लूत की जाति के पास आये। (६१) (तो लूत ने) कहा तुम लोग अजनबी से हो। (६२) वह कहने लगे नहीं बल्कि जिसमें तुम्हारी जाति को सन्देह था उसी को लेकर आये हैं। (६३) और हम सच आज्ञा लेकर तुम्हारे पास आये हैं और हम सच

§ जन्नती एक दूसरे के साथ सच्चा प्रेम रक्खेंगे। उन में कुछ भेद-भाव न रह जायगा।

‡ लूत की स्त्री ईमानदार न थी। वह और लोगों के साथ नष्ट हो गई।

कहते हैं। (६४) सो कुछ रात रहे तुम अपने लोगों को लेकर निकल आओ और तुम इनके पीछे रहना और तुममें से कोई मुड़कर न देखे और जहाँ कोई हुक्म दिया गया है उसी तरफ को चले जाना। (६५) हमने लूत के दिल में यह बात जमा दी थी सुबह होते-होते इनकी जड़ काट दी जावेगी। (६६) और शहर के लोग खुशियाँ मनाते हुए आये। (६७) (लूत ने उनसे) कहा कि यह मेरे मेहमान हैं सो मुझको बदनाम मत करो। (६८) और खुदा से डरो और मेरा अपमान मत करो। (६९) यह बोले क्या हमने तुमको दुनिया जहान के लोगों की हिमायत से नहीं रोका था। (७०) लूत ने कहा अगर तुमको करना है तो यह मेरी बेटियाँ हैं इनसे निकाह करलो। (७१) (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारी जान की कसम वह अपनी मस्ती में बेहोश हैं। (७२) गरज सूरज के निकलते-निकलते उनको एक बड़े जोर की आवाज़ ने घेर लिया। (७३) और हमने उस बस्ती को उलट-पलट दिया और उनपर कंकर के पत्थर बरसाये। (७४) इसमें उन लोगों के लिए जो ताड़ जाते हैं निशानियाँ हैं। (७५) और यह† बस्ती अभी तक सीधी राह पर है। (७६) बेशक इसमें ईमान लानेवालों के लिए निशानी हैं। (७७) और बन‡ के रहनेवाले निश्चय सरकश थे। (७८) तो उनसे हमने बदला लिया और दोनों शहर रास्ते पर हैं। (७९) [रुकूअ]

हिज्र के रहने वालों ने पैग़म्बरों को झुठलाया। (८०) हमने उनको निशानियाँ दीं फिर भी यह उनसे मुख मोड़े रहे। (८१) शान्ति से पहाड़ों को काट-काटकर घर बनाते थे। (८२) तो उनको सुबह होते-होते बड़े जोर की आवाज़ ने घेर लिया। (८३) और जो उपाय करते थे उनके कुछ भी काम न आये। (८४) हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ आसमान व ज़मीन में है विचार ही से बनाया है और क़यामत ज़रूर ज़रूर आनेवाली है सो अच्छी तरह किनारा

---

† मक्के से शाम जाते हुए दिखाई देती है।

‡ एक एक बन था। उसके पास एक नगर था। हज़रत शुऐब उस बस्ती के नबी थे।

पकड़ा। (८५) तुम्हारा परवर्दिगार पैदा करने वाला जानकार है। (८६) और हमने तुमको सात आयतें‡ (सूरे फ़ातिहा) और बड़े दर्जे का क़ुरान दिया। (८७) लोगों को जो चीजें बर्तने को दी हैं तुम इन पर अपनी नज़र न दौड़ाओ। और इन पर अफ़सोस न करना और अपनी बाहों को ईमान वालों के वास्ते झुका। (८८) और कह दो कि मैं तो खुले तौर पर डरानेवाला हूँ (८९) जैसे हमने इन पर पहुँचाया है। (९०) जिन्होंने बाँटकर क़ुरान के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। (९१) तेरे परवर्दिगार की क़सम है कि हम इन सबसे पूछेंगे। (९२) जब तुमको जो आज्ञा हुई है उसे खोलकर† सुना दो (९३) और मुश्रिकीन की बिल्कुल परवाह न करो। (९४) हम तेरी तरफ़ से ठट्ठा करने वालों को काफ़ी हैं। (९५) जो ख़ुदा के साथ दूसरे पूजित ठहराते हैं इनको आगे चलकर मालूम हो जायगा। (९६) और हम जानते हैं कि तेरा जी उनकी बातों से रुकता है। (९७) सो तू अपने परवर्दिगार के गुणों को यादकर और सिजदा करने वालों में से हो। (९८) और जब तक तुझको विश्वास पहुँचे तब तक तू अपने परवर्दिगार की पूजा कर (९९) [रुकू ६]

सूरे नहल।

मक्के में उतरी। इसमें १२८ आयतें १६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। ख़ुदा का हुक्म आये तो उसके लिए जल्दी मत मचाओ इनके शिर्क से ख़ुदा की

‡ यानी सूरे फ़ातिहा जिसे नमाज़ में पढ़ते हैं।

† ३ वर्ष तक मुहम्मद साहब लोगों को चुपके-चुपके और छुपा-छुपा के इस्लाम का मत स्वीकार करने का उपदेश देते रहे। इसके उपरान्त यह आयत उतरी। इस समय से आप ने निर्भीकता पूर्वक खुल्लमखुल्ला इस्लाम का प्रचार आरम्भ कर दिया।

आस पास और ऊँची है (१) वही अपने हुक्म से फ़रिश्तों को अपना पैग़ाम देकर अपने सेवकों में से जिसकी तरफ़ चाहता है भेजता है इस बात से चेता दो कि हमारे सिवाय कोई और पूजित नहीं सो हमसे डरते रहो। (२) उसी ने विचार से आसमान और ज़मीन को बनाया। सो यह लोग जो शरीक बनाते हैं वह उससे ऊँचा है। (३) उसी ने मनुष्य को एक बूँद (वीर्य) से पैदा किया। इस पर यह एक दम से खुल्लमखुल्ला झगड़ने लगा†। (४) और उसी ने चारपायों को पैदा किया जिनमें तुम लोगों के जाड़ों के कपड़े (शीतकाल के वस्त्र) और कई फ़ायदे हैं और उनमें से तुम किसी-किसी को खा लेते हो। (५) और जब शाम के वक्त घर वापिस लाते हो और जब सुबह को चराने ले जाते हो तो इस कारण से तुम्हारी शोभा भी है। (६) और जिन शहरों तक तुम जान तोड़कर भी नहीं पहुँच सकते चारपाये वहाँ तक तुम्हारे बोझ उठा ले जाते हैं। तुम्हारा परवर्दिगार बड़ा रहम दिल और मेहरबान है। (७) उसने घोड़ों खच्चर और गधों को तुम्हारी शोभा और सवारी के लिए बनाया और वही उन चीज़ों को पैदा करता है जिनको तुम नहीं जानते। (८) और (दीन के रास्ते दो प्रकार के हैं एक) सीधा रास्ता ख़ुदा तक है और दूसरा टेढ़ा और ख़ुदा चाहता तो तुम सबको सीधा रास्ता दिखा देता। (९) [रुकू १]

वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया। जिसमें से कुछ तुम्हारे पीने का है और उससे पेड़ परवरिश पाते हैं। जिन में तुम अपने मवेशियों को चराते हो। (१०) उसी पानी से ख़ुदा तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून-खजूर और अंगूर और हर तरह के फल पैदा

† कहते हैं कि एक इन्कारी एक दिन पुरानी हड्डियाँ लाया और हाथ से उनको मलकर महीन करके आटे की तरह बना लिया और फिर उसको मुँह से फूँक दिया। वह राख हवा में उड़ गई। इस पर उसने कहा कि अब इसे कौन जिलाएगा। इस आयत में इसी की तरफ़ इशारा है और यह बताया गया है कि जो ख़ुदा एक बूँद से आदमी को पैदा करता है वह उसको मरे पीछे फिर उठा सकता है।

करता है। जो लोग ध्यान करते हैं उनके लिए इसमें निशानी है। (११) और उसी ने रात और दिन और सूरज और चाँद और सितारों को तुम्हारे काम में लगा रक्खा है और सितारे और तारे उसी के आज्ञा कारी हैं। जो लोग बुद्धि रखते हैं उनके लिए इन चीजों में निशानियाँ हैं। (१२) जो चीजें तुम्हारे लिए जमीन पर जुदे-जुदे रंग की पैदा कर रक्खी हैं इनमें उन लोगों को जो सोच विचार को काम में लाते हैं निशानियाँ हैं। (१३) वही जिसने नदी को आधीन कर दिया ताकि तुम उसमें से (मछलियाँ निकालकर उनका) ताजा माँस खाओ और उसमें से जेव ज़ेव (मोती वगैरह) निकालो जिनको तुम लोग पहनते हो और तू किश्तयों को देखता है कि फाड़ती हुई नदी में चलती हैं ताकि तुम लोग खुदा की रहमत ढूँढो और (शुक्र) अदा करो। (१४) पहाड़ जमीन पर गाड़े ताकि जमीन तुम्हें लेकर किसी और तरफ न झुकने पाये और नदियाँ और रास्ते बनाए शायद तुम राह पाओ। (१५) और पते बनाये और लोग तारों से राह मालूम करते हैं। (१६) तो क्या जो पैदा करे उसके बराबर हो गया (जो कुछ भी) पैदा नहीं कर सकते फिर क्या तुम लोग नहीं समझते। (१७) और अगर खुदा के पदार्थों को गिनना चाहे तो उनकी पूरी तादाद न गिन सकोगे खुदा बड़ा क्षमाशील और दयालु है। (१८) और कुछ तुम छिप से हो और जो कुछ जाहिर करते हो अल्लाह जानता है। (१९) और खुदा के सिवाय जिनको पुकारते हैं वह कोई चीज पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद बनाये जाते हैं। (२०) मुर्दे हैं जिन में जान नहीं और खबर नहीं रखते। (कयामत में) कब उठाये जायेंगे। (२१) [रुकू २]

लोगों तुम्हारा एक खुदा है सो जो लोग पिछली जिन्दगी का विश्वास नहीं करते उनके दिल इन्कारी हैं और वह घमण्डी हैं। (२२) यह लोग जो कुछ छिपाकर करते और जो जाहिर करते हैं अल्लाह जानता है। वह घमण्डियों को पसन्द नहीं करता। (२३) और जब इनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे परवर्दिगार ने क्या उतारा

है तो यह उत्तर देते हैं कि अगलों की कहानियाँ (२४) फल यह कि कयामत के दिन अपने पूरे बोझ और जिन लोगों को बिना समझे-बूझे भटकाते हैं उनके भी बोझ (उन्हीं को) उठाने पड़ेंगे। देखो तो बुरा बोझ यह लोग अपने ऊपर लादे चले जाते हैं। (२५) [रुकू ३]

इनसे पहले लोग धोखा दे चुके हैं। तो खुदा ने उनकी इमारत की जड़ बुनियाद से खबर ली। तो उसकी छत उन्हीं पर उनके ऊपर से गिर पड़ी और जिधर से उनको खबर भी न थी सजा ने उनको आ घेरा (२६) फिर कयामत के दिन खुदा इनको बदनाम करेगा और पूछेगा कि हमारे शरीक जिनके बारे में तुम झगड़ा करते थे कहाँ हैं। जिन लोगों को समझ दी गई थी वह बोल उठेंगे कि आज के दिन बदनामी और खराबी काफिरों पर है। (२७) जिस वक्त फरिश्तों ने इनकी रूहें निकाली थीं यह लोग आप अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। तब विनती करते हुए आ गिरेंगे और कहेंगे कि हम तो किसी किस्म की बुराई नहीं किया करते थे जो कुछ तुम करते थे अल्लाह उससे खूब जानकार है। (२८) दोजख के दरवाजे से (दोजख में) जा दाखिल हो उसी में सदा रहो घमण्ड करनेवालों का बुरा ठिकाना है। (२९) और जो लोग परहेजगार हैं उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे परवर्दिगार ने क्या उतारा ? तो जवाब देते हैं कि अच्छा जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनियाँ में भी भलाई है और आखिरी ठिकाना कहीं अच्छा है और परहेजगारों का घर अच्छा है। (३०) यानी (उनको) हमेशा रहने के बाग हैं जिनमें जो दाखिल होंगे उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और जिस चीज को उनका जी चाहेगा वही उनके लिए मौजूद होगी। परहेजगारों को अल्लाह ऐसा ही बदला देता है। (३१) जिनकी जानें फरिश्ते पाक होने की हालत में निकालते हैं। फरिश्ते सलामअलैक करते और कहते हैं कि जैसे कर्म तुम करते रहे हो उनके बदले जन्नत में जा दाखिल हो। (३२) काफिर क्या इसी बात की राह देखते हैं कि फरिश्ते उनके पास आयगे या अल्लाह तुम्हारे पास हुक्म भेजेगा। ऐसा ही उनके अगलों ने किया और खुदा

ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह अपने ऊपर आप जुल्म करते हैं। (३३) फिर उन कर्मों के बुरे फल उनको मिले और उनकी ठट्ठेबाजी ने उन्हें घेर लिया। (३४) [रुकू ४]

मुशरकीन कहते हैं कि अगर खुदा चाहता तो हम और हमारे बड़े उसके सिवाय और चीज की इबादत न करते और न हम उसके बिना किसी चीज को हराम§ ठहराते और ऐसा ही इनके अगलों ने कहा था। पैग़म्बरों पर सिर्फ खुला सन्देशा पहुँचा देना है। (३५) हमने हर एक गिरोह में एक पैग़म्बर भेजा है कि खुदा की पूजा करो और शैतान से बचते रहो। तो उनमें से बाज हर गुमराही साबित हुई। जमीन पर चलो फिरो और देखो कि झुठलाने वालों को कैसा फल मिला। (३६) अगर तू इन लोगों को सीधे रास्ते पर लाने को ललचाये (तो खुदा जिसको भटकाना चाहता है) उसको राह नहीं दिया करता और कोई ऐसे लोगों का मददगार नहीं होता। (३७) यह खुदा की बड़ी सख्त कसमें खाते हैं कि जो मर जाता है उसको खुदा (दुबारा) नहीं उठाता। (ऐ पैग़म्बर उनसे कहो कि) जरूर (उठा खड़ा करेगा) वायदा सच्चा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (३८) यह इस लिए उठायेगा कि जिन बातों पर यह झगड़ते थे खुदा उन पर जाहिर कर दे और काफिर जान लें कि यह झूठे थे। (३९) जब हम किसी चीज को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होता है कि हम उसको फर्मा देते हैं कि हो और वह हो जाता है। (४०) [रुकू ५]

जिन पर बेइंसाफी हुई और बेइंसाफ होने पर उन्होंने खुदा के लिये देश छोड़ा। हम उनको जरूर संसार में ठिकाना देंगे और कयामत का नतीजा कहीं बढ़कर है अगर उनको मालूम होता। (४१) यह लोग जिन्होंने सब्र किया और अपने परवर्दिगार पर भरोसा किया।

---

§ मुशरिक ऊँटों के बच्चों को बुतों के नाम पर छोड़ देते थे और न उन पर सवार होते थे और न सामान लादते और न उसका गोश्त खाते थे और कहते थे कि खुदा इस बात को न चाहता तो हम न करते।

(४२) हमने तुमसे पहिले आदमी पैग़म्बर बनाकर भेजे थे और उनकी तरफ वही (खुदाई सदेसा) भेज दिया करते थे। सो अगर तुमको खुद मालूम नहीं तो याद रखने वालों से पूँछ देखो। (४३) हमने तुम पर यह क़ुरान उतारा है ताकि जो आज्ञायें लोगों के लिये उनकी तरफ भेजी गई हैं तुम उनको अच्छी तरह समझा दो और शायद वह सोचें। (४४) तो जो लोग बुराई की तदबीर करते हैं क्या उनको इस बात का बिलकुल डर नहीं कि खुदा उनको ज़मीन में धसादे या जिधर से उनको ख़बर भी न हो सज़ा उन पर आ गिरे। (४५) या उनको चलते फिरते खुदा उनको पकड़ ले जिसे वह हरा नहीं सकते। (४६) या उनको खटका हुए पीछे धर पकड़े सो इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवर्दिगार बड़ा मेहरबान है। (४७) क्या उन लोगों ने खुदा की मखलूक़ात (सृष्टि) में से ऐसी चीज़ों की तरफ नहीं देखा कि उसके साये दाहिनी तरफ और बाईं तरफ को अल्लाह के आगे सिर झुकाये हुए हैं और वह विनय को प्रगट कर रहे हैं। (४८) जितनी चीज़ें आसमानों में और जितने जानदार ज़मीन में हैं सब अल्लाह ही के आगे सिर झुकाये हैं और फरिश्ते (खुदा की आज्ञा से) सिजदा किये हुए हैं और घमण्ड नहीं करते। (४९) अपने परवर्दिगार से जो उनके ऊपर है डरते रहते हैं और जो हुक्म उनको दिया जाता है उसकी तामील करते हैं। (५०) [रुकू ६]।

खुदा ने आज्ञा दी है कि दो पूजित न ठहराओ बस वही (खुदा) एक पूजित है उस से डरो। (५१) और उसी का है जो कुछ आसमान ज़मीन में है और उसी का हमेशा न्याय है सो क्या तुम खुदा के सिवाय (दूसरी) चीज़ों से डरते हो। (५२) और जितने पदार्थ तुमको मिले हैं खुदा ही की तरफ से हैं। फिर जब तुमको कोई तकलीफ पहुँचती है तो उसी के आगे बिलबिलाते हो। (५३) फिर जब वह तकलीफ को तुम पर से दूर कर देता है तो तुम में से एक फिर्का अपने परवर्दिगार का शरीक ठहराता है। (५४) ताकि जो (नियामतें) हमने उनको दी थीं उनकी नाशुक्री करें सो फायदा उठालो फिर आखिरकार

(कयामत में) तो तुम को मालूम हो जायगा। (५४) और हमने जो इनको रोज़ी दी है उसमें यह लोग जिन्हें नहीं जानते हिस्सा ठहराते हैं‡। सो खुदा की कसम तुम जो ने झूठ बांधते हो तुमसे जरूर पूछा जायगा। (५६) खुदा के लिये फरिश्तों का बेटियाँ ठहराते हैं और वह पाक है और अपने लिय जो चाहें सो ठहराते हैं यानी बेटे§। (५७) और जब इनमें से किसी को बेटी के पैदा होने की खुशखबरी दी जाती है तो (मारे रंज के) उसका मुँह काला पड़ जाता है और (ज़हर की) घूँट पीकर रह जाता है (५८) लोगों से बेटा की शर्म के मारे जिसके पैदा होने की उसको खुश खबरी दी गई है वह सोचता है कि इस बदनामी को सहकर† (जीता) रहने दे या उसको मिट्टी में गाड़ दे। देखो तो इन लोगों की (५९) बुरी राय है (५६) उनकी बुरी बातें हैं जो कयामत का यकीन नहीं करते और अल्लाह की कहावत सब से ऊपर है और वही जबरदस्त हिकमत वाला है। (६०) [रुकू ७]।

अगर खुदा सबको उनके अन्याय की सज़ा में पकड़े तो ज़मीन की सतह पर किसी जानदार को बाकी न छोड़ेगा मगर एक वक्त मुकर्रर (मौत) तक इनको अवकाश (मुहलत) देता है। फिर जब इनका वक्त आवेगा तो न एक घड़ी पीछे रह सकते और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं। (६१) जिन चीज़ों को आप नहीं पसंद करते है और अपनी ज़बान से झूठा बोलते है कि उनके लिये भलाई है उनके लिये दोज़ख (की आग) है बल्कि दोज़खी अगुआ है। (६२) खुदा की कसम है तुम से पहिले हमने बहुत उम्मतों (गिरोहों) की तरफ

---

‡ काफिर खेती और ऊँट और दुम्ब के बच्चों में से एक भाग खुदा का ठहराते और एक भाग बुतों का रखते।

§ मुशरिक फिरश्तों को खुदा की बेटियाँ बताते थे। इतना नहीं समझते थे कि खुदा को संतान की आवश्यकता होती तो उसको बेटा रखना अधिक उचित था।

† अरब में बेटी का किसी घर में जन्म लेना बहुत बुरा समझा जाता था। बेटी वाला यही चाहता था कि उसको दफनाकर दे।

पैग़म्बर भेजे। तो शैतान ने उनके बुरे काम उनको अच्छे कर दिखाये। सो वही (शैतान) इस अमल में इनका मित्र है और इनको बड़ी सजा है। (६३) हमने तुम पर किताब इसी लिए उतारी है कि जिन बातों में (यह लोग आपस में) भेद डाल रहे हैं वह इनको अच्छी तरह समझा दे। इसके सिवाय (यह क़ुरान) ईमान वालों के लिए शिक्षा और रहमत है। (६४) अल्लाह ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसके जरिये से जमीन को उस के मरे पीछे जिलाया। जो लोग सुनते हैं इनके लिए निशानी है। (६५) [रुकू ८]

और तुम्हारे लिए चौपायों में भी सोचने की जगह है कि उनके पेट में जो है उसमें गोबर और खून में से हम तुमको खालिस दूध पिलाते हैं जो पीनेवालों को मज़ा लगता है। (६६) और खजूर और अंगूर के फलों में से तुम शराब§ और अच्छी रोज़ी बनाते हो। जो लोग बुद्धि रखते हैं उनके लिए इन चीज़ों में निशानी है। (६७) (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारे परवर्दिगार ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाल दी कि पहाड़ों में और पेड़ों में और लोग जो ऊँची ऊँची टट्टियाँ बना लेते हैं उनमें छत्ते बनायें। (६८) फिर हर तरह के फल को चून और अपने परवर्दिगार के आसान तरीकों पर चल। मक्खियों के पेट से पीने की एक चीज़ (शहद) निकलती है उसकी रंगत कई तरह की होती हैं इससे लोगों के रोग जाते रहते हैं विचार करने वालों के लिए इसमें पता है। (६९) और ख़ुदा ने ही तुमको पैदा किया। फिर वही तुमको मारता है और तुम में से कोई निकम्मी उम्र (बुढ़ापा) को पहुँचते हैं कि जानने पीछे कुछ न जान सके बुड्ढा बावला हो जाय अल्लाह जानने वाला क़ुदरत वाला है। (७०) [रुकू ९]

ख़ुदा ही ने तुम में से किसी को किसी पर रोज़ी में बढ़ती दी, तो जिनको ज्यादा रोज़ी दी गई है (वह) अपनी रोज़ी लौटा कर अपने गुलामों को नहीं देते कि रोज़ी में इनका हिस्सा बराबर है तो क्या यह

---

§ शराब पीना इस आयत के उतरने के समय मना न था बाद को मना हुआ है।

लोग ख़ुदा के पदार्थों के इनकारी हैं। (७१) तुम्हीं में से ख़ुदा ने तुम्हारे लिए बीबियों को पैदा किया और तुम्हारी स्त्रियों से तुम्हारे लिए बेटों और पोतों को पैदा किया। तुमको अच्छी चीज़ें खाने को दीं तो क्या झूठे (पूजितों के पदार्थ देने का) विश्वास करते हैं और अल्लाह की कृपा को नहीं मानते। (७२) और ख़ुदा के सिवाय उन की इबादत करते हैं जो आसमान और ज़मीन से इनको भोजन देने का कुछ भी अधिकार नहीं रखते हैं। (७३) तो ख़ुदा के लिए उदाहरण मत बनाओ। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (७४) एक उदाहरण ख़ुदा बयान करता है कि एक गुलाम है दूसरे की जायदाद पर (जो) किसी बात का अधिकार नहीं रखता और एक शख्स है जिसको हमने अच्छे भोजन दे रक्खे हैं तो वह उसमें से छिपे और खुले खज़ाने खर्च करता है क्या यह (दोनों) बराबर हो सकते हैं। सब तारीफ़ अल्लाह को है मगर इनमें बहुतेरे नहीं समझते। (७५) ख़ुदा (एक दूसरी) मिसाल देता है कि दो आदमी हैं उनमें का एक गूँगा (और गुलाम भी है) कि ख़ुद कुछ नहीं कर सकता है और वह अपने मालिक को बोझ भी है कि जहाँ कहीं उसको भेजे उससे कुछ भी ठीक नहीं बनता। क्या ऐसा गुलाम और वह शख्स बराबर हो सकते हैं जो (लोगों को) बराबरी की हद पर क़ायम रहने को कहता और ख़ुद भी सीधे रास्ते पर है। (७६) [रुकू १०]

आसमान और ज़मीन की छिपी बातें अल्लाह ही को (मालूम) हैं और क़यामत का वाके होना तो ऐसा है कि जैसा कि आँख का झपकना बल्कि वह (इससे भी) क़रीब है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (७७) अल्लाह ही ने तुमको तुम्हारी माताओं के पेट से निकाला। तुम कुछ भी नहीं जानते थे और तुमको कान, आँख और दिल दिये ताकि तुम शुक्र करो। (७८) क्या लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा था आसमान के बीच में उड़ते हैं उनको ख़ुदा ही रोके रहता है। जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिए इसमें निशानियाँ हैं। (७६) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को ठिकाना

बनाया और चौपायों की खालों से तुम्हारे लिए डेरे बनाये कि तुम अपने कूच के वक्त और अपने ठहरने के वक्त उनको हलका पाते हो और चारपायों की ऊन और उनके रुवों और उनके बालों से बहुत से सामान और काम की चीजें बनाईं एक वक्त खास तक (इनसे फायदा उठाओ) (८०) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीजों की छाया बनाई और पहाड़ों से तुम्हारे लिए गार (छिप बैठने की जगह बनाई) और तुम्हारे लिए कुर्ते बनाये जो तुम्हें (गर्मी सर्दी) से बचायें और (कुछ लोहे के) (बख्तर) कुर्ते बनाये जो तुमको तुम्हारी (दूसरे की) चोट से बचायें यों (खुदा) अपने एहसान तुम लोगों पर पूरे करता है शायद तुम उसको मानो। (८१) फिर अगर मुँह मोड़ें तो तुम्हारे जिम्मे खुले और सुना देना है। (८२) खुदा के एहसान को पहचानते हैं फिर (जान बूझ कर) उनसे मुकरते हैं। और उनमें से अक्सर कृतघ्न (ना शुक्र) हैं। (८३) [रुकू ११]

जब हम हर एक गिरोह में से गवाह (बनाकर) उठा खड़ा करेंगे फिर (काफिरों को) बात करने का हुक्म नहीं दिया जायेगा और न उनसे तोबा के लिए कहा जायगा। (८४) जिन लोगों ने गुस्ताखियाँ की हैं जब सजा को देख लेंगे तो न तो इनसे सजा ही हलकी की जायगी और न उनको मुहलत दी जायगी। (८५) और जो लोग खुदा के शरीक बनाते रहे जब वह अपने शरीकों को देखेंगे तब बोल उठेंगे कि हमारे परवर्दिगार यही हैं वह हमारे शरीक जिनको हम तेरे सिवाय पुकारा करते थे तो वह शरीक (उनकी) बात (उलटी) उन्हीं की तरफ फेंक मारेंगे कि तुम निरे झूठे हो। (८६) और वह लोग उस दिन खुदा के आगे सर झुका देंगे और जो झूठ बाँधते थे वे उनको भूल जायेंगे। (८७) जो लोग इन्कारी हुये और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोकते हैं उनके फसाद के बदले में हम उनके हक में सजा पर सजा बढ़ाते जायेंगे। (८८) जब हम हर एक गिरोह में उन्हीं में का एक गवाह (पैगम्बर) उनके सामने खड़ा करेंगे और (ऐ पैगम्बर)

तुमको इनके सामने गवाह बनाकर ला खड़े करेंगे और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुम पर किताब उतारी है (जिसमें) हर चीज का बयान र हू की सूझ, हिदायत और दया है और खुशखबरी ईमानवालों के लिए है। (८९) [रुकू १२]

अल्लाह इ साफ करने, और भलाई करने और सम्बन्धियों को (माली सहायता) देने की आज्ञा देता है और बेशर्मी के कामों और बुरे कामों और जुल्म करने से मना करता है तुम लोगों को शिक्षा देता है शायद तुम खयाल रक्खो। (९०) और जब तुम लोग आपस में प्रतिज्ञा कर लो तो अल्लाह की कसम को पूरा करो और कसमों को उनके पक्के किये पीछे न तोड़ो हालाँकि तुम अल्लाह को अपना जामिन ठहरा चुके हो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे जानकार है। (९१) उस औरत जैसे मत बनो—जिसने अपना सूत कात पीछे टुकड़े टुकड़े करके तोड़ डाला। आपस के झगड़े के सबब अपनी कसमों को मत तोड़ने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से ताकतवर है। खुदा इस (भेद) से तुम लोगों की जाँच करता है और जिन चीजों में तुम भेद डालते हो कयामत के दिन खुदा तुमपर जाहिर करेगा। (९२) खुदा चाहता तो तुम (सब) को एक ही गिरोह बना देता मगर वह जिसको चाहता है गुमराह करता और जिसको चाहता है सुझाता है और जो कुछ तुम करते रहे हो उसकी तुमसे पूछ होगी† (९३) अपनी कसमों को अपने आपस में फसाद का सबब न बनाओ (कि लोगों के) पैर जमे पीछे उखड़ जायें और खुदा के रास्ते से रोकने के बदले में तुमको सजा चखनी पड़े और तुमको बड़ी सजा हो (९४) और अल्लाह की कसम के बदले थोड़े फायदे मत लो जो खुदा के यहाँ है वही तुम्हारे हक में बहुत अच्छा है बशर्ते कि तुम समझो। (९५) जो तुम्हारे पास है निपट जायगा और जो अल्लाह के पास है बाकी रहेगा और जिन लोगों ने सब्र किया उनके अच्छे काम का बदला भला देंगे। (९६)

† यानी काफिरों को धोके से न मारो क्योंकि इस से कुफ्र नहीं मिटता और इससे अपने ऊपर बवाल पड़ता है।

जो शख्स अच्छे काम करेगा मर्द हो या औरत और वह ईमान भी रखता हो तो हम उसकी अच्छी जिन्दगी जिला देंगे और उनके अच्छे कामों का बदला जो करते थे देंगे। (९७) तो (ऐ पैग़म्बर) जब तुम कुरान पढ़ने लगो फटकारे हुए शैतान से खुदा की पनाह माँग लिया करो। (९८) जो लोग ईमान रखते हैं और अपने परवर्दिगार पर भरोसा करते हैं उन पर शैतान का कुछ काबू नहीं चलता (९९) उसका बस तो उन्हीं लोगों पर चलता है जो उसके साथ मेल जोल रखते और जो खुदा का शरीक ठहराते हैं। (१००) [रुकू १३]

(ऐ पैग़म्बर) जब हम एक आयत को बदलकर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं और जो हुक्म उतारता है उसको वही खूब जानता है तो (काफ़िर तुमसे) कहने लगते हैं तू तो अपने दिल से बनाया करता है बल्कि इनमें से अक्सर नहीं समझते†। (१०१) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि सच तो यह है कि इस (कुरान को) तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से पाक रूह जिब्रील लेकर आये हैं ताकि जो लोग ईमान ला चुके हैं खुदा उनको अचल रक्खे और ईमानवालों के हक में राह की सूझ और खुशखबरी है। (१०२) (ऐ पैग़म्बर) हमको खूब मालूम है कि काफ़िर (कुरान की बाबत) यह शक करते हैं कि हो न हो इस शख्स को (अमुक‡) आदमी सिखलाया करता है सो जिस शख्स की तरफ निस्बत करते हैं उसकी बोली अजमी (अन्य देशीय भाषा) है (कुरान) साफ़ अर्बी भाषा है। (१०३) और जो लोग खुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते खुदा उन्हें सच्चा रास्ता नहीं दिखलाता और उनको दुखदाई सजा है (१०४) दिल से झूठ बनाना तो उन्हीं लोगों का काम है जिनको खुदा की आयतों का विश्वास नहीं और यही लोग झूठे हैं। (१०५) जो शख्स ईमान

---

† यानी काफ़िर यह नहीं समझते कि पहला हुक्म क्यों बदला।

‡ एक आदमी का एक गुलाम रूमी नसरानी मक्के में था। वह पैग़म्बरों का हाल सुनने के लिए मुहम्मद साहब के पास आकर बैठा करता था। काफ़िर कहने लगे यही आदमी मुहम्मद को सिखाता है कि यह कहो और वह कहो।

लाये पीछे खुदा की इन्कारी पर मजबूर किया जाय मगर उसका दिल ईमान की तरफ से संतुष्ट हो लेकिन जो कोई ईमान लाये पीछे खुदा के साथ इन्कार करे और इन्कार भी करे तो जी खोलकर ऐसे लोगों पर खुदा का कोप और उनके लिए बड़ी सजा है। (१०६) यह इस वजह से कि उन्होंने संसार के जीवन को कयामत पर पसंद किया और इस वजह से कि अल्लाह इन्कारियों को हिदायत नहीं दिया करता। (१०७) यही वह लोग हैं जिनके दिलों पर और जिनके कानों पर और जिनकी आँखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है और यही गाफिल हैं। (१०८) जरूर कयामत में यही लोग घाटे में रहेंगे। (१०९) फिर जिन लोगों ने आफत आये पीछे घरबार छोड़े फिर (खुदा की) राह में जिहाद किये और डटे रहे तुम्हारा परवर्दिगार माफ करनेवाला रहीम है। (११०) [रुकू १४]

जब कि वह दिन आवेगा हर आदमी अपनी जाति के लिए झगड़ने के लिए मौजूद होगा। हर शख्स को उसके काम का पूरा पूरा बदला दिया जावेगा और लोगों पर जुल्म न होगा। (१११) खुदा ने एक गाँव की मिसाल बयान की है कि वहाँ के लोग अमन व इतमीनान से थे हर तरफ से उनकी रोजी उनके पास बेखटके चली आती थी फिर उन्होंने खुदा के एहसानों की नाशुक्री की। तो उनके कामों के बदले में अल्लाह ने उनको भूख और डर का उनका ओढ़ना और बिछौना बना दिया। (११२) और उन्हीं में का एक पैगम्बर उनके पास आया तो उन्होंने उसको झुठलाया उसपर (ईश्वरी) सजा ने उनको पकड़ा और वे कसूरवार थे। (११३) तो खुदा ने जो तुमको हलाल और पाक रोजी दी है उसको खाओ और अगर अल्लाह ही की पूजा करो और उसका शुक्र करो। (११४) उसने तुम पर मुर्दा को और खून को और सुअर के माँस को और उसको जो अल्लाह के सिवाय किसी और के लिए नामज़द किया जाय हराम किया फिर जो शख्स (भूख से) बेबस हो न जोर से और न ज़ियादती से तो अल्लाह क्षमा करनेवाला दयालु है। (११५) झूठ-मूठ जो कुछ तुम्हारी जबान पर आवे न

षक दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम खुदा पर झूँठ बाँधते हो और झूँठ बाँधने वालों का भला नहीं होता। (११६) थोड़े से फायदे हैं और उनको दुखदाई सजा है। (११७) और ऐ (पैग़म्बर) हमने यहूदियों पर वह चीजें जो पहले तुमसे बयान फर्मा चुके हैं हराम कर दी थीं हमने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह खुद अपने ऊपर आप जुल्म किया करते थे। (११८) फिर जो लोग बेवकूफी से गुनाह करते थे फिर उसके बाद तौबा की और सुधार किया तो तुम्हारा परवर्दिगार माफ करने वाला रहीम है। (११९) [रुकू १५]

बेशक इब्राहीम (लोगों के) अगुआ हो गये हैं। खुदा के आज्ञाकारी सेवक जो एक खुदा के होकर रह थे और शिर्कवालों में से न थे (१२०) खुदा ने उनको चुन लिया था और उनको सीधा रास्ता दिखला दिया था और हमने उनको दुनिया में भलाई दी। (१२१) और कयामत में भी वह भले लोगों में होंगे। (१२२) फिर (ऐ पैग़म्बर) हमने तुम्हारी तरफ हुक्म भेजा कि इब्राहीम के तरीके की पैरवी करो जो एक के होकर रहे थे और शिर्क वालों में से न थे। (१२३) हफ्ते की ताजीम तो बस उन्हीं पर लाजिम की गई थी जिन्होंने उसमें भेद डाले और जिन जिन बातों में यह लोग आपस में भेद डालते रहे हैं कयामत के दिन तुम्हारा परवर्दिगार उनमें उन बातों का फैसला कर देगा। (१२४) (ऐ पैग़म्बर) समझ की बातों और नसीहतों से अपने परवर्दिगार की राह की तरफ बुलाओ और उनकी तरफ अच्छी तरह विचार करके जो कोई खुदा के रास्ते से भटका उसे और जिसने सीधी राह पकड़ी उसे तुम्हारा परवर्दिगार खूब जानता है। (१२५) अगर सख्ती भी करो तो वैसे ही सख्ती करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो और अगर सब्र करो तो हर हाल में सब्र करने वालों के लिए सब्र अच्छा है‡। (१२६) और सब्र करो और खुदा की

‡ पहिले बताया गया कि भलाई न करो। फिर बताया गया कि बुराई का बदला लो तो हद से न बढ़ो बल्कि अगर बदला न लो तो और भी अच्छा है।

मदद से संतोष कर सकोगे और इन पर पछतावा न कर और उनके फरेब से रंज मत कर। (१२७) अल्लाह परहेजगारों और भले काम करनेवालों का साथी है। (१२८) [रुकू १६]

पन्द्रहवाँ पारा (सुभानल्लज़ो)

सूरे बनी इसराईल

मक्के में उतरी। इसमें १११ आयतें और १२ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। वह पाक है जो अपने बन्दे को रातों रात मसजिद हराम (यानी काबे के घर) से मसजिद अक्सा (यानी बैतुल मुकद्दस) तक ले गया जिसके आस-पास हमने खूबियाँ दे रक्खी हैं (और इसे ले जाने से मतलब यह था) कि हम उनको अपनी कुदरत के नमूने दिखलावें। वह सुनता और जानता है। (१) और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और उसको इसराईल की सन्तान के लिए हुक्म ठहराया (और उनसे कह दिया) कि हमारे सिवाय किसी को अपना काम सँभालने वाला न बना। (२) ऐ उन लोगों की सन्तान। जिनको हमने नूह के साथ (किश्ती में) सवार कर लिया था वह हमारे शुक्रगुजार सेवक थे। (३) हमने इसराईल के बेटों से किताब में साफ कह दिया था कि तुम जरूर देश में दो दफे फिसाद करोगे और बड़ी जयादती करोगे। (४) फिर जब पहला वादा आया तो हमने तुम्हारे मुकाबिले में अपने ऐसे सेवक उठा खड़े किये जो बड़े लड़ने वाले थे और वह शहरों के अन्दर फैल गये और वादा होना ही था। (५) फिर हमने दुश्मनों पर तुम्हारे दिन फेरे और माल से और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुमको बड़े जत्थे वाला बना दिया। (६) अगर तुम भलाई करो या बुराई अपनी ही

परवर्दिगार खूब जानता है। अगर तुम नेक हो तो वह तौबा करने वालों के क़सूर माफ करने वाला है। (२५) रिश्तेदार गरीब और राही को उसका हक पहुँचाते रहो और बेजा मत उड़ाओ। (२६) बेजा उड़ाने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने परवर्दिगार का बड़ा ही नाशुक्रा है। (२७) अगर तुमको अपने परवर्दिगार से रोज़ी की तलाश में उम्मेदवार होकर इनसे मुँह फेरना पड़े‡ तो नर्मी से इनको समझा दो। (२८) अपना हाथ न तो इतना सिकोड़ो कि (मानो) गर्दन में बँधा है न बिल्कुल उसको फैला ही दो कि तू फटकारा हुआ हारकर बैठ रहे। (२९) (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारा परवर्दिगार जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है कम कर देता है वह अपने सेवकों को जानता देखता है। (३०) [रुकू ३]

गरीबी से अपनी औलाद को मार मत डालो उनको और तुमको हम रोज़ी देते हैं औलाद का जान से मारना बड़ा भारी पाप है। (३१) व्यभिचार के पास न फटकना क्योंकि वह बेशर्मी है और बुरा चलन है। (३२) किसी की जान को जिसका मारना अल्लाह ने हराम कर दिया है बेकार क़त्ल न करना मगर हक़ पर और जो शख़्स ज़ुल्म से मारा जाय तो हमने उसके वारिस को अधिकार दे दिया है तो उसको चाहिए कि खून में ज़ियादती न करे क्योंकि उसकी मदद होती है। (३३) जब तक अनाथ जवानी को न पहुँचे उसके माल के पास मत जाओ मगर जिस तरह बेहतर हो और वादे को पूरा करो क्योंकि वादे की पूछ होगी। (३४) और जब तौल करो तो पैमाने को पूरा भर दिया करो और तौल कर देना हो तो डंडी सीधी रखकर तौला करो। यह अच्छा है और इसका आख़ीर भी अच्छा है। (३५) (ऐ ध्यान देनेवालों) जिस बात का तुमको ज्ञान नहीं उसके (अटकलपच्चू) पीछे न हो क्योंकि कान और आँख और दिल इन सबसे पूछ-ताँछ होनी है।

‡ यानी कोई ऐसा समय आए जिसमें तुमको कमाने की चिन्ता हो और तुम उनको कुछ दे न सको तो उनको भलीभाँति समझा दो कि तुम उस समय उनकी कोई सहायता नहीं कर सकते।

(३६) ज़मीन में अकड़ कर न चल क्योंकि न तो तू ज़मीन को फाड़ सकता है और न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकता है। (३७) (ऐ पैग़म्बर) इन बातों की बुराई ख़ुदा को न पसंद है। (३८) (ऐ पैग़म्बर) यह बातें उन बुद्धि की बातों में से हैं जिनको तुम्हारे परवर्दिगार ने तुम्हारी तरफ़ हुक्म किया है ख़ुदा के साथ और किसी की इबादत न करना नहीं तो तू फटकारा हुआ कसूरवार होकर दोज़ख़ में डाल दिया जायगा। (३९) (ऐ शिर्कवालों) क्या तुम्हारे परवर्दिगार ने तुम को बेटों के लिए चुन लिया और आप बेटियाँ ले बैठा (यानी फ़रिश्ते) (यह तो) तुम बड़ी बात कहते हो। (४०) [रुकू ४]

हमने इस क़ुरान में तरह-तरह से समझाया ताकि यह लोग समझें मगर इससे इनकी घृणा ही बढ़ती जाती है। (४१) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर ख़ुदा के साथ जैसा (यह लोग) कहते हैं कोई और पूजित होते तो इस सूरत में वे (दूसरे पूजित) तख़्त के साहिब (ख़ुदा) की तरफ़ राह निकालते‡। (४२) जैसी बातें यह लोग कहते हैं इनसे वह पाक और बहुत ऊँचा है। (४३) आसमान और ज़मीन और जो आसमान और ज़मीन में हैं उसका नाम लेता है और जितनी चीज़ें हैं सब उसकी तारीफ़ के साथ उसका नाम लेती हैं मगर तुम लोग उनके पढ़ने को नहीं समझते। वह बरदाश्त करनेवाला और बड़ा माफ़ करने वाला है। (४४) (ऐ पैग़म्बर) जब तुम क़ुरान पढ़ते हो तो हम तुम में और उन लोगों में जिनको क़यामत का विश्वास नहीं एक परदा कर देते हैं। (४५) उनके दिलों पर आड़ रखते ताकि क़ुरान को समझ न सकें और उनके कानों में (एक तरह का) बोझ डालते हैं ताकि सुन न सकें। और जब क़ुरान में अकेले ख़ुदा की चर्चा करते हैं तो काफ़िर नफ़रत करके उल्टे भाग खड़े होते हैं। (४६) जब यह लोग तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं तो जिस नियत से सुनते हैं हमको ख़ूब मालूम है और जब यह सलाह करते हैं तब कहते हैं कि

‡ यानी यदि वो या इससे अधिक पूजित होते तो आपस में एक दूसरे पर चढ़ दौड़ते।

तुमतो एक आदमी के पीछे पड़े हो जिस पर किसी ने जादू कर दिया है। (४७) (ऐ पैग़म्बर) देखो तुम्हारी निस्बत कैसी-कैसी बातें बकते हैं सो यह लोग भटक गये और अब राह नहीं पा सक्ते। (४८) और कहते हैं जब हम हड्डियाँ और टुकड़े टुकड़े हो गये तो क्या हमको नये सिरे से पैदा करके उठा खड़ा किया जायगा। (४९) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि तुम पत्थर या लोहा। (५०) या और चीज बन जाओ या कोई चीज जो तुम्हारी समझ में बड़ी हो। उस पर पूछेंगे कि हम को दोबारा कौन जिन्दा कर सकेगा कहो कि वही (ख़ुदा) जिसने तुम को पहली बार पैदा किया था इस पर यह लोग तुम्हारे आगे सिर मटकाने लगेंगे और पूछेंगे कि भला क़यामत कब आवेगी (तुम इनसे) कहो आश्चर्य नहीं कि क़रीब ही आ लगी हो। (५१) जब ख़ुदा तुम को बुलायेगा तो तुम उस की तारीफ करते फिर चले आओगे और ख्याल करोगे कि बस थोड़े ही दिन तुम रहे। (५२) [रुकू ५]

हमारे माननेवालों को समझा दो कि ऐसी कहें जो भली हो क्योंकि शैतान लोगों में झगड़ा डलवाता है और शैतान आदमी का खुला बैरी है। (५३) लोगों तुम्हारा परवर्दिगार तुम्हारे हाल से खूब जानकार है चाहे तुम पर दया करे और चाहे तुम को सजा दे और हमने तुमको लोगों का ठेकेदार बना कर तो नहीं भेजा (५४) और जो आसमान और ज़मीन में है तुम्हारा परवर्दिगार उससे खूब जानकार है और हमने किन्हीं पैग़म्बरों पर किन्हीं को बड़ती दी और हमी ने दाऊद को ज़बूरदी। (५५) (ऐ पैग़म्बर लोगों से) कहो कि ख़ुदा के सिवाय जिन को तुम ख़ुदा समझते हो पुकारो सो न तो तुम्हारी तकलीफ ही दूर कर सकेंगे और न उसको बदल सकेंगे। (५६) यह जिनको सिफ़ारिशके बुलाते हैं वह अपने परवर्दिगार की तरफ जरिया ढूँढ़ते हैं कि कौन बन्दा ज्यादा नज़दीक है और उसकी मेहरबानी की उम्मीद रखते हैं और उसकी मार से डरते हैं बेशक तेरे परवर्दिगार की मार डर की चीज है। (५७) कोई (अवज्ञाकारियों की) बस्ती नहीं जिसे क़यामत से पहले हम बर्बाद न कर देंगे या उसको सख्त सजा न देंगे। यह बात किताब में

लिखी जा चुकी है। (५८) और हमने चमत्कारों का भेजना बन्द किया क्योंकि अगले लोगों ने उनको भुठलाया। चुनांचे हमने समूद को उटनी (का खुला हुआ) चमत्कार दिया था फिर भी लोगों ने उसे सताया और हम चमत्कार सिर्फ डराने की गरज से भेजा करते हैं। (५६) जब हमने तुम से कहा कि तुम्हारे परवर्दिगार ने लोगों को हर तरफ से रोक रक्खा है और जो हमने तुम को दिखावा दिखाया सो लोगों के जाँचने को दिखाया और दरख्त जिस पर कुरान में लानत की गई है बावजूदे हम इन लोगों को डराते हैं लेकिन हमारा डराना इनकी सरकशी को बढ़ाता है। (६०) [रुकू ६]

जब हमने फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सिजदा (झुको) तो सभी ने सिजदा किया मगर इबलीस झगड़ने लगा कि क्या मैं ऐसे आदमी को सिजदा करूँ (झुकूँ) जिसे तूने मिट्टी से बनाया। (६१) कहने लगा कि भला देख तो यही वह आदमी है जिसको तूने मुझ पर बड़ती दी है अगर तू मुझको कयामत तक की मुहलत दे तो मैं सिवाय थोड़े लोगों के इसकी सब संतान की जड़ काटता रहूँगा। (६२) खुदा ने कहा चल दूर हो जो आदमी इनमें से तेरी पैरवी करेगा तो तुम सबको दोजख की सजा पूरा बदला होगी। (६३) इनमें से जिसे अपनी बातों से बहका सके बहकाले और उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ाला और उनके साथ माल और संतान में साझा लगा और इनसे वादे कर और शैतान तो इन लोगों से जितने वादे करता है सब धोके के होते हैं। (६४) हमारे सेवकों पर तेरा किसी तरह का काबू न होगा और तुम्हारा परवर्दिगार काम का सम्भालने वाला है। (६५) तुम्हारा परवर्दिगार वह है जो तुम्हारे लिए नदी में नाव (किश्ती) को चलाता है ताकि तुम उसकी कृपा ढूँढो। खुदा तुम पर मेहरबान है। (६६) जब नदी में तुम पर दुःख पहुँचता है तो जिनको तुम उसके सिवाय पुकारा करते थे भूल जाते हो। मगर जब वह तुमको खुश्की की तरफ निकाल लाता है तो तुम फिर मुँह मोड़ते हो और आदमी बड़ा ही नाशुक्रा है। (६७) सो क्या तुम

इस बात से निडर हो गये हो कि वह तुमको जंगल की तरफ धसा दे या तुम पर पत्थर बरसावे और उस वक्त तुम अपना मददगार न पाओ। (६८) या तुम इस बात से निडर हो गये हो कि खुदा फिर तुमको लौटाकर दुबारा उसी नदी में ले जावे और तुम पर हवा का झोंका भेजे और तुम्हारी नाशुक्रियों की सजा में तुमको डुबो दे। फिर तुम अपने लिए हम पर दावा करनेवाला न पाओ। (६९) बेशक हमने आदमी की औलाद को इज्जत दी और खुश्की और दरिया में उनको सवारी दी है और अच्छी चीजों में उन्हें रोजी दी और जितने आदमी हमने पैदा किये हैं उनमें बहुतेरों पर उनको बड़ाई दी। (७०) [रुकू ७]

बड़ी बड़ाई तो उस दिन की है जब हम हर एक गिरोह को उनके पेशवाओं समेत बुलायेंगे। तो जिन का कारनामों का लेखा उनके हाथ में दिया जायगा वह अपने लेखे को पढ़ने लगेंगे और उन पर एक रत्ती बराबर भी अन्याय न होगा। (७१) जो इसमें अन्धा§ रहा वह कयामत में भी अन्धा होगा और राह से बहुत दूर भटका हुआ होगा। (७२) और (ऐ पैगम्बर) जो हमने हुक्म (कुरान) तुम्हारी तरफ भेजा है लोग तो तुमको इससे बिचलाने में लगे थे ताकि इसके सिवाय तुम झूठ हमारी तरफ ख्याल करो और यह लोग तुमको दोस्त बना लेते हैं। (७३) अगर हम तुझे मजबूत न रखते तो तू भी थोड़ा इनकी तरफ को झुकने लगा था। (७४) ऐसा होता तो हम तुमको जीते और मरे दुहरी (सजा का मजा) चखाते फिर तुमको हमारे मुकाबिले में कोई मददगार न मिलता। (७५) यह लोग तो तुमको मक्के की जमीन से घबराहट पैदा करा रहे थे ताकि तुमको यहाँ से निकाल बाहर करें और ऐसा होता तो तुम्हारे पीछे यह लोग भी चन्द रोज से (ज़ियादा) न रहने पाते। (७६) तुमसे पहले जितने पैगम्बर हमने भेजे हैं उनका

§ यानी जो खुदा को इस जीवन में नहीं पहचानता और उसके प्यारों की आज्ञा का पालन नहीं करता वह दूसरी दुनिया में बड़े घाटे में रहेगा।

यही दस्तूर रहा है (जो) दस्तूर (हमारे ठहराये हुए हैं उन) में तब्दीली होती हुई न पाओगे। (७७) [रुकू ८]

(ऐ पैग़म्बर) सूरज के ढलने से रात के अन्धेरे तक नमाज़ें पढ़ा करो और क़ुरान सुबह (प्रात:) पढ़ना चाहिए नि सन्देह क़ुरान का सुबह पढ़ना (ख़ुदा के) सामने होना है। (७८) और रात के एक हिस्से में क़ुरान (नमाज तहज्जद) पढ़ा करो और यह फ़र्ज़ से ज़ियादा बात तेरे लिए है शायद तुम्हारा परवर्दिगार तुमको तारीफ़ के मुक़ाम में पहुँचाये। (७९) दुआ माँगा करो कि ऐ मेरे परवर्दिगार ! मुझको अच्छी जगह पहुँचा और मुझको सच्चा मार्ग दिखला और अपने पास से मुझको हुकूमत की मदद दे। (८०)

(ऐ पैग़म्बर लोगों से) कह दो कि (दीन) सच्चा आया और (दीन) झूठ मिट गया और बेशक झूँठ तो मिटने वाला ही था। (८१) हम क़ुरान में ऐसी-ऐसी बातें उतारते हैं जो ईमान वालों के लिए इलाज और मेहरबानी है और अन्ध करनेवालों को तो इस से नुक़सान ही और होता है। (८२) जब हम मनुष्य को आराम देते हैं तो (उल्टा हम से) मुँह फेरता और पहलू खाली करता है और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो उम्मेद तोड़ बैठता है। (८३) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि हर-एक अपने तौर पर काम करता है फिर जो ठीक सीधे रास्ते पर है तुम्हारा परवर्दिगार उसको खूब जानता है। (८४) [रुकू ९]

(ऐ पैग़म्बर) रूह की बाबत तुमसे पूछते हैं तो कह दो रूह मेरे परवर्दिगार की तरफ़ से है और तुम लोगों को थोड़ा ही इल्म दिया गया है। (८५) (ऐ पैग़म्बर) अगर हम चाहें तो जो (क़ुरान) हमने तुम्हारी तरफ़ हुक्म भेजा है उसको उठा‡ ले जायें फिर तुमको उसके लिए हमारे मुक़ाबिले में कोई मददगार न मिलेगा। (८६) मगर तुम्हारे परवर्दिगार ही की मेहरबानी से तुम पर उसकी बड़ी ही

---

‡ यानी क़ुरान को हम भुला देना चाहें तो ऐसा भुला दें कि किसी को इसका एक शब्द भी याद न रह जाय।

परवरिश है। (८७) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर सब आदमी और जिन्न ऐसा क़ुरान बनाने को जमा हों तो भी ऐसा न बना सकेंगे अगर्चे उनमें एक दूसरे की बड़ी मदद करे। (८८) बावजूद कि हमने इस क़ुरान में लोगों के लिए सभी मिसालें बयान की हैं मगर बहुतेरे लोग नाशुक्र ही रहे। (८९) (ऐ पैग़म्बर मक्का के काफ़िर तुमसे) कहते हैं कि हम तो उस वक्त तक तुमपर ईमान लानेवाले नहीं जब तक हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा बहों न निकालो। (९०) या खजूरों और अँगूरों का तुम्हारा कोई बाग़ हो और उसके बीचोबीच तुम नहरें जारी कर दिखाओ। (९१) या जैसा तुम कहा करते थे कि आसमान के टुकड़े-टुकड़े हम पर ला गिराये या ख़ुदा फ़रिश्तों को लाकर सामने खड़ा करे। (९२) या कोई तुम्हारा सोने का घर हो या तुम आसमान में चढ़ जाओ और जब तक तुम हमको लेख न उतारो जिसे हम आप पढ़ लें तब तक हम तुम्हारे चढ़ने का विश्वास करने वाले नहीं। कहो कि अल्लाह पाक है मैं तो एक भेजा हुआ आदमी हूँ। (९३) [रुकू १०]

जब लोगों के पास (ख़ुदा की तरफ़) से शिक्षा आ चुकी तो उनको ईमान लाने से इसके सिवाय और कोई रोकने वाली नहीं हुई मगर यही कहने लगे क्या ख़ुदा ने आदमी (पैग़म्बर बना के) भेजा है। (९४) (ऐ पैग़म्बर) तू लोगों से कह कि ज़मीन में अगर फ़रिश्ते होते और यकान से चलते फिरते तो हम आसमान से फ़रिश्तों ही को पैग़म्बर (बना कर) उनके पास भेजते। (९५) (ऐ पैग़म्बर इनसे) कहो कि हमारे और तुम्हारे बीच में अल्लाह ही क़ाफ़ी है वह अपने सेवकों से जानकार है और उन्हें देख रहा है। (९६) और जिसको ख़ुदा शिक्षा दे वही सच्ची राह पर है और जिसे भटकावे तो ऐसे गुमराहों के लिए तुम ख़ुदा के सिवाय कोई मददगार नहीं पाओगे और क़यामत के दिन हम उन लोगों का उनके मुँह के बल अन्धे और गूँगे और बहरे करके उठायेंगे। उनका ठिकाना नरक है जब दोज़ख़ की आग बुझने को होगी हम उनके लिए और ज़्यादा भड़कावेंगे। (९७)

यह उनकी सजा है कि उन्होंने हमारी आयतों से इन्कार किया और कहा कि जब हम हड्डियाँ और टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे तो क्या हम दुबारा जन्म लेंगे। (९८) क्या इन लोगों ने इस बात पर नजर नहीं की कि खुदा जिसने आसमान और जमीन को पैदा किया है इस बात पर भी काबिज है कि इन जैसे (आदमी दुबारा) पैदा करे और उनके लिए (दुबारा पैदा करने को) एक अवधि (मियाद) नियत कर रक्खी है जिसमें किसी तरह का शक नहीं इस पर बेइंसाफ लोग इन्कारी ही करते हैं। (९९) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो अगर मेरे परवर्दिगार के रहम के खजाने तुम्हारे अधिकार में होते तो खर्च हो जाने के डर से तुम उन्हें बन्द ही रखते और मनुष्य बड़ा ही तंग-दिल है। (१००) [रुकू ११]

हमने मूसा को खुली हुई निशानियाँ दीं जो (ऐ पैग़म्बर) इसराईल के बेटों से पूछ कि जब मूसा इसराईल की सन्तान के पास आये तब फ़िरऔन ने उनसे कहा कि मूसा मेरी अटकल में तुम पर किसी ने जादू कर दिया है। (१०१) (मूसा ने) जवाब दिया कि तू जान चुका है कि आसमान और जमीन तेरे परवर्दिगार की ही यह निशानियाँ हैं और ऐ फ़िरऔन मेरे ख्याल में तेरी आफत आई है। (१०२) फिर फ़िरऔन ने ईसराईल की सन्तान को तंग करके देश से निकाल देना चाहा तो हमने उसको और उसके साथियों को सबको डुबो दिया। (१०३) फ़िरऔन के पीछे हमने याकूब के बेटों से कहा कि देश में बसना फिर जब कयामत का वादा आवेगा तो हम तुमको समेटकर जमा करेंगे। (१०४) और (ऐ पैग़म्बर) सचाई के साथ हमने कुरान को उतारा और सचाई के साथ वह उतरा और हमने तो तुमको बस खुश खबरी देने वाला और डराने वाला भेजा है। (१०५) कुरान को हमने थोड़ा थोड़ा करके उतारा कि तुम अवकाश के साथ उसे लोगों को पढ़ कर सुनाओ और हमने उसे धीरे धीरे उतारा है। (१०६) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि तुम कुरान को मानों या न मानों जिन लोगों को कुरान से पहले इल्म दिया गया है जब उनके सामने पढ़ा जाता है

तो ठोड़ियों के बल सजदे में गिरते हैं। (१०७) कहने लगते हैं कि हमारा परवर्दिगार पवित्र है और उसका वादा पूरा होना ही था (१०८) ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं रोते और क़ुरान के कारण से उनकी विनम्रता ज़्यादा होती जाती है। (१०९) (ऐ पैग़म्बर तुम इन लोगों से) कहो कि तुम (ख़ुदा को) अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (दयालु) कहकर पुकारो जिस (नाम) से भी पुकारो तो उसके सब नाम अच्छे हैं और (ऐ पैग़म्बर) तू अपनी नमाज़ ज़ोर से न पढ़ और न धीमी आवाज़ से बल्कि इनके बीच की राह पकड़। (११०) और कहो कि हर तरह से ख़ुदा को सराहना है जो न तो संतान रखता है और न उसके राज्य में कोई (उसका) साझी है। वह निर्बल नहीं कि उसको किसी की सहायता की आवश्यकता हो। उसकी बड़ाइयाँ समय-समय पर करते रहा करो। (१११) [रुकू १२]।

सूरे कहफ़।

मक्के में उतरी। इसमें ११० आयतें, १२ रुकू हैं।

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को है जिसने अपने सेवक पर क़ुरान उतारा और उसमें कोई ऐब नहीं रक्खा। (१) बिल्कुल सीधी बात है ताकि ख़ुदा की तरफ़ से कठोर सज़ा से डराये और जो ईमान वाले हैं और अच्छे काम करते हैं उनको इस बात की ख़ुशख़बरी दे कि उनको अच्छा नतीजा जन्नत है (२) जिसमें वह हमेशा रहेंगे (३) उन लोगों को ख़ुदा की सज़ा डरा जो कहते हैं कि ख़ुदा संतान रखता है। (४) न तो इन्हीं को इस बात की कुछ खोज है और न इनके बड़ों को क्या बुरी बात है जो इनके मुँह से निकलती है जो कहते हैं नि ी झूठ है। (५) इस बात को न माने तो शायद तुम शोक के मारे इनके पीछे अपनी जान दे डालोगे। (६) जो ज़मीन पर है हमने उसको ज़मीन की शोभा बनाई है ताकि इनमें लोगों को जाँचे कि कौन अच्छे कर्म करता है। (७) और हम सब चीज़ों को जो ज़मीन

पर हैं चटियल मैदान बना देंगे। (८) क्या तुम लोग ऐसा ख्याल करते हो कि गुफा और खोह के रहने वाले हमारी निशानियों में से अजीब थे। (९) जब चन्द जवान गुफा में जा बैठे और प्रार्थना की कि दे हमारे परवर्दिगार हम पर अपनी तरफ से कृपा कर और हमारे काम को पूरा कर। (१०) फिर कई बरस के लिए हमने गुफा में उनके कान थपक दिये। (११) फिर हमने उनको उठाया ताकि हम देख लें कि दो गिरोहों में से किसको ठहरने की अवधि याद है। (१२) [रुकू १]

हम उनका हाल ठीक ठीक तुमसे कहते हैं कि वह थोड़े जवान थे जो अपने परवर्दिगार पर ईमान लाये और हम उनको ज्यादा ही शिक्षा देते रहे। (१३) और हमने उनके दिलों पर गिरह लगादी कि जब उठ खड़े हुए और बोल उठे कि हमारा परवर्दिगार आसमान और जमीन का परवर्दिगार है—हम तो उसके सिवाय किसी पूजित को न पुकारेंगे (अगर हम ऐसा करें) तो हमने बड़ी ही अनुचित बात कही। (१४) यह हमारी जाति है जिन्हों ने अल्लाह के सिवाय कई पूजित समझ रक्खे हैं इनकी कोई खुली सनद क्यों नहीं पेश करते। तो जिसने खुदा पर झूँठ बाँधा उससे बढ़कर कौन अपराधी है। (१५) जब तुमने अपनी जाति के लोगों से और खुदा के सिवाय जिनकी यह लोग पूजा करते हैं उनसे किनारा खींच लिया तो गुफा में चल बैठो तुम्हारा परवर्दिगार अपनी दया तुम पर फैला देगा और तुम्हारे काम में सुभीते करेगा। (१६) जब सूरज निकले तो तू देखेगा कि वह उनकी गुफा से दाहिनी ओर को बचता हुआ रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं ओर को कतरा जाता है और वह गुफा के अन्दर बड़ी चौड़ी जगह में हैं यह खुदा की निशानियों में से है जिसको खुदा राह दे वही सच्चे रास्ते पर है और जिसको वह गुमराह करे तो फिर तुम कोई उसको राह पर लाने वाला न पाओगे। (१७) [रुकू २]।

तू उनको समझे कि जागते हैं हालां कि वह सो रहे हैं और हम दाहिनी तरफ को और बाईं तरफ को उनकी करवटें बदलते रहते हैं और उनका कुत्ता चौखट पर अपने दोनों हाथ फैलाये है अगर तू उन

लोगों को झाँक कर देखे तो उनसे डरेगा और उल्टे पैर भाग खड़ा होगा। (१८) और इसी तरह हमने उनको जगा दिया था ताकि अपने आपस में बातें करें। उनमें से एक बोल उठा भला तुम कितनी देर ठहरे होगे वह बोले कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम—फिर बोले कि जितनी मुद्दत तुम खोह में रहे तुम्हारा परवर्दिगार ही अच्छी तरह जानता है तू अपने में से एक को अपना यह रुपया देकर शहर की तरफ भेजो ताकि वह देखे कि किसके यहाँ अच्छा भोजन है वो उसमें से खाना तुम्हारे पास ले आये और चुपके से लेकर चला आवे और किसी को तुम्हारी खबर न होने दे। (१६) अगर लोग तुम्हारी खबर पा जावेंगे तो तुम पर सगसार (पत्थरों की वर्षा) करेंगे या तुमको उल्टा फिर अपने दीन में कर लेवेंगे और ऐसा हुआ तो फिर तुमको कभी जफ़र नहीं होगी। (२०) इसी तरह हमने उन्हें सूचित कर दिया था कि जानलें कि खुदा का वादा सच्चा है और कयामत में कुछ भी शक नहीं। अब खबर पाये पीछे लोग उनके सम्बन्ध में आपस में झगड़ने लगे तो किसी किसी ने कहा उन (कहफवालों) पर एक इमारत बनाओ और उनके हाल को उनका परवर्दिगार ही अच्छी तरह जानता है। उनके बारे में जिनकी राय जबरदस्त रही उन्होंने कहा हम उनके मकान पर एक मसजिद बनावेंगे। (२१) कोई-कोई कहते हैं (कहफ वाले तीन थे चौथा उनका कुत्ता और कोई कहते हैं कि पाँच थे और छठवाँ उनका कुत्ता छिपी बातों में अटकल चलाते हैं और कहते हैं कि सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि इस गिनती को तो मेरा परवर्दिगार ही जानता है इनको बहुत थोड़े जानते हैं। तो (ऐ पैग़म्बर) कहफवालों के बारे में झगड़ा मत करो मगर सरसरी तौर का झगड़ा और कहफवालों के सम्बन्ध में इनमें से किसी से पूछ पाँछ मत करो। (२२) [रुकू ३]।

किसी काम की बाबत न कहा करो कि मैं इसको कल करूँगा मगर यह कहो कि खुदा चाहे तो इस काम को कल कर दूँगा (२३) अगर कभी भूल जाया करो तो अपने परवर्दिगार को याद करो और कह दो

शायद मेरा परवर्दिगार इससे ज्यादा सीधी राह मुझको बतावे। (२४) और (कहफवाले) अपनी † गुफा में ३०० वर्ष रहे और ६ साल और (२५) (ऐ पैग़म्बर इस पर भी लोग इस मुद्दत को न मानें तो उनसे) कहो कि जितनी मुद्दत (कहफवाली गुफा में) रहे अल्लाह खूब जानता है आसमान और ज़मीन की (अदृष्ट) का विद्या उसी को है क्या ही देखने वाला और क्या ही सुननेवाला है। उसके सिवाय लोगों का कोई काम सम्भालनेवाला नहीं और न वह अपनी आज्ञा में किसी को शरीक करता है। (२६) और (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारे परवर्दिगार की किताब से जो तुम पर हुक्म उतरा है उसको पढ़ो कोई उसकी बातों को बदल नहीं सकता और उसके सिवाय तुम कहीं शरण न पाओगे। (२७) और जो लोग सुबह और शाम अपने परवर्दिगार की याद करते हैं और उसी की रजामन्दी चाहते हैं तू उनके साथ मिला रह और तेरी नज़र उन पर से हटने न पावे क्या दुनियाँ की जिन्दगी के साज सामान ढूँढता है और ऐसे शख्स का कहा न मान जिसके दिल को हमने अपनी याद से पला दिया है और वह अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा है और उसकी दुनियाँदारी हद से बढ़ गई है। (२८) और (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि यह कुरान तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से सच है पस जो चाहे माने और जो चाहे न माने इन्कारियों के लिये तो हमने ऐसी आग तैयार कर रक्खी है जिसकी कनातें उनको चारों तरफ से घेर लेंगी और प्रार्थना करेंगे तो (जिसी) पानी से उनकी फरियादरसी (विनय की पहुँच) की जायगी (वह इस तरह गरम होगा) जैसे पिघला हुआ ताँबा (और) वह मुँहों को भून डालेगा (क्या ही) बुरा पानी है और क्या बुरा आराम है। (२९) जो लोग ईमान लाये

† कहफ़वालों का हाल इतिहास में लिखा है। इनकार करनेवालों ने उनके विषय में मुहम्मद साहब से पूछा। आपने इस आशा पर कि वही (आयत) उतरेगी कह दिया कल बताऊँगा परन्तु आयत १८ दिन न आई। यह इसलिए कि आप जान लें कि हर बात का अधिकार खुदा को है और आगे से यों कहा करें कि यदि खुदा ने चाहा तो ऐसी-ऐसी बात मैं इस समय करूँगा।

और उन्होंने नेक काम किये। जो शख़्स नेक काम करे हम उसके बदले को बेकार नहीं होने दिया करते। (३०) यही लोग हैं जिनके रहने के लिये (जन्नत) बाग हैं। इन लोगों के (मकानों के) नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ सोने के कङ्गन पहिनाये जायेंगे और यह महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहिनेंगे (और) वहाँ तख़्तों पर तकिये लगाये बैठेंगे (क्या ही) अच्छा बदला है और क्या ख़ूब आराम है। (३१) [रुकू ४]

(ऐ पैग़म्बर) इन लोगों से उन दो आदमियों की मिसाल बयान करो जिनमें से एक को हमने अंगूर के दो बाग दिये थे और हमने उनके आस पास खजूर के पेड़ लगा रक्खे थे और हमने दोनों बागों के बीच बीच में खेती लगा रक्खी थी। (३२) दोनों बाग अपने फल लाये और फल (लाने) में किसी तरह की कमी नहीं की और दोनों के बीच हमने नहर जारी की। (३३) तो बागों के मालिक के पास एक दिन जिस दिन तरह तरह की पैदावार मौजूद थी यह आदमी अपने (किसी) दोस्त से बातें करते करते बोल उठा कि मैं तुझ से माल में और आदमियों में ज्यादा हूँ। (३४) यह बातें करता हुआ यह अपने बाग में गया और (घमण्ड और नाशुक्री से) अपने पर आप ही ज़ुल्म कर रहा था कहने लगा कि मैं नहीं समझता कि (यह बाग) कभी मिटजावे। (३५) मैं नहीं समझता कि कयामत आने वाली है और अगर मैं अपने परवर्दिगार की तरफ़ लौटाया जाऊँगा तो जहाँ लौटकर जाऊँगा इससे बढ़कर वहाँ पाऊँगा। (३६) उसका दोस्त जो इससे बातें करता जाता था, बोल उठा कि क्या तू इसका इन्कार करने वाला है जिसने तुझको मिट्टी से फिर पैदा किया फिर तुझको पूरा आदमी बनाया। (३७) लेकिन मैं तो (यह यकीन रखता हूँ कि) वही अल्लाह मेरा परवर्दिगार है। और मैं अपने परवर्दिगार के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (३८) जब तू अपने बाग में आया तो तू ने क्यों नहीं कहा कि यह (सब) ख़ुदा के चाहे से हुआ (वर्ना मुझ में तो) ख़ुदा की मदद के बिना कुछ भी बल नहीं अगर माल और संतान के विचार से तू मुझको अपने से कम समझता है। (३९) तो ताज्जुब

नहीं मेरा परवर्दिगार तेरे बाग से बढ़कर मुझको दे और तेरे बाग पर आसमान से कोई बला उतारे कि वह सुबह को साफ मैदान होकर रह जाय। (४०) या उसका पानी बहुत नीचे उतर जाय और तू उसको किसी तरह ढूंढकर न ला सके। (४१) उसकी पैदावार फेर में आगई तो वह उस लागत पर जो बाग में लगाई थी अपने दोनों हाथ मलता रह गया और वह अपनी टट्टियों पर गिर पड़ा था और कहता जाता था कि क्या अच्छा होता अगर अपने परवर्दिगार के साथ किसी को साझी न ठहराता। (४२) उसका कोई ऐसा जत्था न हुआ कि खुदा के सिवाय उसकी मदद करता और न वह बदला ले सका। (४३) इसी से सब सच्चे अधिकार खुदा को हैं वही बढ़कर और अच्छा बदला देनेवाला है। (४४) [रुकू ५]।

(ऐ पैग़म्बर) इन लोगों से बयान करो कि दुनियाँ की जिन्दगी की मिसाल पानी जैसी है जिसको हमने आसमान से बर्साया तो ज़मीन की पैदावार पानी के साथ मिल गई फिर चूर चूर होकर रह गई जिसे हवायें उड़ाये उड़ाये फिरती हैं और अल्लाह हर चीज पर सर्वशक्तिमान है। (४५) (ऐ पैग़म्बर) माल और औलाद दुनियाँ की ज़िन्दगी की शोभा हैं और अच्छे काम जिनका असर देर तक बाकी रहे तुम्हारे पालनकर्ता के नज़दीक सवाब के विचार से बढ़कर हैं और उम्मीद से भी बढ़कर हैं। (४६) लोगो उस दिन की चिंता से बेखटके न हो, जिस दिन हम पहाड़ों को हिलावेंगे और (ऐ पैगम्बर) तुम ज़मीन को देख लोगे कि खुला मैदान पड़ा है और हम लोगों को घेर बुलावेंगे और उनमें से किसी को नहीं छोड़ेंगे। (४७) पाँति के पाँति तुम्हारे परवर्दिगार के सामने पेश किये जायेंगे जैसा हमने तुमको पहिली बार पैदा किया वैसे ही तुम हमारे सामने आये मगर तुम यह ख्याल करते रहे कि हम तुम्हारे लिये कोई समय ही नहीं ठहरावेंगे। (४८) और (लोगों की कारगुज़ारियों) का रजिस्टर रक्खा जायगा तो (ऐ पैगम्बर) तुम गुनहगारों को देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर में है उससे डर रहे हैं और कहते जाते हैं कि हाय हमारा दुर्भाग्य यह कैसा

रजिस्टर है और जो कुछ इन लोगों ने किया था कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नहीं जो उसमें न लिखी हो (यह सब कर्म लेखे में लिखा हुआ) मौजूद पावेंगे और तुम्हारा परवर्दिगार किसी पर बेइन्साफ़ी नहीं करेगा। (४६) [रुकू ६]।

जब हमने फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सिर झुकाओ तो इबलीस (जो जिन्नों की जाति में से था) के सिवाय सभी ने सिर झुकाया। अपने परवर्दिगार के हुक्म से निकल भागा तो (लोगों) क्या मुझे छोड़कर इबलीस को और उसके कुटुम्ब को दोस्त बनाते हो हालांकि वह तुम्हारे (पुराने) दुश्मन हैं और जालिमों का फल बुरा हुआ। (५०) हमने आसमान और ज़मीन के पैदा करते समय बल्कि खुद शैतान के पैदा करते समय भी शैतानों को नहीं बुलाया और हम ऐसे न थे कि राह भुलाने वालों को (अपना) मददगार बनाते। (५१) और (लोगों उस दिन की फ़िक्र से बेखटके न हो) जिस दिन खुदा हुक्म देगा कि जिन को तुम हमारा शरीक समझा करते थे उनको बुलाओ या उनको बुलायेंगे मगर वह इनको जवाब ही न देंगे और हम इनके बीच में आड़ कर देंगे। (५२) मार डालने वाले और अपराधी लोग दोज़ख की आग को देखेंगे और समझ जायेंगे कि वह उसमें गिरने वाले हैं और उनको उससे कोई भागने की राह नहीं मिलेगी (५३) [रुकू ७]।

हमने इस कुरान में लोगों के लिये हर तरह की मिसालें बयान की हैं मगर आदमी ज्यादा झगड़ालू है। (५४) जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो (अब) ईमान लाने और अपने परवर्दिगार से क्षमा माँगने से इनको उसके सिवाय और कौन काम रोकने वाला हो सकता था कि अगले लोगों जैसा चलन इनको भी पेश आये या (हमारी) सज़ा इनके सामने आ मौजूद हो। (५५) हम पैग़म्बरों को सिर्फ़ इसलिये भेजा करते हैं कि खुश खबरी सुनावें और डरावें और जो लोग इन्कार करने वाले हैं, झूठी बातों की सनद पकड़कर झगड़े किया करते हैं ताकि झगड़े से सच्चको बिगाड़ें और इन लोगों ने हमारी

आयतों को और (हमारी सज़ा को) जिसमें इनको डराया जाता है हँसी बना रक्खी है। (५६) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो ख़ुदा की आयतों से समझाये जाने पर फिर उसकी तरफ़ से मुँह फेरे और अपने पहिले कामों को भूल जाये हमही ने इनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं ताकि (सब बात) समझ न सकें और इनके कानों में (एक तरह का) बोझ (पैदा कर दिया है)। और (ऐ पैग़म्बर) अगर तुम इनको सच्ची राह की तरफ़ बुलाओ तो यह कभी राह पर आनेवाला नहीं। (५७) और तुम्हारा परवर्दिगार बड़ा माफ़ी करने वाला मेहरबान है अगर इनके काम के बदले में इनको पकड़ना चाहता तो फ़ौरन ही इन पर सज़ा उतार देता लेकिन इनके लिये एक मियाद है जिससे इधर कहीं शरण नहीं पा सकते। (५८) (आद और समूद की) यह बस्तियाँ (जिनको तुम देखते हो) इन्हों ने भी जब नटखटी की हमने उनको मिटा दिया और इनके मार डालने की भी हमने एक मियाद नियत कर रक्खी है। (५६) [रुकू ८]।

(ऐ पैग़म्बर) जब मूसा † (ख़िज़्र की मुलाक़ात के इरादे से चले तो उन्हों ने) अपने नौकर (यूशा) से कहा कि जब तक मैं दोनों नदियों के मिलने की जगह पर न पहुँचलूँ बराबर चलूँगा या मैं कारनून तक चला ही जाऊँगा। (६०) फिर जब यह दोनों उन दो नदियों के मिलने की जगह पर पहुँचे तो दोनों अपनी मछली भुनी हुई भूल गये तो मछली ने नदी में सुरंग की तरह का अपना रास्ता बना लिया। (६१) फिर जब आगे बढ़ गये तो मूसा ने अपने नौकर से कहा कि हमारा जलपान तो हमको दो। हमारे इस सफ़र से तो हमको बड़ी थकावट हुई। (६२) (नौकर ने) कहा आपने यह भी देखा कि जब उस पत्थर

---

† एक दिन हज़रत मूसा से किसी ने पूछा, "तुमसे भी अधिक ज्ञान किसी को है ?" मूसा ने कहा, "हम नहीं जानते।" यदि उन्होंने यों कहा होता कि हम ऐसे अल्लाह के बहुतेरे बन्दे हैं तो बहुत उचित होता। इसलिए उनपर यही (आयत) आई कि एक सेवक हमारा है जो नदी के संगम पर रहता है उससे मिलो वह तुमसे अधिक ज्ञान रखता है।

के पास ठहरे तो मैं मछली भूल गया और शैतान ही ने मुझको भुला दिया कि मैं (आप से) उसका जिक्र करता और मछली ने अजीब तौर पर नदी में (जानेका) अपना रास्ता कर लिया। (६३) (मूसा ने) कहा कि वही है जिसको हम तलाश में थे फिर दोनों अपने (पगों के) निशानों के खोज लगाते लगाते उलटे पाँव फिरे। (६४) तो उन्होंने हमारे माननेवालों में से एक सेवक (यानी खिज्र) को पाया जिस पर हमने अपनी मेहरबानी की और अपनी तरफ उसको एक इल्म सिखाया था। (६५) मूसा ने खिज्र से कहा कि क्या मैं तेरे साथ इस शर्त पर रहूँ कि जो इल्म तुझको सिखाया गया है तू कुछ मुझको भी सिखादे। (६६) (खिज्र ने) कहा तू मेरे साथ न ठहर सकेगा। (६७) और जो चीज तुम्हारी जानकारी के घेरे से बाहर है उस पर तू कैसे सब्र कर सकता है। (६८) (मूसा ने) कहा कि जो खुदा ने चाहा तू मुझको संतोष करनेवाला पावेगा और मैं तेरी किसी आज्ञा को न टालूँगा। (६९) (खिज्र ने) कहा अगर तुझको मेरे साथ रहना है तो जब तक मैं तुझसे किसी बात की चर्चा न करूँ तू मुझसे कोई सवाल न कर। (७०) [रुकू ९]

फिर (मूसा और खिज्र) दोनों यहाँ तक चले कि जब दोनों नाव में सवार हुए तो खिज्र ने (एक तख्ता तोड़कर) नाव को फाड़ दिया (मूसा ने) कहा कि तूने क्या किश्ती को इसलिये फाड़ा कि नाव के लोगों को (दरिया में) डुबो दे। तूने एक अजीब बात की। (७१) (खिज्र ने) कहा क्या मैंने न कहा था कि तू मेरे साथ न ठहर सकेगा (७२) (मूसा ने) कहा कि तू मेरी भूल चूक न पकड़ और मेरे काम के सबब से मुझ पर सख्ती मत डाल। (७३) फिर दोनों और चले यहाँ तक कि (रास्ते में) एक लड़के से मिले तो खिज्र ने उसको मार डाला (मूसा ने) कहा क्या बिना किसी जानके बदले तूने एक बेकसूर मनुष्य को मार डाला तूने बड़ा बेजा काम किया। (७४) ।

क़ुरान शरीफ़

[द्वितीय खण्ड]

सूरे कहफ

सोलहवाँ पारा (काल अलम अक़ुल)

(खिज्र ने) कहा क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि मेरे साथ तुम सब्र नहीं कर सकोगे। (७५) (मूसा ने) कहा कि इसके बाद अगर मैं तुम से कुछ भी पूँछूँ तो मुझको अपने साथ न रखना फिर मैं तुमसे कुछ उज्र न करूँगा। (७६) फिर आगे चले यहाँ तक कि गाँव वालों के पास पहुँचे और वहाँ के लोगों से खाने को माँगा उन्होंने उनको खाना देना मंजूर न किया। इतने में इन्होंने गाँव में एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी (खिज्र ने) उसको खड़ा कर दिया (इस पर मूसा ने) कहा अगर तुम चाहते तो (इन लोगों से) दीवार के खड़े कर देने की मजदूरी ले सकते थे। (७७) (खिज्र ने) कहा अब मुझमें और तुममें जुदाई पड़ गई जिस पर तू संतोष न कर सका मैं तुमको उसकी हकीकत बताये देता हूँ। (७८) नाव तो गरीबों की थी। वह नदी में चलाकर पेट पालते थे। मैंने चाहा कि उसको ऐबदार कर दूँ क्योंकि इनके सामने की तरफ एक बादशाह था जो हर एक किश्ती को जब्त कर लिया करता था। (७९) और वह जो लड़का था उसके माता पिता ईमानवाले थे हमको यह डर हुआ कि यह लड़का सरकशी और इन्कार से उनके सिरों पर न बला डाले। (८०) इसलिये हमने यह इरादा किया (उसको मार दिया) और उनका

परवर्दिगार उसके बदले में उसको पाक और उससे अच्छे ख्याल वाला बेटा देगा। (८१) रही दीवार सो शहर के दो अनाथ लड़कों की थी उसके नीचे उन्हीं (लड़कों) का ख़ज़ाना (गड़ा हुआ) था और उसका पिता अच्छा आदमी था। पस तुम्हारे परवर्दिगार ने चाहा कि दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुँचकर अपना ख़ज़ाना निकाल लें तुम्हारे परवर्दिगार की यह कृपा थी और मैंने जो कुछ किया सो अपने अख़्तियार से नहीं किया (बल्कि ख़ुदा की आज्ञा से) यह उसका भेद है जिस पर तुम सतोष न कर सके। (८२) [रुकू १०]।

(ऐ पैग़म्बर) लोग तुम से ज़ुलक़रनैन (सिकन्दर) का हाल पूछते हैं तुम कहो कि मैं तुमको उसका थोड़ा सा हाल पढ़कर सुनाता हूँ। (८३) हमने उसको तमाम ज़मीन पर सामर्थ्यवान किया और हमने उसको हर तरह के साज सामान दिये। (८४) वह एक सामान के पीछे पड़ा (यात्रा की तैयारी की) (८५) यहाँ तक कि जब सूरज के डूबने की जगह पर पहुँचा तो उसको सूरज ऐसा दिखाई दिया कि वह काली काली कीचड़ के कुण्ड में डूब रहा है और देखा कि उस (कुण्ड) के क़रीब एक जाति बसी है। हमने कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन चाहो (इनको) सज़ा दो या इनको भला बनाओ (८६) (ज़ुलक़रनैन ने कहा) जो सरकशी करेगा उसको तो हम सज़ा देंगे वह अपने परवर्दिगार के सामने लौटकर जायगा और वह भी उसे बुरी मार देगा। (८७) और जो ईमान लाये और अच्छे काम करे (उसके) बदले में उसको भलाई मिलेगी और हम उससे नर्मी से पेश आयेंगे। (८८) उसने सफ़र का सामान किया। (८९) यहाँ तक कि जब वह सूरज के निकलने की जगह पहुँचा तो उसको ऐसा मालूम हुआ कि सूरज कुछ लोगों पर निकलता है जिनके लिये हमने सूरज के इधर कोई आड़ नहीं रक्खी। (९०) ऐसा ही (था) और ज़ुलक़रनैन के पास जो कुछ था हमको उससे पूरी जानकारी थी। (९१) फिर वह एक सामान के पीछे पड़ा। (९२) यहाँ तक कि जब चलते चलते एक पहाड़ की घाटी के बीच में पहुँचा तो किनारों के इधर एक क़ौम को

पाया जो (भाषा) बात को नहीं समझते थे। (६३) उन लोगों ने (अपनी बोली) में कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन (इस घाटी के उधर से) याजूज और माजूज§ मुल्क में (आकर) फ़िसाद करते हैं तो हम आपके लिये (चन्दा) जमा करदें यदि आप हमारे और उनके बीच कोई रोक बना दें। (६४) (ज़ुलक़रनैन ने) कहा कि मेरे परवर्दिगार ने जो मुझे सामर्थ्य दी है काफी है (चन्दे की आवश्यकता नहीं) बल से मेरी सहायता करो मैं तुममें और उनमें एक दीवार खींच दूंगा। (६५) लोहे की सिलें हमको ला दो (वे लाये) यहाँ तक कि जब ज़ुलक़रनैन ने दोनों किनारों के बीच को पाटकर बराबर कर दिया तो हुक्म दिया कि अब इसको धौंको यहाँ तक कि जब (लोहे की) दीवार को (लाल) अंगारा कर दिया तो कहा कि अब हमको ताँबा लादो कि उसको पिघलाकर इस दीवार पर डाल दें। (६६) (गरज़ इस तदबीर से ऐसी ऊँची और मज़बूत दीवार तैयार हो गई कि याजूज माजूज) न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें सूराख कर सकते थे। (६७) (ज़ुलक़रनैन ने) कहा कि यह मेरे परवर्दिगार कि कृपा है। लेकिन जब मेरे परवर्दिगार का वादा आवेगा तो इस दीवार‡ को गिरा देगा और मेरे परवर्दिगार का वादा सच्चा है। (६८) और हम उस दिन किसी को किसी में मौज करने के लिये छोड़ देंगे और नरसिंहा फूंका जायेगा फिर हम सब लोगों को जमा करेंगे। (६९) और उसी दिन काफ़िरों के सामने नरक पेश करेंगे। (१००) जिनकी आँखें हमारी यादगारी से पर्दे में थीं और वह सुन न सकते थे†। (१०१) [रुकू ११]।

क्या काफ़िर इस ख्याल में हैं कि हमको छोड़कर हमारे बन्दों

§ याजूज और माजूज दो जातियों के नाम हैं। यह घाटी पार करके लूटमार किया करते थे।

‡ यह लोहे की दीवार भी क़यामत के क़रीब गिर पड़ेगी।

† यानी जो लोग हमारे बताए मार्ग पर न चलते थे और बतानेवाले की बात न सुनते थे।

को काम का सम्भालने वाला बनावें। हमने काफ़िरों की मेहमानी के लिये नरक तैयार कर रक्खा है। (१०२) कहो तो बताऊँ कि किस के काम अकारथ हैं। (१०३) वह लोग जिनकी दुनियाँ की जिन्दगी में कोशिश गई गुज़री हुई और वह इसी ख्याल में हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। (१०४) यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवर्दिगार की आयतों को और उसके सामने हाज़िर होने को न माना तो इनके काम अकार्थ हो गये तो कयामत के दिन हम इनकी तौल न खड़ी करेंगे (१०५) यह नरक उनका बदला है कि उन्होंने इन्कार किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई। (१०६) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनकी मेहमानी के लिए बैकुण्ठ के बाग हैं। (१०७) जिनमें वह हमेशा रहेंगे वहाँ से उठना नहीं चाहेंगे। (१०८) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर मेरे परवर्दिगार की बातों के (लिखने के) लिए समुद्र स्याही हो वह लिखत लिखते निबट जाय चाहे वैसा ही समुद्र और भी मदद को किया जाय। (१०९) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि मैं तुम्ही जैसा आदमी हूँ मेरे पास यह वही (ईश्वरीय संदेशा) आई है कि तुम्हारा पूज्य (केवल एक ख़ुदा ही है) तो जिसको अपने परवर्दिगार के मिलने की चाह होवे उसे भले काम करना चाहिए और किसी को अपने परवर्दिगार की पूजा में शामिल न करना चाहिए। (११०) [रुकू १२]

सूरे मरियम।

मक्के में उतरी। इसमें ९८ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद (१) (ऐ पैग़म्बर) यह उस मेहरबानी का ज़िक्र है जो तुम्हारे परवर्दिगार ने अपने सेवक ज़करिया पर की थी।

(२) कि जब उन्होंने अपने परवर्दिगार को दबी आवाज़ से पुकारा। (३) बोले कि ऐ परवर्दिगार मेरी हड्डियाँ सुस्त पड़ गई हैं और शिर बुढ़ापे से भड़क उठा है। और ऐ मेरे परवर्दिगार। मैं तुझसे माँग कर खाली नहीं रहा‡। (४) अपने (मेरे) पीछे मुझको भाई बन्दों से डर है और मेरी बीबी बाँझ है पस अपनी तरफ से मुझको एक वारिस (यानी बेटा) दे। (५) जो मेरा वारिस हो और याक़ूब की सन्तान का वारिस हो और ऐ मेरे परवर्दिगार! उसे मनमाना बना। (६) (ख़ुदा ने कहा) ज़करिया हम तुमको एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं जिसका नाम यहिया होगा। (और इससे) पहिले हमने इस नाम का कोई (आदमी पैदा) नहीं किया। (७) (ज़करिया ने) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है जब कि मेरी बीबी बाँझ है और मैं बिल्कुल बूढ़ा हो गया हूँ। (८) कहा ऐसा ही तुम्हारा परवर्दिगार कहता है कि तुमको इस में बेटा देना हमारे लिये आसान है और पहिले तुम्हीं को हमने पैदा किया हालांकि तुम कुछ भी न थे। (९) ज़करिया ने निवेदन किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझे कोई निशानी बता। कहा कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम बराबर तीन रात (दिन) लोगों से बात नहीं कर सकोगे। (१०) फिर (ज़करिया) कोठे से निकलकर लोगों के सामने आया तो इशारे से उनको समझा दिया कि सुबह और शाम (ख़ुदा की) पूजा में लगे रहो। (११) (गरज यहिया पैदा हुआ हमने उसको हुक्म दिया) ऐ यहिया! किताब को ख़ूब मज़बूती से लिये रहना (पालन करना) और अभी वह लड़के ही थे कि हमने अपनी कृपा से उनको पैग़म्बरी दी। (१२) और दया और शुद्ध स्वभाव दिया और वह परहेज़गार था। (१३) और अपने माँ बाप की सेवा करता था और ज़बरदस्त बे हुक्म न था। (१४) और सलाम है उस पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन (दुबारा) ज़िन्दा होगा। (१५) [रुकू १]।

---

‡ यानी तूने मेरी हर प्रार्थना स्वीकार की है।

(ऐ पैग़म्बर) क़ुरान में मरियम का ज़िक्र करो कि जब वह अपने लोगों से जुदा हो कर पूरब की तरफ जा बैठी (१६) और लोगों की तरफ से पर्दा कर लिया तो हमने अपनी रूह (यानी आत्मा) को उनकी तरफ भेजा, फिर हमारी आत्मा पूरा मनुष्य बन कर उनके सामने आई। (१७) मरियम कहने लगी अगर तुम परहेज़गार हो तो मैं खुदा की शरण चाहती हूँ। (१८) बोले कि मैं तेरे परवर्दिगार का भेजा हुआ (फरिश्ता) हूँ इस लिये (आया हूँ) कि तुमको एक पाक लड़का दे जाऊँ। (१९) वह बोली कि मेरे यहाँ कैसे लड़का हो सकता है जब कि मुझे किसी मर्द ने नहीं छुआ और मैं कभी बदकार नहीं रही। (२०) (शुद्धात्मा ने) कहा ऐसा ही तुम्हारा परवर्दिगार कहता है कि यह मामला मुझ पर आसान है और लोगों के लिये हम उसको एक निशानी और दया अपनी तरफ से किया चाहते हैं और यह काम पहिले (सृष्टि के आदि) से ठहर चुका है। (२१) इस पर मरियम के गर्भ रह गया और वह फिर गर्भ लेकर कहीं अलग दूर के मकान में जा बैठी। (२२) फिर उसको एक खजूर के पेड़ की जड़ के पास जनने का दर्द उठा (मरियम ने कहा) अगर मैं इस से पहिले मर चुकी होती और भूली बिसरी हो गई होती। (२३) फिर उसको उसके नीचे से आवाज़ आई कि उदास न हो तेरे परवर्दिगार ने तेरे नीचे एक चश्मा बहा दिया है। (२४) और खजूर की डालों को अपनी तरफ हिलाओ उस से तेरे लिये पक्के खजूर गिरेंगे। (२५) फिर खाओ और (चश्मे का पानी) पियो और (बेटे को देखकर) आँखें ठण्डी करो फिर कोई आदमी दिखलाई पड़े और वह तुमसे पूछे तो (इशारे से) कह देना कि मैंने दयालु (रहमान) का रोज़ा रक्खा है सो मैं आज किसी आदमी से न बोलूँगी। (२६) फिर मरियम लड़के को गोद में लिये अपनी जाति के लोगों के पास लाई। वह (देख कर) कहने लगे कि ऐ मरियम! यह तूफ़ान कहाँ से लाई (२७) हारू की बहिन! न तो तेरा बाप ही बदकार था और न तेरी माता ही बदचलन थी। (२८) तो मरियम ने बच्चे की तरफ इशारा किया (कि जो कुछ

पूछना है उससे पूँछ लो) यह कहने लगे कि हम गोद के बच्चे से कैसे बात करें । (२६) इस पर बच्चा बोला कि मैं अल्लाह का सेवक हूँ उसने मुझको किताब (इंजील) दी और मुझको पैग़म्बर बनाया । (३०) और कहीं भी रहूँ मुझको बरकत दी और मुझको आज्ञा दी कि जब तक जिन्दा रहूँ नमाज पढ़ूँ और ज़कात दूँ । (३१) और मुझको अपनी माँ का सेवक बनाया और मुझको जालिम और अभागा नहीं बनाया । (३२) और मुझ पर सलाम है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूँगा और जिस दिन (दुबारा) जिन्दा उठा खड़ा हूँगा । (३३) यह ईसा मरियम का बेटा है सच्ची सच्ची बातें जिसमें लोग झगड़ा करते हैं । (३४) खुदा ऐसा नहीं कि बेटा बनावे, वह पाक है जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो इतना कह देता है कि हो और वह हो जाता है । (३५) अल्लाह मेरा और तुम्हारा परवर्दिगार है सो उसी की पूजा करो यही सीधी राह है । (३६) फिर आपस में फूट न डालने लगे सो उन लोगों के हाल पर अफसोस है जो इनकार करते हैं कि बड़े दिन (कयामत में) फिर हाजिर होना पड़ेगा । (३७) जिस दिन यह लोग हमारे सामने आवेंगे क्या कुछ सुनते क्या कुछ देखेंगे लेकिन जालिम आज के दिन खुली गुमराही भटकने (में पड़े हैं) (३८) और इन लोगों को पछतावे के दिन से डराओ जब काम का फैसला कर दिया जावेगा और यह लोग भूल रहे हैं और ईमान नहीं लाते (३९) हम ज़मीन के वारिस होंगे और उन लोगों के भी जो तमाम ज़मीन पर हैं और हमारी तरफ सबको लौटकर आना होगा । (४०) [रुकू २] ।

और कुरान में इब्राहीम का ज़िक्र (बयान) करो कि वह बड़े ही सच्चे पैग़म्बर थे (४१) जब उन्होंने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप ! आप क्यों इन (बुतों) की पूजा करते हैं जो न सुनते और न देखते और न कुछ काम आप के आ सकते हैं । (४२) ऐ बाप ! मुझको (खुदा की तरफ से) ऐसी मालूमात मिली है जो तुमको नहीं मिली । सो तू मेरे पीछे हो तुमको सीधी राह दिखाऊँगा । (४३) ऐ बाप

शैतान को न पूज क्योंकि शैतान ख़ुदा से फिरा हुआ है। (४४) ऐ बाप! मुझको इस बात से डर है कि ख़ुदा से कोई सज़ा न आ लगे और तू शैतान का साथी हो जावे। (४५) (इब्राहीम के बाप ने) कहा कि ऐ इब्राहीम क्या तू मेरे पूजितों से फिरा हुआ है। अगर तू नहीं मानेगा तो मैं तुझको संगसार (पथराव) कर दूँगा और अपनी खैर चाहता है तो मेरे सामने से दूर हो। (४६) (इब्राहीम ने) कहा (अच्छा तो मेरा) सलाम जुदाई है मैं अपने परवर्दिगार से तेरे लिए क्षमा मागूँगा वह मुझ पर मेहरबान है। (४७) मैं तुम (बुतपरस्तों) को और (इन बुतों) से जिनको तुम ख़ुदा के सिवाय पुकारा करते हो अलग होता हूँ और अपने परवर्दिगार को पुकारूँगा उम्मेद है कि मैं अपने परवर्दिगार से दुआ माँग कर अभागा नहीं बनूँगा। (४८) सो जब इब्राहीम उन (मूर्तिपूजकों) से और उन मूर्तियों से जिनको वह ख़ुदा के सिवाय पूजते थे अलग हो गये, हमने उनको इसहाक़ और याक़ूब† दिये और सबको हमने पैग़म्बर बनाया। (४६) और अपनी कृपा से उनको (सब कुछ) दिया और उनके लिए सच्चे और बड़े शब्द कहे (५०) [रुकू ३]

और किताब में मूसा का ज़िक्र (बयान) करो कि वह चुना हुआ और पैग़म्बर था। (५१) और हमने उसको (पहाड़) तूर की दाहिनी तरफ़ से पुकारा और भेद कहने के लिए उसको पास बुलाया। (५२) और अपनी मेहरबानी से उसके भाई हारूँ को पैग़म्बर बना कर बख़्श दिया। (५३) और क़ुरान में इस्माईल का ज़िक्र कर कि वह वादे का सच्चा और पैग़म्बर था। (५४) और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता और ख़ुदा को पसंद था। (५५) और किताब में इद्रीस का ज़िक्र (बयान) कर कि वह सच्चा पैग़म्बर था। (५६) और हमने उसको उठाकर बड़ी ऊँची जगह दाख़िल किया। (५७) यह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने कृपा की और आदम की

---

† इब्राहीम के बेटे और पोते। यहाँ इसमाईल का नाम नहीं लिया क्योंकि वह इब्राहीम के साथ नहीं रहे।

औलाद हैं और उन लोगों की औलाद हैं जिनको हमने नूह के साथ (नाव में) सवार कर लिया था और इब्राहीम और इसराईल की औलाद हैं और उन लोगों की औलाद में से हैं जिनको हमने सभी राह दिखलाई और चुन लिया जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़ कर सुनाई जाती थीं तो सिजदे में गिर पड़ते थे और रोते जाते थे। (५८) फिर उनके बाद ऐसे नालायक (पैदा) हुए जिन्होंने नमाजें छोड़ दीं और बुरी ख्वाहिशों के पीछे पड़ गये सो उनकी गुमराही उनके आगे आयेगी। (५९) मगर जिसने तौबा की और ईमान लाये और नेक काम किये तो ऐसे लोग बागों में दाखिल होंगे और उन पर जुल्म न होगा। (६०) यानी बिना देखे बाग जिनका खुदा ने अपने दासों से वादा कर रक्खा है। उसका वादा आनेवाला है। (६१) वहाँ कोई बेहूदा बात उनके कान में न पड़ेगी सिवाय सलाम§ के और वहाँ उनको खाना सुबह शाम मिला करेगा। (६२) यही वह स्वर्ग है जिसे अपने दासों में से जो परहेजगार होगा उसे उसका वारिस बनायेंगे। (६३) और (ऐ पैग़म्बर) हम† (फिरिश्ते) तुम्हारे पालनकर्त्ता के बिना हुक्म दुनिया में नहीं आ सकते। जो कुछ हमारे आगे होने वाला है और जो कुछ हमसे पहले हो चुका है और जो कुछ इन दोनों के बीच में है सब उसी के हुक्म से है और तेरा परवर्दिगार भूलने वाला नहीं (६४) आसमान जमीन का पालने वाला और उन चीजों का जो आसमान जमीन के बीच में हैं सो उसी की पूजा में लगे रहो और उसकी पूजा को बरदाश्त करो भला तुम्हारी जान में जैसा कोई और भी है। (६५) [रुकू ४]

और आदमी पूछा करता है कि जब मैं मर जाऊँगा तो क्या (दुबारा) जिन्दा हो जाऊँगा। (६६) क्या आदमी याद नहीं करता

---

§ यह जन्नत का बयान है। सलाम से यहाँ अच्छी और पाक बातों से प्रयोजन है।

†यह जवाब उस सवाल का है जो मुहम्मद साहब ने जिब्रील से पूछा था। एक बार वह कई दिन के बाद आए तो नबी ने रोज न आने की वजह पूछी। जिब्रील ने कहा, "मैं खुदा के हुक्म से आता हूँ। अपनी ओर से नहीं आता।"

कि हमने पहले इसको पैदा किया था और यह कुछ भी न था। (६७) तो (ऐ पैग़म्बर) तेरे परवर्दिगार की कसम हम उन्हें शैतानों के साथ इकट्ठा करेंगे और नरक के गिर्द घुटनों के बल बिठलायेंगे। (६८) फिर हर फ़िर्क़ें में से उन लोगों को अलग करेंगे जो ख़ुदा से बड़े फिरंटे थे। (६९) फिर जो लोग नरक में जाने के लायक हैं हम उनको ख़ूब जानते हैं। (७०) और तुम में से कोई नहीं जो नरक में होकर न गुज़रे यह वादा तेरे परवर्दिगार पर लाज़िम हो चुका है। (७१) फिर हम परहेज़गारों को बचा लेंगे और बेहूदों को उसी में पड़ा छोड़ देंगे। (७२) और जब हमारी खुली आयतें लोगों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो काफ़िर मुसलमानों से पूछने लगते हैं कि हम दोनों फ़रीक़ों में से दर्जा (रुतबा) किसका अच्छा है और मजलिस किसकी अच्छी। (७३) और हम इनसे पहले बहुत सी जमातों को जो सामान और दिखावे में अच्छी थीं मिटा चुके हैं (७४) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि जो शख़्स गुमराही में है ख़ुदा उसको लम्बा खींचे§ यहाँ तक कि जब उस चीज़ को देख लें जिसका उनसे वादा किया जाता है यानी सज़ा या क़यामत तो उस वक्त इनको मालूम हो जायगा कि अब किसका रुतबा बुरा और (किसका जत्था) कमज़ोर है। (७५) और जो लोग सीधी राह पर हैं अल्लाह उनको ज़ियादा शिक्षा देता है और अच्छे काम का जिनका असर बाक़ी रहे अच्छा बदला मिलता है और उनका लौट आना भी अच्छा है। (७६) भला तुमने उस शख़्स को देखा जिसने हमारी आयतों से इनकार किया और कहने लगा क़यामत होगी) तो वहाँ भी मुझको माल और संतान मिलेगी†। (७७) क्या उसको ग़ैब की ख़बर लग गई है या इसने ख़ुदा से वादा

---

§ यानी ढील दिये जाता है।

† एक काफ़िर मालदार न एक मुसलमान की मज़दूरी न दी और कहा, "तू अपना धर्म छोड़ दे तो मज़दूरी दूँगा।" मुसलमान बोला, "तू मरकर फिर जिए तो भी मैं अपना ईमान न बदलूँ।" इस पर पहला बोला, "मैं फिर जिऊँगा तो यही माल और औलाद पाऊँगा।" इस पर कहा है कि वहाँ ईमान काम आयेगा, माल नहीं।

कर लिया है। (७८) हरगिज नहीं जो कुछ यह बकता है हम लिख लेवे हैं और इसके हक में सजा बढ़ाते चले जायेंगे। (७९) और यह जो (माल और औलाद) उसके पास है (आखिरकार) हम उससे ले लेवेंगे और यह अकेला हमारे सामने आवेगा। (८०) और मुशरिकों ने जो खुदा के सिवाय पूजित बना रक्खे हैं ताकि ये इनके मददगार हों। (८१) कभी नहीं यह पूजित इनकी पूजा का इनकार करेंगे और उलटे इनके वैरी हो जायेंगे। (८२) [रुकू ५]

क्या तुमने नहीं देखा कि हमने शैतानों को काफिरों पर छोड़ रक्खा है कि यह उनको उकसाते रहते हैं। (८३) सो तुम इन (काफिरों) पर (सजा उतरने की) जल्दी न करो हम उनके लिए दिन गिन रहे हैं। (८४) जिस दिन हम परहेजगारों को खुदा के सामने मेहमानों की तरह जमा करेंगे। (८५) और पापियों को प्यासे नरक की ओर हाँकेंगे। (८६) वहाँ शिफारीस का अधिकार न होगा, हाँ जिसने खुदा से वादा लिया है। (८७) और कोई-कोई कहते हैं कि खुदा बेटा रखता है। (८८) (ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि) तुम ऐसी कड़ी बात कहते हो। (८९) जिस से आसमान फट पड़े और जमीन फट जावे और पहाड़ काँप कर गिर पड़े। (९०) इसलिए कि खुदा के लिए बेटा साबित करते हैं। (९१) और इसलिए कि खुदा के लायक नहीं कि बेटा बनावे (९२) आसमान और जमीन में कोई नहीं है जो खुदा के आगे दास होकर न आवे (९३) खुदा ने इनको घेर लिया है और इनको गिन रक्खा है। (९४) और यह सब क्यामत के दिन अकेले उसके सामने आवेंगे। (९५) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनके लिए खुदा दोस्त पैदा करेगा। (९६) सो हमने इस (कुरान) को तुम्हारी जबान में इस गर्ज से आसान कर दिया है कि तुम इससे परहेजगारों को खुशखबरी सुनाओ झगड़ालुओं को सजा से डराओ। (९७) और इनसे पहले हम बहुत जमाअतों को मार चुके हैं भला अब तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनमें से किसी की आवाज सुनते हो। (९८) [रुकू ६]।

शरीक कर। (३२) ताकि हम दोनों तेरी पवित्रता अधिक बयान करें। (३३) और तेरी यादगारी में बहुत लगे रहें। (३४) तू हमारे हाल को खूब देख रहा है। (३५) कहा मूसा तुम्हारी अभिलाषा पूरी हुई। (३६) और हम तुमपर एक बार और भी अहसान कर चुके हैं। (३७) हमने तुम्हारी माँ को हुक्म भेजा जिसका हाल आगे बताया जाता है। (३८) यह कि उस मूसा को संदूक में रखकर दरिया में डाल दो दरिया उस संदूक को किनारे पर लगा देगा उसको हमारा दुश्मन और मूसा का दुश्मन फिरऔन ले लेगा‡ और ऐ मूसा हमने तुम पर अपनी तरफ से मुहब्बत डाल दी। और मतलब यह था कि तू हमारी निगरानी में परवरिश पावे। (३९) जब कि तुम्हारी बहिन फिरती बनकर कहती फिरती थी कि मैं तुमको एक ऐसी धाय बतला दूँ जो उसको पाले। हमने तुम को फिर तुम्हारी माँ के पास पहुँचा दिया ताकि उसकी आँखें ठंडी रहें और रंज न करे और तू ने एक आदमी को मार डाला तो हमने तुमको उस रंज से छुटकारा दिया गरज यह कि हमने तुमको खूब ठोक बजाकर आजमाया। फिर तू कई बरस मदियन के लोगों में रहा फिर। तू भाग्य से यहाँ आया। (४०) और मैंने तुझको अपने लिए चुन लिया है। (४१) तुम और तुम्हारा भाई हमारे चमत्कार लेकर जाओ और हमारी यादगारी में सुस्ती न करना। (४२) दोनों फिरऔन के पास जाओ उसने बहुत सिर उठा रक्खा है। (४३) फिर उससे नर्मी से बात करो शायद वह समझ जावे या डरे। (४४) दोनों भाइयों ने अर्ज की कि ऐ हमारे परवर्दिगार हम इस

---

‡ फिरऔन बनी इसराईल के बेटों को मार डालता था क्योंकि उसे मालूम था कि उसके राज्य को उलटने के लिये बहुत जल्द एक बच्चा पैदा होनेवाला है। जब मूसा का जन्म हुआ तो उनकी माँ डरीं कि यह भी मार न डाले जावें। उनको स्वप्न में बताया गया कि बच्चे को सन्दूक में रखकर दरिया में डाल दो। उन्होंने ऐसा ही किया। सन्दूक बहता हुआ फिरऔन के घाट लगा। फिरऔन की बीबी आसिया ने उसे उठाया और मूसा को अपना बेटा बना लिया।

बात से डरते हैं कि हम पर जियादती और सरकशी न करने लगे। (४५) फर्माया डरो मत हम तुम्हारे साथ सुनते और देखते हैं। (४६) गरज उसके पास जाओ और उससे कहो कि हम दोनों आपके परवर्दिगार के भेजे हुए हैं तू इसराईल के बेटों को हमारे साथ भेज दे और उनको दुःख न दे। हम तेरे परवर्दिगार से चमत्कार लेकर आये हैं और सलामती उसी के लिए है जो सच्ची राह की पैरवी करे। (४७) हम पर हुक्म उतरा है कि सजा उसी पर होगी जो (खुदा की आयतों को) झुठलाये और उससे मुँह मोड़े। (४८) फिरऔन ने पूछा तुम दोनों भाइयों का परवर्दिगार कौन है। (४६) मूसा ने कहा हमारा परवर्दिगार वह है जिसने हर चीज को उसकी सूरत दी फिर उसको राह दिखलाई। (५०) फिरऔन ने पूछा भला अगले लोगों का क्या हाल है। (५१) मूसा ने कहा इन बातों का ज्ञान मेरे परवर्दिगार के यहाँ किताब में मौजूद है। मेरा परवर्दिगार न भटकता है न भूलता है। (५२) उसी ने तुम लोगों के लिए जमीन का बिछौना बनाया और तुम लोगों के लिए जमीन में सड़कें निकालीं और आसमान से पानी बरसाया फिर हमी ने पानी के जरिये से भाँति-भाँति की पैदावारें निकालीं। (५३) खाओ और अपने चारपायों को चराओ इनमें अक्लवालों के लिए निशानियाँ हैं। (५४) [रुकू २]

इसी जमीन से हमने तुमको पैदा किया और इसी में तुमको लौटाकर लायेंगे और इसी से तुमको दोबारा निकाल खड़ा करेंगे। (५५) और हमने फिरऔन को अपनी सभी निशानियाँ दिखलाईं इस पर भी वह झुठलाता और इनकार ही करता रहा। (५६) कहा कि मूसा क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि अपने जादू से हमको हमारे मुल्क से निकाल दे। (५७) हम भी ऐसा ही जादू तेरे सामने ला पेश करेंगे तू हमारे और अपने बीच एक वादा ठहरा कि न हम उसके खिलाफ करें और न तू। खुले मैदान में हो। (५८) मूसा ने कहा तुम्हारा वादा§ सजनई के दिन है और यह कि लोग

§ यह कार्य त्योहार पर उठा रखा ताकि बहुत से लोग उसको देखें।

दिन चढ़े जमा हों। (५६) यह सुन कर फिरऔन लौट गया फिर उसने अपने हथकण्डे जमा किये फिर आ मौजूद हुआ। (६०) मूसा ने फिरऔनियों से कहा कि तुम्हारी शामत आई है खुदा पर जादू की झूँठी तुहमत (दोषारोपण) मत लगाओ नहीं तो वह सज़ा से तुम्हें मटियामेट कर देगा। और जिसने खुदा पर झूँठ बाँधा वह मुराद को नहीं पहुँचा। (६१) फिर वह आपस में अपने काम पर झगड़ने लगे और चुपके-चुपके मशूरा बान्धने लगे। (६२) सब ने कहा यह दोनों जादूगर हैं। चाहते हैं कि अपने जादू से तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करें और तुम्हारे मिस्रियों के सुन्दर धर्म को मिटा देवें। (६३) सो तुम भी कोई अपनी तदबीर उठा न रक्खो पाँति बना कर आओ और जो आज ऊपर रहा वही जीत गया। (६४) जादूगरों ने कहा कि मूसा या तो यह हो कि तू अपनी चीज़ मैदान में डाल और या यह हो कि हम पहले डालें। (६५) मूसा ने कहा नहीं तुम ही डाल चलो तो बस मूसा को उनके जादू की वजह से ऐसा मालूम हुआ कि उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ साँप बन कर इधर उधर दौड़ रही हैं। (६६) फिर मूसा अपने जी ही जी में डर गया। हमने कहा मूसा डरो मत। (६७) तुम्हीं ऊँचे रहोगे। (६८) और तुम्हारे दाहिने हाथ में जो (लाठी) है उसको (मैदान में) डाल दो कि (इन जादूगरों ने) जो (जादू) बना खड़ा किया है (सबको) हड़प कर जावे जो जादू बना खड़ा किया है जादूगरों का करतब है और जादूगर कहीं भी जाय उसको छुटकारा नहीं। (६९) (जब मूसा की लाठी ने साँप बनकर जादूगरों की सपलियों को हड़प कर लिया) तो (यह देख कर) जादूगरों ने दण्डवत की। कहने लगे कि हम हारूँ और मूसा के परवर्दिगार पर ईमान लाये (७०) (फिरऔन ने) कहा क्या इससे पहले कि हम तुमको इजाज़त दें तुम मूसा पर ईमान ले आये। हो न हो यह (मूसा) तुम्हारा बड़ा (गुरु) है जिसने तुमको जादू सिखाया है तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पैर उलटे काट डालूँ और तुमको खजूरों के तनों पर

सूली चढ़ाऊँ और तुमको मालूम हो जायगा कि हम (दो फरीकों में) किसको मार ज्यादा सख्त और स्थाई (पायदार) है। (७१) (जादूगर) बोले कि खुले-खुले चमत्कार जो हमारे सामने आये उन पर और जिस (खुदा) ने हमको पैदा किया है उस पर तो हम तुम को किसी तरह विजय देने वाले नहीं हैं। तू जो करने वाला है कर गुजर। तू दुनियाँ की इसी जिन्दगी पर हुक्म चला सकता है। (७२) और हम अपने परवर्दिगार पर ईमान लाये हैं ताकि वह हमारे पापों को क्षमा करे और जादू को जिस पर तूने हमको लाचार किया। और अल्लाह (की देन) बेहतर और चिरस्थाइ है। (७३) कुछ शक नहीं कि जो आदमी अपराधी होकर अपने परवर्दिगार के सामने गया उसके लिए नरक है जिसमें वह न तो मरे ही गा और न जिन्दा ही रहेगा। (७४) और जो ईमानदार खुदा के सामने हाजिर होगा (और) उसने नेक काम भी किये होंगे तो यही लोग हैं जिनके बड़े दर्जे होंगे। (७५) रहने के बाग जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे और (जो आदमी) पाक रहे उनका यही बदला है। (७६) [रुकू ३]

और हमने मूसा की तरफ हुक्म भेजा कि हमारे बन्दों (इसराईल के बेटों) को रातो रात (मिस्र से) नदी में (लाठी मारकर उनके लिए) सूखी सड़क बनाकर निकाल लेजा। (७७) तू उनके पकड़े जाने का डर और शंका न कर। फिर फिरऔन ने अपना लशकर लेकर इसराईल के बेटों का पीछा किया फिर दरिया का जैसा कुछ (रेला) उन (फिरऔन) पर आया सो आया (वे डूब गये)। (७८) और फिरऔन ने अपनी कौम को गुमराही में डाला और सीधा रास्ता न दिखाया। (७९) ऐ इसराईल के बेटों हमने तुम को तुम्हारे दुश्मन (फिरऔन) से छुटकारा दिलाया और तुमसे तूर के दाहिनी ओर का वादा किया‡

‡ कहते हैं कि फिरऔन के दरिया में डूब जाने के बाद मूसा की कौम ने उनसे एक किताब माँगी जिसमें उपदेश और काम की बातें हों। मूसा ने ७० आदमियों को साथ लिया और तूरकी ओर इसी विचार से गये और हारून

और हमने तुम पर मन† और सलवा‡ उतारा। (८०) (और कहा) अच्छी रोजी जो हमने तुम को दी है खाओ और इसके बारे में नटखटी मत करो (ऐसा करोगे) तो तुम पर हमारा गज़ब उतरेगा और जिसपर हमारा गज़ब उतरा तो (वह नरक के गढ़े में) आ गिरा (८१) और जो शख्स तौबा करे और ईमान लाये और नेक काम करे फिर सही राह पर (क़ायम) रहे तो हम उस के क्षमा करने वाले हैं। (८२) और ऐ मूसा तुम जल्दी करके अपनी क़ौम से कैसे आगे आ गये। (८३) कहा कि वह भी मेरे पीछे आ रहे हैं और (हे मेरे परवर्दिगार) मैं जल्दी करके इसलिए तेरी ओर बढ़ आया हूँ कि तू ख़ुश हो। (८४) फर्माया तुम्हारे पीछे हमने तुम्हारी क़ौम को एक और बला में फाँस दिया है और उनको सामरी ने भटका दिया है। (८५) फिर मूसा गुस्सा और अफ़सोस की हालत में अपनी क़ौम की तरफ वापिस आये। कहने लगे कि भाइयों क्या तुमसे तुम्हारे परवर्दिगार ने भली (किताब का) वादा नहीं किया था तो क्या तुमको मुद्दत लम्बी मालूम हुई या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे परवर्दिगार का गज़ब आ उतरे और इस कारण से तुमने उस वादा के ख़िलाफ़ किया। (८६) कहने लगे कि हमने अपने अख़्तियार से वादा नहीं तोड़ा बल्कि क़ौम के ज़ेवरों का बोझ हम पर लदा था अब (सामरी के कहने से) हमने उसे (आग में ला) डाला और इसी तरह सामरी ने भी। (८७) फिर (सामरी ही ने) लोगों के लिए बछड़ा बनाया जिसकी आवाज़ बछड़े जैसी थी फिर कहने लगे यही तो तुम्हारा पूजित है और मूसा का पूजित है और वह (मूसा बछड़े को)

को अपनी जगह छोड़ गये। यहाँ से वह ४० दिन के बाद तौरेत लेकर लौटे इसी बीच में सामरी ने एक सोने का बछड़ा बनाया और इसमें कुछ ऐसे कर्तब दिखाये कि लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और इसी कारण सच्चे मार्ग से भटक गये।

† मीठी चीज़ जो रात में पत्तों पर जम जाती है।

‡ बटेर जैसी चिड़िया का माँस।

भूल (कर दूर पर चला) गया है। (८८) क्या इन लोगों को इतनी बात भी नहीं सूझ पड़ती थी कि यछड़ा इनकी बात का न तो पलटकर जवाब दे सकता है और न इनके किसी हानि लाभ पर अधिकार रखता है। (८९) [रुकू ४]

और हारूँ ने (बछड़े की पूजा से) पहले इनसे कह दिया था कि भाइयों इस बछड़े के सबब से तुम्हारी जाँच की जा रही है वर्ना तुम्हारा परवर्दिगार दयालु (रहमान) है तो मेरे कहे पर चलो और मेरी बात मानो। (९०) कहने लगे जब तक मूसा हमारे पास लौट कर न आये हम तो बराबर उसी पर जमे बैठे रहेंगे। (मूसा ने हारूँ की तरफ इशारा किया) कहा। (९१) कि हारूँ जब तुमने इनको देखा था (कि यह लोग) गुमराह हो गये। (९२) तो क्यों तुमने मेरी शिक्षा की पैरवी न की, क्यों तुमने मेरा कहा न माना। (९३) (वह) बोले कि ऐ मेरे माँ जाये भाई मेरे सिर और दाढ़ी को मत पकड़ो†। मैं इस (बात) से डरा कि (तुम वापिस आकर) कहीं यह न कहने लगो कि तुमने इसराईल के बेटों में फूट डाल दी और मेरी बात का विचार न किया। (९४) (जब मूसा ने सामरी से) पूछा कि सामरी तेरा क्या मतलब है, (९५) कहा मुझे वह चीज दिखाई दी जो दूसरों को नहीं दिखाई दी। तो मैं ने (जिबराईल) फिरिश्ते के पैर के निशान से एक मुट्ठी मट्टी भर ली फिर उसको बछड़े के पेट में डाल दिया (और वह बछड़े की बोली बोलने लगा) और यही बात मुझे उस समय भली लगी। (९६) (मूसा ने) कहा चल (दूर हो) (इस) ज़िन्दगी में तेरी यह सज़ा है कि ज़िन्दगी भर कहता फिरे कि मुझे छू ‡ न जाना (इसी लिए सामरियों के हाथ की चीज यहूदी नहीं खाते) और तेरे लिए (क्यामत की सज़ा का) एक वादा है जो किसी

---

† यानी मुझसे न बिगड़ और मुझे लज्जित न कर।

‡ सामरी को आगे चलकर ऐसा बुरा रोग लगा कि वह सब से अलग रहने लगा और जो कोई उसको हाथ लगा देता उसको भी तप चढ़ जाती। ऐसा मालूम होता है कि उसे क्षय का रोग लगा था।

तरह नहीं टलेगा और अपने परवर्दिगार (यानी बछड़े) की तरफ देख जिस पर तू जमा बैठा था इसको हम जला देंगे और दरिया में बहा देंगे। (६७) लोगों तुम्हारा पूजित एक अल्लाह है जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं उसके इल्म में हर एक चीज समा रही है। (६८) (ऐ पैग़म्बर) इसी तरह हम गुजरे हुए हालात तुमको सुनाते हैं और हमने तुमको अपने पास से क़ुरान दिया। (६६) जिन लोगों ने इससे मुँह फेरा क़यामत के दिन एक बोझ लादे होंगे। (१००) और इसी हाल में हमेशा रहेंगे और क्या ही बड़ा बोझ है जो यह लोग क़यामत के दिन उठाये होंगे। (१०१) जिस दिन नरसिंहा फूँका जावगा और हम उस दिन अपराधियों को जमा करेंगे उनकी आँखें (डर के मारे) नीली होंगी। (१०२) यह आपस में चुपके चुपके कहेंगे कि दुनियाँ में हम लोग दस ही दिन ठहरे होंगे। (१०३) जैसी जैसी बातें (यह लोग उस दिन) करेंगे हम उनसे अच्छी तरह जानकार हैं जो इनमें ज्यादा जानकार होगा यह कहेगा नहीं तुम (दुनिया में) ठहरे होंगे (तो) बस एक दिन†। (१०४) [रुकू ५]

और (ऐ पैग़म्बर) तुमसे पहाड़ों की बाबत पूँछते हैं (कि क़यामत के दिन इनका क्या हाल होगा) तो कहो कि मेरा परवर्दिगार इनको उड़ा देगा। (१०५) और जमीन को मैदान चौरस कर छोड़ेगा। (१०६) जिसमें तू न तो कहीं मोड़ देखेगा और न कहीं ऊँचा नीचा। (१०७) उस दिन में सब लोग बिना इधर उधर को मुड़े उसके पीछे हो जावेंगे और (मारे डरके) खुदा दयालु के आगे (सबकी) आवाजें बैठ जायेंगी। तू खुसर फुसर के सिवाय और कुछ न सुनेगा। (१०८) उस दिन किसी की सिफ़ारिश काम न आवेगी मगर जिसको रहमान (दयालु) ने इजाजत दी और उसका बोलना पसन्द आया। (१०६) जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है और जो इनसे पहले हो चुका है वह सब कुछ जानता है और, लोग खोज करके भी उसे क़ाबू में नहीं

† क़यामत का दिन इतना लम्बा होगा कि दुनियावाले उसे अपने सारे जीवन से भी अधिक बड़ा समझेंगे।

ला सकते। (११०) और (क़यामत के दिन) हमेशा जीवित रहनेवाले के सामने मुँह रगड़ते होंगे और उस दिन (के लिए) जो आदमी जुल्म का बोझ लादेगा उसी की तबाही है। (१११) और जो अच्छे काम करेगा और वह ईमान भी रखता होगा तो उसको बे इन्साफ़ी का डर न होगा। (११२) और ऐसे ही हमने अर्बी ज़बान में क़ुरान उतारा है और उसमें तरह तरह के डर सुना दिये हैं ताकि लोग बच चलें या उनमें विचार पैदा हो। (११३) पस अल्लाह सब से ऊँचा सच्चा बादशाह है और तू क़ुरान के लेने में जल्दी न कर जब तक कि उसका उतरना पूरा न हो और प्रार्थना कर कि ऐ मेरे परवर्दिगार मेरी समझ बढ़ा†। (११४) और हमने आदम से एक वादा लिया था सो आदम भूल गया और हमने उसमें सब्र न पाया (११५) [रुकू ६]

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे दण्डवत करो तो सब ही ने दण्डवत की मगर इबलीस ने इन्कार किया। (११६) तो हमने (आदम से) कहा कि ऐ आदम यह (इबलीस) तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुश्मन है तो ऐसा न हो कि कहीं तुम दोनों को बैकुण्ठ से निकलवा दे। (११७) और यहाँ (बैकुण्ठ में) तो तुमको ऐसा सुख है कि न तो तुम भूखे रहोगे न नंगे। (११८) और यहाँ तुम न प्यासे होगे न धूप में रहोगे। (११६) फिर शैतान ने आदम को फुसलाया और कहा ऐ आदम कहो तो तुमको सदाबहार का दरख्त बताऊँ कि जिसको खाकर हमेशा जीते रहो और ऐसी सल्तनत जो पुरानी न हो। (१२०) चुनांचे दोनों ने दरख्त के फल को§ खा लिया

† मुहम्मद साहब इस डर से कि उतरने वाली आयतें भूल न जायें उन्हें जल्दी से उतरने के बीच ही में याद करने लगते थे। यह बात खुदा को अच्छी न लगी और ऐसा करने से उनको रोक दिया।

§ आदम को एक पेड़ के पास जाने से मना किया गया था। शैतान ने उनको बहकाया और वह उसकी बातों में आ गये। उसका परिणाम यह हुआ कि उनके बदन से जन्नत के कपड़े छिन गये और वह अपने को पत्तों से ढाकने लगे। इस पेड़ के बारे में लोगों के भिन्न-भिन्न विचार हैं किन्तु अधिकतर लोग इसे गेहूँ का पेड़ बताते हैं।

(तो उन पर) उनके परदे की चीजें ज़ाहिर हो गई और अपने को (बैकुण्ठ के) बाग के पत्तों से ढाँकने लगे और आदम ने अपने परवर्दिगार का हुक्म न माना और भटक गया। (१२१) फिर उनके परवर्दिगार ने उनको चुन लिया और उनकी ओर ध्यान दिया और राह दिखलाई। (१२२) फर्माया कि तुम दोनों यहाँ (बैकुण्ठ) से नीचे उतर आओ तुम में से एक दूसरे के दुश्मन होंगे फिर अगर तुम्हारे पास हमारी तरफ से शिक्षा आवे। तो जो हमारी हिदायत पर चलेगा न भटकेगा न दुख झेलेगा। (१२३) और जिसने हमारी याद से मुँह मोड़ा तो उसकी जिन्दगी तंगी में होगी और क़्यामत के दिन हम उसको अन्धा उठावेंगे। (१२४) वह कहेगा (ऐ मेरे परवर्दिगार) तूने मुझको अन्धा क्यों उठाया और मैं तो देखता था। (१२५) (ख़ुदा) फर्मायगा ऐसे ही हमारी आयतें तेरे पास आई मगर तूने उनकी कुछ ख़बर न की और इसी तरह आज तेरी ख़बर न ली जायगी (१२६) और जो आदमी (हद से) बढ़ चला और अपने परवर्दिगार की आयतों पर ईमान न लाया हम उसको ऐसा ही बदला दिया करते हैं और आख़िर की सजा (दुनियाँ की सजा से) बहुत ही सख़्त और देर तक की है। (१२७) क्या लोगों को इससे हिदायत न हुई कि इनसे पहले हमने कितनी जमातों को मार डाला जो अपने गिरोहों में चलते फिरते थे। जो लोग बुद्धिमान हैं उनके लिए इसी में निशानियाँ हैं। (१२८) [रुकू ७]

अगर परवर्दिगार ने पहले से एक बात न फर्माई होती और मिआद मुक़र्रर न की होती तो सजा का आना जरूरी बात थी। (१२९) (ऐ पैग़म्बर) जैसी बातें (यह काफ़िर) कहते हैं उन पर सन्तोष करो और सूरज के निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले अपने परवर्दिगार की तारीफ़ के साथ माला फेरा करो और रात के समय में और (दोपहर) दिन के लगभग माला फेरा करो शायद तुमको ख़ुशी मिल जाय। (१३०) और (ऐ पैग़म्बर) हमने जो कुछ क़िस्म के लोगों को दुनियाँ की जिन्दगी की रौनक के साथ सामान

इस्तेमाल के लिए दे रक्खे हैं तू उनकी तरफ नजर न दौड़ा कि उनको उन में आजमायें और तुम्हारे परवर्दिगार की रोजी कहीं बेहतर और टिकाऊ है। (१३१) और अपने घर वालों पर नमाज की ताकीद रक्खो और उसके पाबन्द रहो हम तुम से कोई रोजी नहीं माँगते हम तुमको रोजी देते हैं और अन्त को परहेजगारों ही का भला है। (१३२) और (यहूद और ईसाई) कहते हैं कि (यह पैग़म्बर) अपने परवर्दिगार की तरफ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता क्या अगली किताबों की साक्षी इनके पास नहीं पहुँची। (१३३) और अगर हम क़ुरान से पहले किसी सजा से उनको मरवा देते तो वह कहते ऐ हमारे परवर्दिगार। तुमने हमारी तरफ कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि बदनाम होने से पहले हम तेरी आज्ञा पर चलते। (१३४) (ऐ पैग़म्बर इनसे कहो) कि सभी इन्तिज़ार कर रहे हैं तुम भी करो तो आगे चलकर तुम जान लोगे कि सीधी राह पर कौन है और किसने राह पाई। (१३५) [रुकू ८]।

सत्रहवाँ पारा (इक़्तरबलिन्नास)
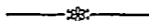
सूरे अम्बिया।

मक्के में उतरी इसमें ११२ आयतें और ७ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहम वाला मेहरबान है (शुरू करता हूँ)। लोगों के हिसाब का समय नजदीक आ लगा इस पर भी भूल में बेसुध हैं। (१) उनके पास उनके परवर्दिगार की ओर से जो नया हुक्म आता है उसे ऐसे (बेपरवाह होकर) सुनते हैं कि हँसी खेल बनाते हैं।

(२) उनके दिल ध्यान नहीं देते हैं और यह अन्यायी चुपके चुपके कानाफूसी करते हैं कि यह (मुहम्मद) है ही क्या ? तुम ही जैसा एक आदमी फिर जानते बूझते क्यों जादू में पड़ते हो। (३) (पैग़म्बर ने) कहा तुम लोग क्या कानाफूसी करते हो ? जितनी बातें आसमान और जमीन में होती हैं मेरे परवर्दिगार को मालूम हैं और वह सुनता जानता है। (४) बल्कि कहने लगे कि यह तो विचारों की सिरखप्पन है बल्कि इसने यह झूठी-झूठी बातें अपने दिल से गढ़ ली हैं बल्कि यह (तो) कवि है नहीं तो कोई चमत्कार दिखावे जैसे अगले पैग़म्बरों ने दिखलाये हैं। (५) जिस बस्ती को हमने उससे पहले मार डाला वह (चमत्कार देख कर भी) ईमान न लाई तो क्या यह ईमान ले आवेंगे। (६) और हमने पहले भी आदमी ही पैग़म्बर बनाकर (भेजे थे हम उन्हें वही ईश्वरीय संदेशा) दिया करते थे तो अगर तुमको मालूम नहीं तो किताब वालों से पूछ देखो। (७) और हमने उनके ऐसे शरीर भी नहीं बनाये थे कि खाना न खाते हों न वे लोग दुनियाँ में हमेशा रहनेवाले (अमर) ही थे†। (८) फिर हमने उनको सजा का वादा सच्चा कर दिखाया तो उन (पैग़म्बरों) को और जिनको हमने चाहा (सजा से) बचा दिया जो लोग हद से बढ़ गये थे हमने उनको मार डाला (९) हमने तुम्हारी तरफ किताब उतारी है जिसमें तुम्हारा जिक्र है क्या तुम नहीं समझते। (१०) [रुकू १]

और हमने बहुत सी बस्तियों को जहाँ के लोग सरकश‡ थे तोड़ फोड़ कर बराबर कर दिया और उनके बाद दूसरे लोग उठा खड़े किये। (११) तो जब उन नष्ट होने वालों ने हमारी सजा की आहट पाई तो उस (बस्ती) से भागने लगे। (१२) हमने कहा भागो मत और उसी (दुनियाँ के साज व सामान) की तरफ लौट आओ जिसमें (अब तक)

† इसलाम के न माननेवालों का विचार था कि नबी या रसूल कोई साधारण मनुष्य नहीं हो सकता। नबी होने के लिये असाधारण लक्षणों की आवश्यकता बताते थे।

‡ यमन निवासियों ने अपने नबी का वध करडाला था।

चैन करते थे और अपने मकानों की तरफ लौट आओ शायद तुम्हारी कुछ पूँछ हो (१३) यह कहने लगे हाय हमारी कमबख्ती हम ही अपराधी थे (१४) पस वह लोग बराबर यही पुकारा किये यहाँ तक कि हमने उनको कटे हुए खेत बुझे हुए अगारे (जैसा बर्बाद) कर दिया। (१५) और हमने आसमान और जमीन को और जो कुछ आसमानों और जमीन में है उसको खेल के लिए पैदा नहीं किया। (१६) अगर हमको खेल बनाना मन्जूर होता तो तजवीज से खेल बनाते हमको ऐसा करना मन्जूर नहीं था। (१७) बात यह है कि हम सच को झूठ पर खींच मारते हैं तो वह झूठ के सिर को कुचल देता है और झूठ उसी दम मटियामेट हो जाता है और लोगों तुम पर अफसोस है कि तुम ऐसी बातें बनाते हो। (१८) और जो आसमानों और जो जमीन में है उसी का है और जो खुदा के पास हैं वह न तो उसकी पूजा से गर्व करते हैं और न थकते हैं। (१६) रात दिन उस की याद में लगे रहते हैं सुस्ती नहीं करते (२०) क्या इन लोगों ने जमीन की चीजों से ऐसे पूजित बनाये हैं जो इनको बना खड़ा करते हैं (२१) अगर जमीन आसमानों में खुदा के सिवाय और पूजित होते तो (जमीन आसमान दोनों) बर्बाद हो गये होते। तो जैसी-जैसी बातें यह लोग बनाते हैं अल्लाह जो तख्त का मालिक है वह इनसे पाक है (२२) जो कुछ वह करता है उसकी पूछ-पाछ उससे नहीं होती और लोगों से पूछ-पाछ होनी है। (२३) क्या लोगों ने खुदा के सिवाय दूसरे पूजित बना रक्खे हैं (ऐ पैग़म्बर) तुम इन लोगों से कहो कि अपनी दलील तो पेश करो। जो लोग मेरे साथ हैं उनकी किताब (क़ुरान) और जो मुझसे पहले हो चुके हैं उनकी किताबें (तौरात इन्जील आदि) मौजूद हैं। बात यह है कि इनमें से अक्सर लोग सच को न समझ कर मुँह मोड़ते हैं। (२४) और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुमसे पहले जब कभी कोई पैग़म्बर भेजा तो उस पर हम हुक्म उतारते रहे कि हमारे सिवाय कोई पूजित नहीं। हमारी ही पूजा करो। (२५) और कोई-कोई कहते हैं कि दयालु (खुदा) बेटे रखता

है§। उसकी ज़ात पाक है (फ़िरिश्ते) ख़ुदा के बेटे नहीं बल्कि इज़्ज़तदार सेवक हैं (२६) उसके आगे बढ़कर बात नहीं कर सकते और वह उसी के हुक्म पर काम करते हैं। (२७) इनका अगला पिछला हाल उसको मालूम है और यह (फ़रिश्ते) किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते मगर उसके लिए जिससे ख़ुदा राज़ी हुआ और वह ख़ुद अल्लाह के डरसे काँपते हैं। (२८) और जो उनमें से यह दावा करे कि ख़ुदा नहीं मैं पूजित हूँ तो उसको हम नरक की सजा देंगे। अन्यायियों को हम ऐसी ही सजा दिया करते हैं। (२९) [रुकू २]

क्या जो लोग इन्कार करनेवाले हैं उन्होंने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों का एक पिंडासा था। सो हमने (उसको तोड़कर) ज़मीन और आसमान को अलग-अलग किया और पानी से तमाम जानदार चीज़ें बनाईं तो क्या इस पर भी लोग ईमान नहीं लाते। (३०) और हम ही ने ज़मीन में पहाड़ रक्खे ताकि लोगों को लेकर झुक न पड़े और हम ही ने चौड़े चौड़े रास्ते बनाये ताकि लोग राह पावें। (३१) और हम ही ने आसमान को बचाव की छत बनाया और वे आसमानी निशानियों को ध्यान में नहीं लाते। (३२) और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चन्द्रमा को पैदा किया कि तमाम चक्र (दायरे) में फिरा करते हैं। (३३) और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुमसे पहले किसी आदमी को अमर नहीं किया पस अगर तुम मर जाओगे तो क्या यह लोग हमेशा रहेंगे (३४) हरजीव को मौत चखनी है और हम तुमको बुराई और भलाई से आज़माकर जाँचते हैं और तुम सबको हमारी तरफ़ लौटकर आना है। (३५) और (ऐ पैग़म्बर) जब इन्कार करने वाले तुमको देखते हैं तो (आपस में) तुम्हारी हँसी उड़ाने लगते हैं कि क्या यही है जो तुम्हारे पूजितों की बुरी तरह चर्चा करता है और यह लोग रहमान (दयावान) को नहीं मानते हैं। (३६) आदमी जल्दी का पुतला बनाया गया है हम

§ जैसे ईसाई हज़रत ईसा को और यहूदी हज़रत ओज़ैर को ख़ुदा का बेटा बताते थे।

तुमको अपनी निशानियाँ दिखाये देते हैं तो जल्दी मत मचाओ। (३७) और (इन्कार करने वाले) कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह (कयामत का) वादा कब (पूरा) होगा। (३८) कभी इन्कार करने वाले उस समय को जानें जबकि आग आ घेरेगी न अपने मुँह से रोक सकेंगे और न अपनी पीठ पर से और न उनको मदद मिलेगी। (३९) बल्कि यह एक दम से उन पर आ पड़ेगी और इनके होश खो देगी। फिर यह उसे न हटा सकेंगे और न इनको मुहलत मिलेगी। (४०) और (ऐ पैग़म्बर) तुमसे पहले पैग़म्बरों के साथ भी हँसी की जा चुकी है तो जो लोग जिस (सजा) की हँसी उड़ाया करते थे उसने आकर इनको पकड़ा [(४१) [रुकू ३]

(ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) पूछो कि रहमान से तुम्हारी रात दिन कौन चौकीदारी कर सकता है मगर यह खुदा के नाम से मुँह मोड़े हैं। (४२) क्या हमारे सिवाय इनके कोई और पूजित हैं जो इनको बचा सकते हैं न वह आप अपनी मदद कर सकते हैं और न यह हमारे साथी हैं (४३) बल्कि हमने इन लोगों को और इनके पुरुषों को (दुनियाँ में) बसाया यहाँ तक कि इन पर बहुत सी उम्र गुजर गई (यह घमण्डी हो गये) तो क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम मुल्क को चारों तरफ से दबाते चले आते हैं† अब क्या यह (कुरेश) जीतने वाले हैं। (४४) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि मैं ईश्वरी संदेशा (इलहाम) से डराता हूँ (मगर यह लोग बहरे हैं) और बहरों को डराया जाय तो यह पुकार नहीं सुनते। (४५) और (ऐ पैग़म्बर अगर इनको तुम्हारे परवर्दिगार की सजा-की हवा भी लग जाय तो बोल उठेंगे कि अफसोस हम ही अपराधी थे। (४६) और कयामत के रोज (लोगों के काम की तौल के लिए) हम सच्ची तराजू§ लगा देंगे तो किसी पर जरा भी जुल्म न होगा और अगर राई के दाने बराबर

---

† मानो मुसलमान धीरे-धीरे अपने शत्रुओं को पराजित करते जाते हैं और उनके देश पर अपना अधिकार जमाते जाते हैं।

§ सत्य और असत्य तथा पुण्य और पाप में बताने वाली तराजू।

भी अमल होगा तो हम उसे (तौलने के लिए) लायेंगे और हिसाब लेने के लिए हम काफ़ी हैं। (४७) और हमने मूसा और हारूँ को फ़र्क़ (विवेक) करने वाली किताब (तौरात) दी और रोशनी और शिक्षा डरवालों के लिए। (४८) जो बिन देखे ख़ुदा से डरते और उस घड़ी (क़यामत) से काँपते हैं। (४९) और यह (क़ुरान) शुभ शिक्षा है जो हमी ने उतारी है तो क्या तुम लोग इसको नहीं मानते। (५०) [रुकू ४]

और इब्राहीम को हमने शुरू ही से अच्छी समझ दी थी और हम उनसे जानकार थे। (५१) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि (यह) बुतें क्या हैं जिनकी पूजा पर जमे बैठे हो। (५२) वह बोले कि हमने अपने बाप दादों को इन्हीं की पूजा करते देखा है। (५३) (इब्राहीम ने) कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बड़े आहिरा भूल में पड़े रहे। (५४) वह बोले क्या तू हमारे पास सची बात लेकर आया है या दिल्लगी करता है। (५५) (इब्राहीम ने) कहा आसमान और ज़मीन का मालिक तुम्हारा ख़ुदा है जिसने इनको पैदा किया और मैं इसी बात का क़ायल हूँ। (५६) ख़ुदा की क़सम तुम्हारे पीठ फेरे पीछे मैं तुम्हारे बुतों के साथ मकर करूँगा। (५७) (इब्राहीम ने) बुतों को (तोड़-फोड़) टुकड़े टुकड़े कर दिया मगर उनके बड़े बुत को इस ग़रज़ से (रहने दिया) कि वह उसकी तरफ़ आवेंगे । (५८) (जब लोगों को मूर्तियों के तोड़े जाने का हाल मालूम हो गया तो) उन्हों ने कहा हमारे पूजितों के साथ यह काम किसने किया वह कोई अन्यायी है। (५९) बोले कि यह नौजवान जिसको इब्राहीम के नाम से पुकारा जाता है उसको हमने इन (मूर्तियों) का ज़िक्र करते हुए सुना है। (६०) (लोगों ने) कहा उसको आदमियों के सामने ले आओ ताकि लोग गवाह रहें (६१) (ग़रज़ इब्राहीम बुलाये गये और) लोगों ने पूछा कि इब्राहीम हमारे पूजितों के साथ यह क्या हरकत तूने की है। (६२) (इब्राहीम ने) कहा (नहीं) बल्कि यह जो इन सब में बड़ी मूर्ति है उसने यह हरकत की (होगी) और अगर यह (बुत) बोल सकते हों तो इन्हीं से पूछ देखो। (६३) इस पर लोग अपने जी में सोचे और

(आपस में) कहने लगे कि लोगों तुम्हीं अन्यायी हो (६४) फिर अपने सिरों के बल औंधे (उसी गुमराही में) ढकेल दिये गये (और इब्राहीम से बोले कि) तुमको मालूम है कि यह (बुत) बोला नहीं करते। (६५) (इब्राहीम ने कहा) क्या तुम खुदा के सिवाय ऐसे पूजितों को पूजते हो कि जो न तुमको कुछ फायदा ही पहुँचा सकें और न कुछ नुक्सान ही पहुँचा सकते हैं। (६६) अफसोस तुम पर और उन चीजों पर जो तुम खुदा के सिवाय पूजते हो क्या तुम नहीं समझते हो (६७) (वह) कहने लगे कि अगर तुमको (कुछ) करना है तो इब्राहीम को (आग में) जला दो और अपने पूजितों की मदद करो (६८) (चुनाँचे उन लोगों ने इब्राहीम को आग में झोंक दिया) हमने (आग को) हुक्म दिया कि ऐ आग इब्राहीम के हक में ठंडी और आराम देने वाली हो जा। (६९) और लोगों ने इब्राहीम के साथ बुराई करनी चाही थी तो हमने उन्हीं को नाकामयाब किया। (७०) और इब्राहीम को और लूत को सही सलामत निकाल कर उस जमीन (शाम) में ले जा दाखिल किया जिसमें हमने लोगों के लिए (तरह तरह की) बरकतें रक्खी हैं। (७१) और इब्राहीम को (एक बेटा) इसहाक और (पोता) याकूब दिया और सभी को हमने नेक-बख्त किया। (७२) और उनको पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से उनको शिक्षा देते थे और उनको नेक काम करने और नमाज पढ़ने और जकात देने के लिए कहला भेजा और वे हमारी पूजा में लगे रहते थे। (७३) और लूत को हमने हुक्म और समझ दी और उसको उस शहर से जहाँ के लोग गंदे काम करते थे बचा निकाला। इसमें शक नहीं कि वह बड़े बुरे और बदकार थे। (७४) और लूत को हमने अपनी मेहरबानी में ले लिया क्योंकि वह नेकबख्तों में था। (७५) [रुकू ५]

और (ऐ पैग़म्बर) नूह ने जब हम को पहले पुकारा तो हमने उसकी सुन ली और उसको और उसके लोगों को बड़ी मुसीबत से बचाया। (७६) और फिर हमने उसे उस कौम पर जो आयतों को झुठलाया करते थे जीत दी और वह लोग बुरे थे हमने उन सबको

डुबो दिया। (७७) और (ऐ पैग़म्बर) दाऊद और सुलेमान जबकि यह दोनों एक खेती के बारे में जिसमें कुछ लोगों की बकरियाँ आ पड़ी थीं फ़ैसला करने लगे और हम उनके फ़ैसले को देख रहे थे। (७८) फिर हमने फ़ैसला सुलेमान को समझा दिया और हमने दोनों ही को हुक्म और समझ (फ़ैसले की) दी थी और पहाड़ों और पक्षियों को दाऊद के आधीन कर दिया कि उनके साथ ईश्वर की पवित्रता बयान करें और करने वाले हम थे (७९) और दाऊद को हमने तुम लोगों के लिए एक पहनाव (यानी बख़्तर) बनाना सिखा दिया था ताकि लड़ाई में तुमको बचाये तो क्या तुम शुक्र करते हो। (८०) और हमने ज़ोर की हवा को सुलेमान के ताबे कर दिया था कि उनके हुक्म से मुल्क शाम की तरफ़ चलती थी जिसमें हमने बरकतें दे रखी थीं और हम सब चीज़ों से जानकार थे। (८१) और कितने देवों को आधीन किया जो सुलेमान के लिए गोते लगाते (ताकि जवाहरात निकाल लावें) और हम ही उनको थामे रहते थे। (८२) और (ऐ पैग़म्बर) ऐयूब जब उसने अपने परवर्दिगार को पुकारा कि मुझे दुःख पड़ा है और तू सब दया करने वालों से ज़्यादा दया करने वाला है (८३) और हमने उनकी सुन ली और जो दुःख उनको था उसको दूर कर दिया और जो लोग उसके मर गये थे जिला दिये बल्कि उतने ही और अधिक कर दिये हमारी कृपा थी और पूजा करनेवालों के लिए यादगार है। (८४) और इस्माईल और इद्रीस और ज़ुल किफ़्ल यह सब साबिर थे। (८५) और हमने इनको अपनी कृपा में ले लिया क्योंकि यह लोग नेकबख़्तों में हैं। (८६) और मछली वाले (यूनिस)† को याद करो जब नाराज़ होकर चल दिये और समझे कि हम उसे पकड़ न सकेंगे तो अन्धेरों के अन्दर चिल्ला उठे कि तेरे सिवाय

† हज़रत यूनुस ने अपनी क़ौम से कहा था कि ख़ुदा का ग़ज़ब उतरने वाला है। जब उन्हों ने ऐसा न देखा तो अपनी क़ौम से शरमिन्दा होकर भाग गये। रास्ते में उनको एक मछली निगल गई। उसीके पेट में उन्हों ने यह प्रार्थना की।

कोई पूजित नहीं मैं अन्यायियों में हूँ। (८७) तो हमने उसकी सुन ली और उसको दुःख से छुटकारा दिया और हम ईमान वालों को इसी तरह बचा लिया करते हैं। (८८) और जकरिया ने जब परवर्दिगार को पुकारा कि ऐ मेरे परवर्दिगार मुझको अकेला (यानी बे औलाद) मत छोड़ और तू सब वारिसों से अच्छा है। (८९) तो हमने उसकी सुन ली और बेटा (यहिया) दिया और उसकी बीबी को उसके लिए भला चंगा कर दिया। यह लोग नेक कामों में जल्दी करते थे और हमको आशा और भय से पुकारते रहते और हमसे दबे रहते थे। (९०) और वह बीबी (मरियम) जिसने अपनी शर्म की यानी शिहवत की जगह की हिफ़ाजत की तो हमने उसमें अपनी रूह फूँक दी और हमने उसको और उसके बेटे (ईसा) को दुनियाँ जहान के लोगों के लिए निशानी करार दिया। (९१) यह तुम्हारे दीन के लोग सब एक दीन पर हैं और मैं तुम्हारा परवर्दिगार हूँ सो सब हमारी ही पूजा करो। (९२) और लोगों ने आपस में (फूट न करके) दीन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला सब हमारी ही तरफ लौट कर आने वाले हैं। (९३) [रुकू ६]

सो जो आदमी नेक काम करे और वह ईमान भी रखता हो तो उसकी कोशिश व्यर्थ होने वाली नहीं है और हम उसको लिखते जाते हैं। (९४) और जिस बस्ती को हमने बर्बाद कर दिया हो मुमकिन नहीं कि वह लोग लौटकर आवें। (९५) हाँ इतना जरूर ठहरना पड़ेगा कि याजूज माजूज खोल दिये जावें वह हर बुलन्दी से लुढ़कते हुए चले आवेंगे। (९६) और सच्चा वादा पास आ पहुँचे तो एक दम से काफ़िरों की आँखें खुली की खुली रह जावें (और बोल उठें कि) हम तो सुस्ती में रह गये बल्कि हम ही अपराधी थे (९७) तुम जिन और चीजों को अल्लाह के सिवाय पूजते हो यह सब नरक का ईंधन बनेंगे और तुमको नरक में जाना होगा। (९८) अगर यह पूजित अल्लाह होते तो नरक में न जाते और वह सब इसमें हमेशा रहेंगे। (९९) इन लोगों की नरक में चिल्लाहट लगी होगी और वह वहाँ न

बिना सूझ के और रोशन किताब के झगड़ा करते हैं। (८) घमण्ड से ताकि खुदा की राह से बहकावें ऐसों के लिये (सजा) संसार में बदनामी है और कयामत के दिन हम उनको जलने की सजा चखायेंगे। (९) यह उनका बदला है कि जो तूने अपने हाथों किया वर्ना खुदा तो अपने बन्दों पर अन्याय नहीं करता। (१०) [रुकू १]।

और लोगों में कोई कोई ऐसे भी हैं जो खुदा की पूजा डगमगे डगमगे करते हैं कि अगर कोई उनको फ़ायदा पहुँचा तो उसकी वजह से इतमीनान हो गया और कोई दुःख आ पड़ा तो जिधर से आया था उल्टा उधर ही लौट गया। इसने दुनिया और आखिरत दोनों ही गवायें जाहिरा घाटा यही है। (११) खुदा के सिवाय उन चीजों को बुलाते हो जो नफ़ा नुक्सान नहीं पहुँचाते यही भूल कर दूर पड़ना है (१२) उन चीजों को बुलाते हो (अपनी मदद के लिए पुकारते हो) जिनके फायदे से नुक्सान ज्यादा करीब है ऐसा काम संभालने वाला भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा है (१३) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनको अल्लाह बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी अल्लाह जो चाहे करे (१४) जिसको यह खयाल हो कि खुदा दुनिया और आखिरत में उसकी मदद न करेगा तो उसको चाहिए कि ऊपर की तरफ को एक रस्सी लटकावे फिर काट डाले फिर देखे कि उसकी यह तदबीर गुस्सा खोती है या नहीं‡ (१५) और यों हमने यह कुरान खुली आयतों में उतारा है और अल्लाह जिसे चाहे समझ देवे। (१६) जो लोग ईमान लाये हैं और यहूदी और साबी, ईसाई और मजूस (अग्नि पूजक) और शिर्क वाले कयामत के दिन इनके बीच अल्लाह फैसला कर देगा। अल्लाह सब बातों को देख रहा है। (१७) क्या तूने न देखा कि जो आसमानों में है और जो जमीन में है और सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र सितारे और पहाड़ और दरख्त और चौपाये खुदा के आगे सिर झुकाये हैं और

‡ खुदा से हटकर आदमी सफलता की उम्मीद कैसे रख सकता है। कटी हुई रस्सी पर कैसे चढ़कर कोई पार उतर सकता है।

बहुत से आदमी ऐसे भी हैं जिन पर सजा लाजिम हो चुकी है और जिस को खुदा बदनाम करे तो कोई उसको इज्जत देने वाला नहीं। खुदा जो चाहे सो करे। (१८) यह दो (फरीक हैं) एक दूसरे के आपस में विरुद्ध अपने परवर्दिगार के बारे में झगड़ते हैं (एक फरीक खुदा को मानता है और एक नहीं मानता) तो जो लोग नहीं मानते उनके लिए आग के कपड़े ब्योंते (यानी आग उनके बदन से ऐसा लिपटेगी जैसे कपड़ा) हैं उनके सिरों पर खौलता पानी डाला जायगा (१९) जिससे जो कुछ उनके पेट में है और खालें गल जायेंगी। (२०) और उनके लिए लोहे के हथौड़े मौजूद हैं। (२१) घुटे घुटे जब उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में फिर ढकेल दिये जावेंगे ताकि जलने की सजा चक्खा करें। (२२) [रुकू २]

जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनको अल्लाह बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी वहाँ उनको गहना पहनाया जायगा, सोने के कंगन और मोती और वहाँ उनकी पोशाक रेशमी होगी। (२३) और उनको अच्छी बात की शिक्षा दी गई थी और उनको उस (खुदा) की राह दिखाई गई थी जो तारीफ के योग्य है। (२४) जो लोग इन्कार करते हैं और खुदा की राह से और मसजिद हराम से रोकते हैं जिसको हमने सब आदमियों के लिए बनायी है चाहे वहाँ के रहने वाले हों या बाहर के हों सब को इकसाँ बनाई है। और उनको जो मसजिद हराम में शरारत से इन्कार करना चाहें हम उसे दुःखदाई सजा चक्खा देंगे। (२५) [रुकू ३]

और (ऐ पैगम्बर) जब हमने इब्राहीम के लिए काबे के घर की जगह मुकर्रर कर दी और (हुक्म दिया) कि हमारे साथ किसी को शरीक न करना और हमारे घर की परिक्रमा करने वालों और ठहरने खड़े होने, झुकने सिजदा करनेवालों के लिए साफ और सुथरा रखना। (२६) और लोगों में हज्ज के लिए पुकार दो कि लोग तुम्हारी तरफ और हरलागर ऊँटों पर सवार होकर दूरी की राह से चले आवें। (२७) अपने फायदों के लिए हाजिर हों खुदा ने जो मवेशी उनको

दिये हैं ख़ास दिनों में उन पर ख़ुदा का नाम लें। उसमें से खाओ और दुखिया फ़क़ीर को खिलाओ। (२८) फिर चाहिए कि अपना मैल कुचैल उतार दें और अपनी मन्नतें पूरी करें पुराने काबे की परिक्रमा (फेरे) दें। (२६) यह सुन चुके और जो आदमी ख़ुदा के अदब की बड़ाई रक्खे तो यह उसके परवर्दिगार के यहाँ उसके हक़ में अच्छा है और जो तुमको (क़ुरान से) पढ़कर सुनाया जाता है वह सब चौपाये तुमको हलाल हैं और बुतों की गन्दगी से बचते रहो और झूठी बात के कहने से बचते रहो। (३०) एक अल्लाह के हो रहो उसके साथी साझी न ठहराओ और जो ख़ुदा का साझी बनाये गोया वह आसमानों से गिर पड़ा। फिर उसको परिन्दों (पक्षियों) ने उचक लिया या उसको हवा ने किसी और जगह पटक दिया (३१) यह बात है और जो शख़्स उन चीज़ों का अदब लिहाज़ रक्खे जो ख़ुदा के नाम रक्खी गई हैं तो यह दिलों की परहेज़गारी है (३२) तुमको चौपायों में ख़ास वक़्त तक फ़ायदे हैं फिर पुराने ख़ाने (काबा) के पास उनको पहुँचा देना है। (३३) [रुकू ४]

हर एक गरोह के लिए हमने क़ुरबानी ठहरा दी है ताकि ख़ुदा ने जो उनको मवेशी दे रक्खे हैं उन पर ख़ुदा का नाम लेवे। सो तुम सबका एक ख़ुदा है तो उसी के आज्ञाकारी बनो और गिड़गिड़ाने वाले बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (३४) जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है उनके दिल काँप उठते हैं और जो दुख उन पर आ पड़े उस पर संतोष करते और नमाज़ पढ़ते और जो हमने उनको दे रक्खा है उसमें से ख़र्च करते हैं (३५) और हमने तुम्हारे लिए क़ुरबानी के ऊँटों को उन चीज़ों में कर दिया है जो ख़ुदा के साथ नामज़द की जाती हैं। उनमें तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं तो उनको खड़ा रख कर उन पर ख़ुदा का नाम लो‡ फिर जब वह किसी पहलू पर गिर पड़ें तो उनमें से

‡ ऊँट के हलाल करने का तरीक़ा यह है कि उसको काबे की ओर खड़ा करते हैं फिर उसकी घावों पर भाला मारते हैं ताकि उसका सारा ख़ून निकल जाय और जब वह गिर पड़ता है तो काटते हैं।

खाओ और सब्र वालों और फ़क़ीरों को खिलाओ। हमने यों तुम्हारे बस में इन जानवरों को कर दिया है ताकि तुम शुक्र करो। (३६) ख़ुदा तक न तो इनके गोश्त ही पहुँचते हैं और न इनके ख़ून† बल्कि उस तक तुम्हारी परहेज़गारी पहुँचती है। ख़ुदा ने इन को यों तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है ताकि उसने जो तुमको राह दिखा दी है तो इसके बदले में उसकी बड़ाइयाँ करो। (३७) ख़ुदा ईमानवालों से (उनके पाप) हटाता रहता है। बेशक अल्लाह किसी दग़ाबाज़ कृतघ्नी (नाशुक्रा) को पसंद नहीं करता। (३८) [रुकू ५]

जिनसे (काफ़िर) लड़ते हैं उनको (भी उन काफ़िरों से लड़ने की) इजाज़त है इस वास्ते कि उन पर ज़ुल्म हो रहा है और अल्लाह उनकी मदद करने पर शक्तिशाली है (३९) यह वह हैं जो इस बात के कहने पर कि हमारा परवर्दिगार अल्लाह है नाहक अपने घरों से निकाल दिये गये और अगर अल्लाह एक दूसरे से न हटाया करता तो (ईसाइयों की) पूजा की जगहें और गिरजाओं और (यहूदियों की) पूजा की जगहें और मुसलमानों की मसजिदें जिनमें अधिकता से ख़ुदा का नाम लिया जाता है कभी के ढाये जा चुके होते और जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह अवश्य उसकी मदद करेगा। अल्लाह ज़बरदस्त शक्तिशाली है। (४०) यह लोग अगर इनके पाँव ज़मीन में जमा दें तो नमाज़ें पढ़ेंगे और ख़ैरात देंगे और अच्छे काम के लिए कहेंगे और बुरे कामों से मना करेंगे और सब चीज़ों का अन्त तो ख़ुदा ही के हाथ है (४१) और (ऐ पैग़म्बर) अगर तुमको झुठलायें तो इनसे पहले नूह (के गिरोह) के लोग और आद और समूद (के द्वारा झुठलाये जा चुके हैं) (४२) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम। (४३) और मदीअन के रहने वाले (अपने-अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुके हैं और मूसा झुठलाये जा चुके हैं। तो हमने काफ़िरों को मुहलत दी

---

† पहले क़ुरबानी का ख़ून काबे की दीवारों पर छिड़कते थे। मुसलमानों को ऐसा करने से रोका गया और बताया गया कि ख़ुदा तक केवल परहेज़गारी ही पहुँचती है।

फिर उनको धर पकड़ा सो हमारी नाराजगी कैसी थी। (४४) बहुत बस्तियाँ जो ज़ालिम थीं हमने उनका मार डाला पस अपनी छतों पर गिर पड़ी हैं और (कितने) कुएँ बेकार और पक्के महल वीरान पड़े हैं। (४५) क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं जो इनके ऐसे दिल होते कि उनके ज़रिये से समझते और ऐसे कान होते कि उनके ज़रिये से सुनते। बात यह है कि कुछ आँखें अन्धी नहीं हुआ करती बल्कि दिल जो छाती में है वह अन्धे हो जाया करते हैं। (४६) और (ऐ पैग़म्बर) तुम से सज़ा की जल्दी मचा रहे हैं और ख़ुदा तो कभी अपना वादा खिलाफ़ करने का नहीं और कुछ शक नहीं कि तुम्हारे परवर्दिगार के यहाँ तुम लोगों की गिनती के अनुसार हज़ार वर्ष के बराबर एक दिन है। (४७) और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिनको हमने ढील दिया फिर उनको पकड़ा और हमारी तरफ़ लौट कर आना है। (४८) [रुकू ६]

(ऐ पैग़म्बर) कहो कि मैं तुमको ज़ाहिरा (सज़ा) से डरानेवाला हूँ। (४६) फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके लिए इज्ज़त की रोज़ी है (५०) और जो लोग हमारी आयतों को हराने के लिए दौड़ते हैं वहो नरक वाले हैं। (५१) और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुम से पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा और कोई ऐसा नबी कि उसको यह मामला पेश न आया हो कि जब वह ख़याल बान्धने लगा शैतान ने उसके ख़याल में कुछ न कुछ डाल दिया है* फिर ख़ुदा ने शैतान के बदख़्याल को दूर और अपनी आयतों को मज़बूत कर दिया और अल्लाह हिकमत वाला सब ख़बर रखता है। (५२) इस वास्ते कि उस शैतान के मिलाये से उन लोगों को जाँचे जिनके (दिलों में बुरे ख़यालों की) बीमारी है और उनके दिल रुख़्त हैं और अपराधी तो ख़िलाफ़ी में दूर पड़े हैं। (५३) और यह इस

---

* कहा जाता है कि एक बार मुहम्मद साहब ने कुछ आयतें पढ़ीं तो शैतान ने उनकी ही आवाज़ में बुतों की तारीफ़ भी मिला दी। इसपर मुशरिक बहुत ख़ुश हुये लेकिन रसूल को यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ।

लिए कि जिन लोगों को इल्म दिया गया है वह जान लें कि वह तेरे परवर्दिगार से सच है फिर वह उस पर ईमान लायें और उनके दिल उसके आगे झुकें और जो ईमान लाये हैं ख़ुदा उनको सीधी राह दिखलाता है। (५४) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं वह तो हमेशा इस तरफ़ (क़ुरान की तरफ़) से शक ही में रहेंगे यहाँ तक कि क़यामत एक एक उन पर आ पहुँचे या बुरे दिन की सज़ा उन पर उतरे। (५५) हुकूमत उस दिन ख़ुदा की होगी वह लोगों में फ़ैसला कर देगा तो जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये वह आराम के बागों में होंगे। (५६) और जो इन्कार करते और हमारी आयतों को झुठलाते रहे तो यहाँ वे जिनको बदनामी की सज़ा होगी। (७) [रुकू ७]

और जिन लोगों ने ख़ुदा की राह में घर छोड़े फिर मारे गये या मर गये उनको ज़रूर ख़ुदा रोज़ी देगा और ख़ुदा ही सबसे अच्छी रोज़ी देने वाला है। (५८) वह उनको ऐसी जगह पहुँचायेगा जैसी वह चाहेंगे और अल्लाह जानकार बर्दाश्त करने वाला है। (५९) यह सुन चुके और जिस आदमी ने उसी क़दर सताया जितना कि वह शख़्स सताया गया है फिर उस पर ज़ियादती हुई तो इसकी ख़ुदा ज़रूर मदद करेगा। ख़ुदा क्षमा करने वाला बख़्शने वाला है। (६०) यह इस वजह से है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है। और दिन को रात में अल्लाह सुनता देखता है। (६१) यह इस वजह से है कि अल्लाह ही सचमुच है और जिनको (इन्कारी) ख़ुदा के सिवाय पुकारते हैं वह झूठे हैं और इस सबब से अल्लाह ही बहुत बड़ा है। (६२) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है फिर ज़मीन हरी हो जाती है बेशक अल्लाह छिपा चीज़ें जानता है। (६३) उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह बेपरवाह और तारीफ़ के लायक़ है। (६४) [रुकू ८]

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने उन चीज़ों को जो ज़मीन में हैं तुम लोगों के वश में किया है और किश्ती उसके हुक्म से नदी में चलती है और आसमान ज़मीन पर गिरने से थमा है मगर उसके हुक्म से

कुछ शक नहीं कि अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेहरबानी और मुहब्बत रखता है। (६५) और वही है जिसने तुममें जान डाली। फिर तुमको मारता है। फिर जिलावेगा। बेशक इन्सान बड़ा कृतघ्नी (नाशुक्रा) है। (६६) (ऐ पैग़म्बर) हमने हर गिरोह के लिए (पूजा के) तरीके क़रार दिये कि वह उन पर चलते हैं तो इन लोगों को चाहिए कि तुम से इस काम में झगड़ा न करें, और तुम अपने परवर्दिगार की तरफ बुलाये चले जाओ। बेशक तुम सीधी राह पर हो। (६७) और अगर तुम से झगड़ा करें तो कह दो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है। (६८) जिन बातों में तुम आपस में भेद डालते हो अल्लाह क़यामत के दिन झगड़ों का फैसला कर देगा। (६९) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह उसे जानता है यह किताब में लिखा हुआ है, यह अल्लाह पर आसान है। (७०) और ख़ुदा के सिवाय उन चीज़ों की पूजा करते हैं जिनके लिए न तो ख़ुदा ने कोई सनद उतारी है और न इनके पास कोई इस की अक़ली दलील है और अन्यायियों का कोई मददगार न होगा। (७१) और (ऐ पैग़म्बर) जब इनको हमारी खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम काफ़िरों के चेहरों में ना ख़ुशी देखते हो, क़रीब है कि यह लोग क़ुरान सुनाने वालों पर (हमला करें) बैठें (ऐ पैग़म्बर) कहो कि इससे भी बुरी (और एक चीज़) सुनाऊँ वह नरक है जिसका वादा ख़ुदा इन्कारियों से करता है बुरा ठिकाना है। (७२) [रुकू ९]

लोगों एक मिसाल बयान की जाती है तो उस को कान लगा कर सुनो कि ख़ुदा के सिवाय जिनको तुम पुकारते हो एक मक्खी भी नहीं पैदा कर सकते यदि उसके (पैदा करने के) लिए (सब के सब) इकट्ठे (क्यों न) हो जावें और अगर मक्खी इनसे कुछ छीन ले जावे तो उस को उससे नहीं छुड़ा सकते (कैसे) बोदे यह (बुत) जो पीछा करें (और उसको न पकड़ सकें) (७३) और (कैसी) थोथी वह (मक्खी,×

× कहते हैं कि काफ़िर बुतों पर शहद चढ़ाते थे और जब मक्खियां उसको चाट जातीं तो ख़ुश होते। सो यहाँ बताया गया है कि मूर्तियाँ तो ऐसी

जिसका पीछा किया जाय और फिर हाथ न आवे। इन लोगों ने ख़ुदा की जैसी क़दर जानना चाहिए थी नहीं जानी और अल्लाह तो बड़ा जबरदस्त और जीतने वाला है। (७४) अल्लाह फ़रिश्तों में से और आदमियों में से ईश्वरीय सन्देशा पहुँचाने के लिए चुन लेता है अल्लाह सुनता देखता है। (७५) वह उनके अगले और पिछले हालातों को जानता है और सब कामों की पहुँच अल्लाह ही पर है (७६) ऐ ईमान वालों रुकू करो और सिजदा करो और अपने परवर्दिगार की पूजा करो और भलाई करते रहो। (७७) और अल्लाह की राह में कोशिश करो जैसा कि उस में कोशिश करने का हक़ है उस ने तुम को चुन लिया और दीन में किसी तरह की सख़्ती नहीं की। दीन तुम्हारे बाप इब्राहीम का था उसी ने तुम्हारा नाम पहले से मुसलमान रक्खा और इसमें (भी) ताकि पैग़म्बर तुम्हारे मुक़ाबिले में गवाह हो और तुम (दूसरे) लोगों के मुक़ाबिले में गवाह हो तो नमाज़ें पढ़ो और ज़कात दो और अल्लाह ही का सहारा पकड़ो वही तुम्हारे काम का सँभालने वाला है ख़ूब मालिक है और ख़ूब मददगार है। (७८) [रुकू १०]

अठारहवाँ पारा (क़द अफ़्लहल मोमिनून)

—०—

सूरे मोमिनून।

मक्के में उतरी इसमें ११८ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहरबान है। ईमान वाले मुराद को पहुँच गये। (१) वह जो अपनी नमाज़ में नम्र हैं। (२) और

दुर्बल और हीन हैं कि अपना खाना तक मक्खियों से नहीं छीन सकतीं। वह दूसरों को क्या मदद करेंगे।

वह जो निकम्मी बात पर ध्यान नहीं करते (३) और वह जो ज़कात दिया करते हैं। (४) और वह जो अपनी शर्मगाहों (शिहवत की जगह) की रक्षा करते हैं। (५) मगर अपनी बीबियों और बान्दियों के बारे में इल्जाम नहीं है। (६) फिर जो कोई उसके सिवाय ढूँढे तो यही लोग हद से बाहर निकले हुए (मर्यादा भ्रष्ट) हैं। (७) और वह जो अपनी अमानतों और कौल (प्रतिज्ञा) को ख्याल में रखते हैं। (८) और जो अपनी नमाजों के पाबन्द हैं। (९) यही लोग वारिस हैं। (१०) जो बैकुण्ठ के वारिस होंगे वही उसमें हमेशा रहेंगे। (११) और हमने आदमी को सनी मिट्टी से बनाया है। (१२) फिर हमने उसको ठहरने वाली जगह पर वीर्य बनाकर रक्खा। (१३) फिर हमने वीर्य से लोथड़ा बनाया। फिर हमने लोथड़े की पची हुई बोटी बनाई। फिर बन्धी बोटी की हड्डियाँ बनाईं। फिर हड्डियों पर गोश्त मढ़ा। फिर उसको एक नई सूरत में बना खड़ा किया। सो अल्लाह की बरकत है जो सबसे अच्छा बनाने वाला है। (१४) फिर इसके बाद तुम को मरना है। (१५) फिर क्यामत के दिन तुम उठा खड़े किये जाओगे। (१६) और हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाये और पैदा करने में हम अनाड़ी न थे। (१७) और हमने नाप कर आसमान से पानी बरसाया फिर उसको जमीन में ठहरा दिया और हम उस पानी को ले जा सकते हैं (१८) फिर हमने उस (पानी) से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग लगा दिये। तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं और उनमें से ही तुम खाते हो। (१९) और सैना पहाड़ पर हमने एक पेड़ (ज़ैतून) पैदा किया है जिसमें तेल निकलता है और रोटी डुबाने को रसा निकलता है। (२०) और तुमको चौपायों में ध्यान करना है कि जो उनके पेटों में है उसी से हम तुम को (दूध) पिलाते हैं और तुमको उनमें बहुत फायदे हैं और उनमें तुम किन्हीं-किन्हीं को खाते हो। (२१) और उन पर और किश्तियों पर चढ़े फिरते हो। (२२) [रुकू १]

और हमने नूह को उनकी कौम की तरफ भेजा तो उसने कहा कि भाइयो अल्लाह की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं तो क्या तुमको डर नहीं लगता। (२) इस पर उनकी कौम के सर्दार जो इन्कारी थे कहने लगे यह भी एक आदमी है जो तुमसे बड़ा बनना चाहता है और अगर खुदा को (पैगम्बर ही भेजना) मंजूर होता तो फरिश्तों को उतारता हमने तो ऐसी बात अपने अगले बाप दादा से नहीं सुनी। (४) हो न हो यह एक आदमी है जिसको जनून हो गया है तो एक खास वक्त तक उसकी राह देखो। (२५) नूह ने दुआ माँगी कि हे मेरे परवर्दिगार! जैसा इन्होंने मुझे झुठलाया है तू ही मेरी मदद कर। (२६) इस पर हमने नूह को हुक्म भेजा कि हमारे आँखों के सामने और हमारे हुक्म से एक नाव बनाओ फिर जब हमारी आज्ञा आवे और तनूर (जमीन से पानी) उबलने लगे तो नाव में हर एक (जीवधारी) में से (नर और मादा) दो-दो का जोड़ा और अपने घरवालों को बैठा लो मगर उनमें से जिन (नूह की स्त्री और बेटे) की बाबत आज्ञा हो चुकी है और अन्यायियों के बारे में मुझसे न बोलना वह डूबेंगे। (२७) फिर जब तुम और तुम्हारे साथी नाव में बैठ जाओ तो कहो कि खुदा का शुक्र है जिसने हमको जालिम लोगों से छुटकारा दिया। (८) और कहो कि ऐ परवर्दिगार मुझको बरकत का उतारना उतार और तू सब उतारनेवालों से अच्छा है। (२९) इसमें निशानियाँ हैं और हम जाँचने वाले हैं। (३०) फिर हमने उनके बाद एक और गरोह उठाया। (१) और उन्हीं में से (सालेह को) पैगम्बर बनाकर भेजा कि खुदा की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं तो क्या तुमको डर नहीं लगता। (३२) [रुकू २]

और उसकी कौम के सर्दार जो इन्कारी थे और कयामत के आने को झुठलाते थे और दुनियाँ की जिन्दगी में हमने उनको आराम दिया था कहने लगे कि यह (सालेह) तुम्हीं जैसा आदमी है जो तुम खाते हो यह भी खाता है और जो (पानी) तुम पीते हो यह भी पीता है।

(३३) और अगर तुम अपने जैसे आदमी के कहने पर चलो तो तुम बेशक ख़राब होगे। (३४) (यह शख़्स) तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और तुम्हारी मट्टी और हड्डियाँ रह जायेंगी तो तुम दुबारा उठाए जाओगे। (३५) जो तुम्हें वादा दिया जाता है नहीं हो सकता नहीं हो सकता। (३६) और कुछ नहीं यह हमारी दुनियाँ का जीना है। हम जीते और मरते हैं और हम उठाये न जायेंगे। (३७) हो न हो यह (सालेह) ऐसा आदमी है जिसने ख़ुदा पर झूँठ बाँधा है और हम तो इसका यकीन नहीं करते। (३८) (सालेह ने) कहा ऐ मेरे परवर्दिगार ! मेरी मदद कर इन्होंने मुझे झुठलाया है। (३६) (ख़ुदा ने) फर्माया थोड़े दिनों बाद पछतायेंगे। (४०) चुनांचे सच के बमूजिब उनको चिंघार ने आ पकड़ा और हमने उनको कूड़ा कर दिया (कुचल दिया) ताकि अन्यायी लोग दूर हो जावें। (४१) फिर उनके बाद हमने और संगत (गिरोह) उठाई। (४२) कोई सगत अपने समय से न आगे बढ़ सकती न पीछे रह सकती है। (४३) फिर हम लगातार अपने पैग़म्बर भेजते रहे जब किसी गिरोह का पैग़म्बर उनके पास आता तो उसे झुठलाया करते थे तो हम भी एक के पीछे एक को (हलाक) करते गये और हमने उनकी हदीसें (कथायें) बना दीं तो जो लोग नहीं मानते दूर हो जावें। (४४) फिर हमने मूसा और उनके भाई हारूँ को अपनी निशानियों और खुली सनद देकर भेजा। (४५) फिरऔन और उसके दर्बारियों की तरफ भेजा तो वह शेख़ी में आ गये और वह बढ़ चढ़ रहे थे। (४६) कहने लगे क्या हम अपने जैसे दो आदमियों को मानने लगें हालाँकि उनकी कौम हमारी गुलामी में है। (४७) इन लोगों ने (मूसा और हारूँ) दोनों को झुठलाया तो (यह) मार डाले गये। (४८) और हमने मूसा को किताब दी ताकि (लोग) शिक्षा पावें। (४६) और+ हमने मरियम के बेटे (ईसा) और उनकी

+ ईसा ने जन्म लेते ही बातचीत की। यह उनकी करामात थी और उन की माँ उनसे किसी पुरुष से मिले बिना ईसा जैसा महान पुत्र जना, यह उनका चमत्कार था।

माँ को निशानी बनाया और उन दोनों को एक ऊँची जगह पर जहाँ पड़ाव और सोता (चश्मा) था ठहराव दिया। (५०) [रुकू ३]

ऐ पैग़म्बरों सुथरी चीजें खाओ और भले काम करो। जैसे काम तुम करते हो मैं जानता हूँ। (५१) और यह सब एक दीन पर थे और मैं तुम्हारा परवर्दिगार हूँ मुझ से डरते रहो। (५२) फिर लोगों ने आपस में फूट करके अपना दीन जुदा-जुदा कर लिया जो जिस फिर्के के पास है वह उस से रीझ रहा है। (५३) तो (ऐ पैग़म्बर) तुम एक समय तक इनको इनकी गफ़लत में रहने दो। (५४) क्या ऐसे लोग ख्याल करते हैं जो हम माल और औलाद इनको दिए जा रहे हैं। (५५) इनको लाभ पहुँचाने में हम जल्दी कर रहे हैं बल्कि यह समझते नहीं। (५६) जो लोग अपने परवर्दिगार से डरते हैं (५७) और जो अपने परवर्दिगार की आयतों को मानते हैं। (५८) और जो अपने परवर्दिगार के साथ शरीक नहीं ठहराते (५६) और जितना कुछ देते बनता है (ख़ुदा की राह में) देते हैं और उनके दिलों को इस बात का खटका लगा रहता है कि उनको अपने परवर्दिगार की ओर लौटकर जाना है। (६०) यही लोग नेक कामों में जल्दी करते हैं और उनके लिए लपकते हैं। (६१) और हम किसी आदमी की ताकत से बढ़ कर बोझ नहीं डालते और हमारे यहाँ (लोगों के काम का) रजिस्टर है जो ठीक हाल बताता है और उनपर अन्याय न होगा। (६२) लेकिन इनके दिल इस बात से ग़ाफ़िल हैं और इन कामों के सिवाय और कामों में लगे हैं। (६३) यहाँतक कि जब हम इनमें से ख़ुशहाल लोगों को सजा में धर पकड़ेंगे तो यह लोग चिल्ला उठेंगे (६४) मत चिल्लाओ आज के दिन तुम हमसे मदद न पाओगे (६५) (क़ुरान में से) हमारी आयतें तुमको पढ़ कर सुनाई जाती थीं और तुम उलटे भागते थे। (६६) तुम क़ुरान से अकड़ते हुए बेहूदा बकवाद करते थे। (६७) क्या इन लोगों ने (क़ुरान में) ध्यान नहीं दिया या इनके पास एक बात आई जो इनके अगले बापदादों के पास नहीं आई थी। (६८) क्या यह लोग अपने पैग़म्बर से जानकार नहीं थे और उसे ऊपरी समझते हैं। (६६) क्या यह

कहते हैं कि इसको जनून है बल्कि रसूल इनको सच बात लेकर आया है और इनमें से बहुतों को सच बात बुरी लगती है। (७०) और अगर सचा खुदा उनकी खुशी पर चलता तो आसमान और जमीन और जो कुछ उनके बीच में है खराब हो गया होता बल्कि हमने इनको इन्हीं की शिक्षायें लाकर सुनाईं सो ये अपनी शिक्षाओं पर ध्यान नहीं देते। (७१) क्या (ऐ पैग़म्बर) तुम इनसे कुछ मज़दूरी माँगते हो तो तुम्हारे परवर्दिगार की देन भली है और वह रोजी देनेवाला बेहतर है। (७२) और (ऐ पैग़म्बर) तू इनको सीधी राह पर बुलाता है। (७३) और जिन लोगों को क्यामत का यकीन नहीं है वही रस्ते से हटे हुए हैं। (७४) और अगर हम इन पर रहम कर जायें और जो कष्ट इन को पहुँचता है दूर कर दें तो भटके हुए अपनी गुमराही में हमेशा पड़े रहेंगे। (७५) और हमने इनको सजा में फाँसा तो भी यह लोग अपने परवर्दिगार के आगे न झुके और न आजिज़ी (नम्रता) की (७६) यहाँ तक कि जब हम इन पर सख्त सजा का दर्वाजा खोल देंगे तब उसमें उनकी आस टूटेगी। (७७) [रुकू ४]

और उसी ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बना दिये (मगर) तुम बहुत ही कम शुक्र मानते हो। (७८) और उसी ने तुम को जमीन पर फैला रक्खा है और तुमको इकट्ठा होना है (७९) और वही जिलाता और मारता है और रात दिन का बदलना भी उसी का काम है तो क्या तुम नहीं समझते। (८०) जो बात अगले† कहते चले आये हैं वैसी ही यह भी कहते हैं। (८१) कहते हैं कि क्या हम जब मर जायगे और हड्डियाँ (बाकी रह जायेंगी) तब क्या हम (दोबारा जिन्दा करके) उठा खड़े किये जायेंगे। (८२) हमको और हमारे बड़ों को इसका वादा पहले भी मिल चुका है हो न हो यह अगले लोगों के ढकोसले हैं (८३) (ऐ पैग़म्बर) पूछो कि अगर तुम समझते हो तो बताओ कि जमीन और जो कुछ उसमें है किसके हैं। (८४) कहेंगे कि अल्लाह का (उनसे) कहो कि फिर क्यों नहीं ध्यान देते। (८५) (ऐ पैग़म्बर

† अगले लोग भी कहते थे कि मरने के बाद कोई न जिलाया जायेगा।

इनसे) पूछो कि सात आसमानों का मालिक और उस बड़े तख्त का मालिक कौन है। (८६) अब बतावेंगे कि अल्लाह। कहो फिर तुम क्यों नहीं डरते। (८७) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) पूछो कि अगर जानते हो तो बताओ कि हर चीज़ पर अधिकार किसका है और कौन है जो बचाता है और उससे कोई बचा नहीं सकता। (८८) अब बतावेंगे अल्लाह को कहो तो फिर कहाँ से जादू पड़ जाता है‡। (८९) सच यह है कि हमने सचसच बात इनको पहुँचा दी है और बेशक यह झूठे हैं। (९०) अल्लाह ने किसी को बेटा नहीं बनाया और न उसके साथ कोई और ख़ुदा है अगर ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपने बनाये को लिए फिरता और एक दूसरे पर चढ़ जाता। जैसी जैसी बातें यह (लोग) बयान करते हैं वह उनसे निराला है। (९१) ज़ाहिरा और छिपी बात का जानने वाला उनसे बहुत ऊपर है और ये शरीक बताते हैं। (९२) [रुकू ५]

(ऐ पैग़म्बर) तुम यह माँगो कि ऐ मेरे परवर्दिगार जिस (सज़ा) का वादा इनसे किया गया है अगर तू मुझे भी दिखा दे। (९३) तो (ऐ मेरे परवर्दिगार) ज़ालिम लोगों में मुझे न शामिल कर लेना। (९४) और ऐ पैग़म्बर हम को सामर्थ्य है कि जिस (सज़ा) का वादा इन (काफ़िरों) से कर रहे हैं (९५) तुमको दिखा दें जो कुछ यह कहते हैं हम खूब जानकार हैं। (९६) और दुआ करो ऐ परवर्दिगार मैं शैतानों की छेड़ से तेरी शरण चाहता हूँ। (९७) और ऐ मेरे परवर्दिगार मैं शरण माँगता हूँ। इससे कि शैतान मेरे पास आवें। (९८) और यहाँ तक कि जब इनमें से किसी की मौत आती है कहता है कि ऐ मेरे परवर्दिगार मुझ फिर (दुनियाँ में) भेज। (९९) (ताकि दुनियाँ) जिसे मैं छोड़ आया हूँ उस में (फिर जाकर) भले काम करूँ यह एक बात है जिसे यह कहता है उनके पीछे अटकाव है जब तक कि मुर्दों में से उठाये जाँय। (१००) फिर जब नरसिंहा (सूर) फूँका

---

‡ यह सब मानते हो तो फिर इस को क्यों नहीं मानते कि वह फिर पैदा कर सकता है।

जायगा तो उस दिन लोगों में न तो रिश्तेदारियाँ (बाकी) रहेंगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे। (१०१) फिर जिनका पल्ला† भारी निकलेगा तो यही लोग मुराद पावेंगे। (१०२) और जिनका पल्ला हल्का होगा तो यही लोग हैं जो अपनी जानें हार गये और हमेशा नरक में रहेंगे। (१०३) आग उनके मुहों को झुलसाती होगी और वह वहाँ बुरे मुँह बनाये होंगे। (१०४) क्या हमारी आयतें तुमको पढ़ पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं और तुम उनको झुठलाते थे। (१०५) वह कहेंगे ऐ हमारे परवर्दिगार हमको हमारी कमबख्ती ने आ दबाया और हम भटके हुए थे। (१०६) ऐ हमारे परवर्दिगार हमको इस (आग) से निकाल और अगर हम फिर ऐसा करें तो बेशक अपराधी होंगे। (१०७) (ख़ुदा) कहेगा दूर हो इसी (आग) में रहो और हम से बात न करो। (१०८) हमारे सेवकों में एक गिरोह ऐसा भी था जो कहा करता था कि ऐ हमारे परवर्दिगार हम ईमान लाये तू हमारे अपराध क्षमा कर और तू दयावानों में भला है। (१०९) फिर तुमने उनकी हँसी उड़ाई यहाँ तक कि उन्होंने तुमको हमारी याद भुला दी और तुम उनसे हँसी ठट्ठा करते रहे। (११०) आज हमने उनको सब्र का बदला दिया वही मुराद पावेंगे। (१११) (फिर ख़ुदा नरक वालों से) पूछेगा कि तुम जमीन पर गिनती के कितने वर्ष रहे। (११२) वह कहेंगे एक दिन या एक दिन से भी कम रहे होंगे। गिनने वालों से पूछ देख (११३) फर्माया जायगा तुम उसमें बहुत नहीं थोड़े ही रहे होगे अगर तुम जानते होते। (११४) क्या तुम ऐसा ख़याल करते हो कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है और यह कि तुमको हमारी तरफ फिर लौटकर आना नहीं है। (११५) सो ख़ुदा सच्चा बादशाह बहुत ऊँचा है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। वही बड़े तख्त का मालिक है (११६) और जो शख्स ख़ुदा के सिवाय किसी को पुकारता है उसके पास इस (शामिल करने) की कोई दलील नहीं। सो बस उसके

---

† सब के अच्छे और बुरे कामों की तुलना की जायगी और जिसकी बुराइयाँ अधिक होंगी वह दोजख़ी होगा।

परवर्दिगार के ही यहाँ उसका हिसाब होना है। बेशक इन्कारी लोगों का भला न होगा। (११७) और तुम दुआ करो कि ऐ मेरे परवर्दिगार क्षमा कर और कृपा कर और तू अन्य कृपा करने वालों से भला है। (११८) [रुकू ६]

सूरे नूर

मक्के में उतरी इसमें ६४ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। एक सूरत है जिसको हमने उतारा और यह हमारा ही बाँधा हुआ है और हमने इसमें खुले खुले हुक्म उतारे ताकि तुम याद रक्खो। (१) मर्द और औरत छिनाला करें तो दोनों में से हरएक के १०० कोड़े मारो और अगर अल्लाह का और आखिर दिन का विश्वास रखते हो तो अल्लाह की आज्ञा की तामील में तुमको उनपर तरस न आना चाहिए और मुसलमानों को चाहिए कि जब उनपर मार पड़े देखने आवें†। (२) व्यभिचारी आदमी व्यभिचारिणी से विवाह करेगा और शिर्क वाली औरत शिर्कवाले मर्द से विवाह करेगी और यह बात ईमानवालों पर हराम है। (३) और जो लोग पाक औरतों पर (छिनाले का) लफंट लगायें और चार गवाह न ला सकें तो उनके अस्सी चाबुक मारो और कभी उनकी गवाही कबूल न करो और ये लोग बदकार हैं। (४) मगर जिन्होंने ऐसा किये पीछे तौबा की और अपनी आदत दुरुस्त करली तो अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है। (५) और जो लोग अपनी बीबियों पर छिनाले का लफंट लगायें और उनके पास सिवाय उनकी जानों के और गवाह न हों तो उनमें से एक की गवाही चार दफे ले लेना चाहिए कि वह सचों में हैं। (६) और पाँचवे दफे

† ताकि स्वयं ऐसा बुरा कर्म करने से डरें।

यों कहे कि यह अगर झूठ बोलता हो तो उस पर अल्लाह की फटकार पड़े। (७) और (मर्द के हल्फ किये पीछे) औरत से इस तरह पर सजा टल सकती है कि वह चार बार खुदा की सौगन्ध खाकर बयान करे कि यह आदमी बिल्कुल झूँठा है। (८) और पाँचवें (बार) यों कहे कि अगर यह (आदमी अपने दावे में) सच्चा है तो मुझ पर खुदा ही का कोप पड़े। (९) और अगर तुम पर अल्लाह की मिहर और कृपा न होती तो तुम बड़ी आपत्ति में पड़ जाते परन्तु अल्लाह क्षमा करने वाला हिकमत वाला है। (१०) [रुकू १]

जिन लोगों ने तूफान उठा खड़ा किया ‡ तुम ही में का एक गिरोह है इस (तूफान) को अपने हक में बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे हक में अच्छा हुआ। तूफान उठाने वालों में से जितना अपराध जिसने इकट्ठा किया है उसी का फल भोगेगा और जिसने उनमें से तूफान का बड़ा हिस्सा लिया वैसी ही उसको बड़ी सजा होगी। (११) जब तुमने ऐसी बात सुनी थी ईमान वाले मर्दों और ईमानवाली औरतों ने अपने हक में नेक ख्याल क्यों नहीं किया और क्यों न बोल उठे कि यह प्रत्यक्ष लफट है। (१२) (जिन लोगों ने यह तूफान उठा खड़ा किया) अपने बयान के सबूत पर चार गवाह क्यों न लाये फिर जब गवाह न ला सके तो खुदा के नजदीक यही झूठे हैं। (१३) और अगर तुम पर दुनियाँ और क्यामत में खुदा की कृपा और मिहर न होती तो इस चर्चे में तुम पर बड़ी सजा उतरती। (१४) जब तुमने लफंट को अपनी जबानों पर लिया और अपने मुँह से ऐसी बात कहन लगे जिसको तुम न जानते थे और तुम उसे हल्की बात समझे हालाँकि अल्लाह के नजदीक यह बड़ी (बात) है। (१५) और जब तुमने ऐसी बात सुनी थी क्यों न बोल उठे कि हमको ऐसी बात मुँह से निकालना शोभा नहीं देता अल्लाह तो पाक है और यह बड़ा लफंट है। (१६) खुदा तुमको शिक्षा देता है कि अगर तुम ईमान रखते हो तो फिर कभी

‡ कुछ लोगों ने मुहम्मद साहब की चहेती स्त्री हजरत आइशा पर बदकारी (जिना) का लफंट लगाया था। यह आयतें उसी से सम्बन्धित हैं।

ऐसा न करना। (१७) और अल्लाह (अपने) हुक्म तुम से खोलकर बयान करता है और अल्लाह हिकमतवाला जानकार है। (१८) जो लोग चाहते हैं कि ईमानवालों में व्यभिचार की चर्चा हो उनके लिए दुनियाँ में और क़यामत में दुखदाई सज़ा है। और अल्लाह ही जानता है और तुम नहीं जानते। (१९) और अगर अल्लाह की कृपा और मिहर तुम पर न होती तो तुम एक भयँकर विपत्ति में पड़ जाते लेकिन अल्लाह नर्मी करने वाला मेहरबान है। (२०) [रुकू २]

ऐ ईमानवालों! शैतान के क़दम पर क़दम न रक्खो और जो शैतान के क़दम पर क़दम रक्खेगा तो शैतान (उसको) बेशर्मी और बुरे काम को कहेगा और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती तो तुममें से कोई कभी भी पाक न होता। लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है और अल्लाह सुनता जानता है। (२१) और तुमसे जो लोग बड़ाई वाले और सामर्थ्यवान हैं नातेदारों, मुहताजों और देश छोड़ने वालों को अल्लाह की राह में देने से सौगन्ध न खा बैठें बल्कि क्षमा करें और छोड़ दें क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारे अपराध क्षमा करे और अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है (२२) जो लोग ईमानवाली बेख़बर पाक औरतों पर (छिनाले का) लफंट लगाते हैं (ऐसे लोग) दुनिया और क़यामत में फटकारे गये हैं और उनको बड़ी सज़ा होगी। (२३) जब इनकी ज़बानें और इनके हाथ और इनके पाँव इनके कामों की जो कुछ ये करते थे गवाही देंगे। (२४) उस दिन अल्लाह इनको पूरा पूरा बदला देगा और जान लेंगे कि अल्लाह ही सच्चा दिखाने वाला है। (२५) व्यभिचारी औरतें व्यभिचारी मर्दों के लिए और व्यभिचारी मर्द व्यभिचारिणी औरतों के लिए और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए और पाक मर्द पाक औरतों के लिए हैं और जो लफंट लगाते फिरते हैं उनसे जो अलग हैं उनके लिए क्षमा है इज़्ज़त की रोज़ी है। (२६) [रुकू ३]

ऐ ईमान वालों! अपने घरों के सिवाय और घरों में बग़ैर पूछे और बिना सलाम किये न आया करो यह तुम्हारे हक़ में

भला है शायद तुम याद रक्खो। (२७) फिर अगर तुम को मालूम हो कि घर में कोई आदमी नहीं है तो जब तक तुम्हें इजाजत न हो उसमें न जाओ और अगर तुम से कहा जावे कि लौट जाओ तो लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए ज्यादह सफाई की बात है और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको जानता है। (२८) और गैर आबाद मकान जिसमें तुम्हारा असबाब हो उनमें चले जाने से तुम्हें पाप नहीं और जो कुछ तुम जाहिरा करते हो और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो अल्लाह जानता है। (२६) (ऐ पैग़म्बर) ईमान वालों से कहो कि अपनी आँख नीची रक्खें और अपनी शर्मगाहों को बुरे काम से बचाए रहें। इसमें उनकी ज्यादा सफाई है और (लोग) जो कुछ भी किया करते हैं अल्लाह को खबर है (३०) और (ऐ पैग़म्बर) ईमान वाली औरतों से कहो कि अपनी नजरें नीची रक्खें और अपनी शर्म गाहों को बचाये रहें और अपना शृगार न दिखावें मगर जितना जाहिर है (यानी मुँह, हाथ और पैर) और अपने कन्धों पर ओढ़नी ओढ़े रहें और अपना शृगार न दिखावें, सिवाय अपने पति के और अपने बाप के या अपने ससुर के या अपने बेटे के या अपने पति के बेटे के या अपने भाइयों के या भतीजों के या अपने भान्जों के या अपनी मेल-जोल की औरतों के या अपने हाथ के माल (यानी लौंडियों) या घर के लगे हुए ऐसे खिदमतगारों के या जो मर्द तो हों (मगर औरतों से कुछ) गरज नहीं रखते हों या लड़कों को जिन्होंने औरतों के भेद नहीं जाने और (चलने में) अपने पाँव ऐसे जोर से न रक्खें कि लोगों को उनके अन्दरूनी जेवर की खबर हो और तुम सब अल्लाह के सामने तोबा करो जिससे छुटकारा पाओ। (३१) और अपनी विधवाओं के निकाह करा दो और अपने गुलामों और लौंडियों में से जो नेकबख्त हों (उनके निकाह करा दो) अगर यह लोग मुहताज होंगे तो अल्लाह उनको मालदार बना देगा और अल्लाह गुआइश वाला जानकार है। (३२) और जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ व अपने को थामे रहें यहाँ तक कि अल्लाह अपनी कृपा से उन्हें सामर्थ्य दे और

तुम्हारे हाथ के माल (लौंडी गुलामों) में से जो लिखने† के चाहनेवाले हों तो तुम उनके साथ लिख दिया करो बशर्ते कि तुम उनमें नेकी पाओ और माले खुदा में से जो उसने तुमको दे रक्खा है उनको दो और तुम्हारी लौंडियाँ जो पाक रहना चाहती हैं उनको दुनियाँ की जिन्दगी के फायदे की गरज से हरामकारी पर मजबूर न करो और जो उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किये गये पीछे क्षमा करने वाला मेहरबान है। (३३) और हमने (इस क़ुरान में) तुम्हारे पास खुले-खुले हुक्म भेजे हैं और जो लोग तुमसे पहले हो गुजरे हैं उनके हालात परहेजगारों के लिए शिक्षा है। (३४) [रुकू ४]

अल्लाह आसमान और जमीन की रोशनी है उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक आला है उस आले में एक चिराग और चिराग एक शीशे की कंदील में धरा है (और) कंदील एक सितारे की तरह चमकता है। जैतून के बरकत के पेड़ से उस चिराग में तेल जलता है जो न पूर्बी है न पश्चिमी है। उसका तेल (ऐसा साफ है) कि अगर उसको आँच न भी छुए तो भी जल उठे। रोशनी पर रोशनी अल्लाह अपनी रोशनी की तरफ जिसको चाहता है राह दिखाता है और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान फर्माता है और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (३५) ऐसे घरों में जिनकी बाबत (खुदा ने) हुक्म दिया है कि उनकी बुजुर्गी की जाय और उनमें खुदा का नाम लिया जावे उनमें सुबह शाम याद करते हैं। (३६) ऐसे लोग खुदा की पाकी बयान करते रहते हैं जो सौदागरी और खरीद फरोख्त, खुदा के जिक्र और नमाज के पढ़ने और जकात के देने से गाफिल नहीं होते। उस दिन से डरते हैं जब कि दिल और आँखें उलट जाँयगी। (३७) अल्लाह उनको उनके कामों का भला से भला बदला दे और उनको अपनी कृपा से बढ़ती दे और अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रोजी देता है। (३८) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके काम

---

† यानी जो गुलाम अपनी आजादी के लिए एक तहरीर चाहे जिसमें उस की आजादी की बातों का जिक्र हो तो तुम ऐसी तहरीर उस को दे दो।

जैसे मैदान में चमकता हुआ रेत, प्यासा उसको पानी समझता है। यहाँ तक कि जब उसके पास पहुँचता है तो उसको कुछ नहीं पाया और ख़ुदा को अपने पास मौजूद पाया। उसने उसका हिसाब पूरा पूरा चुका दिया और अल्लाह ज़रा देर में हिसाब करने वाला है। (३६) (या उनके काम की मिसाल) बड़े गहरे नदी के अन्दरूनी अँधेरों कैसी है कि नदी को लहर ने ढाँक रक्खा है और लहर के ऊपर लहर उसके ऊपर बादल का अँधेरा है एक के ऊपर एक अपना हाथ निकाले तो उम्मेद नहीं कि उसको देख सके और जिसको अल्लाह ही ने रोशनी नहीं दी तो उसके लिए कोई रोशनी नहीं। (४०) [रुकू ५]

क्या तू ने नहीं देखा कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह की पाकी बयान करता है और पक्षी पर फैलाये (उड़ते फिरते हैं) सब ने अपनी नमाज़ और याद (का तरीक़ा) जान रक्खा है। और जो कुछ यह करते हैं अल्लाह उससे जानकार है। (४१) और आसमान और ज़मीन की हुकूमत अल्लाह की है और अल्लाह की तरफ़ लौटकर आना है। (४२) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को हाँकता है फिर बादलों को आपस में जोड़ता है फिर उनको तह पर तह करके रखता है फिर तू बादल में से मेंह को निकलते हुए देखता है और आसमान में जो ओलों के पहाड़ जमें हुए हैं जिस पर चाहता है ओले बरसाता है और जिसे चाहता है उसे बचा देता है बादल की बिजली की चमक आँखों को उचक ले जावे। (४३) अल्लाह रात और दिन की तब्दीली करता रहता है जो लोग सूझ रखते हैं उनके लिए ध्यान की जगह है। (४४) और अल्लाह ने तमाम जानदारों को पानी से पैदा किया है फिर उनमें से कोई (जो) पेट के बल चलते हैं और कोई उनमें से पाँव से चलते हैं और कोई उनमें से चार पाँव से चलते हैं अल्लाह जो चाहता है बनाता है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (४५) हमने खुली आयतें उतारी हैं और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह बताता है। (४६) कहते हैं कि हम अल्लाह पर और पैग़म्बर

पर ईमान ले आये और हुक्म माना फिर इसके बाद इनमें का एक फिर्क़ा नहीं मानता है और ये ईमान लानेवाले नहीं (४७) और जब ख़ुदा और पैग़म्बर की तरफ बुलाये जाते हैं कि उनमें (उनके आपस के झगड़ों का) निबटारा करदें उनका एक फरीक मुह मोड़ता है। (४८) और अगर उनको कुछ हक पहुँचता हो तो कान दबाये रसूल की तरफ चले आवे† हैं। (४९) क्या इनके दिलों में कुछ रोग है या शक में पड़े हैं या डरते हैं कि अल्लाह और उसका रसूल उनकी हकतलफी न कर बैठें। बल्कि यही लोग अन्यायी हैं। (५०) [रुकू ६]

ईमानदारों की बात यह है कि जब ख़ुदा और उनके पैग़म्बर की तरफ फैसले के लिए बुलाये जाते हैं तो कहते हैं हमने सुना और माना और यही लोग छुटकारा पाते हैं। (५१) और जो कोई अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा माने और अल्लाह से डरे और उससे बचता रहे तो ऐसे ही लोग मुराद को पहुँचेंगे। (५२) और अल्लाह की पक्की सौगन्धें खा-खा कर कहते हैं कि अगर आप आज्ञा देवें तो बिला उज्र निकल खड़े हों (ऐ पैग़म्बर) इन लोगों से कहो कि कसमें न खाओ तुम्हारी आज्ञाकारी (की सचाइ) मालूम है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (५३) कहो कि अल्लाह का हुक्म मानो और पैग़म्बर का कहा मानो। फिर अगर तुम भोगोगे तो जो जिम्मेदारी पैग़म्बर पर है उसका जवाबदेह वह है और जो जिम्मेदारी तुम पर है उसके जवाबदेह तुम हो अगर पैग़म्बर के कहने पर चलोगे तो किनारे जा लगोगे और पैग़म्बर के जिम्मे तो (ख़ुदा की आज्ञा) साफ तौर पर पहुँचा देना है। (५४) तुम में से जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनसे ख़ुदा का वादा है कि उनको मुल्क में खलीफा बनायेगा जैसे इन लोगों से पहले खलीफे बनाये थे।

---

† जब अपने को किसी झगड़े में हक पर समझते है तो उसका इन्साफ कराने के लिए तुम्हारे पास दौड़ आते हैं लेकिन अल्लाह की तरफ से उतरी हुई आयतों की परवाह नहीं करते।

उनका दीन जो उसने उनके लिये पसंद किया उसको उनके लिये मजबूत कर देगा और डर जो इनको है इनके बाद इनको (बदले में) अमन देगा कि हमारी पूजा किया करेंगे (और) किसी चीज को हमारा साझी न मानेंगे और जो आदमी इनके बाद इन्कारी हो तो ऐसे ही लोग बे हुक्म हैं । (५५) और नमाज पढ़ा करो और जकात दिया करो और पैग़म्बर के कहे पर चलो शायद तुम पर रहम किया जावे। (५६) (ऐ पैग़म्बर) ऐसा ख्याल न करना कि काफिर मुल्क में (हमें) हरा देंगे और इनका ठिकाना नरक है और बुरी जगह है। (५७) [रुकू ७]

ऐ ईमानवालों ! तुम्हारे हाथ के माल (यानी लौंडी गुलाम) और† तुम्हारे नाबालिग लड़के तीन वक्तों में तुम्हारी इजाजत लेकर घर आवें । एक तो सुबह की नमाज से पहले और दूसरे दोपहर को। जब तुम कपड़े उतारा करते हो और तीसरे रात की नमाज के बाद यह तीन वक्त तुम्हारे पर्दे के हैं इन वक्तों के सिवाय न (वे इजाजत आने देने में) तुम पर कुछ गुनाह है और न (बे इजाजत चले आने में) उन पर (क्योंकि वह) अक्सर तुम्हारे पास आते-आते रहते हैं यों अल्लाह आयतों को तुम से खोल-खोलकर बयान करता है और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है। (५८) जब तुम्हारे लड़के बालिग हो जायें तो जिस तरह इनके अगले इजाजत माँगा करते हैं (इसी तरह) इनको भी इजाजत माँगना चाहिये इस तरह अल्लाह अपनी आयतें खोल खोलकर बयान करता है और अल्लाह जानकार हिकमत वाला है (५९) और बड़ी बूढ़ी औरतें जिनको निकाह की उम्मेद नहीं अगर अपने कपड़े (दुपट्टे या चद्दर) उतार रक्खा करें तो इसमें उन पर कुछ अपराध नहीं बशर्ते कि उनको (अपना) बनाव दिखाना मन्जूर न हो और अगर बचाव रक्खें तो उनके हक में भला है और अल्लाह सुनता जानता है। (६०) अन्धे, लंगड़े और बीमार तुम्हारी

---

† यह तीनों वक्त ऐसे हैं जिन में स्त्री और पुरुष एक दूसरे के साथ होते हैं, इसलिये आज्ञा लिये बिना न आना चाहिये।

जानों पर भी कुछ पाप नहीं कि अपने बाप के घर से या माँ के घर से या अपने भाइयों के घर से या अपनी बहिनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामुओं के घरों से या अपनी मौसियों के घरों से या उन घरों से जिनकी कुंजियाँ तुम्हारे काबू में हैं या अपने दोस्तों के घरों से (फिर इस में भी) तुम पर पाप नहीं कि सब मिलकर खाओ या अलग अलग। फिर जब घरों में जाने लगो तो अपने लोगों को सलाम कर लिया करो क्षेम कुशल की असीष खुदा की ओर से बरकत उम्मद पाकी है। यों अल्लाह हुक्म खोल खोलकर बयान करता है शायद तुम समझो। (६१) [रुकू ८]।

ईमान वाले हैं जो अल्लाह और पैगम्बर पर ईमान लाये हैं और जब किसी ऐसी बात के लिये जिसमें लोगों के जमा होने की जरूरत है, पैगम्बर के पास होते हैं तो जब तक पैगम्बर से इजाजत न ले लें नहीं जाते हैं (ऐ पैगम्बर) जो तुम से इजाजत ले लेते हैं हकीकत में वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाये हैं। तो यह लोग अपने किसी काम के लिये तुमसे इजाजत माँगें तो तुम इनमें से जिसको चाहो इजाजत दे दिया करो। खुदा से उनके लिये क्षमा माँगो अल्लाह बख्शनेवाला मेहर्बान है। (६२) (अब) पैगम्बर (तुममें से किसी को बुलाये तो उन) के बुलाने को आपस में (मामूली बुलाना) न समझो जैसा तुममें एक को एक बुलाया करता है अल्लाह उन लोगों को खूब जानता है जो तुममें से छिपकर सटक जाते हैं। तो जो लोग रसूल की आज्ञा का विरोध करते हैं उनको इससे डरना चाहिये कि उन पर कोई आफत न आ पड़े या उन पर दुखदाई सजा आजाये। (६३) सुनो जो अल्लाह ही का है जो कुछ आसमान और जमीन में है तुम जिस हाल में हो उसे मालूम है और जिस रोज खुदा की तरफ लौटाकर लाये जावोगे तो जैसे काम करते रहे हैं, खुदा उनको बता देगा और अल्लाह सब कुछ जानता है। (६४) [रुकू ६]

सूरे फ़ुर्क़ान

मक्के में उतरी इसमें ७७ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है उसको बरकत है जिसने अपने सेवक (मुहम्मद) पर क़ुरान उतारा ताकि तमाम दुनियाँ के लिए डराने वाला हो (१) आसमान और जमीन की सल्तनत उसी की है और वह कोई बेटा नहीं रखता और न राज्य में उसका कोई साझी है और उसी ने हर चीज को पैदा किया फिर हर एक चीज के लिए एक अंदाजा ठहरा दिया। (२) और काफिरों ने ख़ुदा के सिवाय (दूसरे) पूजित मान लिए हैं जो किसी चीज को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद बनाये हुए हैं और अपने लिए बुरे भले के मालिक नहीं हैं और न मरने के और न जीने के और न जी उठने के मालिक हैं। (३) और काफिर (क़ुरान की निस्बत) कहते हैं कि यह तो निरा झूँठ है जिसको इस (पैग़म्बर) ने गढ़ लिया है और दूसरे लोगों ने उसकी मदद की है यही लोग झूँठ और जुल्म पर हैं। (४) और कहते हैं कि क़ुरान अगले लोगों की कहानियाँ हैं जिसको इस मुहम्मद ने किसी से लिखवा लिया है और वही सुबह शाम पढ़-पढ़ कर सुनाया जाता है। (५) (ऐ पैग़म्बर) कहो यह क़ुरान उसने उतारा है जो आसमान और जमीन की सब छिपी बातों को जानता है वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (६) और कहते हैं कि यह कैसा पैग़म्बर है जो खाना खाता और बाजारों में फिरता है§। इसके पास फरिश्ता क्यों नहीं भेजा गया कि इसके साथ होकर डराता। (७) या इस पर कोई खजाना बरसा होता या इसके पास बाग होता कि उससे खाता और जालिम कहते हैं कि तुम तो ऐसे आदमी के पीछे हो गये हो कि जिस

---

§ काफ़िर समझते थे कि नबी या रसूल साधारण मनुष्य के समान नहीं रहता। उसके साथ हर समय एक फ़रिश्ता रहता है जो दूसरों को बताता रहता है कि यह नबी या रसूल है।

पर किसी ने जादू कर दिया है। (८) (ऐ पैग़म्बर) देखो तुम्हारी बावत कैसी बातें बनाते हैं जिस से गुमराह हो गये और फिर राह पर नहीं आ सकते हैं। (६) [रुकू १]

वह ऐसा बरकत वाला है कि चाहे तो तुम्हारे लिए ऐसे बाग दे कि जिनके नीचे नहरें बहती हों और तुम्हारे लिए महल बना दे। (१०) असली बात यह है कि यह लोग क़यामत को झूँठ समझते हैं और जो लोग क़यामत को झूँठ समझें उनके लिए हमने नरक तैयार कर रक्खा है। (११) जब वह उसको दूर से देखेंगे तो उसकी चिल्लाहट और भुँझलाहट सुनेंगे। (१२) और जब नरक की किसी तंग जगह में मुश्कें बाँधकर डाल दिये जायँगे तो वहां मौत को पुकारेंगे। (१३) फ़िरिश्ते कहेंगे कि एक मौत को न पुकारो बल्कि बहुत मौतों को पुकारो। (१४) (ऐ पैग़म्बर इनसे) कहो कि यह बद्तर है या हमेशा रहने के बाग जिसका वादा परहेज़गारों को मिला है कि उनका बदला यह ठिकाना होगा (१५) और जो चीज़ वह चाहेंगे वहाँ मौजूद होगी हमेशा रहेंगे यह उनका माँगा हुआ वादा तेरे ख़ुदा पर लाज़िम आ गया है। (१६) और जिस दिन ख़ुदा इन काफ़िरों को और (उन पूजितों को) जिनको यह ख़ुदा के सिवाय पूजते हैं जमा करेगा फिर (इनके पूजितों से) पूछेगा कि क्या तुमने मेरे इन दासों को गुमराह किया था या यह (आप से) आप राह भटक गये थे। (१७) (इनके पूजित) कहेंगे कि तू पाक है हमको यह बात किसी तरह शोभा नहीं देती थी कि तेरे सिवाय दूसरे काम सम्भालने वाले बनाते बल्कि तूने इनको और इनके बड़ों को आराम चैन दीं यहाँ तक कि (तेरी) याद को भुला बैठे और यह हलाक होने वाले लोग थे। (१८) (हम काफ़िरों से फ़र्मायेंगे) तुम्हारे इन पूजितों ने तुमको सारी बातों में झुठलाया अब तुम न तो (हमारी सज़ा को) टाल सकते हो और न मदद ले सकते हो और जो तुम में से (शरीक ख़ुदा बनाकर) ज़ुल्म करेगा हम उसको बड़ी सज़ा देंगे। (१६) और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे वह खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते

थे और हमने तुम में एक दूसरे की जाँच को रक्खा है सो देखें ठहरे रहते हो (या नहीं) और तुम्हारा परवर्दिगार देख रहा है। (२०) [रुकू २]।

उन्नीसवाँ पारा (वक़ालल्लज़ीन)

और जो लोग हम से मिलने की उम्मेद नहीं रखते वह कहा करते हैं कि हम पर फरिश्ते क्यों नहीं उतरे या हम अपने परवर्दिगार को देखें (तो यकीन करें) इन लोगों ने अपने दिलों में अपनी बड़ी बड़ाई समझ रक्खी है और हद से बहुत बढ़ गये हैं। (२१) जिस दिन लोग फरिश्तों को देखेंगे उस दिन पापियों को कोइ खुशी न होगी (और फरिश्तों को देख कर) कहेंगे कि किसी आड़ में हो जाओ। (२२) और यह लोग जो काम कर गये हैं अब हम उनकी तरफ ध्यान देंगे और उनको बिखरी हुई धूल कर देंगे। (२३) बैकुण्ठ वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना होगा और दोपहर को सोने की जगह भी अच्छी मिलेगी। (२४) और जिस दिन आसमान बदली से फट जायगा और फिरिश्ते दर्जा बदर्जा उतारे जाँयगे (२५) उस दिन रहमान का सचा राज्य होगा और वह दिन काफिरों को कठिन होगा। (२६) और जिस दिन अपराधी अपने हाथ चबा चबा लेगा और कहेगा कि किसी तरह मैंने पैगम्बर के साथ राह पकड़ी होती। (२७) हाय मेरी कमबख्ती मैं फलाँ (आदमी) को यार न बनाता। (२८) उसने तो शिक्षा आये पीछे भी मुझ को बहका दिया और शैतान आदमियों को समय पर दग़ा देनेवाला है। (२९) और उस समय पैग़म्बर (मुहम्मद खुदा के सामने) अर्ज करेंगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार मेरे गिरोह ने इस कुरान को बकवाद समझा। (३०) और (ऐ पैग़म्बर जिस तरह

तुम्हारे ज़माने के काफ़िर तुम्हारे दुश्मन हैं) इसी तरह पापियों को हम हरेक पैग़म्बर के दुश्मन बनाते आये हैं और हिदायत देने और मदद करने को तुम्हारा परवर्दिगार काफ़ी है। (३१) और काफ़िर कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) पर क़ुरान सारे का सारा एकदम से क्यों नहीं उतारा गया हम इसके द्वारा तुम्हारे दिल को तसल्ली देते रहे और हमने उसे ठहर ठहर कर उतारा (३२) और जो मिसाल यह तेरे पास लाते हैं हम उस का ठीक जवाब और सच्चा बयान तुझे देते रहते हैं। (३३) जो लोग औन्धे मुँह नरक की तरफ़ हाँके जायँगे यही लोग बुरी जगह में होंगे और यही बहुत भटके हुए हैं। (३४)

[रुकू ३]

और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और उनके भाई हारूँ को उनके साथ नायब कर दिया। (३५) फिर हमने आज्ञा दी कि दोनों (भाई) उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया है तो हमने उन लोगों को नष्टभ्रष्ट कर दिया। (३६) और क़ौम नूह ने भी जब पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमने उनको डुबो दिया और उनको लोगों के लिए निशान उदाहरण बना दिया और हमने अन्यायियों को दुःखदाई सज़ा तैयार कर रक्खी है। (३७) (इसी तरह) आद और समूद और खन्दक वालों और उनके बीच-बीच में और बहुत से गिरोहों को (हमने मार डाला)। (३८) और सभों को मिसालें दे देकर समझाया था और हमने उनका सत्यानाश कर दिया (३९) और यह (मक्के के काफ़िर) ज़रूर (क़ौम लूत की उस) बस्ती पर हो आये हैं जिस पर बुरा पथराव बरसाया गया था तो क्या उन्होंने उसे न देखा होगा मगर इन लोगों को (मरे पीछे) जी उठने की उम्मेद ही नहीं। (४०) और (ऐ पैग़म्बर) जब यह लोग तुमको देखते हैं तुम्हारी हँसी बनाते हैं और छेड़ने के तौर पर कहते हैं कि क्या यही है जिनको अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है। (४१) अगर हम मूर्तो (की पूजा) पर जमे न रहते तो इस शख़्स ने हमको हमारे पूज्यों से फिरा दिया था और चंदरोज़ बाद (क़यामत के दिन) जब

यह लोग सजा को देख लेंगे तो जान लेंगे कि कौन गुमराह था। (४२) (ऐ पैग़म्बर) क्या तुमने उस शख्स पर भी नजर की जिसने अपनी चाह को अपना खुदा बना रक्खा है तो क्या तुम निगरानी कर सकते हो। (४३) या तुम ख्याल करते हो कि इन (काफिरों) में अक्सर सुनते या समझते हैं यह तो चौपायों की तरह हैं बल्कि यह (उनसे भी) गये गुजरे हैं। (४४) [रुकू ४]

(ऐ पैग़म्बर) क्या तुमने अपने परवर्दिगार की तरफ नहीं देखा कि उसने साये को क्यों कर फैला रक्खा है और अगर चाहता तो उसको ठहराये रहता। फिर हमने सूरज को साया का कारण ठहरा दिया है। (४५) फिर हमने साया को धीरे-धीरे अपनी तरफ समेट लिया। (४६) और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को ओढ़ना और नींद को आराम बनाया और दिन लोगों के चलने फिरने के लिए बनाया। (४७) और वही है जो अपनी कृपा के आगे हवाओं को खुशखबरी देने को भेजता है और हमने आसमान से पाक पानी उतारा। (४८) ताकि उसके द्वारा मुर्दा (सूखे) शहरमें जान डाल दें और अपने पैदा किये हुए यानी बहुत से चारपायों और आदमियों को उससे पानी पिलायें। (४६) और हमने लोगों में (पानी को) तरह-तरह से बाँटा लेकिन अक्सर लोगों ने कृतघ्नता के सिवाय कुछ न माना। (५०) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में डर सुनाने वाला (यानी पैग़म्बर) उठा खड़ा करते। (५१) तो (ऐ पैग़म्बर) तुम काफिरों का कहा न मानो और कुरान (की दलीलों से) उनका सामना बड़े जोर से करो। (५२) और वही है जिसने दो दरियाओं को मिलाया एक (का पानी) मीठा मजेदार और (एक का) खारी कड़वा और दोनों में एक रोक और अटल आड़ बना दी। (५३) और वही है जिसने पानी (वीर्य) से आदमी को पैदा किया फिर उस को किसी का बेटा या बेटी और किसी का दामाद बहू बनाया और तुम्हारा परवर्दिगार हर चीज पर शक्तिमान है। (५४) और काफिर खुदा के सिवाय (झूठे पूजितों) को पूजते हैं जो न उनको नफा पहुँचा सकते हैं और न उनको नुकसान पहुँचा

सकते हैं और काफ़िर तो अपने परवर्दिगार से पीठ दिये हुए हैं। (५५) और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुमको ख़ुशख़बरी सुनाने और सिर्फ़ डराने के लिए भेजा है। (५६) (इन लोगों से) कहो कि मैं तुमसे इस (ख़ुदा के हुक्म) पर कुछ मज़दूरी नहीं माँगता हाँ जो चाहे अपने परवर्दिगार तक पहुँचने की राह पकड़े। (५७) (ऐ पैग़म्बर) उस ज़िन्दा (चैतन्य) पर भरोसा रक्खो जो अमर है और तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करते रहो और अपने दासों के पापों से वह काफ़ी ख़बरदार है। (५८) जिसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ आसमान और ज़मीन में है (सबको) छः दिन में पैदा किया फिर तख़्त पर जा बैठा (वही ख़ुदा) रहमान है तो उसकी ख़बर किसी ख़बरदार से पूछोगे (५९) और जब काफ़िरों से कहा जाता है कि रहमान ही की पूजा के लिए झुको तो कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है क्या जिसके आगे तुम हमें (सिजदा करने को कहो) उसी के आगे झुकने लगें और उनकी नफ़रत बढ़ती है। (६०) [रुकू ५]

बड़ी बरकत है उसकी जिसने आसमान में बुर्ज बनाये और उसमें चिराग़ और चाँद उजाला करने वाला रक्खा। (६१) और वही है जिसने रात और दिन को जो एक के बाद एक आते जाते रहते हैं ठहराया उन लोगों के लिए जो ग़ौर करना चाहे या शुक्रगुज़ारी करना चाहें। (६२) और रहमान के दास तो वह हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी (नम्रता) के साथ चलें और जब जाहिल उनसे बातें करने लगते हैं तो उनको सलाम करते हैं‡ (६३) और जो रात अपने परवर्दिगार के लिए सिजदा और खड़े रहने में काटते हैं। (६४) और जो कहते हैं हे हमारे परवर्दिगार नरक की सज़ा को हमसे दूर रख क्योंकि उसकी सज़ा बड़ी मुसीबत है। (६५) वह ठहरने की बुरी जगह है और रहने की बुरी जगह है। (६६) और जब वह ख़र्च करते हैं तो वृथा ख़र्च नहीं करते और न बहुत तंगी करते हैं बल्कि उनका ख़र्च औसत दर्जे का होता है। (६७) और जो ख़ुदा के साथ

‡ यानी वह उन से उन्हीं की तरह मूर्खता का व्यवहार नहीं करते।

(किसी) दूसरे पूजित को न पुकारें और वृथा किसी आदमी को जान से न मारें जिसको ख़ुदा ने हराम कर रक्खा है और छिनाले के भी कबूल करने वाले न हों और जो कोई यह काम करेगा वह पाप का बदला भुगतेगा। (६८) क़यामत के दिन उसको दोहरी सज़ा दी जावेगी और अपमान के साथ उसी हाल में हमेशा रहेगा। (६९) मगर जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक काम किये तो अल्लाह ऐसे लोगों के पापों को नेकियों से बदल देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है (७०) और जिसने तोबा की और भले काम किये वह हक़ीक़त में ख़ुदा की तरफ़ फिर आये हैं। (७१) और वह जो झूठ गवाही न दें और जब बेहूदा कामों के पास होकर गुज़रें वज़ेदारी के साथ गुज़र जावें। (७२) और वह लोग जब उनको उनके परवर्दिगार की आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाई जावें तो अन्धे और बहरे होकर उन पर नहीं गिरते + (७३) और जो दुआयें माँगते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको हमारी बीबियों और संतान से आँखों की ठंडक दे और हमको परहेज़गारों का पेशवा बना। (७४) यही लोग हैं जिनको उनके सब्र के बदले में (बैकुण्ठ में रहने को) बालाख़ाने (ऊपर के मकान) मिलेंगे और दुआ और सलाम के साथ वहाँ उनकी अगवानी की जायगी। (७५) (और यह लोग) बैकुण्ठ में हमेशा रहेंगे क्या अच्छी जगह ठहरने के लिए है और क्या ही अच्छी जगह रहने के लिए है। (७६) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि मेरा परवर्दिगार तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता सो तुमने उसकी आयतों को झुठलाया पस अब तो उसका बवाल पड़ कर रहेगा। (७७) [रुकू ६]

+ यानी यह लोग बुरी बातों से बच बचते रहते हैं।

सूरे शुअरा ।

मक्के में उतरी इसमें २२७ आयतें और ११ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है । तो-सीन-मीम (१) यह उसी किताब की आयतें हैं जिसका मतलब साफ है (२) (ऐ पैग़म्बर) शायद तू अपनी जान घोंट मारे कि यह लोग ईमान (क्यों) नहीं लाते† । (३) हम चाहें तो इन पर आसमान से एक निशानी उतारें फिर तो इन की गर्दनें उसके आगे झुक कर रह जायेंगी (४) और जब कभी रहमान (ख़ुदा) के पास से उनके पास कोई नई शिक्षा आती है तो उससे मुँह मोड़ते हैं । (५) यह लोग तो झुठला चुके इनको उस (सज़ा) की हकीकत मालूम हो जायगी जिस की हँसी उड़ाया करते थे । (६) क्या इन लोगों ने जमीन की तरफ नहीं देखा कि हमने भाँति-भाँति की अच्छी अच्छी चीजें कितनी उसमें पैदा की हैं । (७) इनमें निशानी है मगर इनमें से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं । (८) तुम्हारा परवर्दिगार शक्तिशाली रहमवाला है । (६) [रुकू १]

और (ऐ पैग़म्बर) जब तेरे परवर्दिगार ने मूसा को बुलाया कि (इन) ज़ालिम लोगों (यानी फिरऔन की कौम) के पास जाओ । (१०) क्या यह लोग नहीं डरते । (११) (मूसा ने) अर्ज किया कि हे मेरे परवर्दिगार मैं डरता हूँ कि यह मुझे झुठलायेंगे । (१२) और (बातें करने में) मेरा दम रुकता है और मेरी ज़बान नहीं चलती (हकलाती है) इसलिये हारूं को ईश्वरी संदेसा भेज दे कि मेरे साथ चले (१३) और मेरे ज़िम्मे एक पाप उनका दावा भी है (कि मैंने एक क़िब्ती को मार दिया था) सो मैं डरता हूँ कि मुझ को मार न डाल । (१४) फ़र्माया हरगिज़ तुम दोनो (भाई) हमारी निशानियां लेकर जाओ हम

---

† मुहम्मद साहब इस बात से बहुत दुखी रहते थे कि काफ़िर ईमान नहीं लाते थे । यह आयतें उनको संतोष दिला रही हैं ।

तुम्हारे साथ सुनते रहेंगे। (१५) यह दोनों फिरऔन के पास आये और कहा कि हम सारे संसार के पालनकर्त्ता के भेजे हुये हैं। (१६) तू इसराईल के बेटों को हमारे साथ भेजदे। (१७) फ़िरऔन ने कहा क्या हमने तुमको अपने यहाँ (रखकर) बच्चा की तरह नहीं पाला था तू बरसों हमारे यहा रहा। (१८) और तूने एक हरकत भी की थी (यानी क़िब्ती का खून) और तू कृतघ्नी है। (१९) (मूसा ने) कहा कि मैं उन दिनों वह (हरकत) कर बैठा जब मैं ग़लती पर था। (२०) फिर जब तुमको तुमसे डर लगा मैं भाग गया फिर मेरे पालनकर्त्ता ने मुझे (पैग़म्बरी के) अधिकार दिये और पैग़म्बरों में दाख़िल कर लिया। (२१) और यह अहसान है जो तू मुझ पर रखता है (या) कि तूने इसराईल की संतान को ग़ुलाम बना रक्खा है‡ (२२) फ़िरऔन ने पूछा तमाम जहान का पालनकर्त्ता कौन है। (२३) मूसा ने कहा, आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनमें है सबका वही मालिक है अगर तुम यक़ीन करो (२४) फ़िरऔन ने अपने मुसाहिबों से जो उसके आस पास थे कहा क्या तुम (मूसा की) बातें नहीं सुनते। (२५) (मूसा ने) कहा वही तुम लोगों का और तुम्हारे बाप दादा का पालनकर्त्ता है। (२६) (फ़िरऔन ने) कहा कि (हो न हो) तुम्हारा पैग़म्बर जो तुम्हारे पास भेजा गया बावला है। (२७) (मूसा) ने कहा (वही) पूर्व और पश्चिम का और जो कुछ उनके बीच म है सबका मालिक है अगर तुम अक़्ल रखते हो। (२८) (फ़िरऔन ने) कहा अगर मेरे सिवाय (किसी और को) तूने ख़ुदा माना तो मैं तुमको क़ैद कर दूँगा (२९) (मूसा ने) कहा कि अगर मैं तुमको एक खुला हुआ चमत्कार दिखाऊँ। (३०) (फ़िरऔन ने) कहा अगर तू सच्चा तो ला दिखा। (३१) इस

---

‡ फ़िरऔन ने मूसा को पाला-पोसा था और उनको बहुत दिनों अच्छी तरह रखा था मगर मूसा ने अपनी अपेक्षा अपनी जाति का अधिकतर ख़याल किया और उनको स्वतंत्र करना चाहा इसी लिए यह कहा, "मेरे लालन-पालन का एहसान मुझ पर क्या रखता है जब कि तूने मेरी क़ौम को दास बना रखा है।

पर (मूसा ने) अपनी लाठी डालदी तो क्या देखते हैं कि वह एक जाहिरा सांप है । (३२) और अपना हाथ बाहर निकाला तो निकालने के साथ सब देखने वालों की नजर में वह चमक रहा था । (३३) [रुकू २]

(फ़िरऔन ने) अपने दरबारियों से जो इर्द गिर्द थे कहा कि इसमें शक नहीं कि यह कोई जान कार जादूगर है (३४) और चाहता है कि तुमको अपने जादू से देश से बाहर निकाल दे तो तुम लोग क्या सलाह देते हो । (३५) (दरबारियों ने) निवेदन किया कि मूसा और हारू को रोको और मुल्क में जादूगरों के जमा करने को हल्कारे दौड़ाओ । (३६) कि वह तमाम बड़े बड़े जादूगरों को तुम्हारे पास लायें । (३७) ठहरे हुए दिन जादूगर जमा किये गये (३८) और लोगों में मनादी करादी गई कि अब तुम लोग जमा होगे या नहीं । (३९) अगर जादूगर (मूसा) ही जीत में रहा तो शायद हम उन्हीं का दीन क़बूल करलें । (४०) तो जब जादूगर आये उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि अगर हम जीते तो हमको क्या इनाम मिलेगा । (४१) (फ़िरऔन ने) कहा हाँ जरूर जीतने पर तुम पास बैठने वालों में से होगे† । (४२) मूसा ने (जादूगरों से) कहा जो कुछ तुमको डालना मंजूर हो डाल चलो । (४३) इस पर जादूगरों ने अपनी रस्सियां और अपनी लाठियां डालदीं और बोले कि फ़िरऔन के प्रताप से हम ही जबरदस्त रहेंगे । (४४) इस पर मूसा ने अपनी लाठी (मैदान में) डाली तो बस वह उन (जादुओं) को जो जादूगर बना लाये थे एक दम से निगलने लगी । (४५) यह देख कर जादूगर सिजदे में गिर पड़े । (४६) (और) बोले कि हम तमाम जहान के परवर्दिगार पर ईमान लाये । (४७) जो मूसा और हारूँ का परवर्दिगार है । (४८) (फ़िरऔन ने) कहा क्या तुम मेरे हुक्म देने से पहले ईमान लाये हो न हो यह (मूसा) तुम्हारा बड़ा गुरु है जिसने तुम्हें जादू

† यानी हमारे दरबारियों में से हो जाओगे जिससे ऊँचा कोई पद नहीं हो सकता ।

सिखलाया है सो तुमको मालूम हो जायगा। मैं तुम्हारे हाथ और पाँव उल्टे काटूँगा और तुम सबको फाँसी दूँगा। (४९) वह बोले कुछ हर्ज की बात नहीं हम अपने परवर्दिगार की तरफ लौट जावेंगे×। (५०) हम उम्मेद रखते हैं कि हमारा परवर्दिगार हमारे अपराधों को क्षमा कर दे इसलिए कि हम सबसे पहले ईमान लाये हैं। (५१) [रुकू ३]

और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि हमारे बन्दों (यानी इसराइल की संतान) को रातों रात निकाल लेजा (क्योंकि) तुम्हारा पीछा किया जावेगा। (५२) इस पर फिरऔन ने शहरों में हल्कारे दौड़ाये। (५३) कि इसराइल की संतान थोड़ी सी जमात हैं। (५४) और उन्होंने हमको क्रोध दिलाया है। (५५) और हमारी जमात हथियार बन्द है (५६) गरज हमने फिरऔन के लोगों को बागों से चश्मों से (५७) और खजानों से और इज्जत की जगह से निकाल बाहर किया। (५८) ऐसा ही और इसराईल की संतान को उन चीजों का वारिस बनाया। (५९) तो फिरऔन के लोगों ने दिन निकलते निकलते इसराईल के बेटों का पीछा किया। (६०) फिर जब दोनों जमातें एक दूसरे को देखने लगीं तो मूसा के लोग कहने लगे कि अब तो दुश्मनों ने हमको घेर लिया। (६१) (मूसा ने) कहा हरगिज नहीं मेरे साथ मेरा परवर्दिगार है वह मुझको राह दिखलाएगा। (६२) फिर हमने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी दरिया पर दे मारो चुनाँचि (मूसा ने दे मारी) दरिया फट गया और हरेक टुकड़ा गोया एक बड़ा पहाड़ था। (६३) और उसी मौके के पास हम दूसरे लोगों (फिरऔन वालों) को लिया लाये। (६४) और हमने मूसा और जो लोग उनके पास थे सबको बचा लिया। (६५) फिर दूसरों (फिरऔन वालों) को डुबो दिया। (६६) इसमें एक चमत्कार है और फिरऔन के लोगों में से अकसर ईमान लाने वाले न थे। (६७) और (ऐ पैगम्बर) तुम्हारा परवर्दिगार बलवत्ता जबरदस्त रहमवाला है। (६८) [रुकू ४]

× यानी अधिक से अधिक तू हम को मार डालेगा और क्या कर लेगा।

(और ऐ पैग़म्बर) इन लोगों को इब्राहीम का हाल सुनाओ। (६९) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से पूछा कि तुम किस चीज को पूजते हो। (७०) तो उन्होंने जवाब दिया कि हम मूर्त्तों को पूजते हैं और उन्हीं की सेवा करते रहते हैं। (७१) (इब्राहीम ने) पूछा कि जब तुम (उनको) पुकारते हो तो क्या यह तुम्हारी सुनते हैं (७२) या तुमको फायदा या नुक्सान पहुँचा सकते हैं। (७३) उन्होंने कहा नहीं मगर हमने अपने बड़ों को ऐसा ही करते देखा है (७४) (इब्राहीम ने) कहा भला देखो तो जिन्हें तुम पूजते हो। (७५) तुम और तुम्हारे अगले बाप दादा पूजते चले आये हों (७६) यह तो मेरे दुश्मन हैं मगर ससार का परवर्दिगार साथी है (७७) जिसने मुझको पैदा किया वही राह दिखाये। (७८) और जो मुझको खिलाता और पिलाता है। (७९) और जब मैं बीमार पड़ता हूँ वही मुझको अच्छा करता है। (८०) और जो मुझको मारेगा और फिर जिलायेगा। (८१) और मुझे उम्मेद है कि बदले के दिन मेरे अपराध माफ करेगा। (८२) ऐ मेरे परवर्दिगार मुझको समझ दे और नेक दासों में शामिल कर। (८३) और आनेवाली नस्लों में मेरा अच्छा जिक्र जारी रख। (८४) और जन्नत की नियामतों के वारिसों में से मुझको (भी एक वारिस) बना। (८५) और मेरे बाप को क्षमा कर, वह गुमराहों में से था। (८६) और जब लोग (दुबारा जिन्दा कर) खड़े किये जायेंगे मुझको उस दिन बदनाम न कर। (८७) उस दिन माल और बेटे काम न आवेंगे। (८८) मगर जो पाक दिल लेकर खुदा के सामने हाजिर होगा। (८९) और बैकुण्ठ परहेज़गारों के क़रीब लाया जायगा। (९०) और नरक गुमराहों के वास्ते खोला जायगा। (९१) और उनसे कहा जायगा कि खुदा के सिवाय जिन चिज़ों को तुम पूजते थे कहाँ हैं। (९२) क्या वह तुम्हारी कुछ मदद कर सके या बदला ले सकते हैं। (९३) फिर वे (पूजित) और वह (लोग) औंधे मुँह नरक में झोंक दिये जायेंगे। (९४) और इबलीस का सब लश्कर औंधे मुँह नरक में ढकेल दिया जायगा। (९५) गुमराह और उनके पूजित

वहां (आपस में) झगड़ते हुए यों कहेंगे। (९६) खुदा की क़सम हम तो ज़ाहिरा गुमराही में थे (९७) जब हमने तुमको संसार के परवर्दिगार के बराबर ठहराया था। (९८) और हमको तो (पृथिवी) पापियों ने गुमराह किया था। (९९) तो न तो कोई (हमारी) सिफ़ारश करने वाला है। (१००) और न कोई दिली दोस्त। (१०१) तो यदि हमको (दुनियां में) फिर लौटकर आना हो तो हम ईमानवालों में रहें। (१०२) बेशक (इब्राहीम के) इस (क़िस्से) में चमत्कार है और इब्राहीम के गिरोह में अक्सर ईमान लानेवाले न थे। (१०३) और (पैग़म्बर) तेरा परवर्दिगार ज़बरदस्त रहमवाला है (१०४) [रूक ५]

(इसी तरह) नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया। (१०५) जब उन से उनके भाई नूह ने कहा क्या तुम (लोग खुदा से) नहीं डरते। (१०६) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (१०७) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१०८) और मैं इस (समझाने) पर तुम से मज़दूरी नहीं मांगता। मेरी मज़दूरी तो दुनियां के परवर्दिगार पर है। (१०९) खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (११०) वह कहने लगे कि क्या हम तुम्हारी बात को मान लें और (हम देखते हैं) छोटे† दर्जे के (लोग) तुम्हारे पीछे हो गये हैं। (१११) कहा जो यह लोग करते रहे हैं मुझको क्या ख़बर है। (११२) इनका हिसाब तो सिर्फ़ अल्लाह पर है अगर तुम समझो। (११३) और मैं ईमान वालों को धक्का देने वाला नहीं हूँ। (११४) मैं तो (लोगों को) साफ़ तौर पर (खुदा की सज़ा से) डराने वाला हूँ। (११५) वह बोले नूह अगर तू (अपनी हरकत से) बाज़ न आया तो ज़रूर पत्थरों से मारा जायगा। (११६) (नूहने) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार मेरी क़ौम ने मुझको झुठलाया। (११७) तू मुझ में और इन लोगों में फ़ैसला करदे और मुझे और ईमानवालों को छुटकारा दे। (११८) फिर हमने नूह और उन लोगों को जो भरी हुई किश्ती में उनकेसाथ थे (तूफ़ान से) बचा दिया। (११९) फिर

† हर सुधार करने वाले के साथ निम्न श्रेणी के लोग होते हैं इसी तरह नूह पर ईमान लाने वाले भी थे।

इसके बाद हमने बाकी लोगों को डुबो दिया। (१२०) इस में अलबत्ता शिक्षा है और नूह के गिरोह के बहुत लोग ईमान लाने वाले न थे। (१२१) और (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारा परवर्दिगार अलबत्ता वही जोरावर रहमवाला है। (१२२) [रूकू ६]

(इसी तरह क़ौम) आदने पैग़म्बरों को झुठलाया। (१२३) जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा क्या तुम (खुदा से) नहीं डरते। (१२४) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ । (१२५) वो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१२६) और मैं इस पर तुम से कुछ (बदला) तो नहीं माँगता मेरी उजरत तो बस संसार के परवर्दिगार पर है। (१२७) क्या तुम हर ऊँची जगह पर बेज़रूरत यादगारें§ बनाते हो। (१२८) और (बड़ी कारीगरी के) महल बनाते हो गोया तुम (संसार में) हमेशा रहोगे। (१२९) और जब हाथ डालते हो तो बड़ी× सख्ती से पकड़ते हो। (१३०) वो खुदा से डरो और मेरा कहा मानों। (१३१) और उस (के कोप) से डरो जिसने तुम्हारी (तमाम) चीज़ों से मदद की जो तुमको मालूम है। (१३२) चारपायों और बेटों से। (१३३) और बागों और चश्मों से (तुम्हारी) मदद की। (१३४) मैं तुम्हारी बाबत बड़े दिन की सजा से डरता हूँ। (१३५) वह बोले तुम हमको शिक्षा करो या न करो हमको (तो सब) बराबर हैं। (१३६) यह शिक्षा देना अगले लोगों का एक स्वभाव है। (१३७) और हम पर कोई दुःख नहीं पड़ने का। (१३८) गर्ज क़ौम आद ने हूद को झुठलाया वो हमने उनको मार डाला इसमें एक शिक्षा है और हूद की क़ौम में अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (१३९) और (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारा परवर्दिगार जोरावर रहमवाला है। (१४०) [रूकू ७]

समूद ने पैग़म्बरों को झुठलाया। (१४१) फिर उनके भाई सालेह ने उनसे कहा कि क्या तुम (खुदा से) नहीं डरते। (१४२) मैं

---

§ लोगों को ऊंची ऊंची इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था।

× यानी जब अत्याचार करते हो तो कठोर हो जाते हो।

तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (१४३) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (१४४) और मैं इस पर तुम से कुछ मज़दूरी नहीं चाहता और मेरी मज़दूरी तो संसार के परवर्दिगार पर है। (१४५) क्या जो चीज़ें यहाँ हैं। (१४६) (यानी) बाग़ों और चश्मों में। (१४७) और खेतों और खजूरों में जिनके गुच्छे (मारे बोझ के) टूटे पड़ते हैं। (१४८) तुम इन्हीं में छोड़ दिये जाओगे ख़ुशी से पहाड़ों को काट-काट कर घर बनाते हो। (१४९) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१५०) और (हद से) बढ़े जाने वालों के कहे में न आ जाना। (१५१) जो मुल्कों में फ़साद डालते हैं और दुरुस्ती नहीं करते। (१५२) वह बोले तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (१५३) तुम भी हम ही जैसे आदमी हो और अगर सच्चे हो तो कोई चमत्कार ला दिखाओ (१५४) (सालेह ने) यह ऊँटनी चमत्कार है पानी पीने की (एक दिन की) बारी इसकी है और तुम्हारे पानी पीने को एक दिन‡ मुक़र्रर है। (१५५) और इसको किसी तरह का नुकसान न पहुँचाना वरना बड़े दिन की सज़ा तुमको आयेगी। (१५६) इस पर (भी) लोगों ने उसकी कूँचें (एड़ी के ऊपर के हिस्से) काट डाले फिर पछताये। (१५७) आख़िरकार उनको सज़ा ने पकड़ लिया इसमें (भी एक बड़ी) शिक्षा है और सालेह कौम के बहुत से लोग ईमानलाने वाले न थे। (१५८) और (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारा परवर्दिगार ज़ोरावर रहमवाला है (१५९) [रुकू ८]

(इसी तरह) क़ौम लूतने पैग़म्बरों को झुठलाया। (१६०) जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा क्या तुम नहीं डरते। (१६१) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (१६२) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (१६३) और मैं इसपर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगता मेरी मज़दूरी तो संसार के परवर्दिगार पर है। (१६४) क्या तुम दुनिया के

‡ हज़रत सालेह की ऊँटनी को भागते देख कर दूसरे मवेशी भाग जाते थे इसलिये यह ठहरी कि एक दिन ऊँटनी घाट पर जाय दूसरे दिन और पशु जायें।

लोगों में से लड़कों पर दौड़ते हो† । (१६५) और तुम्हारे पालनकर्त्ता ने जो तुम्हारे लिये बीबियां दी हैं उन्हें छोड़ देते हो बल्कि तुम सरकश क़ौम हो । (१६६) वह बोले लूत अगर तुम (इन बातों से) बाज़ न आवोगे तो देश से निकाल बाहर करेंगे । (१६७) (लूत ने) कहा कि मैं तुम्हारे (इस) काम का दुश्मन हूँ । (१६८) (लूत ने दुआ की कि) ऐ मेरे परवर्दिगार मुझको और मेरे घर वालों को इन (नापाक) कामों से जो यह लोग करते हैं छुटकारा दे । (१६९) फिर हमने लूत को और उनके घर वाला को सबको छुटकारा दिया । (१७०) मगर (लूत की बूढ़ी औरत बाकी रही§ । (१७१) फिर हमने बाकी लोगों को हलाक कर मारा । (१७२) और इन पर पत्थर बरसाये बुरा पत्थरों का बरसाना था जो इन लोगों पर बरसा जो (हमारी सज़ा से) डराये गये थे । (१७३) इसमें निशानी है और लूत की क़ौम के बहुधा लोग तो ईमान लाने वाले न थे । (१७४) और तुम्हारा परवर्दिगार ज़ोरावर रहम वाला है । (१७५) [रुकू ६]

(इसी तरह) बनके रहनेवालों ने पैग़म्बरों को झुठलाया । (१७६) जब शुऐब ने उनसे कहा क्या तुम (ख़ुदा से) नहीं डरते । (१७७) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ । (१७८) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो । (१७९) और मैं इस पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं चाहता मेरी मज़दूरी तो संसार के परवर्दिगार पर है । (१८०) (कोई चीज़ पैमाने से नापकर दिया करो तो) नाप भर कर दिया करो (लोगों को) नुक़सान पहुँचाने वाले न बनो । (१८१) और तौला करो तो (तराज़ू की डंडी) सीधी रख कर तौला करो । (१८२) और लोगों को उनकी चीज़ें (जो ख़रीदें) कमी से न दिया करो और मुल्क में फ़साद फैलाते

---

† यह जाति स्त्री का काम सुन्दर बालकों से निकालती थी । अर्थात महा पाप करती थी

§ लूत को पहले ही से ईश्वर के कोप आने का समाचार मिल चुका था । उन्होंने जब अपनी पत्नी से बस्ती बाहर निकल चलने को कहा तो उसने न माना और अन्त में नगर निवासियों के साथ नष्ट हो गई ।

न फिरो। (१८३) और उस (ख़ुदा) से डरते रहो जिसने तुमको और तुमसे अगलों को पैदा किया। (१८४) वह बोले तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (१८५) और तुम तो हमारी तरह के एक आदमी हो और हम तुमको झूठा ही समझते हैं। (१८६) और सच्चे हो तो हम पर आसमान से एक टुकड़ा गिरादो। (१८७) (शुऐब ने) कहा जो तुम कर रहे हो मेरा परवर्दिगार उसको खूब जानता है। (१८८) गरज़ उन लोगों ने शुऐब को झुठलाया तो उनको सायबान† की सज़ा ने आ घेरा। बेशक सायबान ही की सज़ा थी। (१८९) इसमें बेशक शिक्षा है और शुऐब के गिरोह के बहुधा लोग ईमान लाने वाले न थे। (१९०) और तुम्हारा परवर्दिगार ज़ोरावर रहमवाला है। (१९१) [रुकू १०]

और (यह क़ुरान) दुनिया के परवर्दिगार का उतारा हुआ है। (१९२) इसको जिब्राईल अमीन ने उतारा है। (१९३) तेरे दिल पर ताकि तू डराने वालों में हो जाय। (१९४) साफ़ अरबी ज़बान में। (१९५) इसकी ख़बर अगले पैग़म्बरों की किताबों में है। (१९६) क्या लोगों के लिये यह दलील नहीं है कि इसराईल के बेटों में विद्वान इस होनहार से जानकार हैं। (१९७) और अगर हम क़ुरान को किसी ऊपरी ज़बान वाले पर (उसकी ज़बान में) उतारते। (१९८) और वह उसे इन (अरब वालों) को पढ़कर सुनाते तो वह उस पर ईमान न लाते। (१९९) इसी तरह के इन्कार को हमने अपराधियों के दिल में जमा दिया है। (२००) जब तक दुःखदाई सज़ा न देख लें इस पर ईमान न लावेंगे। (२०१) वह (सज़ा) इन पर यकायक इनके सामने आजायगी और इनको ख़बर भी न होगी। (२०२) फिर कहेंगे हमें कुछ मुहलत मिल सकती है। (२०३) क्या यह लोग हमारी सज़ा के लिये जल्दी मचा रहे हैं। (२०४) तो (पैग़म्बर) ज़रा देखो तो सही अगर हम चन्द साल इनको (दुनिया के) फ़ायदे उठाने दें।

---

† बादल ऐसा छाया जैसे सायबान सर पर तान दिया जाये। इस बादल से पानी की जगह आग बरसी।

(२०५) फिर जिस सज़ा का इनसे वादा किया जाता है वह उनके सामने आवेगी। (२०६) तो वह जो इन्होंने (दुनिया के) फ़ायदे उठा लिये इनके क्या काम आ सकते हैं। (२०७) और हमने किसी गाँव को नहीं मारा जब तक उनके पास डर सुनानेवाले (पैग़म्बर) न आये। (२०८) याद दिलाने को और हमारा काम जुल्म करना नहीं है। (२०९) और इस (क़ुरान) को (जैसा यह लोग खयाल करते हैं) शैतान लेकर नहीं उतरे (२१०) और न यह काम उनके करने का है और न वह (इसको) कर सकते हैं। (२११) वह तो सुनने से दूर रक्खे गये हैं। (२१२) तो (पैग़म्बर) तुम ख़ुदा के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकारने लगना वरना तुम भी सज़ा में फँस जाओगे। (२१३) और अपने पास के रिश्तेदारों को (ख़ुदा की सज़ा से) डराओ। (२१४) और जो ईमानवालों में से तेरे पीछे होगया है उससे ख़ातिर दारी के साथ पेश आओ। (२१५) अगर लोग तेरा कहा न मानें तो कहदे कि मैं तुम्हारे कर्मों से बरी हूँ। (२१६) और (ख़ुदा) जोरावर मिहर्बान पर भरोसा रक्खो। (२१७) वो जो तुम नमाज़ में खड़े होते हो तो वह तुम्हारे खड़े होने को देखता है। (२१८) और नमाज़ियों में तेरा फिरना देखता है। (२१९) बेशक वही सुनता, जानता है। (२२०) (ऐ पैग़म्बर) इन लोगों से कहो कि मैं तुमको बताऊँ कि किस पर, शैतान उतरा करते हैं। (२२१) वह हर झूठे कुकर्मी पर उतरा करते हैं। (२२२) शैतान सुनी सुनाइ बात (उनपर) डाल देते हैं और उनमें बहुतेरे झूठे ही होते हैं। (२२३) कवि (शायर) की बात पर वही चलें जो गुमराह हों। (२२४) क्या तूने न देखा कि यह (कवि) हर एक मैदान में सिर मारते फिरते हैं। (२२५) और ऐसी बातें कहा करते हैं जो ख़ुद नहीं करते। (२२६) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये और बहुतायत से ख़ुदा का ज़िक्र किया और उनपर जुल्म हुये पीछे बदला लिया और जिन्होंने (लोगों पर) जुल्म किये हैं उनको जल्दी मालूम हो जायगा किस करवट पर उलटते हैं। (२२७) [रुकू ११]।

सूरे नम्ल ।

मक्के में उतरी इसमें ९३ आयतें और ७ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। तो सीन। यह क़ुरान यानी किताब की यह आयतें हैं (१) जो ईमान वालों के लिये शिक्षा और ख़ुशख़बरी है (२) जो नमाज़ पढ़ते, ज़कात देते और आख़ीर दिनका भी यक़ीन रखते हैं (३) जो लोग आख़ीर दिन का यक़ीन नहीं रखते हमने उनके काम उन्हें अच्छे कर दिखाये सो वह लोग भटके फिरते हैं। (४) यही लोग हैं जिनको बुरी तरह की सज़ा होती है और यही लोग क़यामत में ज़ियादह नुक़्सान में रहेंगे। (५) और तुमको तो क़ुरान एक हिक्मत वाले ख़बरदार (ख़ुदा) से मिलता है। (६) जब मूसाने अपने घरवालों से कहा कि मुझको आग दिखलाई दी है। मैं वहा से तुम्हारे पास कोई ख़बर या एक सुलगता अंगारा लाऊंगा ताकि तुम तापो। (७) फिर जब मूसा आग के पास आये तो उनको आवाज़ आई कि वह जो आग में है और वह जो इस (आग) के आस पास है बरकत वाला है और अल्लाह तमाम संसार का परवर्दिगार और पाक है। (८) (ऐ मूसा) मैं ज़ोरावर हिक्मत वाला अल्लाह हूँ। (९) और अपनी लाठी डाल तो जब (मूसा ने) देखा कि लाठी चल रही है मानिन्द ज़िन्दा सांपके तो पीठ फेरकर भागे और पीछे न देखा (हमने फ़र्माया) मूसा डरो मत हमारे पास पैग़म्बर नहीं डरा करते। (१०) मगर (जिसने) कोई क़सूर किया हो फिर अपराध के बाद नेकी की तो मैं बख़्शनेवाला मिहर्बान हूँ। (११) और अपना हाथ अपनी छाती पर रख फिर निकालो तो वह बे रोग सफ़ेद निकलेगा। फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लोगों की तरफ़ यह नये चमत्कार हैं। कि ये अन्यायी हैं। (१२) सो जब उनके पास हमारे आँखें खोल देने वाले चमत्कार आये तो कहने लगे, कि यह तो ज़ाहिरा जादू है। (१३) और बावजूद कि उनके दिल क़बूल कर चुके थे।

(मगर) उन्होंने हेकड़ी और शेखी से उन्हें न माना सो (पैग़म्बर) इन झगड़ालुओं का कैसा अन्त हुआ। (१४) [रुकू १]

और हमने दाऊद और सुलेमान को इल्म दिया था और दोनों न कहा कि खुदा का धन्यवाद है जिसने हमको अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर बुजुर्गी दी है। (१५) और सुलेमान दाऊद के वारिस हुए और कहा लोगों हमको (खुदा की तरफ से) परिन्दों की बोली सिखाई गई है और हमको हर तरह के सामान मिले यह (खुदा की) जाहिरा कृपा है। (१६) और सुलेमान का लश्कर जिन्नों और आद मियों और चीटियों में से जमा किये गये तो वह कतार बाघ बाघ कर खड़े किये जाते थे। (१७) यहां तक कि जब चिऊंटियों के मैदान में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा कि चीटियों अपने बिलों में घुस जाओ। ऐसा न हो कि सुलेमान और सुलेमान का लश्कर तुमको कुचल डालें और उनको खबर भी न हो। (१८) चिउँटी की (इस) बात से सुलेमान हँसे और कहने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार मुझको सामर्थ्य दे कि जैसे अहसान तूने मुझ पर और मेरे मा बाप पर किये हैं तेरे उन अहसानोंका शुक्र अदा करूं और ऐसे अच्छे काम करता रहूँ कि जिनको तू पसद फर्मा तू मुझे अपनी बख्शीश से अपने नेक बन्दों में दाखिल कर। (१९) और सुलेमान ने चिड़ियों की हाजिरी ली तो कहा कि क्या वजह है जो मैं हुदहुद को नहीं देखता या वह ग़ैरहाजिर है। (२०) मैं उसको जरूर सख्त सजा दूँगा या उसे हलाल कर डालूंगा या वह हमारे हुजूर में कोई वजह (ग़ैरहाजिरी की) बयान करे। (२१) फिर थोड़ी देर बाद हुदहुद आ गया और कहने लगा कि मुझको एक ऐसा हाल मालूम हुआ है जो तुम्हें मालूम नहीं और मैं (शहर) सबा की एक सच्ची खबर लाया हूँ। (२२) मैंने एक औरत को देखा जो वहां की रानी है और हर तरह के सामान (राज्य) उसको मिले हैं और उनके यहां बड़ा तख्त है। (२३) मैंने मलिका और उसके लोगों को देखा कि खुदा को छोड़कर सूरज को सिजदा करते हैं और शैतान ने उनके कामों को उन्हें अच्छा कर दिखाया है और उनको सीधी राह से

रोक दिया है सो उनको नहीं सूझ पड़ता (२४) फिर खुदाही के आगे (क्यों) न सिजदा करे जो आसमान और जमीन की छिपी हुई चीजों को जाहिर करता है और जो काम तुम छिपाकर करते हो या जाहिरा करते हो वह सबसे जानकार है। (२५) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं वही बड़े तख्त का मालिक है। (२६) कहा अब देखूंगा कि तू सचा है या झूठा। (२७) यह हमारी लिखावट लेकर चला जा और इसको उनकी तरफ डाल दे। फिर उनसे हटजा फिर देख कि वह लोग क्या जवाब देते हैं। (२८) बोलीं§ ऐ दरबारियों एक इज्जत का खत मेरी तरफ डाला गया है। (२९) यह सुलेमान की तरफ से है और शुरू अल्लाह के नाम से है जो बड़ा रहमवाला मिहर्बान है। (३०) और यह कि हमसे सरकशी न करो और हुक्म बरदार बनकर हमारे समाने चले आओ। (३१) [रुकू २]।

बोली ऐ दरबारियों मेरे मामलों में अपनी राय दो जब तक तुम मेरे सामाने मौजूद न हो मैं किसी काम में पक्का हुक्म नहीं दिया करती। (३२) (दरबारियों ने) निवेदन किया कि हम ताक़तवर और बड़े लड़ने वाले हैं और तुझे अख्तियार है जैसा चाहे हुक्म दे देखें तू क्या हुक्म देती है। (३३) (वह) बोली बादशाह जब किसी शहर में दाखिल होते हैं तो उसको खराब करते हैं और वहां के इज्जतदारों को बेइज्जत करते हैं ऐसा ही करेंगे। (३४) और मैं उनकी तरफ नजर भेजकर देखती हूँ कि दूत क्या जवाब लेकर आते हैं। (३५) फिर जब सुलेमान के सामने (नजर लेकर) आया तो (सुलेमान ने) कहा क्या तुम लोग माल से मेरी सहायता करते हो। जो कुछ खुदा ने मुझको दे रक्खा है बिहतर है बल्कि तुम अपने तुहफे से खुश रहो। (३६) (ऐ दूत जिस ने तुझे भेजा है) उन्हीं के पास लौट जा और (हम) ऐसा लश्कर लेकर उन पर चढ़ाई करेंगे कि जिन का उनसे सामना न हो सकेगा और हम वहां से उनको अपमानित करके निकालदेंगे। (३७) (सुलेमान ने) कहा ऐ दरबारियों कोई तुम

---

§ यानी रानी सबा की जिस का नाम बिलक़ीस था।

में ऐसा भी है कि उस औरत का तख्त मेरे पास उठालाये उससे पहले कि वह (इस पर) मुसलमान होकर हाजिर हो। (३८) (इस पर) जिन्नों में से एक बोला कि दरबार के बरखास्त होने के पहिले मैं वह तख्त ले आऊंगा। मैंउसके उठा लाने पर अमानतदार ज़ोरावर हूँ। (३६) (एक आदमी) जिसको किताब का इल्म था बोला कि मैं आँख झपकने के पहले तख्त को तुम्हारे सामने ला हाजिर करूगा (सुलेमान ने) तख्त को अपने पास मौजूद पाया तो बोल उठा कि यह भी मेरे परवर्दिगार का अहसान है ताकि मुझे आजमाये कि मैं धन्यवाद देता हूँ या कृतघ्नता (नाशुक्री) करता हूँ और कोई (खुदा का) धन्यवाद देता है तो वह अपने लिये धन्यवाद देता है और कोई कृतघ्नता करता है तो मेरा परवर्दिगार बेपरवाह दाता है। (४०) (सुलेमान ने) हुक्म दिया कि मलिका (की अक्ल आजमाई) के लिये उस तख्त की सूरत बदल दो ताकि हम देखें कि वह पहचानती है या उनमें होती है जो राह पर नहीं आते। (४१) फिर जब आई तो (उस से) कहा गया कि ऐसा ही तेरा तख्त है यह बोली गोया वही है और (सुलेमान से बोली कि) मुझे तो इससे पहले मालूम होगया था और मैं मान गई थी। (४२) और वह खुदा के सिवाय (सूरज को) पूजती थी उससे उसको रोका गया क्यों कि वह काफ़िरों में से थी। (४३) उससे कहा गया कि महल में दाखिल हो तो जब उसने महल को देखा तो उसको पानी का हौज समझी और दोनों पिंडलिया खोल दी (सुलेमान ने कहा यह तो शीशा) महल है जिसमें शीशे जड़े हैं। बोली ऐ मेरे परवर्दिगार मैंने अपना ही नुक़सान किया और अब मैं सुलेमान के साथ हो कर अल्लाह दोनों जहान के पालनकर्ता पर ईमान लाई। (४४) [रुकू ३]

और हमने (कौम) समूद की तरफ उनके भाई सालेह को (पैग़म्बर बना कर) भेजा था कि खुदा की पूजा करो तो सालेह के आते ही वह लोग दो फरीक हो गये और झगड़ने लगे। (४५) (सालेह ने) कहा भाइयों भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी

मचाते हो अल्लाह के सामने क्यों नहीं क्षमा माँगते शायद तुम पर रहम हो। (४६) वह बोले हमने तुमे और इन लोगों को जो तेरे साथ हैं बड़ा ही बुरा पाया है (सालेह ने) कहा तुम्हारी बदकिस्मती ख़ुदा की तरफ़ से है बल्कि तुम लोग जाँचे जा रहे हो। (४७) और शहर में नौ आदमी थे जो देश में फ़साद करते और सलाह न करते थे। (४८) उन्होंने कहा आपस में ख़ुदा की क़सम खाओ कि हम जरूर सालेह को और उसके घर वालों को रात के समय आ मारेंगे। फिर उसके वारिस से कह देंगे कि सालेह के घर वालों के मारे जाने के समय हम मौजूद न थे और हम बिल्कुल सच कहते हैं। (४६) ग़रज़ वह एक दाव चले और हमभी एक दाव चले और उनको ख़बर भी न हुई। (५०) तो (ऐ पैग़म्बर) देखा कि उनके दाव का कैसा परिणाम हुआ कि हमने उनको और उनकी सब क़ौम को हलाक कर डाला। (५१) अब यह उनके घर उनके अन्यायियों से ख़ाली पड़े हैं इस में उनको जो जानते हैं शिक्षा है। (५२) और जो लोग ईमान लाये और ख़ुदा से डरते थे उनको हम ने बचा लिया। (५३) और लूत ने अब अपनी क़ौम से कहा कि तुम बेशर्मी करते हो और देखते जाते हो‡। (५४) क्या तुम औरतों को छोड़कर मर्दों पर लपकाकर दौड़ते हो बात यह है कि तुम नेसमझ हो। (५५) तो लूत के क़ौम का इसके सिवाय और कुछ जवाब न था कि लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो। (क्योंकि) यह लोग बड़े पाक बनना चाहते हैं। (५६) तो हमने लूत को और उनके ख़ान्दान के लोगों को (सज़ा से) बचा लिया मगर उनकी बीबी जिसकी तक़दीर में लिख चुके थे कि वह पीछे रहने वालों में होगी। (५७) और हमने उनपर पत्थर बरसाये सो उन लोगों पर बरसे जो डराये जा चुके थे। (५८) [रुकू ४]

(ऐ पैग़म्बर) कहो ख़ुदा का शुक्र है और ख़ुदा के बन्दों को सलाम है जिनको उसने क़बूल किया। भला अल्लाह बेहतर है या जिनको ये शरीक ठहराते हैं। (५६) ।

‡ यानी जानते हो कि यह कैसा बुरा काम है।

बीसवाँ पारा (अम्मन खलक)

भला आसमान व जमीन किसने पैदा किये और आसमान से तुम लोगों के लिये (किसने) पानी बरसाया—फिर पानी के जरिये से हमने उम्दह बाग़ पैदा किये—तुम्हारे बस की तो बात न थी कि तुम उन के दरख़्तों को उगा सको क्या ख़ुदा के साथ (कोई और) पूजित है मगर यही लोग राह से मुड़ते हैं (६०) भला किसने जमीन को ठहरने की जगह बनाया और उसके बीच में नदी नाले बनाये और उसके लिये अटल पहाड़ बनाये और दो समुद्रों में ख़ास सीमा रक्खी—क्या अल्लाह के साथ (कोई और) पूजित है कोई नहीं मगर इन लोगों में बहुधा नहीं जानते। (६१) भला बेचैन की पुकार कौन सुनता है जब वह पुकारे और कौन बुराई को टाल देता है और तुमको जमीन में नायब बनाता है। क्या अल्लाह के साथ कोई पूजित है तुम बहुत कम फ़िक्र करते हो। (६२) भला कौन तुम लोगों को जमीन और पानी के अंधियारे में दिखाता है और कौन अपनी कृपा (मेह) के आगे हवाओं को (मेह की) ख़ुशख़बरी देने के लिये भेजता है—क्या अल्लाह के साथ (कोई और) पूजित है ख़ुदा उनके शिर्क से ऊँचा है। (६३) कौन है जो पहले नई सृष्टि पैदा करता है और उसी तरह बारबार पैदा करता है और कौन है जो तुम्हें आसमान व जमीन से रोजी देता है क्या अल्लाह के साथ (और कोई) पूजित है। (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो (६४) कहो कि जितनी पैदाइश आसमान व जमीन में है उसमें से किसी को भी ख़ुदा के सिवाय छिपे हुये भेद की ख़बर नहीं। मगर अल्लाह जानता है और यह नहीं जानते कि किस समय उठाये जायेंगे। (६५) बात यह कि उन लोगों की मालूमात क़यामत के बारे में हार गई बल्कि इसके बारे में इनको शक है यह लोग उससे अन्धे बने हुये हैं। (६६) [रुकू ५]

और जो लोग इन्कार करने वाले हैं वह कहते हैं कि अब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम फिर निकाले जायेंगे। (६७) पहले से भी हमारे और हमारे बाप दादों के साथ और ऐसे वादे होते चले आये हैं यह अगले लोगों के ढकोसले हैं। (६८) ऐ पैग़म्बर इन से कहो कि मुल्क में चलो फिरो और देखो कि अपराधियों का कैसा अंत हुआ। (६९) और इन पर कुछ अफ़सोस न करो और जैसी जैसी तदबीरें कर रहे हैं उनसे तंगदिल न हो। (७०) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब होगा। (७१) क्या आश्चर्य जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो वह तुम्हारे पास आ लगी हो। (७२) और यह कि तुम्हारा परवर्दिगार लोगों पर कृपा रखता है मगर अक्सर लोग शुक्रगुज़ार नहीं होते। (७३) और यह कि जैसी जैसी बातें लोगों के दिलों में छिपी हुई हैं और जो कुछ यह प्रत्यक्ष करते हैं तुम्हारे परवर्दिगार को मालूम है। (७४) आसमान और ज़मीन में ऐसी कोई छिपी हुई बात नहीं (जो) खुली किताब (लोहमहफ़ूज़) में न लिखी हो। (७५) यह क़ुरान इस्राईल के बेटों की बहुधा बातों को जिनमें फ़र्क़ डालते हैं ज़ाहिर करता है। (७६) और यह (क़ुरान) ईमान वालों के हक़ में हिदायत और कृपा है। (७७) (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारा परवर्दिगार अपनी आज्ञा से इनके बीच फ़ैसला करदे और वह ज़ोरावर सबका जानकार है (७८) तो (ऐ पैग़म्बर) अल्लाह ही पर भरोसा रक्खो तुम राह पर रहो। (७९) तुम मुर्दों‡ को नहीं सुना सकते और न बहरों को आवाज़ सुना सकते हो ऐसी हालत में कि वह पीठ फेर कर भाग खड़े हों। (८०) और न तुम अंधों को गुमराही से राह दिखा सकते हो तुमतो बस उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों का विश्वास रखते हैं तो वह मान भी जाते हैं। (८१) और जब वादा (क़यामत) इन लोगों पर पूरा होगा तो हम ज़मीन से इनके लिये एक जानवर निकालेंगे वह इनसे बातें

‡ काफ़िर तुम्हारी बात नहीं मान सकते। वह ऐसे बहरे और अन्धे हैं कि किसी तरह उनको सीधा मार्ग दिखाया और बताया नहीं जा सकता।

करेगा कि लोग हमारी बातों का विश्वास नहीं रखते थे। (८२)
[रूकू ६]

और जब हम हर एक गरोह में से उस एक दल को जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे फिर कतार में खड़े किये जायेंगे। (८३) यहाँ तक कि जब हाजिर होवेंगे तो (ख़ुदा उनसे) पूछेगा कि बावजूद कि तुमने हमारी आयतों को अच्छी तरह समझा भी न था क्यों तुमने उनको झुठलाया (यह नहीं किया तो और) क्या करते रहे। (८४) और चूँकि यह लोग सरकशी करते रहे वादा (सजा) उन पर पूरा हुआ और यह लोग बात भी न कर सकेंगे। (८५) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि हमने रात को बनाया है कि उसमें आराम करें और दिन को बनाया देखने को इसमें उन लोगों को निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं। (८६) और जिस दिन नरसिंहा फूका जायगा तो जो आसमान में हैं और जो ज़मीन में हैं सब काँप जायेंगे मगर जिसको ख़ुदा चाहे वही धैर्य से रहेगा और सब उसके सामने झुके हाजिर होंगे। (८७) और तू पहाड़ों को देख कर ख्याल करता है कि जमें हुए हैं। मगर यह (क़यामत के दिन) बादल की तरह उड़े उड़े फिरेंगे। (यह भी) अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज को खूब पुख्ता तौर पर बनाया है बेशक जो कुछ भी तुम करते हो वह उससे खबरदार है। (८८) जो आदमी अच्छे कर्म लेकर आएगा तो उनको उससे बढ़कर अच्छा (बदला) मिलेगा और ऐसे आदमी उस दिन डर (से छूटकर) चैन में होंगे। (८९) और जो बुरे काम लेकर आवेंगे वह औंधे मुँह नरक में ढकेल दिये जावेंगे तुमको उन्हीं कर्मों की सजा दी जा रही है जो तुम करते थे। (९०) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से कहो कि) मुझको यही हुक्म मिला है कि यह (शहर) मक्का के मालिक की पूजा करूँ जिसने इसको प्रतिष्ठा दी है और सब कुछ उसी का है और मुझे आज्ञा मिली है कि आज्ञाकारी रहूँ। (९१) और यह कि क़ुरान पढ़ पढ़ कर सुनाऊँ तो जो राह पर आ गया सो अपने ही भले को और जो गुमराह हुआ सो तुम कह दो कि मैं तो सिर्फ डराने वाला हूँ। (९२) और कहो

कि ख़ुदा की तारीफ़ हो वह जल्दी तुमको अपनी निशानियाँ दिखलावेगा और तुम उनको पहचान लोगे और जैसे जैसे काम तुम लोग कर रहे हो तुम्हारा परवर्दिगार उनसे बेख़बर नहीं (९३) [रुकू ७]

सूरे क़सस

मक्के में उतरी इसमें ८८ आयतें और ९ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। तोसीनमीम (१) यह खुली किताब की आयतें हैं। (२) (ऐ पैग़म्बर) हम उन लोगों के लिए जो यक़ीन करते हैं मूसा और फ़िरऔन के सच्चे हाल को तेरे सामने सुनाते हैं। (३) फ़िरऔन मुल्क मिस्र में चढ़ रहा था और उसने वहाँ के लोगों के अलग-अलग जत्थे कर रक्खे थे। उनमें से एक गरोह (इस्राईल की सतान) को कमज़ोर कर रक्खा था कि उनके बेटों को हलाक करवा देता और बेटियों को ज़िन्दा रखता-वह फ़सादियों में से था। (४) और हमारा इरादा यह था कि जो लोग मुल्क में कमज़ोर समझे गये थे उनपर नेकी करें और उनको सर्दार बनायें और उनको (राज्य का) मालिक बनायें। (५) और उनको मुल्क में जमावें और फ़िरऔन हामान और उनके लश्कर को जिस बात का डर है वही उनके आगे लावें। (६) और हमने मूसा की माँ को हुक्म भेजा कि उसको दूध पिलाओ फिर जब इनकी बाबत तुमको डर होवे तो इनको नदी में डाल दे और डर न करना और न रंज करना हम इन को फिर तुम्हारे पास पहुँचा देंगे† और इनको

---

† फ़िरऔन को ज्योतिषियों ने बता दिया था कि इसराईल की संतान में एक बच्चा होने वाला है जो तेरे राज्य को छिन्न-भिन्न कर देगा इसीलिये उसने हर लड़के की हत्या करनी प्रारंभ कर दी थी।

मूसा की माँ ने मूसा को एक काठ के सन्दूक़ में रख कर नहर में बहा दिया। वह संदूक़ बहते-बहते फ़िरऔन के महल के पास आया। फ़िरऔन ने उसको निकलवाया, और मूसा को अपने पुत्र के समान पाला।

पैग़म्बरों में से (एक पैग़म्बर) बनावेंगे। (७) तो फ़िरऔन के लोगों ने उसे (बहते को) उठा लिया कि उनका दुश्मन रंज पहुँचाने का कारण हो कुछ शक नहीं कि फ़िरऔन और हामान और उनके सिपाहियों ने ग़लती की थी (८) और फ़िरऔन की औरत (अपने पति से) बोली यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठण्ढक है इसको मार मत डालो आश्चर्य नहीं कि हमारे काम आवे। या इसको अपना बेटा बना लें और उनको ख़बर न थी (९) और मूसा की माँ का दिल बेचैन हो गया और वह ज़ाहिर करने वाली ही थी (कि मैं उसकी माता हूँ) हमने उसके दिल को मज़बूत कर दिया ताकि वह ईमान वालों में रहे। (१०) और (सन्दूक़ को दरिया में डालते समय मूसा की माँ ने) मूसा की बहिन से कहा कि इसके पीछे-पीछे चली जा, तो वह उसको दूर से ऊपरी की तरह देखती रही और फ़िरऔन के लोगों को ख़बर न हुई। (११) और हमने मूसा पर पहिले ही से (धाय के) दूध बन्द कर रक्खे थे (कि वह किसी की छाती मुँह में लेते ही न थे) इस पर (मूसा की बहिन ने) कहा कि कहो तो हम तुमको एक घराने का पता बतावें कि वह तुम्हारे लिए इसकी परवरिश करेंगे और वह इसके हित के चाहनेवाले हैं। (१२) फिर हमने मूसा को उसकी माता‡ के पास भेजा ताकि उसकी आँखें ठण्ढी हों और उदास न रहे और वह भी जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन बहुत लोग नहीं जानते। (१३) [रुकू १]

और जब मूसा अपनी जवानी को पहुँचे और सम्हले हमने उसको हुक्म और बुद्धि दी और सुकर्मियों को हम इसी तरह बदला दिया करते हैं। (१४) और मूसा शहर में आया कि लोग बेख़बर थे तो क्या देखते हैं कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं एक तो उनकी क़ौम का है और एक उनके दुश्मनों में का। तो जो मूसा की क़ौम का था इसने उस आदमी के सामने जो उनके बैरियों में था मदद माँगी। तो मूसा

‡ मूसा को दूध पिलाने के लिये मूसा की माँ ही को चुना गया क्योंकि मूसा ने अपनी माँ के सिवाय और किसी दाई का दूध मुँह ही से नहीं लगाया।

ने उस (वैरी) के घूसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया (फिर) कहने लगे कि यह तो एक शैतानी काम हुआ। कुछ शक नहीं कि शैतान प्रत्यक्ष गुमराह करने वाला है। (१५) (मूसा ने) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार मैंने अपने ऊपर जुल्म किया तू मेरा पाप क्षमा कर खुदा ने उसका पाप क्षमा किया। वह बहुत क्षमा करने वाला दयालु है। (१६) (मूसा ने) कहा कि मेरे परवर्दिगार जैसी तूने मुझ पर कृपा की मैं आइन्दा कभी अन्यायियों का साथी न हूँगा। (१७) सुबह को डरते डरते शहर में गया इतने में क्या देखता है कि वही आदमी जिसने कल इनसे मदद माँगी थी (आज फिर) इसको पुकार रहा है मूसा ने उससे कहा कि इसमें शक नहीं तू तो प्रत्यक्ष खराब राह पर है। (१८) फिर जब मूसा ने उस (किब्ती) को जो इसका और उस फरियाद करने वाले दोनों का दुश्मन था पकड़ना चाहा तो (इसराईल की संतान को) शक हुआ कि मुझ को पकड़ना चाहते हैं और वह चिल्ला उठा कि मूसा जिस तरह तूने कल एक आदमी को मार डाला। क्या मुझको भी मार डालना चाहता है बस तू यह चाहता है कि मुल्क में जुल्म करता फिरे और मेल करा देने वाला नहीं बनना चाहता। (१६) और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उसने खबर दी कि मूसा बड़े बड़े आदमी तुम्हारे बारे में सलाहें कर रहे हैं ताकि तुमको मार डालें तुम निकल जाओ मैं तेरे भले की कहता हूँ। (२०) चुनांचि (मूसा) शहर से निकल भागे और डरते डरते जाते थे कि देखें क्या होता है और (मूसाने) दुआ की ऐ मेरे परवर्दिगार जालिम लोगों से छुटकारा दे। (२१)

[रुकू २]

और जब मदीयन की तरफ मुँह किया तो कहा मुझको अपने परवर्दिगार से उम्मेद है कि वह मुझको सीधी राह दिखायेगा। (२२) और जब शहर मदीयन के कुएँ पर पहुँचा तो देखा कि लोग पानी पिला रहे हैं। और देखा उनसे अलग दो औरतें (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं। (मूसा ने उनसे) पूछा कि तुम्हारा क्या प्रयोजन है

वह बोलीं जबतक (दूसरे) चरवाहे (अपने जानवरों को पानी पिलाकर) हटा न ले जायें हम (अपनी बकरियों को पानी) पिला नहीं सकतीं और हमारे पिता निहायत बूढ़े हैं। (२३) यह सुनकर (मूसा ने) उनके लिये (पानी खींचकर उनकी बकरियों को) पिला दिया फिर हट कर साये में जा बैठे और कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार तू (अपनी कृपा के थाल से इस समय) जो मुझको भेज दे मैं उसका चाहने वाला हूँ। (२४) इतने में उन दो औरतों में से एक† उनकी तरफ शरमाती चली आरही है उसने (मूसा से) कहा कि मेरे पिता तुझे बुला रहे हैं कि वह जो तूने हमारी खातिर (हमारी बकरियों को पानी) पिला दिया था तुम को उसकी मजदूरी देंगे जब मूसा उस (बुड्ढे) के पास पहुँचा और उनसे हाल बयान किया तो (उन्हों ने) कहा डर न कर तू ज़ालिम लोगों से बच गया। (२५) फिर उन दो (औरतों) में से एक ने (अपने बाप से) कहा कि हे बाप तू इन को नौकर रखले क्योंकि अच्छे से अच्छा आदमी जो तू नौकर रखना चाहे मजबूत अमानतदार होना चाहिये। (२६) (उस बुड्ढे ने मूसा से) कहा कि मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक को तुम्हारे साथ ब्याह दूँ इस वचन पर तुम आठ वर्ष मेरी नौकरी करो और अगर तुम (दस वर्ष) पूरे करो तो तुम्हारी भलाई है और मैं तुझे कष्ट नहीं देना चाहता (और) तू मुझ को ईश्वर ने चाहा तो भला आदमी पायेगा। (२७) (मूसा ने) कहा यह बातें मेरे और तेरे बीच हो चुकीं मुझको अख्तियार है दोनों मुद्दतों में से जौन सी (मुद्दत चाहूँ) पूरी करूं मुझ पर किसी तरह का जब्र नहीं और जो मेरे और तेरे बीच में वचन हुवा है अल्लाह उसका साक्षी है। (२८) [रुकू ३]

फिर जब मूसा ने मुद्दत पूरी की और अपनी बीबी को ले कर चल दिया तो तूर (पहाड़) की तरफ़ से इसको एक आग दिखाई दी (मूसा ने)

---

† यह दोनो लड़कियां हज़रत शुऐब की पुत्रियां थीं। जब उन्होंने अपने बाप से मूसा के पानी भर कर पिला देने का हाल बताया तो उन्हों ने मूसा को अपने पास बुला भेजा।

अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (इसी जगह) ठहरो मुझको आग दिखाई दी है। शायद वहाँ से तुम्हारे पास कुछ खबर ले आऊ या आग की एक चिनगारी लेता आऊँ, ताकि तुम लोग तापो। (२६) फिर जब मूसा आग के पास पहुँचा तो (उस) पाक जगह मैदान के दाहिने किनारे दरख्त से उसे आवाज़ सुनाई दी कि मूसा हम सब संसार के पालनेवाले अल्लाह हैं। (३०) और यह कि तुम अपनी लाठी जमीन पर डाल दो तो जब लाठी को डाला और उसको इस तरह चलते हुये देखा कि गोया वह सांप है तो पीठ फेरकर भागा और पीछे को न देखा (हमने फ़र्माया) मूसा आगे आओ और डर न करो तू बेखटके है। (३१) अपना हाथ अपने गिरेबान के अन्दर रक्खो (और फिर निकालो तो वह) बिना किसी बुराई के सफ़ेद निकलेगा। डर दूर होजाने के लिये अपनी भुजा अपनी तरफ़ सिकोड़ ले तात्पर्य (असा लाठी और सफ़ेद हाथ) यह दोनों चमत्कार ख़ुदा के दिये हुये हैं। (जो तुम्हारी मार्फ़त) फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजे जाते हैं क्योंकि वे बेहुक्म हैं। (३२) (मूसा ने) कहा हे मेरे परवर्दिगार मैंने उनमें से एक आदमी का खून कर दिया है। सो डर है कि मुझे मार न डालें। (३३) और मेरे भाई हारूँ जिसकी ज़बान मुझसे ज्यादा साफ़ है सो उसको मेरी मदद के लिये भेज कि वह मुझे सचा करे मुझको डर है कि (फ़िरऔन के लोग) मुझको झुठलायेंगे। (३४) फ़र्माया मैं तेरे भाई को तेरा मददगार बनाऊँगा और तुम दोनों को ऐसी जीत देंगे कि फ़िरऔन के लोग तुम तक पहुँच न सकेंगे तुम दोनों और जो तुम दोनों की पैरवी करें विजयी होंगे। (३५) फिर जब मूसा खुले हुये चमत्कार लेकर उनके पास पहुँचा वह कहने लगे यह बनाया हुआ जादू है और हमने अपने अगले बाप दादों से ऐसी बातें नहीं सुनीं। (३६) और मूसा ने कहा जो आदमी ख़ुदा की तरफ़ से सूझ की बात लेकर आया है और जिसका अन्तिम परिणाम भला होगा मेरे परवर्दिगार को खूब मालूम है। बेशक अन्यायियों का भला न होगा। (३७) और फ़िरऔन ने कहा दरबारियों मुझको तो अपने सिवाय तुम्हारा कोई ख़ुदा मालूम

नहीं। ऐ हामान§ तू हमारे लिये मिट्टी (की ईंटों) आग लगा (पजावा) और हमारे लिये एक महल बनवा कि हम (उसपर चढ़कर) मूसा के खुदा को झाँकें और हम मूसा को झूठा ही समझते हैं। (३८) और फ़िरऔन और उसके लश्करों ने वृथा मुल्कों में बहुत सिर उठाया और उन्होंने ऐसा समझा कि वह हमारी तरफ़ लौटाकर नहीं लाये जायँगे। (३६) तो हमने फ़िरऔन और उसके लश्करों को धर पकड़ा और उनको समुद्र में फेंक दिया सो देख जालिमों का कैसा परिणाम हुआ। (४०) और हमने उनको सर्दार किया कि नरक की तरफ़ बुलाते रहें और क़यामत के दिन इनको मदद मिलने की नहीं। (४१) और हमने इस दुनियाँ में उनके पीछे फटकार लगा दी और कयामत के दिन तो उनका बुरा हाल होना है। (४२) [रुकू ४]

और अगले गिरोहों के मार डाले पीछे हमने मूसा को किताब (तौरात) दी जिससे लोगों को सूझ हो और राह पकड़ें और कृपा हो शायद वे शिक्षा पावें। (४३) और (पैग़म्बर) जिस समय हमने मूसा को हुक्म भेजा तू (तूर के) पश्चिम ओर न था और तू देखने वालों में न था‡। (४४) लेकिन हमने बहुत से गिरोह निकाल खड़े किये और उन पर बहुत सी उम्रें गुज़र गईं और न तुम मदियन के लोगों में रहते थे कि तुम उनको हमारी आयतें पढ़पढ़ कर सुनाते बल्कि हम पैग़म्बर भेजते रहे हैं। (४५) और तू तूर के पास उस वक्त न था जब कि हमने मूसा को बुलाया था बल्कि तेरे परवर्दिगार की कृपा है कि तू उन लोगों को डरावे जिनके पास तुमसे पहिले कोई डराने वाला नहीं आया शायद वह लोग शिक्षा पकड़ें। (४६) और ऐसा न हो कि इन पर अपने ही

---

§ हामान फ़िरऔन का प्रधान मंत्री था। इसी के कहने से फ़िरऔन बेगार लिया करता था।

‡ मक्के वाले कहते थे कि मुहम्मद अपने जी से बात बनाते हैं और कहते हैं कि ये बातें खुदा ने बताई हैं। तो मुहम्मद पिछले पैग़म्बरों की बातें कैसे बताते हैं वह न तो उन के वक्त में थे और न पढ़े लिखे हैं।

करतूत के बदले में कोई आफ़त आ पड़े तो कहने लगें हे मेरे परवर्दिगार तूने मेरे पास कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा जिससे हम तेरी आज्ञा की पैरवी करते और ईमान वालों में होते। (४७) फिर जब हमारी तरफ़ से ठीक बात उनके पास पहुँची तो कहने लगे कि जैसे (चमत्कार) मूसा को मिले थे ऐसे ही इस (पैग़म्बर) को क्यों नहीं मिले क्या जो (चमत्कार) पहिले मूसा को मिले थे लोग उनके इन्कार करने वाले नहीं हुये थे उन्होंने कहा था कि (मूसा और हारूँ) दोनों जादूगर हैं और एक दूसरे के साथी हैं और कहा कि हम दोनों को नहीं मानते। (४८) (पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो ख़ुदा के यहाँ से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों से हिदायत में बढ़कर हो मैं उसपर चलूँ। (४९) तो अगर यह लोग तेरे कहने के बमूजिब न कर दिखायें तो जानलो कि अपनी बुरी चाहों पर चलते हैं और उससे बढ़कर गुमराह कौन है कि ख़ुदा के बिना राह बताये अपनी चाह पर चले। अल्लाह अन्यायियों को राह नहीं दिखाता। (५०) [रुकू ५]

और हम बराबर लोगों पर (आयतें) आज्ञायें भेजते रहे हैं शायद वह शिक्षा पकड़ें। (५१) जिन लोगों को क़ुरान से पहिले हमने किताब दी वह इस पर ईमान ले आते हैं। (५२) और जब उनको क़ुरान सुनाया जाता है तो बोल उठते हैं कि हमको तो इसका विश्वास आगया कि हमारे परवर्दिगार की तरफ़ से भेजा हुआ ठीक है हम तो इससे पहिले के हुक्म मानने वाले हैं। (५३) यही लोग हैं जिनको इनके सब्र के बदले दोहरा बदला दिया जायगा और नेकी से बदी का बदला करते हैं और हमने जो इनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। (५४) और जब बेहूदा बात सुनते हैं तो उससे किनारा पकड़ते हैं और कहते हैं कि हमारे काम हमको और तुम्हारे काम तुमको हैं हम तुम (दूर ही से) सलाम करते हैं हम बेसमझों को नहीं चाहते (५५) (ऐ पैग़म्बर) तू जिसको चाहे हिदायत नहीं दे सकता बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है और वही राह पर आने वालों से

खूब जानकार है‡। (५६) और (लोग) कहते हैं कि अगर हम तेरे साथ सच्चे दीन की पैरवी करें तो हम अपनी जगह से उचक जावें क्या हमने उनको अमन वाले मकान में जहाँ चैन है जगह नहीं दी कि हर तरह के फल यहाँ खिचे चले आवे हैं (इनकी) रोजी हमारे यहाँ से है। मगर यह बहुधा नहीं जानते। (५७) और हमने बहुत सी बस्तियाँ मार डाली जो अपनी रोजी में इतरा चली थीं सो यह उनके घर हैं जो उनके पीछे आबाद नहीं हुए सिवाय थोड़ों के और हम ही वारिस हुये। (५८) और जब तक तेरा परवर्दिगार किसी बस्ती में पैग़म्बर न भेज ले और वह उनको हमारी आयतें पढ़कर न सुना दे तब तक वह बस्तियों को मार नहीं सकता और हम बस्तियों को तभी मार डालते हैं जब कि वहाँ के लोग पापी हो जाते हैं। (५९) और जो कुछ तुम को दिया गया है दुनिया की ज़िन्दगी में बर्तने के लिये है और वहाँ की शोभा है और जो अल्लाह के यहाँ है वहाँ बढ़ कर है और वही स्थायी रहने वाला है क्या तुम लोग नहीं समझते। (६०) [रुकू ६]

भला वह आदमी जिसे हमने अच्छा वादा दिया और वह उसको मिलने वाला है क्या उस के बराबर है जिसे हमने दुनियाँ का बर्तना बर्ता दिया फिर वह क़यामत के दिन पकड़ा हुआ आया। (६१) और जिस दिन ख़ुदा काफ़िरों को बुला कर पूछेगा कि जिन लोगों को तुम हमारे साझी समझते थे कहाँ हैं (६२) जिनपर बात साबित हुई बोल उठेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार यह वही लोग हैं जिन को हमने बहकाया जिस तरह हम ख़ुद बहके थे इसी तरह हम ने उन को भी बहकाया। हम तेरे सामने इन्कार करते हैं यह लोग हम को नहीं पूजते थे। (६३) और कहेंगे कि अपने शरीकों को बुलाओ फिर वह लोग उनको बुलायेंगे तो वह (पूजित) इनको जवाब न देंगे और

‡ मुहम्मद साहब बहुत चाहते थे कि उनके चचा अबू तालिब मुसलमान हो जायें मगर अबूतालिब ने मरते समय तक ईमान लाने से इन्कार किया और कहा कि बेटा मैं जानता हूँ तू सच्चा है पर मैं मुसलमान नहीं हो सकता क्योंकि क़ुरैश कहेंगे कि अबूतालिब ने मौत से डरकर इस्लाम स्वीकार कर लिया।

सजा को देख लेंगे और पछतायेंगे कि हम सची राह पर होते। (६४) और जिस दिन ख़ुदा काफ़िरों को बुलाकर पूछेगा कि पैग़म्बरों को तुमने क्या जवाब दिया (६५) सो उस दिन उनको कोई बात न सूझ पड़ेगी और वह आपस में पूछ पाछ भी न कर सकेंगे। (६६) सो जिसने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो आशा है कि ऐसे आदमी मुक्ति पाने वाले हों। (६७) और (ऐ पैग़म्बर) तेरा परवर्दिगार जो चाहता है पैदा करता और चुन लेता है चुनना लोगों के हाथ में नहीं है अल्लाह पाक है और इनके शरीकों (पूजितों) से ऊँचा है। (६८) और जो यह लोग अपने दिलों में छिपाते और जो ज़ाहिर करते हैं तेरा परवर्दिगार उन को (ख़ूब) जानता है। (६९) और वही अल्लाह है कि उसके सिवाय कोई पूजित नहीं दुनियाँ और क़यामत में उसी की तारीफ़ है और उसी की हुकूमत है और उसी की तरफ़ तुम लोगों को लौट कर जाना है। (७०) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि देखो तो कि अगर अल्लाह क़यामत के दिन तक लगातार तुम पर रात किये रहे तो अल्लाह के सिवाय कौन है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आये क्या तुम नहीं सुनते। (७१) (ऐ पैग़म्बर इनसे) कहो कि अगर अल्लाह क़यामत के दिन तक लगातार तुम पर दिन ही बनाये रहे तो अल्लाह के सिवाय कौन है जो तुम्हारे लिए रात लावे जिस में चैन पाओ क्या तुम लोग नहीं देखते (७२) और अपनी कृपा से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया है। ताकि तुम रात में चैन पाओ और उसकी कृपा की तलाश में लगे रहो शायद तुम कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) हो। (७३) और जिस दिन (ख़ुदा) मुशरिकों को बुलाकर पूछेगा कि कहाँ हैं मेरे शरीक जिन का तुम दावा करते थे। (७४) और हरेक गिरोह में हम एक साक्षी (यानी पैग़म्बर को) अलग करेंगे फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो तब जानेंगे कि अल्लाह की बात सची है और जो बातें बनाते थे उन से गुम हो जायगी। (७५) [रुकूअ ७]

क़ारून मूसा की क़ौम में से था फिर वह उन पर ज़ुल्म करने लगा और हमने उसको इतने ख़ज़ाने दे रक्खे थे कि कई ज़ोरावर मर्द उसकी

कु जियाँ मुशकिल से उठा सकते थे। तब उसकी कौम ने उससे कहा इतरा मत (क्योंकि) अल्लाह इतराने वालों को नहीं चाहता। (७६) और जो तुझ को खुदाने दे रक्खा है उससे अंत के घर की फ़िक्र कर और दुनियाँ में जो तेरा हिस्सा है उसको मत भूल और जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है तू भी भलाई कर और मुल्क में फसाद चाहने वाला न हो। अल्लाह झगड़ा करने वालों को पसंद नहीं करता। (७७) क़ारून बोला यह तो मुझको अपनी लियाक़त से मिला है क्या यह ख्याल न किया कि इस से पहले खुदा कितने गिरोहों का नाश कर चुका जो इस कारून से ज्यादा बल और खजाना रखते थे और पापियों से उनके पाप न पूछे जायँगे। (७८) फिर क़ारून अपनी ठसक से अपनी कौम पर निकला तो जो लोग दुनियाँ की जिन्दगी के चाहने वाले थे कहने लगे कि जैसा कुछ क़ारून को मिला हम को भी मिले बेशक क़ारून बड़ा भाग्यवान है। (७९) और जिन लोगों को समझ मिली थी बोल उठे कि तुम्हारा सत्यानाश हो जो आदमी ईमान लाया और उस ने सुकर्म किये उसके लिये खुदा का सवाब (क़ारून के माल से) बहुत है और यह बात सब्र करने वालों के लिये है। (८०) फिर हमने क़ारून और उसके घर को ज़मीन में धसा दिया ‡ और खुदा के सिवाय कोई गिरोह उसकी मदद को न आया और न अपने तई बचा सका। (८१) और जो लोग कल उस जैसे होने की इच्छा करते थे सुबह उठकर कहने लगे। अरे अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसकी रोजी चाहे बढ़ा दे और (जिसकी चाहे) तङ्ग करे अगर खुदा हम पर कृपा न करता तो हम को भी धँसा देता अरे काफ़िरों का भला नहीं होता। (८२) [रुकू ८]

यह आख़िरत का घर है हम ने उन लोगों के लिये कर रक्खा है जो दुनियाँ में शेख़ी और फ़िसाद नहीं चाहते और परहेजगारों का अच्छा परिणाम है। (८३) जो आदमी सुकर्म करे उसको उससे बढ़कर फल मिलेगा और जो कुकर्म करेगा तो जिन लोगों ने जैसा बुरा किया है वैसाही

‡ इस पर यह आयतें उतरीं।

फ़ज्ल पायेंगे (८४) (वह खुदा) जिसने कुरान को तुमपर कर्तव्य ठहराया है ज़रूर तुमको ठिकाने से लगा देगा (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि मेरा परवर्दिगार जानता है कि कौन सचा दीन लेकर आया है और कौन प्रत्यक्ष गुमराही में है। (८५) और तुम्हें क्या उम्मेद थी कि तुमपर किताब उतारी जायगी मगर तेरे पालनकर्ता की कृपा से दी गई। तू काफ़िरों का साथी न हो। (८६) और ऐसा न हो कि जब खुदा के हुक्म तुम पर उतर चुके हैं उसके बाद यह आदमी तुमको उनसे रोकें और अपने परवर्दिगार की तरफ़ (लोगों को) बुलाये चले जाओ और मुशरिकों में न हो। (८७) और अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकारो उसके सिवाय कोई और पूजित नहीं उसकी जात के सिवाय सब चीज़ें मिटनेवाली हैं उसी की हुकूमत है और उसी की तरफ़ तुमको लौटकर आना है। (८८) [रुकू ६]

सूरे अन्कबूत

मक्के में उतरी इसमें ६६ आयतें और ७ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला कृपालु है। अलिफ़-लाम मीम। (१) क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि इतना कहने पर छूट जायेंगे कि हम ईमान ले आये और उनको आज़माया न जायगा। (२) और हमने उन लोगों को आज़माया था जो इनसे पहिले थे, पस खुदा को चाहिये कि सच्चे भी मालूम हो जायें और झूठे भी मालूम होजायें (३) क्या जो लोग बुरे काम करते हैं उन्होंने समझ रक्खा है कि हमारे क़ाबू से बाहर हो जायेंगे यह लोग क्या बुरी तजवीज़ करते हैं। (४) जिसको अल्लाह से मिलने की उम्मेद हो तो खुदा का वक्त ज़रूर आने वाला है और वह सुनता जानता है (५) और जो मिहनत उठाता है वह अपने ही लिये मिहनत उठाता है खुदा को दुनियाँ के लोगों

की परवाह नहीं है (६) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये हम जरूर उनके पाप उनसे दूर करदेंगे और इनको अच्छे से अच्छे कामों का फल देंगे। (७) और हमने आदमी को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया और अगर माँ बाप जोर दें कि तू किसी को हमारा साझी ठहरा जिसकी तेरे पास कोई दलील नहीं तो तू इनका कहा न मानना। तुमको हमारी तरफ लौटकर आना है फिर जो तुम करते हो हम तुमको बता देंगे। (८) और जो ईमान लाये और उन्हों ने सुकर्म किये हम उनको नेक लोगों में दाखिल करेंगे। (९) और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम खुदा पर ईमान लाये। फिर जब उनको खुदा की राह में दुख पहुँचता है तो लोगों के दुःख को खुदा की सजा के बराबर ठहराते हैं और अगर तेरे परवर्दिगार की तरफ से मदद पहुँचे तो कहने लगते हैं कि हम तुम्हारे साथ थे। भला जो कुछ दुनियाँ जहान के दिलों में है क्या खुदा उससे जानकार नहीं। (१०) और जो लोग ईमान लाये हैं अल्लाह उनको जान लेगा और जान लेगा उनको जो दग़ाबाज़ है। (११) और काफ़िर ईमान वालों से कहते हैं कि हमारे क़ायदे पर चलो और तुम्हारे पाप हम उठायेंगे हालाँकि यह लोग ज़रा भी उनके पाप नहीं उठा सकते और यह झूठे हैं। (१२) मगर हाँ अपने बोझ उठायेंगे और अपने बोझों के साथ और भी बोझ उठायेंगे। और जैसी-जैसी लफ्ट बाज़ियाँ यह लोग करते रहे हैं क़यामत के दिन इनसे पूछा जायगा। (१३) [रुकू १]

और हमने नूहको उनकी क़ौम के पास भेजा तो वह पचास वर्ष कम हज़ार वर्ष उनमें रहे फिर† उनको तूफ़ान ने पकड़ लिया और वह पापी थे। (१४) फिर हमने नूह को और जो किश्ती में थे उनको (तूफ़ान से) बचा दिया। (१५) और हमने इसको तमाम दुनिया के लिये शिक्षा बनादी। और इब्राहीम ने जब अपनी क़ौम से कहा कि खुदा की पूजा करो और उससे डरो यह बढ़कर है अगर तुम समझ

---

† कहते हैं कि नूह १४०० वर्ष जीवित रहे। जब उन की आयु ६२० वर्ष की हुई तो एक भयंकर तूफ़ान आया जिसमें पृथ्वी डूब गई।

रखते हो। (१६) तुम तो खुदा के सिवाय बुतों की पूजा करते हो और झूठी झूठी बातें बनाते हो। ख़ुदा के सिवाय जिनकी तुम पूजा करते हो तुम्हारी रोज़ी के मालिक नहीं हैं। सो रोज़ी ख़ुदा ही से मांगो और उसी की पूजा करो और उसी को धन्यवाद दो और उसी की तरफ़ लौटकर जाना है। (१७) और अगर तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहिले बहुत संगतें (अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुकी हैं और पैग़म्बर के ज़िम्मे तो (ख़ुदा की आज्ञा) साफ़ तौर पर पहुँचा देना है। (१८) क्या लोगों ने नहीं देखा कि ख़ुदा किस तरह सृष्टि को पहली बार पैदा करके फिर उसी तरह की सृष्टि बारबार पैदा करता रहता है। यह अल्लाह के लिये एक साधारण बात है। (१६) समझाओ कि तुम मुल्क में चलो फिरो और देखो कि ख़ुदा ने किस तरह पर पहिली मर्तबा (सृष्टि को) पैदा किया। फिर ख़ुदा आख़िरी उठाना (भी) उठायेगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है। (२०) जिसे चाहे सज़ा दे और जिस पर चाहे कृपा करे और तुम उसकी तरफ़ लौटकर जाओगे। (२१) और तुम न तो ज़मीन में (खुदा को) हरा सकते हो और न आसमान में और ख़ुदा के सिवाय न तो कोई तुम्हारे काम का सम्भालने वाला होगा न साथी होगा। (२२) [रुकू] २

और जो लोग ख़ुदा की आयतों को और उससे मिलने को नहीं जानते वे हमारी कृपा से निरास हुए हैं और उनको दुखदाई सज़ा है। (२३) पस इब्राहीम की क़ौम के पास इसके सिवाय जवाब न था इसको मार डालो या जलादो चुनांचि (उनको आग में फेंक दिया मगर) ख़ुदा ने उसको आग से बचा दिया इसमें बड़े पते हैं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं। (२४) और (इब्राहीम) ने कहा कि तुमने जो ख़ुदा के सिवाय मूर्तियों को मान रक्खा है सिर्फ़ दुनियाँ की जिन्दगी में आपस की दोस्ती मुहब्बत के ख्याल से, फिर क़्यामत के दिन तुममें से एक का एक इन्कार करेगा और एक लानत करेगा और तुम सबका ठिकाना नरक होगा और (बुतों में से) कोई भी तुम्हारा मददगार नहीं होगा। (२५) इस पर (सिर्फ़) लूत इब्राहीम पर ईमान लाये और

(इब्राहीम ने) कहा कि मैं तो देश छोड़कर अपने परवर्दिगार की तरफ निकल जाऊँगा बेशक वह ज़ोरावर हिक्मतवाला है। (२६) और हमने इब्राहीम को (बेटा) इसहाक़ और (पोता) याक़ूब दिया और उनके कुटुम्ब में पैग़म्बरी और किताब को (जारी) रक्खा और हमने इब्राहीम को दुनियाँ में भी उनका बदला दे दिया और क़यामत में भी वह नेकों में हैं, (२७) और लूत (को भेजा) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम बेशर्मी का काम करते हो जो तुमसे पहिले दुनियाँ जहान के लोगों में से किसी ने नहीं किया। (२८) क्या तुम लड़कों पर गिरते और राह मारते और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो। उस लूत की क़ौम का यही जवाब था कि अगर तू सचा है तो हम पर ख़ुदा की सज़ा ला। (२९) (लूत ने) कहा कि हे मेरे परवर्दिगार ! फ़िसादी लोगों के मुक़ाबिले में मेरी मदद कर। (३०) [रुकू ३]

और जब हमारे फ़िरिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर आये तो उन्होंने (इब्राहीम से) कहा कि हम इस बस्ती के रहने वालों का नाश कर देंगे (क्योंकि) इसके लोग शरीर हैं। (३१) (इब्राहीम ने) कहा कि उस में लूत भी है वह बोले कि जो लोग उसमें हैं हमें ख़ूब मालूम है हम लूत को और उसके घर वालों को बचा लेंगे मगर लूत की बीबी पीछे रहजाने वालों में होगी। (३२) और जब हमारे फ़िरिश्ते लूत के पास आये तो (लूत) उन से नाख़ुश हुआ और दिल दुखाया फ़िरिश्तों ने कहा डर न कर और उदास न हो हम तुमको और तेरे घर के लोगों को बचा लेंगे मगर तेरी बीबी रहजाने वालों में रहे गी। (३३) हम इस बस्ती के लोग जैसे कुकर्म करते रहे हैं उसकी सज़ा में इन पर एक आसमान से आफ़त उतारने वाले हैं। (३४) और हमने उन लोगों के लिये जो अक़्ल रखते हैं उस बस्ती का ज़ाहिरा निशान छोड़ रक्खा है। (३५) और (हमने) मदियन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को (भेजा) तो उन्होंने कहा कि भाइयों ख़ुदा की पूजा करो और अन्त का ख़याल रक्खो और मुल्क में फ़िसाद फैलाते न फिरो। (३६) तो उन्होंने शुऐब को झुठलाया पस भूचाल ने उन

को पकड़ा और सुबह को अपने घरों में बैठे रह गये। (३७) और (हमने क़ौम) आद और समूद को (मेट दिया) और तुमको उनके घर दिखाई देते हैं और शैतान ने उनके लिये जो वह करते थे अच्छा कर दिखाया था और राह से रोका था हालांकि वह सूझ-बूझ के लोग थे (३८) और (हमने) कारून और फ़िरऔन और हामान को भी (मिटा दिया) और मूसा उनके पास खुले-खुले चमत्कार लेकर आये वह मुल्क में घमण्ड करने लगे थे और हमसे जीतनेवाले न थे। (३९) सो हमने सब को उनके पाप में धर पकड़ा चुनांचि उनमें से कोई तो वह थे जिन पर हमने पत्थर बरसाये (क़ौम आद) कोई उन में से वह थे जिन को बड़े ज़ोर की आवाज़ ने पकड़ा (जैसे समूद) और उनमें से कोई वह थे जिनको हमने ज़मीन में धसाया (जैसे कारून) और कोई उनमें से वह थे जिन को डुबो दिया (जैसे फ़िरऔन और हामान) और ख़ुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता मगर वह अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया करते थे। (४०) जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवाय दूसरे काम सम्भालने वाले बना रक्खे हैं उनकी मिसाल मक्खी† जैसी है कि उसने घर बनाया और सब घरों में बोदा मक्खी का घर है अगर यह लोग समझते। (४१) जिनको ख़ुदा के सिवाय (यह लोग) पुकारते हैं वह जानता है और वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (४२) और हम यह मिसालें लोगों के लिए बयान करते हैं और समझदार ही इनको समझते हैं (४३) ख़ुदा ने आसमान ज़मीन् बनायी इसमें ईमान वालों के लिए निशानी है। (४४) [रुकू ४]

इक्कीसवाँ पारा (उत्लु मा ऊहिय)

(ऐ पैग़म्बर) किताब में जो ईश्वरीय संदेश दिया जाता है उसे पढ़ और नमाज़ पढ़ कर, नमाज़ बेशर्मी और बुरी बातों से रोकती

† यानी जैसे मक्खी का जाला बहुत बोदा होता है वैसे ही इनका मत है।

है और अल्लाह की याद बड़ी बात है और जो तुम करते हो अल्लाह जानता है। (४५) और किताब वालों के साथ झगड़ा न किया करो मगर ऐसी तरह पर जो बेहतर है। हाँ जो लोग उनमें से तुम पर जियादती करें और कहो कि जो हम पर उतरा है और तुम पर उतरा है सभी को मानते हैं और हमारा खुदा और तुम्हारा खुदा एक ही है और हम उसी के हुक्म पर हैं। (४६) और इसी तरह हमने तुम पर किताब उतारी तो जिनको हमने किताब दी है वे उसको मानते हैं और इनमें से भी ऐसे हैं कि वह भी इस पर ईमान ले आते हैं और जो इन्कारी हैं वही हमारी आयतों को नहीं मानते। (४७) और कुरान से पहले न तो तुम कोई किताब ही पढ़ते थे और न तुमको अपने हाथ से लिखना ही आता था अगर ऐसे तुम करते होते तो बेशक यह झूँठा ठहराने वाले लोग शक कर सकते थे। (४८) जिन लोगों को समझ दी गई है उन के दिलों में यह खुली आयतें हैं और जो इन्कारी हैं वही हमारी आयतों को नहीं मानते। (४६) और कहते हैं कि इस पर इसके परवर्दिगार से निशानियाँ क्यों नहीं उतारीं। कहो निशानियाँ तो खुदा के पास हैं और मैं तो साफ तौर पर डर सुनाने वाला हूँ। (५०) (ऐ पैगम्बर) क्या इन लोगों के लिए यह काफी नहीं कि हमने तुम पर कुरान उतारा। जो उनको पढ़ कर सुनाया जाता है जो लोग ईमान लाने वाले हैं उनके लिए इसमें कृपा और शिक्षा है। (५१) [रुकू ५]

(ऐ पैगम्बर) कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह काफी गवाह है। वह आसमान और जमीन की चीजों को जानता है और जो लोग झूँठे (पूजितों) पर ईमान लाते हैं और अल्लाह से फिरे हुए हैं वही तो घाटे में रहेंगे। (५२) और (ऐ पैगम्बर) तुम से सजा के लिए जल्दी मचा रहे हैं और अगर समय नियत न होता तो इन पर सजा आ चुकी होती और वह एकबारगी इन पर आवेगी और इनको खबर भी न होगी। (५३) तुमसे सजा के लिए जल्दी मचा रहे हैं और नरक काफिरों को घेरे हुए है। (५४) जब कि साजा उनके ऊपर से

और इनके पैरों के तले से इनको घेर लेगी और (खुदा) कहेगा कि जैसे जैसे कर्म तुम करते रहे हो (उनका मजा) चक्खो। (५५) हमारे सेवकों जो ईमान लाये हो हमारी जमीन चौड़ी है, हमारी ही पूजा करो। (५६) हर जीव मौत को चक्खेगा फिर हमारी तरफ लौट कर आवेगा (५७) और जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने सुकर्म किये उनको हम बैकुण्ठ की खिड़कियों में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उन में हमेशा रहेंगे काम वालों को अच्छा बदला है। (५८) जिन्होंने संतोष किया और अपने परवर्दिगार पर भरोसा रखते रहे (उनका अच्छा फल) है। (५९) और कितने जीव हैं जो अपनी रोजी उठा नहीं सकते अल्लाह ही उनको रोजी देता है और वही सुनता और जानता है। (६०) और (ऐ पैग़म्बर) अगर तू इनसे पूछे कि किसने आसमान और जमीन को पैदा किया और किसने चाँद और सूरज को बस में कर रक्खा है तो जरूर जवाब देंगे कि अल्लाह ने। फिर किधर को बहके चले जा रहे हैं। (६१) अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसको चाहे रोजी देता है और जिसको चाहता है नपी तुली कर देता है। अल्लाह ही हर चीज से जानकार है। (६२) और अगर तुम इनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी बरसाया फिर उस पानी के जरिये से जमीन को उसके मरे पीछे कौन जिला उठाता है—तो जवाब देंगे कि अल्लाह (हे पैग़म्बर) तू कह सब खूबी अल्लाह को है इन में से अक्सर समझ नहीं रखते। (६३) [रुकू ६]

और यह दुनियाँ की जिन्दगी तो जी बहलाना और खेल है और पिछला घर (परलोक) का जीना ही जीना है अगर यह समझते। (६४) फिर जब किश्ती में सवार होते हैं तो उसी पर पूरा भरोसा करके अल्लाह को पुकारते हैं फिर जब उनको छुटकारा देकर खुश्की की तरफ पहुँचा देता है तो छुटकारा पाते ही यह साझी ठहराने लगते हैं। (६५) जो हमने उनको दिया है उससे मुकरते हैं और बर्तते रहते हैं आगे चल कर मालूम कर लेंगे। (६६) क्या मक्के के काफ़िरों ने नहीं देखा कि हमने हरम को अमन की जगह बना रक्खा है और लोग

इनके आस-पास से उचके जाते हैं तो क्या यह लोग झूठ पर ईमान रखते हैं और अल्लाह का अहसान नहीं मानते। (६७) और उससे बढ़कर कौन ज़ालिम जो ख़ुदा पर झूँठ तोफ़ान लगाये या जब सत्य बात को पहुँचे तो उसको झुठलाये क्या इनकार करने वालों का नरक ही ठिकाना नहीं है। (६८) और जिन्होंने हमारे काम में कोशिश की हम उनको अपनी राह दिखलायेंगे और बेशक नेक काम वालों का अल्लाह ही साथी है। (६९) [रुकू ७]

—०—

सूरे रूम।

मक्के में उतरी इसमें ६० आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहरबान है। अलिफ़-लाम-मीम। (१) रूमी लोग दब गये हैं। (२) समीप के देशों में (दब गये हैं) और वे हारे पीछे फिर जीत जायेंगे। (३) चन्द बर्षों में पहले और पिछले काम अल्लाह ही के हाथ में हैं और उस दिन ईमानदार ख़ुश होंगे‡। (४) वह जिसको चाहता है मदद करता है और वह बलवान दयालु है। (५) अल्लाह का वादा (है) और अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया करता। लेकिन बहुधा लोग नहीं समझते। (६) संसारी जीवन के ज़ाहिरा हालों को समझते हैं और आख़िरत (पर लोक) से यह लोग बिलकुल बेख़बर हैं। (७) क्या इन लोगों ने

‡ रूम (ईसाई) और ईराम (अग्नि पूजक) के बीच युद्ध हुआ। इस में ईरामवाले जीते। उनकी विजय से मक्के के काफ़िर बहुत प्रसन्न हुये क्योंकि उनका मत ईराम के अग्नि के उपासकों से मिलता था। इसलिये मक्के के मुश्रिक मुसलमानों से बड़ा बोल बोलने लगे और कहने लगे जैसा रूम के ईसाई परास्त हुये हैं जो एक प्रकार तुम्हारे ही मत वाले हैं वैसे ही तुम भी जब हमसे लड़ोगे तो अवश्य हारोगे। इसपर यह आयतें उतरीं।

अपने दिल में ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह ने आसमान और जमीन को और उन चीजों को जो इन दोनों के बीच में हैं किसी मसलहत से और नियत समय के लिये पैदा किया है और बहुतेरे आदमी (क़यामत के दिन) अपने परवर्दिगार से मिलने को नहीं मानते। (८) क्या यह लोग मुल्क में नहीं चलते-फिरते हैं कि अपने पहलों का परिणाम (फल) देखें वह लोग इन से बल में भी बढ़कर थे और उन्होंने इन से ज्यादा जमीन को जोता और आबाद किया था और उन के पास उनके पैग़म्बर चमत्कार लेकर आये थे (मगर उन्होंने न माना और अपने किये की सजा पाई) तो ख़ुदा उन पर जुल्म करने वाला नहीं था बल्कि वह अपनी जानों पर आप जुल्म करते थे। (९) फिर जिन लोगों ने बुरा किया उनका परिणाम बुरा ही हुआ क्योंकि उन्होंने ख़ुदा की आयतों को झुठलाया और उनकी हँसी उड़ाई थी। (१०) [रुकू १]

अल्लाह पहली दफ़ा पैदा सृष्टि करता है फिर उसको दुहरायेगा फिर उसकी तरफ़ लौट जाओगे। (११) जिस दिन क़यामत उठेगी अपराधी निराश होकर रह जायेंगे। (१२) और इनके शरीकों में से कोई सिफ़ारिशी न होगा और ये अपने शरीकों से फिर बैठेंगे। (१३) जिस दिन क़यामत उठेगी उस दिन ये (भले-बुरे) तितर बितर हो जायेंगे। (१४) फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये वह बाग़ (बैकुण्ठ) में होंगे उनकी आवभगत हो रही होगी। (१५) और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों और अन्तिम दिन के पेश आने को झुठलाते रहे सो यही लोग सजा में पकड़े जायेंगे। (१६) पस जिसको समय तुम लोगों को शाम हो और जिस समय तुमको सुबह हो अल्लाह पवित्रता से याद करो। (१७) आसमान जमीन में वही अल्लाह तारीफ़ के लायक़ है और तीसरे पहर भी और जब तुम लोगों को दोपहर हो। (१८) जिन्दे को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को जिन्दे से निकालता है और जमीन को उसके मरे पीछे जिन्दह करता है और इसी तरह तुम (लोग भी मरे पीछे जमीन से) निकाले जाओगे। (१९) [रुकू २]

उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर अब तुम इन्सान होकर फैले हुए हो। (२०) और उसके चमत्कारों में से एक यह है कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच औरतें पैदा की कि तुमको उनके पास चैन मिले और तुममें प्यार और प्रेम पैदा किया। इस मामले में समझवालों के लिए चमत्कार है। (२१) और आसमान और जमीन का पैदा करना और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारी रङ्गतों का जुदा-जुदा होना इसमें समझने वालों के लिये निशानियाँ हैं। (२२) और तुम्हारा रात और दिन का सोना और उसकी कृपा तलाश करना उसकी निशानियों में से है जो लोग सुनते हैं उनके लिये इन में निशानियाँ हैं। (२३) और उसी की निशानियों में से है कि यह तुम को डरने और उम्मेद करने के लिये बिजलियाँ दिखाता और आसमान से पानी बरसाता और उसके जरिये से जमीन को उसके मरे (यानी पड़ती पड़े) पीछे जिला उठाता है जो लोग समझ रखते हैं उनके लिये इन बातों में निशानियाँ हैं। (२४) और उसी की निशानियों में से है कि आसमान और जमीन उसकी आज्ञा से कायम हैं फिर जब वह तुमको एक आवाज देकर जमीन से बुलायेगा तो तुम (सबके सब) निकल पड़ोगे। (२५) और जो आसमान और जमीन में है उसी के हैं सब उसी के ताबे में हैं (२६) और वही है जो पहली दफे पैदा करता है फिर उनको दुबारा पैदा करेगा यह उसके लिये सहल है और आसमान और जमीन में उसी की शान ज्यादा है और वह बलवान हिकमतवाला है। (२७) [रुकू ३]

वह तुम्हारे लिये तुममें का एक उदाहरण बयान करता है कि तुम्हारे बांदी गुलामों में से कोई हमारी दी हुई रोजी में साझी है कि तुम सब उसमें बराबर (हक़ रखते) हो तुम उनकी (वैसी ही) परवाह करते हो जैसी कि तुम अपनी परवाह करते हो‡। जो लोग समझ

‡ कहने का मतलब यह है कि जैसे तुम अपने दासों और बांदियों की परवाह नहीं करते और जैसा तुम्हारा मन चाहता है वैसा करते हो वैसे ही खुदा को तुम्हारा और सारी सृष्टि का कुछ डर नहीं। वह जो चाहे करे। उसकी शान निराली है।

रखते हैं उनके लिये हम आयतों को इसी तरह खोल-खोल कर बयान करते हैं। (२८) मगर जो लोग (नामी खुदा बनाकर) जुल्म कर रहे हैं यह तो बे जाने बूझे अपनी ख्वाहिशों पर चलते हैं तो जिसको खुदा गुमराह करे उसको कौन सीधी राह पर ला सकता है और ऐसे लोगों का कोई मददगार न होगा। (२९) (ऐ पैग़म्बर) तू एक (खुदा) का होकर दीन की तरफ़ अपना मुँह सीधा कर (यह) खुदा की चतुराई है जिससे उसने लोगों की सूरत बनाई है खुदा की बनावट में तबदीली नहीं हो सकती यही दीन सीधा है। मगर अक्सर लोग नहीं समझते (३०) उसी की तरफ़ फिरो और उसी (एक खुदा) का डर और नमाज़ पढ़ो और शरीक ठहराने वालों में न हो। (३१) जिन्हों ने अपने दीन में अन्तर डाला और (खुदा के सिवाय दूसरे पूजित बनाकर) फिरक़े होगये तो जिस फिरक़े में है वह उसी में मगन है। (३२) और जब लोगों को कोई दुख पहुँचता है तो यह अपने पर वर्दिगार की तरफ़ फिर कर उसी को पुकारने लगते हैं फिर जब वह उनको अपनी कृपा चखा देता है तो उनमें से कुछ लोग (झूठे पूजितों को) अपने परवर्दिगार का साझी बना बैठते हैं (३३) ताकि जो (नियामतें) हमने उनको दी हैं उनकी नाशुक्री करें तो फ़ायदे उठा लो आगे चल कर (फल) मालूम कर लोगे। (३४) क्या हमने इन लोगों पर कोई सनद उतारी है कि जिसमे यह लोग खुदा के साथ शरीक ठहरा रहे हैं यह (सनद इनको शरीक करना) बता रही है। (३५) और जब लोगों को हम कृपा का स्वाद चखा देते हैं तो वह उससे खुश होते हैं और अगर उनके पिछले कर्मों के बदले में उनपर आफ़त आजाये तो यह आस तोड़ बैठते हैं। (३६) क्या लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहे ज्यादा करद और (जिसकी चाहे) नपी तुली करदेता है जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिये इसमें निशानियाँ हैं। (३७) तो रिश्तेदार को और मुहताज को और मुसाफ़िर को उनका हक़ देते रहो जो लोग खुदा की रोज़ी के चाहने वाले हैं यह उनके वास्ते बेहतर है और यही मनुष्य मन माने फल पाने

वाले हैं। (३८) और जो तुम लोग ब्याज देते हो ताकि लोगों के माल में ज्यादती हो तो वह (ब्याज) ख़ुदा के यहाँ (फूलता) फलता नहीं जो तुम ख़ुदा की राह पर खैरात करते हो तो लोग ऐसा करते हैं उन्हीं के दूने होगये। (३६) अल्लाह वह है जिसने तुमको पैदा किया फिर तुमको रोजी दी फिर तुमको मारता है फिर तुमको जिलायेगा। भला तुम्हारे शरीकों में कोई है जो इनमें से कोई काम कर सके यह लोग जैसे-जैसे शरीक ठहराते हैं ख़ुदा इनसे पाक और ज्यादा बड़ा है। (४०) [रुकू ४]

लोगों ही की करतूतों से ख़ुश्की और पानी में ख़राबियाँ ज़ाहिर हो चुकी हैं लोग जैसे जैसे कार्य्य कर रहे हैं ख़ुदा उनको उनके कामों का मज़ा चखाये शायद वे मान जायें। (४१) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि ज़मीन पर चलो फिरो और पहिलों का अन्त (आख़ीर) देखो उनमें से बहुधा शरीक ठहराते थे। (४२) तो इससे पहिले कि ख़ुदा की तरफ़ से वह रोज (क़यामत) आवे जो टल नहीं सकता तू दीन के सीधे (रास्ते) पर अपना मुँह सीधा किये रह उस दिन (ईमान वाले और काफ़िर एक दूसरे से) जुदा जुदा होंगे। (४३) जो इन्कार करता है तो उसी पर इसके इन्कारी की आफ़त पड़ेगी और जो अच्छे कर्म करता है तो वह अपने ही लिये (आराम का) सामान कर रहा है। (४४) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सत्कर्म किये उनको अल्लाह अपनी कृपा से बदला देगा वह काफ़िरों को पसंद नहीं करता। (४५) और उसकी (क़ुदरत की) निशानियों में से है कि वह हवाओं को भेजता है (कि बारिश की) ख़ुश ख़बरी पहुँचावें ताकि अल्लाह तुम लोगों को अपनी कृपा (का स्वाद) चखाये ताकि अपने हुक्म से नावें चलायें और शायद तुम उसकी कृपा तलाश करो और भलाई मानो (४६) और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुम से पहिले भी पैग़म्बर उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजे तो वह (पैग़म्बर) चमत्कार लेकर उनके पास आये (मगर उन्होंने झुठलाया) तो जो लोग (झुठलाने के) अपराध के अपराधी हुये उनसे हमने बदला लिया और ईमान वालों को मदद

देना हम पर ज़रूरी था। (४७) अल्लाह वह है जो हवाओं को भेजता है वह बादलों को उभारती हैं फिर जिस तरह चाहता है बादल को आसमान में फैलाता है और उसको टुकड़े २ कर देता है तो तू देखता है कि बादल के बीच में से मेंह बरसता है फिर जब ख़ुदा अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है बरसा देता है तो वह लोग ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं। (४८) और अगर्चे मेंह के बरसने से पहिले यह लोग निराश† थे। (४९) तो ख़ुदा की कृपा की निशानियों को देख कि ज़मीन को उसके मरे पीछे कैसे जिलाता है। बेशक वही (ख़ुदा) मुर्दों का जिलानेवाला है और हर चीज पर शक्तिवान है। (५०) और अगर हम (ऐसी) हवा चलायें और यह लोग खेती को पीला देखें तो खेती के पीले पड़े पीछे ज़रूर कृतघ्नता (नाशुक्री) करने लगते हैं। (५१) तो (ऐ पैग़म्बर) तुम न तो मुर्दों को सुना सकते हो न बहरों ही को (अपनी) आवाज़ सुना सकते हो उस वक्त कि वहरे पीठ फेर कर भागें (५२) और तू न अन्धों को उल्टे रास्ते से सीधे रास्ते पर ला सकता है तू तो बस उन्हीं लोगों को सुना सकता है जो हमारी आयतों को मान लेते हैं वही ईमान वाले हैं। (५३) [रुकू ५]

अल्लाह वह है जिसने तुम लोगों को कमज़ोर हालत से पैदा किया फिर (लड़कपन की) कमज़ोरी के बाद (जवानी की) ताक़त दी। फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापे (की हालत) दी। जो चाहता है पैदा करता है और वही जानकार क़ुदरतवाला है। (५४) और जिस दिन क़यामत होगी पापी लोग सौगन्धें खायेंगे कि (दुनियाँ में) एक घड़ी से ज़्यादा नहीं ठहरे इसी तरह से लोग बहके रहे। (५५) जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया है वह जवाब देंगे कि तुम तो अल्लाह की किताब में क़यामत के दिन तक ठहरे और यह क़यामत का दिन है मगर पापियों को यक़ीन न था। (५६) तो उस

---

† यानी जैसे वर्षा से पहले प्राय. लोग समझते हैं कि पानी न बरसेगा वैसे ही सच्चे धर्म के प्रचार से पहले लोग उसके विषय में मनमानी बातें करते हैं।

दिन न पापियों को उनका उज्र करना फायदा पहुँचाएगा और न उनको खुदा के राजी कर लेने का मौका दिया जायगा (५७) और हमने लोगों के लिये इस कुरान में हर तरह की मिसालें बयान कर दी हैं और अगर तुम इनको कोई चमत्कार लाकर दिखाओ तो जो इन्कार करने वाले हैं वह कहेंगे कि तुम निरे फरेबी हो। (५८) जो लोग समझ नहीं रखते उनके दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है। (५९) तो (ऐ पैग़म्बर) तू कायम रह बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और ऐसा न हो कि जो लोग यकीन नहीं करते तुमको उछाल दें। (६०) [रुकू ६]।

सूरे लुकमान।

मक्के में उतरी इसमें ३४ आयतें और ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहम वाला मिहरबान है। अलिफ लाम-मीम। (१) यह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं। (२) नेकों के लिये सूझ और कृपा है। (३) जो नमाज पढ़ते और जकात देते और वह कयामत का भी यकीन रखते हैं। (४) ये परवर्दिगार की तरफ से सूझ पर हैं और ये मनमाने फल पाने वाले हैं। (५) और लोगों में कोई ऐसे भी हैं जो व्यर्थ कहानियाँ मोल लेते हैं ताकि बेसमझे बूझे खुदा की राह से भटकाएँ और खुदा की आयतों की हँसी उड़ाएँ। यही हैं जिनको जिल्लत की सजा होनी है। (६) और जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो अकड़ता हुआ मुँह फेर कर चल देता है मानो उसको सुनाही नहीं गोया उसके दोनों कान बहरे हैं सो तू उसे दुखदाई सजा की खुशखबरी सुनादे। (७) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनके लिये नियामत के बाग हैं। (८) उनमें हमेशा रहेंगे खुदा का पक्का वादा है और वह जोरावर हिकमत वाला है।

(६) उसी ने आसमानों को जिनको तुम देखते हो बग़ैर खम्भों के खड़ा किया है और ज़मीन में पहाड़ों को डाल दिया कि तुम्हें लेकर ज़मीन झुक न पड़े और उसमें हर क़िस्म के जानवर फैला दिये और आसमान से पानी बरसाया फिर ज़मीन में हरतरह के उम्दह जोड़े पैदा किये। (१०) यह ख़ुदा की पैदाइश है पस तुम मुझे दिखाओ कि ख़ुदा के सिवाय जो पूजित तुम लोगों ने बना रक्खे हैं उन्होंने क्या पैदा किया यह ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (११) [रुकू १]

और हमने लुक़मान को हिक़मत दी कि अल्लाह को जो धन्यवाद देता है अपने ही लिये धन्यवाद देता है और जो कृतघ्नता करता है तो अल्लाह बेपरवाह और तारीफ़ के योग्य है। (१२) और जब लुक़मान ने अपने बेटे को शिक्षा देते समय उससे कहा कि बेटा (किसी को) ख़ुदा का शरीक न ठहराना शरीक ठहराना ज़ुल्म की बात है। (१३) और इन्सान को उसके माता पिता के हक़ में ताकीद की कि उसकी माताने बोझ उठाकर उसको पेट में रक्खा और दो बरस में उसका दूध छूटता है मेरा और अपने माता पिता का शुक्रगुज़ार हो आख़िर को मेरे पास ही तुझको आना है। (१४) और अगर तेरे माता पिता† तुझको मजबूर करें तू हमारे साथ शरीक बना जिसका तुझे इल्म नहीं है तो उनका कहा न मान। दुनियाँ में× उनके साथ अच्छी तरह रह और उन लोगों के तरीक़े पर चल जो मेरी तरफ़ रुजू हैं। फिर तुमको मेरी तरफ़ लौटकर आना है तो जैसे काम तुम लोग करते रहे हो मैं तुमको बताऊँगा। (१५) बेटा अगर राई के दाने के बराबर भी कोई चीज़ हो और फिर वह किसी पत्थर के अन्दर या आसमानों में या ज़मीन में हो तो उसको ख़ुदा ला हाज़िर करेगा। बेशक ख़बरदार अल्लाह बारीक

---

† कहते हैं कि साद बिन अबवक़ास की माँ ने तीन दिन खाना पानी न लिया ताकि साद डर कर इस्लाम धर्म को छोड़दें। परन्तु साद ने कहा कि मेरी माँ सत्तर बार मरे तो भी न अपना ईमान न छोड़ूँगा। इस आयत का उतरना इसी घटना से सम्बन्धित बताया जाता है।

× दुनियाँ की बातों में माँ बाप की आज्ञा का पालन करो।

जानने वाला है। (१६) बेटा नमाज पढ़ा कर और भली बात सिखला और बुरी बातों से मना कर और जो कुछ तुझ पर आ पड़े उसे सैह बेशक यह एक बड़ा काम है। (१७) और लोगों से बेरुखी न करना और जमीन पर इतरा कर न चल। अल्लाह किसी इतराने वाले को पसंद नहीं करता। (१८) और बीच की चाल चल अपनी आवाज नीची कर बेशक बुरी से बुरी गधों की आवाज है§। (१९) [रुकू २]

क्या तुमने नहीं देखा कि जो कुछ आसमान में है और जो कुछ जमीन में है सबको अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा रक्खा है और तुम पर अपनी जाहिरा और छिपी हुई निआमत पूरी की है और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो खुदा के बारे में झगड़ते हैं। न तो इल्म है और न हिदायत और न रोशन किताब (जो उनको सीधा रास्ता) दिखाये। (२०) और जब इनसे कहा जाता है कि (कुरान) जो खुदा ने उतारा है उस पर चलो तो जवाब देते हैं कि नहीं हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया। भला अगर शैतान इनके बड़ों को नरक की सजा की तरफ बुलाता रहा हो (तो भी चलेंगे)? (२१) और जो खुदा के सामने अपना सिर झुकाये और वह सत्कर्मी हो तो उसने पुख्ता रस्सी पकड़ ली और हर काम का अन्त खुदा पर है। (२२) और जो इन्कारी है तो उसके इन्कार की वजह से तुझे उदास न होना चाहिये हमारी तरफ लौटकर आना है। तो जो कुछ यह करते रहे हम इनको बतायेंगे अल्लाह जो दिलों में है जानता है। (२३) हम इनको थोड़े फायदे पहुँचाते रहेंगे फिर इनको दुखदाई सजा की तरफ खींच बुलायेंगे। (२४) और अगर तुम लोगों से पूछो कि आसमानों को और जमीन को किसने पैदा किया तो यही जवाब देंगे कि खुदा ने तो कह सब खूबियाँ अल्लाह को हैं मगर इनमें से अक्सर समझ नहीं रखते। (२५) अल्लाह ही का है जो कुछ आसमान और जमीन में है बेशक अल्लाह बे परवाह और तारीफ के योग्य है। (२६) और जमीन में जितने दरख्त हैं अगर

§ यानी गधों के समान ऊँचे स्वर में न बोल, इस प्रकार की बोली बुरी समझी जाती है।

(सब) क़लम बन जायें और समुद्र उसके बाद सात समुद्र और उसकी मदद करें (यानी स्याही के हो जावें तो भी) ख़ुदा की बातें तमाम न होवें । बेशक अल्लाह ज़ोरावर हिकमत वाला है । (२७) तुम सबको पैदा करना और मेरे पीछे जिलाना ऐसा ही है जैसा एक शख़्स का (पैदा करना) और जिलाना बेशक अल्लाह सुनता देखता है । (२८) तूने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है और सूर्य्य चन्द्रमा को काम में लगा रक्खा है कि हर एक ठहरे हुए वादे तक चलता है और जो कुछ भी तुम लोग कर रहे हो अल्लाह को उसकी ख़बर है । (२९) यह इस लिये है कि अल्लाह ही सच है और उसके सिवाय जिनको तुम पुकारते हो झूठ हैं और अल्लाह बड़ा सबसे ऊपर है । (३०) [रुकू ३]

तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही की कृपा से नाव नदी में चलती है कि कुछ अपनी क़ुदरत तुमको देखाये । हर एक सतोपी और सच समझने वाले के लिये निशानियाँ हैं (३१) और जब लहरें (नाव के चढ़ने वालों पर बादलों की तरह आ जाती हैं तो वह साफ़ दिल से अल्लाह की बन्दगी को ज़ाहिर करके उसी को पुकारने लगते हैं लेकिन जब ख़ुदा उनको छुटकारा देकर ख़ुश्की पर पहुँचा देता है तो उनमें से कुछ ही बीच की चाल पर क़ायम× रहते हैं और हमारी निशानियों से वही लोग इन्कारी रहते हैं जो क़ौल के झूठे और सच न समझने वाले हैं । (३२) लोगों ! अपने परवर्दिगार का डर रक्खो और उस दिन से डरो कि न कोई बाप अपने बेटे के काम आवेगा और न कोई बेटा अपने बाप के काम आ सकेगा । ख़ुदा का वादा (क़यामत के दिन) सच्चा है तो दुनियाँ की ज़िन्दगी के धोखे में न आजाना और न ख़ुदा में फ़रेबिये (शैतान) का धोखा खाना । (३३) अल्लाह ही के पास क़यामत की ख़बर है और वही मेंह बरसाता और जो कुछ माताओं के

× यानी कठिनाई के समय मुश्रिक और मुसलमान दोनों ख़ुदा ही को सहायता के लिये पुकारते हैं परन्तु आपत्ति टल जाने पर मुश्रिक ख़ुदा को छोड़ कर मूर्ति पूजने लगते ह और मुसलमान हर हालत में ख़ुदा ही को पूजते हैं ।

पेट में है जानता है और कोई नहीं जानता कि कल क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि यह किस जमीन में मरेगा। बेशक अल्लाह ही जानने वाला खबर रखने वाला है। (३४)। [रुकू ४]

——:——

सूरे सज्दह।

मक्के में उतरी इसमें ३० आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। अलिफ-लाम-मीम। (१) इसमें कुछ शक नहीं कि कुरान संसार के परवर्दिगार की ओर से उतरता है। (२) क्या कहते हैं कि इसको इसने (अपने दिल से) बना लिया है बल्कि यह ठीक तुम्हारे परवर्दिगार की ओर से है ताकि तुम उन लोगों को जिनके पास तुमसे पहिले कोई डरानेवाला नहीं पहुँचा (खुदा की सजा से) डराओ। अजब नहीं कि यह लोग राह पर आजावें। (३) अल्लाह वह है जिसने ६ दिन में आसमान और जमीन और उन चीजों को पैदा किया जो आसमान और जमीन के बीचमें हैं। फिर तख्त पर जा विराजा उसके सिवाय न कोई तुम लोगों का काम सम्भालने वाला है और न कोई सिफ़ारशी है क्या तुम नहीं सोचते। (४) आसमान से जमीन तक का बन्दोबस्त करता है फिर तुम लोगों की गिनती के (अनुसार) हजार वर्ष की मुद्दत का एक दिन होगा उस दिन तमाम इन्तजाम उसके सामने गुजरेगा। (५) वही छिपी और खुली सब बातों का जानने वाला जोरावर मिहर्बान है। (६) उसने जो चीज बनाई खूब ही बनाई और आदमी की पैदायश को मिट्टी से शुरूअ किया। (७) फिर नाचीज निचोड़ यानी (वीर्य) से उसकी संतान बनाई। (८) फिर उसको दुरुस्त किया और उसमें अपनी तरफ़ से जान डाली और तुम लोगों के लिये कान, आँखें, और दिल बनाये बहुत ही थोड़ी तुम भलाई मानते हो। (९) और

कहते हैं कि जब हम मिट्टी में मिल जायेंगे तो क्या (फिर) हम नये जन्म में आवेंगे बल्कि अपने परवर्दिगार के सामने हाजिर होने को नहीं मानते। (१०) कहो कि मौत (यमदूत) जो तुम पर तैनात है तुम्हारे जीवों को निकालते हैं फिर अपने परवर्दिगार की ओर लौटाये जावोगे। (११) [रुकू १]

और अफसोस तुम अपराधियों को देखो कि अपने परवर्दिगार के सामने सर झुकाये खड़े हैं (और फर्याद कर रहे हैं) ऐ हमारे परवर्दिगार हमारी आँखें और हमारे कान खुले हमको फिर (दुनियाँ में) भेज कि हम भलाई करें हमको विश्वास आया। (१२) हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते मगर हमारी बात पूरी होती है कि जिन्न और आदमी सब से हम नरक भर देंगे। (१३) तो जैसे तुम अपने इस दिन के पेश आने को भूल रहे थे (आज उसका) मजा चक्खो कि हमने तुमको भुला दिया और जैसे जैसे तुम काम करते रहे उसके बदले में हमेशा की सजा चक्खो। (१४) हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको वह याद दिलाई जाती है (तो) सिजदे में गिर पड़ते और अपने परवर्दिगार की तारीफ के साथ पवित्र याद करने लगते हैं और वे गरूर नहीं करते। (१५) रात के समय उनकी करवटें बिछौना से अलग नहीं होतीं डर और आशा से अपने परवर्दिगार से दुआयें माँगते और जो कुछ हमने उनको दे रक्खा है उस में से (खुदा की राह में) खर्च करते हैं। (१६) तो कोई आदमी नहीं जानता कि लोगों के नेक काम के बदले में कैसा कैसा आँखों की ठंडक उसके लिये छिपा रक्खी है। (१७) तो क्या ईमान लाने वाला उसके बराबर है जो बेहुक्म है बराबर नहीं हो सकते। (१८) तो जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये उनके लिये रहने को बाग होंगे मिहमानदारी उनके (नेक) कर्मों का बदला है जो करते रहे। (१९) और जो लोग बेहुक्म हुए उनका ठिकाना नरक होगा जब उससे निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जायेंगे और उनसे कहा जायगा कि जिस सजा (नरक) को तुम झुठलाते रहे अब उसी (नरक) का मजा

चक्खो। (२०) और क़यामत की बड़ी सज़ा से पहिले हम इनको (दुनियाँ में भी) सज़ा का मज़ा चखायेंगे। शायद यह लोग फिरें। (२१) और उससे बढ़कर अन्यायी कौन है कि उसको उसके परवर्दिगार की बातों से शिक्षा दी जाय और वह उनसे मुँह फेर ले, हमको इन पापियों से बदला लेना है। (२२) [रुकू २]

और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी थी तो (ऐ पैग़म्बर) तुम भी उस के मिलने से शक में न रहो और हमने उसको इसराईल के बेटों के लिये हिदायत ठहराया था। (२३) और हमने इसराईल के बेटों में से पेशवा बनाये थे जो हमारी आज्ञा से हिदायत किया करते थे और वह संतोष किये बैठे रहे और हमारी आयतों का विश्वास रखते रहे। (२४) (ऐ पैग़म्बर) इसराईल के बेटे जिन २ बातों म फूट डालते रहे तुम्हारा परवर्दिगार क़यामत के दिन उनमें उनका फ़ैसला कर देगा (२५) क्या लोगों को इसकी हिदायत नहीं हुई कि हमने इनसे पहिले कितने गिरोह मार डाले यह लोग उन्हीं के घरों में चलते फिरते हैं। इस लौटफेर में बहुत पते हैं तो क्या यह लोग सुनते नहीं (२६) और क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम पड़ी हुई जमीन की तरफ़ पानी को निकाल देते हैं। फिर पानी के द्वारा खेती को निकालते हैं जिनमें से इनके चौपाये भी खाते हैं और आप भी खाते हैं तो क्या (यह लोग) नहीं देखते। (२७) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह फ़ैसला कब होगा। (२८) (ऐ पैग़म्बर) जवाब दो कि जो लोग (दुनियाँ में) इन्कार करते रहे फ़ैसले के दिन उनका ईमान लाना उनके कुछ भी काम न आवेगा और न उनको मुहलत मिलेगी। (२९) (सो ऐ पैग़म्बर) तू उनका ख़याल छोड़ और राह देख वे भी राह देखते हैं। (३०) [रुकू ३]

———※———

सूरे अहज़ाब

मक्के में उतरी इसमें ७३ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहम वाला मिहर्बान है। (ऐ पैग़म्बर) खुदा से डरते हो और काफ़िरों और दग़ावालों का कहा न मानो बेशक अल्लाह जानकार हिक्मत वाला है। (१) और तेरे परवर्दिगार से जो हुक्म आये उसी पर चल अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है (२) और अल्लाह पर भरोसा रक्खो और अल्लाह काम का बनाने वाला काफ़ी है। (३) अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रक्खे और न तुम लोगों की उन बीबियों को जिनको तुम माँ कह बैठते हो तुम्हारी सच्ची माँ बनाया और न तुम्हारे मुँह बोले बेटे को तुम्हारा बेटा ठहराया यह तुम्हारे अपने मुँह की बात है और अल्लाह ठीक बात कहता है और वही राह दिखाता है। (४) उन (मुँह बोले बेटों) को उनके (सगे) बापों के नाम से बुलाया करो। यही बात अल्लाह के न्याय के अधिक नजदीक है। पस अगर तुमको उनके बाप मालूम न हों तो तुम्हारे दीनी भाई और तुम्हारे दीनी दोस्त हैं और तुम से इसमें भूल चूक हो जाय तो इसमें तुम पर कुछ पाप नहीं। मगर हाँ दिल से इरादा करके ऐसा करो। और अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है (५) ईमानवालों को अपनी जान से ज़ियादह नबी से लगाव है और उस (पैग़म्बर) की स्त्रियाँ उनकी माताऐं हैं। नातेवाले एक दूसरे से सब ईमानवालों और देश छोड़नेवालों से ज़ियादह लगाव रखते हैं मगर यह कि तुम अपने दोस्तों के साथ नेक बर्ताव करना चाहो यह आज्ञा किताब में लिखी हुई है। (६) और जब हमने पैग़म्बरों से और तुम से नूह से इब्राहीम से मूसा और मरियम के बेटा ईसा से करार लिया और पुख्ता अहद बाँधा था। (७) (क़यामत के दिन खुदा) सचों से उनकी सत्यता का हाल पूछेगा और काफ़िरों को दुखदाई सज़ा तैयार है। (८) [रुकू १]

ऐ मुसलमानों अपने ऊपर अल्लाह का अहसान याद करो। जब तुम पर (बद्र व ऊहद के युद्ध में) फ़ौजें चढ़ आई तब हमने उन पर आँधी भेजी और फ़ौज जो तुमको दिखलाई नहीं देती थी और जो तुम लोग करते हो अल्लाह देख रहा है। (६) जिस वक़्त कि (दुशमन) तुम पर तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ से आये थे और (डर के मारे तुम्हारी) आँखें फिरी रह गई थीं और दिल गलों तक आगये थे और तुम ख़ुदा की बाबत तरह २ के ख्याल करने लगे थे। (१०) यहाँ मुसलमानों की जाँच की गई और वह ख़ूब ही हिलाये गये। (११) और जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिनके दिलों में रोग थे बोल उठे कि ख़ुदा और उसके पैग़म्बर ने जो हम से वादा किया था बिल्कुल धोका था। (१२) और जब उनमें से एक गिरोह कहने लगा कि मदीने के लोगों तुम से (इस जगह दुशमन के मुक़ाबिलों में) नहीं ठहरा जायगा तो लौट चलो और उन में से कुछ लोग पैग़म्बर से घर लौट जाने की इजाज़त माँगने लगे (और) कहने लगे कि हमारे घर खुले पड़े हैं। वह हरगिज़ खुले न पड़े थे उनका इरादा सिर्फ़ भागने का था। (१३) और अगर शहर में कोई किनारे से आकर घुसे फिर उन्हें दीन से बिचलाना चाहे तो यह लोग मानही लेवे और थोड़ी देर करते। (१४) हालाकि पहिले ख़ुदा से वादा कर चुके थे कि (हम दुशमन के सामने से) पीठ न फेरेंगे और ख़ुदा के वादे की पूँछ पाछ होकर रहेगी (१५) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो (यह) भागना तुम्हारे काम न आवेगा और अगर भाग कर बच भी गये तो (दुनियाँ में) चन्द रोज़ रह बस लोगे (१६) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे साथ बुराई (करनी) चाहे तो कौन ऐसा है जो तुमको उससे बचा सके तुम पर मिहर्बानी करना चाहे (तो कौन उसको रोक सकता है) और ख़ुदा के सिवाय न तो अपना हिमायती ही पाओगे और न मददगार। (१७) ख़ुदा तुम में से उनको ख़ूब जानता है जो (दूसरों को लड़ाई में शामिल होने से) रोकते और अपने भाई बन्दों से कहते हैं कि (लड़ाई से

अलग होकर) हमारे पास चले आओ और लड़ाई में हाज़िर नहीं होते मगर थोड़ी देर के लिये। (१८) दरेग़ रखते हैं तुम्हारी तरफ़ से तो जब डर का वक़्त आये तो तू उनको देखेगा कि तेरी तरफ़ ताकते हैं और उनकी आँखें ऐसी फिरती हैं जैसी किसी पर मौत की बेहोशी हो। फिर जब डर दूर हो जाता है तो माल (लूट) पर गिरे पड़ते हैं और बढ़ २ कर तेज़ ज़बानों से तुम पर ताने मारते हैं यह लोग ईमान नहीं लाये तो अल्लाह ने उन के काम अकार्य कर दिये और अल्लाह के पास यह आसान है। (१९) ख़याल कर रहे हैं कि (यह) लश्कर नहीं गये और अगर (दुश्मनों के) लश्कर आजायें तो यह लोग चाहें कि देहात में निकल जायें और उनकी ख़बर पूछते हैं और अगर यह लोग तुम में होते हैं तो बहुत ही कम लड़ते हैं। (२०) [रुकू २]

तुम्हारे लिये पैग़म्बर की चाल सीखनी अच्छी थी। उसके लिये जो अल्लाह और क़यामत के दिन से डरते थे और बहुत-बहुत ख़ुदा को याद किया करते थे। (२१) और जब मुसलमानों ने (दुश्मनों के) गिरोहों को देखा तो बोल उठे कि यह तो वही है जो ख़ुदा और उसके पैग़म्बर ने हमें पहिले से वादा रक्खा था और अल्लाह और रसूल ने सच कहा था और उस से लोगों का ईमान और भी ज़ियादह होगया। (२२) ईमानवालों में कितने मर्द हैं कि अल्लाह से जो उन्होंने क़ौल करलिया था उसे सच्चकर दिखाया। तो उनमें यह भी थे जो काम पूरा कर चुके और उनमें ऐसे भी हैं कि इन्तिज़ार करते हैं और यह कुछ भी नहीं बदले (२३) तो अल्लाह सच्चों को सच का बदला दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे सज़ा दे या उनकी तौबा क़बूल करले बेशक अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (२४) और ख़ुदाने काफ़िरों को हटा दिया गुस्से में उनको कुछ भी फ़ायदा न पहुँचा और ख़ुदा ने मुसलमानों को लड़ने की नौबत न आने दी और अल्लाह बलवान जीतनेवाला है। (२५) और किताब वालों में से जो लोग (यानी यहूदी) मुशरकीन के मददगार हुए थे ख़ुदाने उनको गढ़ियों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में

ऐसी धाक बैठा दी कि तुम कितनों को जान से मारने लगे और कितनों को क़ैद करने लगे। (२६) और उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का और उस ज़मीन (खैबर) का जिसमें तुमने क़दम तक नहीं रक्खा था तुमको मालिक कर दिया और अल्लाह हर चीज पर सर्व शक्तिमान है। (२७) [रुकू ३]

ऐ पैग़म्बर अपनी बीबियों से कहदो कि अगर तुम दुनियाँ का जीना या यहाँ की रौनक़ चाहती हो तो मैं तुम्हें दिलाकर अच्छी तरह से विदा करदूँ। (२८) और अगर तुम खुदा और उसके पैग़म्बर और क़यामत के घर को चाहने वाली हो तो तुम में से जो नेकी पर हैं उनके लिये खुदा ने बड़े फल तैयार कर रक्खे हैं। (२९) ऐ पैग़म्बर की बीबियों तुममें से जो कोई ज़ाहिरा बदकारी करेगी उसके लिये दोहरी सज़ा की जायगी और अल्लाह के नज़दीक यह मामूली बात है। (३०)

—— ० ——

बाईसवाँ पारा (वमैं यक़्नुत)

और जो तुम में से अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञाकारिणी होगी और भले काम करेगी हम उसको उसका दुगुना फल देंगे और हमने उसके लिये प्रतिष्ठा की रोज़ी तैयार कर रक्खी है। (३१) ऐ पैग़म्बर की बीबियों तुम और औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुमको परहेज़गारी मंज़ूर है तो दबी ज़बान (किसी) के साथ बात न किया करो। (कि ऐसा करोगी) तो जिसके दिल में (किसी तरह का) खोटाई है वह तुम से (किसी तरह की) आशा पैदा कर लेगा और तुम माक़ूल बात कहो। (३२) और अपने घरों में ठहरो और अपना बनाव शृंगार वग़ैरह न दिखाती फिरो। जैसा पहले नादानी के वक़्त में दिखाने का दस्तूर था और नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके

पैग़म्बर की आज्ञा मानो घरवालियों खुदा यही चाहता है कि तुम से नापाकी दूर करे और तुमको खूब पाक साफ़ बनाये। (३३) और तुम्हारे घरों में जो ख़ुदा की बातें और अक़्लमंदी की बातें पढ़ी जाती हैं उनको याद रक्खो (क्योंकि) अल्लाह भेद का जानने वाला जानकार है (३४) [रुकू ४]

बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले मर्द और ईमानवाली औरतें और आज्ञाकारी मर्द और आज्ञाकारी औरतें और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें और सतोषी मर्द और सतोषी औरतें और गिड़गिड़ाने वाले मर्द और गिड़गिड़ाने वाली औरतें और पुण्य करने वाले मर्द और पुण्य करने वाली औरतें और रोज़ा (व्रत) रखनेवाले मर्द और रोज़ा रखनेवाली स्त्रियाँ और विषय इन्द्रिय के थामनेवाले मर्द और विषय इन्द्रिय को थामने वाली औरतें और अक्सर याद करने वाली औरतें इन (सब) के लिये अल्लाह ने पापों की क्षमा और बड़े फल तैयार कर रखे हैं। (३५) जब अल्लाह और उसका पैग़म्बर कोई बात ठहरा दे तो किसी मुसलमान औरत और मर्द को अपने काम का अधिकार नहीं है (ज़ैनब और उसके भाई अब्दुल्ला का ज़िक्र है जिन्होंने हज़रत की तजवीज़ को नामंज़ूर किया था कि ज़ैद (ग़ुलाम) को शादी के लिये ना मंज़ूर करते थे) और जिसने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म नहीं माना वह ज़ाहिरा राह भूल गया (यह सुनकर ज़ैनब ने लाचारी से ज़ैद के साथ निकाह किया) (३६) और जब तू ऐ (मोहम्मद) उस (ज़ैद) से जिस पर अल्लाह ने और तू ने कृपा की कहता था§ कि तू अपनी जोरू को अपने पास रहने दे

§ ज़ैद (एक ग़ुलाम) को मुहम्मद साहब ने मोल लेकर आज़ाद कर दिया था और उसकी ज़ैनब के साथ कर दी थी। क़ुरैश दासों के साथ ब्याह करने को बुरा समझते थे। शादी होने के बाद ज़ैनब अपने पति को दास होने का ताना दे बैठती थी इस पर ज़ैद ने उसको तलाक़ देना चाहा। मुहम्मद साहब चाहते थे कि यह संबंध बना रहे इसलिये दोनों को समझाते-बुझाते थे परन्तु यह अन्त में टूट ही कर रहा और ज़ैनब के साथ मुहम्मद साहब ने

और अल्लाह से डर और तू अपने दिल में उस बात को छिपाता था अल्लाह जिसे जाहिर किया चाहता था । और तू आदमियों से डरता था हालाँकि तुझे अल्लाह से डरना चाहिये था। पस जब ज़ैद ने (तलाक दी) तो हमने मुहम्मद तेरा निकाह उस औरत से कर दिया ताकि मुसलमानों को अपने मुँह बनाये बेटों (दत्तक पुत्रों) की जोरुओं से निकाह करलेना पाप न रहे। जबकि उसको छोड़ दें और उससे अपना सम्बन्ध तोड़ दें और यह खुदा ही का हुक्म था। (३७) अल्ला ने पैगम्बर के लिये जो बात ठहरा दी हो उसमें पैगम्बर के लिये कुछ हर्ज नहीं। जो पैगम्बर पहिले हो चुके हैं उनमें खुदा का यही दस्तूर रहा है और अल्लाह का हुक्म मुकर्रर ठहर चुका है। (३८) वे खुदा के पैगाम पहुँचाते और खुदा का डर रखते थे और खुदा के सिवाय किसी से नहीं डरते थे और हिसाब के लिये अल्लाह काफ़ी है। (३६) मुहम्मद तुम में से किसी मर्द का बाप नहीं है (तो ज़ैद का क्यों है) यह तो अल्लाह का पैगम्बर है और सब पैगम्बरों पर मुहर है और अल्लाह सब चीजों से जानकार है। (४०) [रुकू ५]

मुसलमानों बहुतायत से खुदा को याद किया करो (४१) और सुबह व शाम उसीकी पवित्रता याद करते रहो। (४२) वही है जो तुम पर दया भेजता है और इसके फिरिश्ते भी ताकि तुमको अन्धेरों से निकाल कर रोशनी में लाये और खुदा ईमान वालों पर मिहर्बान है। (४३) जिस दिन यह लोग खुदा से मिलेंगे (उसका) सलाम उनकी सलामी होगी और खुदा ने उनके लिये इज्जत का फल तैयार कर रक्खा है। (४४) पैगम्बर हमने तुमको गवाही देनेवाला और डराने वाला भेजा है। (४५) और अल्लाह के हुक्म से उसकी तरफ बुलाने वाला और रोशन चिराग बनाकर भेजा है। (४६) और ईमान वालों को इसकी

स्वयं ब्याह कर लिया क्योंकि उस समय अरब का ब्याह और किसी आकार के साथ नहीं हो सकता था। इस संबंध का लक्ष्य अरब की दो बुरी रीतों को तोड़ना था एक यह कि आज़ाद हुये गुलाम की छोड़ी हुई स्त्री को घृणा की दृष्टि से देखना दूसरे मुँहबोले बेटों को सगे बेटों हो जैसा हर बात में समझना।

ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन पर अल्लाह की बड़ी कृपा है। (४७) और काफ़िरों और दग़ाबाज़ों का कहा न मान और उनके दुख देने की चिन्ता न कर और ख़ुदा पर भरोसा रख और ख़ुदा काम बनाने वाला काफ़ी है। (४८) मुसलमानों जब तुम मुसलमान औरतों के साथ अपना निकाह करो फिर उनको हाथ लगाने से पहिले तलाक़ दे दो। तो इद्दत (में बिठाने) का तुमको उनपर कोई हक़ नहीं कि इद्दत की गिन्ती पूरी कराने लगो। सो उनको कुछ दे दिलाकर अच्छे क़ायदे के साथ विदा कर दो। (४९) ऐ पैग़म्बर हमने तेरी वह बीबियाँ तुम पर हलाल कीं जिनके मिहर तू दे चुका है और लौंडियाँ जिन्हें अल्लाह तेरी तरफ़ लाया और तेरे चचा की बेटियाँ और तेरी फुफी की बेटियाँ और तेरे मामा की बेटियाँ और तेरे मौसियों की बेटियाँ जो तेरे साथ देश त्याग कर आई हैं और वह मुसलमान औरतें जिन्होंने अपने को पैग़म्बर को दे दिया (बे मिहर निकाह में आना चाहे) बशर्ते कि पैग़म्बर भी उनके साथ निकाह करना चाहे यह हुक्म ख़ास तेरे ही लिए है सब मुसलमानों के लिए नहीं। हमने जो मुसलमानों पर उनकी बीबियों और उनके हाथ के माल (यानी लौंडियों) का हक़ (मिहर) ठहरा दिया है हमको मालूम है इसलिए कि तुम पर (किसी तरह की) तंगी न रहे और अल्लाह बख़शने वाला मिहर्बान है। (५०) अपनी बीबियों में से जिसको चाहो अलग रक्खो जिसको चाहो अपने पास रक्खो और जिनको तुमने अलग कर दिया था उनमें से किसी को फिर बुलवालो तो तुम पर कोई पाप नहीं। यह इसलिए कि बहुधा तुम्हारी बीबियों की आँखें ठंढी रहें और उदास न हों और जो तुम उनको दे दो उसे लेकर सबकी सब राज़ी रहें और जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है अल्लाह जानता है और अल्लाह जानने सहनेवाला है। (५१) (ऐ पैग़म्बर इस वक़्त के) बाद से (दूसरी) औरतें तुमको दुरुस्त नहीं और न यह (दुरुस्त है) कि उनको बदल कर दूसरी बीबियाँ कर लो अगर्चे उनकी ख़ूबसूरती तुमको अच्छी ही क्यों न लगे मगर बाँदियाँ (और भी या सकती हैं) और अल्लाह हर चीज़ का देखनेवाला है। (५२) [रुकू ६]

मुसलमानों ! पैग़म्बर के घरों में न आया करो मगर यह कि तुमको खाने के लिए (आने की) इजाज़त दीजाये कि तुमको खाना तैयार होने की राह न देखनी पड़े मगर जब तुम बुलाए जाओ तब आओ और जब खाचुको तो अपनी २ राह लो और बातों में न लग जाओ इससे पैग़म्बर को दुख होता है और पैग़म्बर तुमसे शर्माते हैं और अल्लाह ठीक बात बताने में शर्म नहीं करता और जब पैग़म्बर की बीबियों से तुम्हें कोई वस्तु माँगनी हो तो पर्दे के बाहर खड़े रहकर उनसे माँगो । इससे तुम्हारे और उनकी औरतों के दिल पाक रहेंगे और तुम्हें योग्य नहीं है कि ख़ुदा के पैग़म्बर को दुःख दो और न यह योग्य है कि पैग़म्बर के बाद कभी उनकी बीबियों से निकाह करो। ख़ुदा के यहाँ यह बड़ा पाप है। (५३) तुम किसी चीज को जाहिर करो या उसको छिपाओ अल्लाह सब जानता है। (५४) पैग़म्बर की बीबियों पर अपने बापों के अपने बेटों के अपने भाइयों के अपने भतीजों के और अपने भानजों के और अपनी औरतों और अपने बाँदी ग़ुलामों के सामने होने में कुछ पाप नहीं और अल्लाह से डरती रहो अल्लाह हर चीज का गवाह है। (५५) अल्लाह और उसके फ़िरिश्ते पैग़म्बर पर मिहरबानी भेजते रहते हैं (सो) मुसलमानों (तुम भी) पैग़म्बर पर मिहरबानी और सलाम भेजते रहो। (५६) जो लोग अल्लाह और पैग़म्बर को दुःख देते हैं उन पर दुनिया और क़यामत में अल्लाह की फटकार है और ख़ुदा ने उनके लिए ज़िल्लत की सज़ा तैयार कर रक्खी है। (५७) और जो लोग मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बिना अपराध सताते हैं (तुफ़ट लगाते हैं) तो उन्होंने झूठ का और जाहिरा पाप का बोझ चढाया। (५८) [रुकू ७]

ऐ पैग़म्बर अपनी बीबियों और अपनी बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कहदो कि अपनी चादरों के घूँघट निकाल लिया करें। इससे बहुधा पहचान पड़ेगी कि (नेक बख़्त हैं) और कोई छेड़ेगा नहीं (मदीने में बिला घूंघट वाली औरतों को शरीर लोग छेड़ते थे) और अल्लाह बख़्शने वाला मिहर्बान है। (५९) मुनाफ़िक़ और वह

लोग जिनकी नियतें बुरी हैं और जो लोग मदीने में (झूठी) खबरें फैलाया करते हैं अगर बाज न आवेंगे तो हम तुमको उन पर उभार देंगे। फिर मदीने में तुम्हारे पड़ोस में चन्दरोज के सिवाय ठहरने न पावेंगे। (६०) इनका यह हाल हुआ कि जहाँ पाए गए पकड़े गए और जान से मारे गए। (६१) जो लोग पहिले हो चुके हैं उनमें खुदा का दस्तूर रहा है (ऐ पैगम्बर) तुम खुदा के दस्तूर में कदापि तब्दीली न पाओगे। (६२) (ऐ पैगम्बर) लोग तुमसे क़यामत का हाल दरयाफ्त करते हैं तुम कहो कि क़यामत की खबर तो अल्लाह ही के पास है और तुम क्या जानों शायद क़यामत निकट आगई। (६३) बेशक अल्लाह ने काफिरों को फटकार दिया है और उनके लिये दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है। (६४) उसमें हमेशा रहेंगे न हिमायती पावेंगे और न मददगार। (६५) (यह वह दिन होगा) जबकि इनके मुँह आग में उलट पलट किये जावेंगे और कहेंगे शोक हमने अल्लाह का और पैग़म्बर का कहा माना होता। (६६) और कहेंगे कि हे हमारे परवर्दिगार हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहा माना फिर उन्होंने हमको राह से भटका दिया। (६७) सो ऐ हमारे परवर्दिगार उनको दुहरी सजा दे और उनपर बड़ी लानत कर। (६८) [रुकू ८]

मुसलमानों ! उन लोगों जैसे न बनो जिन्होंने मूसा को दुःख दिया फिर अल्लाह ने उनके कहे से उसे बेऐब दिखलाया और वह अल्लाह के नजदीक इज्जतदार था। (६९) मुसलमानों अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी कहो। (७०) वह तुमको तुम्हारे कर्म सम्भाल देगा और तुम्हारे पाप तुमको क्षमा करेगा और जिसने अल्लाह और पैग़म्बर का कहा माना उसने बड़ी कामयाबी पाई। (७१) हमने वह अमानत आसमानों ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की थी उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उस से डर गये और आदमी ने उसे उठा लिया वह बड़ा ज़ालिम नादान था। (७२) ताकि अल्लाह मुनाफ़िक (कपटी) मर्दों और मुनाफ़िक औरतों और मुशरिक मर्दों और मुश-

रिक औरतों को सजा दे और मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों पर (अपनी) कृपा करे अल्लाह बख्शने वाला मिहर्बान है। (७३) [रुकू ६]

सूरे सबा

मक्के में उतरी इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। सब खूबी अल्लाह की है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है उसी का है और आखिरत में उसी की प्रशंसा है और वही हिक्मतवाला खबरदार है। (१) जो कुछ जमीन में दाखिल होता है (जैसे बीज) और जो कुछ उससे निकलता है जैसे वनस्पति और जो कुछ आसमान से उतरता (जैसे पानी) और जो कुछ उसमें चढ़कर जाता है (जैसे भाप) वह जानता है और वही कृपालु बख्शनेवाला है। (२) और इनकारी कहने लगे कि हमको वह घड़ी न आवेगी। पोशीदा बातों के जानने वाले अपने परवर्दिगार की क़सम जरूर आवेगी जर्रा भर आसमानों और जमीन में उससे छिपा नहीं और जर्रा (कण) से छोटी और जर्रा से बड़ी जितनी चीजें हैं सब रोशन किताब में लिखी हुई हैं। (३) ताकि ईमान वालों को उनका बदला दे। यही वह लोग हैं जिनके लिये बख्शीश और इज्जत की रोजी है। (४) और जो लोग हमारी आयतों के हराने में करते रहे उन्हें दुःखदाई सजा है। (५) और जिनको समझ दी गई है वह जानते हैं कि तेरे परवर्दिगार की तरफ़ से तुझ पर उतरा है वही सच है और उस जबरदस्त खूबियों वाले की राह दिखलाता है। (६) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं वह कहते हैं कि कहो तो हम तुमको ऐसा आदमी (मुहम्मद) बतलावें जो तुमको खबर देगा कि जब तुम मरे

इनकी सिफ़ारिश काम नहीं आती मगर उसके (काम आयगी) जिसकी बाबत सिफ़ारिश की इजाज़त दे, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट उठ जावे तब कहेंगे तुम्हारे परवर्दिगार ने क्या फर्माया। वे कहेंगे जो वाजिबी है और वही सबसे ऊपर बड़ा है। (२३) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) पूछो कि तुम को आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है कहो कि अल्लाह और मैं (हूँ) या तुम (हो एक न एक फ़रीक़ तो) अवश्य सच राह पर है और (दूसरा) खुली हुई गुमराही में। (२४) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि हमारे पापों की पूछ न तुमसे और न तेरे पापों की पूछ पाछ हमसे होगी। (२५) (और) कह दो कि हमारा परवर्दिगार (क़यामत के दिन) हम को जमा करेगा। फिर हममें न्याय के साथ फ़ैसला कर देगा और वह बड़ा जानकार न्यायी है। (२६) (ऐ पैग़म्बर) कहो जिसको तुम शरीक (खुदा) बनाकर खुदा के साथ मिलाते हो उन्हें मुझे दिखलाओ। कोई उसका शरीक नहीं बल्कि वही अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (२७) और हमने तुमको तमाम (दुनिया के) लोगों की तरफ़ भेजा है कि उनको खुश ख़बरी सुनाओ और डराओ मगर अक्सर लोग नहीं समझते। (२८) और (पूछते हैं) अगर तुम सच्चे हो तो यह (क़यामत का) वादा कब पूरा होगा। (२९) कहो कि तुम्हारे साथ जिस दिन का वादा है तुम न उससे एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे। (३०) [रुकू ३]

और इन्कारी कहने लगे कि हम इस कुरान को कभी न मानेंगे और न इससे पहली किताबों को मानेंगे और अफ़सोस तुम देखो जब (क़यामत के दिन यह) ज़ालिम अपने परवर्दिगार के सामने खड़े किये जायेंगे एक की बात एक रद्द कर रहा होगा कि कमज़ोर (यानी छोटे दर्जे के मनुष्य) बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान लाते। (३१) (इस पर) बड़े लोग कमज़ोरों से कहेंगे कि जब तुम्हारे पास (खुदा की ओर से) हिदायत आई तो क्या उसके आये पीछे हम ने तुम को उस से रोका बल्कि तुम अपराधी थे।

(३२) और कमजोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे रात दिन के तुम्हारे फ़रेब ने हमें गुमराह कर दिया। जब तुम हम से कहते थे कि हम अल्लाह को न मानें और और उसके साथ दूसरे पूजित ठहरावें और जब यह लोग सजा को देखेंगे तो छिपे छिपे पछतायेंगे और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डलवा देंगे। जैसे-जैसे काम ये लोग करते रहे हैं उन्हीं का फल पावेंगे। (३३) और हमने जिस बस्ती में डराने वाला भेजा वहाँ के धनी लोगों ने कहा कि जो कुछ तुम लाये हो हम उसे नहीं मानते। (३४) और (इसी तरह ये मक्के के काफ़िर भी मुसलमानों से) कहते हैं कि हम माल और औलाद में अधिक हैं और हम को दण्ड न होगा। (३५) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि मेरा परव-र्दिगार जिसकी रोजी चाहता है जियादह कर देता है और (जिसकी चाहता है) नपी तुली कर देता है मगर बहुत लोग नहीं जानते। (३६) [रुकू ४]

और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी नहीं कि तुमको हमारा नजीकी बनावे मगर जो ईमान लाया और उसने नेक काम किये ऐसे मनुष्यों के लिये उनके काम का दुगना बदला है और वह बालाखानों में भरोसे से बैठे होंगे। (३७) और जो लोग हमारी आयतों के हराने की कोशिश करते हैं वह सजा में रक्खे जायेंगे। (३८) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि मेरा परवर्दिगार अपने सेवकों में से जिसकी रोजी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी चाहता है नपी तुली कर देता है और तुम लोग कुछ भी (खुदा की राह में) खर्च करो वह उसका बदला देगा और वह सब रोजी देने वालों से अच्छा है। (३९) और खुदा सब लोगों को जमा किये पीछे फ़िरिश्तों से पूछेगा कि क्या यह तुम्हारी ही पूजा किया करते थे। (४०) वह बोले तू पाक है हमको तुमसे सरोकार है इनसे नहीं। बल्कि यह लोग जिन्नों की पूजा करते थे इन में अक्सर जिन्नों पर यक़ीन रखते हैं। (४१) सो आज तुम में एक दूसरे के भले-बुरे का मालिक नहीं और हम उन पापियों से कहेंगे कि जिस आग को तुम झुठलाते थे उसका मजा चक्खो। (४२) और जब हमारी खुली-खुली आयतें उनके सामने पढ़कर

सुनाई जाती हैं तो कहते हैं कि यह (मुहम्मद) एक आदमी है इसका मत लब यह है कि जिनको तुम्हारे बाप दादा पूजा करते थे तुमको उनसे रोक दे और (क़ुरान के बारे में) कहते हैं कि यह तो बस निरा झूठ है। (और इसका अपना) बनाया हुआ और जो लोग इन्कार करने वाले हैं जब उनके पास सच्ची बात आई तो यह उसकी निस्बत कहने लगे कि यह तो जाहिरा जादू है। (४३) और हमने इनको किताबें नहीं दीं कि उनको पढ़ते हों और न तुमसे पहले इनकी तरफ़ कोई डरानेवाला भेजा। (४४) और इनसे अगले लोगों ने (पैग़म्बरों को) झुठलाया था और जो हमने उन लोगों को दे रक्खा था यह लोग (तो अभी) उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे। फिर उन्होंने हमारे पैग़म्बरों को झुठलाया। तो हमारा क्या बिगाड़ हुआ। (४५) [रुकू ५]

(हे पैग़म्बर तुम इन से) कहो कि मैं तुमको एक नसीहत (शिक्षा) करता हूँ कि अल्लाह के काम के लिये दो-दो और एक-एक खड़े हो। फिर सोचो कि तुम्हारे दोस्त (मुहम्मद) को किसी तरह का जनून तो नहीं है। यह तो तुमको आगे आने वाली एक बड़ी आफ़त से डराने वाला है। (४६) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि मैं तुम से कुछ मज़दूरी नहीं चाहता मेरी मज़दूरी तो अल्लाह पर है और वह हर चीज़ का गवाह है (४७) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि मेरा परवर्दिगार सच्चा चला रहा है और वह छिपी हुई बातों को खूब जानता है। (४८) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि सच्ची बात आ पहुँची और झूँठ से न तो कभी कुछ होता है और न आगे होगा। (४९) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि मैं ग़लती पर हूँ तो मेरी ग़लती मेरे ही ऊपर है और अगर सच्ची राह पर हूँ तो इस ईश्वरीय सन्देशे के सबब से जिसे मेरा परवर्दिगार मेरी तरफ़ भेजता है वह सुनने वाला नज़दीक है। (५०) और (ऐ पैग़म्बर) कभी तू देख जब यह घबराये हुए फिर भागकर नहीं बचेंगे और पास के पास से पकड़ जायेंगे। (५१) और कहेंगे हम उस पर ईमान लाये और (इतनी) दूर जगह से कैसे इनके हाथ (ईमान) आ सकता है। (५२) और पहले उससे इन्कार करते रहे

और ये देखे भाले दूर ही से (अटकलें) तुक्के चलाते रहे। (५३) और इनमें और इनकी उम्मेदों में एक अटकाव पड़ गया जैसा पहले उनके पूर्वजों के साथ किया गया कि वे लोग धोखे में थे। (५४) [रुकू ६]

—०—

सूरे फ़ातिर।

मक्के में उतरी इसमें ४५ आयतें और ५ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को है जिस ने आसमान और ज़मीन बना निकाले उसी ने फ़िरिश्तों को दूत बनाया जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार चार पर हैं। पैदायश में जो चाहता है ज़्यादा कर देता है बेशक अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (१) अल्लाह जो लोगों पर कृपा खोले तो कोई उसको बन्द करने वाला नहीं और बन्द करले तो उसके पीछे कोई उसको जारी करने वाला नहीं और वह ज़ोरावर हिक्मत वाला है। (२) ऐ लोगों! अल्लाह की भलाइयों जो तुम पर हैं उनको याद करो अल्लाह के सिवाय क्या कोई पैदा करने वाला है जो आसमान ज़मीन से तुमको रोज़ी दे उसके सिवाय कोई पूजित है फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो। (३) और (ऐ पैग़म्बर) अगर तुमको झुठलायें तो तुमसे पहिले भी पैग़म्बर झुठलाये जा चुके हैं और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं। (४) लोगों अल्लाह का वादा (क़यामत का) सच्चा है सो ऐसा न हो कि दुनियाँ की ज़िन्दगी तुमको धोखे में डाल दे और ऐसा न हो कि (शैतान) दग़ाबाज़ ख़ुदा के बारे में तुमको धोखा दे। (५) शैतान तुम्हारा दुश्मन है सो उसको दुश्मन ही समझे रहो वह अपने लोगों को (अपनी ओर) सिर्फ़ इस ग़रज़ से बुलाता है कि वह लोग नरक वासियों में हो। (६) जो लोग इन्कार करने

वाले हैं उनको सख्त सजा होनी है। और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके लिये बख्शिश और बड़ा फल है। (७) [रुकू १]

तो क्या वह जिसको उसके कुकर्मों को सुकर्म करके दिखाया गया और वह उसको अच्छा समझता है (अच्छे लोगों की भाँति हो सकता है ? नहीं कदापि नहीं) अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है तो इन लोगों पर अफसोस करके तुम्हारी जान न जाती रहे जैसे-जैसे कर्म यह लोग कर रहे हैं अल्लाह उनसे जानकार है (८) और अल्लाह है जो हवायें चलाता है फिर हवायें बादल को उभारती हैं फिर बादल को दूसरे शहर की तरफ़ हाँका। फिर हमने मेंह के जरिये जमीन को उसके मरे पीछे जिन्दा किया है। इसी तरह मुर्दों का उठाना है (९) जो इज्जत का चाहने वाला हो सो सब इज्जत खुदा की है। अच्छी बातें उसी तक पहुँचती हैं और सुकर्म को ऊँचा करता है और जो लोग बुरी तदबीरें करते रहते हैं उनको सख्त सजा होगी और उनकी तदबीरें वही मटियामेट हो जाँयगी। (१०) और अल्लाह ही ने तुमको मिट्टी से पैदा किया। फिर वीर्य से फिर तुमको जोड़े-जोड़े बनाया और न कोई औरत गर्भ रखती और न जनती है वह (सब) अल्लाह के इल्म से है और जो बड़ी उम्रवाला जो उम्र पाता है और जिसकी उम्र घटती है सब किताब में है। यह अल्लाह पर आसान है। (११) और दो समुद्र एक तरह के नहीं हैं एक का पानी मीठा स्वादिष्ट और प्यास बुझाने वाला है और एक का पानी खारी कड़वा है और तुम दोनों में से (मछलियाँ शिकार करके) ताजा गोश्त खाते और जेवर (यानी मोती) निकालते हो जिनको पहनते हो और तू देखता है कि किश्तियाँ नदियों में पानी को फाड़ती चली जाती हैं ताकि तुम खुदा की कृपा ढूँढ़ो और तुम भलाई मानो। (१२) वह रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल कर देता है और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा बस में कर रक्खे हैं कि दोनों बँधे हुए वक्तों में चल रहे हैं। यही अल्लाह तुम्हारा परवर्दिगार है उसी का राज्य है और उसके सिवाय जिन (पूजितों) को तुम पुकारा करते हो

वे जरा सा भी अधिकार नहीं रखते। (१३) तुम उनको (किवनाही) बुलाओ वह तुम्हारे बुलाने को नहीं सुनेंगे और सुनें भी तो तुम्हारी दुआ क़बूल नहीं कर सकते और क़यामत के दिन तुम्हारे शरीक ठहराने से इन्कार करेंगे और जैसा खबर रखने वाला बतायेगा वैसा और कोई तुझे न बतायेगा। (१४) [रुकू २]

लोगों तुम खुदा के मुहताज हो और अल्लाह बे परवाह खूबियों वाला है (१५) वह चाहे तुमको ले जाये और नई सृष्टि ला बसाये (१६) और यह अल्लाह को कठिन नहीं। (१७) और कोई आदमी किसी दूसरे का बोझ नहीं उठावेगा और अगर किसी पर (पापों का बड़ा) भारी बोझ हो और वह अपना बोझ बटाने के लिये (किसी को) बुलावे तो उसका जरा सा भी बोझ नहीं बटाया जायगा अगर्चे वह उसका रिश्तेदार क्यों न हो (ऐ पैग़म्बर) तुम तो उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बे देखे अपने परवर्दिगार से डरते और नमाज़ पढ़ते हैं और जो शख्स सुधरता है सो अपने ही लिये सुधरता है और अल्लाह की तरफ लौट कर जाना है। (१८) और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं। (१९) और न अन्धेरा और उजेला (२०) और न छाया और धूप। (२१) और न जिन्दे और मुर्दे बराबर हो सकते हैं अल्लाह जिसको चाहता है सुनाता है और जो लोग क़बरों में हैं तू उनको सुना नहीं सकता (२२) और तू तो सिर्फ डराने वाला है (२३) हमने तुमको खुश खबरी सुनाने वाला और डरानेवाला बना कर भेजा है और कोई गिरोह ऐसा नहीं जिस में कोई डराने वाला न हो। (२४) और जो यह तुझे झुठलायें तो इनसे पहिलों ने भी (अपने पैग़म्बरों को) झुठलाया है। और उनके पैग़म्बर उनके पास खुले चमत्कार और छोटी किताबें और रोशन किताबें लेकर आये थे। (२५) फिर मैंने इन्कार करने वालों को धर पकड़ा तो मेरे इन्कार का कैसा फल हुआ। (२६) [रुकू ३]

क्या तूने देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उसके जरिये हमने जुदे जुदे रंगों के फल निकाले और पहाड़ोंमें

जुदे-जुदे रंगतों के कुछ पत्थर निकाले। सफ़ेद, लाल और काले भुजंग (२७) और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चारपायों की रंगतें भी कई कई तरह की हैं। ख़ुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो समझ रखते हैं। अल्लाह बलवान बख़्शने वाला है। (२८) जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते और नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दे रक्खा है उस में से छिपा कर और खुले तौर पर (ख़ुदा की राह में) ख़र्चा करते हैं वह ऐसे व्यापार की आस लगाये बैठे हैं जिसमें कभी घाटा नहीं हो सकता। (२६) ख़ुदा उनको उनका पूरा फल देगा और अपनी कृपा से उनको ज़्यादा भी देगा वह बख़्शने वाला क़दरदान है। (३०) और (ऐ पैग़म्बर यह) किताब जो हमने ईश्वरी संदेसे से तुम पर उतारी है यह ठीक है (और जो) (किताबें) इस से पहले की हैं (यह) उनकी सचाई साबित करती है। अल्लाह अपने सेवकों से ख़बरदार देख रहा है। (३१) फिर हमने अपने सेवकों में से उन लोगों को (इस) किताब का वारिस ठहराया जिनको हमने चुना फिर उनमें से कोई अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे हैं और कोई उनमें से बीच की चाल चले जाते हैं और कोई उनमें से ख़ुदा के हुक्म से नेकियों में आगे बढ़े हुये हैं यही (ख़ुदा की) बड़ी कृपा है। (३२) (और उसका बदला यह है) रहने बसने को बाग़ हैं यह लोग उन में दाख़िल होंगे वहाँ उनको सोने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जायगा और उनकी पोशाक रेशमी होगी। (३३) और कहेंगे कि ख़ुदा को धन्यवाद है जिसने हमसे दुःख दूर कर दिया। हमारा परवर्दिगार बड़ा बख़्शने वाला क़दर जानने वाला है। (३४) जिसने हमको अपनी कृपा से ठहरने के घर में उतारा। यहाँ हमको कोई दुःख न पहुँचाएगा और न यहाँ हमको थकान आवेगी। (३५) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके लिये नरक की आग है न तो उनको मौत आती है कि मर जायें और न नरक की सज़ा ही उन से हल्की की जाती है हम हरेक नाशुक्र (कृतघ्नी) को इसी तरह पर सज़ा दिया करते हैं। (३६) और वह लोग नरक में चिल्लाते होंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार हम को (यहाँ से) निकाल (दुनियाँ में ले चल) कि हमजैसे कर्म

करते रहे थे वैसे नहीं (बल्कि) सुकर्म करेंगे (तो उनसे कहा जायगा) क्या हमने तुमको इतनी उम्र नहीं दी थी कि इसमें जो कोई सोचना चाहे सोच ले और तुम्हारे पास डराने वाला आ चुका था। पस चक्खो (मजा दुख का) जालिमों का कोई मददगार नहीं। (३७) [रुकू ४]

अल्लाह आसमानों और जमीन की छिपी बातों को जानता है और जो दिलों के अन्दर है वह जानता है। (३८) वही है जिसने तुमको जमीन में कायम मुकाम बनाया फिर जो इन्कार करता है उसकी इन्कारी का बबाल उसी पर और जो लोग इन्कार करते हैं उन की इन्कारी खुदा का गुस्सा ही बढ़ाती है और इन्कार की वजह से काफिरों को घाटा ही होता चला जाता है। (३९) (ऐ पैगम्बर इन से) कहो कि तुम अपने शरीकों को जिनको तुम खुदा के सिवाय बुलाया करते हो मुझे दिखाओ। उन्होंने कौन सी जमीन बनाई है या आसमानों में उनका कुछ साझा है या हमने इन (मुशरिकों) को कोई किताब दी है कि यह उसकी सनद रखते हैं जालिम दूसरों को धोखे ही के वादे देते हैं। (४०) अल्लाह ने आसमानों और जमीन को थाम रक्खा है कि टल न जायें और टल जायें तो फिर उसके सिवाय कोई नहीं जो उनको थाम सके। अल्लाह संतोषी और बख्शने वाला है (४१) और अल्लाह की बड़ी-बड़ी पक्की कसमें खाया करते थे कि इनके पास कोई डराने वाला आयेगा तो वह जरूर हर एक गिरोह से ज्यादा राह पर होंगे। फिर जब डराने वाला उनके पास आया तो उनकी नफरत ही बढ़ी। (४२) देश में सरकशी और बुरी तदबीरें करने लगे और बुरी तदबीर (उलटफेर) बुरी तदबीर करने वाले ही पर पड़ती है। अब वह अगले लोगों के दस्तूर ही की राह देखते हैं और तू खुदा के दस्तूर में हेर फेर न पायेगा। और अल्लाह के दस्तूर में टलना नहीं पायगा। (४३) क्या चले फिरे नहीं कि अगलों का परिणाम देखें। वह बल में इनसे कहीं बढ़कर थे और अल्लाह इस लायक नहीं कि आसमान जमीन में उसको कोई चीज थका सके। वह जानने वाला बलवान है। (४४) और अगर खुदा लोगों को उनके कर्मों के बदले में पकड़े तो

ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़े मगर वह एक नियत समय तक (यानी क़यामत) तक लोगों को मुहलत दे रहा है। फिर जब उनका समय आएगा तो (उनको बदला देगा) अल्लाह अपने सेवकों को देख रहा है। (४५) [रुकू ५]

——❀——

सूरे यासीन

मक्के में उतरी इसमें ८३ आयतें ५ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहम वाला मिहर्बान है। यासीन (१) हिकमत वाले पक्के कुरान की कसम। (२) तू पैगम्बरों में है। (३) सीधी राह पर। (४) (यह कुरान) शक्तिवान (और) मिहर्बान ने उतारा है। (५) ताकि तुम ऐसे लोगों को डराओ जिनके बाप डराये नहीं गये और वह बेखबर हैं। (६) इनमें से बहुतेरों पर बात (सज़ा) कायम हो चुकी है सो यह न मानेंगे। (७) हमने इनकी गर्दनों में ठोड़ियों तक तौक़ डाल दिये हैं सो वह सिर उछार कर रह गये हैं। (८) और हमने एक दीवार इनके आगे बनाई और एक दीवार इनके पीछे फिर ऊपर से ढाँक दिया सो उनको नहीं सूझता। (९) और (ऐ पैगम्बर) इनके लिये बराबर है कि तुम इनको डराओ या न डराओ यह तो ईमान लाने वाले नहीं हैं। (१०) तू तो उसी को डरा सकता है जो समझाये पर चले और बे देखे रहमान से डरे तो उसको माफी और इज्ज़त की खुशख़बरी सुना दो। (११) हम मुर्दों को जिलाते हैं और जो आगे भेज चुके हैं उनको निशानी हम लिख रहे हैं और हमने हर चीज़ खुली असल किताब में लिख ली है। (१२) [रुकू १]

और (ऐ पैगम्बर) इन से मिसाल के तौर पर एक गाँव (रूम) वालों का हाल बयान करो कि जब उनके पास पैग़म्बर आये। (१३) जब हमने उनकी तरफ दो (पैग़म्बर) भेजे तो उन्होंने इन

दोनों को भुठलाया। इस पर हमने तीसरे (पैग़म्बर को) भेजकर उनकी मदद की तो उन तीनों ने (मिलकर) कहा कि हम तुम्हारे पास (ख़ुदा के) भेजे हुए हैं। (१४) यह कहने लगे कि तुम हमारी तरह के आदमी हो और ख़ुदा ने कोई चीज नहीं उतारी तुम भूठ बोलते हो। (१५) (पैग़म्बरों ने) कहा हमारा परवर्दिगार जानता है कि हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गये हैं। (१६) और हमारा काम तो साफ़ पहुँचा देना है। (१७) यह कहने लगे हमने तो तुमको मनहूस पाया अगर तुम न मानोगे तो तुमको पत्थरों से मारेंगे और हमारे हाथों से तुमको दुःखदाई मार लगेगी। (१८) कहा कि तुम्हारी शामत तुम्हारे साथ है क्या तुमको समझाया गया (तुम हमको नाहक़ उल्टा उलहना देने लगे) नहीं तुम लोग हद से बढ़ गये हो (१९) और शहर के परले सिरे से एक आदमी† दौड़ता हुआ आया। (और) कहने लगा कि भाइयों (इन) पैग़म्बरों के कहे पर चलो। (२०) ऐसे लोगों के कहे पर चलो जो तुमसे बदला नहीं माँगते और ख़ुद सीधी राह पर हैं। (२१)

तेईसवाँ पारा (वमा लिय)

और मुझे क्या है कि जिसने मुझको पैदा किया है उसकी पूजा न करूँ तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। (२२) क्या उसके सिवाय दूसरों को पूजित मानलूँ अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आवे और वह मुझको न छुड़ा सकें। (२३) (अगर) ऐसा करूँ तो मैं प्रत्यक्ष गुमराही में जा पड़ा। (२४) मैं तुम्हारे परवर्दिगार पर ईमान लाया हूँ सो सुन लो। (२५) हुक्म हुआ कि बैकुण्ठ में चला जा। बोला

† यह आदमी एक ग़ार में रहता था। इसका नाम हबीब था।

कि क्या अच्छा होता जो मेरी जाति को मालूम हो जाता। (२६) कि मुझे मेरे परवर्दिगार ने क्षमा कर दिया और इज़्ज़तदारी में दाख़िल किया (२७) और हमने उसके पीछे उसकी कौम पर आसमान से (फ़िरिश्तों का) कोई लश्कर न उतारा और हम (फ़ौजें) नहीं उतारा करते। (२८) वह तो बस एक आवाज़ थी और उसी दम वह जाति (आग की तरह) बुझ कर रह गई। (२९) बन्दों पर शोक है जब कोई पैग़म्बर उनके पास आया इन्होंने उसकी हँसी ही उड़ाई। (३०) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि इनसे पहले हमने कितने गरोहों को मार डाला। और ये इनकी तरफ़ लौटकर कभी न आवेंगे। (३१) और सबमें कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा हमारे पास पकड़ा (हुआ) न आवे। (३२) [रुकू २]

और इनके लिये मुर्दा ज़मीन एक निशानी है हमने उस को जिलाया और उसने अनाज निकाला जो उसी में से खाते हैं (३३) और ज़मीन में हमने खजूर और अंगूरों के बाग़ लगाये और उनमें चश्मे बहाये। (३४) ताकि बाग़ के फलों में से किस्मत का खायें और यह (फल) इनके हाथों के बनाये हुए नहीं। फिर क्यों धन्यवाद नहीं देते। (३५) वह पाक है जिसने सब चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है और इनकी किस्म में से और उस किस्म में से जिन्हें तुम नहीं जानते हो जोड़े पैदा किये। (३६) और इनके लिये एक निशानी रात है कि हम उसमें से दिन को खींचकर निकाल लेते हैं फिर यह लोग अन्धेरे में रह जाते हैं। (३७) और सूरज अपने एक ठिकाने पर चला जाता है यह ज़ोरावर व आगाह से सधा हुआ है। (३८) और चाँद के लिये हमने मञ्ज़िलें ठहरा दीं यहाँ तक कि (आख़िर माह में घटते घटते) फिर ऐसा टेढ़ा पतला रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी। (३९) न तो सूरजही से बन पड़ता है कि चाँद को पकड़े और न रातही दिन से आगे आ सकती है और हर कोई एक एक घेरे में फिरते हैं। (४०) और इनके लिए एक निशानी है कि हमने इन (आदमियों) की औलाद को भरी हुई नाव में उठा लिया।

(४१) और नाव की तरह हमने इनके लिये और चीजें पैदा की हैं जिन पर सवार होते हैं। (४२) और हम चाहें तो इनको डुबो दें फिर न तो कोई इनकी फर्याद लेने वाला होगा और न यह छुड़ाये जा सकेंगे। (४३) मगर (यह) हमारी कृपा है और एक वक्त तक फायदे के लिये (मंजूर है) (४४) और जब उनसे कहा जाता है कि अब तुम्हारे आगे और पीछे हैं उनसे डरते रहो। शायद तुम पर कृपा की जावे। (४५) और इनके परवर्दिगार की निशानियाँ इनके पास आती हैं तो यह उनसे मुहँ मोड़ते हैं। (४६) और जब इनसे कहा जाता है कि खुदा ने जो तुमको रोजी दे रक्खी है उसमें से कुछ खर्च करते रहा करो तो काफिर मुसलमानों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलायें जिनको खुदा चाहे तो आप खिला सकता है तुम प्रत्यक्ष (जाहिरा) गुमराही में हो†। (४७) और कहते हैं अगर तुम सच्चे हो तो यह (कयामत का वादा) कब पूरा होगा। (४८) यही राह देखते हैं कि यह लोग आपस में लड़ झगड़ रहे हों और एक जोर की आवाज इनको आ पकड़े। (४९) फिर न तो वसीयत ही कर सकेंगे और न अपने वाल बच्चों में लौटकर जा सकेंगे। (५०) [रुकू ३]

और सूर (नरसिंहा) फूँका जायगा तो एकदम से कब्रों से (निकल २) अपने परवर्दिगार की तरफ चल खड़े होंगे। (५१) पूछेंगे कि हाय हमारा अभाग्य किसने हमारी कब्रों से हमको उठाया यही तो वह कयामत है जिसका वादा रहमान ने कर रक्खा था और पैग़म्बर सच कहते थे। (५२) कयामत बस एक जोर की आवाज होगी तो एक दम से सब लोग हमारे सामने पकड़े आयेंगे। (५३) फिर उस दिन किसी आदमी पर जरा सा भी जुल्म न होगा और तुम

---

† काफिर कहते थे कि हम उन लोगों को अपनी गाढ़ी कमाई में से क्यों खाने को दें जिनको खुदा ही ने खाने को नहीं दिया। यदि ईश्वर इनको खिलाना चाहता तो स्वयं खिलाता। इनको खिलाना तो ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध करना है। इसपर ये आयतें और इनके अतिरिक्त और कई आयतें उतरीं।

लोगों को उसी का बदला दिया जायगा जो करते रहे। (५४) बैकुण्ठ-वासी उस दिन मजे से जी बहला रह होंगे। (५५) वह और उनकी बीबियाँ साये में तकिया लगाये तख्तों पर बैठी होंगी। (५६) वहाँ उनके लिये मेवे होंगे और जो कुछ वे माँगे। (५७) परवर्दिगार मिहर्वान से सलाम किया जायगा। (५८) और ऐ अपराधियों आज तुम अलग हो जाओ। (५६) ऐ आदम की औलाद क्या हमने तुम पर ताकीद नहीं कर दी थी कि शैतान की पूजा न करना कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६०) और यह कि हमारी ही पूजा करना यही सीधी राह है। (६१) और उसने तुममें से अक्सर लोगों को गुम राह कर दिया क्या तुम अक्ल नहीं रखते थे। (६२) यह नरक है जिसका तुमसे वादा किया जाता था। (६३) आज अपनी इन्कारी के बदले इसमें दाखिल हो। (६४) आज हम इनके मुहों पर मुहर लगा देंगे और जैसे काम यह लोग कर रहे थे इनके हाथ हमको बता देंगे और इनके पाँव गवाही देंगे। (६५) और हम चाहें तो इनकी आँखो को मेटदें फिर यह राह चलने को दौड़ें तो कहाँ से देख पावें। (६६) और अगर हम चाहें तो यह जहाँ हैं वहीं इनकी सूरतें बदल दें फिर न आगे चल सकें न पीछे फिर सकें। (६७) [रुकू ४]

और हम जिसकी उम्र बड़ी करते हैं दुनियाँ में उसको उल्टा घटाते चले जाते हैं फिर क्या नहीं समझते। (६८) और हमने इन (पैगम्बर मुहम्मद) को शायरी नहीं सिखाई और शायरी इनके योग्य भी नहीं यह (कुरान) तो शिक्षा है और साफ है। (६६) ताकि जो जिन्दा (दिल) हों उनको (खुदा की सजा से) डरावें काफिरों पर बात (सजा) क़ायम करें। (७०) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि हमने अपने हाथों से इनके लिये चौपाये पैदा किये और यह उनके मालिक हैं। (७१) और हमने उनको इनके वश में कर दिया है तो उनमें से (बाज) इनकी सवारियाँ हैं और उनमें से (बाज को) खाते हैं। (७२) और उन में इनके लिये फायदे हैं और पीने की चीजें, (यानी दूध) तो क्या (यह लोग) धन्यवाद

नहीं देते। (७३) और लोगों ने खुदा के सिवाय दूसरे पूजित इस उम्मेद से बना रक्खे हैं कि उनको मदद मिले। (७४) को यह उनकी मदद नहीं कर सक्ते बल्कि यह उनकी फौज होकर (खुद) पकड़े आवेंगे। (७५) तो इनकी बातें तुम्हारी उदासी का कारण न हों क्योंकि जो कुछ छिपाकर और जोकरते हैं जाहिरा करते हैं हम जानते हैं। (७६) क्या आदमी को मालूम नहीं कि हमने उसको धीर्य से पैदा किया फिर वह जाहिरा झगड़ालू होगया। (७७) और हमारी बाबत बातें बनाने लगा और अपनी पैदायश को भूल गया और कहने लगा जब हड्डियाँ गल गईं तो उन को कौन जिला खड़ा करेगा। (७८) (ऐ पैगम्बर तुम इस गुस्ताख से) कहो कि जिसने हड्डियों को पहिली बार पैदा किया था वही उन को जिलायेगा और वह सब (तरह का) पैदा करना जानता है। (७९) वही है जो हरे दरख्तों से तुम्हारे लिये आग पैदा करता है फिर तुम उस से (और आग) सुलगा लेते हो। (८०) क्या जिसने आसमान और जमीन पैदा किये वह इस पर शक्तिमान नहीं कि इन जैसे (आदमियों को दुबारा) पैदा करे। हाँ जरूर शक्तिमान है और वह बड़ा पैदा करने वाला जानने वाला है (८१) उसका हुक्म यही है कि जब किसी चीज (के बनाने) का इरादा करे तो उसे कहे हो और वह हो जाता है। (८२) वह पाक है जिसके हाथ में हर चीज का पूरा अधिकार है और मरे पीछे तुम उसी की तरफ लौटाये जावोगे। (८३) [रुकू ५]।

सूरे साफ़्फ़ात

मक्के में उतरी इसमें १८२ आयतें और ५ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। क़ताकरों की क़सम तो क़तारों में खड़े होते हैं (१) फिर झिड़क कर

डाटने वालों की कसम। (२) फिर याद कर (कुरान) पढ़ने वालों की कसम। (३) बेशक तुम्हारा हाकिम एक (खुदा) है। (४) आसमान जमीन और जो चीजें आसमान और जमीन में हैं सब परवर्दिगार और उन मुकामों का परवर्दिगार जहाँ जहाँ से सूरज जुदा-जुदा समय पर निकलता है। (५) हमने आसमान को सितारों की शोभा से सजाया। (६) और हर शैतान सरकश से बचाव बनाया। (७) वह (शैतान) ऊपर के लोगों (यानी फिरिश्तों की बातों) की तरफ कान नहीं लगाने पाते और उनके लिये हर तरफ से (उन पर अंगारे) फेंके जाते हैं। (८) भगाने के लिये और उनकी हमेशा की मार है। (९) मगर कोई (किसी फरिश्ते की बात को) जल्दी से उचक लेजाता है तो दहकता हुआ अंगारा उसके पीछे लगता है। (१०) तो (ऐ पैगम्बर) इनसे पूछ कि क्या इनका पैदा करना ज्यादा मुश्किल है या जिनको हमने बनाया है। इन आदम के बेटों को हमने लसदार मिट्टी से पैदा किया है। (११) (ऐ पैगम्बर) तूने अचम्भा किया और यह हँसते हैं। (१२) और जब इनको समझाया जाता है तो नहीं समझते। (१३) और जब कोई निशानी देखते हैं हँसी उड़ाते हैं। (१४) और कहते हैं यह तो बस प्रत्यक्ष जादू है। (१५) क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह गये कयामत में उठा खड़े किये जायेंगे (१६) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी उठेंगे। (१७) (ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि हाँ और तुम जलील होगे। (१८) तो वह तो एक झिड़की है फिर तभी यह देखने लगेंगे। (१९) और बोल उठेंगे कि हाय हमारा अभाग्य यह तो न्याय का दिन है। (२०) यही फैसले का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (२१) [रुकू १]

जालिमों को और उनकी जोरुओं को और खुदा के सिवाय जिनको पूजते रहे हैं उनको इकट्ठा करो। (२२) फिर उनको नरक की राह ले चलो। (२३) और उनको खड़ा रक्खो कि उनसे सवाल होगा। (२४) तुम्हें क्या हो गया कि एक दूसरे की मदद नहीं करते। (२५)

(यह कुछ भी जवाब न देंगे) बल्कि यह उस दिन नीची गर्दन किये होंगे। (२६) और एक की तरफ एक ध्यान देकर पूछा पाछी करेगा। (२७) एक फरीक (दूसरे फरीक) से कहेगा कि तुम्हीं दाहिनी तरफ से (बहकाने को) हमारे पास आया करते थे। (२८) वह कहेंगे नहीं तुम (आप) ईमान नहीं लाते थे। (२९) और तुम पर हमारा कुछ बल्कि जोर तो न था बल्कि तुम सरकश थे। (३०) तो हमारे परवर्दिगार का वादा हमारे हक में पूरा हुआ हमको सजा के मजे चखने होंगे। (३१) हम बहके हुये थे तो हमने तुमको भी बहका दिया। (३२) तो वे उस दिन सजा में शरीक होंगे। (३३) हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (३४) (यह ऐसे) सरकश थे। जब इनसे कहा जाता था कि खुदा के सिवाय कोई पूजित नहीं तो यह अकड़ बैठते थे। (३५) और कहते थे कि भला हम अपने पूजितों को एक पागल शायर के लिये छोड़ दें। (३६) बल्कि यह सच्चा दीन लेकर आया है और सब पैगम्बरों को सच माना है (३७) तुम जरूर दुःखदाई सजा चक्खोगे। (३८) और जैसे जैसे कर्म करते रहे हो उन्हीं का बदला पाओगे। (३९) मगर अल्लाह के खास बन्दे। (४०) यह ऐसे होंगे कि इनकी रोजी मालूम है। (४१) मेवे और इनकी इज्जत होगी। (४२) नियामत के बागों में। (४३) तख्तों पर आमने सामने होंगे। (४४) इनमें साफ शराब का प्याला घुमाया जायगा। (४५) सफेद रंग पीने वालों को मजा देगी। (४६) न उससे सिर घूमते हैं और न उससे बकते हैं। (४७) और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी आँखों की औरतें होंगी। । (४८) गोया वह अण्डे छिपे रखे हैं। (४९) फिर यह एक दूसरे की तरफ ध्यान देकर आपस में पूछा पाछी करेंगे। (५०) इनमें से एक कहेगा कि एक मेरा साथी था। (५१) (और वह) पूँछा करता था कि क्या तू उन लोगों में है जो (क्यामत) को मानते हैं। (५२) क्या जब हम मर जाँयगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाँयगे हमको बदला मिलेगा। (५३) कहने लगा भला तू झांककर देखेगा। (५४) फिर झाँकेगा तो उसको नरक के

बीचोबीच देखेगा। (५५) बोल उठेगा कि ख़ुदा की क़सम तू तो मुझे तबाह करने को था। (५६) और अगर मेरे परवर्दिगार की कृपा न होती तो मैं पकड़े हुओं में होता। (५७) क्या हमको अब मरना नहीं। (५८) अगर पहिली बार मर चुके और हमें सज़ा न होगी। (५६) बेशक यही बड़ी कामयाबी है (६०) चाहिये कि ऐसी कामयाबी के लिये काम करने वाले काम करें। (६१) भला यह सिह मानी बिहतर है या सेंहुड़ का पेड़। (६२) हमने उसको ज़ालिमों के ख़राब करने को रक्खा है। (६३) वह एक दरख़्त है जो नरक की जड़ में (से) उगता है। (६४) उसके फल जैसे शैतानों के सिरों। (६५) सो यह उसी में से खायेंगे और उसी से पेट भरेंगे। (६६) फिर उनको उस पर खौलता हुआ पानी दिया जायगा। (६७) फिर इनको नरक की तरफ़ लौटना होगा। (६८) (ऐ पैग़म्बर) इन्होंने (यानी मक्के के काफ़िरों) ने अपने बाप दादों को बहका हुआ पाया। (६६) सो ये उन्हीं के पीछे पीछे चले जा रहे हैं। (७०) और इनसे पहिले अक्सर गुमराह हो चुके हैं। (७१) और उनमें भी हमने डर सुनाने वाले (पैग़म्बर भेजे) थे। (७२) तो (ऐ पैग़म्बर देखो उन लोगों का कैसा (अच्छा) परिणाम हुआ जो डराये जा चुके हैं। (७३) मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे। (७४) [रुकू २]

और नूहने हमको पुकारा था तो (हमने उनकी फ़र्याद सुनली और) हम अच्छी फ़र्याद पर पहुँचने वाले हैं। (७५) नूह और उनके घरवालों को उस बड़ी घबराहट से बचा दिया। (७६) और उनकी औलाद को ऐसा किया कि बाक़ी रह गई। (७७) और आनेवाले गिरोहों में उनका ज़िक्र ख़ैर बाक़ी रक्खा। (७८) सारे जहान में (हर तरफ़ से) नूह पर सलाम। (७६) नेक मनुष्यों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८०) नूह हमारे ईमानदार बन्दों में से हैं। (८१) फिर औरों को हमने डुबो दिया। (८२) और नूह के तरीक़े पर चलनेवालों में से एक इब्राहीम भी थे। (८३) जब साफ़ दिल से अपने परवर्दिगार की तरफ़ रुजू हुआ। (८४) जब अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा

कि तुम क्या पूजते हो। (८५) क्यों अल्लाह के सिवाय झूठे पूजित बनाकर चाहते हो। (८६) फिर तुमने जहान के पालने वाले को क्या समझ रक्खा है। (८७) फिर तारों पर एक निगाह की। (८८) फिर कहा मैं बीमार हूँ‡। (८९) सो वह लोग उनको छोड़कर चले गये। (९०) उनका जाना था कि इब्राहीम चुपके से उनकी मूर्तियों में जा घुसे और कहा कि तुम खाते नहीं। (९१) तुम्हें क्या हुआ तुम क्यों नहीं बोलते। (९२) फिर (इब्राहीम) दाहिने हाथ से उनके मारने को घुसा। (९३) फिर लोग उस पर घबड़ाते दौड़े आये। (९४) (इब्राहीम ने) कहा क्या तुम ऐसी चीज़ों को पूजते हो जिनको तुम (आप) तराशकर बनाते हो। (९५) तुमको और जिन चीज़ों को तुम बनाते हो अल्लाह ही ने पैदा किया है। (९६) (यह सुनकर वह लोग) कहने लगे कि इब्राहीम के लिए एक इमारत बनाओ और उसको दहकती हुई आग में डाल दो। (९७) फिर इब्राहीम के साथ बुरा दाव चाहने लगे फिर हमने उन्हीं को नीचे डाला। (९८) और कहा मैं अपने परवर्दिगार की ओर जाता हूँ वह मुझे ठिकाने लगा देगा। (९९) और (इब्राहीम ने दुआ माँगी) ऐ मेरे परवर्दिगार मुझको नेकों में से (एक नेक जीव) दे। (१००) फिर हमने उनको एक बड़े हलीम लड़के (इस्माईल) की खुशखबरी दी। (१०१) फिर जब लड़का इब्राहीम के साथ चलने फिरने लगा तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा मैं स्वप्न में देखता हूँ कि मैं तुमको बलिदान कर रहा हूँ फिर देख कि तेरी क्या राय है। (बेटे ने) कहा कि ऐ बाप जो तुमको हुक्म हुआ है तू कर खुदा ने चाहा तू मुझे सतोषी पाएगा। (१०२) फिर जब दोनों (बाप बेटों) ने हुक्म माना और बाप ने (हलाल करने के लिए) बेटे को माथे के बल पछाड़ा। (१०३) और हमने उसे पुकारा कि ऐ इब्राहीम! (१०४) तूने स्वप्न को सच कर दिखाया नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। (१०५)

---

‡ हज़रत इब्राहीम की कौम ने उनसे मेले चलने को कहा तो उन्होंने यह बात कह कर उनको अपने पास से टाल दिया और फिर उन के बुतों को तोड़ डाला ताकि उनके कौम वाले समझलें कि वह जिन को पूजते हैं वह केवल दूसरों का क्या, अपना भी बचाव नहीं कर सकते।

बेशक यह खुली हुई परीक्षा थी । (१०६) और हमने बड़े बलिदान† को इस्माईल के बदले में दिया। (१०७) और आने वाले गिरोहों में उनका ज़िक्र बाकी रक्खा। (१०८) इब्राहीम पर सलाम। (१०९) हम नेक सेवकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (११०) यह (इब्राहीम) हमारे ईमानदार बन्दों में हैं। (१११) और हमने इब्राहीम को (दूसरे बेटे) इसहाक़ की ख़ुशख़बरी दी कि (यह भी) नेक और पैग़म्बर होगा। (११२) और हमने इब्राहीम और इसहाक़ को बरकतें दीं और इन दोनों की औलाद में कोई नेक और कोई बुरे अपने ऊपर आप ज़ुल्म करने वाले भी हैं। (११३) [रुकू ३]

और हमने मूसा और हारून पर अहसान किये। (११४) और दोनों (भाइयों को और उनकी क़ौम को बड़ी घबराहट (यानी फ़िरऔन के ज़ुल्म) से छुटकारा दिलाया। (११५) और (फ़िरऔन के मुक़ाबिले में) उनकी मदद की तो वही लोग जीत में रहे। (११६) और दोनों भाइयों को (तौरात की) किताब दी। (११७) और दोनों को सीधी राह दिखाई। (११८) और (उनके बाद) आने वाले गिरोह में उनका ज़िक्र बाक़ी रक्खा। (११९) मूसा और हारून पर सलाम है। (१२०) हम नेक सेवकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१२१) यह दोनों हमारे ईमानवाले बन्दों में हैं। (१२२) और इलियास (भी) बेशक पैग़म्बर में से हैं। (१२३) जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम (ख़ुदा से) नहीं डरते। (१२४) क्या तुम बअ़ल (मूर्ति) को पूजते और बिहतर अल्लाह को छोड़ बैठे हो (१२५) अल्लाह तुम्हारा परवर्दिगार और तुम्हारे अगले बाप दादों का भी परवर्दिगार है। (१२६) लोगों ने उनको झुठलाया तो यह लोग भी गिरफ़्तार होंगे। (१२७) मगर

---

† ख़ुदा ने उनके बेटे को बचा लिया और उनके बदले एक दुम्बा हलाल होगया यह बात इब्राहीम को उस समय मालूम हुई जब कि उन्हों ने अपनी आँखों की पट्टी खोली।

अल्लाह के चुने बन्दे। (१२८) और (इल्यास के बाद) आने वाले गिरोहों में हमने उनका ज़िक्र बाक़ी रक्खा। (१२६) इल्यास पर सलाम हो। (१३०) तुम नेकों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (१३१) इल्यास हमारे ईमान वाले दासों में से है। (१३२) और बेशक लूत पैग़म्बरों में से है। (१३३) हमने लूत को और उनके तमाम कुटुम्ब को बचा लिया। (१३४) मगर एक बुढ़िया (लूत की स्त्री) बाक़ियों में थी। (१३५) फिर हमने औरों को मार डाला। (१३६) और तुम सुबह को गुज़रते हो। (१३७) और रात को भी (गुज़रते हो) क्या तुम नहीं समझते। (१३८) [रुकू ४]

और बेशक यूनिस पैग़म्बरों में से है। (१३६) जब भाग कर भरी हुई किश्ती के पास पहुँचे। (१४०) और फिर कुरा (चिट्ठियाँ) डाला (चूँ कि कुरे में उनका नाम निकला) तो धकेले हुओं में होगया। (१४१) फिर उनको मछली ने निगल लिया और वह उस वक्त अपने आपको मलामत करता था। (१४२) अगर यूनिस (ख़ुदा की) पवित्रता से याद करने वालों में से न होता। (१४३) तो उस दिन तक जब कि लोग उठा खड़े किये जायगे मछली ही के पेट में रहता। (१४४) फिर हमने उसको (मछली के पेट से निकाल कर) खुले मैदान में डाल दिया और वह (मछली के पेट में रहने से) बीमार था। (१४५) फिर हमने उस पर (कद्दू की तरह का) एक बेलदार दरख्त उगाया। (१४६) और उसको लाख बल्कि लाख से भी अधिक आदमियों की तरफ़ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा। (१४७) फिर वह ईमान लाये तो हमने उनको एक वक्त तक बरतने दिया। (१४८) तो (ऐ पैग़म्बर) इन (मक्के के काफ़िरों) से पूछो कि क्या ख़ुदा के लिये बेटियाँ और उनके लिये बेटे हैं। (१४६) या हमने फ़िरिश्तों को औरतें बनाया और वह देख रहे थे। (१५०) यह तो अपने दिल से बना बना कर कहते हैं। (१५१) कि ख़ुदा औलाद वाला है और कुछ शक नहीं कि यह लोग झूँठे हैं। (१५२) क्या (ख़ुदा ने) बेटों पर बेटियाँ पसन्द कीं। (१५३)

तुमको क्या हुआ कैसा इन्साफ़ करते हो। (१५४) क्या तुम ध्यान नहीं देते। (१५५) क्या तुम्हारे पास कोई खुली हुई सनद है। (१५६) सच्चे हो तो अपनी किताब लाओ। (१५७) और इन लोगों ने ख़ुदा में और जिन्नों में नाता ठहराया है हालाँ कि जिन्नों को अच्छी तरह मालूम है कि यह हाज़िर किये जायेंगे। (१५८) जैसी बातें (यह लोग) बनाते हैं ख़ुदा उनसे पाक है। (१५९) मगर अल्लाह के ख़ालिस बन्दे हैं। (१६०) सो तुम और (जिन्नों को) जिनकी तुम पूजा करते हो। (१६१) ख़ुदा से जिद करके किसी को बहका नहीं सकते। (१६२) मगर उसी को जो नरक में जाने वाला है। (१६३) और हम में से हर एक का दर्जा मुक़र्रर है। (१६४) और हम जो हैं हमही हैं (ख़ुदा की बन्दगी में) पाँति बाँधने वाले। (१६५) और हमतो उसकी (ख़ुदा की) याद में लगे रहते हैं। (१६६) और यह (मक्का के काफ़िर) कहा ही करते थे। (१६७) कि अगले लोगों की कोई पुस्तक हमारे पास होती। (१६८) तो हम ख़ुदा के चुने हुए बन्दे होते। (१६९) सो उन्हों ने इस (क़ुरान) को न माना तो आगे चलकर मालूम कर लेंगे। (१७०) और हमारे बन्दे पैगम्बरों के हक़ में हमारा हुक्म पहले ही हो चुका है। (१७१) बेशक उन्हीं की मदद होती है (१७२) और हमारा लशकर जबरदस्त रहा करता है (१७३) तो (ऐ पैग़म्बर) चन्दरोज़ इन इन्कार करने वालों से मुँह मोड़ ले। (१७४) और उन्हें देखता रह कि आगे वह भी देख लेंगे। (१७५) क्या हमारी सज़ा के लिये जल्दी मचा रहे हैं। (१७६) जब वह सज़ा उनके आँगनों में उतरेगी तो जिन लोगों को पहिले से डराया जा चुका था उनकी सुबह बुरी होगी। (१७७) और तू उन से एक वक़्त तक मुहँ मोड़ ले। (१७८) और देखता रह आगे चलकर यह भी देख लेंगे। (१७९) (ऐ पैगम्बर) जैसी-जैसी बात (यह लोग) बनाते हैं उनसे तेरा इज़्ज़तवाला परवरदिगार पाक है। (१८०) और पैगम्बरों पर सलाम है (१८१) और सब ख़ूबी अल्लाह को है जो सब संसार का परवरदिगार है। (१८२)। [रुकू ५]

सूरे साद

मक्के में उतरी इसमें ८८ आयतें और ५ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहरबान है। साद क़ुरान की क़सम जिसमें नसीहत है (१) बल्कि जो लोग इन्कार करने वाले हैं शेकड़ी और दुशमनी में हैं। (२) हमने इनसे पहले बहुत से गिरोहों को मार डाला (सजा के वक्त) चिल्ला उठे और रिहाई की मुहलत न रही। (३) और इन लोगों ने अचम्भा किया कि इनमें का डराने वाला इनके पास आगया और काफ़िरों ने कहा यह जादूगर झूठा है। (४) क्या इसने पूजितों की खोज खोकर एक ही पूजित रक्खा यह बड़ी ही अनोखी बात है। (५) और इनमें के चन्द सरदार लोग यह कहकर चल खड़े हुए और अपने पूजितों पर जमे रहो, यह बात (जो यह शख्श समझाता है) बेशक इसमें इसकी कुछ गरज है। (६) हमने यह बात पिछले मजहब में नहीं सुनी यह (इसकी) गढ़त है। (७) क्या हम में से उसी पर खुदा की याद उतरी है वह मेरे कलाम की बाबत शक में हैं अभी इन्होंने हमारी सजा नहीं चक्खी। (८) (ऐ पैग़म्बर) क्या तुम्हारे परवर्दिगार शक्तिमान दाता की कृपा के खजाने इन्हीं के पास हैं। (६) यह आसमान या जमीन और वह चीजें जो आसमान जमीन में हैं उनका अधिकार उन्हीं को है तो इनको चाहिए कि रस्सियाँ लगाकर (आसमान पर) चढ़ें। (१०) (ऐ पैग़म्बर) तमाम लश्करों में से यह क़ौम भी इस जगह एक शिकस्त खाई हुई फ़ौज है। (११) इनसे पहले नूह की क़ौम और आद और मेखों वाले फ़िरऔन झुठला चुके हैं। (१२) और समूद और लूत की क़ौम और एका के गरोह। (१३) इन सब ही ने तो पैग़म्बरों को झुठलाया फिर हमारी सजा आ उतरी। (१४) [रुकू १]

और यह (क़ुरेश) भी एक चिंघाड़ की बाट देखते हैं जो बीच में दम न लेगी। (१५) उन्होंने कहा ऐ हमारे परवरदिगार हमारे कर्म का

लेखा हिसाब लेने के दिन से पहिले हमको जल्दी दे। (१६) (ऐ पैग़म्बर) जैसी-जैसी बातें यह लोग करते हैं उन पर सब्र कर और हमारे सेवक दाऊद को याद कर कि (हर तरह की) ताक़त रखते थे और वह (ख़ुदा की तरफ़) रुजू रहते थे। (१७) हमने पहाड़ों को उनके कब्जे में कर रक्खा था कि सुबह शाम उनके साथ पवित्र बोला करें। (१८) और परिन्दे सब जमा होकर उनके सामने रुजू रहते। (१६) और हमने उसके राज्य को मजबूत कर दिया और उसे हिकमत और फ़ैसला की बात दी थी। (२०) और (ऐ पैग़म्बर) क्या दावेदारों की ख़बर तेरे पास आई है जब वह पूजित जगहों की दीवारें (फाँद कर)। (२१) दाऊद के पास आये वह उनसे डरा उन्होंने कहा मत डरो। हम दोनो झगड़ालू हैं हममें से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है। तू हममें सच्चा फ़ैसला कर दे और बात को दूर न डाल और हमको सीधी राह बता दे। (२२) यह मेरा भाई है इसके निन्नानवे भेड़ें हैं और मेरे (यहाँ सिर्फ़) एक ही भेड़ है अब यह कहता है कि अपनी भेड़ भी मुझे दे डाल और बातचीत में मुझसे सख़्ती की है। (२३) (दाऊद ने) कहा कि इसने जो तेरी भेड़ माँगकर अपनी भेड़ों में मिलाने के लिए तुझ पर ज़ुल्म किया है और बहुधा शरीक एक दूसरे पर ज़्यादती करते रहते हैं मगर जो लोग ईमान रखते और नेक काम करते हैं और ऐसे लोग बहुत ही थोड़े हैं और दाऊद को ख़्याल आया कि हमने उनको आज़माया फिर अपने परवर्दिगार से क्षमा माँगी और झुककर मेरी ओर रुजू हुआ। (२४) और हमने उनको क्षमाकर दिया और हमारे यहाँ उसका मर्तबा और अच्छा ठिकाना है। (२५) (ऐ दाऊद) हमने तुझे मुल्क में नायब बनाया तो लोगों में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया कर और (अपनी) ख़्वाहिश पर न चल (ऐसा करोगे) तो (इन्द्रियों की इच्छाओं) की पैरवी तुझे ख़ुदा की राह से भटका देगी जो लोग ख़ुदा की राह से भटकते उसको सख़्त सज़ा होनी है। इसलिए कि क़यामत के दिन को भूल रहे हैं। (२६) [रुकू २]

और हमने आसमान और ज़मीन को और जो चीज़ें आसमान

और जमीन में हैं उनको वृथा नहीं पैदा किया । यह उन लोगों का ख्याल है जो काफ़िर हैं और नरक के सबब से काफ़िरों के हाल पर अफ़सोस है । (२७) क्या हम ईमानदारों और नेक काम करने वालों को ज़मीन में फ़िसादियों के बराबर कर देंगे या हम परहेज़गारों को बदकारों के बराबर करेंगे । (२८) (ऐ पैग़म्बर यह क़ुरान) बरकत वाली किताब है जो हमने तेरी तरफ उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों में ध्यान दें और अक़्लवाले समझें । (२९) हमने दाऊद को सुलेमान (बेटा) दिया । वह अच्छा बन्दा रुजू रहने वाला था । (३०) जब शाम के वक्त खासे असील घोड़े उनके सामने पेश किये गये (तो वह उनके देखने में ऐसे जुटे कि नमाज का वक्त जाता रहा) । (३१) तो कहने लगे कि मैंने अपने परवर्दिगार की यादगारी से माल की मुहब्बत ज़ियादह की यहाँ तक कि सूरज ओट में छिप गया (३२) (अच्छा तो) इन घोड़ों को मेरे पास लौटा लाओ और अब पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे । (३३) और हमने सुलेमान को जाँचा और उसके तख्त पर एक मुर्दा जिस्म को डाल दिया और फिर सुलेमान रुजू हुआ । (३४) बोला ऐ मेरे परवर्दिगार मेरा अपराध क्षमा कर और मुझे ऐसा राज्य दे कि मेरे पीछे किसी को न चाहे । बेशक तू बड़ा बख्शने वाला है । (३५) फिर हमने हवा उसके क़ाबू में कर दी थी उसी के हुक्म से हवा धीरे धीरे जहाँ वह चाहता था चलती थी । (३६) और शैतान जितने बवई (इमारत बनाने वाले) और डुबकी लगाने वाले थे उनके क़ाबू में कर दिये थे । (३७) कितने और बंधे बेड़ियों में हैं । (३८) यह हमारी बे हिसाब देन है अब तू भलाई कर या अपने ही पास रक्खे रह । (३९) और बेशक सुलेमान का हमारे यहाँ मर्तबा और अच्छा ठिकाना है । (४०) [रुकू ३] । —

(ऐ पैग़म्बर) हमारे दास अयूब को याद करो जब उसने अपने परवर्दिगार को पुकारा कि शैतान ने मुझे दुःख और तक्लीफ़ पहुँचा रक्खी है । (४१) (ख़ुदा ने कहा) अपने पाँव से लात मार (चुनाँचि

लात मारी तो) एक चश्मा निकला (तो हमने अयूब से फर्माया कि) तुम्हारे नहाने और पीने के लिये यह ठंडा पानी हाजिर है। (४२) और हमने उसको उसके बाल-बच्चे और उनके साथ इतने ही और दिये (यह हमने) अपनी तरफ से कृपा की ताकि जो समझ रखते हैं उनके लिये यादगारी रहे। (४३) और (हमने अयूब से फर्माया) सीकों का मुट्ठा अपने हाथ में ले और (अपनी बीबी को) उससे† मार और (अपनी) कसम न तोड़ हमने अयूब को संतोषी पाया। वह अच्छा बन्दा रुजू रहने वाला था। (४४) और (ऐ पैगम्बर) हमारे बन्दा इब्राहीम, इसहाक और याकूब को याद कर (वे) हाथों और आँखों वाले थे। (४५) हमने उनको एक खास बात क्यामत की याद के लिये चुना था। (४६) और वह हमारे यहाँ कबूल किये हुए नेक दासों में हैं। (४७) और इसमाईल और इलयास और जुलकिफ्लि को याद कर सब नेक बन्दों में हैं। (४८) यह जिक्र है और बेशक परहेजगारों का अच्छा ठिकाना है। (४९) रहने के (बैकुण्ठ के) बाग जिनके दरवाजे उनके लिये खुले होंगे। (५०) उनमें तकिया लगाकर बैठेंगे वहाँ बैकुण्ठ के नौकरों से बहुत से मेवे और शराब मँगावेंगे। (५१) और उनके पास नीची नजर वाली (बीबियाँ) होंगी और हमउम्र होंगी। (५२) यह वह (नियामतें) हैं जिनका तुमसे क्यामत के दिन के लिये वादा किया जाता है। (५३) बेशक यह हमारी (दी हुई) रोजी है जो कभी खत्म होने की नहीं। (५४) यह बात है कि सरकशों का बुरा ठिकाना है। (५५) नरक उसमें इनको जाना पड़ेगा और वह बुरी जगह है। (५६) यह खौलता हुआ पानी और पीब इसको चक्खो (५७) और इसी तरह की और तरह-तरह की चीजें हैं। (५८) यह एक फौज है वही तुम्हारे साथ नरक में धँसती

---

† कहते हैं कि अयूब ने अपनी बीबी से किसी बात पर बिगड़ कर कसम खाई थी कि मैं तुम को सौ छड़ियाँ मारूँगा। कसम का पालन करने के लिये सौ सींकों की झाड़ू से एक बार अपनी बीबी को मारने का उनको हुक्म दिया गया।

आती है इनको जगह न मिले यह आग में आने वाले हैं। (५६) बोले तुम्हीं तो हो तुम्हें खुशी भी नसीब न हो तुम्हीं तो यह हमारे आगे लाये हो यह बुरी जगह है। (६०) बोले ऐ हमारे परवर्दिगार जो यह हमारे आगे लाया उसको नरक में दोहरी सजा बढ़ा दे। (६१) और कहेंगे कि जिन लोगों को हम बुरे लोगों में गिना करते थे हम उनको नहीं देखते। (६२) क्या हमने उनको हँसोड़ ठहराया था उनकी तरफ से आँखें टेढ़ी होगई थीं। (६३) यह नरकवासियों का आपस में झगड़ना सच है। (६४) [रुकू ४]।

(ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि मैं सिर्फ डराने वाला हूँ और एक ख़ुदा के सिवाय और कोइ ज़ोरावर नहीं। (६५) आसमान और ज़मीन और उन चीज़ों का मालिक है जो आसमान ज़मीन के बीच में है और (वह) ज़ोरावर बड़ा बख्शने वाला है। (६६) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि क़ुरान बड़ी ख़बर है। (६७) क्या तुम इसको ध्यान में नहीं लाते। (६८) मुझको ऊपर वाली किसी आबादी की कुछ ख़बर न थी जब वह झगड़ते थे। (६९) मुझको तो यही हुक्म आता है कि मैं सिर्फ़ एक ज़ाहिरा डर सुनानेवाला हूँ। (७०) जब तेरे परवर्दिगार ने फ़िरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक आदमी बनानेवाला हूँ। (७१) तो जब मैं उसे पूरा कर लूँ और अपनी रूह उसमें फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सिजदे में गिर पड़ना। (७२) चुनाचि सबही फ़िरिश्तों ने उसे सिजदा किया। (७३) मगर इब्लीस ने ग़रूर किया और वह काफ़िरों में था। (७४) ख़ुदा ने (इब्लीस से) पूँछा कि ऐ इब्लीस जिसको मैंने अपने हाथों बनाया उसको सिजदा करने से तुझे किसने रोका। क्या तूने घमंड किया या तू दर्जे में बड़ा था। (७५) बोला मैं उससे कहीं बेहतर हूँ मुझको तूने आग से बनाया और उसको तूने मिट्टी से बनाया है। (७६) फ़र्माया तू यहाँ से निकल तू फटकारा हुआ है। (७७) और क़यामत तक तुझ पर हमारी फटकार है। (७८) बोला ऐ मेरे परवर्दिगार मुझको उस दिन तक की मुहलत दे जब कि मुर्दे दुबारा उठा खड़े किये जाँयगे। (७९) फ़र्माया तुझको उस दिन

वक्त की मुहलत है। (८०) उस वक्त के दिन तक जो मालूम है। (८१) फिर बोला तेरी इज़्ज़त की क़सम मैं इन सबको गुमराह करूँगा। (८२) मगर जो तेरे चुने बन्दे हैं (उनको नहीं)। (८३) फ़र्माया तो ठीक बात यह है और ठीक ही कहता हूँ (८४) कि मैं तुझसे और जो कोई उनमें से तेरी पैरवी करेगा उनसे नरक को भर दूँगा। (८५) (ऐ पैग़म्बर तुम इन लोगों से) कहो कि मैं ख़ुदा के इस हुक्म पर तुमसे कुछ बदला नहीं माँगता और न मुझको तकल्लुफ़ करना आता है। (८६) यह क़ुरान दुनियाँ जहान के लोगों को शिक्षा है। (८७) और कुछ दिनों में तुमको इसकी ख़बर मालूम हो जायगी। (८८) [रुकू ५]

सूरे ज़ुमर

मक्के में उतरी इसमें ७५ आयतें और ८ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। ज़ोरावर हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से इस किताब का उतरना हुआ है। (१) हमने तेरी तरफ़ ठीक किताब उतारी है सो केवल अल्लाह ही की पूजा में लग कर अल्लाह ही की पूजा किये जाओ। (२) पूजा सारी ख़ुदा ही के लिए है। और जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवाय हिमायती बना रक्खे हैं कि हम इनकी पूजा सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि ख़ुदा से हम को नज़दीक करें जिन जिन बातों में यह लोग भेद डाल रहे हैं ख़ुदा उनके बीच उनका फ़ैसला कर देगा। अल्लाह झूठे और सच न मानने वाले को हिदायत नहीं दिया करता। (३) अगर ख़ुदा किसी को अपना बेटा करना चाहता तो अपनी सृष्टि में से जिसको चाहता पसन्द करता। वह अकेला ख़ुदा पाक और बड़ा बलवान है। (४) उसी ने आसमान और ज़मीन को ठीक पैदा किया। रात को दिन पर लपेटता है

और दिन को रात पर लपेटता है और उसी ने सूरज और चाँद को काम में लगा रक्खा है (यह) हर एक नियत समय तक चलता है यही (खुदा) जोरावर बड़ा बख्शने वाला है। (५) उसी ने तुम लोगों को अकेले शरीर से पैदा किया, फिर उसी से उसकी बीवी को पैदा किया और तुम्हारे लिये आठ तरह के चारपाये पदा किये। वही तुमको तुम्हारी माताओं के पेट में एक तरह के बाद दूसरी तरह तीन अन्धेरों में बनाता है। यही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसी की हुकूमत है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं फिर किधर को फिरे चले जा रहे हो। (६) अगर तुम इन्कारी हो जाओ तो अल्लाह तुम्हारी परवाह नहीं करता और अपने बन्दों के लिये इन्कारी को पसन्द नहीं करता और अगर तुम शुक्र करो तो वह तुम्हारे फायदे के लिये पसंद करेगा और कोई किसी का बोझ नहीं उठायेगा फिर तुम को अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है। सो जैसे-जैसे कर्म तुम करते रहे हो तुमको बता देगा। वह दिल की बातों को जानता है। (७) और जब आदमी को कोई दु:ख पहुँचता है तो अपने परवरदिगार की तरफ रुजू होकर पुकारता है फिर जब (खुदा) अपनी तरफ से उसको कोई नियामत देता है तो जिस लिये उसे पहिले पुकारता था भूल जाता है और खुदा के शरीक ठहराता है ताकि खुदा की राह से भटकाये तो कह (और) बरत ले इन्कार के साथ थोड़े दिन में तू नरक-वासियों में होगा। (८) भला जो रात के समय में (खुदा की) बन्दगी में लगा है सिजदा करता है और खड़ा होता आखिरत से डरता है और अपने परवरदिगार की मिहरबानी का उम्मेदवार है (ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि कहीं जानने वाले और न जानने वाले बराबर होते हैं यही लोग शिक्षा पकड़ते हैं जो समझ रखते हैं। (९) [रुकू १]

(ऐ पैगम्बर) समझा दो कि हमारे ईमानदार बन्दों अपने परवरदिगार से डरो जो लोग इस दुनियाँ में नेकी करते हैं उनके लिये भलाई है और खुदा की जमीन चौड़ी है संतोषियों को उसका बदला (फल) बे हिसाब मिलता है। (१०) (ऐ पैगम्बर इन लोगों से)

कहो कि मुझे हुक्म मिला है कि मैं केवल अल्लाह ही की पूजा करूँ (११) और मुझे यही आज्ञा मिली है कि मैं सबसे पहिला मुसलमान बनूँ। (१२) (ऐ पैगम्बर इनसे) कहो कि अगर मैं परवरदिगार की बे हुक्मी करूँ तो मुझे बड़े दिन की सजा से डर है। (१३) (ऐ पैगम्बर इनसे) कहो कि मैं निर खुराही में लगकर उसकी पूजा करता हूँ। (१४) (एह तुम) तो उसके सिवाय जिसको चाहो पूजो (ऐ पैगम्बर इनसे) कहो कि घाटे में वह लोग हैं जिन्होंने क़यामत के दिन अपने को और अपने बाल बच्चों को घाटे में डाला। यही तो प्रत्यक्ष घाटा है। (१५) इनके ऊपर आग का ओढ़ना और नीचे आगही का बिछौना होगा। यह बात है जिससे खुदा अपने बन्दों को डरता है तो ऐ हमारे सेवकों हमारा ही डर मानो। (१६) और जो लोग बुतों के पूजने से बच और खुदा की तरफ ध्यान दिया उनके लिये (बैकुण्ठ की) खुश खबरी है तो तू हमारे उन सेवकों को खुशखबरी सुना दे। (१७) जो (हमारी) बात को कान लगाकर सुनते और उसकी अच्छी बातों पर चलते हैं यही वह लोग हैं जिनको खुदा ने राह दी है और यही बुद्धिमान हैं। (१८) भला जिसे सजा का हुक्म हो चुका तो तू उस नरक वासी को नरक से निकाल सकेगा। (१९) मगर जो अपने परवरदिगार से डरते हैं उनके लिये (बैकुण्ठ में) खिड़कियों पर खिड़कियाँ बनी हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी (यह) खुदा वादा खिलाफी नहीं करता। (२०) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर जमीन के चश्मों में वह पानी बहा दिया फिर उस से रंग बिरंग की खेती निकलती है फिर वह जोरों पर आती है फिर (पके पीछे) तू उसे पीली पड़ी हुई देखेगा। तो खुदा उसे चूर चूर कर डालता है बेशक (खेती के इस शुरू और अंत में) बुद्धिमानों के लिये शिक्षा है। (२१) [रुकू २]

जिसका दिल खुदा ने इस्लाम के लिये खोल दिया फिर वह अपने परवरदिगार की रोशनी में है अफसोस है उन लोगों पर जिनके दिल अल्लाह की याद से सख्त हैं। यही लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं। (२२)

अल्लाह ने बहुत ही अच्छी बात (यानी) किताब उतारी (बातें) बार-बार दुहराई गई हैं जो लोग अपने परवर्दिगार से डरते हैं इस से उनके बदन काँप उठते हैं फिर उनके जिस्म और दिल अल्लाह की याद में नरम होते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है जिसे चाहे इससे राह दिखाता है और जिसे खुदा भटकाये उसे फिर कोई शिक्षा देने वाला नहीं। (२३) कोई जो क़यामत के दिन बुरी सज़ा से अपने मुँह छिपा सके और ज़ालिमों से कहा जायगा जैसा तुमने किया है वैसा भुगतो। (२४) इनसे पहिलों ने झुठलाया था तो उनको सज़ा ने ऐसी तरफ़ से आ घेरा कि उन्हें उसकी खबर न थी। (२५) दुनियाँ की ज़िन्दगी में अल्लाह ने उन्हें बदनामी चखाई और आखिरत की सज़ा कहीं बढ़कर है अगर यह लोग जानते। (२६) और हमने लोगों के लिये इस क़ुरान में सभी तरह की मिसालें बयान की हैं शायद वह लोग शिक्षा पकड़ें। (२७) अरबी क़ुरान में किसी तरह की पेचीदगी नहीं ताकि डरें। (२८) अल्लाह ने एक मिसाल बयान की कि एक आदमी है उसमें कई साझी हैं जो आपस में भेद रखते हैं और एक मनुष्य एक शख्स का पूरा (गुलाम है) वो क्या इन दोनों की हालत एक सी हो सकती है। सब खूबी अल्लाह को है पर बहुत लोग समझ नहीं रखते। (२९) तुमको मरना है और ये भी मरेंगे। (३०) फिर क़यामत के दिन तुम अपने परवरदिगार के सामने झगड़ोगे। (३१) [रुकू ३]।

—— o ——

चौबीसवाँ पारा (फ़मन अज़लम)

———꧁———
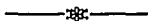
फिर उस से बढ़कर ज़ालिम कौन जो खुदा पर झूँठ बोले और सच्ची बात जब उसके पास पहुँची उसको झुठलाया। क्या काफ़िरों का

तरफ ही ठिकाना नहीं है ? (३८) और जो सत्य बात लेकर आया और (जिन्होंने) सच माना यही लोग परहेज़गार हैं (३३) जो चाहेंगे उनके परवरदिगार के यहाँ उनके लिये होगा नेकी करनेवालों का यही बदला है। (३४) ताकि खुदा उनसे बुरे कर्म उनसे उतार दे और उनके नेक कामों के बदले में उनको फल दे (३५) क्या खुदा अपने बन्दे के लिये काफ़ी नहीं और (ऐ पैग़म्बर) यह लोग तुमको खुदा के सिवाय दूसरे पूजितों से डराते हैं और जिसको खुदा गुमराह करे उसको कोई राह बतानेवाला नहीं। (३६) और जिसको खुदा शिक्षा दे तो कोई उसको गुमराही करनेवाला नहीं क्या खुदा ज़बरदस्त बदला लेने वाला नहीं है। (३७) और (ऐ पैग़म्बर) अगर तू इनसे पूछे कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो कहेंगे खुदा ने। कहो कि भला देखो तो सही कि खुदा के सिवाय जिनको तुम पुकारते हो अगर खुदा मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो क्या यह (पूजित) उस तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं या अगर खुदा मुझ पर कृपा करना चाहे तो क्या यह (पूजित) उस की कृपा को रोक सकते हैं (ऐ पैग़म्बर तुम) कहो कि मुझे तो खुदा काफ़ी है। भरोसा रखनेवाले उसी पर भरोसा रखते हैं। (३८) (ऐ पैग़म्बर इनसे) कहो कि भाइयों तुम अपनी जगह काम किये जाओ मैं (अपनी जगह) काम कर रहा हूँ फिर आगे चल कर तुमको मालूम हो जायगा। (३९) कि किस पर अज़ाब आती है जो उसकी ख़्वारी करे और किस पर सदा के लिए सज़ा उतरेगी (४०) किताब हमने लोगों के (फ़ायदे के) लिये तुमपर उतारी फिर जो कोई राह पर आया तो अपने भले को और जो कोई बहका तो अपने बुरे को बहका और तुमपर उसका ज़िम्मा नहीं। (४१) [रुकू ४]

लोगों के मरते समय अल्लाह उनकी जानों को बुला लेता है और जो लोग मरे नहीं उनकी जानें सोते समय (नींद में बुला लेता है) फिर जिनकी निस्बत मौतका हुक्म दे चुका है उनको (सोने वालों) को एक मुकर्रर वक्त तक (फिर दुनियाँ में) भेज देता है जो लोग

ध्यान दें उनके लिये इस में निशानी× हैं। (४२) क्या इन लोगों ने खुदा के सिवाय दूसरे सिफारिशी ठहराये हैं (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से कहो अगर्चे (यह सिफारिशी) कुछ भी अधिकार न रखते हों और न समझ रखते हों तो भी (तुम उन्हें माने जाओगे) (४३) कहो कि सिफारिश तो सारी खुदा के अधिकार में है आसमानों और ज़मीन में उसी की हुकूमत है फिर तुम उसी की तरफ को लौटाये जाओगे। (४४) और जब अकेले खुदा का ज़िक्र हो तो जो लोग आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते उनके दिल रुक जाते हैं और जब खुदा के सिवाय (दूसरे पूजितों) का ज़िक्र आता है तो यह लोग खुश हो जाते हैं। (४५) (ऐ पैग़म्बर) तू कह कि ऐ खुदा आसमानों और ज़मीन के पैदा करनेवाले, छिपे और खुले के जाननेवाले, जिन बातों में तेरे बन्दे आपस में भेद डाल रहे हैं तू ही इन के झगड़ों को चुकायेगा। (४६) और अपराधियों के पास जितना कुछ ज़मीन में है वह सब हो और उस के साथ उतना ही और हो तो क़यामत के दिन दुखदाई सज़ा के छुड़वाने में सब दे डालें और इनको खुदा की तरफ से ऐसा (मामला) पेश आवेगा जिसका उन को गुमान भी न था। (४७) और जैसे-जैसे कर्म (यह लोग) करते रहे हैं उनकी ख़राबियाँ उन पर ज़ाहिर हो जायेंगी और जिस (सज़ा) की हँसी उड़ाते रहे हैं वह उनको आ घेरेगी। (४८) इन्सान को जब कोई तकलीफ पहुँचती है तो हमको पुकारता है। फिर जब हम उस को अपनी तरफ से कोई नियामत देते हैं तो कहने लगता है कि यह तो मुझ को इल्म से मिला, यह जाँच है मगर बहुत लोग नहीं समझते। (४९) ऐसी बात इनसे अगले कह चुके हैं फिर जो वह कमाते थे उनके काम न आया। (५०) और उनके कर्मों के बुरे फल उनको पहुँचे और इन (मक्का के इन्कार करने वालों) में से जो लोग बे हुक्म हैं उनको उनके कर्म का बुरा फल मिलेगा और वह हरा न सकेंगे। (५१) क्या इनको मालूम नहीं कि

× सोना और मरना बराबर है। जैसे मनुष्य सोकर फिर उठता है वैसे ही मर कर फिर उठेगा।

अल्लाह जिसकी रोजी चाहता है बढ़ा देता है (और जिसकी चाहता है) नपी तुली कर देता है इसमें ईमान वालों के लिए निशानियाँ हैं। (५२) [रुकू ५]

(ऐ पैगम्बर इनसे) कह दो कि ऐ हमारे बन्दों जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह की मिहर्बानी से ना उम्मेद न हो जाओ। अल्लाह तमाम पापों को क्षमाकर देता है। वह बख्शनेवाला मिहर्बान है। (५३) और तुम अपने परवरदिगार की तरफ ध्यान दो और उसका हुक्म उठाओ। इससे पहले कि तुम पर सज़ा आ उतरे और फिर उस वक्त तुमको मदद न मिलेगी। (५४) और अपने परवरदिगार की तरफ रुजू हो और हुक्म बरदारी करो। इससे पहले कि अचानक सजा तुम पर आ उतरे और तुमको खबर न हो। (५५) कोई शख्स कहेगा अफसोस मैंने खुदा के सामने पाप किया और मैं तो हँसता ही रहा। (५६) या कहने लगा कि अगर खुदा मुझको शिक्षा देता तो मैं परहेजगारों में होता। (५७) जब सजा देखी तब कहने लगा कि किसी तरह मुझको (दुनियाँ) में फिर जाना हो तो मैं नेकों में हो जाऊँ। (५८) हमारी आज्ञायें तुमको पहुँची तो तूने उन्हें झुठलाया और अकड़ बैठा और तू इन्कार करने वालों में था। (५९) और (ऐ पैगम्बर तू) क़यामत के दिन इन्हें देखेगा जो खुदा पर झूठ बोलते थे उनके मुँह काले होंगे क्या घमंडियों का ठिकाना नरक में नहीं है। (६०) और जो लोग परहेजगारी करते हैं उनको खुदा कामयाबी के साथ छुटकारा देगा। उनको सजा नहीं छुएगी और न वह उदास होंगे। (६१) अल्लाह हर चीज को पैदा करने वाला है और वही हर चीज का जिम्मा लेने वाला है (६२) आसमान और जमीन की कुंजियाँ उसी के पास हैं और जो लोग खुदा की आयतों को नहीं मानते वही घाटे में हैं। (६३) [रुकू ६]

(ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि क्या तुम मुझे खुदा के सिवाय दूसरों की पूजा का हुक्म देते हो। (६४) और तुमको और तुम से अगलों को हुक्म हो चुका है कि अगर तूने शरीक ठहराया तो

तेरे किये सब अकार्थ जायेंगे और तू घाटे में होगा। (६५) बल्कि अल्लाह ही की पूजा करो और शुक्रगुजारी में रहो। (६६) और इन लोगों ने खुदा की जैसी कदर करनी चाहिये थी वैसी कदर नहीं की। हालांकि कयामत के दिन सारी जमीन उसकी मुट्ठी में होगी और सब आसमान लिपटे हुये उसके दाहिने हाथ में होंगे और वह इनके बनाये हुए शरीकों से ज्यादा पाक और बहुत ऊपर है। (६७) और सूर (नरसिंहा) फूंका जायगा तो जो आसमानों में और जमीन में हैं बेहोश हो जाँयगे मगर जिसको खुदा चाहे (बेहोश न होगा) फिर दुबारा सूर (नरसिंहा) फूंका जायगा। फिर ये खड़े हो जाँयगे और देखने लगेंगे। (६८) और जमीन अपने परवरदिगार के नूर से चमक उठेगी और किताबें रख दी जाँयगी और उन में पैग़म्बर गवाह हाजिर किये जाँयगे और उन में इन्साफ के साथ फैसला करदिया जायगा और उन पर जुल्म न होगा। (६९) और जिसने जैसे काम किये हैं सबको पूरा-पूरा बदला मिलेगा और जो कुछ भी कर रहे हैं खुदा उससे खूब जानकार है। (७०) [रुकू ७]

और काफिर नरक की तरफ टोलियाँ बना बना कर हाँके जाँयगे यहाँ तक कि जब नरक के पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाजे खोल दिये जाँयगे और नरक का दारोगा उनसे कहेगा कि क्या तुममें के पैग़म्बर तुम्हारे पास नहीं आये थे कि वह तुम्हारे परवर्गिार की आयतें तुमको पढ़-पढ़ कर सुनाते और इस दिन की मुलाकात से तुम्हें डराते वह जवाब देंगे कि हाँ मगर सजा का हुक्म काफिरों पर कायम हो गया है। (७१) (फिर इनसे) कहा जायगा कि नरक के दरवाजों में दाखिल हो हमेशा इसमें रहो गरज अकड़ने वालों का बुरा ठिकाना है (७२) और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते थे उनकी टोलियाँ बना-बना कर बैकुंठ की तरफ ले जाई जायेंगी। यहाँ तक कि बैकुंठ के पास पहुँचेंगे और उसके दरवाजे खुले होंगे और बैकुंठ के कार्यकर्ता उनसे सलाम करके कहेंगे कि तुम मजे में रहे। बैकुंठ में हमेशा के लिये दाखिल हो (७३) और (यह लोग)

कहेंगे कि ख़ुदा का धन्यवाद हमको सचकर दिखाया और हम को ज़मीन का मालिक बनाया कि हम बैकुंठ में जहाँ चाहें रहें तो (नेक) काम करने वालों का अच्छा फल है। (७४) और (ऐ पैगम्बर उसदिन) तू देखेगा कि फ़िरिश्ते अपने परवरदिगार की खूबी बयान करते तख्त को आसपास घेरे हैं और इन में इन्साफ के साथ फैसला करदिया जायगा और कहा जायगा कि संसार के परवर्दिगार अल्लाह की तारीफ हो। (७५) [रुकू ८]

सूरे मोमिन।

मक्के में उतरी इसमें ८५ आयतें और ९ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। हा-मीम-(१) ज़ोरावर हिकमतवाले अल्लाह की तरफ से इस किताब का उतरना हुआ है। (२) पापों का क्षमा करने वाला है और तोबा का कबूल करनेवाला सख्त सज़ा देने वाला है। बड़ी कृपा करने वाला उसके सिवाय कोई पूजित नहीं, उसकी तरफ लौटकर आना है। (३) ख़ुदा की आयतों में सिर्फ वही लोग झगड़े निकालते हैं जो इन्कार करने वाले हैं। इन लोगों का शहरों में इधर उधर चलना फिरना तुमको धोखे में न डाले (४) इनसे पहिले नूह की कौम ने और उनके बाद और गिरोहों ने (अपने पैग़म्बरों को) झुठलाया और हर गिरोह ने अपने पैग़म्बर के गिरफ्तार करने का इरादा किया और झूँठी बातों से झगड़े ताकि अपनी हुज्जतों से सचको बिगाड़ें। फिर मैंने उनको धर पकड़ा तो मैंने उनको कैसी सज़ा दी। (५) और इसी तरह काफ़िरों पर तुम्हारे परवरदिगार की बात साबित हुई कि यह नरकगामी हैं। (६) जो (फ़िरिश्ते) तख्त को उठाए हुए हैं और जो तख्त के आस पास हैं

अपने परवर्दिगार की तारीफ और पाकी के साथ याद करते रहते और उस पर ईमान लाते और ईमानवालों के लिये क्षमा कराते हैं। ऐ हमारे परवर्दिगार तेरी कृपा और तेरे ज्ञान में सब चीजें समाई हैं। जिन्होंने तौबा की और तेरी राह पर चले उनको क्षमा करदे और उन्हें नरक की सजा से बचा। (७) और ऐ हमारे परवर्दिगार उनको (बैकुंठ के) बसने के बागों में ले जाकर दाखिल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप दादों और बीबियों और उन की औलाद में से जो जो नेक हों उनको भी। बेशक तू जोरावर हिकमत वाला है। (८) और उनको खराबियों से बचा और जिसको तूने उस दिन खराबियों से बचाया उस पर तूने कृपा की और यही बड़ी कामयाबी है। (९) [रुकू १]

जो लोग इन्कार करने वाले हैं (कयामत के दिन) उनसे ओर से कह दिया जायगा कि जैसे तुम (आज) अपने जी से बेजार हो इससे बढ़कर खुदा बेजार था। जब कि तुम ईमान की तरफ बुलाये जाते थे और नहीं मानते थे। (१०) काफिर कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार तू हमको दो बार मुर्दा और दोबार जिन्दा कर चुका। पस हम अपने पापों का इकरार करते हैं फिर निकलने की कोई सूरत है। (११) (खुदा कहेगा नहीं और) यह इसलिये कि (दुनियाँ में) जब अकेले खुदा को पुकारा जाता था तो तुम नहीं मानते थे और अगर उसके साथ शरीक ठहराये जाते थे तो तुम यकीन कर लेते थे सो (आज) सब से ऊपर और बड़े अल्लाह ही का हुक्म है। (१२) वही है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखाता और आसमान से तुम्हारे लिये रोजी उतारता है है और वही सोचता है जो ध्यान देता है। (१३) (सो मुसलमानों) खुदा ही के आज्ञाकारी ख्याल करके उसी को पुकारो अगर्चे काफिरों को भले ही बुरा लगे। (१४) साहिब ऊँचे दर्जे के तख्त का मालिक अपने दासों में से जिस पर चाहता है अपने अधिकार से भेद की बात उतारता है ताकि (पैगम्बर) कयामत के दिन की मुसीबत से डरावे।

(१५) जब कि वह (ख़ुदा के) सामने आ मौजूद होंगे उनकी कोई बात ख़ुदा से छिपी न होगी आज किसकी हुकूमत है अकेले अल्लाह दबाव वाले की। (१६) आज हर आदमी अपने किये का बदला पायगा आज (किसी पर) जुल्म न होगा। अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (१७) और इन लोगों को आने वाले दिन से डराओ कि रंज के समय दिल गले तक आजावेंगे। पापियों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी होगा जिसकी बात मानी जावे। (१८) ख़ुदा आँखों की चोरी और जो सीनों (छातियों) में छिपी है जानता है। (१९) और अल्लाह ठीक आज्ञा देता है और उसके सिवाय जिन (पूजितों) को यह लोग पुकारते हैं वह किसी तरह की आज्ञा नहीं दे सकते। बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। (२०) [रुकू २]

और क्या इन लोगों ने मुल्क में चल फिर कर नहीं देखा कि जो उनसे पहिले थे उनका परिणाम (आख़ीर) क्या हुआ। वह मज़बूती के लिहाज से और उन निशानों के लिहाज से जो जमीन में छोड़े गये हैं इनसे कहीं बढ़ चढ़कर थे। तो ख़ुदा ने उनको उनके अपराधों की सजा में धर पकड़ा और उनको ख़ुदा से कोई बचाने वाला न हुआ। (२१) यह इस सबब से हुआ कि उनके पैग़म्बर चमत्कार लेकर उन के पास आये इस पर उन्होंने न माना तो अल्लाह ने उनको धर पकड़ा वह बड़ी सख़्त सजा देने वाला है। (२२) और हमने मूसा को अपनी निशानियों और खुली खुली दलीलें देकर भेजा। (२३) फ़िरऔन और हामान† और क़ारून की तरफ़। तो वह कहने लगे कि (यह) जादूगर झूठा है। (२४) (फिर जब मूसा हमारी ओर से सच लेकर उनके पास गया तो उन्होंने हुक्म दिया कि जो लोग मूसा के साथ ईमान लाये हैं उनके बेटों को क़त्ल कर डालो और बेटियों को जीता रक्खो और काफ़िरों का दावा लग़वी में होता है। (२५) और फ़िरऔन ने (अपने दरबारियों) से कहा कि मुझे छोड़ दो कि मैं

† हामान फ़िरऔन का मंत्री था। क़ारून बड़ा धनी था। क़ारून का ख़ज़ाना मशहूर है।

मूसा को क़त्ल करूँ और वह अपने परवर्दिगार को बुलावे मुझको अन्देशा है कि (कहीं ऐसा न हो कि) तुम्हारे दीन को उलट पलट कर डाले या देश में फसाद फैलाये। (२६) और मूसा ने कहा मैं अपने परवर्दिगार और तुम्हारे परवर्दिगार की पनाह लेचुका हूँ। हर एक घमण्डी से जो क़्यामत को नहीं मानता। (२७) [रुकू ३]

और फ़िरऔन के लोगों में से एक मर्द ईमानदार था जो अपने ईमान को छुपाता था वह बोला कि क्या तुम एक मनुष्य के क़त्ल करने को उद्यतहो कि वह ख़ुदा ही को अपना परवर्दिगार बताता है। हालाकि वह तुम्हारे परवर्दिगार की ओर से तुम्हारे पास चमत्कार लेकर आया है और अगर झूठा भी हो तो उसकी झूँठ का बवाल उसी पर पड़ेगा और अगर सच्चा हुआ तो जिस २ का तुम से वादा करता है उनमें से कोई न कोइ तुम पर आ उतरेगा। अल्लाह किसी झूँठे से हुक्म को हिदायत नहीं करता। (२८) आज तुम्हारी हुकूमत मुल्क में बड़ी चढ़ी है अगर ख़ुदा की सज़ा हमारे सामने आवे तो कौन हमारी मदद करेगा। फ़िरऔन ने कहा मैं तुमको वही बात समझाता हूँ जो मैं समझा हूँ और वही राह बताता हूँ जिसमें भलाई है। (२६) और ईमानदार बोला ऐ भाइयो मुझको तुम्हारी बाबत डर है कि तुम पर अगले गिरोहों जैसा दिन न आजाय। (३०) जैसा नूह, आद और समूद की कौम। और उन लोगों का हुआ जो उनके बाद हुए और अल्लाह तो बन्दों पर किसी तरह का जुल्म करना नहीं चाहता। (३१) और ऐ कौम मुझको तुम्हारी बाबत क़्यामत के दिन का डर है। (३२) जब कि तुम पीठ देकर भागोगे। तुम को ख़ुदा से कोई न बचावेगा और ख़ुदा जिसको गुमराह करे तो उसको कोइ हिदायत देने वाला नहीं। (३३) और (इससे) पहिले यूसुफ़ खुले २ हुक्म लेकर तुम्हारे पास आ चुका है। फिर जब वह तुम्हारे पास लेकर आये तुम उन में शकही करते रहे यहाँ तक कि जब वह मर गया तब तुम कहने लगे कि इसके बाद अल्लाह कोई पैग़म्बर न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह उनको जो लोग हद से बढ़े हुए शक में पड़े रहते हैं राह भटकाया करता है।

(३४) जो लोग खुदा की आयतों में बिना किसी सनद के झगड़ते हैं अल्लाह के और ईमान वालों के नजदीक नापसंद बात है। घमण्डी सरकशों के दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है। (३५) और फिरऔन ने कहा ऐ हामान मेरे लिये एक महल बनवा कि मैं रास्तों पर पहुँचूँ § (३६) रास्तों में आसमान के कि मैं मूसा के खुदा तक पहुँचूँ और मैं तो मूसा को झूठा समझता हूँ। और इसी तरह फिरऔन की बदकारी उसको भलाई कर दिखाई गई और वह राह से रोका गया और फिरऔन की तदबीरें गारत होने वाली थीं। (३७) [रुकू ४]

और वह ईमानदार बोला ऐ कौम मेरे कहे पर चल, मैं तुमको सीधी राह दिखा दूँगा। (३८) भाइयों यह दुनियाँ की जिन्दगी थोड़ा फायदा है और आखिरत रहने का घर है। (३९) जो बुरे काम करता है उसको वैसा ही बदला मिलेगा और जो नेकी करता है मर्द हो या औरत मगर हो ईमानदार तो यह लोग बैकुण्ठ में होंगे वहाँ उनको, बेहिसाब रोजी मिलेगी। (४०) और ऐ कौम मुझे क्या हुआ कि मैं तुमको छुटकारे की तरफ और तुम मुझे नरक की तरफ बुलाते हो। (४१) तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ्र करूँ और उसके साथ उस चीज को शरीक करूँ जिसका मुझे इल्म ही नहीं और मैं तुम्हें बली बख्शने वाले की तरफ बुलाता हूँ। (४२) कुछ शक नहीं कि जिस चीज की तरफ मुझको बुलाते हो वह न दुनियाँ में पुकारे जाने के काबिल है और न आखिरत में और कुछ शक नहीं कि हम को अल्लाह की तरफ लौट कर जाना है जो लोग हद से बढ़े हुये हैं वही नरकवासी हैं। (४३) जो मैं तुम से कहता हूँ सो आगे याद करोगे और मैं अपना काम खुदा को सौंपता हूँ। बेशक अल्लाह की निगाह में

§ कहते हैं कि फ़िरऔन ने खुदा से लड़ने के लिये एक बड़ी ऊँची इमारत बनवाई थी और उसकी छत से एक बाण भी आकाश की ओर मारा था। वह बाण लहू में भरा हुआ जब भूमि पर गिरा तो वह यह समझा कि उसने खुदा को मार डाला।

सब बन्दे हैं। (४४) पुनाचि मूसा को वो अल्लाह ने फिरऔनियों के बुरे दाँवों से बचा लिया और फिरऔनियों को बुरी सजा ने घेर लिया (४५) (यानी नरक की) सुबह और शाम फ़िरऔन के लोग आग के सामने खड़े किये जाते हैं और जिस दिन क़यामत आयेगी सख्त सजा में दाखिल होंगे। (४६) और एक वक्त एक दूसरे से नरक में झगड़ेंगे तो कमजोर मनुष्य जालिमों से कहेंगे कि हम तुम्हारे काबू में थे फिर क्या तुम थोड़ी सी आग भी हम पर से हटा सकते हो। (४७) घमण्डी कहेंगे कि हम सब इसी में हैं अल्लाह बन्दों में हुक्म दे चुका है। (४८) और जो लोग नरक में हैं वह नरक के कार्यकर्त्ता (दरोगाओं) से कहेंगे कि अपने परवर्दिगार से अर्ज करो कि एक ही दिन की सजा हम से हलकी करदी जावे। (४९) वह जवाब देंगे क्या तुम्हारे पैग़म्बर तुम्हारे पास खुले चमत्कार लेकर नहीं आते रहे वह कहेंगे हाँ। फिर तुम्हीं पुकारो और काफ़िरों का पुकारना सिर्फ़ भटकना है और कुछ नहीं। (५०) [रुकू ५]

हम दुनियाँ की जिन्दगी में अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की मदद करते हैं और उस दिन (भी मदद करेंगे) जब कि गवाह खड़े होंगे। (५१) जिस दिन इन्कारियों का उज्र काम न देगा और उन पर फटकार होगी और उन को बुरा घर मिलेगा। (५२) और हमने मूसा को शिक्षा दी और इसराईल के बेटों को किताब का वारिस बनाया। (५३) बुद्धिमानों के लिये शिक्षा और हिदायत है। (५४) सो (ऐ पैग़म्बर) तू ठहरा रह—खुदा का वादा सच्चा है और अपने पापों की क्षमा माँग और सुबह और शाम अपने परवर्दिगार की खूबियों की पाकी बोल। (५५) जो लोग बिना किसी सनद के खुदा की आयतों में झगड़ते हैं उनके दिलों में अकड़ है वह इसको न पहुँचेंगे सो खुदा की पनाह माँग वह सुनता देखता है। (५६) आसमानों को और जमीन को पैदा करना आदमियों के पैदा करने के मुकाबिले में बड़ा काम है मगर बहुधा लोग नहीं समझते। (५७) और अन्धा और आँखोंवाला बराबर नहीं और ईमानदार जो भले काम करते हैं कुक-

मियों के बराबर नहीं। तुम थोड़ी ही नसीहत पकड़ते हो। (५८) यह घड़ी (क्यामत) आने वाली है इसमें शक नहीं लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (५६) और (लोगों) तुम्हारे परवर्दिगार ने मुझ से कहा है कि तुम दुआ करो। मैं उसे कबूल करूँगा। जो लोग मेरी पूजा से सिर उठाते हैं बदनाम होकर नरक में जायेंगे। (६०) [रुकू ६]

अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकि तुम उस में आराम करो और दिन बनाये ताकि देखो। अल्लाह लोगों पर बड़ा ही मिहर्बान है लेकिन बहुधा लोग धन्यवाद नहीं देते। (६१) यही अल्लाह तुम्हारा परवर्दिगार है कुल चीजों का पैदा करनेवाला उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। फिर तुम किधर बहके चले जाते हो। (६२) जो लोग खुदा की आयतों से इन्कारी हैं इसी तरह बहकाये जाते हैं। (६३) अल्लाह जिसने तुम्हारे लिये जमीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और उसीने तुम्हारी सूरतें बनाईं और अच्छी बनाईं और उम्दह उम्दह वस्तुएँ तुम्हें दीं। यही अल्लाह तो तुम्हारा परवर्दिगार है। सो अल्लाह संसार का परवर्दिगार बड़ा बरकत देने वाला है। (६४) वह जिन्दा है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं तो खालिस उसी की आज्ञा का खयाल रख कर उसी की पूजा करो। सब तारीफें खुदा ही को हैं जो सब संसार का पोषण करने वाला है। (६५) (ऐ पैगम्बर) कहो कि मुझे मना हुआ है कि मैं अल्लाह के सिवाय उन्हें पूजूँ जिन्हें तुम पुकारते हो। जब कि मेरे परवर्दिगार से मेरे पास खुली आयतें कुरान की आगईं और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं संसार के परवर्दिगार पर ईमान लाऊँ। (६६) वही है जिसने तुम को मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर लोथड़े से, फिर तुमको बच्चा निकालता है तुम अपनी जवानी को पहुँचते हो। फिर तुम बूढ़े हो जाते हो और तुममें से कोई पहिले मर जाते हैं और (जिनको जवानी या बुढ़ापे तक जिन्दा रक्खा जाता है तो) इस गरज से कि तुम मुकर्रर वक्त तक पहुँचो और शायद तुम समझो। (६७ वही)

जिलाता और मारता है फिर जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे कह देता है कि हो और वह होजाता है (६८) [रुकू ७]

(ऐ पैग़म्बर) क्या तूने उनकी तरफ़ न देखा जो ख़ुदा की आयतों में झगड़ा करते हैं किधर को बहके चले जा रहे हैं। (६९) यह लोग जो किताब को झुठलाते हैं और उन (किताबों) को जो हमने अपने (दूसरे) पैग़म्बरों की मारफ़त भेजी हैं तो आख़िरकार इनको मालूम हो जायगा। (७०) जब इनकी गर्दनों में तौक़ और जंजीरें होंगी घसीटते हुए उनको खौलते पानी में ले जायँगे (७१) फिर आग में झोंके जायंगे। (७२) फिर इनसे पूछा जायगा कि ख़ुदा के सिवाय तुम जिन (पूजितों) को शरीक ठहराते थे वे कहाँ हैं। (७३) वे कहेंगे हम से खोये गये बल्कि हम तो पहिले (अल्लाह के सिवाय) किसी चीज़ की भी पूजा करते ही न थे। अल्लाह काफ़िरों को इसी तरह भटकाता है। (७४) (उनसे कहा जायगा कि) यह तुम्हारी उन बातों की सज़ा है कि तुम ज़मीन पर बेफ़ायदा ख़ुशियाँ मनाया करते थे और उसकी सज़ा है कि तुम इतराया करते थे (७५) (तो अब) नरक के दरवाज़ों में आ दाख़िल हो। हमेशा इसी में रहो गर्व घमण्ड करने वालों का बुरा ठिकाना है (७६) (ऐ पैग़म्बर) सन्तोष कर ख़ुदा का वादा सच्चा है। तो जैसे वादे हम इन लोगों से करते हैं कुछ तुमको दिखायेंगे या तुम्हें (दुनियाँ से) उठा लेंगे फिर वे हमारी तरफ़ आवेंगे। (७७) और हमने तुमसे पहिले कितने पैग़म्बर भेजे उनमें से (कोई) ऐसे हैं जिनके हालात हमने तुमको सुनाये और उनमें से (कोई) ऐसे हैं‡ जिनके हालात हमने तुमको नहीं सुनाये और किसी पैग़म्बर की ताक़त न थी कि बेइजाज़त ख़ुदा कोई चमत्कार ला दिखावे। फिर जब ख़ुदा का हुक्म यानी सज़ा आई तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया और जो लोग ग़लती में थे घाटे में रहे। (७८) [रुकू ८]

---

‡ क़ुरान में कुछ रसूलों ही के हालात हैं कुछ के नाम हैं और कुछ के नाम नहीं हैं और न उनके हालात ही हैं, यद्यपि वह समय समय पर भिन्न स्थानों में हुये हैं।

अल्लाह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते चौपाये बनाये ताकि उनपर सवारी लो और (कोई) उनमें से ऐसा है कि तुम उनको खाते हो (७६) और तुम्हारे लिये चौपायों में बहुत फायदे हैं और उनपर चढ़कर अपने दिली मतलब को पहुँचो और चौपायों पर और किश्तियों पर तुम (लदे फिरते हो) । (८०) और तुमको (खुदा) अपनी निशानियाँ दिखाता है तो ख़ुदा की (क़ुदरत की) कौन २ सी निशानियों से इन्कार करते हो । (८१) क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि अपने अगलों का परिणाम (आख़ीर) देखते । वह बलबूते के लिहाज़ से और ज़मीन पर छोड़े हुए निशानों के लिहाज़ से इनसे कहीं बढ़चढ़ कर ये फिर उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई । (८२) और जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली हुई दलीलें लेकर आये तो जो उनके पास खबर थी उसपर खुश हुए और जिसकी हँसी उड़ाते थे वह इन्हीं पर उलट पड़ी । (८३) फिर जब उन्होंने हमारी सज़ा (आते) देखी तो कहने लगे कि हम एक खुदापर ईमान लाये और जिन चीज़ों को हम शरीक ठहराते थे (अब) हम उनको नहीं मानते । (८४) मगर अब उन्होंने हमारी सज़ा (आते) देखली तो ईमान लाना उनको कुछ भी फ़ायदेमंद न हुआ (यह) दस्तूर अल्लाह का है जो उसके बन्दों में जारी है और काफ़िर यहाँ घाटे में होते हैं । (८५) [रुकू ६]

—०—

सूरे हामीम सज्दह

मदीने में उतरी इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है । हा मीम (१) मिहर्बान खुदा (रहमान रहीम) की तरफ से उतरा । (२) यह (क़ुरान) किताब है जिसकी आयतें अरबी बोली में समझदार लोगों के लिये ब्यौरे के साथ बयान करदी गई हैं । (३) खुशख़बरी सुनाता

और डराता है इस पर भी इनमें से अक्सरोंने मुँह मोड़ा और वह नहीं सुनते। (४) और कहते हैं कि जिस बात की तरफ तुम हमको बुलाते हो हमारे दिल उससे पर्दों में हैं और हमारे कान भारी हैं और हममें और तुममें भेद है तू काम कर और हम काम कर रहे हैं। (५) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि मैं तुम्हीं जैसा आदमी हूँ मुझ पर हुक्म आता है कि तुम्हारा एक पूजित है सो सीधे उसी की तरफ चले जाओ और उस से क्षमा माँगो और शरीक करने वाला पर अफसोस (शोक) है (६) जो जकात नहीं देते और वह आखिरत के भी इन्कार करने वाले हैं। (७) अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके लिये बड़ा फल है। (८) (ऐ पैग़म्बर) कहो क्या तुम उस से इन्कार करते हो जिसने दो दिन में जमीन पैदा किया और तुम उसका शरीक बनाते हो। यही सारे जहान का परवर्दिगार है। (९) [रुकू १]

और उसी ने जमीन में पहाड़ बनाये और उसमें बरकत दी और उसी में माँगने वालों के लिये चार दिनों में खुराकें ठहरा दीं। (१०) फिर आसमान की तरफ सीधा हो गया और वह धुआँ था जमीन और आसमान दोनो से कहा कि तुम दोनो खुशी से आये या लाचारी से। दोनो ने कहा हम खुशी से आये। (११) इसके बाद दो दिन में उस (धुयें) के सात आसमान बनाये और हर एक आसमान में अपना हुक्म उतारा और पहिले आसमान को हमने तारों से सजाया और हिफाजत रक्खी यह जोरावर कुदरतवाले से सधा है। (१२) फिर अगर (मक्का के काफिर) सिर फेरें तो कह कि जैसी कड़क आद और समूद पर हुई थी उसी तरह की कड़क से तुमको भी डराता हूँ। (१३) जब उनके पास उनके आगे से और उनके पीछे से पैगम्बर आये कि खुदा के सिवाय किसी की पूजा न करो। वह कहने लगे अगर हमारा परवर्दिगार चाहता तो फिरिश्ते भेजता फिर जो कुछ तुम लाये हो हम उसको नहीं मानते। (१४) सो आद (के लोगों) ने वृथा घमण्ड किया और बोले बलबूते में हम से बढ़कर कौन है क्या उनको इतना न सूझा

कि जिस अल्लाह ने उनको पैदा किया वह मजबूती में उनसे कहीं बढ़-चढ़कर है। गरज वह लोग हमारी आयतों से इन्कार ही करते रहे। (१५) तो हमने उन पर बड़े जोर की आँधी चलाई ताकि दुनिया की जिन्दगी में उनको सजा का मजा चखायें और आखिरत की सजा में तो पूरी खवारी है और उनको मदद न मिलेगी। (१६) और वह जो समूद थे हमने उनको हिदायत की उन्होंने सीधी राह छोड़कर गुमराही इख्त्यार की। परिणाम यह हुआ कि उनके कुकर्मों की वजह से उनको जिल्लत की कड़क ने दबा लिया। (१७) और जो लोग ईमान लाये और डरते थे उनको हमने बचा लिया। (१८) [रुकू २]

और जिस दिन खुदा के दुश्मन नरक की तरफ होके जाँयगे उनके गिरोह जुदा २ होंगे। (१९) यहाँ तक कि (जब सब) नरक के पास जमा होंगे तो जैसे जैसे काम यह लोग करते रहे हैं उनके कान§ और उनकी आँखें और उनके चमड़े उनके मुकाबिले में गवाही देंगे। (२०) और यह लोग अपनी (खाल) से पूछेंगे कि तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी वह जवाब देगी कि जिस (खुदा) ने हर वस्तु को बोलने की शक्ति दी उसी ने हम से बुलवा लिया। उसी ने तुम्हें पहिली बार पैदा किया और अब तुम लोग उसी की तरफ लौटाये जाओगे। (२१) और तुम इस बात की परवा न करते थे कि तुम्हारे कान आँखें और चमड़ा गवाही देंगे बल्कि तुमको यह ख्याल था कि तुम्हारे बहुत से कामों से खुदा (भी) जानकार नहीं। (२२) और उस बदगुमानी ने जो तुमने अपने परवर्दिगार के हक में की तुम को बर्बाद किया और तुम घाटे में आगये। (२३) फिर अगर यह लोग संतोष करें तो उनका ठिकाना नरक है और अगर क्षमा चाहें तो इनको क्षमा नहीं दी जायगी। (२४) और हमने इन (काफिरों) के साथ बैठने वाले मुक-

§ काफिरों के आमालनामे (कर्म सूची) फिरिश्ते लायेंगे तो वह कहेंगे यह हमारे शत्रु हैं। इनकी बात हम नहीं मानते। फिर पृथ्वी और आकाश उनके कर्मों को बतायेंगे परन्तु वे इनको भी झूठा बतायेंगे तो उनकी इन्द्रियाँ नाक कान आदि स्वयं बुरे कामों की गवाही देंगी।

रैर कर लिये थे† सो उन्होंने इनके अगले और पिछले तमाम हालात इनकी नजर में अच्छे कर दिखाये और जिन्नों और आदमियों के सब फ़िर्कों जो उन से आगे हो चुके हैं उन पर बात ठीक पड़ी। बशक वे घाटे में थे। (२५) [रुकू ३]

और जो लोग इन्कार करने वाले हैं यह कहा करते हैं कि इस क़ुरान को मत सुनो और इसमें गुल मचा दिया करो। शायद तुम बाज़ी ले जाओ। (२६) सो जो लोग इन्कार करने वाले हैं हम उनको सख्त सज़ा चखायेंगे। और उनके कामों का बुरा बदला देंगे। (२७) नरक ख़ुदा के दुश्मनों (यानी काफ़िरों) का बदला है यह हमारी आयतों से इन्कार किया करते थे उसकी सज़ा में उनको हमेशा के लिये नरक में घर मिला। (२८) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं (क़यामत में) कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार शैतान और आदमी जिन्होंने हमको गुमराह किया था (एक नजर) उनको हमें (भी) दिखा कि हम उन को अपने पैरों के तले डालें ताकि वह बहुत ही जलील हों। (२९) जिन लोगों ने इकरार किया कि अल्लाह ही हमारा परवर्दिगार है और जमे रहे उन पर फ़िरिश्ते उतरेंगे कि न डरो और न रंज करो और बैकुण्ठ जिसका तुमसे वादा किया था अब उससे ख़ुश हो। (३०) हम दुनियाँ की ज़िन्दगी में और आख़िरत की ज़िन्दगी में तुम्हारे मददगार हैं। जिस चीज को तुम्हारा जी चाहे और जो तुम माँगो मौजूद होगी। (३१) यहाँ बख़्शनेवाले मिहर्बान की तरफ़ से मिहर्बानी है। (३२) [रुकू ४]

और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो ख़ुदा की तरफ़ बुलाये और नेक काम करे और कहे कि मैं ख़ुदा के आज्ञाकारी सेवकों में हूँ। (३३) और नेकी और बदी बराबर नहीं-बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दे तो तुझ में और जिस आदमी में दुश्मनी थी उसे तू पक्का दोस्त

† ये साथी शैतान हैं जिन्हों ने उन को यह समझा रक्खा है कि दुनिया का सुख चैन उठाना चाहिये और आख़िरत (परलोक) को तो किसी ने नहीं देखा उस से डरना बेकार है।

है और मैं नहीं समझता कि कयामत कायम हो और अगर मुझको अपने परवर्दिगार की तरफ लौटाया जायगा तो उसके यहाँ मेरे लिये खूबी होगी। सो हम काफिरों को उनके काम बता देंगे और उनको सख्त सजा का मजा चखायेंगे। (५०) और जब हम आदमी पर नियामत भेजते हैं तो मुहँ फेर लेता है और अलग हो जाता है और जब उसको दुःख पहुँचता है तो लम्बी चौड़ी दुआयें करने लगता है। (५१) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि भला देखो तो सही कि अगर (यह कुरान) खुदा के यहाँ से हो और इस पर भी तुम इससे इन्कार करो तो जो दुश्मन होकर दूर चला जावे तो उससे बढ़कर गुमराह कौन है। (५२) हम इन को अपनी निशानियाँ चौतर्फा दिखलावेंगे और उनकी जानों में भी। यहाँ तक कि इन पर जाहिर हो जायगा कि यह सच है क्या यह बात काफी नहीं कि तुम्हारा परवर्दिगार हर वस्तु का साक्षी है (५३) यह अपने परवर्दिगार की मुलाकात से सन्देह में है खुदा हर वस्तु को घेरे हुए है। (५४) [रुकू ६]।
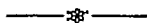
सूरे शूरा

मक्के में उतरी इसमें ५३ आयतें और ५ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। हा मीम-(१)-ऐन-सीन-काफ। (२) (ऐ पैग़म्बर) (जिस तरह यह सूरत तुम्हारे ऊपर उतारी जाती है) इसी तरह अल्लाह जो बड़ी हिकमत वाला है तुम्हारी तरफ और उन (पैग़म्बरों) की तरफ जो तुमसे पहिले हो चुके हैं वही (ईश्वरीय संदेशा) भेजता रहा है। (३) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और वही बड़ा आलीशान है। (४) दूर नहीं कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़े और फिरिश्ते अपने परवर्दिगार की तारीफ के साथ पाकी से याद करने में लगे हैं। और जो लोग जमीन में हैं उनकी माफी माँगा करते हैं।

अल्लाह ही माफ करने वाला मिहर्बान है। (५) और जिन लोगों ने खुदा के सिवाय काम सम्भालने वाले ठहरा रक्खे हैं अल्लाह को याद है और तू उन पर कुछ वेनात नहीं। (६) और इसी तरह अरबी क़ुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहनेवालों को और जो लोग मक्के के आस पास हैं उनको डरावे और क्यामत के दिनकी मुसीबत से डरावे। जिसमें कुछ शक नहीं कुछ लोग बैकुण्ठ में और कुछ लोग नरक में होंगे। (७) और खुदा चाहता तो लोगों का एक ही फ़िरक़ा बना देता लेकिन वह जिसको चाहे अपनी कृपा में ले और पापियों का कोई हामी और मददगार न होगा। (८) क्या इन लोगों ने अल्लाह के सिवाय (दूसरे) काम सभालने वाले बना रक्खे हैं सो अल्लाह ठीक काम बनाने वाला है और वही मुर्दों को जिलाता और हर चीज पर शक्तिमान है। (९) [रुकू १]

और जिन जिन बातों में तुम लोग आपस में भेद रखते हो उनका फ़ैसला खुदा ही के हवाले है (लोगों) यही अल्लाह मेरा परवरदिगार है। मैं उसी पर भरोसा रखता और उसी की तरफ़ ध्यान करता हूँ। (१०) आसमान और जमीन का पैदा करनेवाला है उसी ने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्स के जोड़े बनाये और चारपायों के जोड़े (इस तरह) तुमको जमीन पर फैलाता है कोई चीज उस जैसी नहीं और वह सुनता देखता है। (११) आसमान जमीन की कुंजियाँ उसी के पास हैं जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और (जिसकी चाहता है) नपी तुली कर देता है वह हर चीज से जानकार है। (१२) उसने तुम्हारे लिये दीन की वही राह ठहराई है जिस (पर चलने) का उसने नूह को हुक्म दिया था और (ऐ पैग़म्बर) तेरी तरफ़ हमने जो हुक्म भेजा और जो हमने इब्राहीम, मूसा और ईसा को हुक्म दिया था कि (इसी) दीन को कायम रक्खो और इसमें फ़र्क न डालो। (ऐ पैग़म्बर) तुम जिसे (दीन) की तरफ मुशरिकों को बुलाते हो वह उनपर गिराँ गुज़रता है। अल्लाह जिसे चाहे अपनी तरफ़ चुन ले और उसको अपनी तरफ राह दिखाता है जो रुजू होता है। (१३) और उन्होंने समझ आये

निशानियों में से जहाज़ हैं जो समद्रों में पहाड़ों की तरह हैं। (३२) अगर ख़ुदा चाहे हवा को ठहरादे तो जहाज़ समुद्र की सतह पर खड़े के खड़े रह जाय इसमें ठहरने वालों और धन्यवाद करने वालों के लिए निशानियाँ हैं। (३३) या जहाज़ वालों के कर्मों के बदले में जहाजों को तबाह कर दे। (३४) और बहुतेरे अपराधों को क्षमा करता है। और जो लोग हमारी आयतों में झगड़ने वाले हैं जान लें कि उनको भागने की जगह नहीं है। (३५) सो जो कुछ तुमको दिया गया है दुनिया की जिन्दगी का सामान है और जो ख़ुदा के यहाँ है ईमानदारों और जो अपने परवर्दिगार पर भरोसा रखते हैं उनके लिए बढ़कर और पुख्ता है। (३६) और जो बड़े-बड़े गुनाहों और बेशर्मी की बातों से अलग रहते हैं और जब उनको गुस्सा आ जाता है तब बरा जाते हैं। (३७) और जिन्होंने परवर्दिगार की आज्ञा मानी और नमाज पढ़ी और उनका काम आपस के मशवरों से होता है और हमने जो उनको दे रक्खा है उसमें से (ख़ुदा की राह पर) खर्च करते हैं। (३८) और जो ऐसे हैं कि उन पर ज़ियादती होती है वह बदला ले लेते हैं। (३९) और बुराइ का बदला वैसी ही बुराई है इस पर जो क्षमा करदे और सुलह करले तो उसका पुण्य अल्लाह के जिम्मे है वह जुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता। (४०) और जिस पर जुल्म हुआ हो और वह उसके बाद बदला ले तो ऐसे लोगों पर कोइ दोष नहीं। (४१) दोष उन्हीं पर है जो लोगों पर जुल्म करते और व्यर्थ मुल्क में ज़ियादती करते हैं उन्हीं को दुःखदाई सजा है। (४२) और जिसने सतोष किया और (दूसरे की खता को) क्षमा कर दिया तो यह बातें हिम्मत की हैं। (४३) [रुकू ४]

और जिसे ख़ुदा ने गुमराह किया फिर उसे अल्लाह के सिवाय कोई सहायक नहीं और तू जालिमों को देखेगा कि जब सजा को देख लेंगे तो कहेंगे कि भला (दुनियाँ में) फिर लौट चलने की भी कोइ राह है। (४४) और तू इनको देखेगा कि नरक के सामने बदनामी के मारे हुए झुके हुए छिपी निगाहों को देखते होंगे और (उस वक्त) ईमानवाले

कहेंगे कि घाटे में वह हैं जिन्होंने कयामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को तबाह किया। जुल्म करने वाले हमेशा की सजा में रहेंगे। (४५) और खुदा के सिवाय उनका कोई मददगार न होगा जो उनकी मदद करे और जिसे खुदा ने गुमराह किया तो उसके लिए कोई राह नहीं। (४६) अपने परवरदिगार का कहा मान लो उस दिन (कयामत) के आने से पहिले जो खुदा की ओर से टलने वाली नहीं। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई बचाव की जगह होगी और न इन्कार बन पड़ेगा। (४७) तो अगर यह लोग मुँह मोड़ें तो हमने तुमको इनपर निगहबान बनाकर नहीं भेजा। तेरा जिम्मा पहुँचाना है और जब हम आदमी को अपनी कृपा चखाते हैं तो वह उससे खुश होता है और लोगों को जो उनके कामों के बदले में दुःख पहुँचता है तो इन्सान बड़ा ही भलाई भूलने वाला है। (४८) आसमान और जमीन का राज्य अल्लाह ही का है जो चाहे पैदा करे जिसे चाहे बेटियाँ दे और जिसे चाहे बेटे दे। (४९) या बेटे और बेटियाँ (मिलाकर) उनको दोनों तरह की औलाद दे और जिसको चाहे बांझ करे वह जानकार और शक्तिमान है। (५०) और किसी आदमी की ताकत नहीं कि खुदा से बातें करे† मगर आकाशवाणी से या पर्दे के पीछे से या किसी फ़िरिश्ते को उसके पास भेज दे और वह खुदा के हुक्म से जो मंजूर हो पहुँचा देता है। वह सब से ऊपर हिकमत वाला है। (५१) और (ऐ पैगम्बर) इसी तरह हमने अपने हुक्म से तेरी तरफ एक फिरिश्ता भेजा। तू न जानता था कि किताब क्या चीज और ईमान क्या चीज है। लेकिन हमने क़ुरान को रोशन बनाया और अपने सेवकों में से जिसे चाहे उसके जरिये से राह दिखायें और (ऐ पैगम्बर) तू अलबत्ता सीधी राह दिखाता है। (५२) राह अल्लाह

---

† मक्के के काफ़िर मुहम्मद साहब से कहते थे कि खुदा तुम्हारे सामने आकर बातें क्यों नहीं करता। वह तो मूसा से ऐसे ही बातें करता था। इस पर यह आयत उतरी कि खुदा किसी से उसके सामने सामने आकर बातें नहीं करता।

की है जो आसमानों और जमीन की सब चीजों का मालिक है। सुनो सी अल्लाह तक कामों की पहुँच है। (५३) [रुकू ५]

सूरे जुखरुफ़

मक्के में उतरी इसमें ८९ आयतें और ७ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। हा मीम (१) जाहिर किताब की कसम। (२) हमने इसको अरबी में बनाया है ताकि तुम समझो। (३) और यह (कुरान) हमारे यहाँ असल किताब में पड़े पाये की हिकमत की है। (४) तो क्या इस वजह से कि तुम लोग हद से बाहर हो गए हो हम बेतअल्लुक होकर शिक्षा करना छोड़ देंगे। (५) और अगले लोगों में हमने बहुत से पैगम्बर भेजे (६) और जो पैगम्बर उनके पास आये उन्होंने हँसी ही उड़ाई। (७) फिर हमने उनको जो इन (मक्का के काफिरों में) कहीं जोरावर थे मारडाला और अगले लोगों के किस्से चल पड़े। (८) (ऐ पैगम्बर) अगर तुम इन लोगों से पूछो कि आसमानों और जमीन को किसने पैदा किया है। तो वह कहेंगे कि इनको जोरावर बुद्धिमान ने पैदा किया है। (९) वही है जिसने जमीन को तुम लोगों के लिये फर्श बनाया है और तुम्हारे लिये उसमें राह निकाली ताकि तुम राह पाओ। (१०) और जिसने अटकल के साथ आसमान से पानी बरसाया फिर हमने उस (पानी) से मरे हुए शहर को जिला उठाया इसी तरह तुम लोग भी निकाले जाओगे। (११) और जिसने सब चीजों के जोड़े बनाये और तुम्हारे लिये किश्तियाँ और चौपाये बनाये हैं जिनपर तुम सवार होते हो। (१२) कि उनकी पीठ पर बैठ जाओ फिर जब उन पर बैठ जाओ तो अपने

परवर्दिगार की भलाई याद करो और कहो कि वह पाक है जिसने इन चीजों को हमारे वश में किया है और हम उनको अधिकार में करने की सामर्थ न रखते थे। (१३) और हम को अपने परवर्दिगार की ओर लौट जाना है। (१४) और लोगों ने खुदा के लिये उसके बन्दे को एक जुज़ (बेटा) करार दिया है। आदमी खुल्लम खुल्ला बड़ाही कृतघ्नी है। (१५) [रुकू १]।

क्या खुदा ने अपनी सृष्टि में से (आप तो) बेटियाँ लीं और तुम (लोगों) को बेटे चुनकर दिये। (१६) और जब इन लोगों में से किसी को उस चीज़ के होने की खुशखबरी दी जाय (यानी बेटी की) जो खुदा के लिये कहावत ठहराई है तो अन्दर-ही-अन्दर ताव खाकर उसका मुँह काला पड़ जाता है। (१७) क्या जो गहनों में पाला जावे और झगड़ते वक्त बात न कह सके। वह खुदा की बेटी हो सकती है? (१८) और इन लोगों ने फिरिश्तों को जो रहमान (खुदा) के बन्दे हैं औरतें ठहराया है क्या जिस वक्त खुदा ने फिरिश्तों को पैदा किया यह लोग मौजूद थे इनका कौल लिखा जायगा और इनसे पूँछा जायगा। (१९) और कहते हैं कि अगर रहमान (कृपालु) चाहता तो हम इनकी पूजा न करते। उन्हें इस बात की कुछ खबर नहीं निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (२०) या इनको हमने इससे पहले कोई किताब दी है कि यह उसे पकड़ते हैं। (२१) बल्कि कहते हैं कि हमने अपने बापदादों को एक तरीके पर पाया और उन्हीं के कदम ब कदम हम भी ठीक राह चले जा रहे हैं। (२२) और (ऐ पैग़म्बर) इसी तरह हमने तुम से पहिले जब कभी किसी गाँव में कोई (पैगम्बर) डर सुनाने वाला भेजा वहाँ के धनी लोगों ने यही कहा कि हमने अपने दादों को एक राह पर पाया और उन्हींके कदम ब कदम चलते हैं। (२३) वह बोला कि जिस राह पर तुमने अपने बाप दादों को पाया अगर मैं उनसे बढ़कर राह की सूझ (यानी दीन) लेकर तुम्हारे पास आया हूँ तो भी (तुम उसे न मानोगे) वह बोले जो तुम लाये हो हम उस को नहीं मानते।

(२४) आखिरकार हमने उनसे बदला लिया तो देखो कि (पैगम्बरों के) झुठलाने वालों का कैसा परिणाम हुआ। (२५) [रुकू २]।

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी कौम से कहा कि जिन की तुम पूजा करते हो मुझ को उनसे कुछ सरोकार नहीं। (२६) मगर जिसने मुझको पैदा किया सो वही मुझ को राह दिखायेगा। (२७) और यही बात अपनी औलाद में छोड़ गया शायद वह ध्यान दें। (२८) बल्कि हमने इनको और इनके बाप दादों को (दुनियाँ में) बरतने दिया यहाँ तक कि इनके पास सच्चा दीन और खुली सुनाने वाला पैगम्बर आया। (२९) और जब इनके पास सच्चा दीन आया तो कहने लगे यह तो जादू है और हम इसको नहीं मानते। (३०) और बोले कि दो बस्तियों (यानी मक्का और तायफ़) से किसी बड़े आदमी पर यह कुरान क्यों न उतरा। (३१) क्या यह लोग तेरे परवरदिगार की कृपा के बाँटने वाले हैं सो इस जिन्दगी में इनकी रोजी इनमें हम बाटते हैं और हमने (दुनियावी) दर्जों के एतबार से इनमें एक को एक पर बड़ा रक्खा है ताकि इनमें एक को एक (अपना) आज्ञाकारी बनाये रहे और जो (माल असबाब) यह लोग समेटे फिरते हैं तेरे परवरदिगार की कृपा (तो) इस से कहीं बढ़कर है। (३२) और अगर यह बात न होती कि सब मनुष्य एक ही तरीके के हो जाँयगे तो जो खुदा से इन्कारी हैं हम उनके लिये उनके घरों की छतें और जीने जिन पर चढ़ते हैं चाँदी के बना देते। (३३) और उनके घरों के दरवाजे और तख्त भी जिनपर तकिया लगाये बैठे हैं चाँदी के कर देते। (३४) और सोना भी देते और यह तमाम इस जिन्दगी के फायदे हैं और ऐ पैगम्बर आखिरत तेरे परवरदिगार के यहाँ परहेजगारों के लिये है। (३५) [रुकू ३]।

और जो शख्स (खुदा) कृपालु की याद से बचता है हम उस पर एक शैतान मुकर्रर कर दिया करते हैं। और वह उसके साथ रहता है। (३६) और शैतान पापियों को राह से रोकता है और वह समझते हैं कि हम राह पर हैं। (३७) यहाँ तक कि जब हमारे

सामने आता है तो कहता है कि अच्छा होता जो मुझमें और तुझमें पूर्व और पश्चिम की दूरी का फर्क हो जावे तू बुरा साथी है। (३८) अब तुम जुल्म कर चुके तो आज यह बात भी तुम्हारे कुछ काम न आवेगी अब कि तुम और शैतान एक साथ सजा में हो। (३९) तो (ऐ पैगम्बर) क्या तुम बहरों को सुना सकते हो या अन्धों को और उनको जो प्रत्यक्ष गुमराही में हैं राह दिखा सकते हो (४०) फिर अगर हम तुझे (दुनियाँ से) उठा लें तो भी हम को इन काफिरों से बदला लेना है। (४१) या हमने जो उनसे वादा किया है तुझको दिखा देंगे। हम उन पर सामर्थवान हैं। (४२) तो जो तुझे हुक्म हुआ है उसे तू मजबूती से पकड़। बेशक तू सीधी राह पर है। (४३) यह तेरे और तेरी कौम के लिये शिक्षा है और आगे चल कर तुम से पूछ ताछ होनी है। (४४) और (ऐ पैगम्बर) तुझ से पहिले जो हमने पैगम्बर भेजे उनसे पूछ। क्या हमने (खुदा) कृपालु के सिवाय (दूसरे) पूजित ठहराये हैं कि उनकी पूजा की जावे। (४५) [रुकू ४]।

और हमने मूसा को अपने चमत्कार देकर फिरऔन और उसके दरबारियों की तरफ भेजा (मूसा ने) कहा मैं दुनियाँ के परवरदिगार का भेजा हुआ हूँ। (४६) जब मूसा हमारे चमत्कार लेकर उनके पास आया तो वह हँसने लगे। (४७) और हम जो चमत्कार उनको दिखाते थे वह दूसरे चमत्कार से (जो उनको दिखाया जा चुका था) बड़ा था और हमने उनको सजा में पकड़ा। शायद वह मान जावें। (४८) और कहने लगे ऐ जादूगर हमारे लिए अपने परवरदिगार को पुकार जैसा उसने तुमसे वादा कर रक्खा है। हम बेशक राह पर आवेंगे। (४९) फिर जब हमने उनपर से सजा उठाली। यह अपने कौल तोड़ने लगे। (५०) और फिरऔन ने अपने लोगों में इस बात की मनादी करा दी कि लोगों ! क्या मुल्क मिस्र हमारा नहीं और यह नहरें हमारे (शाही महल के) नीचे नहीं बह रही हैं तो क्या तुम नहीं देखते (५१) भला मैं इस शख्स (मूसा)

से जो एक ज़लील (आदमी) है बढ़कर नहीं हूँ। (५२) और वह साफ़ नहीं बोल सकता। (और मूसा हम से बेहतर होता) फिर उसके लिए सोने के कंगन‡ (ख़ुदा के यहाँ से) क्यों नहीं आये या फ़िरिश्ते उसके साथ जमा होकर क्यों नहीं उतरे। (५३) फ़िरऔन ने अपने लोगों को बेसमझ कर दिया—फिर उसी का कहा मानो। बेशक वह बेहुक्म थे। (५४) फिर जब इन लोगों ने हमको गुस्सा दिलाया हमने इनसे बदला लिया फिर इन सबको डुबो दिया। (५५) फिर इनको गया गुज़रा कर दिया और आनेवाली नस्लों के लिए कहावत बना दिया। (५६) [रुकू ५]

और (ऐ पैगम्बर) जब मरियम के बेटे की मिसाल बयान की गई तो तेरी कौम के लोग उसको सुनकर एक दम से खिलखिला पड़े। (५७) और कहने लगे कि हमारे पूजित अच्छे हैं या ईसा इन लोगों ने ईसा की मिसाल तेरे लिए सिर्फ़ झगड़ने के लिए सुनाई है। यह झगड़ालू कौम है। (५८) तो ईसा भी हमारे एक बन्दे थे हमने उन पर भलाई की थी और इसराईल के बेटों के लिए एक नमूना बनाया था। (५९) और हम चाहते तो तुम में फ़िरिश्ते पैदा कर देते कि वह ज़मीन में तुम्हारी जगह आबाद होते। (६०) और ईसा उस घड़ी (क़यामत) का एक निशान है उसमें शक न करो और मेरे कहे पर चलो। यही सीधी-सीधी राह है। (६१) और ऐसा न हो कि तुमको शैतान रोके कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६२) और जब ईसा चमत्कार लेकर आये तो उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे पास पक्की बातें लेकर आया हूँ और मतलब यह है कि तुम्हारी उन बातों को बयान करूँ जिनमें भेद डाल रहे हो। अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (६३) अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा परवर्दिगार है उसी की पूजा करो यही सीधी राह है। (६४) तो उन्हीं में से (बहुत से) लोग भेद डालने लगे तो जो लोग सरकशी करते हैं क़यामत के दिन दुखदाई सज़ा के एतबार से उन पर सख्त अफ़सोस

‡ उस समय सरदारों को सोने का कंगन पहनाते थे। इसी लिये फ़िरऔन ने कहा, "मूसा अगर नबी होते तो इन के हाथ में अवश्य कंगन होते।"

है। (६५) क्या यह लोग क़यामत ही की राह देख रहे हैं कि एकाएक इन पर आजावे और इनको ख़बर भी न हो। (६६) जो लोग (आपस में) दोस्तिया रखते हैं उस दिन एक दूसरे के दुश्मन हो जायेंगे मगर परहेज़गार। (६७) [रुकू ६]

ऐ हमारे बन्दों ! आज तुमको न किसी तरह का डर है और न तुम उदास होगे। (६८) जो हमारी आयतों पर ईमान लाये और आज्ञाकारी रहे। (६९) तुम और तुम्हारी बीबियाँ बैकुंठ में आ दाखिल हों ताकि तुम्हारी इज्ज़त की जावे। (७०) उन पर सोने की रकाबियों और प्यालों की दौड़ चलेगी और जिस चीज़ को (उनका) जी चाहे और नज़र में भली मालूम हो वैकुण्ठ में होगी और तुम हमेशा यहीं रहोगे। (७१) और यह बैकुण्ठ की वारिसी तुमको उनके बदले में जो तुम करते रहे हो मिली है। (७२) यहाँ तुम्हारे लिए बहुत मेवे होंगे जिनमें से तुम खाओगे। (७३) अलबत्ता पापी हमेशा नरक की सज़ा में रहेंगे। (७४) उनसे सज़ा हल्की न की जायगी और वह उसमें निराश रहेंगे। (७५) और हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वही ज़ुल्म करते रहे। (७६) और पुकारेंगे ऐ मालिक हमारा काम तमाम करदे। वह कहेगा कि तुमको इसी में रहना है। (७७) हम तुम्हारे पास सच बात लेकर आये हैं लेकिन तुममें अक्सर सच से चिढ़ते हैं। (७८) क्या इन लोगों ने कोई बात ठान रक्खी है तो समझ रक्खें कि हमने भी ठान रक्खी है। (७९) या ख्याल करते हैं कि हम इनके भेद और मशवरे नहीं जानते और हमारे फ़िरिश्ते इनके पास लिखते हैं। (८०) (ऐ पैगम्बर) कहो रहमान के कोई औलाद हो तो मैं सबसे पहिले (उसकी) पूजा करने को तैयार हूँ। (८१) जैसी जैसी बातें बनाते हैं उनसे आस्मानों और ज़मीन और तख़्त का मालिक पाक है। (८२) तो (ऐ पैगम्बर) इन लोगों को बकने और खेल करने दे यहाँ तक कि जिस रोज़ का इनसे वादा किया जाता है (यानी क़यामत) इनके सामने आ आवे। (८३) और वही है कि आसमान

में उसी की बन्दगी है और जमीन में भी उसी की बन्दगी है। और वह हिकमतवाला और सब चीजों का जाननेवाला है। (८४) जिसका राज्य आसमानों और जमीन और जो कुछ आसमानों और जमीन में है सब पर है। वह मुबारिक है और उस घड़ी (कयामत) की खबर उसी को है और तुम उसी की तरफ लौटकर जावोगे। (८५) और खुदा के सिवाय जिन पूजितों को यह लोग पुकारते हैं वह शिफारिश का अख्त्यार नहीं रखते मगर जिसने सच्ची गवाही दी। वे जानते थे। (८६) और (ऐ पैगम्बर) अगर तू इनसे पूछे कि इनको किसने पैदा किया तो (मअयूरन) यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर किधर को बहके चले जा रहे हैं। (८७) पैगम्बर कहते रहे हैं कि ऐ परवर्दिगार ये लोग ईमान लाने वाले नहीं। (८८) तू इनसे मुँह मोड़ ले और सलाम कह फिर आगे चलकर मालूम कर लेंगे। (८६) [रुकू ७]

—०—

सूरे दुखान

मक्के में उतरी इसमें ५६ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहरबान है। हा-मीम (१) जाहिर किताब की कसम। (२) हमने मुबारिक रात (२७ वीं रात रमजान की और शब्बरात) में इसको उतारा—हमें डराना मंजूर था। (३) (दुनियां की) हर पुख्ता बात उसी रात को फैसल हुआ करती है। (४) हमारे खास हुक्म से क्योंकि हम भेजने वाले हैं। (५) (ऐ पैगम्बर) तेरे परवरदिगार की मेहरबानी है वह सुनता और जानता है। (६) आसमानों और जमीन का और जो कुछ आसमान और जमीन में हैं इनका मालिक वही है अगर तुमको यकीन हो। (७) उसके सिवाय कोई पूजित नहीं वही जिलाता और मारता है (वही) तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादों

का परवरदिगार है। (८) कुछ नहीं वे धोखे में खेलते हैं। (९) सो उस दिन का इन्तिजार कर जिस दिन आसमान से धुआँ जाहिर हो†। (१०) (और वह) सब लोगों पर छा जायगा यह दुःख दाई सजा है। (११) ऐ हमारे परवरदिगार हम पर से दुःख को टाल हम ईमानदार हैं। (१२) वह क्योंकर शिक्षा पकड़ें इनके पास पैगम्बर खोलकर सुनाने वाला आ चुका। (१३) फिर इन्होंने उससे मुँह मोड़ा और कहा कि यह सिखाया हुआ दीवाना है। (१४) हम सजा को थोड़े दिनों के लिये हटा देंगे मगर तुम फिर वही करोगे। (१५) हम जिस दिन बड़ी पकड़ पकड़ेंगे हम बदला ले लेंगे। (१६) और इनसे पहिले हम फिरऔन की कौम को आजमा चुके हैं और उनके पास बड़े दर्जे के पैगम्बर आये। (१७) (और उन्होंने आकर फिरऔन के लोगों से कहा) कि अल्लाह के बन्दों (इसराईल के बेटों को) मेरे हवाले करो मैं तुम्हारे पास आया हूँ और अमानतदार हूँ। (१८) और यह कहा कि खुदा से सिर न फेरो मैं साफ दलील तुम्हारे सामने लाया हूँ। (१९) और इससे कि तुम मुझको पत्थरों से मारो मैं और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह माँगता हूँ। (२०) और अगर तुमको मेरी बात का यकीन न हो तो मुझसे अलग हो जाओ। (२१) तब मूसा ने अपने परवरदिगार को पुकारा कि यह लोग अपराधी हैं। (२२) (खुदा ने कहा कि) मेरे बन्दों (यानी इसराईल के बेटों) को रातोरात लेकर निकल जाओ तुम लोगों का पीछा किया जायगा। (२३) और दरिया को ठहरा हुआ छोड़ जाना कि फिरौनियों का सारा लश्कर डुबो दिया जायगा। (२४) यह लोग कितने बाग और नहरें छोड़ गये। (२५) और खेत और उम्दह मकान। (२६) और आराम के सामान जिनमें मजे उड़ाया करते थे छोड़ मरे। (२७) ऐसे ही हमने दूसरे लोगों को इसका वारिस बना दिया। (२८) तो उन पर न तो आसमान ही रोया और न जमीन ही रोयी और न वह ढील ही दिये गये। (२९) [रुकू १]

† अरब के निवासी सब से बड़ी और बुरी आपत्ति को धुआँ कहते हैं।

और हमने इसराईल के बेटों को ज़िल्लत की सज़ा से बचा लिया। (३०) वह सरकश हद से बाहर हो गया था। (३१) और इसराईल के बेटों को हमने समझकर दुनियाँ के लोगों पर पसंद कर लिया। (३२) और हमने उनको चमत्कार दिये जिनमें प्रत्यक्ष जाँच थी। (३३) यह कहते हैं। (३४) यह कुछ नहीं हमारा पहली ही दफा का मरना है और हम दुबारा नहीं उठाये जाँयगे। (३५) पस अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादों को लेआओ। (३६) (यह लोग बढ़कर हैं या तुब्बा (शाह यमन का खिताब) की कौम। और इन से पहिले के लोग जिनको हमने मारडाला पापी थे। (३७) और हमने आसमानों और जमीन को और जो चीजें आसमान और जमीन में हैं खेल नहीं बनाया। (३८) हम ने उन को ठीक काम पर बनाया मगर बहुधा लोग नहीं समझते। (३९) फैसले का दिन (यानी कयामत का दिन) इन सब का वक्त मुकर्रर है। (४०) उस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के काम न आयेगा और न उन्हें मदद पहुँचेगी। (४१) मगर जिस पर ख़ुदा कृपा करे वह बली दयालु है। (४२) [रुकू २]

सेंहुँड़ (थूहड़) का पेड़। (४३) पापियों का खाना होगा। (४४) जैसे पिघला ताँबा खौलता है पेटों में खौलेगा। (४५) जैसे खौलता पानी। (४६) (हम फ़िरिश्तों को आज्ञा देंगे कि) इसको पकड़ो और घसीटते हुए नरक के बीचो बीच ले जाओ। (४७) फिर सजा दो और इसके सिर पर खौलता हुआ पानी डालो (४८) मज़ा चख तू बड़ा इज्जतवाला सरदार है। (४९) यही है जिसकी निसबत तुम शक करते थे। (५०) परहेज़गार चैन की जगह होंगे। (५१) बाग़ और चश्मों में। (५२) रेशमी महीन और मोटी पशाकें पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे। (५३) ऐसा ही होगा और बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे। (५४) वहाँ मेवे ख़ातिर जमा से मँगवा लेंगे। (५५) पहली मौत के सिवाय वहाँ उनको मौत चखनीन पड़ेगी और ख़ुदा ने उन्हें नरक की सजा से

बताया। (५६) (ऐ पैग़म्बर) तेरे परवर्दिगार की कृपा से यही बड़ी कामयाबी है। (५७) हमने इस (क़ुरान) को तेरी बोली में इस मतलब से सहल कर दिया है शायद वे याद रक्खें। (५८) तो राह देख वे भी राह देखते हैं। (५९) [रुकू ३]
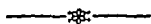
सूरे जासियह

मक्के में उतरी इसमें ३७ आयतें और ४ रुकू हैं ॥

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। हा मीम—(१) (यह) ज़बरदस्त हिक्मत वाले अल्लाह की उतारी हुई किताब है। (२) बेशक ईमान वालों के लिये आसमान और ज़मीन में बहुत निशानियाँ हैं (३) और तुम्हारे पैदा करने में और जानवरों में जिनको (ज़मीन पर) बिखेरता है उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं निशानियाँ हैं। (४) और रात दिन के आने जाने में और रोज़ी जिसे ख़ुदा ने आसमान से उतारा। फिर उनके ज़रिये से ज़मीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा कर देता है और हवाओं की तब्दीलियों में निशानियाँ हैं। समझने वालों के लिए निशानियाँ हैं। (५) यह ख़ुदा की आयतें हैं जिन्हें हम तुमको ठीक पढ़कर सुनाते हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौनसी बात होगी जिसे सुनकर ईमान लायेंगे। (६) हरेक झूँठे पापी के लिए अफ़सोस है (७) ख़ुदा की आयतें उसके सामने पढ़ी जाती हैं उनको सुनता है। फिर मारे घमण्ड के अड़ा रहता है गोया उसने इन (आयतों) को सुना ही नहीं तो ऐसों को दुखदाई सज़ा की ख़ुशख़बरी सुना दो। (८) और जब हमारी आयतों की कुछ भी ख़बर पाता है तो उनकी हँसी उड़ाता है ऐसे लोगों के लिए ज़िल्लत की सज़ा है। (९) आगे इनके नरक है और जो कुछ कर्म कर गये और

जिनको इन्होंने ख़ुदा के सिवाय काम बनाने वाला बना रक्खा है इनके कुछ काम न आयगा और उनकी बड़ी सजा होगी। (१०) यह हिदायत है और जो लोग अपने परवर्दिगार की आयतों के इन्कार करने वाले हुए उनको बड़ी दुखदाई सजा की मार है। (११) [रुकू १]

अल्लाह वह है जिसने नदी को तुम्हारे वश में कर दिया है ताकि ख़ुदा की आज्ञा से उसमें जहाज चलें और तुम लोग उसकी कृपा से रोज़ी ढूँढो और शायद तुम शुक्र करो। (१२) और जो कुछ आसमानों में है और जमीन में है उसी ने अपनी कृपा से इन सब को तुम्हारे काम में लगा रक्खा है। इन में ख़ुदा की क़ुदरत उन लोगों के लिए जो फ़िक्र को काम में लाते हैं बहुतेरी निशानियाँ हैं। (१३) (ऐ पैग़म्बर) मुसल्मानों से कहो कि जो लोग ख़ुदा के दिनों की उम्मेद नहीं रखते उन्हें क्षमा करें ताकि अल्लाह लोगों को इनके किये का बदला दे[*]। (१४) जिसने नेक काम किये अपने लिए और जिसने बुराई की उस पर है फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटोगे। (१५) हमने इसराईल के बेटों को किताब और हुकूमत और पैग़म्बरी दी और उम्दा-उम्दा चीजें खाने को दीं और दुनियाँ जहान के लोगों पर उनको बड़प्पन दिया। (१६) और दीन की खुली-खुली बातें इन्हें बता दीं। फिर इल्म आ चुके पीछे आपस की ज़िद से जिन बातों में यह लोग भेद डाल रहे हैं क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार उनमें फ़ैसला कर देगा। (१७) फिर हमने तुझ को इस काम के एक रास्ते पर रक्खा सो तू उसी पर चल और नादानों की ख़्वाहिश पर मत चल। (१८) यह अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम न आवेगा और अन्यायी एक दूसरे के दोस्त हैं और परहेज़गारों का अल्लाह साथी है। (१९) यह लोगों के लिए समझ की और राह की बातें हैं और

---

[*] कहते हैं कि मक्के के एक काफ़िर ने हज़रत उमर को बुरा कहा था। उन्होंने उस से बदला लेना चाहा। इस पर यह आयत उतरी कि सज़ा देना ईश्वर पर छोड़ा जाय।

जो लोग यकीन करते हैं। उनके लिए हिदायत और कृपा है। (२०) यह जो बदी कमाते हैं क्या यह समझते हैं कि उन्हें मरने और जीने में ईमानदारों और भले काम करने वालों के बराबर कर देंगे। यह बुरे दावे करते हैं। (२१) [रुकू २]

और अल्लाह ने आसमान और जमीन को ठीक पैदा किया और मतलब यह है कि हर मनुष्य को उसके किये का बदला दिया जायगा और लोगों पर जुल्म नहीं किया जायगा। (२२) (ऐ पैगम्बर) भला देखो तो जिसने अपनी ख्वाहिशों को अपना पूजित ठहराया और इल्म होते हुए भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया और उसके कानों पर और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया तो खुदा के (गुमराह किये) पीछे उसको कौन हिदायत दे। क्या तुम नहीं सोचते। (२३) और कहते हैं बस हमारी तो यही दुनिया की जिन्दगी है। हम मरते और जीते हैं और हमें जमाना (काल) मारता है और उनको उसकी कुछ खबर नहीं। निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (२४) और जब इनको हमारी खुली खुली आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो बस यही हुज्जत करते हैं और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादों को ले आओ। (२५) कहो कि अल्लाह तुमको जिलाता है फिर तुम्हें मारता है। फिर कयामत के दिन जिसमें कुछ संदेह नहीं वह तुमको इकट्ठा करेगा मगर अक्सर लोग नहीं समझते। (२६) [रुकू ३]

और आसमानों और जमीन का राज्य अल्लाह ही का है और जिस दिन वह घड़ी (कयामत) कायम होगी उस दिन झूँठे खराब होंगे। (२७) और तू देखेगा कि हर गिरोह घुटने के बल बैठा होगा। हर गिरोह अपने (कर्म) लेखा के पास बुलाया जायगा जैसे तुम काम करते थे आज उनका बदला पाओ। (२८) यह हमारा दफ्तर है तुम्हारे काम ठीक बतलाता है जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे। (२९) सो जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनको उनका परवरदिगार अपनी कृपा में ले लेगा। यही प्रत्यक्ष कामयाबी है।

(३०) और जो लोग इन्कार करते रहे क्या तुमको हमारी आयतें पढ़ पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं मगर तुमने घमण्ड किया और तुम लोग पापी हो रहे थे। (३१) और जब कहा जाता था कि ख़ुदा का वादा सचा है और कयामत में कुछ भी सन्देह नहीं तो कहते थे कि हम नहीं जानते कि कयामत क्या चीज़ है। हाँ हमको एक ख्याल सा होता है मगर हमको यकीन नहीं। (३२) और जैसे-जैसे कर्म यह लोग करते रहे उनकी ख़राबियाँ उनपर ज़ाहिर हो जाँयगी और जिस सज़ा की हँसी उड़ाते रहे हैं यह उन्हें घेरलेंगी। (३३) और कहा जायगा कि जिस तरह तुमने इस दिन के आनेको भुलाये रक्खा था। आज हम भी भुला जाँयगे और तुम्हारा ठिकाना नरक है और कोई मददगार नहीं। (३४) यह उसकी सज़ा है कि तुमने ख़ुदा की आयतों की हँसी उड़ाई और दुनियाँ की ज़िन्दगी ने तुम को धोखे में डाला। आज न तो यह लोग नरक से निकाले जाँयगे और न इनको मौका दिया जायगा कि राज़ी कर लें। (३५) पस अल्लाह की तारीफ है (जो) आसमानों का और ज़मीन का मालिक और दुनियाँ जहान का मालिक है। (३६) और आसमानों और ज़मीन में उसी की बड़ाई है और वही ज़ोरावर हिक्मत वाला है। (३७) [रुकू ४]।

छब्बीसवाँ पारा (हामीम)
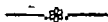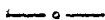
सूरे अहकाफ़।

मक्के में उतरी इसमें ३५ आयतें ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। हा-मीम—(१) ज़बरदस्त हिक्मत वाले अल्लाह ने किताब उतारी है। (२) हमने

आसमानों और जमीन को और जो आसमान और जमीन के बीच में है उनको किसी इरादे से और एक वक्त खास के लिए पैदा किया है और काफिरों को जिस (क़यामत) से डराया जाता है उसकी परवाह नहीं करते। (३) (ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि भला देखो तो खुदा के सिवाय जिन (पूजितों) को तुम पुकारते हो मुझको दिखाओ कि उन्होंने जमीन में क्या पैदा किया या आसमानों में उनका साझा है अगर तुम सच्चे हो तो इससे पहिले की कोई किताब या इल्म मेरे सामने पेश करो। (४) और उससे बढ़कर गुमराह कौन है जो खुदा के सिवाय ऐसे (पूजितों) को पुकारे जो कयामत के दिन तक उसको जवाब न दे सकें और उनको उनकी दुआ की खबर नहीं। (५) और जब (क्यामत के दिन) लोग इकट्ठा किये जायेंगे तो यह (पूजित उल्टे) उनके वैरी हो जायेंगे और उनकी पूजा से इनकार करेंगे। (६) और जब हमारी खुली-खुली आयतें इनको पढ़कर सुनाई जाती हैं। जो लोग इनकार करनेवाले हैं सच्चे के आय पीछे उसे कहते हैं कि यह तो प्रत्यक्ष जादू है। (७) क्या यह कहते हैं कि इसको इसने (अपने दिल से) बना लिया है तू कह कि अगर मैंने इसको अपने दिल से बनाया होगा तो तुम खुदा के मुकाबिले में मेरा कुछ नहीं कर सकते। जैसी-जैसी बातें तुम लोग बनाते हो वही उनको खूब जानता है मेरे और तुम्हारे बीच काफी गवाह है और वही क्षमा करने वाला कृपालु है। (८) (ऐ पैगम्बर इनसे) कहो कि मैं पैगम्बरों में कोई नया नहीं हूँ और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा। मेरी तरफ जो वही उतरती है मैं उसी पर चलता हूँ जो मुझको हुक्म आता है और मेरा काम खोलकर डर सुनाना है। (९) (ऐ पैगम्बर इनसे) कहो कि देखो तो अगर यह (क़ुरान) खुदा की तरफ से हो और तुम इससे इनकार कर बैठे और इसराईल के बेटों में से एक गवाह ने इसी तरह की एक (किताब के उतरने) की गवाही दी और वह ईमान ले आया और तुम अकड़े ही रहे। बेशक अल्लाह अन्यायियों को हिदायत नहीं दिया करता। (१०) [रुकू १]।

और काफ़िर मुसल्मानों की बावत कहते हैं कि अगर (दीन इसलाम) बेहतर होता तो (यह सब आदमी) हमसे पहिले उस की तरफ़ न दौड़ पड़ते और जब कुरान के जरिये से इन को हिदायत न हुई तो अब कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। (११) और इस (कुरान) से पहिले मूसा की किताब राह बताने वाली और दया है और यह किताब अरबी भाषा में उस को सच्चा करती है ताकि अन्यायी डराये जायँ और नेकी वालों को खुशखबरी हो। (१२) बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर धर्म रहे तो न तो इन पर डर होगा और न वह उदास होंगे। (१३) यही बैकुण्ठवासी हैं कि उसमें हमेशा रहेंगे यह उनके कर्मों का फल है। (१४) और हमने आदमी को माता पिता के साथ भलाई करने की ताकीद की है कि कष्ट से उसकी माता ने उसको पेट में रक्खा और कष्ट से उसको जना और उसका पेट में रहना और उसके दूध का छूटना (कम से कम कहीं) तीस महीने में (जाकर तमाम होता है) यहाँ तक कि जब (आदमी) अपनी पूरी ताकत को पहुँचता है यानी ४० बरस की उम्र हुई तो कहने लगा कि ऐ मेरे परवरदिगार मुझ को शक्ति कि तू ने जो दे मुझ पर और मेरे माँ बाप पर भलाई की है उनका धन्यवाद दूँ। और मैं ऐसे भले काम करूँ जिन से तू राजी हो और मेरी औलाद में नेकबख्ती पैदा कर। मैं ने तेरी तरफ ध्यान दिया और मैं हुक्म उठानेवालों में हूँ। (१५) यही लोग बैकुण्ठवाले हैं हम इनके भले कामों को कबूल करते और इनके अपराधों को क्षमा करते हैं। ऐसा ही सच्चा वादा इनसे किया गया था। (१६) और जिसने अपने माँ-बाप से कहा कि मैं तुमसे नाखुश हूँ क्या तुम मुझे वादा देते हो कि मैं कब्र से जिन्दा निकाला जाऊँगा (हालां कि) मुझसे पहिले कितने गरोह गुजर गये और किसी को मरकर जीते न देखा और ये दोनों (माता-पिता) खुदा से दुहाई देते हैं कि तेरा नाश हो। ईमान ला बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है फिर कहता है कि यह तो अगलों के निरे ढकोसले हैं। (१७) यही

यह लोग हैं जिन पर जिन्नों की और आदमियों की मिली हुई सगतें जो इनसे पहिले हो गुज़री हैं उनमें यह भी सजा के वादे के हकदार ठहरे। बेशक यह लोग टोटे में हैं। (१८) हर किसी के लिये कर्म के अनुसार दर्जे हैं और उनके कामों का उन्हें पूरा फल मिलेगा और उन पर जुल्म न होगा। (१६) और जब काफिर नरक के सामने लाये जाँयगे (तो इनसे कहा जायगा) तुमने अपनी दुनियाँ की ज़िन्दगी म अच्छी चीजें बर्बाद कीं और उनसे फायदा उठा चुके जमीन में तुम्हारे बेफायदा अकड़ने और बेहुक्मी करने के समय आज तुम्हें जिल्लत (ख्वारी) की सजा बदले में मिलेगा। (२०) [रुकू २]।

और तू आद के भाई (हूद) को याद कर जब इन्होंने अपनी कौम को अहक़ाफ में (जो मुल्क यमन में एक मैदान है) डराया और उन (हूद) के आगे और पीछे बहुत डराने वाले (पैगम्बर) गुजर चुके (और हूद ने अपनी कौम से कहा) कि खुदा के सिवाय किसी की पूजा न करो मुझ को तुम्हारी निस्बत बड़े दिन की सजा का डर है। (२१) यह कहने लगे कि क्या तू हमको हमारे पूज्यों से फेरने आया है अगर तू सच्चा है तो जिस (सज़ा) का वादा हमसे करता है उसको हम पर लेआ। (२२) (इसकी) खबर तो अल्लाह ही को है और मुझ को तो जो (पैगाम) देकर भेजा गया है वह तुमको पहुँचाये देता हूँ मगर मैं तुमको देखता हूँ कि तुम लोग बेवकूफी करते हो। (२३) फिर (उन लोगों ने) जब उस सजा को देखा कि एक बादल है जो उनके मैदानों की तरफ को उमड़ता चला आ रहा है तो कहने लगे कि यह तो एक बादल है† (और)

† *आद एक ज़बरदस्त जाति थी जो कुमार्ग पर चलने लगी थी। उस के* नेता मक्के में मेह (वर्षा) माँगने आये। उनको तीन प्रकार के बादलों में चुनना था। उन्होंने काले बादल को स्वीकार किया। वह उन के साथ चला। वह समझते थे कि इस बादल से पानी बरसेगा और उन को बड़ा लाभ होगा परन्तु वास्तव में वह ईश्वर का कोप था। उससे वह बिलकुल नष्ट होगये।

हम पर बरसेगा बल्कि यह वही है जिसके लिये तुम जल्दी मचा रहे थे आन्धी है जिसमें दुःखदाई सजा है। (२४) यह अपने परवरदिगार के हुक्म से हर चीज को नष्ट भ्रष्ट कर देगी चुनांचि यह लोग ऐसे तबाह होगये कि इनके घरों के सिवाय और कोई चीज नजर नहीं आती थी। पापियों को हम इसी तरह सजा दिया करते हैं। (२५) और हमने उनको वह ताकत दी थी जो तुम (मक्का वालों) को नहीं दी और हमने उनको कान और आँखें और दिल दिये थे लेकिन उनके कान और आँखें और दिल कुछ काम न आये थे इसलिये कि अल्लाह की आयतों से इनकारी थे और जिसकी हँसी उड़ाते थे उसी ने उन्हें घेर लिया। (२६) [रुकू ३]

और हमने तुम्हारे पास की कितनी ही बस्तियाँ नष्ट भ्रष्ट कर डालीं और हमने फेर-फेर कर आयतें सुनाईं शायद ये ध्यान दें। (२७) तो खुदा के सिवाय जिन चीजों को उन्होंने नजदीकी के लिये अपना पूजित बना रक्खा था उन्होंने उनकी क्यों न मदद की बल्कि इनकी नजर से छिप गये और यह झूठ था जो बाँधते थे। (२८) और जब हम चन्द जिन्नों को तुम्हारी तरफ ले आये कि वह कुरान सुनें फिर जब वह हाजिर हुये तो बोले कि चुप रहो फिर जब (कुरान का पढ़ना) तमाम हुआ तो वह अपने लोगों की तरफ लौट गये कि उनको डरायें। (२९) कहने लगे ऐ हमारी कौम हम एक किताब सुन आये हैं जो मूसा के बाद उतरी है। अगली किताबों को सही बताती है और सीधी राह दिखाती है। (३०) ऐ हमारी कौम (यह पैगम्बर मुहम्मद) जो खुदा की तरफ से मनादी करता है इसकी बात मानो और खुदा पर ईमान लाओ ताकि खुदा तुम्हारे पाप क्षमा करे और दुःखदाई सजा से तुम को बचावे। (३१) और जो कोई अल्लाह के पुकारने वाले को न मानेगा वह जमीन में थका न सकेगा और खुदा के सिवाय कोई मददगार न होगा। यह लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं। (३२) क्या उन्होंने न देखा कि जिस खुदा ने आसमानों को और जमीन को पैदा किया

और उनके पैदा करने में उसको थकान न हुई। वह मुर्दों के जिला उठाने में शक्तिमान है। वह तो हर चीज़ पर शक्ति रखता है। (३३) और जिस दिन काफिर नरक के सामने लाये जायँगे (उनसे पूँछा जायगा कि) क्या यह ठीक नहीं। वह कहेंगे हमको अपने परवरदिगार की कसम सच है तो (खुदा) आज्ञा देगा कि अपने इनकारी के बदले में सजा चक्खो। (३४) तो जिस तरह हिम्मती पैगम्बरों ने सतोष किया तुम भी सतोष करो और इनके लिये जल्दी न मचा जिस दिन वादा की बात (कयामत) को देखेंगे। ऐसे होंगे गोया दिन की एक घड़ी दुनिया में रहे थे (खुदा के हुक्मों का) पहुँचाना है। अब वही जो बेहुक्म हैं मारे जायेंगे। (३५) [रुकू ४]।

—०—

सूरे मुहम्मद

मदीने में उतरी इसमें ३८ आयतें और ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है। जिन लोगों ने न माना और अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोका। खुदा ने उनके काम गये गुज़रे कर दिये। (१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये और (कुरान) जो मुहम्मद पर उतरा है। उसे मान लिया और वह सच है उनके परवरदिगार की तरफ से खुदा ने उनके पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत दुरुस्त कर दी। (२) यह इसलिये है कि काफिर भूठ पर चले और जो ईमान लाये वह अपने परवरदिगार के ठीक रास्ते पर चले। यों अल्लाह लोगों के लिए उनके हाल बयान फर्माता है। (३) तो जब (लड़ाई में) काफिरों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो गर्दनें काटो यहाँ तक कि जब खूब अच्छी तरह उनका जोर तोड़ लो तो मुस्कें कस लो।

फिर पीछे या तो भलाई रख कर छोड़ दो या बदला लेकर यहाँ तक कि (दुश्मन) लड़ाइ के हथियार रख दें। ऐसा ही हुक्म है और ख़ुदा चाहता तो उनसे बदला ले लेता लेकिन यह इस लिए हुआ कि तुम में से एक को एक से आज़माये और जो लोग ख़ुदा की राह में मारे गये उनके कामों को ख़ुदा अकारथ नहीं होने देगा। (४) उन्हें राह देगा और उनका हाल दुरुस्त करेगा। (५) और उनको बैकुण्ठ म दाखिल करेगा जिसका हाल उसने बता रक्खा है। (६) ऐ ईमानवालों अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे पाँव जमाये रक्खेगा। (७) और जो इनकारी हुये उनके पाँव उखड़ जाँयगे और उनका सारा किया धरा ख़ुदा अकारथ कर देगा। (८) यह इसलिये कि ख़ुदा ने जो उतारा उसको उन्होंन पसंद न किया फिर ख़ुदा न उनके कर्म वृथा कर दिये। (६) क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि अगलों का परिणाम देखते कि अल्लाह ने उनको नष्ट भ्रष्ट कर दिया और काफ़िरों के लिये ऐसा ही होता रहता है। (१०) क्योंकि अल्लाह ईमानवालों का मददगार है और काफ़िरों का कोई मददगार नहीं। (११) [रुकू १]।

जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये अल्लाह (बैकुण्ठ के) बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और काफ़िर दुनियाँ में फ़ायदा उठाते और खाते हैं जैसे चारपाये खाते हैं और इनका ठिकाना नरक है। (१२) और (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारी बस्ती (मक्का) जिसने तुमको निकाल छोड़ा। कितनी बस्तियाँ इससे भी मज़बूतों में बढ़ी चढ़ी थीं हमने उनको हलाक कर मारा और कोई भी उनकी मदद को खड़ा न हुआ। (१३) तो क्या जो लोग अपने परवरदिगार के खुले रास्ते पर हैं वह उनकी तरह हैं जिनके (बुरे कर्म) उनको भले कर दिखाए गये हैं और वह अपनी चाहों पर चलते हैं। (१४) जिस बैकुण्ठ का वादा परहेज़गारों से किया जाता है उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें हैं जिसमें बू नहीं और दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो

पानेवालों को बहुत ही मजेदार मालूम होगी। और साफ शहद की नहरें हैं और उनके लिए वहाँ हर तरह के मेवे होंगे और उनके परवरदिगार की तरफ से क्षमा। क्या (ऐसे बैकुण्ठ के रहनेवाले) उन जैसे (हो सकते हैं) जो हमेशा आग में रहेंगे और उनको खौलता पानी पिलाया जायगा और वह उनकी आँतों के टुकड़े टुकड़े कर डालेगा। (१८) (और ऐ पैगम्बर) आज इन में से ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं मगर जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो जिन लोगों को इल्म मिला† है उनसे पूछते हैं कि इसने अभी यह क्या कहा था यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर करदी और अपनी ख्वाहिशों पर चलते हैं। (१६) और जो लोग सीधी राह पर आये हैं उससे उनकी सूझ बढ़ी है और उसमे उनको बचकर चलना मिला है। (१७) तो क्या यह लोग कयामत ही की राह देखते हैं कि एक दम से इन पर आपड़े उसकी निशानियाँ तो आही चुकी हैं फिर जब कयामत इनके सामने आ जायगी तो उस वक्त इनका समझना इनको क्या मुफीद होगा। (१८) तो जान लो कि अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं और अपने पापोंकी क्षमा माँग और ईमान वाले मर्दों और औरतों के लिये (भी माँगते रहो)। और तुम लोगों का चलना, फिरना, ठहरना अल्लाह को मालूम है। (१६) [रुकू २]

और ईमानदार कहते थे कि (जिहाद की निस्बत) कोई सूरत क्यों न उतरी। फिर जब एक सूरत साफ मानी उतरी और उसमें लड़ाई का ज़िक्र आया तो जिनके दिलों में रोग है तू ने उनको देखा कि वह तेरी तरफ ऐसे ताकते रह गये जैसे वह ताकता है जिसे मौत की बेहोशी हो। तो ख्राबी है उनका हुक्म मानना और भली बात कहना अच्छा है। (२०) फिर जब काम की ताकीद हो और यह लोग खुदा से सच्चे रहें तो उनका भला है। (२१) और तुमसे कुछ दूर नहीं कि अगर शासक

---

† यह हाल उन मुनाफ़िक़ों का है जो मुहम्मद साहब की बातें सुन कर उनकी हंसी उड़ाते थे और मुसलमानों से कहते कि जो बात तुम से उन्हों ने कही है वह क्या है। यह तो हमारी समझ में ही नहीं आई।

बैठे तो मुल्क में फ़साद करने लगोगे और अपने रिश्ते नातों को तोड़ने लगोगे। (२२) यही मनुष्य हैं जिन पर ख़ुदा ने लानत की है और इनको बहरा और इनकी आँखों को अन्धा कर दिया। (२३) क्या यह लोग क़ुरान में ध्यान नहीं करते या दिलों पर ताले लगे हैं। (२४) जिन लोगों को सीधा रास्ता साफ़ तौर पर मालूम हो और फिर भी वह अपने उल्टे पाँव फिर गये तो शैतान ने उनके लिये बात बनाई है और उन्हें मुहलत दी है। (२५) और यह इसलिये कि जो लोग (क़ुरान को) जो ख़ुदा ने उतारा है नापसंद करते हैं यह कहा करते हैं कि बाज़ बातों में हम तुम्हारी ही सलाह पर चलेंगे‡ और अल्लाह उनकी छिपी बातों को जानता है। (२६) फिर कैसी गति होगी जब फ़िरिश्ते उनकी जानें निकालेंगे और उनकी पीठों और मुहों पर मारते जाते होंगे। (२७) यह इसलिए कि जो चीज़ ख़ुदा को बुरी लगती है। यह उसी पर चले और उसकी ख़ुशी न चाही तो ख़ुदा ने उनके कर्म मेट दिये। (२८) [रुकू ३]

क्या वह लोग जिनके दिलों में रोग है, ख़ुदा उनकी दिली अदावतों को कभी ज़ाहिर न करेगा। (२६) और (ऐ पैगम्बर) हम चाहते तो तुझे उन लोगों को दिखा देते कि तू उनको उनकी सूरत से पहिचान लेता और आगे तू उनकी बात के तरीक़े से उनको पहचान लेगा और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है। (३०) और तुम को हम आज़मायेंगे ताकि तुम में से जो जिहाद करने वाले और बरदाश्त करने वाले हैं उनको हम मालूम करलें और तुम्हारी ख़बरों को आज़मायेंगे। (३१) जिन लोगों ने साफ़ राह ज़ाहिर हुए पीछे इनकार किया और अल्लाह की राह से रोका और पैगम्बर की दुश्मनी की। यह लोग अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे बल्कि वह उनके किये को अकारथ कर देगा। (३२) ऐ मुसलमानों अल्लाह के हुक्म पर चलो

‡ यहूदियों ने मक्के के काफ़िरों से वादा किया था कि यदि मुसलमानों और उन में युद्ध हुआ तो वह मक्के वालों का साथ देंगे। उनकी यह बात ख़ुदा ने मुहम्मद साहब पर ज़ाहिर कर दी।

और अपने कर्मों को वृथा न करो । (३३) जो काफ़िर हुए और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोका फिर कुफ़्र ही की हालत में मर गये खुदा उनको कदापि क्षमा न करेगा। (३४) सो तुम थोड़े न बनो कि सुलह की तरफ़ पुकारने लगो और तुम्हारी ही जीत होगी और अल्लाह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे कर्मों को न मेटेगा। (३५) दुनियाँ की जिन्दगी खेल तमाशा है और अगर (खुदा पर) ईमान लाओ और परहेज़गारी करते रहो तो तुमको तुम्हारे फल देगा और तुम्हारे माल तुमसे न माँगेगा। (३६) अगर वह तुमसे तुम्हारे माल माँगे और तुमको तङ्ग करे तो तुम कंजूसी करोगे और इसमे तुम्हारी दिली अदावतें जाहिर हो जावेंगी। (३७) ऐ लोगों जब अल्लाह की राह में खर्च करने को बुलाये जाते हो तो तुममें से कोई-कोई कंजूसी करता है अपने ही लिये करता है । अल्लाह तो धनी है और तुम मुहताज हो और अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो (खुदा) तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को ला बिठायेगा और वह तुम जैसे न होंगे। (३८) [रुकू ४]।

सूरे फ़तह ।

मदीने में उतरी इसमें २९ आयतें ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। †हमने तुझे खुली विजय दी (१) ताकि खुदा तेरे अगले पिछले पाप क्षमा करे और तुझ

---

† विजय का इस स्थान पर क्या अर्थ है इस में विद्वानों के भिन्न भिन्न मत हैं। कुछ कहते हैं इस का अर्थ है, हुदैबिया की सन्धि कुछ कहते हैं इसका अर्थ है, मक्के की विजय और कुछ कहते हैं इस विजय से उस वचन की ओर संकेत किया गया है जो "बैतउर्रिज़वान" के नाम से प्रसिद्ध है। उस का वर्णन आगे आता है।

पर अपनी भलाइयाँ पूरी करे और तुझ को सीधी राह दिखावे। (२) और तुझे भारी मदद दे। (३) उसने मुसल्मानों के दिलों में संतुष्टता डाली ताकि उनके (पहले) ईमान के साथ और ईमान जियादह हो और आसमान और ज़मीन के लश्कर अल्लाह के हैं और अल्लाह जाननेवाला हिक्मत वाला है। (४) ताकि ख़ुदा ईमानवाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को (बैकुण्ठ) के बागों में सेवा दाख़िल करे। जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह हमेशा उनमें रहेंग और वह उन पर से उनके पापों को उतार देगा और ख़ुदा के पास यह बड़ी कामयाबी है। (५) और ताकि मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को सज़ा दे जो अल्लाह के बारे में बुरे ख्याल रखते हैं अब यही मुसीबत के चक्कर में आगये और अल्लाह का गुस्सा उन पर हुआ और उसने इनको फटकार दिया और उनके लिये नरक तैयार किया और वह बुरी जगह है। (६) और आसमान और ज़मीन के लशकर अल्लाह के हैं और अल्लाह बली और हिक्मत वाला है। (७) (ऐ पैग़म्बर) हमने तुम को हाल बतानेवाला और ख़ुशी और डर सुनाने वाला बना के भेजा है। (८) ताकि तुम अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और ख़ुदा की मदद करो और उस का अदब रक्खो और सुबह शाम उसकी माला फेरते रहो। (६) (ऐ पैग़म्बर) जो लोग तुमसे हाथ मिलाते हैं उनके† हाथों पर ख़ुदा का हाथ है फिर जिसने (क़ौल) तोड़ा उसने अपने ही लिये तोड़ा और जिसने उस (क़ौल) को पूरा किया जिसका ख़ुदा न वादा किया था वह उसे बड़ा फल देगा। (१०) [रुकू १]

† मुहम्मद साहब ने हज़रत उस्मान को मक्के के क़ुरैश की ओर अपना दूत बना कर भेजा था। कुछ लोगों को यह समाचार मिला कि उनको काफ़िरों न मार डाला है। इस पर मुसलमानों से मुहम्मद साहब ने एक वृक्ष के नीचे यह दृढ़ वचन लिया कि वे उस्मान के ख़ून का बदला अवश्य लेंगे। इसी को 'बैयतुरिज़वान' कहते हैं।

(ऐ पैगम्बर) देहाती लोग जो पीछे रह गये हैं (और इस हुदैबिया के सफर में शरीक नहीं हुए) तुमसे कहेंगे कि हम अपने माल और बाल बच्चों में लगे रहे तू हमारे अपराध ख़ुदा से क्षमा करा। (यह लोग) अपनी जबान से ऐसी बातें कहते हैं जो इनके दिलों में नहीं। (कहो कि) अगर ख़ुदा तुमको नुकसान पहुँचाना चाहे या फायदा पहुँचाना चाहे तो कौन है जो ख़ुदा के सामने तुम्हारा कुछ भी कर सके बल्कि जो कुछ भी करते हो ख़ुदा उससे जानकार है। (११) बल्कि तुमने ऐसा समझा था कि पैगम्बर और मुसलमान अपने घर वापिस आने ही के नहीं और यह तुम्हारे दिलों में घुस गई थी और तुम बुरे ख्याल करने लगे थे और तुम लोग आप बर्बाद हुये (१२) और जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाये तो अपने इनकार करने वालों के लिये दहकती आग तैयार कर रक्खी है। (१३) और आसमानों और जमीन की बादशाही अल्लाह ही की है जिसको चाहे माफ करे और जिसको चाहे सजा दे और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है। (१४) जब तुम (खैबर की) लूटों के माल लेने को जाने लगोगे तो जो लोग (हुदैबिया के सफर से) पीछे रह गये थे कहेंगे कि हमको भी अपने साथ चलने दो। इनका मतलब यह है कि ख़ुदा के कहे हुए को बदल दें। (ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कह दो कि तुम हमारे साथ न चलने पाओगे अल्लाह ने पहिले ही से ऐसा कह दिया है। यह सुन कर कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम हमसे डाह रखते हो बल्कि यह लोग कम समझते हैं। (१५) (ऐ पैगम्बर) देहाती जो (हुदैबिया की सफर से) पीछे रहे इनसे कह दो कि तुम बड़े लड़ने वालों के लिये बुलाये जाओगे। तुम उनसे लड़ो या वे मुसलमान हो जायें। तो अगर ख़ुदा की आज्ञा मानोगे तो अल्लाह तुम को बड़ा फल देगा और अगर तुमने सिर फेरा जैसे तुम पहले (हुदैबिया के सफर में) सिर फेर चुके हो तो तुमको दुःखदाई सजा देगा। (१६) अन्धे पर सख्ती नहीं और न लंगड़े पर सख्ती

है और न बीमार पर सख्ती है और जो अल्लाह और उनके पैगम्बर का हुक्म मानेगा वह उनको बागों में दाखिल करेगा। जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और जो फिरेगा वह उसको दुःखदाई सजा देगा। (१७) [रुकू २]

(ऐ पैगम्बर) जब मुसलमान (बबूल के) दरख्त के नीचे तुमसे हाथ मिलाने लगे अल्लाह उनसे खुश हुआ और उसने उनके दिली विश्वास को जान लिया और उनको तसल्ली दी और उनके बदले में उनको नजदीकी फ़तह दी। (१८) और बहुत सी लूटें उनके हाथ लगीं और अल्लाह बड़ी हिकमतवाला है। (१९) अल्लाह ने तुमसे बहुत सी लूटों के देने का वादा किया था कि तुम उसे लोगे फिर यह (खैबर की लूट) तुमको जल्द दी और (हुदेबिया की सुलह की वजह से अरब के) लोगों पर जुल्म करने से तुमको रोका ताकि यह मुसलमानों के लिये निशानी हो और वह तुमको सीधी राह पर ले चले। (२०) और दूसरा वादा लूट का है जो तुम्हारे काबू में नहीं आया। वह खुदा के हाथ है और अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (२१) और अगर काफ़िर तुमसे लड़ते तो जरूर भाग जाते फिर कोई हिमायती और मददगार न पाते। (२२) अल्लाह की आदत है जो चली आती है और तू अल्लाह की आदतों में तब्दीली न पावेगा। (२३) और वही (खुदा) है जिसने (मक्के में तुमको काफ़िरों पर फ़तहदी पीछे) उनके हाथों को तुमसे और तुम्हारे हाथों को उनसे रोक दिया और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह देखता है। (२४) (यह मक्के वाले) वही हैं, जिन्होंने इन्कार किया और तुमको अदब वाली मसजिद से रोका और कुरबानी को बन्द रक्खा कि अपनी जगह न पहुँचे और अगर कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरतें न होतीं जिन्हें तुम नहीं जानते और तुम उनको कुचल डालते तो अनजाने पाप उनकी तरफ से तुम्हें पहुँच जाता तो खुदा जिसे चाहे अपनी कृपा में दाखिल करे। अगर वे लोग एक तरफ हो जाते तो हम काफ़िरों को दुःखदाई सजा देते। (२५) जब काफ़िरों ने अपने दिलों में नादानी की जिद की हठ ठान ली तो अल्लाह ने पैगम्बर

और मुसलमानों को तसल्ली दी और उनको परहेजगारी पर जमाये रक्खा और यह उसके योग्य और अधिकारी थे और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (२६) [रुकू ३]

अल्लाह ने अपने पैगम्बर को स्वप्न की घटना सच्ची कर दिखाई कि अल्लाह ने चाहा तो तुम अदब वाली मसजिद में अमन के साथ जरूर दाखिल होगे। तुम अपना सिर मुड़वाओगे और बाल कतराओगे। तुमको डर न होगा और वह जानता था जो तुम नहीं जानते थे। फिर इसके अलावा उसने एक करीब की फतह दी। (२७) वही है जिसने अपने पैगम्बर को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा है ताकि उसे तमाम दीनों पर जीत दे और अल्लाह गवाह काफी है। (२८) मुहम्मद खुदा के भेजे हुए हैं और जो लोग उनके साथ हैं काफिरों के हक में बड़े सख्त हैं आपस में रहमदिल हैं। तू उन्हें रुकू और सिजदा करते देखेगा। खुदा की कृपा और खुशी चाहते हैं उनकी पहचान यह है कि सिजदे के निशान उनके माथों पर हैं। यही गुण उनके तौरात में और इंजील में लिखे हैं जैसे खेती। उसने अपना कल्ला निकाला फिर उसे मजबूत किया फिर मोटी हुई आखिरकार अपनी नालपर सीधी खड़ी हो गई और किसानों को खुश करने लगी ताकि काफिरों को उन से ईर्षा हो। जो ईमान लाये और भले काम किये उनसे खुदा ने क्षमा का और बड़े फल का वादा किया है। (२९) [रुकू ४]
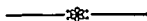
सूरे हुजरात

मदीने में उतरी इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं ॥

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। मुसलमानों! अल्लाह और उसके पैगम्बर से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो

अल्लाह-सुनता जानता है। (१) मुसलमानों अपनी आवाजों को पैगम्बर की आवाज से ऊँचा न होने दो और न उनके साथ बहुत ज़ोर से बात करो जैसे तुम आपस में बोला करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारा किया धरा सब (अकारथ) वृथा हो जावे और तुम्हें खबर भी न हो। (२) जो लोग खुदा के पैगम्बर के सामने आवाजें नीची कर लिया करते हैं जिनके दिलों को खुदा ने परहेजगारी के लिए जाँच लिया है। उनके लिये क्षमा और बड़ा फल है। (३) जो लोग तुमको हुजूरों (कमरों) के बाहर से पुकारते हैं इनमें से अक्सर बेसमझ हैं। (४) और अगर यह सब्र करते यहाँ तक कि तू उनकी तरफ निकल आता उनके लिए बहुत अच्छा होता और अल्लाह बख्शने वाला मिहर्बान है। (५) मुसलमानों! अगर कोई पापी तुम्हारे पास कोई खबर लाये तो अच्छी तरह से जाँच लिया करो ताकि ऐसा न हो कि तुम नादानी से किसी कौम पर आ पड़ो फिर अपने किये से हैरान हो। (६) और जाने रहो कि तुममें खुदा का पैगम्बर है अगर यह बहुत सी बातों में तुम्हारा कहना माना करे तो तुम्हीं पर मुश्किल जा पड़े। मगर खुदा ने तुमको ईमान की मुहब्बत दी है और उसको तुम्हारे दिलों में अच्छा कर दिखाया है और कुफ्र और घमड और बे हुक्मों से तुमको नफरत दिला दी है। यही मनुष्य हैं जो नेकचलन हैं। (७) अल्लाह की कृपा और एहसान से और अल्लाह जानकार हिकमत वाला है। (८) और अगर मुसलमानों के दो फिर्के आपस में लड़ पड़ें तो उनमें मिलाप करादो फिर अगर उनमें का एक दूसरे पर जियादती करे तो जियादती करनेवाले से लड़ो यहाँ तक कि वह खुदा के हुक्म की तरफ ध्यान दे फिर जब ध्यान दे तो उनमें बराबरी के साथ मिलाप करा दो और नयाय करो। अल्लाह न्याय करनेवालों को पसन्द करता है। (९) मुसलमान आपस में भाई हैं तुम अपने भाइयों में मेल मिलाप रक्खो और खुदा से डरो। शायद तुम पर दया की जावे। (१०) [रुकू १]

मुसलमानों मर्द मर्दों पर न हँसे अजब नहीं कि वह उनसे भले हैं

और न औरतें औरतों पर अजब नहीं कि वह उनसे भली हों और आपस में एक दूसरे को ताने न दो और न एक दूसरे का नाम धरो। ईमान लाये पीछे बुरी आदत का नाम ही बुरा है और जो न माने तो वही अन्यायी है। (११) मुसलमानों ! बहुत अटकलें न दौड़ा करो क्यों कि कोई कोई अटकल पाप है और किसी का भेद न टटोलो और और पीठ पीछे कोइ किसी को बुरा भला न कहे। क्या तुममें से अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाना पसन्द करता है। पस इससे नफरत करो और अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह तौबा कबूल करनेवाला मिहर्बान है। (१२) लोगों ! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी जातें और बिरादरियाँ ठहराईं ताकि एक दूसरे को पहचान सको अल्लाह के नजदीक तुममें वही जियादह बड़ा है जो तुममें बड़ा परहेजगार है। अल्लाह जानने वाला खबरदार है। (१३) (अरब के) देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाये (ऐ पैगम्बर इनसे) कह दो कि तुम ईमान नहीं लाये। हाँ कहो कि हम ने मान लिया और इमान का तो ‡अब तक तुम्हारे दिलों में गुजर भी नहीं हुआ और अगर तुम खुदा और उसके पैगम्बर की आज्ञा पर चलोगे तो वह तुम्हारे कामों का बदला कुछ कम न करेगा। अल्लाह क्षमा करने वाला मिहर्बान है। (१४) मुसलमान वह हैं जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाये फिर शक नहीं किया और अल्लाह की राह में अपनी जानों और मालों से कोशिश की वही सच्चे हैं। (१५) (ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि क्या तुम अल्लाह को अपनी दीनदारी जताते हो। हालांकि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है अल्लाह जानता है और अल्लाह हर चीज से जानकर है। (१६) (ऐ पैगम्बर यह लोग) तुम पर अपना इसलाम लाने का एहसान रखते हैं। तू कह कि मुझ पर अपने इसलाम का एहसान न रक्खो बल्कि अल्लाह का एहसान तुम्हारे ऊपर है कि उसने

---

‡ यानी तुम इस्लाम की कुछ ही शिक्षा मानते हो। इससे तुम्हारा ईमान लाना नहीं सिद्ध होता।

तुमको ईमान की राह दिखाई बशर्ते कि तुम सच्चे हो। (१७) अल्लाह आसमानों और ज़मीन के भेद को जानता है और तुम लोग जैसे-जैसे काम कर रहे हो अल्लाह उनको देख रहा है। (१८) [रुकू २]।

—— ❀ ——
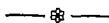
सूरे काफ़

मक्के में उतरी इसमें ४४ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। काफ़—क़ुरान बुज़ुर्ग की कसम। (१) बल्कि इन काफ़िरों को अचम्भा हुआ कि इन्हीं में का एक डर सुनाने वाला इनके पास (पैगम्बर बनकर) आया। तो काफिर कहने लगे कि यह तो अद्भुत बात है। (२) क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी हो जायेंगे तो (फिर उठा खड़े किए जायेंगे) यह फिर आना बहुत दूर है। मुर्दों के जिन टुकड़ों को मिट्टी कम करती है हमको मालूम है और हमारे पास याद दिलाने वाली किताब है। (३) बल्कि इन लोगों ने सची बात पहुँचने पर उसको झुठलाया तो वह ऐसी बात में उलझे पड़े हैं। (४) क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आस्मान की तरफ नहीं देखा कि हमने उसको जैसे बनाया और उसको सजाया और उसमें कहीं दर्ज नहीं। (५) और ज़मीन को हमने फैलाया और उसके अन्दर भारी बोझिल पहाड़ डाल दिये और सब तरह की खुशनुमा चीजें उसमें उगाईं। (६) हर ध्यान देने वाले बन्दे के लिए याद दिलाने को और सुझाने को है। (७) और हमने आसमान से बरकत का पानी उतारा और उस (पानी) के ज़रिये से बाग और खेती का नाज उगाया। (८) और लम्बी लम्बी खजूरें जिनके गुच्छे खूब गुथे हुए होते हैं। (९) और बन्दों को रोज़ी देने के लिए हमने मेंह के ज़रिये से मुर्दा बस्ती को जिलाया इसी तरह निकल खड़े होना है। (१०) इनसे पहले नूह की कौम ने खन्दक वालों ने

और समूद ने झुठलाया था। (११) और आद ने और फ़िरऔन ने और लूत ने। (१२) वनवासियों ने तुब्बा के लोगों ने सभी ने (अपने) पैग़म्बरों को झुठलाया था तो हमारा वादा पूरा हुआ। (१३) क्या हम पहलीबार पैदा करके थक गये हैं बल्कि उन्हें फिर पैदा होने में शक है। (१४) [रुकू १]

और हमने आदमी को पैदा किया और हम उसके दिली ख़यालों को जानते हैं और हम धड़कती रग से उसके ज़ियादह नज़दीक हैं। (१५) जब दो लेने वाले दाहिने और बायें बैठे हुए लेते जाते हैं‡। (१६) जो बात आदमी बोलता है उसके पास निगहबान मौजूद हैं। (१७) और मौत की बेहोशी ज़रूर आकर रहेगी यही तो वह है जिससे तू भागता था। (१८) और नरसिंहा (सूर) फूँका जायगा यही वह दिन होगा जिससे डराया जाता है। (१९) और हर मनुष्य जो आया उसके पास एक हाज़िर हाकने वाला और एक गवाह होगा। (२०) तू इससे गाफ़िल रहा अब हमने तेरे पर्दे को तुझ पर से हटा दिया तो आज तेरी निगाह तेज़ है। (२१) और उसका साथी बोला जो कुछ मेरे पास था (कर्म लेखा) यह मौजूद है। (२२) ऐ दोनो फ़िरिश्तों हर काफ़िर दुश्मन को नरक में डाल दो। (२३) नेकी से रोकने वाले, हद से बढ़ने वाले और शक पैदा कराने वाले। (२४) जिसने अल्लाह के साथ दूसरे पूजित ठहराये उन्हें सख़्त सज़ा में डाल दो। (२५) उनका साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ मेरे परवर्दिगार मैंने इसको सरकश नहीं बनाया बल्कि यह राह से दूर भूला हुआ था। (२६) अल्लाह कहेगा मेरे पास झगड़ा न कर मैं तेरे पास पहिले ही सज़ा का डर पहुँचा चुका था। (२७) मेरे यहाँ बात नहीं बदली जाती और मैं बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता। (२८) [रुकू २]

---

‡ हर आदमी के साथ दो फ़िरिश्ते रहते हैं। आदमी जो काम करता है या जो बात कहता है वे दोनो उस को लिखते जाते हैं। इस प्रकार हर एक का किया और कहा उसके सामने लाया जायगा।

उस दिन नरक में पूछेंगे कि तू भर चुका। वह कहेगा क्या कुछ और भी है। (२६) और वैकुण्ठ परहेज़गारों के पास लाया जायगा। दूर नहीं। (३०) यह है जिसका वादा तुमको हरेक रुजू लाने वाले और याद रखने वाले को मिला था। (३१) जो शख्स बेदेखे रहमान से डरता रहा और ध्यान देकर हाज़िर हुआ। (३२) क्षेम कुशल के साथ इस (वैकुण्ठ) में दाखिल हो यही हमेशा रहने का दिन है। (३३) वैकुण्ठ में इन लोगों को जो चाहेंगे मिलेगा और हमारे पास और भी मियादह है। (३४) और इन (मक्का के काफ़िरों) से पहिले हमने कितने गिरोह मार डाले कि बल बूते में कहीं बढ़कर थे। उन्होंने तमाम शहरों को छान मारा कि कहीं भागने का ठिकाना भी है। (३५) जो दिल वाला है या कान लगाकर दिल से सुनता है उसके लिए इन बातों में शिक्षा है। (३६) और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच में है ६ दिन में बनाया और हम नहीं थके। (३७) तो (ऐ पैगम्बर) जैसी-जैसी बातें (यह इन्कारी) कहते हैं उन पर संतोष करो और सूरज के निकलने और डूबने के पहिले अपने परवर्दिगार की प्रशंसा के साथ दिल से याद करो। (३८) और रात में उसकी पाकी से याद करो और नमाज़ों के बाद। (३६) और सुन रक्खो कि जिस दिन पुकारने वाला पास की जगह से आवाज़ देगा कि उठो§। (४०) जिस दिन चीखने को सुन लेंगे वह दिन निकलने का होगा। (४१) हम ही जिलाते और मारते हैं और हमारी तरफ फिर आना है। (४२) जिस दिन मुर्दों से ज़मीन फट जायगी वे दौड़ेंगे। यह जमा करलेना हमको सहल है। (४३) यह लोग जो कहते हैं हम जानते हैं और तू इन पर ज़बरदस्ती करने वाला नहीं। सो तू क़ुरान से उसको समझा जो हमारी सज़ा से डरता है। (४४) [रुकू ३]

---

§ हज़रत इस्राफ़ील क़यामत के दिन इस ज़ोर से सूर फूकेंगे कि हर आदमी अपनी जगह यही समझेगा कि सूर उसके सर ही पर फूका गया है।

सूरे जारियात

मक्के में उतरी इसमें ६० आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। उड़ाकर बखेरनेवाली की कसम‡। (१) फिर बोझ उठाने वालों की कसम। (२) फिर नर्मी से चलने वालों की कसम। (३) फिर हुक्म से बाँटने वालियों की कसम। (४) बेशक जो वादा तुम को मिला सच है। (५) और बेशक इन्साफ होने वाला है (६) आसमान की कसम जिसमें रस्ते हैं। (७) कि तुम लोग बे ठिकाने की बात में हो। (८) जो फेरा गया वही उससे फिर जाता है। (९) अटकल के तुक्के चलाने वालों का नाश जाय। (१०) जो गफलत में भूल हुये हैं। (११) तुझ से पूछते हैं कि इन्साफ का दिन कब होगा। (१२) जब यह लोग आग पर सेंके जायेंगे। (१३) कि अपनी शरारत के मजे चक्खो यही तो है जिसकी जल्दी मचा रहे थे। (१४) परहेजगार (बेकुण्ठ के) बागों और चश्मों में होंगे। (१५) जो खुदा ने दिया उसे पाया। यह लोग इससे पहिले भले काम करने वाले थे। (१६) रात को बहुत कम सोते थे। (१७) और सुबह के वक्त क्षमा माँगा करते थे (१८) और उनके मालों में जो माँगे या न माँगे उसका हिस्सा था। (१९) और यकीन लाने वालों के लिये जमीन में निशानियाँ हैं। (२०) और खुद तुम में (भी) तो क्या तुम्हें नहीं सूझ पड़ता। (२१) और तुम्हारी रोजी और जो तुमसे वादा किया जाता है आसमान में है। (२२) आसमान और जमीन के परवरदिगार की कसम यह (कुरान) सच है जैसा कि तुम बोलते हो। (२३) [रुकू १]

---

‡ इन आयतों में हवा और बादल की कसम खाई गई है। कुछ लोग कहते हैं इनसे फ़िरिश्ते मुराद हैं।

(ऐ पैग़म्बर) इब्राहीम-के इज़्ज़तदार मेहमानों की बात तुमको पहुँचती है या नहीं। (२४) जब उसके पास आये तो सलाम किया। इब्राहीम ने भी सलाम किया (और कहा) तुम ऊपरी लोग हो। (२५) फिर अपने घर को दौड़ा और एक बछेड़ा घी में तला हुआ ले आया। (२६) फिर उनके सामने रक्खा और पूछा क्या तुम नहीं खाते। (२७) फिर (इब्राहीम) उनसे जी में डरा और उन्होंने कहा मत डर और उनको एक योग्य पुत्र (इसहाक) की खुशख़बरी दी। (२८) यह सुनकर इब्राहीम की बीबी बोलती हुई आगे आ खड़ी हुई और अपना मुँह पीट लिया और कहने लगी कि (अव्वल तो) बुढ़िया और (दूसरे) बाँझ जनेगी। (२९) (फ़िरिश्ते) बोले तेरे परवर्दिगार ने ऐसा ही कहा है वह हिकमत वाला ख़बरदार है। (३०)।
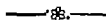
सत्ताईसवाँ पारा (कालफ़मा ख़त्बुकुम)

(इब्राहीम ने फ़िरिश्तों से) पूछा कि ऐ भेजे हुओं फिर तुम्हारा मतलब क्या है। (३१) वे बोले कि हम अपराधी मनुष्यों की तरफ़ भेजे गये हैं। (३२) कि उनपर खंजड़ के पत्थर बरसायें। (३३) कि यह खंजड़ तेरे परवरदिगार के यहाँ उन लोगों के लिये नाम पड़ गये हैं जो हद से बढ़ गये हैं। (३४) फिर हमने जितने ईमानवाले लोग थे उनको निकाल लिया। (३५) फिर हमने वहाँ एक ही मुसलमान का घर पाया। (३६) और हमने उसमें उन लोगों के लिए जो दुखदाई सजा से डरते हैं निशानी बाक़ी रक्खी। (३७) और मूसा के हाल में निशान है जब हमने उसको प्रत्यक्ष निशानी देकर फ़िरऔन की तरफ़ भेजा। (३८) फिर उसने अपने बलबूते में (आकर) मुँह मोड़ा और (मूसा की बाबत) कहा कि

यह जादूगर या दीवाना है । (३६) फिर हमने उसको और उसके लश्करों को (सज़ा में) पकड़ा फिर उनको दरिया में डाल दिया और वह मलामती थी। (४०) और क़ौम आद में भी निशानी है जब हमने उनपर मनहूस आन्धी चलाई । (४१) जिस चीज पर से गुज़रती वह उसको (चूरा) किये बग़ैर न छोड़ती। (४२) और क़ौम समूद में भी निशान है जब उनसे कहा गया कि एक वक्त ख़ास तक बर्त लो। (४३) फिर अपने परवरदिगार के हुक्म से शरारत करने लगे तो उनको कड़क ने पकड़ा और वह देखते रह गये। (४४) फिर उठ न सके और न बदला ले सके। (४५) और (इनसे) पहिले नूहकी क़ौम थी वह वे हुक्म थे। (४६) [रुकू २]

और हमने आसमानों को अपने बाहुबल से बनाया और हम सामर्थ्य वाले हैं। (४७) और हमने ज़मीन को बिछाया सो हम क्या ख़ूब बिछानेवाले हैं। (४८) और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाये। शायद तुम ध्यान दो। (४६) सो अल्लाह की तरफ भागो मैं उसकी तरफ से तुमको साफ तौर पर डर सुनाता हूँ। (५०) और ख़ुदा के साथ कोई दूसरा पूजित न ठहराओ। मैं उसकी तरफ से तुमको साफ तौर पर डराता हूँ। (५१) इसी तरह पर अगलों के पास जो कोई पैग़म्बर आया उन्होंने (उसको) जादूगर या दीवाना ही बताया। (५२) क्या यह लोग एक दूसरे को वसीयत करते आये हैं। नहीं बल्कि यह लोग सरकश हैं। (५३) सो तू उनकी तरफ ध्यान न दे। तुझपर उलाहना न होगा। (५४) और समझते रहो कि समझाना ईमानवालों को फायदा देता है। (५५) और मैंने जिन्नों और आदमियों को इसी मतलब से पैदा किया है कि हमारी पूजा करें। (५६) मैं उनसे रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि मुझे खाना खिलावें। (५७) अल्लाह ख़ुद बड़ी रोज़ी देनेवाला ताक़त देनेवाला बली है। (५८) सो उन पापियों का यही डौल है जैसे डौल पड़ा उनके साथियों का सो चाहिए कि जल्दी न करें। (५६) सो काफ़िरों पर उनके उस रोज़ के पतझार से जिसका उनसे वादा किया जाता है अफसोस है। (६०) [रुकू ३]

सूरे तूर।

मक्के में उतरी इसमें ४६ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। तूर की कसम। (१) और लिखी किताब की। (२) कढ़े पन्नों में। (३) और बैतुल मामूर (फरिश्तों का आसमानी काबा) की। (४) और ऊँची छत (आसमान) की। (५) और उमड़ते हुये समुद्र की। (६) बेशक तेरे परवरदिगार की सजा होने का है। (७) किसी को ताकत नहीं कि उसको टाल सके। (८) जिस दिन आसमान लहरें मारने लगे। (९) और पहाड़ चलने लगेंगे। (१०) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (११) जो बातें बनाते खेलते हैं। (१२) जिस दिन नरक की आग की तरफ धक्के दे देकर लेजाये जायेंगे। (१३) यही वह नरक है जिसे तुम झुठलाते थे। (१४) तो क्या यह नजरबन्दी है या तुमको सूझ नहीं पड़ता। (१५) इसमें घुसो संतोष करो या न करो तुम्हारे लिए समान है। और जैसे कर्म तुम करते थे तुमको उन्हीं का बदला दिया जायगा। (१६) परहेजगार (बैकुण्ठ के) बागों और नियामतों में होंगे। (१७) अपने परवरदिगार की दी हुई (नियामतों के) मजे उड़ा रहे होंगे और उनके परवरदिगार ने उनको नरक की सजा से बचा लिया। (१८) खाओ पियो रुचि से अपने कामों का बदला है। (१९) तख्तों पर जो बराबर बिछाए गए हैं तकिए लगा लगाकर बैठे हैं और हमने बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें उनको ब्याह दी हैं। (२०) और जो लोग ईमान लाये और उनकी औलाद ईमान में उनके पीछे चली उनकी औलाद को हम उनसे मिला देंगे और उनके कर्मों से कुछ भी न घटायेंगे। हर आदमी अपनी कमाई में फँसा है‡। (२१) और जिस मेवे और मास को उनका जी चाहेगा हम उनको देंगे। (२२)

‡ यानी हर एक मनुष्य अपने कर्म अनुसार या तो सुख में मस्त होगा या दुख झेल रहा होगा। कोई किसी और के कर्मों का फल नहीं भर सकेगा।

यह आपस में वहाँ (शराब के) प्यालों की छीनाझपटी करेंगे उसमें न बकवाद लगेगी और न कोई अपराध होगा। (२३) और लड़के उनके पास आयेंगे-जायेंगे गोया यत्न से रखे हुए मोती हैं। (२४) और एक दूसरे की तरफ ध्यान देकर आपस में बातें करेंगे। (२५) कहेंगे कि हम पहले अपने घरों में डरा करते थे। (२६) सो खुदा ने हम पर कृपा की और हमको लू (नरक) की सजा से बचा लिया। (२७) पहिले हम उसे पुकारते थे वह भलाई करने वाला और दयालु है। (२८) [रुकू १]

तो (ऐ पैगम्बर) इन लोगों को शिक्षा दो कि तू परवरदिगार की कृपा से जादूगर और दीवाना नहीं (२९) क्या काफिर कहते हैं कि शायर है। हम उसकी बाबत जमाने की गर्दिश की राह देख रहे हैं। (३०) तू कह कि तुम राह देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूँ। (३१) क्या इनकी अक्लें इनको ऐसा सिखाती हैं या यह लोग शरीर है। (३२) या कहते हैं कि इसने (कुरान) अपने आप बना लिया है बल्कि यह ईमान नहीं लाते। (३३) सो अगर सच्चे हैं तो इसी तरह की कोई बात ले आवें। (३४) क्या ये आप ही आप बन गये हैं या वही बनाने वाले हैं। (३५) क्या इन्होंने आसमानों को और जमीन को पैदा किया है नहीं बल्कि यकीन नहीं करते। (३६) क्या तेरे परवरदिगार के खजाने उनके पास हैं या वह हाकिम हैं। (३७) या इनके पास कोई सीढ़ी है कि उस पर (चढ़कर आसमान की बातें) सुन आया करते हैं सो अगर इनमें से कोई सुन आया हो तो वह प्रत्यक्ष सनद पेश करे। (३८) क्या खुदा के लिये बेटियाँ और तुम लोगों के लिये बेटे हैं। (३९) क्या तू इनसे पहुँचाने की कुछ मजदूरी माँगता है यह बोझ से दबे जाते हैं। (४०) क्या इन के पास गुप्त भेद जानने की विद्या है वे लिख रखते हैं। (४१) या इनका इरादा कुछ धोखा देने का है तो (यह) काफिर आप ही धोखे में हैं। (४२) या खुदा के सिवाय इनका कोई पूजित है सो अल्लाह इनके शिर्क से पाक है। (४३) और अगर

जमीन में है ताकि उन लोगों को जिन्होंने बुरे कर्म किये उनके किये का बदला दे और जिन्होंने अच्छे कर्म किये, हैं उनको अच्छे का बदला दे। (३१) जो बड़े पापों और बेशर्मी के कामों से बचते रहते हैं मगर छोटे पाप उनसे होजाते हैं तो तेरा परवर्दिगार बड़ा क्षमा करने वाला है। वह तुमको खूब जानता है। जब उसने तुमको मिट्टी से बनाया था और जब तुम अपनी माँओं के गर्भ में बच्चे थे सो अपनी सफाई न जताओ। परहेजगारों को वही खूब जानता है (३२) [रुकू २]

(ऐ पैगम्बर) भला तू ने मनुष्य को देखा जिसने मुँह फेरा। (३३) और थोड़ा माल देकर सख्त होगया†। (३४) क्या उसके पास गुप्त बात जानने की विद्या है कि वह देखने लगा है। (३५) क्या उसको खबर नहीं जो कुछ मूसा के सहीफों में लिखा है। (३६) और इब्राहीम के (सहीफों में) जो वफादार था। (३७) कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाता। (३८) और यह कि मनुष्य को उतना ही मिलेगा जितना उसने कमाया है। (३९) और यह कि उसकी कमाई आगे चलकर देखी जायगी। (४०) फिर उसको पूरा बदला दिया जायगा (४१) और यह कि खुदा तक पहुँचना है। (४२) और यह कि वही हँसाता और रुलाता है। (४३) और यह कि वही मारता और जिलाता है। (४४) और यह कि उसने स्त्री पुरुष का जोड़ा बनाया। (४५) वीर्य से जब टपकाया गया। (४६) और यह कि दुबारा (जिन्दा) उठाना उसके जिम्मे है। (४७) और यह कि वही मालदार और धनवान करता है। (४८) और

---

† कहते हैं कि एक दिन वलीद बिन (सुपुत्र) मुगीरा मुहम्मद साहब के पीछे-पीछे चला ताकि उन की बातें सुने। एक दूसरे काफिर ने यह देखकर उस से कहा "क्या तुमने अपने बाप दादों को बुरा जाना जो इनके पीछे चल पड़े।" उस ने कहा "खुदा के डर से ऐसा कर रहा हूँ।" उस ने कहा तुम इतना धन मुझे देदो तो तुम्हारे पाप कट कर मुझ पर आ जायेंगे। मैं तुम्हारे पापों को उठा लूंगा। उसने यह बात मान ली परन्तु केवल थोड़ा ही दिया बाकी न दिया। इस पर यह आयत उतरी।

यह कि वही शेरा (एक तारे का नाम) का मालिक है। (४६) और यह कि उसी ने आद की (जाति) के अगलों को मार डाला था। (५०) और समूद को भी फिर बाकी न छोड़ा। (५१) और पहिले नूह की जाति को। इसमें सन्देह नहीं कि यह स्वयं ही बड़े अत्याचारी और बड़े उपद्रवी थे। (मार डाला) (५२) और उलटी बस्तियों को (जिन में लूत की जाति रहती थी) दे पटका। (५३) फिर उन पर जो तबाही आई सो आइ। (५४) (ऐ आदमी) तू अपने पालनकर्त्ता के कौन कौन पदार्थों में सन्देह किया करेगा। (५५) यह अगले डरानेवालों में से एक डरानेवाला है। (५६) नजदीक आने वाली समीप आ पहुँची है। (५७) अल्लाह के सिवाय किसी की सामर्थ्य नहीं कि इसको दूर कर सके। (५८) तो क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो। (५६) और हँसते हो और रोते नहीं। (६०) और तुम भूल में हो (६१) पास खुदा को सिर झुकाओ और पूजो। (६२) [रुकू ३]
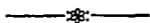
सूरे कमर

मक्के में उतरी इसमें ५५ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। कयामत की घड़ी पास आ लगी और चाँद फट गया। (१) अगर यह कोई और निशानी भी देखें तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह जादू चला आता है। (२) और इन लोगों ने (पैगम्बर को) झुठलाया और अपनी इच्छाओं पर चले। मगर हर काम नियत कौल पर होता है। (३) और उनके पास इतनी खबरें आ चुकी हैं जिनमें काफी डाँटना थी। (४) इसमें पूरी हिकमत है, मगर डराना कुछ काम नहीं आता। (५) तो तू उनकी तरफ से हट आ। जिस दिन बुलाने वाला ऐसी

चीज की तरफ बुलायगा जिसको यह न पहिचानेंगे। (६) नीची आँखें किये हुए क़ब्रों से निकलेंगे गोया फैली हुई टिड्डियाँ हैं। (७) बुलाने वाले की तरफ भागे जाते होंगे और काफिर कहेंगे कि यह सख्त दिन है। (८) इन लोगों से पहिले (नूह) की जाति ने झुठलाया हमारे सेवक (नूह) को झुठलाया और कहा कि यह पागल (उन्मत्त) है और उसको धमकियाँ दीं। (९) फिर उसने अपने परवरदिगार को पुकारा कि मैं दब गया हूँ तू ही बदला ले। (१०) तो हमने मूसलाधार पानी से आसमान के पट खोल दिये। (११) और जमीन से सोते बहा दिये तो पानी एक काम के लिए जो नियत हो चुका था मिल गया। (१२) और (नूह को) हमने तख्तों और कीलों से बनाई हुई (किश्ती—नाव) पर सवार कर लिया। (१३) (और यह) हमारी निगरानी में बही तैरती रही (यह) उस शख्स (नूह) का बदला था जिसकी कद्र नहीं की गई थी। (१४) और हमने इसको एक निशानी बना कर छोड़ दिया फिर कोई सोचने वाला है? (१५) फिर हमारी सजा और हमारा डराना कैसा हुआ। (१६) और हमने क़ुरान को समझने के लिए सुगम कर दिया है सो कोई है जो शिक्षा ग्रहण करे। (१७) आद (की जाति) ने (पैग़म्बरों को) झुठलाया तो हमारी सजा और हमारा डराना कैसा हुआ। (१८) हमने एक अशुभ दिन जिस की अशुभता नहीं टलती थी उन पर एक सख्त जोर शोर की आन्धी चलाई। (१९) वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी कि गोया वह जड़ से उखड़े हुये खजूरों के तने हैं। (२०) तो हमारी सजा और हमारा डराना कैसा हुआ। (२१) और हमने क़ुरान को समझने के लिये सुगम कर दिया है तो कोई है जो शिक्षा ग्रहण करे। (२२) [रुकू १]

(क़ौम) समूद ने डर सुनाने वालों (पैग़म्बरों) को झुठलाया। (२३) और कहने लगे क्या हमही में के एक शख्स के कहे पर हम चलेंगे तो हम गुमराह और पागलों में होंगे। (२४) क्या हममें से इसी पर वही (ईश्वरी संदेशा) है। नहीं यह झूठा शेखी मारनेवाला है। (२५) अब कल को मालूम हो जायगा कि कौन झूठा शेखीखोरा है। (२६)

हम इनके जांचने के लिये एक ऊँटनी भेजनेवाले हैं तो तुम इनकी राह देखो और सन्तोष से बैठे रहो। (२७) और इनको जतादो कि इनमें (और ऊंटनी में) पानी बाट दिया गया है तो हर (एक गिरोह अपनी अपनी) बारी पर (पानी पीने के लिये) हाजिर हो। (२८) तो उन्होंने अपने दोस्त (क़ुदार) को बुलाया तो उसने (ऊंटनी पर) हाथ डाला और कूचें काटदी। (२९) तो हमारी सज़ा और डराना कैसा हुआ। (३०) फिर हमने उन पर एक चिंघार भेजी। तो वह ऐसी होगई जैसी रौंदी हुई काटों की बाढ़। (३१) फिर हमने क़ुरान को समझने के लिये आसान कर दिया है तो कोई है कि शिक्षा पकड़े। (३२) लूतकी कौमने डर सुनानेवालों को झुठलाया। (३३) तो हमने उन पर पत्थर की वर्षा बरसाई मगर लूतके घर के लोगों को हम अपनी कृपा से सुबह होते २ निकाल ले गए। (३४) यह हमारी तरफ से कृपा थी जो लोग कृतज्ञ होते (शुक्र करते) हैं हम ऐसा ही बदला देते हैं। (३५) और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया भी था मगर वह डराने में हुज्जतें निकालने लगे। (३६) और वह उसको उसके मिहमानों की बाबत फुसलाते थे फिर हमने उनकी आँखें मेंट दीं। अब हमारी सजा और हमारे डराने के मजे चक्खो। (३७) और प्रात काल उनको सजा ने आघेरा जो टाले से न टल सकती थी। (३८) अब हमारी सज़ा और हमारे डराने के मजे चक्खो। (३९) और हमने क़ुरान को समझने के लिए आसान कर दिया है तो कोइ है कि शिक्षा ग्रहण करे। (४०) [रुकू २]

और फिरऔन के लोगों के पास डरानेवाले आये। (४१) तो ऐसा ही उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया तो हमने उनको ऐसा पकड़ा जैसा बली बलवान पकड़ता है। (४२) (ऐ मक्केवालों) क्या तुममें से इन्कार करनेवाले उन लोगों से बढ़कर हैं या तुम्हारे लिए क्षमा है। (४३) यह लोग कहते हैं कि हमारा गिरोह अपने आप मदद कर सकता है। (४४) सो कोई दिन जाता हैं कि गिरोह हार जायेगा और पीठ फेर कर भागेंगे। (४५) नहीं। बल्कि वादा तो उनके साथ क्यामत का है और क़यामत बड़ी बला और कड़वी है। (४६) बेशक

पापी गुमराही में और पागलपन में हैं। (४७) जिस दिन उनको उनके मुंह के बल (नरक की) आग में घसीटा जायगा (और उनसे कहा जायगा) नरक (की आग) का मजा चक्खो। (४८) हमने हर चीज़ को एक अन्दाजे के साथ पैदा किया है। (४९) और हमारा हुक्म करना सिर्फ एक बात है जैसे आंख की झपक। (५०) और (मक्का के काफ़िर लोग) हम तुम्हारे साथ वालों को हलाक कर चुके हैं तो कोई है कि शिक्षा पकड़े। (५१) और हर काम जो उन्होंने किये हैं किताब में लिखे हैं। (५२) और हर एक छोटा और बड़ा काम सब लिखा हुआ है। (५३) परहेज़गार (बैकुण्ठ के) बागों और नहरों में होंगे। (५४) सच्ची बैठक में बादशाह के पास जिसका सब पर कब्जा है बैठेंगे। (५५) [रुकू ३]।

सूरे रहमान।

मक्के में उतरी इसमें ७८ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। रहम वाले (१) खुदा ने क़ुरान सिखाया। (२) उसी ने आदमी को पैदा किया। (३) फिर उसको बोलना सिखाया। (४) सूरज और चाँद का एक हिसाब है। (५) और बूटियाँ और दरख्त उसी को सिर झुकाये हुए हैं। (६) और उसी ने आसमान को ऊँचा किया है और तराज़ू बना दी। (७) ताकि तुम लोग तौलने में कम बेश न करो। (८) और न्याय के साथ सीधा तौल तौलो और कम न तौलो। (९) और उसी ने दुनियाँ के लिये ज़मीन बनाई है। (१०) कि उसमें मेवे हैं और खजूर के पेड़ हैं जिन पर गिलाफ़ चढ़े होते हैं। (११) और अनाज जिसके साथ भुस है और खुशबूदार फूल हैं। (१२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी

नियामतों को झुठलाओगे। (१३) उसी ने मनुष्य को पपड़ी की तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया। (१४) और जिन्नों को आग की लौ से। (१५) तो तुम अपने परवर्दिगार की कौन कौन सी नियामतों को झुठलाओगे। (१६) और सूरज के निकलने और डूबने की जगहों का मालिक। (१७) फिर तुम अपने परवर्दिगार की कौन कौन सी नियामतों को झुठलाओगे। (१८) उसीने दो नदियों को मिला दिया है कि वह मिली हैं। (१९) इन दोनों के बीच एक आड़ है कि यह उससे बढ़ नहीं सकते। (२०) तो अपने परवरदिगार की किस नियामत को तुम झुठलाओगे। (२१) दोनों में से मोती और मूँगे निकलते हैं। (२२) तो तुम अपने परवर्दिगार की कौन कौन नियामतों को झुठलाओगे। (२३) और जहाज जो समुद्र पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े रहते हैं उसी के हैं। (२४) तो तुम अपने परवर्दिगार के कौन कौन से पदार्थों को झुठलाओगे। (२५) [रुकू १]।

(ऐ पैगम्बर) जितनी सृष्टि जमीन पर है सब मिटने वाली है। (२६) और (सिर्फ) तुम्हारे परवर्दिगार की जात बाकी रह जायगी जो बड़प्पन वाली बड़ी है। (२७) तो तुम अपने परवर्दिगार की कौन कौन सी नियामतों को झुठलाओगे। (२८) जो कोई आसमानों में और जमीन में हैं उसी से सवाल करते हैं। वह हर रोज एक शान में है। (२९) फिर तुम अपने परवर्दिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे। (३०) ऐ दो बोझिल काफिरों‡। हम जल्द तुम्हारी तरफ ध्यान देने वाले हैं। (३१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन नियामतों को झुठलाओगे। (३२) ऐ जिन्न और आदमियों के गरोहों अगर तुम से हो सके कि आसमानों और जमीन के किनारों से निकल भागो तो निकल देखो। मगर तुम बगैर जोर के निकल ही नहीं सकते। (३३) फिर तुम

‡ यानी मनुष्य और वह जीव जो आँखों से नहीं दिखाई देते और इसी लिये जिन्न कहलाते हैं।

अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (३४) और तुम पर आग के शोले और धुआँ भेजा जायेगा और तुम मदद भी न कर सकोगे। (३५) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (३६) फिर जब आसमान फटे और नरी की मानिन्द लाल होजाए। (३७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (३८) तो उस दिन न तो आद मियों से उनके गुनाहों की बाबत पूछा जायगा और न जिन्नों से। (३६) सो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (४०) पापियों को उनकी सूरत से पहचान लिया जायगा फिर पुट्ठे और पैर पकड़े जायँगे और उनको खींचकर नरक में लेजायँगे। (४१) सो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे। (४२) यही नरक है जिसको पापी लोग झुठलाते हैं। (४३) नरक में और खौलते हुए पानी में फिरेंगे। (४४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (४५) [रुकू २]

और जो मनुष्य अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता रहे उसको दो बाग मिलेंगे। (४६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (४७) जिसमें बहुत सी टहनियाँ हैं। (४८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (४६) दोनों में दो चश्में जारी होंगे। (५०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (५१) उनमें हर मेवे की दो किस्में होंगी। (५२) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (५३) फर्शों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे। ताफ्ते के उनके अस्तर होंगे और दोनों बागों के फल झुके होंगे। (५४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (५५) उनमें (पाक हूरें) होंगी जो आँख उठाकर भी नहीं देखेंगी और बैकुण्ठ वासियों से पहले न तो किसी मनुष्य ने उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने। (५६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन

कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (५७) वे लाल और मूंगे जैसे हैं। (५८) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (५९) भला नेकी का बदला नेकी के सिवाय क्या हो सकता है। (६०) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६१) और इन दो (बागों) के सिवाय और दो बाग हैं। (६२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६३) दोनों (बाग खूब) गहरे सब्ज हैं। (६४) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६५) उनमें दो चश्मे उछल रहे होंगे। (६६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओग। (६७) उन दोनो (बागों) में मेवे और खजूरें और अनार (होंगे) (६८) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओग। (६९) उनमें अच्छी खूबसूरत औरतें होंगी। (७०) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (७१) हूरें जो खीमों में बन्द हैं। (७२) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (७३) बैकुण्ठवासियों से पहले न तो किसी इन्सान ने उन (हूरों) पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने। (७४) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौनसी निआमतों को झुठलाओगे। (७५) बैकुण्ठवासी वहाँ सब्ज कालीनों और उमदा २ फर्शों पर तकिये लगाये होंगे। (७६) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (७७) (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारे परवरदिगार का नाम बड़ा बरकतवाला, बड़प्पनवाला और भलाई करनेवाला है। (७८) [रुकू ३]।

सूरे वाकिआ

मक्के में उतरी इसमें ९६ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। (१) जब होनेवाली होगी (कयामत)। (२) उसके आने में कुछ भी झूठ नहीं।

(३) किसी को नीचा दिखायेगी और किसी के दर्जे ऊँचे करेगी। (४) जब ज़मीन बड़े ज़ोर से हिलने लगेगी। (५) और पहाड़ के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे। (६) फिर उड़ती मिट्टी हो जावेंगे। (७) और तुम्हारी तीन किस्में हो जावेंगी। (८) फिर दाहिने हाथ वाले से दाहिने हाथ वालों का क्या कहना है। (९) और बायें हाथवाले बायें हाथ वालों का क्याही बुरा हाल है। (१०) और अगाड़ी वाले तो आगे ही हैं। (११) यही लोग पास वाले हैं। (१२) नियामत के बागों में। (१३) अगलों में से एक जमात है। (१४) और पिछलों में से थोड़े। (१५) जड़ाऊ तख्तों के ऊपर। (१६) आमने सामने तकिये लगाये बैठे होंगे। (१७) उनके पास लौंडे हैं जो हमेशा (लड़के ही) बने रहेंगे। (१८) उनके पास आबख़ोरे और लोटे और साफ़ शराब के प्याले लाते और ले जाते होंगे। (१९) जिससे न तो उनके सिर में दर्द होगा न बकवाद लगेगी। (२०) और जो मेवे उनको अच्छे लगें। (२१) और जिस किस्म के पक्षी का मास उनको अच्छा लगे। (२२) और हूरें बड़ी बड़ी आँखों वाली जैसे छिपे हुए मोती। (२३) बदला उसका जो करते थे। (२४) वहाँ बकना और पाप की बात न सुनेंगे। (२५) मगर सलामती सलामती की आवाज़ें आ रही होंगी। (२६) और दाहिने तरफ वाले। सो इन दाहिनी तरफवालों का क्या कहना है। (२७) बे काँटे की बेरियों। (२८) और लदे हुए केलों में। (२९) और लम्बे साये में। (३०) और बहते पानी में। (३१) और बहुत मेवों में। (३२) जो न कभी खतम हों और न रोके जायें। (३३) और ऊँचे बिछौने। (३४) हमने हूरों की एक खास सृष्टि बनाई है। (३५) फिर इनको क्वाँरी बनाया है। (३६) प्यारी प्यारी समान अवस्था वाली। (३७) यह सब दाहिनी तरफ वालों के लिये हैं। (३८) [रुकू १]

एक जमात पहिलों में से है। (३९) और एक जमात पिछलों में से है। (४०) और बाईं तरफ वाले क्या बुरे बाईं तरफ वाले होंगे। (४१) कि वह आग की भाफ़ में और गरम पानी में होंगे। (४२)

और धुयें की छाओं में। (४३) जो न ठण्डी है और न इज्जत की। (४४) यह लोग इससे पहिले ऐश में थे। (४५) और बड़े पाप पर हठ करते रहते थे। (४६) और कहते थे जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो गये क्या फिर हम उठाये जायेंगे। (४७) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। (४८) (हे पैगम्बर) कहो कि अगले और पिछले सब। (४९) एक मालूम वक्त पर जमा किये जायेंगे। (५०) फिर ऐ झुठलाने वाले गुमराहो। (५१) तुमको (नरक में) सेहुँड का दरख्त खाना होगा। (५२) और उसी से पेट भरना पड़ेगा। (५३) फिर ऊपर से उबलता हुआ पानी पीना होगा। (५४) फिर ऐसे पीओगे जैसे प्यासे ऊँट पीते हैं। (५५) न्याय के दिन यही उनकी मेहमानी है। (५६) हमने तुमको पैदा किया है फिर भी तुम क्यों नहीं मानते। (५७) भला देखो तो जो (वीर्य्य स्त्रियों की योनि में) टपकाते हो। (५८) क्या तुम उससे (आदमी) पैदा करते हो या हम पैदा करते हैं। (५९) हमने तुममें मरना ठहरा दिया और हम हारे नहीं रहे। (६०) कि तुम्हारी मानिन्द और कौम बदल लायें और तुम्हें उस जहान में उठा खड़ा करें जिसे तुम नहीं जानते। (६१) और तुम पहिली पैदायश जान चुके हो फिर क्यों नहीं सोचते। (६२) भला देखो तो जो बोते हो। (६३) क्या तुम उसको उगाते हो या हम उगाते हैं। (६४) हम चाहें तो उसको चूरा २ करदें। और तुम बातें बनाते रह जाओ। (६५) हम टोटे में आगये। (६६) बल्कि हमारा भाग्य फूट गया। (६७) भला देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (६८) क्या तुमने इसको बादल से बरसाया या हम बरसाते हैं। (६९) अगर हम चाहें तो उसको खारी कर दें तो तुम क्यों नहीं धन्यवाद देते। (७०) भला देखो तो आग जो तुम सुलगाते हो। (७१) इस दरख्त को तुमने पैदा किया है या हम पैदा करते हैं। (७२) हमने से याद दिलाने और मुसाफिरों के फायदे के लिए बनाये हैं। (७३) सो अपने परवरदिगार के नाम की माला फेर जो सब से बड़ा। (७४)

[रुकू २]

तारों के टूटने की क़सम है। (७५) और समझो तो यह बड़ी क़सम है। (७६) यह बड़ी क़द्र का क़ुरान है। (७७) छिपी किताब में लिखा हुआ है। (७८) उसको वही छूते हैं जो पाक बने हैं। (७९) संसार के परवरदिगार से भेजा गया है। (८०) अब क्या तुम इस बात से सुस्ती करते हो। (८१) और अपना हिस्सा यही लेते हो कि झुठलाते हो। (८२) फिर क्यों न हो जब जान गले में पहुँच जावे। (८३) और तुम उस वक़्त देखा करो। (८४) और हम तुम्हारी निस्बत उससे ज़्यादातर पास हैं लेकिन तुम नहीं देखते†। (८५) फिर अगर तुम किसी के हुक्म में नहीं हो तो क्यों। (८६) तो तुम उसको फेर लाते अगर तुम सच्चे हो। (८७) सो अगर वह पास वालों में हुआ। (८८) तो आराम रोज़ी और नियामत के बाग़ हैं। (८९) और अगर वह दाहिनी तरफ़ वालों में से है। (९०) तो दाहिनी तरह वालों की तरफ़ से तेरे लिए सलाम है। (९१) और अगर झुठलाने वालों गुमराहों में से है। (९२) तो उबलते पानी से मिहमानी की जायेगी। (९३) नरक (आग) में ढकेला जायेगा। (९४) बेशक यह बात सब विश्वास के लायक है। (९५) सो अपने परवरदिगार के नाम की जो सबसे बड़ा है माला फेर। (९६)। [रुकू ३]

---

† एक रग (नस) ऐसी है जो शहरग कहलाती है। यदि यह न होती तो नाड़ी में धमक न होती। यह आत्मा से मिली हुई है। ख़ुदा आदमी से इस से भी अधिक समीप है। कुछ लोगों ने इस आयत का यह भी अर्थ बताया है कि आदमी मरने लगता है तो उसके क़रीबी रिश्तेदार उसके पास होते हैं। ख़ुदा हर समय उस के पास होता है और उसके सम्बन्धियों से ज़्यादा नज़दीक होता है।

सूरे हदीद।

मदीने में उतरी इसमें २६ आयतें और ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहम वाला मिहर्बान है। जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह को पाकी से याद करते हैं और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (१) आसमानों और ज़मीन का राज्य उसी का है। (वही) जिलाता और मारता है और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है। (२) वही आदि है और वही अन्त है और वही प्रत्यक्ष और गुप्त है और वह हर चीज़ से जानकार है। (३) वही है जिसने छः दिन में आसमानों और ज़मीन को बनाया फिर तख़्त पर जा विराजा। जो चीज़ ज़मीन में दाखिल होती और जो चीज़ ज़मीन से बाहर आती है और जो चीज़ आसमान से उतरती और जो चीज़ आसमान की तरफ़ चढ़ती है वह जानता है और तुम जहाँ कहीं हो वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम किया करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (४) आसमानों और ज़मीन का राज्य उसी का है और सब काम अल्लाह ही तक पहुँचते हैं। (५) (वही) रात को दिन में दाखिल करता और दिन को रात में दाखिल करता है। दिली बात की उसको ख़बर है। (६) अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उस माल में से जिसका उसने अधिकारी बनाया है ख़र्च करो। सो जो लोग तुममें से ईमान लाये और ख़र्च करते हैं उनके लिये बड़ा फल है। (७) और तुमको क्या हो गया है कि ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते हालांकि पैग़म्बर तुमको तुम्हारे ही परवरदिगार पर ईमान लाने के लिए बुला रहे हैं और अगर तुमको यक़ीन आये तो ख़ुदा तुम से क़ौल करा चुका है। (८) वही है जो अपने सेवक पर खुली आयतें उतारता है ताकि तुमको अंधकार से निकाल कर रोशनी में लाये और बेशक अल्लाह तुम पर बड़ा रहम करनेवाला मिहर्बान है। (९) और तुमको क्या हो गया है कि ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते हालांकि

आसमान ज़मीन का वारिस ख़ुदा ही है, तुममें से जिन लोगों ने फ़तह (मक्का) से पहिले खर्च किया और लड़ाई की। वह (दूसरे लोगों के) बराबर नहीं। यह लोग दर्जे में उनसे बढ़कर हैं जिन्होंने (मक्का के फ़तह के) पीछे (माल) खर्च किये और लड़े और ख़ुदा ने सभी से अच्छा वादा किया है और जैसे जैसे काम तुम लोग करते हो अल्लाह को उनकी खबर है। (१०) [रुकू १]

ऐसा कौन है जो अल्लाह का ख़ुशदिली से उधार§ दे फिर वह उसको उसके लिए दूना कर दे और उसके लिए इज़्ज़त का फल है। (११) जिस दिन तू ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतों को देखेगा उसकी रोशनी उनके आगे और उनके दाहिनी तरफ़ दौड़ती है। आज तुम लोगों के लिए ख़ुशी है। (बैकुंठ के) बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। इन्हीं में सदा रहोगे यह बड़ी कामयाबी है। (१२) उस दिन मुनाफ़िक़ (कपटी) मनुष्य और मुनाफ़िक़ औरतें ईमानवालों से कहेंगी कि हमारा इंतज़ार करो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ ले लें। कहा जायगा अपने पीछे की तरफ़ लौट जाओ और रोशनी तलाश कर लो। इसके बाद इन (दोनों फ़रीक़ों) के बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जायगी उसमें एक दरवाज़ा होगा उसमें भीतरी तरफ़ कृपा होगी और उसकी बाहरी तरफ़ सज़ा होगी। (१३) वह (मुनाफ़िक़) ईमान वालों को पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे वह कहेंगे थे तो सही मगर तुम ने अपने आप को बला में डाला और तुम राह देखते थे और शक करते थे और ख़्यालों पर धोखे में रह गये यहाँ तक कि ख़ुदा की आज्ञा आ पहुँची और (शैतान) दग़ाबाज़ ने तुमको अल्लाह के विषय में धोखा दिया। (१४) सो आज न तो तुमसे छुड़ाई का बदला क़बूल किया जायगा और न उन लोगों से जो इन्कार करते रहे। तुम सब का ठिकाना नरक है यही तुम्हारा दोस्त है और यही तुम्हारा बुरा

§ जो कोई अपना धन ख़ुदा की राह में देता है उस का बदला उसके दिए हुए धन से दूना अच्छा बदला देता है। मानो दोनों लोकों में अच्छा फल पाता है।

ठिकाना है। (१५) क्या ईमानवालों के लिये वक्त नहीं आया कि खुदा का ज़िक्र और कुरान के पढ़ने के लिए जो सच्चे खुदा की तरफ़ से उतरा है उनके दिल पिघलें और यह उन लोगों की तरह न हो जायें जिनको पहिले किताब दी गइ थी। फिर उन पर एक मुद्दत गुज़र गई और उनके दिल सख्त हो गये और उनमें बहुत बे हुक्म हैं। (१६) जाने रहो कि अल्लाह ज़मीन को उसके मरे पीछे जिलाता है हमने तुम्हारे लिए आयतें बयान की हैं ताकि तुम्हें समझ हो। (१७) बेशक खैरात करने वाले और खैरात करने वालियाँ और (जो लोग) खुदा को खुशदिली से उधार देते हैं उन्हें दूना मिलेगा और उनको प्रतिष्ठा का फल मिलेगा। (१८) और जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाये वही लोग अपने परवरदिगार के नज़दीक सच्चे और गवाह हैं उनको उनका फल और उनकी रोशनी (नूर) मिलेगी और जो लोग क़ाफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाते हैं वही लोग नरकवासी हैं। (१९) [रुकू २]

(लोगों) जाने रहो कि इस दुनिया की ज़िन्दगी खेल और तमाशा और ज़ाहिरी शोभा है और आपस में एक दूसरे पर घमण्ड करना और माल और औलाद बढ़ाना है। यह मेंह की तरह है कि काश्तकार खेती को देख कर खुशियाँ मनाने लगते हैं। फिर (पक कर) खुश्क हो जाती है तो उसको देखता है कि पीली पड़ गइ है। फिर भड़नी में आ जाती और पिछले घर में सख्त सज़ा है। और अल्लाह से रज़ामन्दी और माफ़ी भी है और दुनिया की ज़िन्दगी तो निरी धोखे की टट्टी है। (२०) (लोगों) अपने परवरदिगार की बख़शीश की तरफ़ लपको और बैकुण्ठ की तरफ़ (लपको) जिसका फैलाव है जैसे आसमान ज़मीन का फैलाव (और वह) उन लोगों के लिए तैयार कराई गई है जो खुदा और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाते हैं। यह खुदा की कृपा है जिसको चाहे दे और अल्लाह की कृपा बहुत बड़ी है। (२१) (लोगों) जितनी मुसीबतें ज़मीन पर उतरती हैं और जो तुम पर उतरती हैं (वह सब) उनके पैदा करने से पहिले हमने किताब में लिख रक्खी

चाहते हैं तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले एक गुलाम छोड़ना होगा। यह तुमको शिक्षा दी जाती है और ,खुदा तुम्हारे कामों की खबर रखता है। (३) फिर जो यह न कर सके तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहिले लगातार दो महीने के रोजे रक्खे और जो यह न कर सके तो साठ गरीबों को खाना खिलादे। यह इसलिए है कि तुम अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान ले आओ। यह अल्लाह की बाँधी हुई हदें हैं और काफ़िरों को दु खदाई सजा है। (४) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर के विरुद्ध आचरण करते हैं वह ख्वार हुए जैसे इनसे पहिले लोग ख्वार हुए थे और हमने साफ आयतें उतारीं और काफ़िरों के लिए ख्वारी की सजा है। (५) जब अल्लाह उन सब को उठायेगा फिर जैसे जैसे कर्म यह लोग करते रहे हैं इनको बता देगा। अल्लाह तो उनके कर्मों को गिनता गया और यह उनको भूल गये और अल्लाह सब चीजों का निगराँ है। (६) [रुकू १]

(ऐ पैग़म्बर) क्या तूने नहीं देखा कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है अल्लाह सबसे जानकार है। जब तीन (आदमी) का मशवरा होता है तो अवश्य उनका चौथा वह होता है और पाँच का (सलाह मशवरा) होता है तो जरूर उनका छठा वह होता है और इससे कम हों या ज्यादा कहीं भी हों वह अवश्य उनके साथ होता है फिर जैसे-जैसे कर्म यह करते रहे हैं क़यामत के दिन वह उनको जता देगा अल्लाह हर चीज़ को जानता है। (७) (ऐ पैग़म्बर) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिनको कानाफूसी करने से मनाकर दिया गया था। फिर जिससे उनको मना कर दिया गया था लौटकर वही करते हैं। और वह पाप और जियादती करने की और पैग़म्बर से सरकशी करने की कानाफूसी करते हैं और जब यह तेरे पास आते हैं तो ऐसी दुआ देते हैं जैसी अल्लाह ने तुम्हें दुआ नहीं दी और यह अपने जी में कहते हैं कि हमारे कहने पर खुदा हमको सजा क्यों नहीं देता। इनके लिए नरक काफ़ी है यह उसी में दाख़िल होंगे और यह बुरी जगह है। (८) मुसलमानो ! जब तुम कानाफूसी

करो तो पाप की और ज़ियादती करने की और पैग़म्बर की बे हुक्मी की बातें एक दूसरे के कान में न किया करो। हाँ नेकी और परहेज़गारी की और अल्लाह से डरते रहो जिसके सामने इकट्ठा होना है। (६) ऐसी कानाफूसी तो एक शैतानी हरकत है ताकि जो ईमान लाये हैं उदास होवें। हालांकि बेहुक्म ख़ुदा उनको कुछ भी नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (१०) ईमानवालों। जब तुमसे कहा जावे कि मजलिस में खुल २ कर बैठो तो तुम जगह छोड़ २ कर बैठो। ख़ुदा तुम्हारे लिए ज्यादा कर देगा और जब कहा जाय उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो। जो लोग तुम में से ईमान रखते हैं और इल्मदार हैं। अल्लाह उनके दर्जे ऊँचे करेगा और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (११) ईमानवालों जब तुमको पैग़म्बर के कान में कोई बात कहनी हो तो अपनी बात कहने से पहिले कुछ ख़ैरात (पुण्य) लाकर आगे रख दिया करो। यह तुम्हारे लिये भलाई है और ज़्यादा पाक है। फिर अगर तुम यह न कर सको तो अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (१२) क्या तुम (पैग़म्बर के) कान में‡ कोई बात कहने से पहिले कुछ पुण्य लाकर आगे रखने से डर गये तो जब तुम (ऐसा) न कर सको तो ख़ुदा ने तुम्हारा यह अपराध क्षमा कर दिया सो नमाज़ें पढ़ो और ज़कात दो और अल्लाह और उस पैग़म्बर का हुक्म मानो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (१३) [रुकू २]

क्या तूने उन्हें नहीं देखा जिन्होंने ऐसे मनुष्यों से दोस्ती की जिन पर ख़ुदा का क्रोध है। यह लोग न तुममें हैं न उन्हीं में और वह जान-बूझकर झूठी बातों पर क़समें खाते हैं। (१४) उनके लिये ख़ुदा ने सख़्त सज़ा तय्यार कर रक्खी है इसमें शक नहीं कि यह मनुष्य

‡ कुछ मुनाफ़िक़ अपनी शान जताने और यह ख़याल को कि वे मुहम्मद साहब के बड़े मुँहलगे हैं काम में बात करते थे उनका भंडाफोड़ करने के लिये ये आयतें उतरीं। झूठ मला क्यों पुण्य करते।

बुरा करते हैं। (१५) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रक्खा है और यह खुदा की राह से लोगों को रोकते हैं तो उनके लिए ख्वारी की सजा है। (१६) अल्लाह के यहाँ न इनके माल कुछ इनके काम आवेंगे और न इनकी औलाद यह नरकगामी मनुष्य हैं सो हमेशा नरक ही में रहेंगे। (१७) जिस दिन अल्लाह इन सबको (जिला) उठायगा तो यह उसके आगे क़समें खावेंगे जैसे यह मुसलमानों के आगे क़समें खाया करते हैं और समझते हैं कि खूब कर रहे हैं। बेशक यही लोग झूठे हैं। (१८) शैतान ने इन पर क़ाबू जमाया है और उसने इनको खुदा की याद भुलादी है यह शैतानी गिरोह हैं और शैतानी गरोह नाश होंगे। (१९) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर से विरोध करते हैं वही ज़लील होंगे। (२०) खुदा लो लिख चुका है कि हम और हमारे पैग़म्बर ज़बर रहेंगे। बेशक अल्लाह जोरावर ज़बरदस्त है। (२१) (ऐ पैग़म्बर) जो लोग अल्लाह और आख़ीर दिन का विश्वास रखते हैं उनको न देखोगे कि खुदा और उसके पैग़म्बर के दुश्मनों के साथ दोस्ती रक्खें चाहे वह उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके घरा ही के हों। यही हैं जिनके दिलों के अन्दर खुदा ने ईमान लिख दिया है और अपनी ग़ैब कृपा से उनकी मदद की है और वह उनको बाग़ों में ले जाकर दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी वह हमेशा उन्हीं में रहेंगे। खुदा उनसे खुश और वह खुदा से खुश यह खुदाई गिरोह है। खुदाई गिरोह ही की जीत होगी। (२२) [रुकू ३]

—०—

सूरे हशर

मदीने में उतरी इसमें २४ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह की माला फेरते हैं और

यह बली हिकमतवाला है । (१) वही है जिसने किताब वालों में से इन्कारियों को उनके घरों से (जो मदीने में बसते थे) पहिले† हशर के लिए निकाल बाहर किया (मुसलमानों) तुम यह न ख्याल करते थे कि यह निकलेंगे और वह इस ख्याल में थे कि उनके क़िले उनको खुदा के मुक़ाबिले में बचा लेंगे। तो जिधर से उनका ख्याल भी न था खुदा ने उनको घेर लिया और उनके दिलों में धाक बैठा दी कि उन्होंने अपने हाथों और मुसलमानों के हाथों से अपने घरों को ख़राब कर डाला तो आँखवालों शिक्षा पकड़ो । (२) और अगर खुदा ने देश निकाले की सजा न लिख दी होती तो वह उनको दुनिया में सजा देता और अन्त में उनको नरक की सजा है। (३) यह इस सबब से कि इन्होंने खुदा और उसके पैग़म्बर की दुश्मनी की और जो खुदा से दुश्मनी करे तो खुदा की मार सख्त है। (४) (मुसलमानों इनके) खजूरों के दरख्त जो तुमने काट डाले या इनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया (ठूँठ कर दिया) तो यह खुदा ही के हुक्म से था और इस लिये कि बदकारों को जलील करे (५) और जो (माल) खुदा ने अपने पैग़म्बर को मुफ्त में उनसे दिलवा दिया हालाकि तुमने उसके लिए न तो घोड़े दौड़ाये और न ऊट मगर अल्लाह अपने पैग़म्बरों में से जिसको चाहे जीत देता है और अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (६) जो (माल) अल्लाह अपने पैग़म्बर को बस्तियों के लोगों से दिला दे तो अल्लाह का और पैग़म्बर का और रिश्तेदारों का और अनाथों का और गरीबों का और यात्रियों का है। यह इसलिये कि जो तुममें से धनी हैं यह माल उन्हीं के लेने देने में आता जाता न रहे और जो चीज पैग़म्बर तुमको दे दिया करे वह ले लिया करो और जिस चीज से मना करें

† इन आयतों में बनी नुजैर का हाल है। यह लोग यहूदी थे। वह मुसलमानों के विरुद्ध मुशरिकों की सहायता करते थे। इनको लड़कर इस बात पर विवश किया गया कि यह अपना घर छोड़कर कहीं और चले जायें। यही पहला हशर था।

उससे रुके रहो। ख़ुदा से डरो। ख़ुदा की मार बड़ी सख़्त है। (७) यह (लूट का माल) तो ग़रीब देश त्यागियों के लिये है जो अपने घर और माल से निकाल दिये गये कि वह ख़ुदा की कृपा और उसकी रज़ामन्दी की चाहना में लगे हैं और ख़ुदा और उसके पैग़म्बर की मदद करते हैं। यही लोग सच्चे हैं। (८) और यह माल उनके लिए है जिन्होंने इस घर (यानी मदीने में) और ईमान में जगह पकड़ रक्खी है। जो उनके पास हिजरत (देश त्याग करके आता है उसका प्यार करते और जो कुछ उन देश त्यागियों) को दिया जाय उससे दिल तंग नहीं करते और उनको अपनी जानों पर मुक़द्दम‡ रखते हैं अगर्चि आप तंगी में हों और जो अपने जी के लालच से बचाया गया वही मुराद (मन चाहा) पावेगा। (९) और यह माल उनके लिये है जो इन (देश त्यागियों) के बाद आये कहते हैं कि हमारे परवरदिगार हमको और हमारे इन भाइयों को भी जो हमसे पहिले ईमान लाये क्षमाकर और हमारे दिलों में ईमानवालों की बुराई न डाल। ऐ हमारे परवरदिगार तूही मिहर्बान और दया करने वाला है। (१०) [रुकू २]

(ऐ पैग़म्बर) क्या तू ने उन लोगों को न देखा जो मुनाफ़िक़ (दग़ाबाज़ कपटी) हैं किताब वालों में से काफ़िरों से कहते हैं कि अगर तुम निकाले जाओगे तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायँगे और तुम्हारे सम्बन्ध में हम कभी किसी का कहना न मानेंगे और अगर तुमसे लड़ाई होगी तो हम तुम्हारी मदद करेंगे और अल्लाह गवाही देता है कि यह झूठे हैं। (११) अगर यह निकाले जावें यह उनके साथ न निकलेंगे और उनसे लड़ाई हुई यह कभी इनकी मदद न करेंगे और जो मदद देंगे तो पीठ देके भागेंगे फिर कहीं मदद न पावेंगे। (१२) इनके दिलों में तुम्हारा डर ख़ुदा से भी

‡ पहली आयतों में उन लोगों का बयान था जो मक्के से मदीने चले आये थे। इन आयतों में उन की प्रशंसा की गई है जो मदीने में रहते थे और अंसार या सहायक कहलाते थे।

बढ़कर है। यह इस सबब से है कि यह लोग नासमझ हैं। (१३) यह सब मिलकर भी तुमसे नहीं लड़ सकते मगर क़िले वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ से। आपस में इनकी बड़ी धाक है तू इनको एक समझता है हालांकि इनके दिल फटे हुये हैं यह इस लिये कि यह बेसमझ हैं। (१४) इनकी† मिसाल उन जैसी मिसाल है जो थोड़े ही दिनों पहिले अपने किए का मज़ा चख चुके और इनको दु:खदाई सज़ा है। (१५) इनकी मिसाल शैतान जैसी मिसाल है जब वह आदमी से कहता है कि इन्कारी हो। फिर जब वह इन्कारी हुआ तो कहता है कि मुझको तुमसे कुछ मतलब नहीं। मैं अल्लाह से डरता हूँ जो संसार का परवरदिगार है। (१६) तो इन दोनो का परिणाम यही होना है कि दोनो नरक में जावेंगे। उसी में हमेशा रहना होगा और सरकशों की यही सज़ा है। (१७) [रुकू २]

मुसलमानों। ख़ुदा से डरते रहो और हर आदमी का ख़्याल रखना चाहिये कि उसने कल के लिये क्या कर रक्खा है और ख़ुदा से डरो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (१८) और उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने ख़ुदा को भुला दिया तो ख़ुदा ने भी ऐसा किया कि वह अपने आपको भूल गये। यही बे हुक्म हैं। (१९) नरकवासी और बैकुण्ठवासी बराबर नहीं बैकुण्ठवासी ही कामयाब हैं। (२०) (ऐ पैग़म्बर) अगर हमने यह क़ुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि ख़ुदा के डर के मारे झुक गया और फट गया होता और हम यह मिसाल लोगों के लिये बयान फर्माते हैं ताकि वह सोचें। (२१) वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं। पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला बड़ा मिहर्बान रहमवाला है। (२२) वही अल्लाह जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं। बादशाह है, पाक है, निर्दोष है, शान्तिदाता

---

† यह बद्र के काफ़िरों की ओर संकेत है। बद्र की लड़ाई में उनको बहुत बुरी हार हुई थी।

निरीक्षक है, शक्तिवाला है, बड़ा तेजस्वी है। यह लोग जैसे-जैसे शिर्क (ईश्वर की जाति व गुण में साम्य) करते हैं अल्लाह उससे पाक है। (२३) वही अल्लाह पैदाकरनेवाला, बनाने वाला, सूरतें देनेवाला है उसके सब नाम अच्छे हैं जो कुछ जमीन आसमानों में है वह उसी की माला फेरा करते हैं और वह जोरावर हिकमत वाला है। (२४) [रुकू ३]
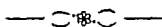
सूरे मुम्तहना

मदीने में उतरी इसमें १३ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है। ऐ ईमानवालों! अगर तुम हमारी राह में जेहाद करने और हमारी रजामन्दी ढूंढ़ने के लिये निकले हो तो हमारे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम तो उनकी तरफ मुहब्बत के पैगाम भेजते हो हालांकि तुम्हारे पास जो सच बात आई है वह उससे इन्कार करते हैं। पैगम्बर को और तुमको इस बात पर निकालते हैं कि तुम खुदा पर जो तुम्हारा परवर्दिगार है ईमान लाये हो। तुम छिपाकर उनकी तरफ प्रेम (मुहब्बत) के संदेशे भेजते हो और जो कुछ तुम छिपा कर करते हो और जो कुछ जाहिरा करते हो हम खूब जानते हैं और जो कोई तुम में से ऐसा करे तो वह सीधी राह से भटक गया। (१) और वह तुम्हें पावें तुम्हारे दुश्मन हो जायें और तुम्हारी तरफ अपने हाथ चलायेंगे और बुराई के साथ अपनी जबान भी और चलायेंगे कि तुम भी काफिर हो जाओ (२) क्यामत के दिन न तुम्हारी रिश्तेदारी तुमको काम आयेगी और न तुम्हारी संतान (औलाद) वह तुम में फैसला कर देगा और खुदा तुम्हारे कामों को देखने वाला है। (३) इब्राहीम में और उसके साथियों में तुम्हारे लिये अच्छा नमूना है।

उन्होंने अपनी कौम से कहा कि हम तुम से और जिनको तुम
ाह के सिवाय पूजते हो उनसे अलग हैं। हम तुमको नहीं मानते
: हम में और तुममें दुश्मनी और वैर हमेशा के लिए खुल पड़ा जब
तुम अकेले खुदा पर ईमान न ले आओ मगर इब्राहीम का कहना
क लिये यह था कि मैं तेरे लिये क्षमा माँगूँगा हालाँकि खुदा के
ो तेरे लिए मेरा कुछ ज़ोर तो चलता नहीं। ऐ हमारे परवर्दिगार हम
। पर भरोसा करते हैं और तेरी ही तरफ ध्यान धरते हैं और तेरी ही
ा लौट कर जाना है। (४) ऐ हमारे परवर्दिगार हम पर काफिरों
विजय न दे और ऐ हमारे परवर्दिगार हम को क्षमा कर तू बली
म्मत वाला है। (५) तुमको उनकी भली चाल चलनी है जो अल्लाह
और आखिरी दिन पर उम्मेद रखते हैं और जो कोई मुँह फेरे तो
ा वेपरवाह और तारीफ के लायक है। (६) [रुकू १]

अजब नहीं कि अल्लाह तुम में और काफिरों में जिनके साथ तुम्हारी
मनी है दोस्ती पैदा कर दे और अल्लाह सब कर सकता है और
ाह क्षमा करने वाला मिहर्बान है। (७) जो लोग तुम से दीन में
। लड़े न उन्होंने तुमको तुम्हारे घरों से निकाला उनके साथ
ाई करने और न्याय का बर्ताव करने से खुदा तुमको मना नहीं
ता। अल्लाह न्याय पर चलने वालों को चाहता है। (८) अल्लाह
ई उनकी दोस्ती स मना करता है जो तुम से दीन के बारे में लड़े
र जिन्हों ने तुम को तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में
रों की मदद की और जो कोई ऐसों की दोस्ती रक्खे वो वही लोग
ालिम हैं। (९) ऐ ईमानवालों। जब तुम्हारे पास ईमानवाली औरतें
छोड़कर आवें तो उनको जाँचो अल्लाह उनके ईमान को खूब जानता
मगर तुम्हें मालूम हो कि यह ईमानवाली हैं तो उनको काफिरों के
त न फेरो। वह काफिरों को हलाल नहीं और न काफिर उन्हें हलाल
और जो उन काफिरों ने खर्च किया है उनको देदो और
। पर पाप नहीं कि उन औरतों से निकाह (ब्याह) करो जब
तुम उनको उनके मिहर (पति का करार स्त्री के लिये) दे दो

और तुम काफ़िर औरतों का निकाह न थाम रक्खो† और जो तुमने खर्च किया है माँग लो और उन काफ़िरों ने जो खर्च किया है वे भी माँगलें। यह अल्लाह का हुकम है जो तुम्हारे बीच फैसला करता है अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है। (१०) और अगर तुम्हारी औरतों में से काफ़िरों की तरफ कोई औरत निकल जावे फिर तुम काफ़िरों को खफ़ा होकर मारो (यानी लड़ाई करके लूटो तो लूट के माल में से) उनको जिनकी औरतें जाती रही हैं उतना माल दे दो जितना उन्होंने खर्च किया था और अल्लाह से डरो जिस पर ईमान लाये हो। (११) ऐ पैगम्बर जब तेरे पास मुसलमान औरतें आवें और इस पर तेरी चेली बनना चाहें कि किसी चीज को अल्लाह का साझी नहीं ठहरायेंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी (व्यभिचार) करेंगी और न लड़कियों को मार डालेंगी और न अपने हाथ पाँव के आगे कोई झूठ बनाकर खड़ा करेंगी और न अच्छे कामों में तुम्हारी बे हुक्मी करेंगी तो (इन शर्तों पर) तुम उनको चेली बना लिया करो और खुदा के सामने उनके लिये क्षमा की प्रार्थना करो और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। (१२) ऐ मुसलमानों ऐसे लोगों से दोस्ती न करो जिनपर खुदा का कोप है। यह तो पिछले दिन से ऐसे आशा तोड़ बैठे हैं जैसे काफ़िर कब वालों (के जी उठने) से निराश हैं। (१३) [रुकू २]

सूरे सफ़्फ़।

मदीने में उतरी इसमें १४ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जो कुछ आसमानों में और जो कुछ जमीन में है अल्लाह की पाकी बोलने में लगे हैं

† यानी जो औरतें मुसलमान नहीं उनको अपने अधिकार में न रक्खो इनको उनका मिहर देकर अलग कर दो ताकि वह जिस से चाहें अपना ब्याह कर लें।

और वही जबरदस्त हिक्मत वाला है (१) हे ईमानवालों क्यों मुँह से कहते हो जिसको तुम नहीं करते। (२) अल्लाह को सख़्त ना पसंद है कि कहो और करो नहीं (३) बेशक ख़ुदा उन लोगों को प्यार करता है जो उसकी राह में कतार बाँधकर लड़ते हैं। वह गोया एक दीवार है जिसमें सीसा पिला दिया गया है। (४) और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि भाइयों मुझे क्यों सताते हो हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ ख़ुदा का भेजा हुआ हूँ तो जब यह टेढ़े हो गये, ख़ुदा ने उनके दिल टेढ़े कर दिये और ख़ुदा ये हुक्म लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (५) और जब मरीयम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इसराईल के बेटों मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ। तौरात जो मुझसे पहिले है उसकी सचाई करता हूँ और एक पैगम्बर की ख़ुशख़बरी देता हूँ जो मेरे बाद आयगा उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह खुली निशानियाँ लेकर आया वह बोले कि यह तो साफ़ जादू है। (६) और उससे बढ़कर कौन जालिम है जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा हालांकि वह इस्लाम (मुसलमानीयत) की तरफ बुलाया जाये और ख़ुदा जालिम लोगों को हिदायत नहीं करता। (७) अल्लाह की रोशनी‡ मुँह से बुझा देना चाहते हैं और अल्लाह को अपनी रोशनी पूरी करनी है हालांकि काफ़िरों को यह बुरा ही लगे। (८) [रुकू १]

वही है जिसने अपना पैगम्बर शिक्षा और सच्चा मत (दीन) देकर भेजा ताकि उसको तमाम दीनों पर जय दे और शिर्क करने वाले को भले ही बुरा लगे। (९) ऐ ईमान वालों मैं तुमको ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुमको दु:खदाई सजा से बचा दे। (१०) ख़ुदा और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और ख़ुदा की राह में अपने माल और अपनी जानों से कोशिश करो यह तुम्हारे लिये भला है अगर्चि समझ हो। (११) वह तुम को तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। हमेशगी

‡ रोशनी का अर्थ है मुहम्मद साहब या उनका लाया हुआ धर्म इस्लाम।

के बागों में अच्छे मकान हैं यह ही बड़ी कामयाबी है। (१२) एक और चीज जिसे तुम पसंद करोगे यानी खुदा की तरफ से मदद और थोड़े ही दिनों में एक जीत और ईमान वालों को खुश खबरी सुना दे। (१३) और ईमानवालो! खुदा की मदद करने वाले हो जाओ जैसे मरीयम के लड़के ईसा ने हव्वारियों से कहा था कि अल्लाह की तरफ मेरा कौन मददगार है फिर इसराईल की संतान में से एक गिरोह ईमान लाया और एक ने इन्कारी की। तो जो लोग ईमान लाये थे हमने उनको उनके दुश्मनों के मुकाबिले में मदद दी और उनकी जीत हुई। (१४) [रुकू २]

सूरे जुमा।

मदीने में उतरी इसमें ११ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है अल्लाह की पाकी बोलने में लगे हैं जो बादशाह जोरावर हिकमत वाला है। (१) वही है जिसने मूर्खों में उनमें का एक पैगम्बर भेजा कि वह उनको उसकी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाये और उनको पाक करे और उनको किताब और हिकमत (तदबीरें) सिखायें हालांकि इससे पहिले वह जाहिरा गुमराही में थे। (२) और दूसरों में (यानी अजम के लोगों में यानी यह पैगम्बर अजम के लोगों में भी है।) जो अभी उन अरबवालों में नहीं मिले और वह बली हिकमत वाला है। (३) यह खुदा की कृपा है जिसे चाहे दवे और अल्लाह की कृपा बड़ी है। (४) (यहूदियों ने) जिन लोगों पर तौरात लादी गई। फिर उन्होंने उसको नहीं उठाया तो उनकी मिसाल किताब लादे गधे जैसी है। जो लोग खुदा की आयतों को झुठलाते हैं उनकी मिसाल बड़ी बुरी है और खुदा जालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (५) तो कह कि ऐ यहूद अगर तुमको दावा है कि तमाम आदमियों में से

तुम्हीं ख़ुदा के दोस्त हो तो अगर तुम सच कहते हो तो मौत को मनाओ। (६) उन कामों के कारण से जो अपने हाथों कर चुके हैं यह कभी मौत को न मनायेंगे और अल्लाह अन्यायियों को जानता है। (७) तो कह कि मौत जिससे तुम भागते हो वह ज़रूर तुम्हारे सामने आवेगी। फिर तुम गुप्त और प्रत्यक्ष जानने वाले ख़ुदा की तरफ़ लौटाये जाओगे और वह तुमको ज़रूर काम बतायेगा। (८) [रुकू १]

ऐ ईमानवालो जब (शुक्र) के दिन नमाज़ के लिए अज़ां दी जावे तो तुम अल्लाह की याद को दौड़ो और बेचना छोड़ दो अगर तुमको समझ है तो यह तुम्हारे लिये भला है। (९) फिर जब नमाज़ ख़त्म हो जावे तो अपनी अपनी राह लो और ख़ुदा की याद में लग जाओ और अधिकता से ख़ुदा की याद करते रहो ताकि तुम छुटकारा पाओ। (१०) और जब यह तिजारत या खेल देखते हैं तो उसकी तरफ़ दौड़ जाते हैं और तुमको खड़ा छोड़ देते हैं तो कह कि जो कुछ ख़ुदा के यहाँ है वह खेल और तिजारत से भला है और अल्लाह रोज़ी देनेवालों में सबसे अच्छा है। (११) [रुकू २]

★★★★

सूरे मुनाफ़िक़ून।

मदीने में उतरी इस में ११ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जब तेरे पास मुनाफ़िक़ आते हैं तो यह कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि तू बेशक ख़ुदा का पैग़म्बर है। और ख़ुदा जानता है कि तू उसका पैग़म्बर है। मगर ख़ुदा गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ बेशक झूठे हैं। (१) यह अपनी क़समों को ढाल बनाते हैं और लोगों को ख़ुदा की राह से रोकते हैं। य लोग बुरे काम करते हैं। (२) यह इसलिए कि जब वह

ईमान लाये पीछे फिर काफ़िर हो गये हैं सो उनके दिलों पर मुहर कर दी गई है और वह समझते नहीं। (३) और जब तू उनको देखता है तो तुमको उनके शरीर अच्छे मालूम होते हैं और अगर वह बातें करते हैं तो उनकी बातों को सुनता है। वह गाया लकड़ी के कुन्दे हैं जो दीवार से लगे हुए हैं। जानते हैं कि हर एक धक्का उन्हीं पर आई। यह दुश्मन हैं बस इनसे बच। खुदा उनको मेंट दे यह किधर को फिरे जा रहे हैं। (४) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ खुदा के पैगम्बर तुम्हारे लिए माफी माँगें तो अपने सिर मरोड़ते हैं और तू उनको देखेगा कि रोकते और गरूर करते हैं। (५) उनके लिए बराबर है चाहे उनके लिए क्षमा माग या न माग खुदा उनको कदापि क्षमा न करेगा बेशक खुदा ये हुक्म लोगों को राह नहीं देता। (६) यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग खुदा के रसूल के पास रहते हैं उनपर खर्च न करो यहाँ तक कि खण्ड खण्ड हो जावें और आसमान और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं। मगर मुनाफिक नहीं समझते। (७) कहते हैं अगर हम मदीने फिर गये तो जिनका जोर है वहाँ से वह ज़लील लोगों को जरूर निकाल देंगे और जोर अल्लाह का, पैगम्बर का और ईमानवालों का है। लेकिन मुनाफ़िक नहीं समझते। (८) [रुकू १]

ऐ ईमान वालो तुमको तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान अल्लाह की याद से गाफ़िल न करे और जो कोई करेगा तो वही टोटे में रहेगा। (९) और जो कुछ हमने तुमको दिया है उसमें से खर्च करो पहिले इससे कि तुममें से किसी की मौत आ जावे और वह कहे कि ऐ मेरे परवरदिगार तू ने मुझको थोड़े दिन और क्यों न ढील दिया कि मैं खैरात करता और नेक लोगों में से होता। (१०) और जब किसी जीव का काल आजावेगा तो खुदा उसको हरगिज़ न ढीलेगा और खुदा तुम्हारे कर्मों की खबर रखता है। (११) [रुकू २]

सूरे तग़ाबुन ।

मदीने में उतरी इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है । जो कुछ आसमानों में है और जमीन में है सब अल्लाह की पाकी बोलने में लगे हैं उसीका राज्य है और वह हर चीज पर शक्तिमान है । (१) वही है जिसने तुमको पैदा किया । फिर कोई तुम में इन्कारी है और कोइ ईमानदार और जो करते हो अल्लाह देखता है । (२) आसमान और जमीन को तदबीर से बनाया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाई । और तुम्हारी अच्छी सूरतें खींचीं और उसीकी तरफ लौटकर जाना है । (३) वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है और वह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो और खुदा दिलों की बातें जानता है । (४) क्या तुम्हारे पास इन लोगों की खबर नहीं पहुँची जिन्होंने इससे पहिले इन्कार किया था और अपने कर्मों के बवाल का मज़ा चक्खा और उनको दुःखदाई सजा होनी है । (५) इसलिये कि उनके पास पैगम्बर खुली दलीलें लेकर आये और बोले कि क्या आदमी हमें राह दिखायेंगे और उन्होंने (पैगम्बर को) न माना और मुँह फेरा और अल्लाह ने परवाह न की और खुदा बेपरवाह तारीफ के लायक (योग्य) है । (६) काफिर दावा करते हैं कि वे उठाए न जायेंगे । तू कह दो । मुझे अपने परवरदिगार की कसम तुम उठाये जाओगे । फिर तुम्हें बताया जायेगा जो तुम करते थे और यह अल्लाह पर आसान है । (७) तो अल्लाह और उसके पगम्बर पर ईमान लाओ और उस प्रकाश पर जो हमने उतारा है और जो तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है । (८) इकट्ठा करने के दिन, जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा वह दिन हार जीत का है और जो कोई खुदा पर ईमान लाये और नेक काम करे तो वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर करेगा और उसको बैकुण्ठ में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं उसमें वह हमेशा

रहेंगे यह बड़ी कामयाबी है। (६) और जो काफिर हुए और हमारी आयतों को झुठलाया वह नरकवासी हैं। उसमें हमेशा रहेंगे और वह बुरी जगह है। (१०) [रुकू १]

अल्लाह के हुक्म बिना कोई आफत नहीं आती और जो कोई अल्लाह पर विश्वास करे खुदा उसके दिलको ठिकाने से लगाये रखेगा और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (११) और अल्लाह की और पैगम्बर की आज्ञा मानो, फिर अगर तुम मुँह मोड़ो तो पैगम्बर को काम तो साफ-साफ पहुँचा देना है। (१२) अल्लाह है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं और ईमानवालों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (१३) ऐ ईमानवालो तुम्हारी कोई-कोई बीबियाँ और संतान तुम्हारे दुश्मन हैं तो उनसे बचते रहो§ और जो क्षमा कर दरगुजर करो और बख्श दो तो खुदा भी बख्शने वाला और रहम करने वाला है। (१४) तुम्हारा धन और संतान तुम्हारी जाँच के लिए है और खुदा के यहाँ बड़ा फल है। (१५) तो अल्लाह से डरो जितना डर सको और सुनो और मानो और अपने भले को खर्च करो और जो कोई अपने जी के लालच से बचा वही लोग मुराद पावेंगे। (१६) अगर तुम अल्लाह को खुशदिली से उधार दो तो वह तुम को उसका दूना करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और अल्लाह कदर जानने वाला दयालु है। (१७) गुप्त और प्रत्यक्ष का जानने वाला बली हिकमत-वाला है। (१८) [रुकू २]

---

§ हिजरत के बाद मुसलमानों का एक दस्ता मदीना जाना चाहता था। उनके बच्चे और बीबियाँ रोने लगीं और उनको रुक जाना पड़ा। यह आयतें उन्हीं के लिए उतरीं।

सूरे तलाक ।

मदीने में उतरी इसमे १२ आयतें और २ रुकू हैं ॥

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। ऐ पैगम्बर जब तुम बीबियों को तलाक देना चाहते हो तो उनको उनकी इद्दत‡ के शुरू में तलाक दो और (तलाक के बाद ही से) इद्दत गिनने लगो और खुदा से जो तुम्हारा पालनकर्त्ता है डरत रहो उन्हें उनके घरों से न निकालो और वह खुद न निकलें। हाँ खुल्लमखुल्ला बेशर्मी का काम कर बैठें तो तो इनको घर से निकाल दो। यह अल्लाह की बाँधी हद हैं और जिस मनुष्य ने अल्लाह की हदों से कदम बाहर रक्खा उसने अपने ऊपर जुल्म किया। कौन जाने शायद अल्लाह तलाक के बाद कोई सूरत पैदा कर दे। (१) फिर जब वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो दस्तूर के मुआफिक उनको रक्खो या दस्तूर के बमूजिब उनको बिदा कर दो और अपने में से दो विश्वसनीय आदमियों को गवाह कर लो और खुदा के आगे गवाही पर कायम रहो। यह उसको शिक्षा की जाती है जो खुदा पर और कयामत पर ईमान रक्खे और जो कोई खुदा से डरा तो वह उसके लिये राह निकाल देगा और उसे ऐसी जगह से रोजी देगा जहाँ से उनको ख्याल भी न हो। (२) और जो मनुष्य खुदा पर भरोसा रक्खेगा तो खुदा उसको काफी है। अल्लाह अपना काम पूरा कर लेता है। अल्लाह ने हर चीज का अन्दाजा ठहरा रक्खा है (३) और तुम्हारी औरतों में से जिनकी रजस्वला (हैज में) होने की उम्मेद नहीं अगर तुमको सन्देह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और जिन औरतों को रजस्वला होने की नौबत नहीं आई (यही तीन माह उनकी इद्दत) और गर्भवती स्त्रियों उनकी इद्दत बच्चा जनने तक और जो खुदा से डरता रहेगा खुदा उसके काम आसान करेगा। (४) यह खुदा का हुक्म है जो उसने

‡ इद्दत उस मुद्दत को कहते हैं जिसमें तलाक दी हुई औरत या जिसका पति मर गया है ब्याह नहीं कर सकती।

तुम पर उतारा है और जो कोई खुदा से डरे तो वह उसकी बुराइयों को उससे दूर कर देगा। और उसको बड़ा फल देगा। (५) तलाक दी हुई औरतों को अपनी सामर्थ्य के मुताबिक वहीं रक्खो जहाँ तुम रहो और उनपर सख्ती करने के लिये दुःख न दो और अगर गर्भवती हों तो बच्चा जनने तक उनका खर्च उठाते रहो और अगर वह तुम्हारे लिए दूध पिलायें तो उनको उनकी दूध पिलाई दो और आपस की सलाह से दस्तूर के मुवाफिक काम करो और अगर आपस में जिद करोगे तो दूसरी औरत उसको दूध पिलायेगी। (६) सामर्थ्य वाला अपनी सामर्थ्य के अनुसार खर्च करे और जिसकी रोजी नपी तुली हो तो जैसा उसको खुदा ने दिया है उसी के मुताबिक खर्च करे और अल्लाह किसी को कष्ट देना नहीं चाहता मगर जितना उसने उसे दिया। अल्लाह सख्ती के बाद आसान कर देगा। (७) [रुकू १]

और कितनी बस्तियाँ थीं कि उन्होंने अपने परवरदिगार के हुक्म से और उसके पैगम्बर के हुक्म से सिर उठाया पर अनदेखी तो हमने उनसे सख्त हिसाब लिया और उनको आफत डाली। (८) तो उन्होंने अपने किये का मज़ा चक्खा और उनको परिणाम (अखीर) में घटा हुआ। (९) खुदा ने उनके लिए बुरी मार तैयार कर रक्खी है तो बुद्धिमानों! जो ईमान ला चुके हो खुदा से डरो। (१०) और अल्लाह ने तुम्हारी तरफ समझौती उतारी। पैगम्बर जो अल्लाह की खुली आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाता है ताकि जो लोग ईमान रखते और नेक काम करते हैं उनको अन्धेरे से निकाल कर रोशनी में लावे और जो कोई खुदा पर ईमान लाये और भले काम करे तो वह उसको बैकुण्ठ में दाखिल करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह हमेशा उन्हीं में रहेंगे। अल्लाह ने उसको अच्छी रोजी दी है। (११) खुदा वह है जिसने सात आसमानों को बनाया और उसी के मानिन्द ज़मीन भी। इन दोनों के बीच हुक्म उतरते रहते हैं ताकि तुम जानो कि खुदा हर चीज कर सकता है और अल्लाह के इल्म जानकारी में हर चीज समाई है। (१२) [रुकू २]

सूरे तहरीम।

मदीने में उतरी इसमें १२ आयतें और २ रुकू हैं।

ऐ पैगम्बर अपनी बीबियों को खुश करने के लिये तू अपने ऊपर उस† चीज को क्यों हराम करता है जो खुदा ने तेरे लिये हलाल की है और खुदा बख्शने वाला मिहर्बान है। (१) तुम लोगों के लिये खुदा ने तुम्हारी कसमों के तोड़ डालने का भी हुक्म रक्खा है और अल्लाह ही तुम्हारा मददगार और वह जानकार हिकमत वाला है। (२) और जब पैगम्बर ने अपनी बीबियों में से किसी से एक बात चुपके से कही और जब उसने उसकी खबर कर दी और खुदा ने उस पर इस बात को जाहिर कर दिया तो पैगम्बर ने कुछ कहा और कुछ टाल दिया। फिर जब वह उस बीबी को बता दिया तो वह बोली मुझको यह किसने बताया। वह बोला मुझको उस खबरदार जानने वाले ने बताया है। (३) अगर तुम दोनो (हिफसह और आयशा) अल्लाह की तरफ तोबा करो क्योंकि तुम दोनों के दिल टेढ़े हो गये हैं और जो तुम दोनों पैगम्बरों पर चढ़ाई करोगी तो अल्लाह और जिब्राईल और नेक ईमान वाले उसके दोस्त हैं और उसके बाद फिरिश्ते उसके मददगार हैं। (४) अगर पैगम्बर तुम सब को तलाक (छोड़) दे तो अजब नहीं कि उसका परवरदिगार तुम्हारे बदले उसको तुमसे अच्छी बीबियाँ दे। जो ईमानवाली, हुक्म उठाने वाली, तोबा करने वाली, नमाज में खड़ी होने वाली, बन्दगी बजा लाने वाली, रोजह रखने वाली, व्याही हुई

---

† कहते हैं कि एक दिन मुहम्मद साहब ने अपनी बीबी जैनब के यहाँ शहद खा लिया था। दूसरी बीबियों ने जिन का नाम आइशा और हफ्सा था, आप से कहा कि आप के मुँह से दुर्गन्ध आती है इस पर आप ने कहा कि मैं अब भविष्य में कभी शहद न खाऊँगा। कुछ लोग कहते हैं कि बीबी हफ्सा को खुश करने के लिए आपने बीबी मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया था। इस पर यह आयतें उतरीं।

(विवाहिता) और क्वारी हों। (५) हे ईमानवालों। अपने को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी है और पत्थर हैं। जिस पर कठोर हृदय और बलवान फिरिश्ते मुकर्रर हैं कि जो कुछ ख़ुदा उनको हुक्म करता है उसमे वे हुक्मी नहीं करते और जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है करते हैं। (६) ऐ काफ़िरों आज के दिन कुछ उज्र न करो यही बदला पाओगे जो तुम करते हो। (७) [रुकू १]

ऐ ईमानवालों। ख़ुदा के सामने साफ दिल से तोबा करो शायद तुम्हारा परवरदिगार तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर दे और तुमको बागों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उस दिन ख़ुदा नबी को और जो उसके साथ इमान लाये उनको ज़लील न करेगा उनकी रोशनी (तेज) उनके आगे और दाहिनी ओर दौड़ती होगी और वह कहेंगे ऐ हमारे परवरदिगार। हमारी रोशनी को हमारे लिये पूरा कर दे और हम को बख़्श दे। बेशक तू हर चीज पर शक्तिमान है। (८) ऐ पैगम्बर काफ़िरों से और मुनाफ़िकों से जिहाद कर और उन पर सख़्ती कर उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरी जगह है। (ख़ुदा ने) काफ़िरों के लिए नूह§ की बीबी और लूत की बीबी की मिसाल बयान की है। (९) दोना हमारे दो भले सेवकों के अधिकार में थीं। मगर उन दोनो ने उनको दग़ा दिया। पस वह दोनो सेवक (बन्दे) उन औरतों से ख़ुदा की सजा न उठा सके और उनसे कहा गया कि तुम दोनो दाख़िल होने वालों के साथ नरक की आग में दाख़िल हो। (१०) और ख़ुदा ने ईमानवालों के लिए फ़िरऔन की मिसाल बयान की है। जब उस औरत ने कहा कि ऐ मेरे† परवर्दिगार मेरे लिए बैकुण्ठ में अपने पास एक घर बना और मुझको फ़िरऔन

§ नूह और लूत की बीबियाँ काफ़िरों में से थीं इस लिए ईश्वर के कोप से न बच सकीं।

† फ़िरऔन की स्त्री इन्कारियों में से नहीं थी। फ़िरऔन ने उस को बहुत दुख दिया फिर भी वह ईमान पर जमी रही।

और उसके काम से बचा निकाल और ज़ालिम से बचा निकाल। (११) और इमरान की बेटी जिसने अपनी शिहवत की जगह रोकी और हमने उसमें अपनी रूह फूँक दी और वह अपने परवर्दिगार की बातें और उसकी किताबों को मानती थी और ख़ुदा की आज्ञाकारिणी (हुक्म बरदार) थी (१२) [रुकू २]।

—⊃❀⊂—
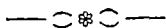
उनतीसवाँ पारा (तबारकल्लज़ी)

—०—

सूरे मुल्क

मक्के में उतरी इसमें ३० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। उसकी बड़ी बरकत है जिसके हाथ में राज्य है। और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है। (१) जिसने मरना, जीना बनाया ताकि तुमको जाँचे कि तुममें कौन अच्छा काम करता है और वह बख़्शी क्षमा करने वाला है। (२) जिसने तर ऊपर सात आसमान बनाए। भला तुमको दयावान की कारीगरी में कोई कसर दिखाई देती है फिर एक निगाह दौड़ा कहीं दरार दिखाई देती है। (३) फिर दुबारा निगाह दौड़ा तेरी नज़र खिसयानी होकर थकी हारी तेरी तरफ उल्टी लौट आवेगी। (४) और हमने पहिले आसमान को दीपकों से सजा रक्खा है और हमने इन (दीपकों) को शैतानों के लिए मार की चीज़ बनाई है और हमने उनके लिए नरक की सज़ा तैयार कर रक्खी है। (५) और जो लोग अपने परवर्दिगार को नहीं मानते उनके लिए नरक की सज़ा है और बुरी जगह है। (६) जब (वे) उसमें डाले जावेंगे तो वह उसका दहाड़ना (चिल्लाना)

सुनेंगे और यह भड़क रही होगी (७) कोई दममें मारे जोश के फट पड़ेगी। जब-जब कोई गिरोह उसमें डाला जायगा तो जो उस पर तैनात हैं उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास डराने वाला नहीं आया। (८) वह कहेंगे हाँ डराने वाला तो हमारे पास आया था मगर हमने झुठलाया और कहा खुदा ने तो कोई चीज नहीं उतारी। तुम बड़ी भटक में पड़े हो (९) और कहेंगे अगर हमने सुना और समझा होता तो नरकवासियों में न होते। (१०) तो उन्होंने अपना पाप मान लिया पस नरकवासियों पर लानत है। (११) जो लोग बे देखे अपने परवर्दिगार से डरते हैं उनके लिए बख्शीश और बड़े फल हैं। (१२) और तुम अपनी बात चुपके से कहो या पुकार कर कहो वह दिलों के भेद को जानता है। (१३) भला वह न जाने जिसने बनाया और वही बारीक बात को देखने वाला खबरदार है। (१४) [रुकू १]

वही है जिसने तुम्हारे लिये जमीन को (नरम) कर दिया। उसकी चलने को जगहों पर चलो और उसका दिया हुआ खाओ। और फिर उठकर उसी की तरफ चलना है। (१५) जो आसमान में है क्या तुम उससे नहीं डरते कि जमीन में तुमको धंसा दें और वह झकोरे मारा करे। (१६) क्या तुम उससे निडर हो गये जो आसमान में है कि तुम पर पत्थर बरसायें तो तुम को मालूम हो जायगा कि हमारा डराना कैसा हुआ। (१७) और जो लोग इनसे पहिले हो गये हैं उन्होंने भी हमारे (पैगम्बरों) को झुठलाया था तो हमारी ना खुशी कैसी हुई। (१८) क्या इन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो उनके ऊपर पर खोले और समेटे हुये उड़ते हैं दयावान ही उनको थामे रहता है वह हर चीज को देखता है। (१९) भला दयावान के सिवाय ऐसा कौन है जो तुम्हारा लश्कर बनकर तुम्हारी मदद करे निरे धोके में हैं। (२०) अगर खुदा अपनी रोजी रोकले तो भला ऐसा कौन है जो तुम को रोजी पहुँचा दे मगर काफिर तो सरकशी और भागने पर अड़े बैठे हैं। (२१) तो क्या जो मनुष्य अपना मुँह औंधाये हुए चले वह ज्यादा राह पर है या वह मनुष्य जो सीधी राह पर चलता है। (२२) (ऐ पैगम्बर)

कहो कि वही है जिसने तुमको पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आँखें और दिल बनाये तुम थोड़ा ही शुक्र करते हो। (२३) ऐ पैगम्बर कहो कि वही है जिसने तुमको जमीन में फैला रक्खा है और उसी के सामने जमा किये जावोगे। (२४) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ यह वादा कब होगा। (२५) (ऐ पैगम्बर) जवाब दो कि इसका इल्म तो खुदा ही को है और मैं तो साफ तौर (से) डराने वाला हूँ। (२६) फिर जब देखेंगे कि वह वादा (कयामत) पास आ पहुँचा तो काफिरों की शक्लें बिगड़ जायगी और कहा जायगा यही वह (सजा) है जो तुम माँगा करते थे। (२७) (ऐ पैगम्बर) कहो अगर अल्लाह मुझको और जो लोग मेरे साथ हैं उनको मार डाले या हमारे हाल पर कृपा करे तो कोई है जो काफिरों को दुःखदाई सजा से शरण दे। (२८) (ऐ पैगम्बर) कहो कि वही (खुदा) कृपा करने वाला है हम उसी पर ईमान लाये हैं और उसी पर हमारा भरोसा है तुम को मालूम हो जायगा कि कौन प्रत्यक्ष गुमराही में था। (२९) कहो देखो तो तुम्हारा पानी सूख जावे तो कौन है जो तुम को बहता हुआ पानी ला देगा। (३०) [रुकू २]
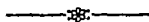
सूरे क़लम।

मक्के में उतरी इसमें ५२ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। नून—क़लम की और जो कुछ यह लिखते हैं उसकी कसम। (१) तू अपने परवर दिगार की कृपा से पागल नहीं है‡। (२) और तुमको अटूट फल है। (३) और तू बड़ी प्रकृतिवाला है। (४) सो अब तू देखेगा

‡ वलीद बिन मुगीरा मुहम्मद साहब को पागल कहता था। इन आयतों में उस को झूठा बताया गया है।

और वे भी देख लेंगे। (५) कि तुम में से अब कौन विचल रहा है। (६) (ऐ पैग़म्बर) बेशक तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को खूब जानता है जो उसकी राह से भटके हुए हैं और वही उनको भी खूब जानता है जो सीधी राह पर हैं। (७) सो तू झुठलानेवालों का कहा न मान। (८) ये चाहते हैं किसी तरह तू ढीला हो तो ये भी ढीले हों। (९) और किसी क़स्में खाने वाले नीच के कहे में मत आ जाना। (१०) और न किसी चुग़लख़ोर की जो चुग़ली खाता फिरे। (११) और अच्छे कामों से रोकता है ज्यादती करने वाला पापी है। (१२) परन्तु इसके बाद बदनाम। (१३) इस लिए कि धन सन्तान रखता है। (१४) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि यह अगलों की कहानियाँ हैं। (१५) हम उसकी नाक पर दाग़ देंगे। (१६) हमने उनको जाँचा है जैसा हमने बाग़वालों को जाँचा था कि जब उन्होंने क़सम खाई कि वह ज़रूर सुबह होते ही उसके फल तोड़ेंगे। (१७) और अल्लाह ने चाहा (इन्शा अल्लाह) नहीं कहा था। (१८) फिर तेरे परवरदिगार की तरफ़ से एक घूमनेवाला उस बाग़ पर घूमने गया और वह सो रहे थे। (१९) और सुबह होते होते वह (बाग़) ऐसा रह गया जैसे कोई सारे फल तोड़ कर ले गया है। (२०) फिर सुबह होते ही आपस में बोले। (२१) अगर तुमको तोड़ना है तो सवेरे अपने खेत पर चलो। (२२) तो वह चले और चुपके-चुपके बातें करते जाते थे। (२३) कि आज के दिन वहाँ कोई फ़क़ीर तुम्हारे पास न आयगा। (२४) और सवेरे ज़ोर से लपकते चले। (२५) मगर जब वहाँ देखा तो बोले हम सचमुच भटक गये हैं। (२६) नहीं हमारा भाग्य फूटा। (२७) उनमें से जो भला था कहने लगा। क्या मैं तुमसे नहीं कहा करता था कि ख़ुदा को पाकी से क्यों नहीं याद करते। (२८) वह बोले कि हमारा परवरदिगार पाक है बेशक हमहीं अपराधी थे। (२९) सो आपस में से एक दूसरे को दोष देने लगे। (३०) बोले हम पर शोक हम सरकश थे। (३१) कुछ आश्चर्य नहीं कि हमारा परवरदिगार उसके बदले हमको उससे अच्छा दे। हम अपने

परवरदिगार से आरज़ू रखते हैं। (३२) इस प्रकार आफ़त आती है और आख़िरत की आफ़त तो सब से बड़ी है अगर उसको समझ होती। (३३) [रुकू १]

परहेज़गारों के लिये उनके परवरदिगार के यहाँ नियामतों के बाग़ हैं। (३४) तो क्या हम आज्ञाकारियों को पापियों के बराबर कर देंगे। (३५) तुम को क्या हुआ कैसी बात ठहराते हो। (३६) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसको तुम पढ़ते हो। (३७) कि वहाँ तुमको मिलेगा जो तुमको अच्छा लगेगा। (३८) क्या तुमने हमसे क़स्में ले रक्खी हैं जो क़यामत के दिन तक चली जायेंगी कि तुम्हारे लिए वही मिलेगा जो तुम ठहराओगे। (३९) उनसे पूछ कि तुममें से कौन इसका ज़िम्मा लेता है। (४०) या इन्होंने शरीक ठहरा रक्खे हैं पस अगर सच्चे हों तो अपने शरीकों को ला हाज़िर करें। (४१) जिस दिन पर्दा उठा दिया जायगा और उनको सिजदे (दण्डवत् करने) के लिये बुलाया जायगा वह सिजदह न कर सकेंगे। (४२) उनकी आँखें नीची होंगी ज़िल्लत उनके चेहरों पर छागई होगी और जब भले चंगे थे सिजदे के लिये बुलाये जाते थे। (४३) अब मुझे और इस (क़ुरान) के झुठलाने वाले को छोड़। हम उन्हें दर्जा बदर्जा ऐसे नीचे उतारेंगे कि वह न जानें। (४४) और उनको ढील देता चला आ रहा हूँ बेशक हमारा दाँव पक्का है। (४५) क्या तू उनसे नेग (मज़दूरी) माँगता है जो वह जुरमाने (चट्टी) के बोझ से दबे जाते हैं। (४६) क्या वह ग़ैब की (गुप्त) बात जानते हैं और उसको लिख रखते हैं। (४७) अपने परवर्दिगार के हुक्म के लिए ठहरा रह और मछली वाले (यूनिस) की तरह न हो जिसने ग़ुस्से में दुआ की। (४८) अगर तेरे परवर्दिगार की कृपा उसको न सम्हालती तो वह चटियल मैदान में फेंक दिया गया होता। (४९) फिर उसको उसके परवर्दिगार ने आनन्दित किया और नेकों में कर दिया (५०) और क़रीब है कि काफ़िर अपनी निगाहों† से

---

† यानी ऐसा घूर घूर कर देखते हैं कि तुम डर जाओ और क़ुरान सुनाना बन्द करदो।

(ऐ मोहम्मद) तुझे डिगादें जबकि यह कुरान सुनते और कहते हैं कि यह तो दीवाना है। (५१) और यह तो संसार के लिये सिर्फ शिक्षा है। (५२) [रुकू २]

—— ❀ ——
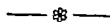
सूरे हाक्का

मक्के में उतरी इसमें ५२ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। होनहार बात। (१) होनहार बात क्या चीज है। (२) और तूने क्या समझा होने वाली बात क्या चीज है। (३) समूद और आद ने कयामत को झुठलाया। (४) सो समूद तो कड़क से मार डाले गए। (५) और आद रहे सो सख्त हवा के सर्राटे से मार डाले गए। (६) उसने उस (हवा) को सात रात और आठ दिन लगातार उन पर चला रक्खा था। फिर तू उन लोगों को गिरा हुआ देखता गोया कि वह खजूर की खोखली लकड़ियाँ हैं (७) सो क्या तू इनमें से किसी को भी बाकी देखता है। (८) और फिरऔन और जो लोग उससे पहले थे। और उल्टी हुई बस्तियों के रहने वाले सब पापी थे। (९) फिर परवर्दिगार के पैगम्बर का हुक्म न माना फिर उनको बड़ी पकड़ ने पकड़ा। (१०) जब पानी का तूफान (नूह के वक्त में) आया तो हम्हीं ने तुमको सवार कर लिया था। (११) ताकि हम उसको तुम्हारे लिए एक यादगार बनायें और याद रखने वाले कान उसको याद रक्खें। (१२) फिर जब सूर (नरसिंहा) एक बार फूँका जायगा। (१३) और जमीन और पहाड़ उठाये जाँयगे और एकदम तोड़े जाँयगे। (१४) तो होने वाली उस दिन हो जायगी। (१५) और आसमान फट जायगा और वह उस दिन सुस्त हो जायगा। (१६) और फिरिश्ते किनारों पर होंगे और उस दिन तुम्हारे परवर्दिगार

के तख्त को आठ फ़िरिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे। (१७) उस दिन तुम सामने लाये जाओगे और तुम्हारी बात छिपी न रहेगी। (१८) सो जिसकी किताब उसके दाहिने हाथ में दीजावेगी वह कहेगा लो मेरा कर्मलेखा पढ़ो। (१६) मुझको यकीन था कि मेरा हिसाब मुझको मिलेगा। (२०) तो वह खुशी की जिन्दगी में होगा। (२१) ऊँचे बागों में। (२२) जिसके फल झुके होंगे। (२३) खाओ और पियो ब सबब उसके जो तुमने गुजरे दिनों में किया है (२४) और वह शख्स जिसको उसकी किताब बायें हाथ में दीजावेगी वह कहेगा अफ़सोस मुझको मेरा यह कर्मलेखा न मिला होता। (२५) और न मैं अपने इस हिसाब को जानता। (२६) अफ़सोस वहीं मेरा खातमा हुआ होता। (२७) मेरा माल मेरे काम न आया। (२८) मेरी बादशाही मुझसे जाती रही। (२६) इसको पकड़ो और इसके गले में तौक (कैदी सुतिया) डालो। (३०) फिर इसको नरक में ढकेल दो। (३१) और इस सत्तर हाथ लम्बी जंजीर से बाँध दो। (३२) वह अल्लाह पर जो सबसे बड़ा है यकीन नहीं लाता था। (३३) और न लोगों को गरीबों को खिलाने के लिए जोश दिलाता था। (३४) तो आज के दिन यहाँ उसका कोई दोस्त नहीं। (३५) और न खाना सिवाय ज़ख्मों के धोवन के। (३६) यह खाना सिर्फ पापी ही खावेंगे। (३७) [रुकू १]

जो कुछ तुम देखते हो मैं उसकी कसम खाता हूँ। (३८) और जो तुम नहीं देखते (उसकी भी) (३६) यह (कुरान) एक फ़िरिश्ते का कहा है। (४०) और यह कवि (शायर) का कहा नहीं तुम बहुत ही कम मानते हो। (४१) और न परियों वाले का कहा हुआ है तुम बहुत ही कम ध्यान करते हो। (४२) यह संसार के परवरदिगार का उतारा हुआ है। (४३) और अगर यह हम पर कोई बात बना लाता। (४४) तो हम उसका दाहिना हाथ पकड़ते। (४५) फिर उसकी गर्दन काट डालते। (४६) फिर तुम में इससे कोई रोकनेवाला नहीं। (४७) और यह डरने वालों के

लिये शिक्षा है। (४८) और हमको मालूम है कि तुम में कोई कोई झुठलाते हैं। (४९) और यह काफिरों के लिये पछतावा है§। (५०) और यह सचमुच ठीक है। (५१) अब अपने परवरदिगार के नाम की जो सबसे बड़ा है माला फेर। (५२) [रुकू २]

सूरे मआरिज

मक्के में उतरी इसमें ४४ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। एक पूँछने वाले ने उस सजा के बारे में जो होने वाली है पूँछा। (१) काफिर कोई उसको रोक नहीं सकता। (२) खुदा के मुकाबले में जो सीढ़ियों का (आसमान) मालिक है। (३) उनसे फिरिश्ते और रूह उसकी तरफ एक दिन में चढ़ते हैं और उसका अन्दाज ५० वर्ष का है। (४) पस तू अच्छी तरह संतोष कर। (५) वह उसे दूर देखते हैं। (६) और (हम) उसे करीब देखते हैं। (७) उस दिन आसमान पिघले ताँबे की तरह हो जावेगा। (८) और पहाड़ जैसी रँगी हुई ऊन। (९) और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। (१०) वह सब उन्हें दिखलाये जावेंगे पापी चाहेंगे उस दिन की सजा के बदले में अपने बेटे देदें। (११) और अपनी जोरू अपने भाई को। (१२) और अपने कुटुम्ब को जिसमें रहता था। (१३) और जितने जमीन पर हैं सारे (दे डालें) फिर आप को बचावें। (१४) सो वो टलना नहीं है वह लपटी आग है। (१५) मुँह की खाल खींचने वाली। (१६) वह, जिसने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा (उसको) पुकारती है। (१७) और जिसने माल जमा करके बरतन

§ यानी काफिर कयामत के दिन पछतायेंगे कि हम ने कुरान को खुदा का कलाम क्यों नहीं माना ताकि आज हम ईश्वर के कोप से बचे रहते।

में रक्खा। (१८) आदमी ये सब्र पैदा किया गया है। (१९) जब उसको बुराई लगती है तो घबड़ाता है। (२०) और जब भलाई पहुँचती है तो अपने तईं (अच्छे कामों से) रोक लेता है। (२१) मगर निमाज़ पढ़ने वाले। (२२) जो अपनी निमाज़ पर क़ायम हैं। (२३) और जिनके माल में हिस्सा ठहर रहा है। (२४) माँगनेवालों और बे माँगनेवालों के लिए। (२५) और जो इन्साफ के दिन का यक़ीन करते हैं। (२६) और जो अपने परवरदिगार की सजा से डरते हैं। (२७) उनके परवरदिगार की सजा से निडर न होना चाहिए। (२८) और जो अपनी शहवत की जगह (विषय इन्द्रियाँ) थामते हैं। (२९) मगर अपनी जोरुओं और बाँदियों से सो उन पर उलाहना नहीं। (३०) मगर जो लोग इसके अलावा और की ख्वाहिश करते हैं तो यह ज़ियादती करने वाले हैं। (३१) जो लोग अमानत और अपने अहद को निबाहते हैं। (३२) और जो लोग अपनी गवाहियों पर क़ायम हैं। (३३) और जो लोग अपनी निमाज़ की खबर रखते हैं। (३४) तो यही लोग इज्ज़त के साथ बैकुण्ठ में होंगे। (३५) [रुकू १]

काफिरों को क्या हो गया जो तेरे सामने दौड़ते आते हैं। (३६) दाहिने और बायें से गरोह गरोह होकर। (३७) क्या हर शख्स इनमें से चाहता है कि नियामत के बाग़ में दाखिल हों। (३८) हर्गिज़ नहीं हमने उन्हें उस चीज से पैदा किया जो यह जानते हैं। (३९) तो मैं पूरब और पश्चिम के परवरदिगार की क़सम खाता हूँ कि हम उस पर सामर्थ रखते हैं। (४०) इस बात पर कि उनसे बिहतर उनके बदले औरों को ले आयें और हम आजिज़ नहीं होने के। (४१) सो तू उन्हें छोड़ कि बातें बनावें और खेलें यहाँ तक कि उस दिन से मिलें जिसका वादा दिया गया है। (४२) जिस दिन क़ब्रों से दौड़ते निकलेंगे जैसे किसी निशाने पर दौड़े जाते हैं। (४३) ज़िल्लत के मारे निगाह नीची किये होंगे। यह वह दिन है जिस का उनसे वादा है। (४४) [रुकू २]

सूरे नूह

मक्के में उतरी इसमें २८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। हमने नूह को उसकी जाति की तरफ भेजा कि दु:खदाई सजा आने से पहिले अपनी जाति को डराये। (१) (उनसे) कहा भाइयों मैं उसको डर सुनाने आया हूँ। (२) कि खुदा की पूजा करो और उससे डरते रहो और मेरा कहा मानो। (३) तो वह तुम्हारे अपराध क्षमा करेगा और नियत समय तक तुमको मुहलत देगा। जब खुदा का नियत किया हुआ वक्त आयेगा तो यह टल नहीं सकता। शोक तुम समझते होते। (४) कहा ऐ परवरदिगार मैं ने अपनी जाति को रात दिन पुकारा (५) फिर मेरे बुलाने से और ज्यादा भागते ही रहे। (६) और जब मैंने उनको पुकारा कि तू उन्हें क्षमा करे उन्होंने अपने कानों में उँगलियाँ डालीं और अपने कपड़े लपेटे और जिद की और अकड़ बैठे। (७) फिर मैंने उनको पुकार कर बुलाया। (८) फिर मैंने उनको जाहिरा समझाया और गुप्त भी समझाया (९) फिर मैंने कहा कि अपने परवरदिगार से पापों की क्षमा माँगो। वह बख्शने वाला है। (१०) आसमान से तुम पर झड़ी लगाकर बरसायेगा। (११) और धन और सन्तान से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिए बाग उगायेगा और नहरें जारी करेगा। (१२) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह से बुजुर्गी की उम्मेद नहीं रखते। (१३) उसने तुमको तरह-तरह का बनाया। (१४) क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने कैसे तह ऊपर सात आसमान बनाये। (१५) और उनमें चन्द्रमा को उजेले के लिए और सूर्य को चिराग बनाया। (१६) और खुदाने तुम्हें जमीन से एक किस्म से उगाया। (१७) फिर तुम्हें जमीन मिला देगा और फिर तुमको निकाल खड़ा करेगा। (१८) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए जमीन को बिछौना बनाया है। (१९) कि उसमें खुले रास्तों से चलो। (२०) [रुकू १]

नूह ने कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार यह मुझसे नटखटी करते हैं और उनके कहे पर चलते हैं जिनको उनके धन और उनकी सन्तान ने टोटे में डाल रक्खा है। (२१) और उन्होंने बड़े बड़े फ़रेब किये। (२२) और बोले कि अपने पूजितों को न छोड़ो वद्‡ को और सोवा‡ को और यगूस‡ और ययूक़ और नस्र‡ को (२३) और यह बहुतेरों को गुमराह कर चुके हैं और ऐसा कर कि ज़ालिमों में गुमराही ही बढ़ती जावे। (२४) सो यह अपने ही पापों के कारण से डुबाये गये फिर नरक की आग में डाल दिये गये और उन्होंने ख़ुदा के मुकाबिले में किसी को मददगार न पाया। (२५) और नूह ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार दुनियाँ में काफ़िरों का कोई घर न छोड़। (२६) अगर तू उन्हें रहने देगा तो ये तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और इनसे जो सन्तान चलेगी वह भी कुकर्मी काफ़िर ही होगी। (२७) ऐ मेरे परवरदिगार मुझको और मेरे माँ बाप को और जो मनुष्य ईमान लाकर मेरे घर में आये उसको और ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों को क्षमा कर और ऐसा कर कि ज़ालिमों (अत्याचारियों) की तबाही बढ़ती चली जावे। (२८) [रुकू २]
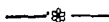
सूरे जिन्न।

मक्के में उतरी इसमें २८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहम वाला मिहर्बान है। कह दे कि मुझको हुक्म आया है कि जिन्नों के कई लोग† (क़ुरान) सुन गये हैं और

---

‡ ये अरब की मूर्तियों के नाम हैं जो नूह के ज़माने में पूजी जाती थीं।

† कहा जाता है कि एक बार मुहम्मद साहब खजूर के एक बाग में क़ुरान पढ़ रहे थे कि कई जिन्न वहाँ आए और ईमान लाये और अपनी जाति वालों से जा कर इस की चर्चा की।

(उन्होंने) कहा हमने अजीब क़ुरान सुना। (१) जो ठीक बात की शिक्षा देता है और हम उस पर ईमान लाये और हम किसी को भी अपने परवरदिगार का शरीक न ठहरायेंगे। (२) और हमारे परवरदिगार की इज़्ज़त बहुत बड़ी है उसने न किसी को जोरू और न किसी को सन्तान बनाया। (३) और हममें कुछ मूर्ख हैं जो ख़ुदा पर बढ़ बढ़कर बातें बनाते हैं। (४) और हम ख्याल करते थे कि आदमी और जिन्न कोई ख़ुदा पर झूँठ नहीं बोल सकता। (५) और आदमियों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो जिन्नों में से कुछ लोगों की शरण लेते हैं और उन्होंने जिन्नों के घमण्ड को और भी बढ़ा दिया है। (६) और वह ख्याल करते थे जैसा तुम ख्याल करते थे कि ख़ुदा कभी किसी को पैग़म्बर बनाकर नहीं भेजता। (७) और हमने आसमान को टटोला तो उसको सख़्त चौकीदारों और अंगारों से भरा पाया। (८) और हम वहाँ बैठने की जगहों में बैठकर सुना करते थे फिर अब जो कोई सुनना चाहे अपने लिये आग का अंगारा पायगा। (९) और हम नहीं जानते कि ज़मीन के रहनेवालों को कुछ नुकसान पहुँचाना मंज़ूर है या उनके परवरदिगार ने उनके हक़ में भलाई करना विचारी है। (१०) और हम में कोई कोई नेक हैं और कोई-कोई और तरह के हैं। हमारे जुदे-जुदे फ़िर्के होते आये हैं। (११) और हमने समझ लिया कि न तो ज़मीन में ख़ुदा को हरा सकते हैं और न भाग कर उससे बच सकते हैं। (१२) और हमने जब राह की बात सुनी तो हम उसको मान गये पस जो मनुष्य अपने परवरदिगार पर ईमान लायेगा उसको न किसी नुकसान का भय होगा न अत्याचार (ज़ुल्म) का। (१३) और हममें कोई आज्ञाकारी हैं और कोई अत्याचारी हैं सो जो कोई हुक्म में आये उन्होंने सीधी राह ढूँढ निकाली। (१४) और जिन्होंने मुँह मोड़ा वह नरक के लक्कड़ बन गये। (१५) और यह कि अगर लोग सीधी राह पर रहते तो हम उन्हें पानी पिलाते। (१६) ताकि उनको उसमें जांचें और जो कोई अपने परवरदिगार की याद

से फिर गया तो वह उसको सख्त सजा में शामिल करेगा। (१७) और मसजिदें सब खुदा की हैं तो खुदा के साथ किसी को न पुकारो। (१८) और जब खुदा का बन्दा (मुहम्मद) खड़ा होकर उसको पुकारता है तो पास आकर ये उसको घेर लेते हैं। (१६) [रुकू १]

कह कि मैं तो अपने परवरदिगार को पुकारता हूँ और किसी को उसका शरीक नहीं करता। (२०) (ऐ पैगम्बर) कहो कि तुम्हारा नुक्सान या फायदा मेरे अधिकार में नहीं। (२१) (ऐ पैगम्बर) कहो मुझे अल्लाह के हाथ से कोई न बचायेगा। और मैं उस के सिवाय कोई रहने की जगह नहीं पाता। (२२) मगर (मेरा काम) खुदा के समाचारों का पहुँचा देना है और जो कोई अल्लाह का और उसके पैगम्बर का हुक्म न माने तो उसके लिए नरक की आग है जिसमें वह हमेशा रहेंगे। (२३) जब तक उसको न देख लें जिनका उनसे वादा किया जाता है तो उस वक्त जान लेंगे कि किसके मददगार कमज़ोर और गिनती में थोड़े हैं। (२४) (ऐ पैगम्बर) कहो कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज का तुमसे वादा हुआ वह नज़दीक है या मेरा परवरदिगार उसको देर में लायेगा। (२५) वह भेद का जानने वाला है और अपने भेद की खबर किसी को नहीं देता। (२६) मगर जिस पैगम्बर को पसंद कर लिया उसके आगे और पीछे चौकीदार चला आता है। (२७) ताकि वह जाने उसने उसके समाचार पहुँचा दिये और यूँ तो उसने उनके सब मामलों को हर प्रकार अपने अधिकार में कर रखा है और एक-एक चीज को गिन रखा है। (२८) [रुकू २]

सूरे मुज्जम्मिल

मक्के में उतरी इसमें २० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। ऐ चादर ओढ़े हुए (मुहम्मद) (१) रात को (निमाज के लिए) खड़े रहा कर

मगर थोड़ी देर। (२) आधी रात या उसमें थोड़ी कम कर। (३) या आधी से कुछ बढ़ा दिया कर। और कुरान को ठहर-ठहर कर पढ़ाकर। (४) अब हम तेरे ऊपर भारी बात डालेंगे। (५) रात का उठना (इन्द्रियों) के रोकने में बहुत अच्छा होता है और ठीक-ठीक दुआ माँगने में भी (६) दिन को तुझे बहुत काम रहता है। (७) और अपने परवरदिगार का नाम याद कर और सबको छोड़कर उसी की तरफ लग जा। (८) वही पूरब और पश्चिम का मालिक है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं पस उसी को काम सँभालने वाला बना। (९) और ये लोग जो कुछ कहते हैं उसका संतोष कर और खूबसूरती के साथ उन्हें छोड़ दे। (१०) और मुझको और झुठलाने वालों को जो आराम में रहे हैं छोड़ दे और उन्हें थोड़ी मुहलत दे। (११) हमारे पास बेड़ियाँ और आग का ढेर है। (१२) और खाना जो गले से न उतरे और दुखदाइ सजा है। (१३) जिस दिन जमीन और पहाड़ काँपने लगेंगे और पहाड़ भुरभुरे टीले हो जायेंगे। (१४) हमने तुम्हारी तरफ पैगम्बर भेजा है यह तुम पर गवाही देगा जैसा कि हमने फिरऔन के पास पैगम्बर भेजा था। (१५) मगर फिरऔन ने पैगम्बर से नट खटी की तो हमने उसको सख्त सजा में पकड़ा। (१६) फिर अगर उस दिन से इन्कारी रहे जो लड़कों को बूढ़ा कर देता है तुम क्योंकर बचोगे। (१७) उसे आसमान फट जायगा और उस (खुदा) का वादा हो जायगा। (१८) यह तो एक समझौता है—तो जो चाहे अपने परवरदिगार की राह ले। (१९) [रुकू १]

तेरा परवरदिगार जानता है कि तू दो तिहाई रात और आधी रात और तिहाई रात (नमाज को) उठता है और उनमें से जो तेरे साथ हैं एक गरोह उठता है और अल्लाह रात और दिनका अन्दाजा करता है वह जानता है कि तुम इसको निबाह न सकोगे। पस तुमपर मिहर्बान हुआ। अब कुरान में से जिस कदर आसान हो पढ़ो। खुदा जानता है कि तुममें कुछ बीमार होंगे और कुछ ऐसे जो दुनियाँ में खुदा की कृपा ढूँढते फिरेंगे

और कुछ ऐसे भी जो ख़ुदा की राह में लड़ाई करेंगे तो जो उसमें से आसान हो पढ़ो और निमाज़ पर कायम रहो और ज़कात दो और अल्लाह को ख़ुशदिली से कर्ज़ दे दिया करो और जो नेकी अपने लिए पहले से भेज दोगे उसको अल्लाह के यहाँ पाओगे। वह बहुत बढ़कर है और उसका फल भी बहुत बड़ा है और अल्लाह से अपने पापों की क्षमा माँगते रहो—अल्लाह बड़ा क्षमा करनेवाला कृपालु है। (२०) [रुकू २]

सूरे मुद्दस्सिर।

मक्के में उतरी इसमें ५६ आयतें और २ रुकू हैं॥

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। (ऐ पैग़म्बर वही यानी आयत के भय से जो) चादर ओढ़े हुए (हो)। (१) उठ और (लोगों को) डरा। (२) और अपने परवरदिगार की बड़ाई कर। (३) और अपने कपड़ों को पाक रख। (४) और नापाकी से अलग रह। (५) और ज़्यादा करने के लिए किसी पर अहसान न रख। (६) और अपने परवरदिगार की राह देख। (७) जब सूर (नरसिंहा) फूँका जायगा। (८) तो वह दिन काफ़िरों के लिए ऐसा कठिन होगा। (९) कि उसमें आसानी न होगी। (१०) मुझे और उस शख़्स को जिसे मैंने अकेला पैदा किया छोड़ दो। (११) और मैंने उसको बहुत माल दिया। (१२) और लड़के जो उसके सामने हाज़िर रहते हैं। (१३) और हर तरह का सामान उसके लिये इकट्ठा कर दिया है। (१४) इस पर भी वह उम्मेद लगाये बैठा है कि हमें और भी कुछ दें। (१५) हर्गिज़ नहीं वह हमारी आयतों का दुश्मन था। (१६) हम जल्द उसे सख़्त सज़ा में फसायेंगे। (१७) वह तदबीर में लगा है और तदबीर कर रहा है। (१८) नाश हो—वह कैसी तदबीरें कर रहा है। (१९) फिर भी वह नाश हो

फिर कैसी तदबीरें कर रहा है। (२०) फिर उसने देखा। (२१) फिर–नाक चढ़ाइ और मुँह सिकोड़ लिया। (२२) फिर पीठ फेरली और घमण्ड किया। (२३) और कहने लगा कि ये जादू है जो चला आता है * (२४) ये तो बस किसी आदमी का कहा हुआ है। (२५) हम उसको जल्दी नरक में झोंक देंगे। (२६) और तू क्या जाने कि नरक (आग) क्या चीज है। (२७) वह न बाकी रखती है और न छोड़ती है। (२८) शरीर को झुलसा देती है। (२९) उस पर १९ चौकीदार हैं। (३०) और हमने फिरिश्तों ही को आग का चौकीदार बनाया है और इनकी गिनती हमने काफिरों की जाँच के लिए ठहराई है ताकि किताब वाले यक़ीन करलें और ईमानवालों का और भी ईमान हो और किताबवाले और ईमान वाले शक न करें और जिन लोगों के दिलों में रोग है और जो काफिर हैं बोल उठें कि ऐसी बातों के कहनें से खुदा का क्या प्रयोजन है। इसी तरह खुदा जिसको चाहता है भटकाता है और जिस को चाहता है राह दिखाता है और तुम्हारे परवर्दिगार के लश्करों का हाल उसके सिवाय कोई नहीं जानता और यह लोगों के वास्ते शिक्षा है। (३१) [रुकू १]

नहीं नहीं चाँद की कसम। (३२) और रात की जब वह गुजरने लगे। (३३) और सुबह को जब वह रोशन हो। (३४) वह नरक एक बड़ी बात है। (३५) वह लोगों को डराना है। (३६) तुम में से उस शख्स को जो आगे बढ़ना चाहे और पीछे रहना चाहे। (३७) हर एक जी अपने किये में फँसा है (३८) मगर दाहिनी तरफ वाले। (३९) कि वह बैकुण्ठ में में पूँछते होंगे। (४०) अपराधियों से। (४१) कौन चीज तुमको नरक में ले आई। (४२) वह कहेंगे हम

---

* ये आयतें वलीद बिन मुगीरा के विषय में उतरीं। उसने पहले तो कुरान सुन कर उस की प्रशंसा की लेकिन बाद में अबू जिहल के बहकाने से उसको जादू बताने लगा। यह बड़ा धनी था और उस के कई लड़के थे। कुरैश में उस का बड़ा ऊंचा स्थान समझा जाता था।

निजाम न पढ़ते थे। (४३) और न हम गरीबों को खाना खिलाते थे (४४) और हम हुज्जत करनेवालों के साथ हुज्जत किया करते थे। (४५) और हम न्याय के दिन को झुठलाते थे। (४६) यहाँ तक कि हमको विश्वास आया। (४७) फिर किसी शिफारिसी की शिफारिस उनके काम नहीं आयगी। (४८) और उनको क्या होगया है कि यह इस शिक्षा से मुँह फेरते हैं। (४९) गोया कि ये गधे हैं जो भागे जाते हैं। (५०) शेर के आगे से भागे जाते हैं। (५१) बल्कि इनमें का हरएक आदमी चाहता है कि उसको खुली किताबें मिल जावें। (५२) हर्गिज नहीं ये आखिरत (क़यामत) से नहीं डरते। (५३) हर्गिज नहीं यह तो एक शिक्षा है। (५४) तो जो कोई चाहे इसको याद रक्खे। (५५) और जब तक खुदा न चाहे वह हर्गिज याद न करेंगे वह डर के लायक और बख्शने के लायक है। (५६) [रुकू २]

सूरे क़यामत।

मक्के में उतरी इसमें ४० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहम वाला मिहर्बान है। मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूँ। (१) और मैं जी की क़सम खाता हूँ जो (बुरे कामों पर) अपने आप मलामत करता है। (२) क्या आदमी ख्याल करता है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा न करेंगे। (३) और हम इस बात पर शक्तिमान हैं कि उसके पोर-पोर ठिकाने से बैठा दें। (४) बल्कि आदमी चाहता है कि उसके सामने ढिठाई करे। (५) वह पूछता है कि क़यामत का दिन कब होगा। (६) तो जब आँखें पथरा जायँगी। (७) और चन्द्रमा में ग्रहण लगजावेगा। (८) और सूर्य और चन्द्रमा जमा किये जावेंगे। (९) तो उस दिन आदमी

कहेगा कि भागने की जगह कहाँ है। (१०) हरगिज़ नहीं शरण की जगह नहीं है। (११) उस दिन तेरे परवर्दिगार की तरफ़ जाकर ठहरना होगा। (१२) उस दिन आदमी को बता दिया जायगा कि उसने पहिले कैसे काम किये हैं और पीछे क्या छोड़ा है (१३) बल्कि आदमी तो अपने आप पर खुद वकील होगा। (१४) और अगर्चि वह अपने बहुत उज्र लावे। (१५) अपनी ज़बान न हिला कि उसके लिये जल्दी करने लगे। (१६) उसका जमा करना और पढ़ना हमारे ज़िम्मे है†। (१७) जब हम उसको (जिब्रील के के द्वारा) पढ़ा लिया करें तो तू भी उसके पीछे-पीछे पढ़। (१८) फिर उसका बयान करना हमारे ज़िम्मे है। (१९) मगर तुम कुछ जल्दबाज़ ही हो। (२०) दुनिया को छोड़ बैठे और आख़िरत को पसंद करते हो। (२१) उस दिन कितने मुँह ताज़े हैं। (२२) अपने परवर्दिगार को देख रहे होंगे। (२३) और कितनें मुँह उस दिन उदास होंगे। (२४) समझ रहे होंगे कि उनके साथ ऐसी सख़्ती होने को है जो कमर तोड़ देगी। (२५) नहीं जब जान हँसली तक आ पहुँचेगी। (२६) और कहा जायगा कौन झाड़ फूँक करेगा। (२७) और उसको विश्वास हो जायगा कि यह जुदाई है। (२८) और पिण्डली पिण्डली से लिपट जायगी। (२९) उस दिन तेरे परवर्दिगार की तरफ़ चलना होगा। (३०) [रुकू १]

तो उसने न यक़ीन किया और न नमाज़ पढ़ी। (३१) बल्कि उसने उनको झुठलाया और पीठ फेरदी। (३२) फिर अपने घर को अकड़ता गया। (३३) ख़राबी तेरी फिर ख़राबी तेरी। (३४) फिर ख़राबी तेरी ख़राबी पर ख़राबी तेरी। (३५) क्या आदमी ख़याल करता है। कि वह बेकार छोड़ दिया जायगा। (३६) क्या वह वीर्य की एक बूँद न था जो टपकी। (३७) फिर लोथड़ा हुआ फिर बनाया और ठीक किया। (३८) फिर उस वीर्य से स्त्री

† यानी क़ुरान को याद रखने के लिए जल्दी-जल्दी ज़बान न चला इस का याद करना और उसका जमा करना हमारा काम है।

और पुरुष का जोड़ा बनाया। (३९) क्या ऐसा शख्स मुर्दे को नहीं जिला सकता। (४०)। [रुकू २]

—०—

सूरे दहर।

मक्के में उतरी इसमें ३१ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। क्या आदमी के ऊपर से ज़माने में एक ऐसा समय बीता जब वह कुछ भी चर्चा के योग्य न था। (१) हमने आदमी को मिले हुए वीर्य से पैदा किया कि उसको जाँचे इसलिये उसको सुननेवाला और देखनेवाला बनाया। (२) हमने उसे राह दिखा दी है अब वह शुक्रगुज़ार हो या नाशुक्रा। (३) हमने इन्कारियों के वास्ते जंजीरें और तौक़ और दहकती हुई आग तय्यार कर रक्खी है। (४) निस्सन्देह सुकर्मी प्याले पीवेंगे जिसमें कपूर की मिलावट होगी। (५) सोता जिसका पानी अल्लाह के सेवक पीयेंगे। और उसको जहाँ चाहें वहाँ ले जावेंगे। (६) वह अपनी मन्नतें (मन की कल्पना) पूरी करते हैं और उस दिन (क़्यामत) से डरते हैं जिसकी बुराई फैली हुई होगी। (७) और उसकी मुहब्बत के लिए गरीबों को और अनाथों को और क़ैदियों को खाना खिलाते हैं। (८) हम तो तुमको खुदा की प्रसन्नता के लिये खिलाते हैं हम तुमसे बदला चाहते हैं और न धन्यवाद। (९) हमको अपने परवरदिगार से उस दिन का डर लग रहा है जब लोग मुँह बनाये भौहें चढ़ाये होंगे। (१०) तो खुदा ने उस दिन की विपदा से बचा लिया और उनको ताज़गी और खुशहाली उन्हें पहुँची। (११) और जैसा उन्होंने सन्तोष किया था उसके बदले में बैकुण्ठ और रेशमी वस्त्र उन्हें दिये। (१२) बैकुण्ठ में तख्तों पर तकिये लगाये बैठे होंगे न वह वहाँ धूप ही देखेंगे न ठण्ढ। (१३) और उन पर वहाँ के वृक्षों की छाया होगी और उनके फल भी नज़दीक

झुके होंगे। (१४) और उनपर चाँदी के बासनों और गिलासों का दौर चलता होगा कि वह शीशे की तरह होंगे। (१५) शीशे भी चाँदी के वह उन्हीं के लिये बने होंगे। (१६) और वहाँ उनको प्याले पिलाये जायेंगे जिसमें सोंठ मिली होगी। (१७) एक चश्मा होगा जिसका नाम सलसबील होगा। (१८) और उनके गिर्द हमेशा नौजवान लड़के फिरते हैं। जब तू उन्हें देखे बिखरे मोती समझेगा। (१९) जब तू देखे यहाँ पदार्थ और बड़ा राज्य तुझको दिखाई देगा। (२०) उनके ऊपर बारीक हरे रेशम और गाढ़े रेशम के कपड़े हैं और चाँदी के कड़े पहिने हैं और उनका परवरदिगार उन्हें पाक शराब पिलायेगा। (२१) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कमाई नेग लगी। (२२) [रुकू १]

हमने तुझ पर धीरे-धीरे क़ुरान उतारा। (२३) तू अपने परवरदिगार की राह देख और उनमें से किसी पापी नाशुक्रे की न मान। (२४) और अपने परवर्दिगार का नाम सुबह और शाम याद कर। (२५) और कुछ रात में उसका सिजदा (दण्डवत्) कर और बड़ी रात तक उसकी पाकी बोल। (२६) यह लोग तो बस जल्दी होने वाली बात पसन्द करते हैं और इस भारी दिन को छोड़ देते हैं। (२७) हमने उनको पैदा किया और उनकी गिरहबन्दी मज़बूत बाँधी और जब हम चाहेंगे उनके बदले उनही जैसे लोग ला बसायेंगे। (२८) शिक्षा है फिर जो कोई चाहे अपने परवर्दिगार की तरफ पहुँचने का रास्ता ले। (२९) और तुम न चाहोगे। जब तक अल्लाह न चाहे। बेशक अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है। (३०) जिसको चाहे अपनी कृपा में ले लेता है और सरकश लोगों के लिये उसने दुःखदाई सज़ा तैयार कर रक्खी है। (३१) [रुकू २]

सूरे मुर्सलात।

मक्के में उतरी इसमें ५० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। उन हवाओं की क़सम जो मामूल चाली से चलाई जाती हैं। (१) फिर जोर पकड़ कर तेज़ हो जाती हैं। (२) फिर बादलों को फैला देती हैं। (३) जुदा कर देती हैं (४) और दिलों में याद दिलाती हैं। (५) ताकि दलीलें समाप्त हों और डराया जाय। (६) तुम से जो वादा किया गया है वह जरूर होकर रहेगा। (७) यानी जब नक्षत्र (सितारे) धीमें पड़ जाँय। (८) और जब आसमान फट जावे। (९) और जब पहाड़ उड़ाये जाँय। (१०) और जब पैग़म्बर नियत समय पर हाज़िर किये जायें। (११) कौनसा दिन इनके लिए नियत था। (१२) न्याय का दिन। (१३) और तू क्या जाने न्याय का दिन क्या चीज है। (१४) उस दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है। (१५) क्या हमने अगलों को मार नहीं डाला। (१६) फिर उनके पीछे हम पिछलों को कर देते हैं। (१७) पापियों के साथ हम ऐसा ही किया करते हैं। (१८) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (१९) क्या हमने तुमको तुच्छ पानी से नहीं पैदा किया। (२०) फिर हमने उसको नियत समय तक एक रक्षित जगह में रक्खा। (२१) एक नियत समय तक रक्खा। (२२) फिर हमने अन्दाजा लगाया सो कैसा अच्छा अन्दाज किया। (२३) क़यामत के दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (२४) क्या हमने ज़मीन को समेट जाने वाली नहीं बनाया‡ (२५) जिन्दों और मुर्दों के लिये। (२६) और उसमें ऊँचे-ऊँचे बोझिल पहाड़ खड़े किये और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया। (२७) क़यामत के दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (२८) जिस चीज को तुम

‡ पृथ्वी (ज़मीन) जिन्दा आदमी को भी अपनी पीठ पर समेटती है और मुर्दा को भी। जिन्दा को अपनी पीठ पर समेटे है और मुर्दा को अपने पेट में।

झुठलाया करते थे उसकी तरफ चलो। (२९) छाया में चलो जिसके तीन टुकड़े हैं। (३०) उसमें ठण्डक नहीं और न गर्मी से बचाव है। (३१) वह महलों के बराबर लपटें फेंकती होगी। (३२) गोया वह जर्द (पीले) ऊँट हैं। (३३) कयामत के दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है। (३४) यही वह दिन है कि यह बात न कर सकेंगे। (३५) और न उनको आज्ञा दी जावेगी कि उज्र करें। (३६) कयामत के दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (३७) यही तो न्याय का दिन है। हमने तुमको और अगलों को जमा किया है (३८) तो अगर तुम्हारी कोई तदबीर चल सके तो चलाओ (३९) उस दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है (४०) [रुकू १]

परहेजगार तो जरूर छाओं में और चश्मों में होंगे। (४१) और मेवों में जो उनको भाते हों, होंगे। (४२) अपने किये का फल शौक से खाओ पियो। (४३) नेक लोगों को हम इस तरह बदला देते हैं। (४४) उस दिन झुठलाने वालों पर बर्बादी है। (४५) (दुनियाँ में) खाओ और कुछ फायदा उठाओ बेशक तुम अपराधी हो। (४६) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी हो। (४७) जब उन्हें (नमाज के वक्त) कहा जाय झुको तो नहीं झुकते। (४८) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (४९) अब इसके बाद कौनसी बात पर यह ईमान लावेंगे (५०) [रुकू २]

तीसवाँ पारा (अम)

सूरे नबा।

मक्के में उतरी इसमें ४० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला मेहरबान है। यह लोग आपस में क्या बात पूँछ रहे हैं। (१) क्या बड़ी खबर

(कयामत †) की बाबत। (२) जिसके बारे में यह जुदा-जुदा राय रखते हैं। (३) तो जल्द इनको मालूम हो जायगा। (४) फिर जल्द इनको मालूम हो जायगा (५) क्या हमने ज़मीन को फर्श। (६) और पहाड़ों को मेखें नहीं बनाया। (७) और हमने तुमको जोड़ा जोड़ा (मर्द औरत) पैदा किया। (८) और हमही ने तुम्हारी नींद को (मूजिब) आराम बनाया। (९) और हम ही ने रात को पर्दा बनाया। (१०) और हम ही ने दिन को रोज़ी के लिए बनाया। (११) और हमही ने तुम्हारे ऊपर सात पुख्ता (आसमान) बनाये। (१२) और हमने चमकता चिराग (सूर्य को) बनाया। (१३) और हमने बादलों से ज़ोर का पानी बरसाया। (१४) ताकि उससे अनाज और सब्जियाँ निकालें। (१५) और घने-घने बाग निकालें। (१६) बेशक फैसले के दिन का एक वक्त मुकरर है। (१७) उस दिन सूर फूँका जायगा और तुम लोग गिरोह के गिरोह चले आओगे। (१८) और आसमान फटकर दरवाजे दरवाजे हो जायेंगे। (१९) और पहाड़ चलाये जायेंगे यह धूल होकर रह जायेंगे। (२०) बेशक दोज़ख घात में है। (२१) सरकशों का (यही) ठिकाना (है)। (२२) उसी में बरसों (पड़े) रहेंगे। (२३) वहाँ न ठंडक और न पीने (का मज़ा) चक्खेंगे। (२४) मगर गर्म पानी और पाप के सिवाय उनको कुछ पीने को भी नहीं मिलेगा। (२५) (यह उनके आमाल का) पूरा बदला (है) (२६) यह लोग हिसाब की उम्मीद न रखते थे। (२७) और हमारी आयतों को झुठलाते थे। (२८) और हमने हर चीज़ को लिख रक्खा है। (२९) सो (अपने किये का) मज़ा चक्खो और हम तो तुम्हारे लिये सज़ा ही बढ़ाते जायेंगे। (३०) [रुकू १]

परहेज़गार बेशक कामयाब होंगे। (३१) (यानी रहने को) बाग और (खाने को) अंगूर (३२) और नौजवान औरतें हम उम्र। (३३) और छलकते हुए प्याले। (३४) वहाँ यह लोग न तो

---

† कयामत (महाप्रलय) क्या है ? इसके लिए पहला सिपारा देखिये।

बेहूदा बात सुनेंगे और न खुराफात। (३५) यह तुम्हारे परवरदिगार का हिसाब से दिया (उनके कर्मों का बदला है)। (३६) आसमानों का और जमीन का और जो कुछ पैदाइश इन दोनों के बीच है सबका मालिक बड़ा मेहरबान है। कयामत के दिन उस से बात नहीं कर सकेंगे। (३७) जबकि जिब्रील और फिरिश्ते पाँति की पाँति खड़े होंगे किसी के मुँह से बात तो निकलने की नहीं। मगर जिसको (खुदा) रहमान आज्ञा दे और वह बात भी ठीक कहे। (३८) यह दिन सचा है बस जो चाहे अपने परवरदिगार के साथ ठिकाना बना रक्खे। (३९) हमने तुमको नजदीक आने वाली (कयामत) सजा से डरा दिया है कि उस दिन आदमी उन (कर्मों) को देखेगा जो उसने अपने हाथों भेजे हैं और काफिर चिल्ला उठेगा कि ऐ काश मैं मिट्टी होता (४०) [रुकू २]

सूरे नाजिआत

मक्के में उतरी इसमें ४६ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से (जो) रहमवाला मेहरबान है। †और उन फिरिश्तों) की कसम जो घुसकर (सख्ती से) रूह निकालते हैं। (१) और उन (फिरिश्तों) की जो आसानी से जान निकाल लेते हैं। (२) और उन (फिरिश्तों) की जो (आसमान और जमीन) के बीच तैरते फिरते हैं। (३) फिर दौड़कर आगे बढ़ते हैं। (४) फिर जैसा हुक्म होता है बन्दोबस्त करते हैं। (५) जिस दिन जमीन काँप उठेगी। (६) और भूकम्प के बाद भूकम्प आयेंगे। (७) उस

---

† इन आयतों में जिस की कसम खाई गयी है उसके बारे में एक मत नहीं है। कोई-कोई कहता है कि ये सब वायु हैं। कोई कहता है कि ये एक तरह के जीव हैं। अधिकतर लोगों का विचार है कि ये फिरिश्ते हैं।

दिन (लोगों के) दिल धड़क रहे होंगे। (८) उनकी आँखें झुकी होंगी। (६) (गुनहगार) कहते हैं क्या हम उल्टे पाँव लौटाये जायेंगे। (१०) क्या जब (गल सड़कर) हम हड्डियाँ हो जायेंगी। (११) कहते हैं कि ऐसा हुआ यह तो लौटना नुकसान की बात है। (१२) यह तो एक झिड़की है (१३) और एक दम से लोग मैदान में आ मौजूद होंगे। (१४) (ऐ पैगम्बर) मूसा का किस्सा भी तुमको पहुँचा है। (१५) जबकि उनको तोआ के पाक मैदान में उनके परवरदिगार ने पुकारा था। (१६) कि फिरऔन‡ के पास जा उसने बहुत सिर उठा रक्खा है। (१७) फिर कहा कि भला तुमको इसकी भी कुछ फिक्र है कि तू पाक साफ हो जाय। (१८) और मैं तुमको तेरे परवरदिगार की तरफ रास्ता दिखाऊँ और तू डरे। (१६) फिर मूसा ने उसको बड़ी (असा) करामात दिखाई। (२०) तो उसने झुठलाया और न माना। (२१) फिर लौट गया और तदबीर करने लगा। (२२) यानी (लोगों को) जमा किया और मुनादी करा दी। (२३) और कह दिया कि मैं तुम्हारा बड़ा परवरदिगार हूँ। (२४) तो खुदा ने उसको आखिरत और दुनियाँ में धर पकड़ा। (२५) जो मनुष्य (खुदा से) डरता है उसके लिए इसमें शिक्षा है। (२६) [रुकू १]

क्या तुम्हारा पैदा करना मुश्किल है या आसमान का कि उसको उस (खुदा) ने बनाया। (२७) उसकी छत को खूब ऊँचा रक्खा। फिर उसको हमवार किया। (२८) और उसकी रात को अँधेरा बनाया और (दिन को) उसकी धूप निकाली। (२६) और इसके बाद जमीन को बिछाया। (३०) उसी में से उसका पानी और उसका चारा निकाला। (३१) और पहाड़ों को गाड़ दिया। (३२) (यह सब) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के फायदे के लिये (किया)। (३३) तो जब बड़ी आफत आ पड़ेगी। (३४) जो कुछ आदमी ने किया है उस दिन उसको याद आयेगा। (३५)

---

‡ फिरऔन व हजरत मूसा का हाल जानने के लिये पहला सिपारा देखिये।

और दोज़ख़ सब देखने वालों के सामने ज़ाहिर किया जायगा। (३६) तो जिसने सरकशी की। (३७) और दुनिया की ज़िन्दगी को मुक़द्दम रक्खा। (३८) तो ठिकाना दोज़ख़ है। (३९) और जो अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरा और इन्द्रियों (नफ़्स) को इच्छाओं (ख़्वाहिशों) से रोकता रहा। (४०) तो (उसका) ठिकाना बहिश्त है। (४१) (सो ऐ पैग़म्बर) तुम से क़यामत के बारे में पूछते हैं कि उसका वक़्त कब है। (४२) तुम उसका वक़्त बताने की चर्चा में कहाँ पड़े हो। (४३) (आख़िरी) थाह तेरे परवरदिगार को ही है। (४४) तू तो बस उसको डरा सकता है जो उससे डरे। (४५) लोग जिस दिन क़यामत को देखेंगे तो (मालूम होगा) गोया वह बस दिन के अख़ीर पहर ठहरे या अव्वल पहर (४६)। [रुकू २]

—०—

सूरे अबस

मक्के में उतरी इसमें ४२ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से (जो) रहमवाला मेहरबान है। (मुहम्मद) इतनी बात पर गुस्से में हुए और मुँह मोड़ बठे‡। (१) जब एक अन्धा* उनके पास आया। (२) और (कहा ऐ पैग़म्बर) तू

---

‡ यह आयतें अमुल्ला के बारे में उतरीं। वह अन्धे थे। एक दिन मुहम्मद साहब अरब के बड़े बड़े सर्दारों को इस्लाम की बातें समझा रहे थे कि यह आये और बोल उठे कि हम को बताइये। यह बात मुहम्मद साहब को बुरी लगी। इसी पर उन को इस तरह समझाया गया।

*एक बार रसूलुल्लाह मक्के के सरदारों में इस्लाम की चर्चा कर रहे थे। उसी समय एक अन्धे साबी ने आकर आँहज़रत से 'क़ुर्आन' की बाबत

क्या जाने शायद वह पाक हो जाय। (३) या शिक्षा सुने या उस को शिक्षा लाभदायक हो। (४) तो जो मनुष्य बेपरवाही करता है। (५) उसकी तरफ तू खूब ध्यान देता है। (६) हालांकि वह पाक न हो तो तुम पर कुछ (इल्ज़ाम) नहीं। (७) और जो तेरे पास दौड़ता हुआ आये। (८) और जो डर कर आये। (९) तो उससे बेपरवाही करता है। (१०) देखो कुरान तो नसीहत है। (११) जो चाहे इसे याद रखे। (१२) और काबिल अदब वर्कों में (लिखा हुआ है)। (१३) जो ऊँचे पर रक्खे (और) पाक हैं। (१४) ऐसे लिखनेवालों के हाथों में। (१५) जो बुजुर्ग और भले हैं। (१६) आदमी पर मार। वह कैसा नाशुक्रा है। (१७) (खुदा ने) उसको किस चीज़ से पैदा किया। (१८) नुत्फे (बीज) से उसको बनाया फिर उसका एक अन्दाजा बाँध दिया। (१९) फिर उसके लिए राह आसान की। (२०) फिर उसको मार दिया। फिर उसको कब्र में दाखिल किया। (२१) फिर जब चाहेगा उसको उठा कर खड़ा करेगा। (२२) नहीं, खुदा ने जो कुछ आदमी को आज्ञा दी उसने उसकी तामील नहीं की। (२३) तो आदमी को चाहिए कि अपने खाने की तरफ देखे। (२४) कि हमने पानी बरसाया। (२५) फिर हमने ज़मीन को फाड़ा। (२६) फिर हमने ज़मीन में (अनाज) उगाया। (२७) और अंगूर और तरकारियाँ। (२८) और जैतून और खजूरें (२९) और घने घने बाग। (३०) और मेवे और चारा। (३१) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के लिए। (३२) तो जिस वक्त शोर (प्रलय) होगा जिसके सुनने से कान बहरे हो जाँय (३३) जिस दिन आदमी अपने भाई। (३४) और अपनी माँ और

पूछना शुरू किया। मक्के के रईस घमंडी थे। रसूलुल्लाह ने भी उनके बीच उस अन्धे को आया देख मुंह घुमा लिया। खुदा ने आँहज़रत को चेतावनी दी कि अन्धा गरीब जो खुदा से डरता है उसकी परवाह न करके उन लोगों की फिक्र करते हो जो अपने घमंड में दीन की कोई परवाह नहीं करते।

अपने बाप। (३५) और अपनी बीवी और अपने बेटों से भागेगा। (३६) इनमें से हर मनुष्य को उस दिन (अपने अपने छुटकारे की) फ़िक्र लगी होगी कि बस वही उसके लिए काफ़ी होगी। (३७) कितने मुँह उस दिन चमकते होंगे। (३८) हँसते खुशियाँ करते। (३६) और कितने मुंह उस दिन (ऐसे) होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी। (४०) उन पर स्याही छाई होगी। (४१) यही काफ़िर बदकार हैं। (४२) [रुकू १]।

सूरे तकवीर।

मक्के में उतरी इसमें २६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। जिस वक्त सूरज लपेट लिया जाय। (१) और जिस वक्त तारे झड़ पड़ें। (२) और जिस वक्त पहाड़ चलाये जायँ। (३) और जिस वक्त दस महीने की गाभिन ऊँटनिया छुट्टी-छुटी फिरें। (४) और† जिस वक्त जङ्गली जानवर आ मरें। (५) और जिस वक्त दरिया पाट दिये जाँय। (६) और जिस वक्त रूहों (जीवों) को मिलाया जाय। (७) और जिस वक्त लड़की से जो जिन्दा कब्र में रख दी गई थी पूछा जाय। (८) कि किस क़ुसूर के बदले में मारी गई। (९) और जिस वक्त कर्मों का लेखा खोला जाय। (१०) और जिस वक्त आसमान की खाल खींची जाय। (११) और जिस वक्त दोज़ख की आग दहकाई जाय। (१२) और जिस वक्त बहिश्त नज़दीक लाया जाय। (१३) (उस वक्त) हर शख्स जान लेगा जो कुछ वह (आखिरत) लाया होगा। (१४) तो मैं उन (सितारों) की

---

† यह हाल कयामत का है। उस दिन ज़मीन और आसमान सब का बुरा हाल होगा और कोई किसी की बात न पूछेगा।

कसम खाता हूँ जो चलते चलते पीछे हटने लगते हैं। (१५) और जो सैर करते और गायब हो जाते हैं। (१६) और रात की कसम जब उसका उठान हो। (१७) और सुबह की (कसम) जिस वक्त उसकी पौ फटती है। (१८) बेशक यह (कुरान) एक प्रतिष्ठित फ़िरिश्ते का पैग़ाम है। (१९) अर्श के मालिक (खुदा) के नजदीक उसका बड़ा रुतबा है। (२०) सरदार और अमानतदार है। (२१) और (ऐ मक्का वालों) तुम्हारे दोस्त (मुहम्मद कुछ) बावले नहीं। (२२) और बेशक उन्होंने उस (जिब्रील) को साफ़ आसमान में देखा। (२३) और यह गुप्त बातें छिपाने वाला नहीं। (२४) और यह (कुरान) शैतान मरदूद का कहा हुआ नहीं है। (२५) फिर तुम किधर (बहके) चले जा रहे हो। (२६) यह कुरान तो दुनिया जहान के लिए शिक्षा है। (२७) (लेकिन) उस शख्स के लिए जो तुममें से सीधी राह पर चले। (२८) और तुम (कुछ) नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह तमाम संसार का परवरदिगार है, चाहे। (२९) [रुकू १]

****

सूरे इन्फ़ितार।

मक्के में उतरी इसमें १९ आयतें और १ रुकू हैं॥

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जबकि आसमान फट जावे। (१) और जब सितारे झड़ पड़ें। (२) और जब नदियाँ बह चलें। (३) और जब कब्रें उखाड़ दी जायें। (४) (तब) हर मनुष्य जान लेगा जो (कर्म) उसने आगे भेजा और जो पीछे छोड़ा। (५) ऐ आदमी किस चीज ने तेरे परवरदिगार बुजुर्ग के बारे में तुमको धोखा दिया है। (६) जिसने तुमको बनाया और दुरुस्त बनाया और तेरे जोड़ बन्द मुनासिब रक्खे। (७) जिस सूरत से चाहा

सेरा पैवन्द (जोड़) मिला दिया। (८) मगर बात यह है कि तुम सजा को नहीं मानते। (९) हालाँकि तुम पर चौकीदार हैं। (१०) आलीक़द्र लिखने वाले। (११) जो कुछ भी तुम करते हो उनको मालूम रहता है। (१२) बेशक सुकर्मी मज़े में होंगे। (१३) और वह कुकर्मी बेशक दोज़ख़ में होंगे। (१४) और कयामत के दिन उसमें दाखिल होंगे। (१५) और वह उससे भाग नहीं सकते। (१६) और (ऐ पैगम्बर) तू क्या जाने कयामत का दिन क्या चीज़ है। (१७) फिर भी तू क्या जाने कयामत का दिन क्या चीज़ है। (१८) जिस दिन कोई शख्स किसी शख्स को कुछ भी फायदा नहीं पहुँचा सकेगा और हुकूमत उस दिन अल्लाह ही का होगी। (१९) [रुकू १]

सूरे ततफ़ीफ़

मक्के में उतरी इसमें ३६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। कम देने (तौलने) वालों की तबाही है। (१) जब मनुष्यों से माप लें तो पूरा पूरा लें। (२) और जब दूसरों को नापकर या तौलकर दें तो कम दें। (३) क्या इनको इस बात का ख्याल नहीं कि (कयामत) को यह उठा खड़े किये जायेंगे। (४) बड़े दिन को। (५) जिस दिन लोग दुनिया के परवरदिगार के सामने खड़े होंगे। (६) कुकर्मी लोगों का कर्म रोज़नामचा और कैदियों के रजिस्टर में हैं। (७) और (ऐ पैगम्बर) तू क्या समझे कि कैदियों का रजिस्टर क्या चीज़ है। (८) यह किताब है (जिसकी खानापूरी होती रहती है) (९) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (१०) जो कयामत के दिन को झुठलाते हैं। (११) और उस दिन को वही झुठलाता है जो (पापी) हद से बढ़ जाता है। (१२) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाँय तो कहे कि अगले लोगों के ढकोसले हैं। (१३) बल्कि

इनके दिलों पर इनके आमालों के जंग बैठ गये हैं। (१४) यही अपने परवरदिगार के सामने नहीं आने पायेंगे। (१५) फिर यह लोग अवश्य दोज़ख में दाख़िल होंगे (१६) फिर कहा जायगा कि यही तो वह है जिसको तुम झुठलाते थे। (१७) अच्छे मनुष्यों का कर्म लेखा बड़े रुतबे वाले लोगों के रजिस्टर में है। (१८) और (ऐ पैगम्बर) तुम क्या समझो कि बड़े रुतबे वाले लोगों का रजिस्टर क्या चीज़ है। (१९) एक किताब है (जिसकी खानापूरी होती रहती है। (२०) फ़िरिश्ते जो नज़दीक हैं उस पर तैनात हैं)। (२१) बेशक अच्छे (मनुष्य) आराम में होंगे। (२२) तख्तों पर बैठे देख रहे होंगे। (२३) तू उनके चेहरों पर नियामत की ताज़गी देखेगा। (२४) उनको खालिस शराब मुहर की हुई पिलाई जायगी। (२५) जिस (बोतल की मुहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालों को चाहिए कि उसी पर इच्छा करें। (२६) और उस (शराब) में तसनीम (के पानी) की मिलावट होगी। (२७) (तसनीम बैकुण्ठ का एक) चश्मा है जिसमें से नज़दीक (के मनुष्य) पियेंगे। (२८) बेशक मुजरिम ईमानवालों के साथ हँसी किया करते थे। (२९) और जब उनके पास से गुज़रते, इशारा करते थे। (३०) और जब लौटकर अपने घर जाते तो बातें बनाते थे (३१) और जब इनको देखते तो बोल उठते कि यही गुमराह हैं। (३२) हालाँकि ईमान वालों पर निगहबान बनाकर तो (इनको) नहीं भेजा गया। (३३) सो आज (कयामत में) ईमानवाले काफ़िरों पर हँसेंगे। (३४) तख्तों पर बैठे (सैर) देख रहे होंगे। (३५) अब तो काफ़िरों ने अपने किए का बदला पाया। (३६) [रुकू १]

सूरे इन्शिक़ाक़

मक्के में उतरी इसमें २५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहर्बान है। जब आसमान फट जायगा। (१) और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगा और यह

सूरे तारिक

मक्के में उतरी इसमें १७ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। आसमान की और रात को आने वाले की कसम। (१) और तू क्या समझे कि रात को आनेवाला क्या है। (२) वह चमकता हुआ तारा है। (३) कोई मनुष्य नहीं जिस पर चौकीदार न हो। (४) तो मनुष्य को चाहिये कि वह जिस चीज से पैदा किया गया है। (५) वह पानी से पैदा किया गया है जो (वीर्यपात के समय) उछल कर। (६) पीठ और छाती की हड्डियों के बीच से निकलता है। (७) बेशक खुदा (मरे पीछे) उसके लौटाने पर शक्तिमान है। (८) जिस दिन भेद जाँचे जायेंगे। (६) (उस दिन) न तो आदमी का कुछ बल चलेगा और न कोई सहायक होगा। (१०) पानी वाले आसमान की कसम। (११) और फटजाने वाली जमीन की कसम। (१२) जरूर यह कथन बिल कुल सही है। (१३) और यह कुछ हँसी की बात नहीं। (१४) यह (काफ़िर) दांव कर रहे हैं। (१५) और हम (अपने) दाँव कर रहे हैं (१६) तो (ऐ पैगम्बर इन काफिरों को मुहलत दे इनको थोड़ी सी मोहलत दे। (१७) [रुकू १]

सूरे आला।

मक्के में उतरी इसमें १६ आयतें और एक रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैगम्बर) अपने आलीशान परवरदिगार के नाम की माला फेर। (१) जिसने

(सृष्टि को) बनाया और दुरुस्त किया। (२) और जिसने अन्दाजा किया और राह लगादी। (३) और जिसने चारा निकाला। (४) फिर उसको काला काला कूड़ा कर दिया। (५) (ऐ पैगम्बर) हम तुमको (कुर्आन) पढ़ा देंगे तुम भूलने न पाओगे। (६) मगर जो खुदा चाहे नि सन्देह खुदा पुकार कर पढ़ने को भी जानता है और आहिस्ता पढ़ने को भी। (७) और हम तेरे लिये और भी आसानी कर देंगे। (८) याद दिलाते रहो। (जहाँ तक) याद दिलाना लाभ दायक हो। (९) जो डरता है वह समझ जायेगा। (१०) मगर भाग्यहीन तो उससे भागता ही रहेगा। (११) जो बड़ी आग में पड़ेगा। (१२) फिर न तो उसमें मरे ही गा और न जिन्दा ही रहेगा। (१३) जो पाक रहा वही कामयाब हुआ। (१४) और अपने परवर दिगार का नाम लेता और नमाज पढ़ता रहा। (१५) मगर तुम लोग दुनियाँ की जिन्दगी को पकड़ते हो। (१६) हालाँकि कयामत कहीं बढ़कर और अधिक पुख्ता है। (१७) यही बात तो अगली किताबों में है। (१८) यानी इब्राहीम और मूसा की किताबों में है। (१९) [रुकू १]

सूरे ग़ाशियह।

मक्के में उतरी, इसमें २६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहर्बान है। तुमको उस छिपा रखने वाली (कयामत) की कुछ बात पहुँची है। (१) कितने मुँह उस रोज उतरे हुए होंगे। (२) मेहनत उठा रहे होंगे। (३) थक रहे होंगे दहकती हुई आग में दाखिल होंगे। (४) इनको एक खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जायगा। (५) काँटों के सिवाय और कोई खाना इनको मयस्सर नहीं। (६) जिनसे न तो

मोटा हो और न भूख ही जाय। (७) कितने मुँह उस रोज़ ख़ुश होंगे। (८) अपनी कोशिश से ख़ुश। (९) ऊपर वाले स्वर्ग में होंगे। (१०) वहाँ बेहूदा बातें न सुनेंगे। (११) उसमें चश्मे बह रहे होंगे। (१२) उसमें ऊँचे तख़्त होंगे। (१३) और आबख़ोरे रक्खे होंगे। (१४) और गाव तकिये एक पंक्ति में लगे होंगे। (१५) और मसनद बिछे हुए। (१६) तो क्या यह ऊँटों की तरफ़ नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं। (१७) और आसमान की तरफ़ कि वह कैसा ऊँचा बनाया गया है। (१८) और पहाड़ों की तरफ़ कि वह कैसे खड़े किये गये हैं। (१९) और ज़मीन की तरफ़ कि कैसी बिछाई गई है। (२०) तो (ऐ पैग़म्बर) याद दिलाये जा तू तो बस याद ही दिलाने वाला है। (२१) तू उन पर दरोग़ा तो नहीं है। (२२) मगर जो मुँह फेरे और इन्कार करे। (२३) तो ख़ुदा उसको बड़ी सज़ा देगा। (२४) निस्सन्देह इनको तो हमारी तरफ़ लौटकर आना है। (२५) फिर उनसे हिसाब लेना हमारा काम है। (२६) [रुकू १]

सूरे फ़जर।

मक्के में उतरी इसमें, ३० आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहरबान है। सुबह की क़सम। (१) और दस† रातों की (क़सम)। (२) जुफ़्त और ताक़ की क़सम। (३) और रात जब कि गुज़रने लगे। (४) बुद्धिमानों के लिए तो इनमें बड़ी भारी क़सम है। (५) क्या तूने न देखा कि

---

† दस रातों से क्या मतलब है ? कोई कहता है इन से १ से १० रमज़ान मुराद हैं और कोई कहता है उनसे १ से दसवीं ज़िलहिज्ज (हज का महीना)।

तेरे परवरदिगार ने आद§ के साथ कैसा किया। (६) इरम के साथ कैसा किया। (७) जो ऐसे बड़े डील डौल के थे कि शहरों में कोई उन ऐसे पैदा नहीं हुए। (८) और समूद जिन्होंने घाटी में पत्थरों को तराश कर घर बनाया था। (६) और फिरऔन तो मेखें रखता था। (१०) जो शहरों में सरकश हुए। (११) और उनमें बहुत फसाद किया। (१२) तो तेरे परवरदिगार ने इन पर सजा का कोड़ा फटकारा। (१३) तेरा परवरदिगार (नाफर्मानों की) जरूर घात में है। (१४) लेकिन मनुष्य है जब उसका परवरदिगार उसको जाँचता है और इज्जत और नियामत देता है तो कहता है कि मेरे परवरदिगार ने मुझे प्रतिष्ठा दी है। (१५) और जब वह उसको दूसरी तरह जाँचता है और उस पर उसकी रोजी तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरा परवरदिगार मुझे जग करता है। (१६) हरगिज नहीं बल्कि तुम अनाथ की खातिर नहीं करते। (१७) और न एक दूसरे को गरीबों का खाना खिलाने का बढ़ावा देते हो। (१८) और मुर्दों तक का छोड़ा हुआ माल समेट समेट कर खाते हो। (१६) और माल को बहुत ही प्यारा समझते हो। (२०) हर्गिज नहीं जब जमीन मारे धक्के के चकनाचूर हो जाय। (२१) और तेरा परवरदिगार आ गया और फिरिश्ते पाँति की पाँति (२२) और उस दिन जहन्नुम नजदीक लाया जायगा उस दिन आदमी याद करेगा मगर उसके याद करने से क्या होगा। (२३) वह कहेगा हा शोक। मैंने अपनी इस जिन्दगी के लिए पहिले से कुछ किया

§ मिस्र के फिरऔनों की तरह अरब में भी 'आद' और 'समूद' नाम की दो बड़ी नामवर कौमें हो गुजरी थीं। इनको आलीशान इमारतें व बड़ी-बड़ी गुफाएं बनवाने का बड़ा शौक था। बड़े मजबूत व ताकतवर लोग थे। बाद में बुराई में पड़कर सरकश और जालिम हो गये। खुदा ने उनको सजा दी और वह कौमें मटियामेट हो गई। अरब के दक्खिन में 'आद' और उत्तर पश्चिम की ओर 'समूद' लोगों के खण्डहर अब भी कहीं-कहीं देखने को मिलते हैं।

होगा। (२४) तो उस दिन उसकी जैसी कोई सजा न देगा। (२५) और न कोई उसके जैसा जकड़ेगा। (२६) ऐ इतमीनान पाने वाली रूह (आत्मा)। (२७) अपने परवरदिगार की ओर चल तू उससे राजी और वह तुमसे राजी। (२८) फिर मेरे बन्दों में आ मिल। (२९) और मेरे बहिश्त में आ दाखिल हो। (३०) [रुकू १]

सूरे बलद।

मक्के में उतरी, इसमें २० आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। मैं इस शहर (मक्का) की कसम खाता हूँ। (१) तू इसी शहर में उतरा हुआ है। (२) और कसम है पैदा करने वाले (आदम) की और उसकी औलाद की। (३) हमने आदमी को मेहनत के लिये बनाया। (४) क्या वह इस ख्याल में है कि उस पर किसी का बस न चलेगा। (५) वह कहता है कि मैंने बहुत माल उड़ा दिये। (६) क्या वह यह समझता है कि उसे कोई नहीं देखता। (७) क्या हमने उसके दो आँखें नहीं बनाई। (८) और जीभ और दो ओंठ नहीं दिये। (९) और उसको दो राहें (नेकी बदी) नहीं दिखाई। (१०) फिर वह घाटी में से होकर नहीं निकला। (११) और (ऐ पैगम्बर) तू क्या जाने घाटी क्या चीज है। (१२) गर्दन का छुड़ा देना (गुलाम आजाद करना)। (१३) या भूक के दिनों में खाना खिलाना। (१४) नातेदार अनाथ को। (१५) या दीन मिट्टी पर बैठने वाले को खिलाना। (१६) फिर उन लोगों में होना जो ईमान लायें और एक दूसरे को सब्र और रहम की शिक्षा देते रहे। (१७) यही लोग खुशनसीब होंगे। (१८) और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया वही बदबख्त होंगे। (१९) इनको आग में डालकर किवाड़ भेड़ दिये जायँगे। (२०) [रुकू १]

सूरे शम्स ।

मक्के में उतरी, इसमें १५ आयतें और १ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। सूरज और उसकी धूप की कसम। (१) (बाद में) जब चाँद उदय होता है उसकी कसम। (२) और दिनकी कसम जब कि वह सूरज को उदय करे। (३) और रात की कसम जब वह सूरज को छिपाले। (४) और आसमान की और जिसने उसको बनाया। (५) और ज़मीन की कसम और जिसने उसे बिछाया। (६) और इन्सान की कसम और जिसने उसे दुरुस्त बनाया। (७) और उसके दिल में उसकी बदी और परहेजगारी सुझा दी। (८) जिसने अपने जीव को पाक किया वह मुराद को पहुँचा। (९) और जिसने उसको दबा दिया वह घाटे में रहा। (१०) समूद ने अपनी सरकशी की वजह से (पैगम्बर को) झुठलाया। (११) जब कि उन में से एक बड़ा कुकर्मी उठा। (१२) तो ख़ुदा के पैगम्बर ने उनसे कहा कि यह ख़ुदा की ऊँटनी है इसे पानी पीने दो। (१३) इस पर भी उन लोगों ने सालेह को झुठलाया और ऊँटनी के पाँव काट डाले तो उनके परवरदिगार ने उनके पाप के बदले उन्हें मार डाला और सबों को बराबर कर दिया। (१४) और वह नहीं डरता कि बदला लेंगे। (१५)। [रुकू १]

सूरे लैल ।

मक्के में उतरी इसमें २१ आयतें और १ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। रात की कसम जब कि वह ढांकले। (१) और दिन की (कसम) जब वह ख़ूब

रोशन हो। (२) और उसकी कसम जिसने नर मादा को बनाया। (३) तुम लोगों की कोशिश बेशक जुदा जुदा है। (४) तो जिसने दान दिया और बुराई से बचा। (५) और अच्छी बात को सच समझा। (६) तो हम आसानी की जगह उसे आसान कर देंगे। (७) और जो कंजूसी करे और बेपरवाही करे। (८) और अच्छी बात को झुठलाये। (९) तो हम उसको सख्ती की ओर पहुँचायेंगे। (१०) और जब गिरेगा तो उसका माल उसके कुछ भी काम न आयेगा। (११) हमारा काम तो राह दिखा देना है। (१२) और क्यामत और दुनियाँ हमारे ही अधिकार में है। (१३) और हमने तो तुमको भड़कती हुई आग से डरा दिया है। (१४) इसमें वही भाग्यहीन दाखिल होगा। (१५) जो झुठलाता और मुँह फेरता रहा। (१६) और परहेजगार (सयमी) उससे दूर रक्खा जायगा। (१७) जिसने अपने को पाक करने के लिए अपना माल दिया। (१८) और उस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला दे। (१९) (वह तो सिर्फ) ऊँचे परवरदिगार की प्रसन्नता चाहता है। (२०) और वह अवश्य प्रसन्न होगा। (२१) [रुकू १]

सूरे जुहा।

मक्के में उतरी इसमें ११ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। दिन चढ़े की कसम। (१) और रात की कसम जब ढाँकले। (२) तेरे परवरदिगार ने तुझको छोड़ा नहीं* और न वह नाखुश हुआ। (३)

---

* एक मौके पर रसूलुल्लाह के पास आयतों का आना रुक गया था। लोग ताना कसने व मजाक उड़ाने लग थे। आँहजरत भी उदास थे। उसी समय उनको दिलासा देते हुए यह आयत उतरी कि खुदा ने (ऐ पैगम्बर) तुझको कभी नहीं छोड़ा और वह तुझको इतना कुछ देगा जिससे आगे सब मात हैं।

और तेरी इस जिन्दगी से आखिरत अच्छी होगी। (४) और तेरा परवरदिगार आगे चलकर तुझको इतना देगा कि तू खुश हो जायगा। (५) क्या तुझको उसने अनाथ नहीं पाया और (फिर) जगह दी। (६) और तुझको गुमराह देखा और राह दिखाई। (७) और तुझको मुफलिस पाया और मालदार बना दिया। (८) तो अनाथ पर जुल्म न कर। (९) और माँगने वाले को मत झिड़क। (१०) और अपने परवरदिगार के एहसानों को बयान कर दे। (११) [रुकू १]

सूरे इन्शिराह।

मक्के में उतरी इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैगम्बर) क्या हमने तेरा हौसला नहीं खोल दिया। (१) और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया। (२) जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रक्खी थी। (३) और तेरा जिक्र ऊँचा किया। (४) सख्ती के साथ आसानी भी है। (५) निस्सन्देह मुश्किल के साथ आसानी है। (६) तो अब तू फारिग हुआ तो (इबादत में) मिहनत कर। (७) और अपने परवरदिगार की तरफ ध्यान दे। (८) [रुकू १]

सूरे तीन।

मक्के में उतरी इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। अंजीर और जैतून की कसम। (१) और तूरसीनीन (पहाड़) की। (२)

और इस शहर (मक्का) की कसम जिसमें चैन है। (३) हमने मनुष्य को अच्छी से अच्छी सूरत में पैदा किया। (४) फिर हमने नीचे से नीचे फेंक दिया। (५) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिए बहुत फल है। (६) तो इसके बाद कौन चीज है जिससे तू न्याय के दिन को झुठलाता है। (७) क्या ख़ुदा सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है। (८) [रुकू १]।

सूरे अलक़।

मक्के में उतरी इसमें १६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। अपने परवरदिगार का नाम लेकर जिसने पैदा किया क़ुर्आन पढ़े चलो। (१) आदमी को जमे हुए‡ लोहू से बनाया। (२) पढ़ चलो तेरा परवरदिगार बड़ा करीम है। (३) जिसने कलम के द्वारा विद्या सिखाई। (४) मनुष्य को वह बातें सिखाई जो उसे मालूम न थीं। (५) मगर नहीं आदमी तो बड़ा सरकश है। (६) इसलिए कि अपने बड़ई ग़नी देखता है। (७) (तुझे) अपने परवरदिगार की तरफ लौटकर जाना है। (८) क्या तूने उस शख्स को देखा जो मना करता है। (९) जब एक बन्दा नमाज पढ़ने खड़ा होता है। (१०)

‡ इस सूरत की पहली पाँच आयतें क़ुरान की सारी आयतों से पहले उतरीं।

भला देख तो अगर वह सची राह पर हो। (११) या परहेज़गारी सिखाता है। (१२) क्या तूने देखा कि अगर वह भुठलाता और पीठ फेरता है। (१३) क्या वह नहीं जानता कि ख़ुदा देख रहा है। (१४) नहीं अगर वह बाज न आया तो हम उसको उसके पट्टे पकड़कर जरूर घसीटेंगे। (१५) भूठे गुनहगार के पट्टे। (१६) तो उसको चाहिए कि अपने साथ बैठने वालों को बुला ले। (१७) हम भी दोज़ख के फ़िरिश्तों को बुलायेंगे। (१८) (हरगिज़ नहीं)। तू उसकी कही न मान, सिजदा कर और (ख़ुदा के) क़रीब हो। (१९)। [रुकू १]

सूरे क़दर।

मक्के में उतरी इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। हमने यह क़ुर्आन क़दर की रात† से उतारना शुरू किया है। (१) और तू क्या जाने क़दर की रात क्या है। (२) क़दर की रात हजार महीनों से बढ़कर है। (३) उसमें हर काम के लिए फ़िरिश्ते और रूह अपने परवरदिगार की आज्ञा से उतरते हैं। (४) वह रात सलामती की है वह प्रातःकाल तक रहती है। (५) [रुकू १]

---

† यह नहीं बताया जा सकता कि कौन सी रात क़दर की रात है। हाँ रमज़ान के अन्तिम सप्ताह में कोई एक रात ज्यादातर मुसलमान मानते हैं।

सूरे बय्यिनह ।

मदीने में उतरी इसमें ८ आयतें और १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। जो लोग किताब वालों और शिर्क करने वालों में से इन्कारी हुए वे मानने वाले न थे। जब तक उनके पास कोई खुली हुई दलील न पहुँचे। (१) (और वह दलील यह थी कि) खुदा की ओर से कोई पैगम्बर आये और पवित्र किताब पढ़कर सुनाये। (२) उनमें पक्की बातें लिखी हों। (३) दूसरी किताब वालों ने दलील आये पीछे भेद डाला है। (४) हालाँकि (कुर्आन में भी पिछली किताबों की ही तरह) उनको (पैगम्बर के द्वारा) यही आज्ञा दी गई कि पवित्र अल्लाह की ही बन्दगी की नियत से एक तरफ़ होकर उसकी पूजा करें और नमाज़ पढ़ें और दें और यही सही दीन है। (५) किताब वालों और शिर्क वालों जकात में से जो लोग इन्कार करते रहे दोज़ख की आग में होंगे। हमेशा इसी में रहेंगे यही लोग सबसे बुरे हैं। (६) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये यही लोग सबसे अच्छे हैं। (७) इनका बदला इनके परवरदिगार के यहाँ रहने के बाग (बहिश्त) हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे खुश और ये अल्लाह से खुश। यह उनके लिए है जो अपने परवरदिगार से डरें। (८) [रुकू १]

सूरे ज़िलज़ाल ।

मदीने में उतरी इसमें ८ आयतें और १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। जब ज़मीन अपने भूचाल से हिलाइ जाये। (१) और ज़मीन अपना बोझ

निकाल डाले। (२) और मनुष्य बोल उठे कि उसे क्या हो गया। (३) उसी दिन वह अपनी ख़बरें सुनायेगी। (४) इसलिए कि तेरा परवरदिगार उसको हुक्म भेजेगा। (५) उस दिन लोग जुदा-जुदा हालतों में लौटेंगे ताकि उनको उनके कर्म दिखलाये जाँय। (६) तो जिसने थोड़ी भी नेकी की वह उसको देखेगा। (७) और जिसने थोड़ी भी बुराई की वह उसको भी देखेगा। (८) [रुकू १]

सूरे आदियात।

मक्के में उतरी इसमें ११ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। हाँफकर दौड़ने वाले घोड़ों की कसम। (१) जो फिर टाप मारकर आग निकालते हैं। (२) फिर सुबह के वक्त छापा आ मारते हैं। (३) फिर वह उस वक्त भी (दौड़ धूप से) गुब्बार उड़ाते हैं। (४) फिर उसी वक़्त फ़ौज में आ घुसते हैं। (५) मनुष्य अपने परवरदिगार का बड़ा कृतघ्नी (नाशुक्रा) है। (६) और वह इसको खूब जानता है। (७) और वह माल पर प्रेम करने में मज़बूत है। (८) तो क्या इनको मालूम नहीं जब वह मनुष्य जो क़ब्रों में हैं उठा खड़े किये जायेंगे। (९) और दिलों में जो बातें हैं वह ज़ाहिर कर दी जाँयगी। (१०) उस दिन उनका परवरदिगार ही उनसे बख़ूबी जानकार होगा। (११) [रुकू १]

सूरे कारिअह ।

मक्के में उतरी इसमें, ११ आयतें और १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है । खड़खड़ाने वाली । (१) खड़खड़ाने वाली क्या चीज है । (२) और तू क्या जाने खड़खड़ाने वाली क्या चीज है । (३) जिस दिन आदमी बिखरे हुए पतिङ्गों की तरह होंगे । (४) और पहाड़ धुनी हुई ऊन के मानिन्द हो जायेंगे । (५) सो जिसके कर्म भारी होंगे । (६) सो वह खुशी की जिन्दगी में होगा । (७) और जिस किसी का वजन हल्का होगा । (८) सो ठिकाना उसका हावियह होगा । (९) और तू क्या जाने वह (हावियह) क्या चीज है । (१०) वह (दोजख की) जलती हुई आग है । (११) [रुकू १]

—०—

सूरे तकासुर ।

मक्के में उतरी इसमें ८ आयतें और १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहर्बान है । तुम्हारी बहुतायत की ख्वाहिशों ने भूल में डाल रक्खा है । (१) यहाँ तक कि तुम कब्र में पहुँचो । (२) नहीं नहीं तुमको मालूम हो जायगा । (३) फिर नहीं नहीं तुमको मालूम हो जायगा । (४) बात यह है अगर तुम यकीन करना जानो । (५) सो तुम अवश्य दोजख को देख लोगे । (६) फिर जरूर उसे तुम यकीनी आँखों से देखोगे । (७) फिर उस दिन नियामतों के विषय में तुम से पूँछ ताछ अवश्य होगी । (८) [रुकू १]

★★★★

सूरे असर।

मक्के में उतरी इसमें ३ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (असर) ढलते दिन की कसम। (१) आदमी घाटे में है। (२) मगर (वह नहीं) जो ईमान लाये और जिन्होंने सुकर्म किये और एक दूसरे को हक की शिक्षा देते रहे एक दूसरे को सब्र करने की शिक्षा देते रहे। (३) [रुकू १]।

—— ❀ ——
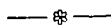
सूरे हुमजह।

मक्के में उतरी इसमें ६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। हर ताना देने वाले और ऐब चुनने वाले की खराबी है। (१) जो माल जमा करता और गिन गिन कर रखता रहा। (२) वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा। (३) नहीं वह तो जरूर जलती हुई आग में डाला जायगा। (४) और तू क्या जाने जलती हुई आग क्या चीज है। (५) वह खुदा की भड़काई हुई आग है। (६) दिलों तक की खबर लेगी। (७) वह उनके ऊपर चारो तरफ से बन्द (घिरी) होगी। (८) (आग के) बड़े बड़े खम्भों की तरह पर। (९) [रुकू १]

—— ❀ ——
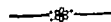
सूरे फ़ील।

मदीने में उतरी इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैगम्बर) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे परवरदिगार ने हाथी वालों के साथ कैसा बर्ताव किया†। (१) क्या उसने उनके दाँव बेकार नहीं कर दिये। (२) और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे। (३) जो उन पर कंकड़ की पथरियाँ फेंकते थे। (४) यहाँ तक कि उनको खाये हुए भूसे की तरह कर दिया। (५) [रुकू १]

—⊃❀⊂—
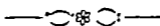
सूरे क़ुरेश।

मक्के म उतरी इसमें ४ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। इस वास्ते कि क़ुरेश को मिला रक्खा चाव पैदा किया। (१) जाड़े और गर्मी के सफ़र में उन्हें चाव दिलाया। (२) सो उनको चाहिए इस घर (काबा) के मालिक की पूजा करें। (३) जिसने उनको भूक में खिलाया और उनको (सफ़र के) डर से बचाया। (४) [रुकू १]

---

† रसूलुल्लाह की पैदाइश से पहले, हबशा के बादशाह के एक गवर्नर ने यमन में 'सुनआ' एक शानदार गिरजा बनवा कर यह ख्वाहिश की कि काबा की इज्जत घट कर 'सुनआ' की हो जाय। इसी सिलसिले में उसने काबा को मिटाने के लिए मक्के पर चढ़ाई की। उसकी फ़ौज में बड़े बड़े हाथी भी थे। किन्तु खुदा के फ़ज़्ल से रास्ते ही में चिड़ियों के गोल के गोल आये और उनकी कंकड़ियों की मार से ही लश्कर ख़तम हो गया।

सूरे माऊन ।

मक्के में उतरी इसमें ७ आयतें और १ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैग़म्बर) क्या तूने उसको देखा जो क़्यामत के न्याय को झुठलाता है। (१) और यह ऐसा मनुष्य है जो अनाथ को धक्के दे देता है। (२) और (ग़रीब) के खिलाने का बढ़ावा नहीं देता। (३) तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है। (४) जो अपनी नमाज़ की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं। (५) जो लोगों को (अपने नेक काम) दिखलाते हैं। (६) और रोज़मर्रह की बर्तने की चीज़ों को भी (देने में) इन्कार करते हैं। (७) [रुकू १]

सूरे कौसर ।

मक्के में उतरी इसमें ३ आयतें और १ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम भी जो रहमवाला मेहर्बान है। हमने तुझे कौसर (यानी बहुतायत से चीज़ें) दीं। (१) पस अपने परवरदिगार की नमाज़ पढ़ और बलि (क़ुर्बानी) दे। (२) तेरे दुश्मन का नाम लेवा न रहेगा। (३) [रुकू १]

सूरे काफ़रून ।

मक्के में उतरी, इसमें ६ आयतें और १ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। तू कह कि ऐ काफ़िरों। (१) मैं उन बुतों की पूजा नहीं करता जिनकी तुम पूजा

करते हो। (२) और जिसकी (खुदा की) मैं पूजा करता हूँ तुम भी उसकी पूजा नहीं करते। (३) और (आगे भी) न मैं उनकी पूजा करूँगा जिनकी तुम पूजा करते हो। (४) और न तुम उसकी पूजा करोगे जिसकी मैं पूजा करता हूँ। (५) तुमको तुम्हारा दीन और मुझको मेरा दीन। (६)। [रुकू १]

सूरे नस्र।

मदीने में उतरी इसमें ३ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। जबकि खुदा की मदद से फतह आई। ० (१) और तूने लोगों को देखा कि खुदा के दीन में गिरोह के गिरोह दाखिल हो रहे हैं। (२) तो अपने परवरदिगार की प्रशंसा के साथ तस्बीह से याद करने में लग जा और उससे पापों की क्षमा माँग निस्संदेह वह बड़ा तौबा कबूल करने वाला है। (३) [रुकू १]

सूरे लहब।

मक्के में उतरी इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। अबूलहब‡ के दोनों हाथ टूट गये और वह नष्ट हुआ। (१) न तो उसका माल ही, उसके कुछ काम आया और न उसकी कमाई। (२) वह जल्दी

---

० मदीने में हिजरत के समय रहने पर, बाद में मक्के के सरदारों से जंग हुई व फतह हासिल हुई।

‡ हजरत रसूलुल्लाह के चचा अबूलहब और उनकी बीबी जो इनके इस्लाम के दुश्मन थे, दुनियाँ में तबाह हो गये उसी का जिक्र है।

ही जो उठती हुई आग में दाखिल होगा। (३) और उसकी बीबी भी जो ईंधन ढोती (फिरती) है। उसकी गर्दन में खजूर की रस्सी होगी। (५) [रुकू १]

सूरे इख़लास ।

मक्के में उतरी इसमें ४ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैगम्बर) कहो कि वह अल्लाह एक है। (१) अल्लाह बेपरवाह है। (२) न कोई उससे पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ। (३) और न कोई उसकी समता का है। (४) [रुकू १]

सूरे फलक।

मदीने में उतरी इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैगम्बर) कहो कि सुबह के मालिक से शरण माँगता हूँ। (१) तमाम सृष्टि की बुराइयों से। (२) और अंधेरी रात की बुराई से जब अन्धियारी छा जाये। (३) और गण्डों पर फूकने वालों की बुराइ से। (४) और ईर्षा करने वालों की बुराई से जब ईर्षा करने लगें। (५) [रुकू १]

सूरे नास ।

मदीने में उतरी इसमें ६ आयतें और १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहर्बान है । (ऐ पैग़म्बर) कह कि मैं आदमियों के परवरदिगार की शरण माँगता हूँ । (१) लोगों के मालिक की । (२) लोगों के पूज्य की । (३) उसकी (शैतान) बुराई से जो सनकारे और छिप जावे । (४) वह जो लोगों के दिलों में (बुरे) ख्याल डालता है । (५) जिन्नों या आदमियों से (इनकी बुराइयों से पनाह माँगता हूँ) । (६) [रुकू १]

— समाप्त —

मुद्रक पं० लक्ष्मणप्रसाद भार्गव, भार्गव प्रेस, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ ।